परम पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी बहुआयामी व्यक्तित्व वाले महापुरुष थे। जीवन-व्यवहार अत्यंत सरल, वाणी में मधुरता और क्लेश रहित मन। गुरुदेवजी ने अपना जीवन जिस प्रकार बिताया उससे मुझे लगा कि मैंने एक उपदेश को जीते देखा था, बजाय सुनने के। इस पुस्तक के लेखक प्रिय राम साहेब को लम्बे समय तक गुरुदेवजी की सेवा करने का सौभाग्य मिला। इस बीच उन्होंने गुरुदेवजी को बहुत करीब से देखा, परखा, समझा और लिखा। अबूझ बातों को वे गुरुदेवजी से निःसंकोच पूछ लेते थे। गुरुदेवजी अपने जीवन से संबंधित बातें भी खुलकर बता देते थे। यदि मैं यह कहूं कि गुरुदेव जी इस पुस्तक के सह लेखक हैं तो यह कथन का अतिरेक न होगा। शब्द चयन और वाक्य विन्यास तो राम साहेब के हैं, किंतु विचार और तथ्य की अभिव्यक्ति तो गुरुदेवजी के है। गुरुदेवजी इस पुस्तक को एक बार पढ़ लिये हैं इसलिए इसकी प्रामाणिकता भी सर्वथा असंदिग्ध है।

इस पुस्तक में गुरुदेवजी के संबंध में बृहत् जानकारियां हैं और जो लोग अपने जीवन को सुखद, संयमित और शांतिमय बनाने के इच्छुक हैं, उन्हें वह ज्ञान, अन्तर्दृष्टियां, समझदारी और प्रेरणा हासिल करने के लिए इसमें बेहद महत्वपूर्ण सामग्री है। अगर आप इस साल सिर्फ एक किताब पढ़ सकते हैं तो वह आपके हाथों में है।

—गुरुभूषण दास

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेब जीवन दर्पण

राम दास

प्रकाशक

कबीर पारख संस्थान

संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद-211011

Visit us : www.kabirparakh.com

E-mail : kabirparakh@yahoo.com

पहली बार वि०सं० 2071 सन् 2014

सत्कबीराब्द 616

ISBN : 978-81-8422-212-8

© कबीर पारख संस्थान

मूल्य : ₹ 180.00

मुद्रक

इण्डियन प्रेस प्रा० लि०

36, पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद

Sadguru Abhilash Shaheb : Jivan Darpan : RAM DAS

समर्पित

उन साधु-सज्जनो एव देवियो के
कर कमलो मे, जो प्रामाणिक
साधु-रहनी को समझने
की जिज्ञासा
रखते
हैं।

प्राक्कथन

शारीरिक दृष्टि से हो चाहे आत्मिक दृष्टि से मानव मात्र की मौलिकता में कोई अंतर नहीं है। मौलिक रूप से मानव मात्र एक समान है। मानव मात्र का जन्म एक समान होता है। सबका शरीर मिट्टी, पानी, आग, हवा से बना है और सबके शरीर में एक समान चेतन जीव विराजमान है। किसी बच्चे के जन्म लेने पर तत्काल कोई यह नहीं बता सकता कि आगे चलकर यह बच्चा क्या बनेगा और क्या करेगा। यद्यपि अनेक महापुरुषों की जीवनियों में यह पढ़ने को मिलता है कि उनके जन्म लेने पर ज्योतिषियों-भविष्यवक्ताओं ने घोषणा की थी कि यह बच्चा आगे चलकर बहुत महान होगा परंतु ये सारी घोषणाएं उन महापुरुषों के महान होने के बाद ही जोड़ी गयी हैं। महापुरुषों के जीवन में आगे चलकर बहुत-सारी महिमापरक बातें जोड़ दी जाती हैं।

दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनकी महानता में कोई संदेह नहीं है और इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि उन महापुरुषों ने मानव समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया था और सही जीवन जीने की दिशा प्रदान किया था। उन महापुरुषों के विचारों से समाज में एक आंदोलन खड़ा हो गया था और दबे, कुचले, शोषित लोगों में एक नई चेतना, जागृति आ गयी थी।

दुनिया के सभी क्षेत्रों में समय-समय पर महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता रहा है। कोई देश, मत-पंथ-संप्रदाय इससे अछूता नहीं है। फिर धर्मप्रधान भारत भूमि का तो कहना ही क्या! यह देश तो सदैव से ऋषि-मुनियों, संत-महात्माओं, तत्त्वचिंतकों-दार्शनिकों की जन्म एवं कर्मस्थली रहा है। इनमें कपिल, कणाद, महावीर, बुद्ध, कबीर ऐसे नाम हैं जिन्होंने निर्भीक होकर स्वतंत्र चिंतन पर जोर दिया। इन महापुरुषों ने शास्त्र प्रमाण से हटकर विवेक पर तो बल दिया ही, कर्मकाण्ड बहुल यज्ञ-हवन, पूजा-पाठ की अपेक्षा कर्मसुधार, चरित्रनिर्माण की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया और कहा कि आत्मकल्याण एवं लोककल्याण के लिए किये जाने वाले पवित्र कर्म ही सच्ची पूजा है और व्यक्ति जन्म, जाति से नहीं किंतु कर्म, आचरण से छोटा-बड़ा होता है।

धर्म के क्षेत्र में सद्‌गुरु कबीर (1398-1518 ई.) सब जगह तर्कपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टि वाले संत हुए हैं। आपका व्यक्तित्व अत्यन्त विलक्षण तथा

आपकी प्रतिभा बड़ी प्रखर थी। आपकी मर्मभेदी एवं पारदर्शी दृष्टि क्षणभर में भांप लेती थी कि कहां क्या गड़बड़ी है और फिर आप निर्भय होकर उसे सबके सामने प्रकट कर देते थे। सच को सच तथा झूठ को झूठ कहने में न तो आप किसी से डरे और न आपने किसी का मुलाहिजा किया। धर्म और ईश्वर या जिस किसी के नाम पर अंधविश्वास, चमत्कार, पाखंड, मिथ्या महिमा, कुरीतियां, प्रकृति की कारण-कार्य व्यवस्था के विपरीत बातें दिखाई पड़ीं, आपने खुलकर खंडन किया। आपने कहा कि दुनिया का कोई भी व्यक्ति अलौकिक शक्तिसंपन्न, सुप्रीम पावर एवं जगत का हर्ता-कर्ता नहीं है। जिसका जन्म हुआ है एक दिन उसे मरना ही है। जिनका नाम जपकर, पूजा-अर्चना कर लोग दुनिया से पार जाना चाहते हैं वे भी एक दिन दुनिया से चले गये। किसी भी महापुरुष का नाम जपना या उनकी पूजा-अर्चना करना उनकी भक्ति नहीं है, अपितु भक्ति के नाम पर भटक जाना है। उनकी भक्ति है उनके बताये आदर्शों पर चलना, उनके उपदेशों के अनुरूप जीवन जीना।

सद्गुरु कबीर के पश्चात कबीरपंथ में अनेक त्याग-वैराग्यवान प्रतिभासंपन्न संत-महात्मा हुए हैं जिनमें श्री श्रुतिगोपाल साहेब (कबीर चौरा, काशी), श्री भगवान साहेब (धनौती, बिहार), श्री जगन्नाथ (जागू) साहेब (बिद्दूपुर, बिहार), श्री धनी धर्म साहेब (बांधवगढ़, म.प्र.), श्री गुरुदयाल साहेब (फतुहा, बिहार), श्री रामरहस साहेब (गया, बिहार), श्री पूरण साहेब (बुरहानपुर, म.प्र.), श्री काशी साहेब (बुरहानपुर, म.प्र.), श्री निर्मल साहेब (अजगैबा, उ.प्र.), श्री विशाल साहेब (बाराबंकी, उ.प्र.), श्री राघव साहेब (कबीर चौरा, काशी) आदि के नाम प्रमुखता से लिये जा सकते हैं। इन महापुरुषों ने अपनी पवित्र जीवन रहनी एवं वाणियों द्वारा सद्गुरु कबीर द्वारा प्रवर्तित पारख सिद्धांत की धारा को अक्षुण्ण बनाये रखा। इन्हीं महापुरुषों के क्रम में ईसा की बीसवीं सदी में एक महापुरुष आये जिन्होंने पारख सिद्धांत की धारा को बहुमुखी बना दिया। वे महापुरुष हैं—सद्गुरु संत श्री अभिलाष साहेब जी।

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी का जन्म वैदिक सनातन धर्मी संस्कारों से युक्त ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उन्हीं संस्कारों के बीच पालन-पोषण होने से आप अपनी किशोरावस्था से ही नियमित रूप से गीता-रामचरित मानस पढ़ने तथा राम, कृष्ण, विष्णु, शिव की पूजा-उपासना करने लग गये थे। बचपन में अपनी माता द्वारा कबीर साहेब के साखी, शब्द, भजन आदि सुनकर आप यह तो जान गये थे कि कबीर साहेब एक उच्च कोटि के संत हो गये हैं, परन्तु 18 वर्ष की उम्र तक आपको न तो कबीरपंथ के बारे कुछ पता था और न कबीर के सिद्धान्त के बारे में। 18 वर्ष की उम्र में आपको कबीरपंथ के बारे में पता चला

और कबीर साहेब के सिद्धांतों का ज्ञान हुआ। पहले आप चौंके, परंतु कबीर बीजक की त्रिज्या टीका पढ़कर आप पूर्णरूपेण कबीर विचारों के रंग में रंग गये और 21 वर्ष की नवजवानी में घर-गृहस्थी त्यागकर सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब की शरण में आ गये।

विरक्ति मार्ग में आने के पश्चात आपने अपने को सेवा, स्वाध्याय, साधना की त्रिवेणी में निमज्जन कर खूब प्रच्छालित किया और थोड़े ही दिनों में आप जीवन के परम लक्ष्य स्वरूपस्थिति में आरूढ़ हो गये। फिर तो अपने त्याग, तप, वैराग्य, साधना, सेवा, शालीनता, मधुर व्यवहार, मीठी संयत वाणी, मेल-मिलाप, स्नेहिल उदार हृदय, कथनी-करनी-रहनी की एकता, समन्वय, सारग्राही दृष्टि, अनुद्वेग प्रतिक्रियाविहीन जीवन, साहित्य रचना आदि द्वारा आपने ऐसी मिसाल प्रस्तुत की, जो बड़ी अद्‌भुत और अद्वितीय रही है। साधु-मार्ग में आने के कुछ दिन बाद ही आपकी भक्ति, ज्ञान, वैराग्य संयुक्त साधु रहनी की सुगंध चारों तरफ फैलने लगी और बहुत जल्दी ही आप साधु-भक्त-सज्जनों के लिए पूज्य, श्रद्धेय एवं आदर्श पुरुष बन गये।

महत्त्व इस बात का नहीं है कि कौन क्या मानता है और क्या नहीं मानता है, और किसका क्या सिद्धांत है किन्तु महत्त्व इस बात का है कि कौन कैसा जीवन जीता है, किसका जीवन-मूल्य कैसा है। सबके विचारों से सब सहमत कैसे हो सकते हैं? विचारों, मान्यताओं, संस्कारों, स्वभावों में तो अंतर रहा है और रहेगा ही। परंतु त्याग-वैराग्य, मन-वाणी-कर्मों की निर्मलता, विनम्रता आदि का प्रभाव कम-वेश सब पर पड़ता ही है। परमपूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी की उच्च जीवन-रहनी के प्रभाव से दूर-दूर तक के साधु-भक्त-सज्जन, जिज्ञासु, मुमुक्षु प्रभावित होते रहे हैं।

हर जिज्ञासु, मुमुक्षु, साधक, भक्त-सज्जन के मन में अपने गुरु, पूज्य, श्रद्धेय, आदर्श पुरुष के जीवन की घटनाओं को जानने की स्वाभाविक जिज्ञासा, भावना होती है कि वे सामान्य से महान कैसे बने। मनुष्य को किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने, सफलता पाने के लिए एक आदर्श की जरूरत होती है। वही आदर्श उसके लिए पाथेय एवं संबल बनता है। 35-40 वर्ष की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते पूज्य गुरुदेव जी की सुकीर्ति दूर-दूर तक फैल गयी थी और प्रेमी भक्त-सज्जन गुरुदेव जी के जीवन की घटनाओं को जानने के लिए उत्सुक होने लगे और यह उत्सुकता उत्तरोत्तर बढ़ती गई। अनेकों ने गुरुदेव जी से इस संबंध में कहा भी कि वे स्वयं अपने जीवन की बारे में लिख दें। परन्तु गुरुदेव जी ने इसे कभी स्वीकारा नहीं और आपने कहा कि मेरे विचार ही मेरी जीवन-कथा है।

मेरे जीवन को जानना चाहते हो तो मेरे विचारों को जानो-समझो और जो मैंने लिखा है उसे पढ़ो तथा उसके अनुसार जीवन जीयो। जब तक मेरा यह शारीरिक जीवन है तब तक मेरे जीवन के बारे में कहीं कुछ छापा नहीं जायेगा।

इस पुस्तक के लेखक संत राम दास जी गुरुदेव जी की निकट सेवा में लंबे समय तक रहे हैं। इस बीच समय-समय पर प्रसंगवश गुरुदेव जी जब अपने जीवन से संबंधित घटनाओं का उल्लेख करते तो वे लिख लेते। धीरे-धीरे उन घटनाओं का एक अच्छा खासा संकलन तैयार हो गया। इसके साथ-साथ गुरुदेव जी के बड़े गुरुभाइयों तथा गुरुदेव जी से बहुत लंबे समय से जुड़े संत-भक्तों से भी पूछकर वे गुरुदेव जी की जीवन संबंधित घटनाओं को नोट करते रहे। जब लिखकर उनकी पांच-छः डायरियां तैयार हो गयीं तब उन्होंने गुरुदेव जी से उन्हें एक बार आद्योपांत पढ़ लेने का निवेदन किया, जिससे कोई तथ्यात्मक त्रुटि न रहने पाये। उनके निवेदन पर गुरुदेव जी ने सभी डायरियों को आद्योपांत पढ़ा और जहां आवश्यक जान पड़ा वहां उचित निर्देश दिया, स्वयं संशोधन भी किया। इस पुस्तक में जो भी घटनाएं वर्णित हैं, सबकी सब पूरी प्रामाणिक हैं।

यद्यपि इस पुस्तक को गुरुदेव जी की पूरी जीवनी तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी इससे गुरुदेव जी के जीवन की एक झलक तो मिलती ही है। किसी भी महापुरुष के आंतरिक जीवन को तो उनके जैसा जीवन जीकर ही महसूस किया जा सकता है, परंतु मुमुक्षु, जिज्ञासु, प्रेमी-भक्त जनों के लिए तो उनके जीवन की बाह्य घटनाएं ही आदर्शरूप एवं प्रेरक बनती हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन से उन सभी लोगों की बहुत वर्षों से चली आ रही जिज्ञासा कुछ अंशों में शांत हो सकेगी जो गुरुदेव जी के बाह्य शारीरिक जीवन के संबंध में जानने की इच्छा रखते आ रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में गुरुदेव के शारीरिक जीवन के जन्म से लेकर अवसान तक की सभी प्रमुख घटनाओं का तो उल्लेख है ही, गुरुदेव जी के साहित्य का संक्षिप्त परिचय तथा उनके समाज का भी वर्णन है। निश्चित ही पुस्तक जिज्ञासुओं, मुमुक्षुओं, साधकों, प्रेमी भक्त-सज्जनों को कल्याण-साधना पथ में आगे बढ़ने के लिए पाथेय का काम करेगी तथा प्रतिक्रियाविहीन, अनुद्वेग, शांत जीवन जीने के लिए प्रेरक भी सिद्ध होगी।

कबीर आश्रम, कबीर नगर, इलाहाबाद — विनम्र

बुद्ध पूर्णिमा, 14 मई, 2014 — **धर्मेन्द्र दास**

प्रामाणिक दस्तावेज़

संत-महात्माओं में आत्म-प्रदर्शन की भावना कभी नहीं रही। यही वजह है कि आज कई महापुरुषों के संबंध में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। वे स्वयं उदासीन रहे ही, किन्तु उनके अनुयायियों तथा शिष्यों ने भी उनके विषय में लिखना जरूरी नहीं समझा। संत कबीर इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। आज भी उनके माता-पिता, जन्मकाल इत्यादि के विषय में भ्रांतियां विद्यमान हैं। संत शिरोमणि कहे जाने वाले कबीर साहेब के विचारों को अपने जीवन में आत्मसात करने वाले पूज्य संत श्री अभिलाष साहेब ने अपनी कथनी और करनी की एकरूपता के कारण भारतीय समाज को बहुत गहराई तक प्रभावित किया। न केवल कबीरपंथी समाज बल्कि हर वर्ग के लोगों में उनके प्रति अपार श्रद्धा थी। क्योंकि साहेब जी के हृदय में सबके लिए अथाह करुणा एवं प्रेम था। इसके अतिरिक्त वे अत्यंत व्यवहारकुशल थे। उनसे मिलकर हर व्यक्ति को यही महसूस होता था कि वे उसे ही सबसे अधिक स्नेह प्रदान करते हैं।

कुछ लोग अत्यंत भाग्यशाली होते हैं। प्रारब्ध की प्रबलता कहिये या पूर्व जन्म का दिव्य संस्कार कि उन्हें सब कुछ अनायास ही मिल जाता है। श्री राम साहेब ऐसे ही व्यक्तियों में से एक हैं जिन्हें साधना पथ में प्रवेश करते ही पूज्य साहेब जी की सेवा करने का अवसर मिला, जिनके दर्शन एवं सान्निध्य पाने के लिए संत तथा भक्त समाज सदा ही लालायित रहा। आपने अपने जीवन का बेशकीमती हिस्सा यानी युवावस्था श्री साहेब जी के चरणों में व्यतीत किया और साहेब के शरीर छोड़ने तक उनकी सेवा में लगे रहे। यही वजह है कि आपका भी जीवन आनंद से ओत-प्रोत एवं सद्गुणों की सुगंधियों से भरा हुआ है।

शायद आपको पहले ही आभास हो गया था कि साहेब जी के शरीर में एक दिव्य आत्मा निवास करती है। इसीलिए आप साहेब जी के जीवन में घटित घटनाओं को, जो आप स्वयं देख, सुन और महसूस कर रहे थे; तथा समय-समय पर साहेब जी के द्वारा उद्घाटित प्रसंगों को भी खामोशी से लिपिबद्ध करते रहे। महापुरुषों के हर क्रिया कलाप समाज के लिए

अनुकरणीय तथा प्रेरक होते हैं। आपने सप्रयास साहेब जी की जीवन गाथा के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालने की भरपूर कोशिश की है। और इसमें आप पूरी तरह सफल हैं। इस तरह उनका यह संकलन साहेब जी के जीवन और दर्शन दोनों पक्षों पर एक प्रामाणिक दस्तावेज़ बन गया है। आपका यह कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है तथा समाज के लिए बहुत बड़ा योगदान है। यह श्री साहेब जी के प्रति राम साहेब की श्रद्धांजलि भी है।

गुरुर, बालोद **—भावसिंह हिरवानी**
छ.ग.-491237

निवेदन

सद्‌गुरु अभिलाष साहेब जी का नाम याद आते ही एक शातात्मा, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य एव समाधि के धनी; त्याग-तपोनिष्ठ महामूर्ति की तस्वीर सामने आ जाती है। आपने सदगुरु कबीर साहेब की इन पक्तियो को अक्षरश: चरितार्थ कर दिया—'जस कथनी तस करनी, जस चुम्बक तस ज्ञान।' 'ज्यो की त्यो धर दीन्ही चदरिया।'

गुरुदेव अभिलाष साहेब ने एसा जीवन जिया कि आपका हर कर्म एव विचार मनुष्य मात्र के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया। आपके जीवन-दर्शन से लाखो लोगो को सुन्दर एव शान्तिमय जीवन जीने का मार्गदर्शन मिला। 'गुरुदेव के जीवन-दर्शन पर कुछ लिखा जाना चाहिए' समय-समय से सतो-भक्तो मे ऐसी चर्चा होती रही। एक बार गुरुदेव जी के पास भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी आये और बैठते ही उन्होने कहा—साहेब जी! आपके जीवन, समाज और सस्मरणो की एक पुस्तक होनी चाहिए, इससे समाज का बड़ा हित होगा। इसे लिखने मे केवल आप हो समर्थ हैं। गुरुदेव जी ने कहा—अब इस बुढ़ापे मे मैं अपने जीवन की मुर्दा बाते लिखू? यह सभव नही है।

श्री प्रेमप्रकाश जी की बात सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, लेकिन गुरुदेव जी का जवाब सुनकर निराशा भी हुई। इस घटना के दो वर्ष बाद सत श्री देवेन्द्र साहेब जी ने आग्रहपूर्वक मुझसे कहा—गुरुदेव जी के जीवन पर आप कुछ लिखो। मैंने कहा—साहेब जी! मेरी शक्ति से आप सुपरिचित हैं। यह आप क्या कह रहे हैं? लकिन वे आग्रह करते रहे।

गुरुदेव जी की शरण मे आने के साल भर बाद आपकी सेवा मे रहने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। लम्बे समय तक निकट से आपको देखने-सुनने एव आपक स्वभाव-रुचि और हर कार्य-व्यवहार को समझने का अवसर मिला। आपकी जीवनचर्या एव आदर्शमय रहनी हृदय को स्पर्श करती थी। लिखने का उत्साह भी होता था, लेकिन जब लिखने बैठता तो समझ मे नही आता था कि क्या और कैसे लिखू। मई सन् 2005 मे गुरुदेव जी के साथ गुजरात जाना हुआ। वही मैं अपने मनन-चिन्तन हेतु आगन्तुको के सम्मुख गुरुदेव जी द्वारा की

गयी चर्चा पर कुछ लिखने का प्रयास करने लगा। धीरे-धीरे यह प्रयास बढ़ता गया। आपके प्रवचनो मे भी व्यक्तिगत जीवन पर काफी सामग्री मिली। अनेक ऐसी बाते होती जिन्हे मैं गुरुदेव जी से पूछता रहा। कभी-कभी बताने की आपकी रुचि न होने पर भी मैं दुबारा पूछता, अतत: गुरुदेव जी बताते। घटनाओ को लिखते समय उसकी प्रामाणिकता के लिए दिनाक, वर्ष, व्यक्ति, स्थान आदि पर भी ध्यान रखा गया जो गुरुदेव जी से पूछकर, स्वय की जानकारी अथवा अन्य प्राप्त आधार पर लिखा गया है। वर्षो अनेक विषयो पर लिखते हुए कई डायरिया हो गयी। एक दिन मैंने गुरुदेव जी से प्रार्थना किया कि गुरुदेव जी, मैंने टूटे-फूटे शब्दो मे कुछ लिखने का प्रयास किया है। कृपा करके एक बार आप उसे पढ़ लेते तो उसकी सफाई हो जाती।

गुरुदेव जी ने कार्यक्रमो की व्यस्तता होते हुए भी 2009 के वर्षावास मे मुझे बुलाकर कहा—तुमने जो लिखा है उसे ले आओ। मैंने सभी डायरिया आपको टेबल पर रख दी। अन्य अनेक काम करते हुए भी गुरुदेव इसे पढ़कर उनतीस दिनो मे शोध दिये।

इस पुस्तक मे वस्तुत: मेरा कुछ है भी नही। गुरुदेव जी के जीवन की कुछ मणियो को मैंने शब्दो मे पिरोने का प्रयास किया जो स्वय के स्वार्थवश हुआ है। जिन कृपालु गुरुदेव ने हमारा परम उपकार किया, उनके गुणानुवाद मे हम अपनी वाणी पवित्र करे तो यह उनके प्रति कृतज्ञता स्वीकार करना है। जिन्होने अपना तन-मन तपाकर हमारा सब प्रकार से उपकार किया उनकी प्रशसा मे हम दो शब्द भी न कह सके तो हम जैसा कृतघ्न कौन होगा। आपके उपकार को हम शब्दो मे नही चुका सकते। मैं अपने को देखता हू और गुरुदेव के प्यार, स्नेह एव उनकी करुणादृष्टि को देखता हू तो दोनो मे कोई तुलना ही नही। फिर भी मुझ जैसे व्यक्ति को आपने अपनाया। ऐसे परम पावन-कृपालु श्री गुरुदेव के चरणो की तथा उनकी शिक्षाओ की भक्ति बनी रहे यही गुरुदेव और सत-भक्त समाज से प्रार्थना है।

इसे लिखने मे अनेक सतो-भक्तो एव सती-साध्वी, मा-बहनो का उपकार है, जिन्होने छोटी-बड़ी अनेक जानकारिया दी उन सबके लिए मैं हृदय से आभारी हू। स्वमत-परमत के बहुत से सतो-भक्तो एव विद्वानो का नाम कुछ घटनाओ मे आया है उन्हे प्रस्तुत करने मे कुछ भूल हुई हो या खास बाते छूट गयी हो तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हू। कुछ ऐसे भी लोग थे जो गुरुदेव जी से अभिन्न रूप से जुड़े थे, लेकिन उनसे सम्बन्धित घटनाओ की जानकारिया न मिलने के कारण उनकी चर्चा नहों हो सकी है।

पुस्तक के अंत में एक छंद है जिसमें गुरुदेव जी के जीवन की संक्षिप्त झलकियां हैं। इसे मेरे अग्रज पूज्य संत श्री विकास साहेब जी ने मेरे निवेदन को स्वीकार कर लिखा है। उनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हू। इसके अनेक विषयो पर महत्त्वपर्ण सुझाव देने के लिए मैं ब्र० श्री देवेन्द्र साहेब का आभारी हू, और आभारी हू श्री सगम लाल जी का जिन्होने अत्यन्त हर्ष और उत्साह के साथ इसका कम्पोज किया। इसके अलावा भी अनेक गुरुजनों-संतों, सज्जनों एवं देवियों से जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग मिला, उन सबको मैं हृदय से नमन करता हूं। इस कृति से पाठकों को थोड़ा भी लाभ मिलेगा तो मैं इस प्रयास को सफल समझूंगा।

अतत: सबसे ज्यादा उपकार तो परम पूज्य श्रद्धेय सत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी का है। जिन्होने इसे लिखने मे अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारिया दी। आपने जब जाना कि मैंने कुछ लिखा है तो स्वय इसकी कॉपी मगाकर, मनोयोगपूर्वक शोधने, व्यवस्थित रूप देने, छापने आदि मे दीर्घकाल तक अथक परिश्रम किया और अपना अमूल्य समय दिया। आपकी इस लगन और कृपा क बिना यह काम हो ही नही सकता था। आपके प्रति हम आभार क्या प्रकट करे; इस पुस्तक के साथ हम स्वय आपके हैं।

पाठको से विनम्र निवेदन है कि इसमे आयी हुई समस्त अच्छाइयो को गुरुदेव जी की माने और कुछ त्रटिया मिलती हैं तो वह मेरी हैं, समस्त गलतियो के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हू। त्रटियो के लिए सुझाव मिलने पर आगे उनका सशोधन किया जा सकता है।

कबीर आश्रम, कबीरनगर
इलाहाबाद, कबीर जयन्ती
सन् 2014

गुरुदेव जी के चरणो का दास
राम दास

विषय-सूची

खण्ड-1

पूर्व जीवन

1.	प्रस्तावना	...	27
2.	जन्म एवं बाल्यकाल	...	28
3.	भूत-प्रेत का भ्रम और उसका निवारण	...	29
4.	शिक्षा	...	31
5.	किशोरावस्था में ताऊ को चेतावनी	...	32
6.	विवाह-बंधन	...	33
7.	माता-पिता के लिए स्वर्ग की कामना	...	33
8.	पारख सिद्धान्त से परिचय-पूर्व आपकी भक्ति-आराधना	...	34
9.	क्या रोज सध्योपासना करते हैं?	...	35
10.	एक थवई की प्रेरणा	...	36
11.	तुम्हें हंस भी मिलेंगे!	...	36
12.	बोध हो गया	...	37
13.	पान खाने की आदत	...	37
14.	गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के प्रथम दर्शन	...	38
15.	गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी का प्रभाव	...	39
16.	गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी का संक्षिप्त परिचय	...	41
17.	बड़हरा आश्रम पर प्रथम आगमन	...	44
18.	'निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर' का प्रभाव	...	45
19.	बीजक टीका त्रिज्या की खोज	...	46
20.	आज दिन ही रहने दो, संध्या न करो	...	47
21.	व्यवहार कुशलता	...	48
22.	दिल जोड़े से बड़ा दुख होय	...	48
23.	प्रथम पद रचना	...	49
24.	वैराग्य की विरह-व्यथा	...	50

25. निर्वाह की चिन्ता नहीं ... 51
26. साधु-गुरु के प्रति अटूट आस्था ... 52
27. वैराग्यवर्द्धक घटनाए ... 53
28. वैराग्य पर व्यंग्य ... 55
29. गृह-त्याग ... 55
30. एक अंधविश्वास को चुनौती ... 56

खण्ड-2

साधना के वर्ष

1. साधुवेष और बुरहानपुर की यात्रा ... 61
2. आपकी सेवा-भावना ... 62
3. बुरहानपुर से वापसी ... 62
4. गुरु आश्रम से जन्म स्थान जाना ... 63
5. कुभ मेला चलोगे या विशालदेव के दर्शन करने? ... 66
6. आपकी भी शानो-शौकत नहीं रहेगी ... 67
7. पुत्र अम्बिका प्रसाद की मृत्यु ... 69
8. आप तो राम में लीन रहो! ... 71
9. वैराग्य में सम्बन्ध क्या? ... 72
10. चिवरी बंगला में आपकी साधना ... 73
11. खान-पान मे सयम ... 75
12. संत की पहचान ... 76
13. अधविश्वासियो से सामना ... 77
14. भूल के लिए स्वीकार भाव ... 78
15. गुरु की आज्ञा आवै, गुरु की आज्ञा जाय ... 79
16. आपका धैर्य ... 81
17. खिजुवा खीजि न बोले हो ... 82
18. गुरुदेव की शरण में रहना ही ऊची गद्दी है ... 82
19. अद्भुत तितिक्षा ... 83
20. निर्णय तो यही मिलता है ... 84
21. भाति-भाति के लोग ... 85
22. सच्चे गुरु की शरण ही अमृत है ... 86
23. शृगीऋषि पर्वत पर गुरुदेव का प्रवचन ... 87

24. आप भी उन्हीं के पक्ष में हो जाइये ... 88
25. गुरु जी जो कहैं हैं वह सच लगै है! ... 89
26. हम आपकी चाल जानते हैं ... 90
27. बोध और विवेक से ही कल्याण है ... 91
28. अद्वैत ब्रह्मवाद की समीक्षा ... 92
29. ज्ञान की पुस्तके पढ़ते हो? ... 94
30. सम्बन्ध से घबराहट ... 95
31. सब ब्रह्मचारी हो जायेंगे तो सृष्टि कैसे चलेगी? ... 96
32. कोई चिता तो नहीं है? ... 97
33. गुरुदेव की करुणा ... 98
34. बातो का प्रभाव ... 99
35. एक-एक शब्द स्वर्ण अक्षरो मे लिखकर टागने लायक है ... 100
36. रूह के लिए भी कुछ काम करते हैं? ... 102
37. कोई किसी का उद्धारक नही! ... 103
38. क्या आपने वैदिक मार्ग को छोटा समझा? ... 104
39. तभी तो आप इतना गरजते हैं! ... 105
40. है कोई बैगा? ... 106
41. प्रम की निस्सीमता ... 107
42. समस्या तो अहकार मे है ... 109
43. आप बुद्धिवादी हैं या...? ... 110
44. नाम-रूप से परे ... 111
45. एक तपस्वी संत और वैराग्य संजीवनी ... 111
46. वैराग्य की उत्कर्षता ... 112
47. दिल मे जो दिल बनके धड़के ... 114
48. परपरा के प्रति प्रेम भाव ... 115
49. ठडा तेल लगा दू! ... 116
50. परमत वालों से भी समता का भाव ... 117
51. मा जैसी ममता ... 118
52. परमात्मा कब मिलेगा? ... 119
53. खोजी प्रवृत्ति ... 120
54. पांडित्य काम नहीं देता ... 120

55. विश्वास से विश्वास बढ़ता है ... 122
56. आत्म-सुधार ही समाज-सुधार है ... 122
57. आपको कोई चिन्ता होती है? ... 123
58. इस नकल का क्या नाम है? ... 123
59. हम मनुस्मृति फूकना चाहते हैं ... 124
60. कबीर संगति साधु की, कटै कोटि अपराध ... 125

खण्ड-3

संत-भक्तों का सान्निध्य

1. सद्गुरु श्री विशाल देव का सान्निध्य ... 129
2. ऐसा हमें भी निश्चय है ... 132
3. पूज्य श्री प्रेम साहेब जी के साथ ... 133
4. पूज्य श्री आज्ञा साहेब जी के साथ ... 135
5. गुरुदेव जी और आचार्य श्री रामविलास साहेब ... 136
6. गुरुदेव जी और श्री रामेश्वरानन्द साहेब ... 136
7. गुरुदेव और आचार्य श्रीराम शर्मा ... 138
8. गीताप्रेस के जयदयाल गोयन्दका का दर्शन ... 139
9. गुरुदेव जी और हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ... 141
10. गुरुदेव जी और स्वामी रंगनाथानन्द जी महाराज ... 144
11. गुरुदेव और झाली जी महाराज ... 145
12. गुरुदेव जी और महंत श्री नृत्यगोपालदास जी महाराज ... 146
13. गुरुदेव और संत श्री शीतल साहेब ... 149
14. गुरुदेव और संत हृदयराम जी महाराज ... 150
15. लीलाशाह जी की समाधि भूमि पर ... 151
16. मदर टेरेसा से मुलाकात ... 152
17. गुरुदेव जी और भदन्त आनन्द कौशल्यायन ... 152
18. गुरुदेव जी और आनन्द मूर्ति गुरु मां ... 154
19. गुरुदेव और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की मुलाकात ... 155
20. गुरुदेव जी और डा० ब्रजलाल वर्मा ... 156
21. गुरुदेव जी और महर्षि महेश योगी ... 158
22. गुरुदेव जी और पथिक जी महाराज ... 160
23. गुरुदेव जी से एक वैष्णव संत की वार्ता ... 161

24. गुरुदेव और नाथाभाई ... 162
25. गुरुदेव जी और आत्माप्रसाद अस्थाना ... 164
26. गुरुदव जी और भक्त श्री रामलाल गुप्त ... 165
27. गुरुदेव जी और भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी ... 167
28. गुरुदेव जी एवं श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ... 168
29. दो वैज्ञानिकों से गुरुदेव जी का मिलन ... 170

खण्ड-4

व्यक्तित्व

1. व्यक्तित्व ... 175
2. शारीरिक बनावट ... 175
3. स्वास्थ्य ... 176
4. खान-पान (भोजन) ... 176
5. वस्त्र एवं खड़ाऊं आदि ... 178
6. गुरुदेव का टकसार ... 178
7. बातचीत करने का ढंग ... 180
8. बोधदाता के प्रति उपकार ... 182
9. प्रवचन-शैली ... 183
10. आपका समन्वय ... 185
11. गुरुदेव की सहिष्णुता ... 185
12. गुरुदेव की उद्वेगहीनता ... 187
13. समय की पाबन्दी ... 189
14. स्वाध्याय की रुचि ... 189
15. सोना-जागना ... 192
16. चलना-बैठना ... 192
17. लोगों से मिलना-जुलना ... 193
18. गुरुदेव का निवास-स्थान ... 195
19. सामाजिक नियमों के पक्के ... 196
20. गुरुदेव द्वारा दीक्षा एवं साधुवेष देने की विधा ... 197
21. सबसे बच-बचकर रहने की प्रवृत्ति ... 199
22. बड़ों के प्रति मर्यादा ... 200
23. वृद्धों से विशेष प्रेम ... 201

24. निष्काम सेवा भाव ... 203
25. छोटी-छोटी बातों में सजगता ... 204
26. हानि-लाभ से ऊपर ... 205
27. सुन्दर जीवन का शौक ... 207
28. वस्तु का सदुपयोग ... 208
29. हंसी-विनोद ... 209
30. सफाई-स्वच्छता में तत्परता ... 214
31. यात्राएं ... 218
32. अद्भुत क्रांति ... 221

खण्ड-5

विभिन्न घटनाएं

1. आत्मा को जाननेवाला ब्राह्मण है! ... 229
2. ये हरिजन हैं ... 230
3. मनुष्य में त्याग की शक्ति है ... 231
4. मेरा सब रिजर्वेशन है ... 232
5. मैंने कबीर का दर्शन किया है ... 233
6. कर्मशील बनो ... 233
7. धर्म का स्तम्भ नही टूटता ... 234
8. आपसी कलह का समाधान ... 235
9. आपकी पुस्तकें मैंने फेंक दी ... 236
10. आधी शताब्दी बीत गयी! ... 238
11. महाराज कृष्ण को हम नाचते हुए नहीं देख सकते ... 238
12. मूड़ मुड़ाये कौन नर तर गये? ... 240
13. शास्त्रार्थ नही, सत्संग कल्याणकारी है ... 240
14. ऊंच-नीच और छूआछूत शास्त्रसम्मत नही ... 242
15. काले लोग किनके अंश हैं? ... 243
16. दिखावे से दूर ... 244
17. विवादी से विवाद न करना ... 245
18. संतोष से उन्नति ... 246
19. मांस-मांस में भी लोग अंतर मानते हैं! ... 248
20. पिता अपने पुत्र से जाति पूछे! ... 249

21. मनुष्य है तो ईश्वर है ... 249
22. आश्रम में गाय रखना ठीक नही ... 250
23. हम घल बना रहे हैं! ... 251
24. विवेकपूर्वक चरण स्पर्श ... 252
25. मैं भी लड़ने चलूंगा! ... 253
26. क्या हम गुलाम बन जायं? ... 254
27. उपनिषद्-सौरभ ... 255
28. क्या आपको श्रद्धा नहीं है? ... 256
29. जीने की भी इच्छा नहीं होनी चाहिए ... 256
30. शब्दों का प्रभाव ... 257
31. यहां कोई बड़ा नही है ... 258
32. ब्राह्मण हैं तो तपस्या करें ... 259
33. मनुष्य केवल मनुष्य है ... 260
34. थोड़ा गुड और पानी! ... 260
35. फकीर कौन? ... 261
36. त्यागी कैसे? ... 262
37. यूरोपीय बहनें और गुरुदेव जी ... 262
38. बाह्य मर्यादा की भी आवश्यकता ... 264
39. कण-कण में नहीं, घट-घट में है ... 264
40. व्यर्थ संशय क्यों? ... 265
41. जीवन भी शुक्ल है! ... 266
42. मैं तो पक्का स्वार्थी हूं! ... 267
43. घटनाओं से ऊपर ... 268
44. तुमने सच्ची परख की ... 269
45. सब्जी-रोटी बना दो ... 270
46. मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुम हार जाओ! ... 271
47. इनका पानी नहीं चलता ... 272
48. हम आपके परोक्ष शिष्य हैं ... 272
49. स्थायी आश्रम ... 273
50. गुरुदेव आप कितने अच्छे हैं! ... 274
51. सच्चा आनंद ... 276

52.	महा पाप लगा	...	276
53.	एक कृष्ण मंदिर में गुरुदेव जी का प्रवचन	...	277
54.	थोड़ी भी ठेस पहुंचाये बिना	...	278
55.	दान आत्म-प्रशंसा के लिए नहीं	...	278
56.	परिश्रम करो और प्रसन्न रहो	...	280
57.	चतुर्दिक सावधानी	...	281
58.	सुख-दुख में समता साथ रहे	...	281
59.	व्यवहार और परमार्थ का ज्ञान	...	283
60.	सृष्टि किसने बनाई?	...	284
61.	वे भी तो मनुष्य हैं	...	286
62.	चिंता तो वे करें	...	287
63.	संयोग-वियोग से ऊपर	...	287
64.	गम-संतोष का प्रभाव	...	288
65.	गांधी जी की जन्मस्थली और तपस्थली पर	...	289
66.	ऋणमुक्त व्यक्तित्व	...	290
67.	अनात्म पर समीक्षा	...	291
68.	गुरुदेव का धैर्य	...	295
69.	भेद-भाव रहित बरताव	...	296
70.	गुरुदेव की सहनशीलता	...	296
71.	आत्मतृप्ति सर्वोच्च है	...	298
72.	यथाप्राप्त में संतोष	...	299
73.	निंदा-प्रशंसा में समता भाव	...	300
74.	मजहबी भावनाओं से ऊपर	...	301
75.	श्री परशुराम त्रिपाठी के वानप्रस्थ आश्रम मं	...	301
76.	तम्बाकू से इतना प्रेम!	...	305
77.	क्या बच्चेवाले सुखी हैं?	...	305
78.	कृपा दृष्टि	...	307
79.	गुरुदेव जी श्रावस्ती में	...	309
80.	गुरुदेव जी वैशाली में	...	310
81.	गुरुदेव की करुणा	...	312
82.	मृत्यु सबके निकट है	...	314
83.	परिस्थितियों से घबराओ नहीं	...	315

84. गुरुदेव की उदारता ... 316
85. जाति-पांति आधारित ऊंच-नीच की भावना का विरोध ... 317
86. सकारात्मक सोचो ... 318
87. चिंता त्यागकर जीयें ... 319
88. निर्मोहता कैसे पक्की हो? ... 320
89. गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब और छत्तीसगढ़ ... 322
90. धन के नाम पर कबाड़ ... 323
91. अमृत कहां है? ... 324
92. भक्ति और अहंकार एक-दूसरे के विरोधी हैं ... 325
93. जापानी महिला को सम्बोधित करते हुए ... 326
94. मैं गोपाल कृष्ण की उपासिका हूं ... 328
95. गुरुदेव जी झूंसी में शेखतकी की मजार पर ... 329
96. जेलों में गुरुदेव के प्रवचन ... 330
97. वे तो एक वैज्ञानिक हैं ... 331
98. लोकसभा भवन के पास एक कार्यक्रम ... 333
99. गुरुदेव जी की जम्मू यात्रा ... 335
100. गुरुदेव की एक पत्रकार से वार्ता ... 337
101. बिना बोले कैसे खेलें? ... 340
102. भगवान अपना कर्मफल भोग रहे हैं! ... 341
103. निश्िंचतता और निर्मोहता की सीख ... 341
104. जानवरों से प्रेरणा ... 342
105. अच्छे स्वास्थ्य के लिए क्या खाना चाहिए? ... 343
106. भगवान का अवतार होने वाला है ... 343
107. मेरी जगह पर आप होते तो कैसे रहते? ... 345
108. कटुक बचन मत बोल रे ... 346
109. विदेह भाव का अनुभव ... 347
110. क्या हर्ष क्या शोक? ... 348
111. क्या सब कुछ एक है? ... 349
112. एक बच्चे को समझात हुए ... 350
113. इलाहाबाद से गुजरात यात्रा ... 351
114. खाली समय में क्या सोचूं? ... 353
115. कबीर जयन्ती पर पाकिस्तानवासी भक्तों के लिए संदेश ... 354

116. ट्रेन दुर्घटना में ... 356
117. सड़क दुर्घटना ... 357
118. आपको किस नाम से जानूं? ... 358
119. मान्यताओं की पकड़ से ऊपर उठो ... 359
120. हम लोग तो गृहस्थ हैं ... 361
121. अपने को जगाना ही सर्वोच्च उपलब्धि है ... 362
122. दुर्व्यसनों का त्याग ही हितकर है ... 363
123. समय बदलता है ... 364
124. प्रेम के बीज बोयें ... 364
125. सोचने का ढग ... 365
126. वैराग्य की उपाधि झूठी ... 366
127. 'शान्ति और साहस' एक लघु वार्ता ... 367
128. दिल को पत्थर बनाओ ... 369
129. अंत में एक बार फिर नये दांत ... 370

खण्ड-6

अन्तिम दिन

1. गुरुदेव जी के अन्तिम दिन ... 375
2. गुरुदेव के चरणों में श्रद्धा-सुमन ... 380

खण्ड-7

कबीर पारख संस्थान एवं गुरुदेव जी का समाज

1. कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद का संक्षिप्त परिचय ... 385
2. गुरुदेव जी और उनका समाज ... 398

खण्ड-8

गुरुदेव का साहित्य

1. गुरुदेव का साहित्य ... 411
2. कुछ महत्त्वपूर्ण तिथि एवं घटनाएं ... 444

❶

पूर्व जीवन

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेब : जीवन-दर्शन

1.

प्रस्तावना

भारत की धर्म-पताका सदा से ही ऊंची रही है। यहां पुराकाल से ऋषि-मुनि, संत-साधक आत्मज्ञान का शोध करते आये हैं। भारत के प्राचीनतम ग्रंथ वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि में आत्मज्ञान के मोती बिखरे पड़े हैं। इन ग्रंथों से ज्ञान-रत्न निकालकर जो अपना काम करता है, उसका कल्याण हो जाता है।

आज से छः सौ वर्ष पूर्व भारत की धरती पर एक ऐसे ज्ञान-मार्तण्ड का प्रादुर्भाव हुआ जिन्हें हम 'कबीर' के नाम से जानते हं। जिनके एक हाथ में सारे अंधविश्वासों और पाखण्डों को ध्वंस कर देनेवाली मशाल थी तो दूसरे हाथ में मानवता की वाटिका को सींचने के लिए प्रेम का शीतल निर्झर। सद्गुरु कबीर का गहन चिन्तन, उनकी निष्पक्षता, निर्भीकता तथा सत्यासत्य निर्णय कर देनेवाली वाणी ऐसी अद्भुत है कि बरबस सबके दिल को मुग्ध कर देती है।

उन्हीं सत शिरोमणि सद्गुरु कबीर की सत-परम्परा में बीसवी सदी मे एक देदीप्यमान महापुरुष आते हैं जिन्हें हम 'संत अभिलाष साहेब' के नाम से जानते हैं। हृदय में साधना की अथाह गहराई एवं मस्तिष्क में ज्ञान की असीम ऊंचाई लिए, वे सभी मत-पन्थों, महापुरुषों और सद्गंथों में सद्गुणों की सुगंध खोजते हैं और मिथ्या मान्यताओं की भित्ति को श्रोताओं के दिल में बिना ठेस पहुंचाये सहज ही गिरा देते हैं। उनका निवास-स्थान केवल उनका अपना निज स्वरूप है। ऐसे महान संत श्री अभिलाष देव का जीवन-दर्शन यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

2.

जन्म एवं बाल्यकाल

उत्तर प्रदेश मे गोरखपुर-लखनऊ के बीच बस्ती जिला पड़ता है, इसी से विभाजित होकरसिद्धार्थनगर जिला बना। इसी के अतर्गत डुमरियागंज बाजार से लगभग दस कि0मी0 दक्षिण और भवानीगंज से डेढ़ कि0मी0 उत्तर पर खानतारा नाम का एक गांव है। उसमें पडित श्री वासुदेव शुक्ल तथा पंडित श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल दो भाई रहते थे। पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल छोटे थे और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। वे कांग्रेस कमेटी के रठैना मण्डल के मंत्रो थे और 1942 के स्वतत्रता आन्दोलन में अनेक बार जेल भी गये थे।

पडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल के औरस से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जगरानी देवी के गर्भ से समय के अतराल मे दो पुत्रो का जन्म हुआ, जिनकी थोड़े ही दिनो मे मृत्यु हो गयी। इसलिए पूरे परिवार मे पुत्र-वियोग का मातम छाया हुआ था। कुछ लोगो मे यह मान्यता थी कि शायद हमारी कुल-देवी नाखुश हैं इसलिए कुलदीपक को वह बुझा देती है। सबके मन मे यही एक कामना थी कि हमारे परिवार मे एक ऐसा पुत्र हो जो सबका प्यारा और सबकी आखो का तारा हो जाये।

समय का प्रवाह बदला। मा जगरानी देवी की कोख से 17 अगस्त, 1933 तदनुसार भादों कृष्ण द्वादशी, सवत 1990, दिन गुरुवार को एक बालक का जन्म हुआ। पूरे परिवार मे खुशियो की लहर आ गयी। परिवार मे वर्षों के बाद सतान-प्राप्ति की कामना के पूर्ण होने पर घर के सभी सदस्यो का रोम-रोम पुलकायमान हो गया। खुशियो से पूरा घर आलोकित हो उठा। उस बालक का नाम 'रामसुमिरन' रखा गया।

श्रीमती जगरानी देवी की कुल चार सताने—रामसुमिरन, फूलमती देवी, रामकुबेर तथा रामउग्रह। माता-पिता के प्यार एव देख-रेख मे धीरे-धीर बच्चे बढ़ने लगे। अपने बहन-भाइयो मे रामसुमिरन जी सबसे ज्येष्ठ थे। कौन जानता था कि यह नन्हा बालक आगे चलकर विरक्त सत, यथार्थ ज्ञानी-विद्वान, आत्मचितक, दार्शनिक, लेखक और हजारो का सरक्षक बनेगा।

रामसुमिरन जी छुटपन से ही अत्यन्त शात और व्यर्थ हरकतो से दूर रहते थे। ऐसा लगता था मानो आपकी चेतना कहती हो कि अरे, तू इस दुनिया मे क्यो आ गया? उन दिनो आपकी उम्र ढाई-तीन वर्ष की रही होगी। एक दिन माता जगरानी देवी ने आपको बडो (कमीज) पहनाना चाहा किन्तु आपने बडी पहनने

से इकार कर दिया। माता ने आपको पकड़कर जबरदस्ती बडी पहना दी। इससे आप जमीन पर लोट-लोटकर जोर-जोर से रोने लगे। रोना आपका तभो बन्द हुआ, जब बडी उतार दी गयी। इस प्रकार जन्म से ही आपको बधन प्रिय नही थे।

माता जगरानी देवी बहुत सात्त्विक विचार की थी। उनकी भक्ति-भावना, पूजा-उपासना, व्रत एव ज्ञान-चर्चा का प्रभाव बालक रामसुमिरन पर भरपूर आया और बचपन से ही व्रत, उपवास, दान, धर्म, भक्ति, नाम-जप, कथा-श्रवण, गरीब दीन-दुखियो की सेवा, बड़ो का आदर आदि मे आपकी बड़ी अभिरुचि थी। यह सब करने मे आपको बहुत आनन्द आता था।

3.
भूत-प्रेत का भम और उसका निवारण

बच्चों का दिल बड़ा कोमल होता है। बचपन में उनको जो बात बता दी जाती ह वह उनके हृदय में गहराई से पैठ जाती है। इसलिए इस अवस्था में बच्चों को अच्छे संस्कार देना आवश्यक है। बिना निर्भय ज्ञान प्राप्त हुए सभी के मन में भूत-प्रेत का भ्रम समाया है। लोग यही मानते हैं कि भूत-प्रेत की खानि होती है और वे रूप बदलकर लोगों को कष्ट देते रहते हैं। रामसुमिरन के मन में भी बचपन में इसका भय बना रहता था।

शाम को जब माता जी भोजन बनाती तो आप बरामदे में बैठे उनके क्रिया-कलाप को देखते रहते और उनसे बातें भी करते रहते। जब भोजन बन जाता तो माता जी आपसे कहतीं—बेटा! भोजन तैयार हो गया है। जाओ, अपने पिता जी को बुला लाओ, भोजन कर लें। तब पिता जी को बाहर के बरामदे तक बुलाने जाना आपके लिए कठिन होता था क्योंकि रसोई-घर से चलकर अंधरे में दो कमरे, एक बड़ा आंगन इसके बाद फिर एक आंगन पार कर बरामदे तक पहुंचने में आपको भय लगता था।

आप यही सोचते कि अंधरे में कहीं मुझे भूत पकड़ न ले। भूत के भय से आप जहां तक दीपक का प्रकाश पहुंचता, वहां तक तो सहज चले जाते कितु जहा अंधरा होता दौड़ कर जाते। ऐसी स्थिति में बरामदे में रखे हुए दीपक की ओर आप सीध देखते हुए जाते। क्योंकि आपको भय होता था कि अंधरे में इधर-उधर देखूंगा तो कहीं भूत-प्रत से मेरी नजर न लड़ जाये। इस प्रकार बचपन में भूत-प्रेत का भय आपको बहुत लगता था।

किशोरावस्था में आपका स्वास्थ्य एक बार बहुत खराब हुआ। पिता जी एक पंडित जी को बुला लाये। पंडित जी पढ़े-लिखे विद्वान थे। समय-समय से वे श्रीमदभागवत की कथा लोगों को सुनाते थे और साथ-साथ झाड़-फूक भी करते थे। वे रामसुमिरन को भी झाड़ने के लिए आये। आपको देखने के बाद उन्होंने कहा—बच्चा! कुछ लगहर लगा है। तुमको एक भूत और एक चुड़ैल ने पकड़ रखा है जो बाहर के हैं। इनको तो हम पकड़ लेंगे कितु एक ब्रह्मराक्षस[1] है, जो तुम्हारे ही कुल का है। उसको पकड़ पाना हमारे वश की बात नहीं है। उसको तुम्हें ही पूजना पड़ेगा।

इतना कहने के बाद वे आपको खाट पर पैर लटकवाकर बैठा दिये और खूब बारीक पीसी चिकनी मिट्टी से आपके पैरों की धोरे-धोरे मालिश करने लगे। इस प्रकार पंडित जी रुक-रुककर तीन बार देर तक मालिश करते रहे और धोरे-धोरे मंत्र भी पढ़ते रहे।

अन्ततः शाम तक आप चलन-फिरने लगे और स्वस्थ हो गये। इसी प्रकार बीमार होने पर अन्य समय भी आपको झड़ाया-फुकाया गया। धोरे-धोरे समय बीतता गया और आपकी लगभग सत्तरह-अठारह वर्ष की उम्र हुई। तब तक आप को कबीर साहेब के विचार भी मिल चुके थे। और आपके मन में यह साफ हो गया था कि भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र, झाड़-फक सब भ्रम और अंधविश्वास मात्र है, जो वंचको द्वारा भोले-भाले लोगों को ठगने का साधन मात्र है।

कबीर साहेब के विचार मिलने के बाद रामसुमिरन का स्वास्थ्य एक बार फिर खराब हुआ। बचपन से आपका यह स्वभाव था कि जो सत्य समझ में आता, उस पर आप एकदम दृढ़ हो जाते, चाहे इसके लिए कितना भी त्याग क्यों न करना पड़े। पिता जी ने अबकी बार भी आपके स्वास्थ्य खराब होने का समाचार उसी ओझा पंडित के पास भेज दिया। किन्तु तब तक सब लोग समझ गये थे कि अब रामसुमिरन जी मंत्र-तंत्र, झाड़-फक पर विश्वास ही नहीं करते हैं। पंडित जी पुनः आये और रामसुमिरन जी के पास बैठते हुए कहे—आपके पिता जी ने मेरे पास संदेश भेजा है कि आपकी तबीयत खराब है, अतएव आकर झाड़ दो। लेकिन आप तो अब झाड़-फूक पर विश्वास ही नहीं करते हं। अब झाड़ूं कि न झाड़ूं?

---

1. **रामसुमिरन के चाचा जी की लगभग पचास वर्ष की उम्र में पेड़ से गिरकर मृत्यु हो गयी थी। उन्हीं को पंडित जी ने ब्रह्मराक्षस होना घोषित कर दिया था।**

रामसुमिरन ने विनोद करते हुए कहा—झाड़ दीजिए, जहां जो कुछ मेर लगा हो। इस प्रकार दोनो हंसने लगे। अब आपका मन बिलकुल मजबूत हो गया था। इसके बाद फिर आपके पास न कोई भ्त-प्रेत आया और न झाड़ने-फूकनेवाला ही।

4.

शिक्षा

रामसुमिरन को उम्र जब आठ वर्ष की हुई तो पढ़ने के लिए आपको पास के मसजिदिया नामक गांव के स्कूल में भेजा गया। वहां आप कक्षा एक में पढ़ते रहे। इसी बीच स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पिता जी को जेल जाना पड़ा। फिर तो आप मजदूरों को लेकर घर एवं खेत की व्यवस्था संभालने में लग गये और आपकी पढ़ाई छूट गयी।

जिस स्कूल में आप पढ़ते थे वहां दो ही अध्यापक थे। एक पंडित जी और दूसरे मौलवी साहेब। पंडित जी हेडमास्टर थे और कड़े स्वभाव के थे। उनसे बच्चे बहुत डरते थे लेकिन मौलवी साहेब अत्यन्त कोमल स्वभाव के थे और बच्चों को बड़े प्यार से पढ़ाते थे।

उन दिनों उर्दू-फारसी भाषा पढ़ना बहुत महत्त्व रखता था। बालक रामसुमिरन भी पंडित जी से उर्दू भाषा का अभ्यास करने लगे। पंडित जी आपको बड़े शौक से पढ़ाते थे। थोड़े ही दिनों में आपको उर्दू भाषा का अक्षर ज्ञान हो गया लेकिन इस भाषा से आपको अरुचि हो गयी। आपने पिता जी से कहा—मैं उर्दू नहीं पढ़ूंगा। पिता जी आपको लेकर स्कूल गये और हेडमास्टर से कहा—यह उर्दू नहीं पढ़ना चाहता है, इसलिए इसका विषय परिवर्तन कर दिया जाय।

हेडमास्टर ने रामसुमिरन के पिता जी को बहुत समझाया कि इन्हें उर्दू भाषा पढ़ाइये। इस भाषा का अगर अभ्यास हो जायेगा तो हिन्दी का अभ्यास अपने आप हो जायेगा। पिता जी ने कहा—आप स्वयं इससे बात कर लें कि यह क्या पढ़ना चाहता है। पडित जी के पूछने पर रामसुमिरन ने साफ्इकार कर दिया। पंडित जी ने कहा—दुर्भाग्य है तुम्हारा जो तुम उर्दू नहीं पढ़ना चाहते।

पडित दुर्गाप्रसाद जी दस महीने जेल में बन्द रहे। जब वे जेल से छूटकर घर आये, तब उन्होंने बालक रामसुमिरन को उस स्कूल में कक्षा दो में पढ़ने के लिए बैठवा दिया। सन् 1942 के समय स्वतंत्रता संग्राम का अभियान बहुत जोरो

पर था। गांधो जी का नारा गूंजा—"अंग्रेजो, भारत छोड़ो" और देश के सारे लोग उनका समर्थन करने लगे।

प0 दुर्गाप्रसाद जी कांग्रेसी नेता थे। उन दिनों देश को आजाद कराने के लिए अनेक सभा-सोसाइटी एवं मीटिंग आदि में उनको सब समय दौड़ना पड़ता था। ऐसी स्थिति में उन्हें घर की व्यवस्था देखने एवं सगे-संबधियों में जाने की फ़ुरसत ही नहीं थी। वे कांग्रेस के काम तथा स्वतत्रता सग्राम में इतने व्यस्त हो गये कि उनको घर-गृहस्थी संभालना असम्भव हो गया। उन्होंने बालक रामसुमिरन से कहा—बेटा! अब मैं खेती तथा घर का प्रबन्ध नहीं देख सकता। इसलिए तुम ही यह सब देखा करो। फलतः रामसुमिरन खेती और घर संभालने लगे और स्कूली पढ़ाई छूट गयी। घर में बड़े होने के कारण सभी जिम्मेदारी रामसुमिरन पर ही आ गयी। इसके बाद तो पढ़ने का अवसर ही नहीं मिल सका। आपको जो कुछ अक्षरज्ञान हो पाया था उसी के आधार पर आप अभ्यास करते रहे। इस प्रकार कुछ महीने आप कक्षा एक में पढ़े और कुछ महीने कक्षा दो में।

5.

किशोरावस्था में ताऊ को चेतावनी

बालक रामसुमिरन की उम्र थोड़ी थी लेकिन उस कम उम्र में भी आप में अध्ययन के लिए लगन और उत्साह की कमी नहीं थी। रामायण, भागवत, गीता, पुराण आदि शास्त्र उस समय भी यथाशक्ति आप पढ़ते रहते थे।

आपके पिता जी के बड़े भाई श्री वासुदेव प्रसाद शुक्ल कभी-कभी मांस खाते थे। जब वे घर पर मांस लाते तो गृहदेवी को मजबूर होकर घर के बाहरी भाग में उनके लिए उसे पकाना पड़ता, कितु वे स्वयं कभी मांस नहीं खाती। ताऊ जी मांस खाते हैं—यह बात बालक रामसुमिरन को अच्छो नहीं लगतो थो। आप ताऊ जी को अनेक बार समझाने का प्रयास करते, किंतु उन पर कोई फर्क नहीं पड़ता था। एक दिन आपने किसी पुराण में पढा कि जो व्यक्ति मांस खाता है जब वह मरकर यमराज के यहां जाता है तो उसके मुख में लोह का गोला खूब तपा करके डाला जाता है। जो शराब पीता है तेल खौला करके उसके मुख में डाला जाता है।

एक दिन रामसुमिरन दरवाजे पर बैठे पुराण पढ़ रहे थे। ताऊ जी भी सामने बैठे थे। आपने वही मांसाहार का प्रसंग पढ़ना आरम्भ किया। जैसे ही इस बात को ताऊ जी सुने कि मांसाहारी के मुख में लोह का गोला तपाकर डाला जाता है,

वे कांप उठे। वे अत्यन्त भयभीत हो गये और उसी समय से उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब मांस कभी नहीं खाना है और उन्होंने सदा के लिए मांस खाना छोड़ दिया। इस बात से रामसुमिरन जी को बड़ा संतोष मिला।

6.

विवाह-बंधन

आज से पचास वर्ष पूर्व अधिकतम बाल विवाह ही होता था और ब्राह्मणों में तो जितनी जल्दी हो सके बच्चों की शादी कर दी जाती थी। कितने बच्चों की शादी तो उस उम्र में कर दी जाती थी जब वे शादी-विवाह का मतलब समझने लायक भी नहीं रहते थे।

रामसुमिरन की उम्र जब बारह वर्ष की हुई तो आपका विवाह निकट के जनकपुर ग्राम की सरस्वती देवी नाम की एक कन्या से हो गया। अट्ठारह वर्ष की उम्र में आपको एक पुत्ररत्न की प्राप्ति भी हो गयी। उस बच्चे का नाम अम्बिका प्रसाद रखा गया।बालक अम्बिका प्रसाद पर रामसुमिरन जी का अत्यन्त वात्सल्य भाव था। किन्तु प्रारब्ध ने उसके लिए कुछ और ही लिख रखा था। अम्बिका प्रसाद की तीन वर्ष की उम्र मे उसके पिताश्री सदा के लिए उसको त्यागकर सन्यास मार्ग अपना लिये। बच्चा मा से पूछता—मा, मेरे पिता जी कहा हैं? मा के पास कोई जवाब नही होता था, वह कातर नेत्रो से बच्चे को निहारती रह जाती।

7.

माता-पिता के लिए स्वर्ग की कामना

रामसुमिरन जी की उम्र पन्द्रह-सोलह वर्ष की रही होगी। आप जिस गांव मे थे उस गांव से कुछ लोग बद्रोनाथ तीर्थ यात्रा करने गये हुए थे। जब वे लोग तीर्थाटन करके वापस आये तो गांव के अन्य लोग उनसे मिलने आते थे। सब लोग उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। मिलनेवाले आगन्तुकों से उन तीर्थ यात्रियों ने कहा—''भैया! जो जाय बद्री वह न आवै ओद्री।'' अर्थात जो एक बार बद्रीविशाल के दर्शन कर आता है उसका उदर (गर्भ) मे नही आना पड़ता।

रामसुमिरन ने जब यह बात सुनी तो आपके मन में यह वाक्य घर कर गया—''जो जाय बद्री वह न आवै ओद्री।'' आपने सोचा कि मैं तो अभी बच्चा

हूं लेकिन माता-पिता को एक बार बद्रीनाथ जरूर भेजना है। बद्रीविशाल के दर्शन कर आयेंगे तो वे पुन: जन्म-मरण के चक्कर में नहीं आयेंगे, उनका दुख मिट जायेगा। इस प्रकार किशोर रामसुमिरन माता-पिता के प्रति हितकामना सोच ही रहे थे, इन सारी बातों का उनके मन में अभी परिपाक हो ही रहा था कि सत्तरह-अट्ठारह वर्ष की उम्र में आपको पारखी सत और सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब के दर्शन हो गये।

सद्गुरु एवं संतों के मिलने से आपको कबीर साहेब का पारख विचार मिल गया, तब आप यह समझ गये कि ''जो जाय बद्री वह न आवै ओद्री'' केवल महिमा है। इसमें तथ्य कुछ भी नहीं है। इसके बाद तो कर्म-सुधार से जन्म-मरण से छुट्टी पर आपका मनन-चिंतन चलने लगा।

8.
पारख सिhान्त से परिचय-पूर्व आपकी भक्ति-आराधना

किशोर रामसुमिरन भक्ति, वैराग्य, तप, त्याग, ज्ञान आदि अनेक जन्मों के संचित धन लेकर इस जग में आये थे। जब स आप होश में आये तभी से अपने ढंग से कुछ भक्ति-उपासना आदि करते रहे।

हिन्दू परम्परा के अनुसार आप पूजा-उपासना करते थे। जैसे अयोध्या जाकर श्री रामजन्म भूमि, हनुमानगढ़ी आदि मंदिरों में दर्शन करना, पूजा करना, राम जन्मभूमि की फर्श पर उंगली से हस्ताक्षर करना, सरयू में स्नान करना, वैतरणी नदी पार करने के लिए बछिया की पूंछ पकड़ना, पंडे-पुजारी, पुरोहितों तथा ब्राह्मणों को दान करना यह सब आप बड़ी लगन और श्रhा से करते थे। आप कार्तिक पूर्णिमा और रामनवमी के पर्व पर साल मे दो बार अयोध्या पैदल जाते थे। जन्मस्थान से लगभग पचास किलोमीटर दूर अयोध्या है। आने-जाने मे दो-तीन दिन लग जाते थे। बचपन में आपने पुराणों में पढ़ा था कि जो एकादशी व्रत रहता है वह भगवान के धाम में जाता है तथा भगवान के समीप रहने का सौभाग्य प्राप्त करता है। तेरह-चौदह वर्ष की उम्र से ही आप हर एकादशी को निर्जला व्रत रहना शुरू कर दिये थे। उस दिन चौबीस घंटे तक आप पानी भी नहीं पीते थे।

हिन्दू परम्परा के अनुसार आप राम, कृष्ण, विष्णु और शिव—इन चार देवताओं की उपासना करते थे। शिव मंदिर में जाकर आपने कई बार शिव को

धतूरा चढ़ाया है। इन देवताओं को उपासना में आप तद्‌गत हो जाते थे। अकेले में आप इनसे मिलने के लिए रोते थे। रात में इन देवताओं का जप करते हुए सो जाते थे। ऐसी तदाकारता में इन्हीं देवताओं के स्वप्न भी आते थे।

बारह वर्ष की उम्र में आपका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। चौदह वर्ष को उम्र से अट्ठारह वर्ष की उम्र तक आप नियमित संध्योपासना जरूर करते थे। कितना भी आवश्यक काम सामने आ जाता किंतु संध्योपासना आप नहीं छोड़ते थे। रुद्राक्ष की माला जपते-जपते आपकी उंगलियों में घट्ठे पड़ गये थे। सोते समय सुमिरनी जपते-जपते आप सोते थे। आप उस थोड़ी उम्र में ही रामायण, गीता, भागवत, पुराण और वेद भी पढ़ते थे। उस अवस्था में वेद आपको कितना समझ में आता रहा होगा, यह अलग बात है लेकिन आपकी लगन अद्‌भुत थी। आपका तो नियम ही था कि दिन में 'गीता' और रात में 'रामचरित मानस' की कथा कहना। जो कोई आस-पास के लोग आते, वे भी सुनते और स्वय का लाभ तो होता ही था।

साध्-संतों के प्रति आपके मन में अगाध श्रhा रहती थी। आप किसी भी प्रकार के साध्-संतों को देखते, चाहे वे गांजा-भांग पीने-खाने वाले ही क्यों न हों, उनके पीछे लग जाते। उनको आप अपने घर ले जाते और उनकी सेवा करते। आप सोचते थे कि कैसे भी साध् हो हमसे तो श्रेष्ठ ही हैं।

एक बार एक साधु आये जो पन्द्रह दिनों तक आपके घर में रहे। आपने उनकी खूब सेवा की। एक बार घर पर एक संत आये। आपने उनके लिए आसन, जल, भोजन आदि की व्यवस्था की। उनकी बातें सुनने के लिए आप उनके पास बैठते। दूसरे दिन जब उनके चलने का समय हुआ तो आपने मां के पास जाकर कहा—मां, जो संत आये हैं, मेरा मन कहता है, उनको कपड़े दान करूं। माता जगरानी देवी बड़ी दयालु थों। उन्होंने कुछ रुपये दिये और आपने दुकान से कपड़ा खरीदकर चलते समय विदाई में महात्मा को वह कपड़ा और कुछ रुपये समर्पित किया।

9.

क्या रोज सध्योपासना करते हैं?

नवम्बर 1950 का समय था। रामसुमिरन की नियमित सगुण भक्ति-उपासना चल रही थी। एक दिन सायकाल आप अन्दर के बरामद मे आसनी बिछाये, आख बद किये, पद्मासन मे बैठे सध्योपासना कर रहे थे। उसी समय वहा के

प्रसिद्ध वि॥॥ान, वयोवृद्ध, पुरोहित कथाकार महाराजा पडित आपके पिता जी के साथ अन्दर प्रवेश किये। महाराजा पडित आपको आख बद किये सध्योपासना करते हुए दखे तो बहुत प्रभावित हुए।

पडित जी ने आपके पिता जी से पूछा—क्या यह बच्चा रोज सध्योपासना करता है?

पिता जी ने कहा—हा, रोज नियमित करते हैं।

महाराजा पडित जी ने कहा—धन्य हैं। हम बूढ़े हो गये, रोज द्सरो को कथा सुनाने जाते हैं, लेकिन हम स्वय ध्यान, उपासना मे नही बैठ पाते।

10.

एक थवई की प्रेरणा

पास के गांव मे परदेशी नाम का एक कबीरपथी भक्त था, जो मकान बनानेवाला कारीगर था। वह रामसुमिरन की मोटी चोटी और मस्तक पर शैव चन्दन तथा पूजा-पाठ देखकर व्यंग्य करता—अरे पंडित जी! आप जब कबीर साहेब का ज्ञान पाओगे तब सत्य समझ म आयेगा। रामसुमिरन जी जब पूछते कि बताओ कबीर साहेब का ज्ञान क्या है तब वह ज्यादा बता नहीं पाता, परन्तु व्यंग्य करने से नहीं चूकता। उसने आपको एक मूल बीजक दिया जो सत श्री विचार साहेब द्वारा संपादित था और काशी कबीरचौरा से छपा था। उसमें कुछ टिप्पणियां थीं परन्तु उससे अर्थ समझना कठिन था।

11.

तुम्हें हंस भी मिलेंगे!

खानतारा गांव में पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल जी का घर बड़ा प्रतिष्ठित था। मीटिंग, सभा आदि कोई भी सामाजिक समारोह आपके ही दरवाजे पर हुआ करता। अनेक प्रकार के संत भी आया करते। वहां सबका आदर-सम्मान होता। रामसुमिरन उन दिनों सोलह वर्ष के रहे होंगे। एक दिन घूमते-घूमते एक सत आपके दरवाजे पर पधारे। आप उनका आदर-सत्कार किये। दो दिनों तक वे संत आपके आतिथ्य में रहे। दोनो दिन समय-समय से उनस आप सत्संग-चर्चा किया करते।

एक दिन चर्चा करते-करते महात्मा जी ने कहा—बेटा! तुम पक्षियों को दाना चुगाते हो, तो वे अन्य पक्षियों को बताते हैं। जिससे दूर-दूर से अन्य भी

पक्षी आते हैं। इसी प्रकार पक्षियों को दाना चुगाते रहोगे तो कभी वे ही पक्षी हंस को बतायेंगे और तुम्हारे दरवाजे पर हंस भी आयेंगे।

आगे चलकर गुरुदेव समय-समय से अपने प्रवचन या सामान्य चर्चा के दौरान इस बात को कहा करते थे कि उन महात्मा जी की बात मुझे भूल नहीं सकती। उन्होंने कहा था—बेटा! तुम पक्षियों को दाना चुगाते हो तो तुम्हारे दरवाजे पर कभी हंस भी आयेंगे। और मुझे हंस मिले। मेरे गुरुदेव सदगुरु श्री रामसूरत साहेब जी ने नीर-क्षीर का विवेक करके सदगुरु कबीर का खरा ज्ञान मुझे दिया। वे मुझे यह बोध दिये कि तुम्हारा प्राप्तव्य बाहर नहीं वरन् अन्दर है। जिसको पाकर मैं कृतार्थ हो गया। यदि सदगुरु न मिले होते तो पता नहीं आज मैं कहां भटकता होता।

इसी जीवन में जो सब तरफसे मुड़कर अपने आप में समा गया वही मानो सदगुरु के ऋण चुका सका, बाकी सब कर्जदार हैं।

12.
बोध हो गया

सन् 1949 की बात है। एक बार आपके घर एक सत आये। गरमी के दिन थे, द्र से आने के कारण उनको प्यास लगी थी। घर पर आते ही आपने उनका स्वागत किया। उन्होने कहा—बच्चा, पानी पिलाओ, प्यास लगी है।

आप जल्दो से एक बड़े लोटे मे स्वच्छ शीतल जल ले आये और उनको पिलाने लगे। जब काम भर का पानी पी लिये तो उन्होने कहा—बस, अब बोध हो गया।

यह बोध शब्द आपके लिए नया शब्द था। जिसका भाव था तृप्त हो गया। यह शब्द आपके जीवन का आधार बन गया। जो सारी इच्छा, तृष्णा, समाप्त कर अपने आप मे स्थित है वह मानो बोध को प्राप्त है। जब भी गुरुदव आत्म-बोध और आत्म-तृप्ति की चर्चा करते हैं तो उन सत का वचन याद आ जाता है—अब बोध हो गया।

13.
पान खाने की आदत

रामसुमिरन जी का खान-पान, रहन-सहन बचपन से ही बहुत सादे ढंग का था। आपकी उम्र जब सत्रह-अठारह वर्ष की हुई तो आप पान खाने लगे।

आपका एक मित्र था जो पान की दुकान करने लगा था। उसका घर आपके घर के सामने ही था। वह पान के बीड़े लगाकर आपको देने लगा और आप मित्रता के चक्कर में पड़कर खाने लगे। पीछे आप स्वयं मित्रों और अभ्यागतों के स्वागत में पान मंगाने और खाने लगे। आप पान जरूर खाने लगे थे लेकिन मुख-दांत की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान रखते थे।

कुछ दिनों बाद रामसुमिरन जी का जब पारखी संतों से संपर्क पड़ा तो आपने देखा कि इन संतों का मुख बिलकुल साफ रहता है और ये संत किसी भी प्रकार का नशा-दुर्व्यसन नहीं करते। इसका आपके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। आपके मन में अब पान से वितृष्णा हो गयी। आपकी समझ में आ गया कि पान खाना अच्छा नहीं है। फिर तो बिना किसी के कहे ही आप सदा के लिए पान खाना छोड़ दिये। संत जान भी नहीं पाये कि आप कभी पान खाते थे। हानि निश्चय हो जाने पर किसी भी दोष को छोड़ने में देरी नहीं लगती। फिर आप जैसे दृढ़ निश्चयी, विवेकवान, जिनके मन में दोष आंख में पड़े हुए कण के समान गड़े, जान-बूझकर उसे स्वीकार कैसे सकते हैं!

14.

गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के प्रथम दर्शन

एक व्यक्ति ने कहा—बड़हरा कुटी के सत भगवान नहीं मानते। वे ब्राह्मणों को नमस्कार नहीं करते और ब्राह्मणों का भी बनाया भोजन नहीं करते। वे अपने हाथ से स्वयं बनाते हैं। इस प्रकार की नई बातें सुनकर रामसुमिरन जी को बहुत कौतूहल हुआ।

कुछ दिनों के बाद आपके लिए पिकौरा नामक गांव से निमंत्रण आया। रामसुमिरन जी पिकौरा गये। वहां आपने देखा कि सत श्री रामसूरत साहेब जी खाट पर बैठे हैं। आंगन में श्री सत साहेब जी[1] भोजन बना रहे थे। उनकी सफाई और स्वच्छता तथा टकसार को देखकर तुरन्त आपके मन का समाधान हो गया।

आपने अपने मन में विचार किया किइतनी पवित्रता से ब्राह्मण क्या भोजन बनायेगा! तब फिर ये संत उनका बनाया हुआ भोजन क्यों करें! सत अपनी रहनी से श्रेष्ठ होते हैं। फिर वे ब्राह्मणो का नमस्कार क्यो करें?

---

1. **श्री संत साहेब श्री रामसूरत साहेब जी के गुरुभाई थे। अधिक भण्डार बनाने के कारण उन्हें बड़े भण्डारी साहेब के नाम से भी जाना जाता था।**

इस प्रकार आप गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब और कबीरपंथी सतों को पहली बार वहां देखे। उनके जोवन-आचार को देखते ही बिना किसी वार्ता के आपके मन में इन संतों के प्रति श्रhा जग गयी।

15.

गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी का प्रभाव

भवानीगंज बाजार खानतारा गांव से दो कि0मी0 पर है। वहां पर पशुओं का कांजीहाऊस था। उस कांजीहाऊस के मुंशी बोमार पड़ गये इसलिए कुछ दिनों के लिए उन्होंने रामसुमिरन जी को मुंशीगिरो का चार्ज दे दिया। एक दिन आप किसी काम से भवानीगंज की कुटिया में गये। उन दिनों श्री रामसूरत साहेब जी एक साधु के साथ कुटिया में पधारे हुए थे। लेकिन घर पर कुछ आवश्यक कार्य हो जाने के कारण रामसुमिरन जी मात्र दण्ड-प्रणाम करके वापस लौट आये।

इधर कुटिया के महन्त जी ने श्री रामसूरत साहेब जी से रामसुमिरन जी के बारे में प्रशसात्मक बातें बता दी थीं। शाम को रामसुमिरन जी समय निकालकर श्री रामसूरत साहेब जी से पुन: जाकर मिले। दोनो की सत्संग-वार्ता शुरू हो गयी जिसमें आपके प्रश्न होते थे और श्री रामसूरत साहेब जी के उत्तर। आपके खास प्रश्न कुछ इस प्रकार थे—वृक्ष-वनस्पतियों में जीव होते हैं कि नहीं? देवी-देवता आदि होते हैं कि नहीं? भगवान अवतार लेता है कि नहीं? अगर नहीं लेता तो भक्त प्रहलाद को खम्भा फाड़कर कैसे बचाया? जंगल में ध्रुव की रक्षा कैसे की? आदि। सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जी ने आपके सभी प्रश्नों का समुचित समाधान दिया। उनके तर्कयुक्त निर्णय समाधान से तरुण रामसुमिरन अत्यन्त प्रभावित हुए। इस प्रथम वार्ता ने ही आपके जीवन को बदलकर रख दिया।

सूर्यास्त होने को था। रामसुमिरन जी ने कहा—महाराज जी, अब मैं चलता हूं। पूज्य श्री रामसूरत साहेब जी ने कहा—ठीक है, मुझे भी उसी तरफ चलना है। चलो हम तुम दोनो साथ-साथ चलते हैं। अपने ब्रह्मचारी को साथ लेकर साहेब जी चल दिये। चलते-चलते रास्ते में भी रामसुमिरन जी से काफी बातें होती रहीं। खानतारा गांव सामने आने पर रामसुमिरन जी ने कहा—महाराज, मेरा गांव तो सामने है। कभी कृपा करके आप मेरे भी घर पधारें। साहेब जी ने कहा—ठीक ह, संयोग पड़ा तो जरूर आऊगा।

पूज्य श्री रामसूरत साहेब जी को आगे किसी अन्य गांव में जाना था। वे तो वहां चले गये। इधर संतश्री के बिछुड़ते ही रामसुमिरन जी का मन इन्हीं विचारों की गहराई में खो गया—क्या पुराणों एवं रामायण आदि महाकाव्यों की बातें झूठी हैं? क्या भगवान का अवतार नहीं होता है? क्या सरयू, गंगा, नर्मदा आदि नदियों में नहाने से पाप नहीं कटता? क्या भगवान खम्भा फाड़कर अवतार नहीं लेता है? क्या उन्होंने आकर प्रहलाद को नहीं बचाया? क्या वह हिन्दुओं, गायों का रक्षक एवं विधर्मियों का दमन करनेवाला नहीं है? क्या राम, कृष्ण, विष्णु, शिव आदि का भगवान होना झूठ है? क्या हिन्दू समाज मे हुए चौबीस अवतार और तैंतीस कोटि देवता झूठ हैं? क्या इस संसार को चलानेवाला एक जगन्नियंता नहीं है? इस प्रकार बहुत-सी बातें आकर आपके चित्त में टकरातीं कि क्या ये सब धारणाए कल्पना मात्र हैं? क्या ये संत ही सब कुछ जानते हैं? लेकिन दूसरी तरफ उन सतों की बातों पर विचार करने से वे सत्य प्रतीत होती हैं। उनकी सारी बातें कारण-कार्य व्यवस्था के अनुकूल और वैज्ञानिक ठोस धरातल पर स्थित हैं। इस प्रकार पौराणिक एवं पारम्परिक बातों तथा संतश्री की विवेकपूर्ण वैज्ञानिक बातों में मन बारम्बार तुलना करता रहा कि यह सत्य कि वह सत्य? भक्तिप्रधान मन को तो पौराणिक एवं पारम्परिक बातें ही सत्य लग रही थीं किन्तु आपका विवेकप्रधान-तर्कप्रिय मस्तिष्क उन बातों को स्वीकर करने के लिए तैयार नहीं हुआ। अन्ततः मन ने यही निर्णय दिया कि सतों की युक्तिपूर्ण बातें ही सत्य हैं और इसी पथ पर चलने से कल्याण है।

दूसरे दिन से मन में वैचारिक संघर्ष चलने लगा, लेकिन अभी आप पूर्व की मान्यता के अनुसार प्रातः साय संध्योपासना करते रहे। करीब पन्द्रह दिन बीते होंगे कि गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी संत श्री विमल साहेब को साथ लेकर रामसुमिरन जी के घर खानतारा गांव में पधारे। रामसुमिरन जी गुरुदेव को देखते ही दौड़कर सामान ले लिये। घर पर गुरुदेव को लाये और आसन, स्नान आदि की व्यवस्था किये। तत्पश्चात सत श्री विमल साहेब जी अन्दर भोजन बनाने चले गये और इधर श्री रामसूरत साहेब जी तथा रामसुमिरन दोनों का सत्संग चलने लगा।

भोजन तैयार होने पर गुरुदेव भोजन करने अन्दर गये। साफ स्वच्छ आसनी पर बैठ गये। सामने रामसुमिरन जी भी बैठ गये और गुरुदेव से बातें करते रहे। भोजन करते-करते गुरुदेव ऊपर देखे तो खूंटी में एक सौ आठ (108) दाने की रुद्राक्ष की माला और कम्बल की आसनी टंगी थी।

गुरुदेव ने पूछा—इस माला और आसनी से सन्ध्योपासना तुम करते हो कि तुम्हारे पिता?

रामसुमिरन जी ने कहा—महाराज, मैं करता हूं।

गुरुदेव ने कहा—इसी ने मुझे यहां लाया है! अगर तुम कुछ न करते तो मुझे भी न पूछते।

यह बात गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी समय-समय से कहा करते कि गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी की यह बात मुझे कभी नहीं भूल सकती।

दूसरे दिन जब पूज्य श्री रामसूरत साहेब जी चलने लगे तो आप कुछ दूर तक उनको विदा करने गये। चलते-चलते गुरुदेव ने कहा—देखो, मैं तो तुम्हारे घर आ गया और अब तुम भी हमारे यहा कभी आओ।

रामसुमिरन जी ने कहा—जरूर महाराज जी! मैं अवश्य आकर आपका दर्शन करूंगा। ऐसा कहकर आप उनको प्रणाम किये। गुरुदेव तथा संत श्री विमल साहेब जी बड़हरा आश्रम की ओर चल दिये। आप कुछ समय तक खड़े गुरुदेव को देखते रहे। सच है जिनके मन में संतों के प्रति अगाध श्रद्धा होती है उन्हे उनके बिछुड़ने में कष्ट होता ही है।

16.
गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी का संक्षिप्त परिचय

श्री अभिलाष साहेब जी के पारख सिद्धान्त और स्वस्वरूप के बोधदाता पूज्य सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जी हैं। सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जी निर्णय के प्रेमी, पारख सिद्धान्त के मर्मज्ञ, प्रतिभा के धनी दिव्य संस्कारी महापुरुष थे। आपका जन्म विक्रमी संवत् 1973 तदनुसार ईसवी सन् 1916 में उत्तर प्रदेश गोण्डा जिला के खिरचीपुर ग्राम के समृद्ध कुर्मी परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रघुवीर वर्मा था। आपके घर पर अयोध्या से वैष्णव संतों का बराबर आना-जाना लगा रहता था। उन्हीं से प्रभावित होकर बारह-तेरह वर्ष की उम्र में एक दिन आप गृह त्याग कर अयोध्या चले गये। सरयू के मांझा में श्री मौनी जी महाराज के पास आप पांच-छह महीने रहे। इसके पश्चात विद्या पढ़ने के लक्ष्य से आप चित्रकूट चले गये। कुछ दिनों के बाद वहां से आप पुनः घर लौट आये।

घर आने वाले संतों से आप कहते कि मुझे भी अपने साथ ले चलें परन्तु आपकी कम उम्र होने एवं घरवालों के संकोच के कारण कोई संत आपको

अपने साथ नहीं ले जाता। अंततः आप घटुलिया नामक स्थान पर एक वैष्णव संत के आश्रम पर चले गये। पीछे आपके पिता आपको बुलाने गये लेकिन आपने कहा—आप अपने घर पर भंडारा कीजिए तब मैं घर पर आऊगा। घर पर भंडारा हुआ और रामसूरत जी वहां गये। वहीं पर बड़हरा के वैष्णव संत श्री राजाराम दास जी महाराज आये हुए थे। उनके व्यक्तित्व एवं साधना से प्रभावित होकर रामसूरत जी उनके साथ हो लिये और उनके द्वारा ही बालक का साधुवेष हुआ।

घटुलिया आश्रम पर बालक रामसूरत को श्री पूरण साहेबकृत 'बीजक त्रिज्या' मिल चुकी थी जिसे आप और आपके गुरुदेव श्री राजाराम दास जी महाराज प्रेम से पढ़ते थे। एक बार एक भण्डारा में पोरा (फजाबाद) के प्रसिद्ध संत श्री सुकई साहेब जी मिले। उन्होंने वैष्णव साधु श्री रामसूरत दास जी को कहा—जब आप बीजक टीका पढ़ते हैं तब श्री कबीर निर्णय मदिर बुरहानपुर (खडवा, म0 प्र0) जाकर ठीक से इसकी शिक्षा प्राप्त कर लें। आपने यह बात अपने गुरु श्री राजाराम दास जी महाराज से कही। उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी और उनका वैष्णव वेष बदलकर पारखी का वेष देकर तथा मस्तक में खड़ा सफेद तिलक लगाकर उनको बुरहानपुर भेज दिया। उस दिन से 'श्री रामसूरत दास जी महाराज' श्री रामसूरत साहेब जी के नाम से जाने गये। इस समय आपकी उम्र लगभग पन्द्रह वर्ष की थी।

आपने बुरहानपुर में दो वर्ष रहकर श्री लाल साहेब जी से बीजक-पंचग्रंथी की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। फिर श्री लाल साहेब जी के साथ भ्रमण करते हुए आप बाराबंकी के सद्गुरु श्री विशाल साहेब जी के पास आ गये। श्री लाल साहेब जी तो वहीं श्री विशाल साहेब जी के पास ही रुक गये और श्री रामसूरत साहेब जी अपने गुरु आश्रम बड़हरा आकर श्री लाल साहेब जी को लाने की व्यवस्था मे जुट गये। सारी तैयारी करके वे श्री लाल साहेब जी को बाराबंकी स अपने गुरु आश्रम बड़हरा लाये। इसी समय श्री लाल साहेब जी द्वारा महाराज श्री राजाराम दास जी को महन्ती की चादर दी गयी तथा आपके ही द्वारा उनका नाम 'राजाराम दास' से बदलकर 'विवेकदास' रखा गया। जिनको हम श्री विवेक साहेब के नाम से जानते हैं। यह समय लगभग सन् 1937 का था।

इसके चार साल बाद श्री विवेक साहेब जी का शरीर छूट गया। इन्हीं दिनों श्री लाल साहेब जी बस्ती जिला में पधारे हुए थे। बहड़रा कबीर आश्रम के भंडारे में भी आपका पदार्पण हुआ, जिसमे आपके ही कर-कमलो द्वारा आपने श्री रामसूरत साहेब को महन्ती की चादर दी। यह समय सन् 1942 का था। तब

से सत समाज एव भक्त समाज की सारी जिम्मेदारिया आपके ऊपर आ गयी, जिसे आपने बखूबी निभाया।

सद्गुरु रामसूरत साहेब जी का जीवन अत्यन्त सरल था। इतने बड़े समाज के अनुशास्ता होते हुए भी आप विनम्र एव सेवापरायण थे। आपसे कोई भी व्यक्ति बड़ी सरलता से मिल सकता था। आप जिज्ञासुओ की शकाओ का बहुत अच्छे ढग से थोड़े मे स्पष्ट समाधान करते थे तथा साधको एव सतो की सेवा खुले दिल से उदारतापूर्वक करते थे। आप कहा करते थे कि लोग अपने पैसे की सुरक्षा के लिए उसे बैंक मे जमा करते हैं लकिन हमारा बैंक तो साधु समाज ही है। हमारे पास जो है उसे हम सेवा मे लगायेगे, उसी मे उसकी सुरक्षा एव सार्थकता है। आपकी इस अपरिग्रह प्रवृत्ति का प्रभाव पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी पर अमिट रूप से पड़ा। सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी जीवनभर सता-भक्तो मे भ्रमण करते रहे। आपने सद्गुरु कबीर के विचारो का प्रचार-प्रसार उत्तर प्रदेश मे तो किया ही, उसके अलावा मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, काठमाडो (नेपाल) आदि मे भी आपका व्यापक प्रभाव है।[1]

आपके वैराग्यमय जीवन, उच्चतम रहनी, आदर्शपूर्ण सेवाभाव तथा तात्कालिक उत्तम व्यवहार एवं सद्गुरु कबीर के उज्ज्वल पारख सिद्धान्त-बोध से प्रभावित होकर हजारो भक्त आपकी शरण में आये और सौ से अधिक विरक्त जिज्ञासु आपके शिष्य हुए। आपने 1970 में जियनपुर, अयोध्या में कबीर आश्रम की स्थापना की। आपकी चार रचनाएं प्रसिद्ध हैं—विवेक प्रकाश, रहनि प्रबोधिनी, बोधसार और गुरुपारख बोध। श्री अभिलाष साहेब जी द्वारा इन चारो ग्रंथ-रत्नों की टीका भी प्रकाशित हो चुकी है। इस प्रकार ज्ञान, वैराग्य, सत्संग,

---

1. **आपके विरक्त शिष्यो में मुख्य रूप से चार हैं जिनका प्रभाव बृहत समाज पर पड़ा। उनके नाम एवं प्रचार क्षेत्र का केन्द्र इस प्रकार है—**
   - **पूज्य श्री गुरुलगन (मोटे) साहेब—आप अधिकतम गोंडा, बस्ती, फैजाबाद आदि क्षेत्रों में भ्रमण करते रहे। आपके अनेक योग्य शिष्य थे जैसे—पूज्य श्रो विमल साहेब, श्री निगम साहेब आदि।**
   - **पूज्य श्री गुरुमुख (जनैया) साहेब—आपने अपने प्रचार का केन्द्र उत्तर प्रदेश के रायबरेली क्षेत्र को बनाया।**
   - **पूज्य श्री रामशब्द (तपसी) साहेब—आपको निष्पक्ष साहेब के नाम से भी जाना जाता है। उत्तर प्रदेश में फतेहपुर, चकबसवा में आपने अपना केन्द्र बनाया। आपके मुख्य शिष्यों में संत श्री निहोरे साहेब, संत श्री ज्ञान साहेब, संत श्री निर्द्वन्द्व साहेब आदि हैं।**
   - **पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी—आपका मुख्य केन्द्र इलाहाबाद है।**

साधना को अलख जगाते हुए 23 जुलाई 1998 में आप इस नश्वर शरीर-संसार को छोड़कर अपने आप में लीन हो गये।

17.

बड़हरा आश्रम पर प्रथम आगमन

बड़हरा कुटी पर कार्तिक महीने में भण्डारा हुआ करता था। सन् 1950 के नवम्बर में रामसुमिरन जी वहां के भण्डारा में गये। बड़हरा आश्रम खानतारा गांव से लगभग दस कि०मी० की दूरी पर है।

आश्रम में संतों-भक्तों की भीड़ इकट्ठी थी। गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी एक चौकी पर बैठे थे। कुछ भक्त दर्शन-बन्दगी करके जा रहे थे और कुछ भक्त नीचे जमीन पर बैठे सत्संग चर्चा सुन रहे थे। सभी संत सेवाकार्य मे लगे हुए थे। गुरुदेव जहां बैठे थे वह ऊची जगह थी। दूसरी तरफ निचले हिस्से में भोजन-भण्डार बन रहा था। गुरुदेव बीच-बीच में उधर भी कुछ निर्देश करते जाते थे।

शाम का समय था। रामसुमिरन जी बड़हरा कुटी पर आये और हाथ-पैर धोकर प्रणाम करके गुरुदेव के पास बैठ गये। अपना झोला आप गुरुदेव की चौकी के नीचे रख दिये और शंका-समाधान चलने लगा। जो भी आप प्रश्न करते गुरुदेव उसका थोड़े में उत्तर दे देते। आपने एक प्रश्न किया कि महाराज, संसार के प्राणियों का दुख दूर करने के लिए कोई अवतार तो जरूर होता होगा?

गुरुदेव ने उत्तर दिया—जो भी महापुरुष आये वे सब मनुष्य थे। उनमें कोई ऐसी अलौकिक शक्ति नहीं थी जो कुछ अघटित घटना कर दे। सब अपने-अपने समय में अपनी-अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार लोगों को दिशा-निर्देश किये हैं। लेकिन ऐसा कोई अवतार नहीं होता है जो दुनिया को बदल दे।

रामसुमिरन जी ने कहा—महाराज! तो क्या नरसिंह अवतार भी झूठ है, जो खम्भा फाड़कर आये और हिरण्यकश्यपु को मारकर भक्त प्रहलाद को बचाये?

गुरुदेव ने कहा—ऐसा कोई नरसिह भगवान नहीं हुआ जो आधा नर और आधा सिंह रहा हो। इस मनुष्य समाज में से कोई सिंह के समान शक्ति, विवेक, बुद्धिसम्पन्न हुआ होगा जिसने मान्यताओं के खम्भे को फाड़कर, प्रहलाद जैसे सदाचारी लोगों की रक्षा की होगी और हिरण्यकश्यपु जैसे क्रूर लोगों का दमन किया होगा। यही नरसिंह भगवान का अवतार है। कोई विचित्र रूपवाले नरसिह अवतार की कल्पना करना अंधविश्वास में बहना है।

यह प्रश्न करके रामसुमिरन जी ने सोचा था कि मैंने तो बहुत बड़ा तर्क कर दिया है। इसका उत्तर भला महाराज जी क्या दे सकेंगे। किंतु गुरुदेव के उत्तर पाकर आप निरुत्तर हो गये। लेकिन मन में गुरुदेव के उत्तर से पूर्ण संतोष न हुआ। आप मन ही मन सोचते कि हे भगवान! एक अवतार और ले लो, इन कबीरपंथियों को समझाने के लिए। इसी दीवार में आप अपना रूप प्रकट कर दीजिए तो ये समझ जायेंगे कि भगवान होते हैं। लेकिन गुरुदेव के निर्णययुक्त वचनों से आप सोचने के लिए मजबूर हो गये। फिर आपको लगा कि सत्य तो आखिर यही है और मन में समाधान हो गया।

गुरुदेव के आसन पर एक पुस्तक रखी थी। रामसुमिरन जी न गुरुदेव से पूछा—महाराज जी! यह कौन-सी पुस्तक है?

गुरुदेव ने कहा—पिस्तौल है! इसे अगर पढ़ना हो तो ले जाओ।

रामसुमिरन जी उस पुस्तक को ले लिये। वह पुस्तक थी पारख सिद्धान्त के महातेजस्वी संत एवं प्रखर विचारक श्री गुरुदयाल साहेब विरचित 'कबीर परिचय।' रामसुमिरन बड़हरा कबीर आश्रम में एक रात रहकर दूसरे दिन अपने घर वापस आ गये। घर पर आपने 'कबीर परिचय' को खूब पढ़ा। संतों एवं उनकी पुस्तकों के इन विचारों को लेकर आपके मन में मंथन चलने लगा। इस प्रकार धीरे-धीरे अब कबीरपंथी सतों से आपकी घनिष्ठता होती चली गयी।

18.
'निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर' का प्रभाव

रामसुमिरन जी की उम्र उस समय अठारह वर्ष चल रही थी। एक दिन आपके घर श्री भगौती पसाद पाठक आये जो आपके फूफेजात भाई लगते थे। उनकी उम्र उस समय पचास वर्ष रही होगी। पाठक जी के पास एक पुस्तक थी—निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर। उन्होंने रामसुमिरन जी को वह पुस्तक दिखाते हुए कहा—भैया! यह पुस्तक देखो तो जरा। रामसुमिरन जी उसे खोलकर देखने लगे। बहुत तेज तर्कपूर्ण पुस्तक लगी। निर्मल साहेब के क्रांतिपूर्ण विचारों को पढ़कर आपको प्रसन्नता होती लेकिन जब ईश्वर-अवतार आदि का खण्डन पढ़ते तो मन उदास हो जाता।

थोड़ी देर तक पढ़ने के बाद आपने पाठक जी से कहा—यह पुस्तक मुझे दे दीजिए।

पाठक जी ने कहा—भैया! इसे मैं आपको दे नहीं सकता क्योंकि जिनकी यह पुस्तक है उनको इसे आज ही लौटाना है। पाठक जी उस पुस्तक को तो लेकर चले गये किंतु रामसुमिरन जी 'निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर' पुस्तक की खोज में पड़ गये।

कुछ दिनों के बाद भवानीगंज की कुटिया पर आपको एक संत मिले जिन्हें 'घमहा बाबा' के नाम से जाना जाता था। घमहा बाबा धनौती कबीर मठ की किसी शाखा के संत थे। उनके पास निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर पुस्तक थी। रामसुमिरन जी ने उनसे भी पूछा—साहेब जी! वह पुस्तक आपके पास है क्या?

घमहा बाबा ने कहा—हां बच्चा, निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर तो मेरे पास रखी है। ले जाओ और खूब पढ़ो। घमहा बाबा से वह पुस्तक जब आपको मिली तो आपने उस पुस्तक की कीमत से दुगुनी कीमत घमहा बाबा को दी। तब से आप श्री निर्मल साहेब जी की वाणी का खूब अध्ययन करने लगे। पारख सिद्धान्त से परिचय होने पर सबसे पहले आपने इस सिद्धान्त की पुस्तक निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर का ही अध्ययन किया था।

19.

बीजक टीका त्रिज्या की खोज

पूर्व में यह चर्चा आ चुकी है कि रामसुमिरन जी को परदेशी नामक एक थवई से कबीर साहेब का ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा मिली। और उसी के द्वारा आपको बीजक की एक पुरानी प्रति भी दी गयी थी। आपने सोचा कि अगर इन विचारों को समझना है तो इस सिद्धान्त की पुस्तके पढ़नी चाहिए। मूल आप पढ़ते किंतु समझ में कुछ नही आता। अतः आपने सोचा, इसकी टीका पढ़ें तो समझ में आ सकती है। अब आपने बीजक टीका की खोज शुरू कर दी।

किसी ने आपको बताया कि 'भड़रिया' नामक गांव में एक सज्जन के पास बीजक टीका है। आप बीजक की टीका मांगने वहां गये। उन सज्जन का नाम-पता पूछते-पूछते आप उनके दरवाजे पर दस्तक दिये। घर से लगभग पचपन वर्ष के एक प्रौढ़ सज्जन निकले। रामसुमिरन जी ने उनको प्रणाम किया। गृहस्वामी ने पूछा—कैसे आये बेटा? तब आपने कहा—बाबा जी! हम सुनते हैं कि आपके पास बीजक की टीका है। उसे हम पढ़ना चाहते हैं।

उस सज्जन ने कहा—अर बच्चा! रही तो लेकिन बहुत दिन हुए पता नही क्या हो गयी, मिल ही नहीं रही है।

रामसुमिरन जी वहां से उदास मन लौट पड़े। लेकिन आप अभी रास्ते में ही थे कि एक सज्जन मिले जो बातचीत के दौरान बताये कि भवानीगंज की कुटिया में बीजक की टीका है। भवानीगंज की कबीर कुटी वहां से दो कि0मी0 दूरी पर थी।

आप वहां गये, संत को प्रणाम किये और अपने आने का आशय बताये। संत खुशी-खुशी श्री पूरण साहेब कृत बीजक टीका त्रिज्या लाकर दे दिये। उन्होंने कहा—ले जाओ बच्चा! इसे खूब पढ़ो। यहां तो कोई पढ़नेवाला ही नहीं है।

इस प्रकार आप बीजक टीका त्रिज्या पाये और उसमें रमने लगे। त्रिज्या के आप इतने रसिक हो गये कि जहां भी जाते सब समय उसे साथ में रखते। उसके लिए आपने एक हाथ-झोला बनवा लिया था और थोड़ा भी समय मिलने पर आप त्रिज्या का अध्ययन करने लगते। इस प्रकार तीन महीने के अभ्यास से आप पक्के पारखी हो गये।

20.
आज दिन ही रहने दो, संध्या न करो

रामसुमिरन जी जब दूसरो बार बहड़रा आश्रम गये तब की बात है। आप वहां गुरुदेव के दर्शन किये और उनसे सत्संग चर्चा करने लगे। कुछ समय के बाद गुरुदेव ने आपसे तिलक साहेब का नाम लेकर कहा—उनके पास बैठो और उनसे सत्संग करो।

रामसुमिरन जी जाकर तिलक साहेब के पास बैठे। काफी देर तक उनसे सत्संग हुआ। शाम होने जा रही थी और रामसुमिरन जी के संध्योपासना करने का समय हो गया था। रामसुमिरन जी ने तिलक साहेब से कहा—साहेब, थोड़ी देर में मैं आता हूं। संत श्री तिलक साहेब ने पूछा—कहां जा रहे हो?

आपने इतना ही कहा—बस थोड़ी देर में आता हूं। संत ने पुनः पूछा—आखिर कहां और क्या करने जा रहे हो? बताओ तो सही? तब आपने बताया—संध्योपासना करने जा रहा हूं। श्री तिलक साहेब ने विनोद में कहा—आज संध्या न करो, दिन ही रहने दो।

रामसुमिरन जी के मन में पारख का निर्णय ज्ञान परिपाक हो ही गया था। अतः उस क्षण स आप संध्योपासना छोड़ दिये। आप बैठ गये और पुनः सत्संग में लीन हो गये।

21.

व्यवहार कुशलता

साधना एव शाति प्राप्ति के लिए रामसुमिरन जी का अत्यन्त अनुराग था। आपकी उम्र उस समय उन्नीस वर्ष की थी। पारख सिद्धान्त से आप परिचित हो चुके थे। एक बार आप कबीर आश्रम बड़हरा आये हुए थे। आपके अध्ययन एवं साधना की लगन को देखकर गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी ने आपको श्री काशी साहेब कृत एक पुस्तक दी। 'निष्पक्ष सत्यज्ञान दर्शन।' उस पुस्तक को आप सब समय अपने साथ रखते थे। जब कभी अवसर मिलता, आप उसका अध्ययन करने लगते।

उन्ही दिनो कुछ लोगो के साथ आप अयोध्या गये और वहा एक मदिर मे बैठकर प्रवचन सुनने लगे, उसी समय झोला सहित उस पुस्तक को उठाकर कोई ले गया। यदि आप अपने गुरुदेव जी को कह देते कि साहेब जी, पुस्तक कोई उठाकर ले गया, तो वे यही कहते कि कोई बात नही, किंतु आपने बुरहानपुर कबीर आश्रम से उस पुस्तक की दूसरी प्रति मगाकर गुरुदेव जी को वापस दे दिया।

22.

दिल जोड़े से बड़ा दुख होय

भादों का महीना था। आकाश में काली घटा छायी हुई थी। बीच-बीच में बादलों की चादर फट जाने से सूर्य चमकने लगता था। श्री रामसुमिरन जी की उम्र उस समय अठारह-उन्नीस वर्ष की थी। आप कुछ मजदूरों के साथ खेत में सावां-कोदो की निराई कर रहे थे। जहां जमीन कुछ ऊची रहती थी वहां सावां-कोदो बोया जाता था और जहां गीली जमीन होती थी उसमें धान की फसल रहती थी।

सुबह के नौ-दस बजे होंगे। दूसरी तरफ से धान के खेतो के रास्ते से एक नवयुवक गीत गाते हुए आ रहा था। उसके गाने में बड़ी मस्तानगो थी और गीत अत्यन्त मार्मिक था—

दिल जोड़े से बड़ा दुख होय, नाहक कोई दिल जोड़े।
दिलजोड़े वै चकवी-चकवा रात विलग होय जायं॥....नाहक कोई

अर्थात—दिल जोड़ने (मोह करने) से बहुत दुख होता है। इसलिए कोई किसी से मोह न करे। देखो, चकवा-चकवी पक्षी आपस में दोनो बहुत प्रेम करते हैं, किन्तु रात में वही अलग हो जाते हैं।

इन दो पंक्तियों को सुनकर श्री रामसुमिरन जी का मन वैराग्य से भर गया।

संसार में मनुष्यों को जो दुख है सबका कारण मात्र एक ही है—मोह। मोह मिट जाने पर दुख नाम की कोई चीज नहीं रह जाती।

23.

प्रथम पद रचना

तरुण रामसुमिरन जी की उम्र उस समय उन्नीस वर्ष की थी। कार्तिक का महीना था। एक दिन आप अपने जन्म स्थान खानतारा गांव से ननिहाल (गोपियाग्राम, बस्ती) गये। भोजन आदि के बाद आपने नाना जी से पूछा—नाना जी! यहां आस-पास कोई संत रहते हैं क्या? नाना जी ने कहा—हां, एक संत रहते हैं जो विनम्र तो हैं लेकिन बहुत ठीक-ठाक नहीं हैं। रामसुमिरन जी ने कहा—कोई बात नहीं, वे चाहे जैसे हों, हमसे तो अच्छा ही होंगे। मैं उनके पास जाऊंगा, उनके पास बैठूंगा। ऐसा करना मुझे अच्छा लगेगा।

आप अपन तीन ममेरे भाइयों के साथ उस संत के पास जा रहे थे। मन में संत से मिलने के लिए उत्कठा थी। उन भाइयों से संतों की रहनी, महिमा तथा उनके दर्शन से होने वाले लाभ की चर्चा करते हुए जा रहे थे। उसी समय आपके मन में एक भजन स्फुरित हो उठा—"गुरुवर तुम्हारि महिमा अनुपम अपार है।" आपने भाइयों से कहा—आप लोग जरा उस तरफ बैठ जाइये, मैं कुछ लिख लेता हूं। तरुण रामसुमिरन जी वहीं खेत की मेंड़ पर बैठकर कलम-कागज निकाले और मिनटों में यह पूरा भजन लिखकर तैयार कर लिये।

गुरुवर तुम्हारि महिमा, अनुपम अपार है।।टेक।।
मानव शरीर नौका, मैं पथिक जीव हूं।
गुरु कर्णधार होकर, कर बेड़ा पार है।। V।।
खानि-बानि महाजाल, लागत अतिशय कराल।
ताको परखाये देव, सारासार है।। W।।
वासना संशय समीर, छूटतान आवैधीर।
जन्म मरण लाग रहत, बार बार है।। X।।
गुरुवर तुम हो दयाल, कष्ट से जल्दी निकाल।
दीन ये अभिलाष[1] बाल, की पुकार है।। y।।

---

1. इस भजन मे नाम की छाप साधु होने के बाद गुरुदेव ने बदल दिया था।

इसके बाद आप भाइयों के साथ संत दर्शन के लिए गये।

24. वैराग्य की विरह-व्यथा

अभो तक तो रामसुमिरन परोक्ष में राम, कृष्ण, विष्णु और शिव आदि देवताओं को पाने के लिए छटपटाते थे, किंतु अब आपकी दृष्टि बदल गयी। तीन महीने के सत्संग और सद्‌ग्रंथ अध्ययन से आपको दृढ़ निश्चय हो गया कि जो भी बाहर से मिलता है, वह दृश्य होता है; और सारे दृश्य-पदार्थ छूटनेवाले हैं क्योंकि वे मुझ द्रष्टा स्वरूप से भिन्न हैं। उसमें मेरी स्थिति कैसे हो सकती है? मेरी स्थिति तो अपने आप में ही होनी है। आप सोचने लगे कि यह काम मोह और आसक्ति को छोड़कर ही हो सकता है। अब आपके मन में वैराग्य-अग्नि सुलगने लगी।

साधक को घर-परिवार से जब किसी प्रकार की प्रतिकूलता होती है तो वह वैराग्य में सहायक होती है किंतु आपके लिए ऐसा कुछ भी नहीं था। आपके लिए तो सब कुछ अनुकूल ही अनुकूल था। ऐसी स्थिति में इन सब को छोड़ना बड़ा मुश्किल लगता था। आपका यह भी निश्चय था कि बिना पूर्ण निर्मोहता आये मैं घर नहीं छोड़ूंगा। अब आप वैराग्य की विरह-व्यथा में पीड़ित रहने लगे।

आपकी उम्र उन दिनों उन्नीस वर्ष की रही। आप सत्संग और वैराग्य की चर्चा में डूबे रहते थे। आपके घर पर एक संत आये। जिनकी उम्र उस समय पचपन वर्ष की रही होगी। वे अधिकतम गम्भीर और शांत रहते थे और देखने में ही वैराग्य की मूर्ति लगते थे।

रामसुमिरन ने उनके बैठने की व्यवस्था की, जल देकर हाथ-पैर धुलवाये और फिर कुशल-मंगल हुआ। इसके बाद उनके लिए आप सुबह का जलपान लाये। उन संत से रामसुमिरन ने पूछा—महाराज, भोजन आप स्वयं बनायेंगे या घर में बना हुआ खायेंगे? संत ने कहा—अकेले मुझे खाना है, तुम भी खाओगे तो दो हो जायेंगे। समय बहुत है, बाद में बना लेंगे। अभी बैठो, कुछ पूछना हो तो पूछो।

रामसुमिरन ने कहा—महाराज! अब कुछ पूछना नहीं है क्योंकि अब कोई संदेह नहीं रहा। सब कुछ समझ में आ गया है। बस यही है कि पूर्ण शांति मिल

जाये और पूर्ण शांति बिना पूर्ण वैराग्य के सम्भव नहीं है। यही सोचता हूं कि घर-परिवार के लोगों के प्रति मेरे मन का मोह कब छूटेगा। इसी बात को लेकर मन में बेचैनी रहती है।

संत ने कहा—बच्चा! जिस तरह तुम्हारी लगन है उसको देखते हुए ऐसा लगता है कि शीघ्र ही तुम्हारा मोह टूटेगा और ऐसा टूटेगा कि तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि वह मोह कहां गया।

सचमुच एसा ही हुआ।

जैसा कि आप समय-समय से चर्चा के दौरान बताते थे कि जब मैं घर छोड़ा तो मुझे ऐसा लगता ही नहीं था कि मैं अपना माना हुआ घर छोड़ रहा हूं। मुझे तो ऐसा लगता था कि मानो मैं कहीं बैठा था और वहां से उठकर चल दिया हूं।

25.
निर्वाह की चिन्ता नहीं

रामसुमिरन जब से पारखी संतों से जुड़े तब से उन्हें कल्याण की सारी सामग्री जानने में आ गयी। अब आपको निश्चय हो गया कि कल्याण कार्य में मोह ही सबसे बड़ा बाधक है और वैराग्य सबसे बड़ा साधन। यह तो बताया ही जा चुका है कि रामसुमिरन जी निश्चय के बड़े पक्के थे। आपको जब ज्ञात हुआ कि पूर्ण शांति प्राप्ति के लिए मोह मिटाना ही पड़ेगा तो उसके लिए आप प्राणप्रण से लग गये। सब समय आपको अखण्ड वैराग्य की धुन सवार हो गयी। वैराग्यवर्द्धक पुस्तकों का अध्ययन तथा उसी की चर्चा चलने लगी, संसार के सम्बन्ध की नश्वरता का गहन चितन चलने लगा और धीरे-धीरे मन विरक्ति भाव में जाने लगा। इससे घर-परिवार के लोगों को लगने लगा कि अब रामसुमिरन घर पर नहीं रह पायेंगे।

एक दिन पिता जी (पंडित श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल) घर पर बैठे थे। रामसुमिरन भी उनके पास बैठे थे। कुछ आपसी बातें चल रही थीं। तभी पिता जी ने कहा—घर छोड़कर साधु हो जाने पर अपना तो कोई रहता नहीं, फिर बुढ़ापे में सेवा कौन करेगा? अपनी इस बात के समर्थन में उन्होंने एक घटना सुनायी—

अयोध्या में एक वैष्णव संत थे। वे वृh हो चले थे। उनके पास और कोई नहीं था। एक दिन वे सिर पर पानी से भरा घड़ा लिये अपनी कुटिया में प्रवेश

कर रहे थे। दरवाजे की डेहरी कुछ ऊची थी। घड़ा सिर पर लिये-लिये वे अपना एक पैर डेहरी के अदर रखे और दूसरा पैर उठाना चाहे लेकिन अशक्तता के कारण उनका पैर उठता ही नहीं था। वे बेचारे वहीं बीच में बैठ गये। अगर उनके कोई लड़का-बच्चा होता तो उनकी सेवा करता।

रामसुमिरन ने पिता जी से कहा—मैं पिछले अनेक जन्मों में जब जंगली जानवर था, पशु-पक्षो आदि खानियों में था तो उस समय मेरी सेवा कौन करता था? उस समय किसी के न होने पर भी जीवन बीत गया। फिर इस मनुष्य शरीर को पाकर क्यों चिता की जाये? ऐसा उत्तर सुनकर पिता जी ने कहा—जब ऐसा साहस है तो फिर आपको साध होने से कौन रोक सकता है?

26.

साधु-गुरु के प्रति अटूट आस्था

रामसुमिरन जी के साधु-वेष मे आने के पूर्व की बात है। उस समय आपके मन मे सनातन धर्म और पारख सिद्धान्त के विचारो से टकराव चल रहा था। लेकिन अतत: तर्क की कसौटी पर पारख सिद्धान्त ही खरा उतरता था। आप समय-समय से कबीर आश्रम बड़हरा आते थे और गुरुदव श्री रामसूरत साहेब जी के पास बैठकर प्रश्नो की झड़ी लगा दते थे। जिसका समाधान गुरुदव थोड़े मे और बड़ी शालीनता से करते थे।

एक बार आप घर से आये, अपना सामान गुरुदव की चौकी के नीचे रखकर गुरुदव के पास बैठे बात कर रहे थे। शाम को पाठ की घटी बजी, रामसुमिरन जी उत्साहपूर्वक तुरन्त आये और गुरुदव की चौकी के पास जमीन पर पुआल बिछा था उसी पर बैठ गये। (वहा आसनी, चादर आदि कुछ बिछा न होने के कारण आपको मालूम न हो सका कि यहा पर वरिष्ठ सत बैठेगे) इतने मे श्री पूरण साहेब[1] आ गये। श्री पूरण साहेब वृद्ध सत थे जो बड़े मीठे थे लेकिन समय से जैसे को तैसा बेलाग कह दते थे। वहा आपको बैठे दखकर उन्होने जोर से डाटते हुए कहा—हट यहा से, गृहस्थ कही का!

रामसुमिरन जी तुरन्त वहा से भगे और पीछे जाकर पैरा पर बैठे। पूरण साहेब के डाटने पर आपके मन मे अमर्ष नही हुआ कि हमे उन्होने ऐसा क्यो कह दिया।

---

1. **श्री पूरण साहेब, बड़हरा कबीर आश्रम के एक संत थे।**

इस घटना के बाद थोड़े ही दिनो मे आप गृह त्याग कर सदव के लिए गुरुदव की शरण मे आ गये।

27.
वैराग्यवh्क घटनाए

एक बार रामसुमिरन के घर में महिलाओ के लिए कुछ आभूषण बनना था। सोचा गया कि सोनार के घर पर सोना-चांदी देकर आभूषण बनवाने पर वह उसमें से चोरी भी कर सकता है। अत: सोनार को ही घर पर बुला लेना चाहिए। यहीं पर रहकर वह कार्य करे। इस उद्देश्य से स्वर्णकार को घर पर बुला लिया गया।

स्वर्णकार घर पर आया। उसे जगह दे दी गयी। वहीं वह अपना सामान रखकर काम करना शुरू किया। उसकी सारी क्रियाओं को किशोर रामसुमिरन पास में बैठकर बहुत ध्यान से देखते कि स्वर्णकार कैसे सोहागा डालकर धातु को आग की आंच में गलाता है। कैसे उसे गलाकर एक सांचे में ढालता है। कैसे पीट-पीटकर उसे पत्ता बनाता है। कैसे अपने छोटे-छोटे औजारों से धोरे-धोरे उसमें नक्काशो करता है और बहुत मेहनत के बाद आभूषण तैयार करता है।

स्वर्णकार के इन सारे क्रिया-कलापों को देखकर रामसुमिरन को बड़ी प्रेरणा मिली। उसकी कला को आपने अपने जीवन पर घटाया कि जिस प्रकार यह स्वर्णकार धोरे-धोरे धर्यपूर्वक अनगढ़ और मैली धातु को शोधकर उससे सुन्दर आभूषण तैयार कर देता है, इसी प्रकार साधक साधना से धोरे-धोरे अपने मन और इन्द्रियों को शोध सकता है। उनकी पूर्ण शुh्रि करके कल्याण की उच्चतम स्थिति को प्राप्त कर सकता है। स्वर्णकार की इस कला को देखने के बाद आपके वैराग्य की स्थिति और प्रखर हो गयी।

*   *   *

ठंड के दिन थे। घर में रजाई की आवश्यकता थी। एक दिन रामसुमिरन रुई लेकर धनिया के पास धनाने गये। उस समय रुई धनुही से धनी जाती थी। धनिया ने कहा—बच्चा! थोड़ा रुको, कुछ समय बाद मैं काम शुरू करता हूं। आप रुक गये।

कुछ समय बाद धनिया आपको उस कमरे में ले गया जहां वह रुई धनने का काम करता था। कमरा था तो फ़स का ही लेकिन वहां की जगह साफ-स्वच्छ लिपी-पुती थी। धनिया रुई लेकर धनुही से धनना शुरू किया और बड़ी तन्मयता

से रुई को ऐसा धुना कि रुई के एक-एक रेशे अलग-अलग हो गये। रुई का सारा कचरा छंटकर नीचे जमीन पर आ गया। धुनने के पहले रुई का जो स्वरूप था, धुनने के बाद वह बिलकुल ही बदल गया। धुनकर रुई अब स्वच्छ, हल्की और पहले की अपेक्षा अधिक दिखने लगी।

रुई धुनने की इस क्रिया को देखकर रामसुमिरन जी का मन अत्यन्त प्रभावित हुआ। आपने मन में विचार किया कि जिस प्रकार धुनिया रुई को धुनते-धुनते बिलकुल साफ कर डालता है। इसी प्रकार साधक अपने मन को यदि विवेक-विचार और वैराग्य की धनुही से धुने तो उसका मलिन मन पवित्र हो जायेगा। इस रुई धुनने की क्रिया ने भी आपके मन में वैराग्य की प्रखरता लायी।

* * *

रामसुमिरन के घर के पास ही एक पांडेय जी का घर था। पाडेय जी का बड़ा लड़का 'रामपरगट' रामसुमिरन जी का मित्र था। रामपरगट की माता गोरी, स्वस्थ और तेज थीं। उन्हें रामसुमिरन 'भाभी' कहकर सम्बोधित करते। वर्ष V~ZX की वर्षा के शुरू में बुखार से वे अस्वस्थ हो गयीं और उसी दिन से रामसुमिरन भी बुखारग्रस्त हो गये। दोनो का बुखार महीना भर रहा। रामसुमिरन का बुखार तो हलका रहा और वे खाते-पीते तथा काम-धन्धा भी करते रहे। महीना भर में उनका बुखार पूरा समाप्त हो गया। लेकिन रामपरगट की माता की बीमारी गहराती चली गयी और वह महीना भर में सूखकर मर गयीं।

इस घटना ने रामसुमिरन जी के हृदय को मथकर रख दिया। आपने विचार किया कि उन भाभी का और मेरा, दोनो का शरीर एक ही दिन अस्वस्थ हुआ। मेरा स्वास्थ्य तो थोड़े दिनों में ठीक हो गया किंतु भाभी की देह गलती गयी और आज वे चल बसीं। मेरा शरीर भी छुट जाता तो..........! यह संसार कैसा है! कितना कच्चा, कितना क्षणभंगुर और कितना धाखा से भरा हुआ है! अब उनका अपना क्या रहा! जब वे थीं तब उन्हें कितना गर्व था कि यह सब मेरा है। लेकिन आज उनका अपना माना हुआ उनके साथ कुछ भी नहीं जा सका।

इस घटना के बाद से आपको अब अपना घर अपना नहीं लगता था, स्वजन अब अपने नहीं लगते। यहां तक कि अपना शरीर भी अब अपना नहीं लग रहा था।

ऐसी घटनाएं तो सबके सामने घटती हैं लेकिन जिसके मन में जितनी संवेदना होती है उतना वह उनसे प्रभावित होता है और उन घटनाओं से प्रेरणा ग्रहण करता है। उसी के अनुसार वह अपने मन में परिवर्तन लाता है। रोगी, वृh,

मृतक और साध् को कौन नहीं देखता है कितु सिhार्थ इन्हे देखकर बुhत्व की ओर प्रेरित हुए क्योंकि उनके मन में तीव्र संवेदना थी और उसके लिए बीज थे। ये घटनाएं उसमें और सहायक बन गयीं। इसी प्रकार रामसुमिरन के मन मे वैराग्य की अग्नि तो सुलग ही रहो थी, इन घटनाओ ने मानो आग मे पेट्रोल का काम किया तथा आपकी वैराग्याग्नि को और प्रज्वलित कर दिया। इस घटना के कुछ ही महीने बाद आपने गृहत्याग कर दिया था।

28.

वैराग्य पर व्यंग्य

रामसुमिरन जी की उम्र उस समय बीस वर्ष की पूरी हो रही थी और आपका वैराग्य परिपक्व हो चला था। वर्षा का समय था। गांव का ही एक व्यक्ति आकर आपके पास बैठ गया। उसका नाम था 'टहल नाई'। उस समय उसकी उम्र पचास वर्ष की हो रही थी। वह कुछ दिनों के लिए बाहर चला गया था। जहां-तहां रहकर जब वह गांव आया तो ज्ञानी जैसे ज्ञान-वैराग्य की बात बोला करता था। उसका विवाह नहीं हुआ था। जब वह रामसुमिरन जी के घर आता तो कबीर साहेब की कुछ वाणी सुनाया करता। उसने कबीर साहेब की कुछ वाणी याद कर लिया था।

अगस्त का महीना था और आसमान में बादल छाये हुए थे। रामसुमिरन जी दरवाजे पर बैठे कुछ लोगों के बीच ज्ञान-वैराग्य की चर्चा कर रहे थे। टहल नाई ने रामसुमिरन जी पर व्यंग्य करते हुए कहा—कऽऽऽब! उसके कहने का अर्थ था कि ज्ञान-वैराग्य की बात तो करते हो लेकिन गृह-प्रपंच को छोड़कर वैराग्य कब करोगे। आपको उसकी यह व्यंग्य भरी बात बाण जैसे लगी। आपके मन में वैराग्य की ज्वाला और प्रदीप्त हो उठी। इसके दो महीने बाद नवम्बर 1953 ई0 में आप गृहत्याग कर दिये।

जिसके मन में वैरग्य होता है उसका मन वैराग्य भरे शब्द सुनकर हर्षित हो जाता है। लेकिन जिसके मन में वैराग्य नहीं होता वह केवल वाणी को पछोरता है। सार-सत्य उसे कुछ नहीं मिलता।

29.

गृह-त्याग

रामसुमिरन को तीन महीने में पारख सिhान्त का पूर्णत: बोध हो गया था कितु उस रहनी एवं स्थिति को प्राप्त करने के लिए तीन वर्ष तक आप अनवरत

अभ्यास करते रहे। वैराग्य की वह दशा प्राप्त होने के बाद भी उसको और मजबूत बनाते रहे। साथ-साथ सदगुरु कबीर की यह साखी स्मरण करते रहे—

साधू होना चाहिए, पक्का ह्वै के खेल।
कच्चा सरसों पेरिके, खरी भया नहिं तेल।।

(बीजक, सा. W}•)

आपका निश्चय था कि मैं गृहत्याग तब ही करूंगा, जब मन में पूर्ण निर्मोहता-वैराग्य आ जाये। इसी निश्चय को आपने जीवन में चरितार्थ किया।

किसी भी साधक के माता-पिता कितना भी समझदार हों, लेकिन स्वेच्छा से वे अपने बेटे को यह आज्ञा कभी नहीं देते कि तुम साध हो जाओ। पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल जी के सबसे लायक बेटे रामसुमिरन थे। वे सबके प्यारे, कार्यकुशल एवं अत्यन्त समझदार थे। उनका घर से निकल जाना घर का मुख्य स्तम्भ टूट जाने के समान था, किन्तु होता वही है जो होना होता है। रामसुमिरन सीधा यह कहकर नहीं निकले कि आज से मैं सदा के लिए गृहत्याग कर रहा हूं बल्कि घरवालों से आपने कहा—बड़हरा संत-सम्मेलन के बाद कुछ दिनों तक सगे-सम्बन्धियों में रहकर लौटूंगा।

रामसुमिरन ने इस प्रकार माता-पिता को आश्वासन दिया किंतु आपके मन में तो कुछ और ही निश्चय था। आपके मन में तो वैराग्य की प्रचण्ड अग्नि धधक रही थो।

गृह-त्याग के पूर्व आपने ऐसे बहुत-से घरेलू काम कर दिये थे जिससे कुछ दिनों तक माता-पिता को उन कार्यों के लिए चिता न करनी पड़े। इस प्रकार 12 नवम्बर, 1953 को अपना माना हुआ घर-परिवार एव कच्ची गृहस्थी सदैव के लिए छोड़कर गुरुदव जी की शरण मे आ गये।

30.

एक अंधविश्वास को चुनौती

रामसुमिरन का मन वैराग्य और बोधभाव से ओत-प्रोत था। आप जिस दिन गृहत्याग के पूर्ण संकल्प और दृढ़ निश्चयता के साथ जैसे ही घर से बाहर निकले सिर पर तेल का घड़ा लिए 'ढोढ़े काका' मिल गये। लोक मान्यता में यह अन्धविश्वास गहराई से फला हुआ है कि अगर तेल लिये तेली दिख जाये तो अशुभ होता है। ढोढ़े काका का घर आपके गांव में ही था। जैसे ही वे देखे कि आप तैयार होकर कहीं जा रहे हैं तो उनका चेहरा भय एवं संकोच से सूख गया।

पश्चाताप करते हुए उन्होंने रामसुमिरन से कहा—भइया! हम बिलकुल नहीं जानते थे कि आप कहीं जा रहे हैं। मुझसे बड़ी गलती हो गयी।

रामसुमिरन ने ढोढ़े काका से कहा—काका, कोई बात नहीं। आपको धन्यवाद है! यह महाभ्रम और महाझूठ है कि तेल लिये तेली को देखने से अशुभ होता है। मैं इस अंधविश्वास को बिलकुल नहीं मानता। जो मैं हूं, मेरा जो संकल्प है, मेरा जो निश्चय है, मेरे कर्मों का जो फल है उसे कोई बदल कैसे सकता है! इसलिए काका, आप बिलकुल प्रसन्न रहिये, मैं जिस काम के लिए जाता हूं उसमें निश्चित ही पूरा सफल होऊंगा।

आपने उस गृहत्याग के दिन की घोषणा को जीवन में अक्षरशः चरितार्थ कर दिया। आज आपकी साधना, आपका वैराग्य, आपकी स्थिति और आपकी लेखनी की ख्याति चौतरफा फल रही है।

❷

साधना के वर्ष

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेब: जीवनदर्पण

1.
साधुवेष और बुरहानपुर की यात्रा

धोती-कुर्ता पहने हाथ में थैला लिये बीस वर्षीय नवयुवक रामसुमिरन को गृहत्याग कर गुरुदेव की शरण में आते देखकर आश्रमवासी सभी सतों को बड़ी प्रसन्नता हुई। आपके समर्पणभाव, वैराग्यभाव और लगन को देखते हुए गृहत्याग के तीन दिन बाद 15 नवम्बर, 1953 तदनुसार विक्रमी सम्वत् 2•V• की कार्तिक शुक्ल अष्टमी को सदगुरु श्री रामसूरत साहेब जी ने आपको साधुवेष दे दिया। साधु वेष होने के बाद आपका नाम गुरुदेव ने रामसुमिरन से बदलकर 'अभिलाष दास' रखा, जिन्हें हम श्री अभिलाष साहेब जी के नाम से जानते हैं।

बड़हरा आश्रम से आपका जन्मस्थान खानतारा गांव निकट होने के कारण आप तत्काल आश्रम में रहना उचित नहीं समझे। इसलिए आपने गुरुदेव से निवेदन किया—गुरुदेव! मुझे कुछ दिन के लिए बाहर रखें तो अच्छा होगा। आपकी बातों पर गुरुदेव ने विचार किया और फिर उन्होंने आपको कबीर निर्णय मंदिर, बुरहानपुर भेज दिया। बुरहानपुर मध्य प्रदेश के खण्डवा जिले मे है। यह पुराने समय से पारखी सतो की शिक्षा-दोक्षा का केन्द्र रहा है। उस समय वहा आचार्य श्री रामस्वरूप साहेब जी महत रूप मे उपस्थित थे।

श्री अभिलाष साहेब जी के साथ उनके बड़े गुरुभाई श्री आज्ञा साहेब[1] भी गये। आप दोनो सत बड़हरा से चलकर पहले सदगुरु श्री विशाल साहेब के दर्शन करने बाराबंकी जिले में आये। विशाल देव उस समय बाराबंकी के तरावां गांव में विराजमान थे। सदगुरु श्री विशाल साहेब जी की दिव्य रहनी के बारे म आप पहले ही सुन रखे थे कितु उस दिन गुरुदेव के दर्शन पाकर आपको लगा

1. श्री आज्ञा साहेब प्रसिद्ध आज्ञा साहेब से भिन्न बड़हरा कबीर आश्रम के संत थे।

कि जैसे आप उनके बारे में सुन रखे थे और भवयान में पढ़ते थे, वैसे ही श्री विशाल साहेब हैं। यहां दो दिन रुककर आप बुरहानपुर के लिए प्रस्थान किये और दो दिनों में वहा पहुंच गये।

2.

आपकी सेवा-भावना

बुरहानपुर में आप प्रातः सबसे पहले उठ जाते और दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर सेवा-कार्य में लग जाते। जो संत शौच करके आते उनका लोटा आप ले लेते और उसको मांजकर उसमें स्वच्छ जल भरकर उन संत को दे देते। भोजन के बाद कड़ाही, हण्डा आदि बड़े बरतन मांजने के लिए आप ले लिया करते। इसी प्रकार स्थूल सेवा कार्यों को आप बड़ी प्रसन्नता एवं उत्साह से करते।

कबीर निर्णय मदिर, बुरहानपुर में आपके पहुंचने के कुछ दिन बाद बहड़रा कबीर आश्रम के आपके बड़े गुरुभाई सत श्री विमल साहेब जी एव श्री निहाल साहेब भी गुजरात से भ्रमण करते हुए वहां गये। वहां आपकी लगन और सेवा-भावना को देखकर श्री विमल साहेब जी बहुत हर्षित हुए। एक दिन उन्होंने आपको अपने पास बुलाकर कहा—हम तो पहले समझते थे कि आप बढ़िया साध् तो होओग लेकिन सवा-कार्य में आगे नहीं बढ़ पायेगे, लेकिन यहां आपकी सेवा-भावना, सेवा-कार्य और परिश्रम देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। साध् को इसी प्रकार सेवा एवं साधनापरायण होना चाहिए।

इस प्रकार सत श्री अभिलाष साहेब थोड़ ही दिनों में अपनी सेवा, साधना, परिश्रम और त्याग-वैराग्य भाव से सभी के दिल को जीत लिये और छोटे-बड़े संतो और भक्तों के आप प्यारे हो गये।

3.

बुरहानपुर से वापसी

श्री अभिलाष साहेब जी अपने जन्म स्थान खानतारा गांव से माता-पिता आदि से ''कुछ दिन सगे-सम्बन्धियों में रहकर घर वापस आ जाने की बात'' कहकर सदा के लिए बड़हरा आश्रम आ गये थे। आपके गृहत्याग और साध् होने का पता जब घरवालों को लगा तो घर में और पूरे गांव में कोहराम मच गया। दुखी होकर पिता पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल सदगुरु श्री रामसूरत साहेब जी से मिले। इसके बाद उन्होंने आपको पत्र लिखा। इधर श्री रामसूरत साहेब जी ने भी

आपको पत्र लिखा। उसमें उन्होंने महान पारखी संत श्री निर्मल साहेब के एक पद की इन पंक्तियों को भी उhत किया—

मरना है जब अवश मुहब्बत करना झूठा।
करिये भजन विचार विषय से रहिये रूठा॥

कुछ दिनों बाद दोनो पत्र बुरहानपुर पहुचे। जिन्हें पूज्य आचार्य श्री रामस्वरूप साहेब जी ने पढ़ा। उन्होंने श्री अभिलाष साहेब जी को बुलाकर कहा—तुम्हारे जन्म-स्थान से पत्र आया है। वे लोग बहुत दुखी हैं और तुम्हें बुलाये हैं।

श्री अभिलाष साहेब जी ने कहा—ठीक है साहेब जी! जाकर समझा दूंगा।

हां, जाओ, तुम उन्हे समझा दोगे या वे तुम्हे समझा देगे। श्री रामस्वरूप साहेब जी ने कहा।

पूज्य श्री रामस्वरूप साहेब जी ने स्वाभाविक बात कही। इतने नवीन साध् पर सहज ही लोगों को संदेह होने लगता है कि पता नहीं आगे दृढ़ रह पायेगे या नहीं। लगभग एक महीना बुरहानपुर आश्रम में रहकर आप अपने बड़े गुरुभाई श्री निहाल साहेब जी के साथ गुरुआश्रम बड़हरा आ गये।

4.

गुरु आश्रम से जन्म स्थान जाना

जन्म स्थान के लोगो को जब आपके विरक्त होने का पता चला तो कुछ लोग आपसे मिलना चाहते थे। किन्तु जब उनको यह पता चलता कि आप बड़हरा आश्रम मे हैं ही नही तब लोग छटपटाकर रह जाते।

बुरहानपुर से बड़हरा कबीर आश्रम वापसो का पता चलने पर आपके पिता जी तथा तीस-पैंतीस लोगों का समूह बड़हरा आश्रम पहुचा। सब आपको देखने के लिए लालायित एवं व्याकुल थे। वे सभी खानतारा गांव के संभ्रांत लोग थे। ठाकुर बमबहादुर सिंह जी ने श्री अभिलाष साहेब जी से कहा कि आप घर चलें। घर के लोग व्याकुल हैं। श्री अभिलाष साहेब ने कहा कि मैं किसी भी स्थिति में घर नहीं जा सकता। तब पिता पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल ने कहा कि दो दिन मिलने के लिए ही चले चलें। सब आपको देखना चाहते हैं।

सबके आग्रह करने पर गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के आज्ञानुसार आप सत श्री निहाल साहेब जी के सहित सबके साथ खानतारा गये। दिसम्बर का महीना था। ठंड अधिक थी। लम्बे बरामदे में पुआल बिछा था और उसके ऊपर बिस्तर। दूर-दूर से लोग आते और दो दिनों तक जब तक आप वहा रुके रहे, मनुष्यों का जमघट लगा रहा। लोग आपको समझाते लेकिन आपके उत्तर से सब

शांत हो जाते। पिता दुर्गाप्रसाद शुक्ल जी आपके उत्तर से लोगों के परास्त होने पर केवल हंसते थे। स्वयं वे आपको घर में रहने के लिए समझाते नहीं थे।

रात को पिता दुर्गाप्रसाद शुक्ल भोजन करने जब घर में गये तब भोजन-कक्ष में न जाकर कमरे मे खाट पर बैठकर रोने लगे। लोगों ने द्वार पर जाकर आपको बताया। आप भीतर गये और पिता जी से कहे—आप दुखी क्यों हैं? शुक्ल जी ने कहा—हम दोनो साथ-साथ भोजन करते थे और उस समय भी सत्संग चलता था। उन्ही बातो को याद करके मैं रो पड़ा।

फिर ठहरकर उन्होंने कहा—मैं आपको घर लौटने की बात तो नहीं करूंगा, परन्तु आपने गलत किया—जल्दीबाजी की। पहले मुझे संन्यास लेना चाहिए था, तब आपको।

श्री अभिलाष साहेब जी ने कहा—आप भी चलिये। तब पिता जी निरुत्तर हो गये। उनको तो वैराग्य था नहीं, फिर वे कैसे सन्यास लेते!

श्री अभिलाष साहेब को देवियों के बीच में भी मिलने-जुलने के लिए बैठना हुआ। बरामदे के अन्दर तरफ एक बड़ा कक्ष था, जिसमे तीन-चार खाट बिछी हुई थी। कुछ बूढ़ी स्त्रिया वहा बैठी थी। मा के साथ जब आप अन्दर गये सब आपको आश्चयपूर्वक देखने लगी। एक खाट पर आप बैठ गये, तब तक बहुत से बच्चे एव अन्य देविया वहा आ गयी। सबके चेहरे पर आपके आने की प्रसन्नता थी। साथ-साथ सबकी आखो मे एक वेदना भी झलक रही थी। किसी-किसी ने दुखी होकर आपको उलाहना भी दिया, लेकिन आपने उनको आदर से समझाया। माता के मन में पुत्र के लिए प्रबल मोह होन पर भी उन्होंने आपको थोड़ी भी उलाहना नहीं दिया। माता जगरानी देवी एक समझदार एव विचारवान महिला थी। उनको वैराग्य-साधना का महत्त्व समझ मे आता था। जनश्रुति एव वैष्णव परम्परा से सद्‌गुरु कबीर के विचार उनको मिले थे।

एक पंडित जी ने कहा—क्या सन्यास लेने की यही अवस्था है?

आपने उन्हीं पंडित जी से पूछ लिया—सन्यास का समय कब होता है?

पंडित जी ने कहा—पचहत्तर वर्ष की उम्र में सन्यास लिया जाता है।

सत श्री ने पंडित जी से कहा—तो क्या आपकी उम्र पचहत्तर वर्ष की नहीं हुई? आपकी इतनी बात सुनते ही वे पंडित जी शरमा गये क्योंकि उनकी उम्र उस समय पचहत्तर वर्ष की हो चुकी थी। उनको अपने कथनानुसार सन्यास लेना चाहिए लेकिन उन्होंने सन्यास नहीं लिया था।

एक दूसरे पंडित जी आपसे मिलने आये जिनकी उम्र चालीस वर्ष की रही होगी। वे इलाकेदार भी थे। उन्होंने भौं चढ़ाते हुए आपसे कहा—क्या आपको इस अवस्था में सन्यास लेना उचित है?

आपने बड़ी विनम्रता से कहा—तब किस अवस्था में सन्यास लेना चाहिए?

पंडित जी ने कहा—शास्त्रों के अनुसार तो सन्यास लेन की उम्र पचहत्तर वर्ष बतायी गयी है।

सत श्री—विवाह के लिए कब बताया गया है?

पंडितजी—पचीस वर्ष।

हमारी तो अभी इक्कीस ही की उम्र चल रही है—आपने कहा। आपकी इतनो बात सुनकर सब लोग हंसने लगे। तब पंडित जी ने कहा—हां तो फिर पक्का रहना, कच्चा नहीं होना।

सत श्री—आपका आशीर्वाद।

दूसरे दिन चमचमाते हुए कपड़े पहने, घोड़े पर सवार ठाकुर हनुमान सिंह इलाकेदार आ विराजे। घोड़े से उतरते ही उन्होंने नमस्कार किया और गुस्से में कहा—क्या यह आपने ठीक किया?

आखिर गलत ही क्या किया?—आपने बड़ी विनम्रता से कहा। आपने हंसते हुए ठाकुर साहेब से पुनः कहा—आप भी ये राजसी कपड़े छोड़िये और चलिये हमारे साथ। आपकी इतनी बात सुनकर ठाकुर हनुमान सिंह जी सरल हो गये और सहज ढंग से अपनी बात कहने लगे।

दूसरे दिन शाम को सत श्री निहाल साहेब क साथ आप गुरु आश्रम बड़हरा लौट रहे थे। इसी बीच रास्ते मे सरस्वती देवी मिल गयी, वे अपने पिता और बेटे के साथ खानतारा आ रही थी। उनके पिता ने सतो को प्रणाम किया, तब तक सरस्वती दवी श्री अभिलाष साहेब को साधुवेश मे देखकर रोन लगी। पुत्र अम्बिका प्रसाद पास मे खड़ा कभो मा को देखता कभो पिता को। ऐसी दुखद घड़ी मे वह अबोध बालक भी सिसकने लगा। सत श्री निहाल साहेब जी ने बच्चे को प्रसाद दिया और उनकी मा को समझाया। आपकी बाते उनकी समझ मे आयी और उन्होने मूक स्वीकृति दी। सरस्वती देवी के पिता जी दुखी थे किन्तु श्री अभिलाष साहेब की निश्चयता को देखते हुए वे कुछ बोल न सके। थोड़ी देर मे दोनों पक्ष अपने-अपने रास्ते मे आगे बढ़ गये। सरस्वती देवी ने आजीवन सास-ससुर के घर मे रहते हुए एक तपस्विनो का जीवन बिताया। 14 जनवरी, 1986 को लगभग 51 वर्ष की उम्र मे उनका निधन हुआ।[1]

---

1. **पिता जी का निधन दिसम्बर 1983 में, इसके एक महीने बाद माता जी का भी निधन हो गया।**

5.

कुभ मेला चलोगे या विशालदेव के दर्शन करने?

नवम्बर 1953 ई0 मे गृहत्याग के तीन दिन बाद ही श्री अभिलाष साहेब जी अपने गुरु आश्रम बड़हरा से चलकर कबीर निर्णय मदिर बुरहानपुर चले गये। डेढ़-दो महीने के बाद जब आप वहा से वापस कबीर आश्रम बड़हरा आये तो उस समय इलाहाबाद (प्रयाग) का कुभ मेला शुरू हो गया था। बहुत से सन्त-भक्त कुभ मेला घूमने के लिए जा रहे थे। आपके गुरुदव श्री रामसूरत साहेब जी ने एक दिन आपसे पूछा कि अभिलाष दास! तुम कुभ मेला घूमने चलोगे या सद्गुरु विशाल साहेब के दर्शन करने?

श्री अभिलाष साहेब ने विचार कर जवाब दिया—गुरुदव, सद्गुरु विशाल साहेब के दर्शन करने के लिए चलने का मन है। आपका एसा उत्तर पाकर गुरुदव प्रसन्न हो गये और विशाल दव के दर्शनार्थ चलने की तैयारी करने लगे। उन दिनो विशाल दव सुढ़ियामऊ बुड़वल स्टेशन के पास दानपुरवा ग्राम मे विराजमान थे। उनके समाज की उस समय पूर्ण विकसित अवस्था थी। चारो ओर विशाल दव की वैराग्य-साधना की महिमा फैली हुई थी। द्र-द्र से सन्त-भक्त उनके दर्शनार्थ वहा जा रहे थे। दो दिनो के बाद आप गुरुदव के साथ कुछ फल-मिठाई आदि लेकर वहा पहुचे। विशाल दव के दर्शन करने का आपका यह द्सरा अवसर था। फल आदि समर्पित करके आप दोनो बैठे, किन्तु इस बार भी विशाल दव से आपकी कोई चर्चा नही हो सकी। हा, आपके गुरुदव जी और विशाल दव दोनो मे कुछ सत्सग और समसामयिक चर्चा हुई। विशाल दव का आश्रम गाव स बाहर एक पर्णकुटी के रूप मे था किन्तु आप लोगो का निवास गाव मे एक साधारण मिट्टी के मकान मे था। चार-पाच दिनो तक वहा रहकर आप लोग वहा से वापस बड़हरा आश्रम आ गये। प्रयाग का कुभ मेला चल ही रहा था, बहुत-से भक्त मेला घूमने के बाद विशाल दव के दर्शन करने जाते। उस समय छत्तीसगढ़ के अनेक भक्त वहा पहुचे हुए थे। गुरुदव श्री रामसूरत साहेब को बड़हरा जाते दखकर आपके साथ छत्तीसगढ़ के छत्तीस भक्त चलने को तैयार हो गये।

सब लोग वहा से ट्रेन से चलकर मनकापुर स्टेशन पर उतरे और एक भक्त के घर भोजन-विश्राम किये। द्सरे दिन बड़हरा कबीर आश्रम पहुचे।

आश्रम मे गुरुदव जी और भक्तो के आने पर एक दिन भोजन मे भडारा का आयोजन हुआ, जिसमे अभिलाष साहेब जी ने पूड़ी छानने का काम किया। यह

पूड़ी बनाना आपका पहली बार था। इससे पहले का कोई अनुभव नही था। पूड़ी अच्छी बन नही पायी और कड़ी हो गयीं। अन्य सभी सन्तो ने तो मन को समझाकर खा लिया लेकिन श्री सन्तोष साहेब जब भोजन करके बाहर हाथ धोने निकले तो गुस्से मे लोगो को सुनाकर कहने लगे—जौन है तौन कडा जैसी पूड़ी बनाकर धर दिये हैं, जौन है तौन न हाथ से टूटे न दात से कटे, ऐसी पूड़ी कहो खाई जाती है जौन है तौन। सतोष साहेब हर बात मे ''जौन है तौन'' कहते थे। यह उनकी आदत थी।

श्री सन्तोष साहेब के इस प्रकार कहने पर श्री निहाल साहेब ने उन्हे समझाया कि साहेब, अभी वे बच्चे हैं। पहली बार पूड़ी बनाये हैं, अब बिगड़ गयी है तो इतना उन्हे न सुनाये कि...।

श्री निहाल साहेब के इतना कहते ही वे चुप हो गये। फिर तो श्री अभिलाष साहेब जी कुछ ही दिनो मे पूड़ी ही नही सभी प्रकार का भोजन बनाने मे कुशल भडारी हो गये।

6.

आपकी भी शानो-शौकत नहीं रहेगी

श्री अभिलाष साहेब जी को गृहत्याग किये अभी चार महीने बीत रहे होंगे। उस समय वर्ष 1954 के फरवरी-मार्च के महीने में सदगुरु श्री विशाल साहेब जी अपने सत समाज सहित बड़हरा कबीर आश्रम पधारे हुए थे। उसी समय की यह घटना है।

श्री अभिलाष साहेब सुबह से दोपहर तक तो भोजन-भण्डार बनाते। शाम के समय अध्ययन-मनन के लिए वन-बाग में एकान्तवास के लिए चले जाते। एक दिन शाम के समय आप बाग में बैठे थे। एक थानदार सामने से होकर निकले। थानेदार की उम्र उस समय तीस वर्ष की रही होगी। आंखों पर काला चश्मा लगाये साइकिल पर सवार होकर वे आये और आपके सामने खड़े हो गये।

आत ही उन्होंने आपस पूछा—आप कौन हैं? क्या आप ज्योतिष शोध रहे हैं?

श्री अभिलाष साहेब जी ने बैठे ही बैठे बड़ी निर्भीकता से कहा—ज्योतिष नहीं वैराग्य शोध रहा हूं।

थानेदार—आप कहां रहते हैं?

सत श्री—पास के कबीर आश्रम में।

थानेदार—आपको वैराग्यपथ में आये कितने दिन हुए?

सत श्री—चार महीने।

चार महीने सुनकर थानेदार को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा—आपकी उम्र क्या है?

सत श्री—इक्कोसवां वर्ष चल रहा है।

थानेदार—आप किस कुल के हैं? इस प्रश्न पर श्री अभिलाष साहेब जी चुप रहे। लेकिन थानेदार के बहुत आग्रह करने पर आपको बताना पड़ा—ब्राह्मण परिवार में शुक्ल गोत्र।

थानेदार—विवाह हुआ था कि नहीं? (उस समय बाल-विवाह की प्रथा थी ही) आपने कहा—हुआ था। यह सुनते ही थानेदार को घोर आश्चर्य हुआ। उन्होंने सत श्री से कहा—आपको तो वैराग्य लेना ही नहीं चाहिए था।

सत श्री—आपको भी वैराग्य करना चाहिए। क्योंकि आपकी ये शानो-शौकत एक दिन नहों रह जायेगी, समाप्त हो जायेगी।

आपकी निर्भीकता एवं मस्तानगी से थानेदार बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने हाथ जोड़कर सिर झुकाया और इतना ही कहा—फिर कभी मिलूंगा। और अपने रास्ते चले गये।

* * *

कुछ महीने के बाद की बात है। एक बार सत श्री अभिलाष साहेब जी के कान में दर्द होने लगा था। इसलिए वे उसकी चिकित्सा के लिए सादुल्लानगर के सरकारी चिकित्सालय में जा रहे थे। रास्ते में वहां का पुलिस-थाना पड़ता था। उपर्युक्त थानेदार उसी थाने के थे। वे अपने मित्रों और पुलिस के साथ थाने के सामने पेड़ के नीचे बैठे थे। उन्होंने आपको जाते देखा तो पहचान लिया। वे अपने चपरासी को भेजकर आपको बुलाना चाहे।

चपरासी दौड़कर आपके कुछ निकट आया और आवाज लगाकर आपको रोकना चाहा। लेकिन आप उसकी आवाज को अनसुनी करते हुए आगे बढ़ते रहे। थानेदार ने सोचा कि शायद महाराज जी सुने ही नहीं। फिर वे स्वयं तेजी से चलकर आपके सामने आकर खड़े हो गये। उन्होंने आपको नमस्कार किया। तत्पश्चात थाने चलने के लिए आग्रह करने लगे। उनके आग्रह को स्वीकार करते हुए आप उनके साथ चले गये। उसी समय एक रियासतदार मौलवी साहेब आ गये।

थानेदार साहेब ने मौलवी साहेब से सत श्री का परिचय दिया और आपका ब्राह्मणकुल में जन्म और विवाहित होना आदि बताया। यह सुनकर मौलवी

साहेब ने कहा—तौबा, तौबा, लाहौलबिलाकूबत! आपने बहुत बड़ा गुनाह किया।

क्यों, गुनाह क्या हुआ?—आपने पूछा।

खुदा ने किसी औरत से आपका सम्बन्ध जोड़ा था और आपने उसकी मर्जी के बिना तोड़ दिया। इस संसार में अल्लाह की मर्जी के बिना कुछ नहीं होता—मौलवी साहेब ने कहा।

सत श्री—क्या अल्लाह की मर्जो के बिना कुछ भी नहीं होता?

मौलवी साहेब—हां-हां, उसकी मर्जी के बिना कुछ भी नहीं होता। यहां तक कि एक तिनका भी नहीं हिलता।

सत श्री—फिर मेरा वैराग्य लेना भी उसकी मर्जो के बिना कैस हो सकता है?

आपका इतना कहना हुआ कि थानेदार जोर से ठहाका लगाकर हंस पड़े। मौलवी साहेब भी लज्जित होकर हंस पड़े। उनको कोई जबाब नहीं सूझ रहा था।

थानेदार ने कहा—मौलवी साहेब, इन संतों से आप पार नहीं पायेंगे।

7.

पुत्र अम्बिका प्रसाद की मत्यु

सन् 1954 ईस्वी चैत्र का महीना था। सत श्री अभिलाष साहेब उस समय अपने गुरु आश्रम बड़हरा में थे। सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब अपने संत समाज सहित बड़हरा कबीर आश्रम में विराजमान थे जिसमें श्री प्रेम साहेब, श्री निराश साहेब, श्री वासुदेव साहेब, श्री शरण साहेब, श्री आज्ञा साहेब, श्री संतशरण साहेब, श्री धीरा साहेब आदि मुख्य संत विद्यमान थे। एक सुबह श्री अभिलाष साहेब की जन्मभूमि से एक नाई संदेश लेकर आया। उसने आपको बताया कि आपके पिता जी (पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल) ने आपको बुलाया है। नाई ने पुनः जोर देकर कहा कि पंडित जी ने शीघ्र ही बुलाया है क्योंकि आपके पुत्र (अम्बिका प्रसाद) का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ चुका है।

श्री अभिलाष साहेब ने नाई को कड़े शब्दों में कहा—मैं यहां आया हूं तो बार-बार घर जाने के लिए तो नहीं आया हूं। इतना कहकर आपने पुनः उसको कहा—जरा रुको, अभी मैं एक पत्र लिखकर देता हूं। उसको लिये जाना और पंडित जी को दे देना।

पत्र लिखकर आप नाई के हाथ में दे ही रहे थे कि गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी वहां आ गये और नाई के हाथ से पत्र लेकर वे पढ़ने लग। उनको पत्र

कठोर लगा। अत: गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी ने पत्र को फाड़कर फक दिया और आपको झिड़कते हुए कहा—वे (माता-पिता) तुम्हारे शत्र तो नहीं हैं। एक घंटा के लिए चले जाओगे तो तुम्हारा वैराग्य खत्म थोड़े हो जायेगा। तब आपने नाई से कहा—अच्छा, तुम चलो मैं शाम तक आ जाऊगा।

संदेशवाहक नाई चला गया। शाम होते-होते श्री अभिलाष साहेब भी जन्मस्थान खानतारा पहुच गये। बच्चे (अम्बिका प्रसाद) की हालत बहुत गंभीर हो चुकी थी। वह कई दिनो से चेचक रोग से पीड़ित था। सत श्री अभिलाष साहेब जब उसके पास पहुचे तो लोगो के कहने पर उसने एक बार आपकी तरफ आखे खोलकर देखा। इसके बाद कुछ ही मिनट मे आपके सामने ही उसने शरीर छोड़ दिया। घर मे उपस्थित सभी सदस्य रोने-चिल्लाने लगे। आपके पिता पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल भी आंगन में बैठकर रोने लगे। आपने समझाया कि आपका रोना शोभा नहीं देता। लेकिन वे रोते ही रहे। तब तक काफो रात हो चुकी थी। आप जाकर चारपाई पर सो गये।

श्री अभिलाष साहेब जी का मन इस हृदयविदारक घटना से तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उनको देखने से लगता कि मानो कुछ हुआ ही नहीं है। दूसरे दिन सुबह बच्चे के शव को जल प्रवाह करने के लिए राप्ती नदी में ले जाने की तैयारी हुई। लोगों ने आपको भी चलने के लिए कहा लेकिन आपने कहा—अन्य बहुत लोग तो जा ही रहे हैं। मुझे वहां जाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

एक ठाकुर जी ने कहा—इस अन्त्येष्ठि क्रिया में आपका जाना आपक वैराग्य में सहायक ही होगा। तब आप जाने के लिए तैयार हो गये। आप अपना कमडल लिये और सबके साथ चल दिये। शव को जल-प्रवाह करते समय पिता जी पुन: जोरो से रो पड़े। लोगों के समझाने से वे शान्त हुए। बमबहादुर सिंह और प्रताप सिंह ये दोनो क्षत्रिय मित्र थे। ये लोग भी अन्त्येष्ठि क्रिया में आये हुए थे। रास्ते में लौटते समय श्री अभिलाष साहेब को समझाते हुए प्रताप सिह ने कहा—अम्बिका प्रसाद तो अब दुनिया म नहीं रहे, माता-पिता आदि सब इस दोहरी वियोग-पीड़ा में शोकाकुल हैं। इसलिए आप कुछ दिन घर पर रुक जाये तो लोगों को संतोष हो जायेगा।

आपने अपनी वैरागी भाषा में सबको फटकारते हुए कहा—मेरे सामने ही माता-पिता, भाई आदि सबका शरीर छूट जाय और घर नष्ट हो जाये तो भी मैं घर पर नहीं रुक सकता। आपकी इतनी बात सुनकर कष्ट तो सबको हुआ लेकिन कोई कर ही क्या सकता था। सब लोग वापस खानतारा आ गये।

शाम को माता जी ने आपसे कहा—भीखू यादव के यहां इस समय महाराजा

पंडित भागवत कथा कहते हैं। क्या आप सुनने चलेंगे? आप अपना कमंडलु और आसनी लेकर माता के साथ कथा सुनने चले गये।

पूर्व परिचित महाराजा पंडित भागवत सुनाने जा रहे थे। पंडित जी व्यास गद्दी पर बैठ गये थे। बचपन में आप उनसे अनेक बार भागवत कथा सुन चुके थे। आज आपको साध् वेष में देखकर पंडित जी संकोच में पड़ गये।

उन्होंने सकुचाते हुए कहा—आपको बैठने के लिए मैं क्या दूं? आप अपनी साफो बिछाकर जमीन पर बैठ गये। भागवत सुनाते समय पंडित जी ने कहा—आपको क्या सुनाऊ? मैं तो जीवन भर केवल दूसरों को सुनाता रहा।

आपने कहा—आप संकोच न करें। जो सुनाना हो आप निर्भय होकर सुनायें। पंडित जी वैराग्य क महत्त्व को समझते थे। इसलिए एक कम उम्र के साधक से भी उनके मन में संकोच होता था। फिर वे भागवत-कथा सुनाने लगे, आप उनकी पूरी कथा सुनकर वहां से वापस घर आ गये। फिर दूसरे दिन आप अपने गुरुआश्रम बड़हरा आ गये।

समझदार लोग जो साधना, ज्ञान, वैराग्य और साध् की रहनी को समझते थे वे आपको महायोगी, तपस्वी, ज्ञानी तथा पहुंचे हुए संत मानते थे। लेकिन साधारण संसारी बुf) के लोग आपको निर्दयी, कसाई समझते थे। ऐसे लोग आपको कहते थे कि अरे, इनको माता-पिता के प्रति भी दया-मया नहीं है। ये तो साध् क्या हैं पक्के कसाई हैं। उन लोगों की वैसी ही समझ थी।

श्री अभिलाष साहेब के गृहत्याग के थोड़े दिन बाद ही आपके त्याग, वैराग्य, साधना एवं रहनी की शोहरत चारो तरफ फल गयी।

8.

आप तो राम में लीन रहो!

वर्ष 1954 की बात है। सत श्री अभिलाष साहेब जी बड़हरा आश्रम में थे। किसी कारणवश एक दिन सम्बन्धियों में (जनकपुर) कुछ संतों के साथ आप गये। लोगों ने सभी संतों का यथोचित स्वागत-सत्कार किया। धीरे-धीरे जब पास-पड़ोस के लोग जान पाये कि आप आये हुए हैं तो बहुत-से लोग वहां पर इकट्ठे हो गये। सभी अपनी-अपनी बातें कहते।

कोई कहता, साधु होना जिम्मेदारियों से पलायन करना है और एक प्रकार की कायरता है। जिन माता-पिता ने पाल-पोषकर बड़ा किया उनको इस प्रकार ठुकरा देना महापाप है। क्या आपके माता-पिता ने इसी आशा से आपको पाला-

पोषा था कि जब बुढ़ौती में सेवा करने का समय आये तो आप उनको दुख में डालकर चल दें। सबको आप यथोचित जबाब दे रहे थे। इतने में एक व्यक्ति आकर जोरों से कहने लगा कि जब आपको साधु होना था तो शादी ही क्यों किये। उनको अब कौन निभायेगा?

श्री अभिलाष साहेब जी की नयी उम्र, नया खून और नयी ऊर्जा थी। आप भी जरा खरी भाषा मे जवाब देने लगे। एक वृद्धा, जिसकी उम्र लगभग साठ-पैंसठ वर्ष की रही होगी, बैठी थी। उसने आपसे प्रेमपूर्वक्कहा—ऐ बाबा! आप राम में लीन हो, बस, उसी में लीन रहो। ये दुनिया है, इसे कहने दो।

आपको उस वृद्धा माता के वचन बाण जैसे लगे। आपको अपनी भूल का एहसास हो गया कि सचमुच कोई कुछ भी कहे उसे सुनकर मीठे शब्दों में जवाब देना चाहिए। उलझने वाले से उलझना साधु का स्वभाव नहीं है। साधु तो विचारपूर्वक और मीठा बोलता है।

9.

वैराग्य में सम्बन्ध क्या?

रामसुमिरन जी की उम्र उस समय 18-19 वर्ष की रही होगी। आपके एक मित्र थे जिनका नाम था 'पद्म प्रसाद शुक्ल।' जिन्हें बचपन से ही 'महन्त' जी के नाम से जाना जाता था। महन्त जी का घर भारत-नेपाल बार्डर पर 'खैरहनिया' नाम के गांव में था जो जिला बस्ती में पड़ता था। खैरहनिया गांव खानतारा से काफी दूर था।

रामसुमिरन जी और महन्त जी में धीरे-धीरे प्रगाढ़ मैत्री हो गयी। पत्र के माध्यम से दोनो के प्रेम का आदान-प्रदान होता रहता था। एक दूसरे से जब मिलते तो दोनो गले से लिपट जाते। जब बिछुड़ने लगते तो दूर तक विदा करने जाते थे। अलग होते समय दोनों की आंखें प्रेम से सजल हो जाया करती थीं।

रामसुमिरन जी का वैराग्य धीरे-धीरे पक रहा था। 1953 ई0 के नवम्बर में आप गृहत्याग करके सदा के लिए गुरुदेव की शरण में आ गये।

साधु वेष होने के लगभग दो महीने बाद जब आप अपने बड़े गुरुभाई संत श्री निहाल साहेब के साथ जन्मस्थान (खानतारा) गये तो महन्त जी का पत्र आया हुआ था। आपने उसके उत्तर में उनको एक पत्र लिखा—

प्रिय महन्त जी! सप्रेम नमस्कार,

अब आपका और मेरा रास्ता अलग-अलग हो गया है। इसलिए कृपया मेरे

नाम से आप कोई पत्र न लिखें। अगर आपको मुझसे प्रेम है तो मेरे ही रास्ते में आप भी आइये। अब आप आप हैं और मैं मैं हू।

श्री अभिलाष साहेब जी का वैराग्य भरा पत्र जब महन्त जी को मिला तो उन्हें कष्ट हुआ। काफी दिनों के बाद मिलने पर उन्होंने दुखी होकर कहा—आपने तो मुझे बिलकुल ही भुला दिया।

श्री अभिलाष साहेब—वैराग्य का पथ ही ऐसा है जिसमें अकेले चलना पड़ता है—"भक्ति गली अति सांकरी, जामें दो न समाय।"

10.

चिवरी बंगला में आपकी साधना

श्री अभिलाष साहेब अपने गुरुदेव जी एव सत समाज के साथ छत्तीसगढ़ सर्वप्रथम सन् 1954 के अक्टूबर में गये थे। कई महीने भक्तों में भ्रमण करने के बाद मार्च 1955 में गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ आप वापस आ गये। जब आप छत्तीसगढ़ में थे तभी चिवरी गांव के प्रसिh भक्त इंदल गौंटिया और करगा गांव के भक्त नूरसिंह गौंटिया ने श्री अभिलाष साहेब की साधना, रहनी, स्वभाव और व्यक्तित्व को देखकर गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब से निवेदन किया—गुरुदेव! श्री अभिलाष साहेब को समय से फिर छत्तीसगढ़ भेजने की कृपा करें। हम सब उन्हे चाहते हैं।

करीब एक वर्ष बाद गुरुदेव जी ने अभिलाष साहेब को अपने पास बुलाकर कहा—अभिलाष दास! छत्तीसगढ़ क इंदल गौंटिया तथा नूरसिंह गौंटिया ने तुम्हें बुलाया है। जाओ, कुछ दिन वहां रह लो। उन सबको संतोष हो जायेगा।

गुरुदेव की आज्ञा पाकर सन् 1956 के जुलाई माह में श्री अभिलाष साहेब जी अपने बड़े गुरुभाई सत श्री निहाल साहेब तथा दो अन्य साधओं के साथ छत्तीसगढ़ के लिए प्रस्थान किये।

कई जगह गाड़ी बदलते हुए तीन-चार दिन की यात्रा के बाद छत्तीसगढ़ पहुंचकर आप पहले नूरसिंह के यहां करगा में कई दिन रहे। फिर चिवरी, सकरी, परसट्टी, बड़ी करेली, खिसोरा, नवागांव, बोड़रा, भरदा, भैंसमुडो रहकर दर्रा आ गये और जगतपाल जी के यहां आपका निवास हुआ। वहां कुछ दिन रहकर तथा अन्य तीनो संतों को वहीं छोड़कर आप अकेले एकान्तवास की दृष्टि से चिवरी गांव के बंगला में आ गये। पीछे जहां-जहां निवास हुआ वहां आपकी एकान्तसाधना तथा भक्तों में प्रवचन चलता रहा।

चिवरी गांव से करीब एक कि0मी0 दूर पर अंग्रेजों का एक डाकबंगला था। उसे नूरसिंह गौंटिया ने खरीद लिया था। बुरहानपुर के महान संत श्री लाल साहेब जी उसमें समय-समय से संत समाज सहित निवास करते थ। उसका पक्का भवन तो समाप्त हो गया था, खपरैल मकान खड़ा था। श्री अभिलाष साहेब जी दर्रा से नवम्बर महीने में अकेले आकर चिवरी बंगला के एक खपरैल कमर मे जमीन पर टाट का आसन बिछाकर रहने लगे। उन दिनों आप भोजन भी नहीं बनाते थे। कभी कोई भिगाया हुआ चना या मूंग ला दे तो उसे आप खा लेते थे। आप दर्रा गांव में तीन संतों को छोड़कर आये ही थे। जिनके यहां उन संतों का भोजन रहता था उनके घर के लोग भिगा हुआ मूंग या दूध लेकर चिवरी बंगला में आपको दे जाते। कभी-कभी कुछ नारियल या अन्य कोई फल आदि भी आ जाता था। इस प्रकार गीला या सूखा दिन में एक बार आप कुछ खा लिया करते।

ठंड के दिन होने पर भी आप सामान्य रूप से कुछ अचला-साफो आदि ओढ़कर रात काट लेते। चिवरी के एक भक्त ने आपके लिए वहां पर एक दोपक रख दिया था। उन्होंने कहा—साहेब, आप इसे रातभर जलने दिया करेंगे। तेल खत्म होने पर पुनः भर दिया जायेगा। लेकिन आप थोड़ी देर जलाकर दीपक को बुझा दिया करते। आपने कहा—इसकी हमें आवश्यकता नहीं है। रात्रि का समय सोने के अलावा ध्यान-चितन, मनोनिग्रह आदि में बीत जाता था।

उस बंगले में एक विषधर सर्प भी था। कई बार सोते समय आपने ऊपर खपरे के ठाट में उस विषधर सर्प को रेंगते हुए देखा था किंतु आपके मन में थोड़ा भी भय नहीं होता था। उन दिनों आप बहुत कम बोलते थे। दिनभर में आठ-दस वाक्य बोल देते, बस।

वहां पर दिन में कभी-कभी चरवाहे आते और आपसे पूछते—बाबा, यहां पर तो भूत-प्रेत रहते हं। आप अकेले कैसे रहते हैं? क्या आपको भय नही लगता?

आप उन चरवाहों से विनोदपूर्वक कहते—जब यहां भूत-प्रेत रहते हैं तो मैं अकेले कहां हुआ! भूत-प्रेत रहते हैं और मैं रहता हूं। लेकिन भूत-प्रेत से आज तक कोई मुलाकात नहीं हुई है। मुलाकात जब होगी तो उनसे बातचीत की जायेगी। डरने की बात नहीं है।

वस्तुतः भूत-प्रेत नाम का कोई जन्तु नहों होता। यह तो बस भ्रमिक एवं अंधविश्वासी लोगों की कल्पना मात्र है जो वस्तुतथ्य से बिलकुल परे है।

चिवरी बंगला में आपके रहते-रहते दर्रा से श्री निहाल साहेब आदि संत

आपके पास आ गये। वे सब दूर एक दूसरे कमरे में रहने लगे। आपके एकान्तवास करने के बाद भक्तों के आग्रह से उनके गांवों में भी आप जा-जाकर कुछ दिन रहे। उन दिनों जिस गांव में भी आप जाते वहां पांच दिन, दस दिन, पन्द्रह दिन तक भी रह लेते थे। चिवरी में ही कांकेर की तरफ से कुछ भक्त आये थे। उन्होंने आपसे कहा—साहेब, आप हमारे यहां चलें। हम सब आपके सत्संग, सेवा का लाभ चाहते हैं। वहां पर आपके एकान्तवास के लिए हम सारी व्यवस्था करेंगे।

सत श्री अभिलाष साहेब उनके निवेदन को स्वीकार करके वहां गये। उस तरफ भी आप महीनों एकान्तवास किये। उन दिनों आप ध्यान-साधना के कठोर अभ्यास से नराश्यवृत्ति को दृढ़ करते। जो समय-समय से वैराग्य-संजीवनी में छन्दों के रूप में आये हैं। आपका जब घूमने-टहलने का मन होता तो जंगलों में चले जाते।उस समय आप न ज्यादा प्रवचन करते और न किसी से विशेष बात ही करते।

उस समय आपके गुरु आश्रम बड़हरा मे रामनवमी के समय भंडारा होता था। उसकी व्यवस्था करने एवं उसमें सम्मिलित होने के लिए आपने सत श्री निहाल साहेब आदि संतों को बड़हरा भेज दिया और स्वयं एक साधक को साथ लेकर छत्तीसगढ़ में ही रह गये।

कांकेर क्षेत्र में कुरना गांव में दो महीन एकान्तवास कर धमतरी क्षेत्र में आ गये। इसके बाद पंद्रह दिन आप भैंसमुडो (मगरलोड) में रहे।

यहां से चलकर आप नवांगांव, खिसोरा, परसट्टी आये और परसट्टी से चलकर दर्रा कबीर आश्रम आये और यहीं से सन् 1957 के अक्टूबर मेंलगभग चौदह-पन्द्रह महीने छत्तीसगढ़ में रहकर बड़हरा कबीर आश्रम के लिए प्रस्थान किये।

11.

खान-पान मे सयम

V~ZZ-56 की बात होगी, एक बार आप गुरुदेव की आज्ञा पाकर गोंडा जिला के कुछ भक्तों के यहा भ्रमण करने गये। विशेषरूप से 'ज्वालापुर' और 'महादेव' नामक इन दोनो गांवों मे लगभग 28 दिनों तक आप रहे। भक्त के घर से भोजन की सामग्री आ जाती थी। आप स्वयं भोजन बनाकर खा लेते और एकान्त साधना करते थे। समय से भक्तों को कुछ हितोपदेश भी कर देते थे। जब आप भोजन बनाते-खाते उसी समय गांव का एक भक्त आपके पास आ जाता

था। वह बीच-बीच मे आपसे कुछ बातें कर लिया करता था और आपके सारे कार्य-व्यवहार को देखता रहता था।

प्रतिदिन भोजन के समय घर के भक्त आपके लिए कटोरी में घी ला दिया करते थे। आप उसमें से थोड़ा-सा घी ले लेते, शेष साफ छोड़ देत थे। एक दिन वह बैठा हुआ भक्त बोल पड़ा—साहेब, यह थोड़ा-सा घी है, आपके लिए आता है। उसको आप पूरा खा लिया करें।

आपने कहा—बिना घी के ही काम चल जाता है। लेकिन ला दिये हैं तो थोड़ा ले लेता हूं। ज्यादा घी खाना अच्छा नहीं है। इस प्रकार खान-पान की प्रलोभन वाली चीजों से आप अधिक ही सावधान रहा करते थे।

12.

संत की पहचान

सन् 1956के अगस्त की बात है। श्री अभिलाष साहेब जी संत श्री निहाल साहेब एवं अन्य दो संतों के साथ छत्तीसगढ़ गये हुए थे। आपका धमतरी जिले के बड़ी करेली गांव में कार्यक्रम था। भक्त श्री अभयराम साहू के घर आपके लिए निवास की व्यवस्था थी।

एक डाक्टर वृन्दावन से ट्रासफर होकर यहां सरकारी अस्पताल में सेवारत थे। गांव के भक्तों से उनका सम्पर्क हुआ। भक्तों ने उन्हें बताया कि गोंडा-जिला, उत्तर प्रदेश से हमारे गुरुदेव आनेवाले हैं। आप भी आयें और उनका सत्संग लाभ प्राप्त कर।

डाक्टर साहेब ने उनसे पूछा—आपके गुरु जी क्या मानते हैं?

भक्तों ने बताया—वे किसी प्रकार का अंधविश्वास और चमत्कार नहीं मानते हैं। वे जड़-मूर्ति को न पूजकर चेतन मूर्ति की पूजा मानते हैं। वे परोक्ष ईश्वर नहीं मानते।

'ईश्वर नहीं मानते'—इतना सुनते ही डाक्टर साहेब चौंक गये। उन्होंने कहा—ठीक है, संत के पास चलकर इस पर बात करनी है कि आखिर आप ईश्वर क्यों नहीं मानते हैं?

शाम को भोजन आदि के बाद आंगन में बैठकर संत-भक्त एक साथ बीजक का पाठ किये। इसके पश्चात आपका प्रवचन हुआ। एक घंटा प्रवचन के बाद आपने कहा—किसी को कुछ पूछना हो तो पूछ सकता है।

डाक्टर साहेब भी बैठे थे। उन्होंने कहा—महाराज, पूछना तो बहुत कुछ था और मैं पूछने ही आया था किन्तु आपका प्रवचन सुनकर मेरे सारे प्रश्न गायब हो

गये। आपने जो सारगर्भित, शास्त्रोक्त, वैज्ञानिक एवं सरल-सरस भाषा में प्रवचन सुनाया, इसमें कोई क्या प्रश्न कर सकता है। मैं तो समझ रखा था कि अन्य साधुओं की तरह आप भी एक साधु हैं। आप ईश्वर कैसे नहीं मानते हैं—चलकर यह देखू लेकिन आपके विचार सुनकर मेरा रोम-रोम आपसे प्रभावित हो गया। आपने ईश्वर की जो परिभाषा की है वह अक्षरशः सत्य एवं वैज्ञानिक है।

उस समय पन्द्रह दिन श्री साहेब जी वहा रहे। स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) के दिन जिस घर में आपका आसन था वहीं दरवाजे पर गांव के बहुत-से गणमान्य लोग एकत्रित हुए। डाक्टर साहेब उस दिन भी आये हुए थे। आपके बोलने के पहले वे भी पांच मिनट बोले।

उन्होंने कहा—सज्जनो, मैं कोई भाषण नहीं करने जा रहा हूं। मैं आप लोगों से यह बताना चाहता हूं कि आपके गांव में जो संत आये हुए हैं वे कोई साधारण संत नहीं हैं। आप लोग इन्हें किसी जाति-सम्प्रदाय विशेष की बात कहनेवाला मत समझना। ये सार सत्य कहने वाले संत हैं। आप सब अधिक संख्या में एकत्रित होकर महाराज जी की बातें सुनें। अंधविश्वास, चमत्कार, कर्मकाण्ड और सारे आडम्बर से हटकर महाराज जी जो बात बताते हैं इसी में मनुष्य का कल्याण है।

13.

अधविश्वासियो से सामना

1957 ई0 के लगभग श्री अभिलाष साहेब जी जब दूसरी बार छत्तीसगढ़ गये। उस समय भिलाई स्टील प्लाट का निर्माण हो रहा था।

इस प्लाट मे लोहमिश्रित पत्थर गलाने के लिए अनेक भट्ठिया हैं। उन दिनो छत्तीसगढ़ मे गाव के अनपढ़ लोगो मे यह अधविश्वास था कि इन एक-एक भट्ठियो मे एक-एक मनुष्य के बच्चे की बलि चढ़ाई जाती है, और इसके लिए बच्चे पकड़ने वाले लोग भेष बदलकर घूमते रहते हैं। ऐसे अधविश्वासी भोले लोगो के कारण अनेक निरपराध मनुष्यो की हत्या हो गयी थो।

छत्तीसगढ़ मे ही रायपुर जिले मे एक बार एक युवक घर से किसी कारणवश उदास होकर बाहर चला गया। खेतो की तरफ एक जगह वह पेड़ के नीचे बैठा था। थोड़ी दूर पर किसान के खेतो मे कुछ मजदूर काम कर रहे थे। उन मजदूरो से किसी ने आकर कहा—अमुक पेड़ के नीचे बच्चा पकड़ने वाला आया है और वह किसी बच्चे की टोह मे चुपचाप बैठा है। ऐसा सुनते ही वे

सभी मजदूर अपना-अपना हसिया-खुरपा लेकर वहा आ गये और सब मिलकर उसे मार डाले और उसकी आखे निकाल लिये।

1957 ई0 की ही बात है। श्री साहेब जी रायपुर जिला के एक गाव मे थे। एक दिन दुर्ग जिला गुण्डहरदही के पास एक गाव से सदश आया कि साहेब जी, अमुक भक्त बहुत बीमार हैं। वे आपकी बहुत याद कर रहे हैं, आप जल्दो वहा चलकर उन्हे दर्शन दने की कृपा करे।

उस समय गुरुदव श्री रामसूरत साहेब जी भी वहा विराजमान थे, उन्होने श्री अभिलाष साहेब को आदश के स्वर मे कहा कि अमुक भक्त तुम्हे याद किये हैं, चले जाओ, कुछ दिनो मे आ जाना। आप सत श्री निहाल साहेब को साथ लेकर वहा गये। शाम को सत्सग हुआ। सत्सग के बाद आप एकान्तवास के लिए बाहर खेतो की तरफ चले गये। वर्षा का समय था, किन्तु उस समय बारिश नही हो रही थी। एक सूखी जगह दखकर आप आसनी बिछाकर ध्यान मे बैठ गये। एक व्यक्ति ने दूर से दखा, तो उसको यह भ्रम हो गया कि यह कोई बच्चा पकड़ने वाला जादूगर व्यक्ति है। उसने गाव मे जाकर हल्ला कर दिया कि बाहर खेतो की तरफ बच्चा पकड़ने वाला एक व्यक्ति बैठा है। इतना सुनते ही गाव के तमाम लोग लाठी, डडा, फरसा, भाला आदि लेकर उस तरफ चल दिये। इतने मे उन खेतो का रखवाला वहा पहुच गया, जो कुछ दर पूर्व आपका प्रवचन सुना था। कुछ अधकार होने से अभी आपको वह पहचान नही सका था। पास पहुचकर, डरते-डरते अपनी भाषा मे उसने पूछा—कौन है?

श्री अभिलाष साहेब ने आखे खोली और कहा—भाई, मैं साधु हू, तुम्हारे गाव मे आया हू। आपका वचन सुनते ही वह पहचान गया, फिर सरल होकर कहा—साहेब, आप यहा बैठे हैं। तब तक गाव के लोग निकट आ गये थे। उस रखवाले ने वहा से उलटे पाव लौटकर लोगो को बताया कि आप लोगो को किसने भ्रमित कर दिया? ये तो वही सत हैं जिन्होने गाव मे आज हम लोगो को प्रवचन सुनाया है। वे इस समय यहा ध्यान मे बैठे हैं। आप सब लोग वापस जाओ, उनके पास जाने की जरूरत नही है।

खेत के उस रखवाले के हम बहुत अनुगृहोत हैं जो सही समय पर आपके पास पहुचकर लोगो के भ्रम को तोड़ा। अन्यथा भीड़ तो अधी होती है। वह पता नही आपके साथ क्या बरताव करती!

14.

भूल के लिए स्वीकार भाव

1959 की बात है। सत श्री अभिलाष साहेब जी उन दिनो छत्तीसगढ़ के करगा गाव मे सतो को बीजक पढ़ा रहे थे। आपकी यह सभा कभी किसी भक्त

के घर, तालाब के किनारे, बाग अथवा खलिहान आदि मे हुआ करती थी। सुबह का समय था, आप बीजक के आधार पर सभा मे बोल रहे थे। एक भक्त थे जिनकी उम्र 45-50 वर्ष की रही होगी। उस समय वे नये-नये साधु हुए थे। सत्सग मे बैठे आपके विचारो को वे आख बद किये इतनी तन्मयता से सुन रहे थे कि द्सरो को लगता था मानो वे सो रहे हो। आपने उनको टोकते हुए कहा—क्यो भाई! तुम सो रहे हो?

साधु ने कहा—नही साहेब! सो नही रहा, सुन रहा हू।

द्सरे दिन फिर वे वैसे ही बैठे सुन रहे थे। श्री साहेब जी ने पुन: टोका—तुम यहा बैठे सो रहे हो? उन्होने कहा—साहेब जी, मैं सुन रहा हू। तीसरे दिन पुन: वे उसी ढग से बैठे सुन रहे थे। श्री साहेब जी ने डाटते हुए कहा—तुम यहा सुननेआये हो कि सोने? साधु ने कहा—साहेब मैं सुन रहा हू। आपने झिड़कते हुए कहा—झूठ बोल रहे हो। साधु द्खी होकर चुप हो गया।

अगले दिन सत श्री अभिलाष साहेब जी लोटा मे पानी लिए दातून करने जा रहे थे। उसी समय सत श्री निहाल साहेब जी आ गये। उन्होने कहा—साहेब, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हू। आपने कहा—बताये साहेब जी; क्या आज्ञा है?

श्री निहाल साहेब—दातून कर ले, बाद मे बात हो जायेगी।

श्री अभिलाष साहेब—साहेब जी, पहले आप आदश करे, मैं सुन लू फिर दातून कर लूगा।

श्री निहाल साहेब—साहेब! आप बीजक पढ़ाते हैं, पढ़ाना गुरु-स्थान है। आपको अपनी बाते प्यार से कहनी चाहिए। आपने उस साधु को सबके बीच मे कह दिया—झूठ बोलते हो। सोचे, कहो वह भी उलटकर कह दता कि आप झूठ बोल रहे हो, तब क्या होता?

सत श्री अभिलाष साहेब जी गभीर होकर लोटा और दातून जमीन पर रख दिये। दोनो हाथ जोड़कर आपने श्री निहाल साहेब जी से प्रार्थना किया कि साहेब जी मुझसे भूल हो गयी, अब मैं आगे सावधान रहूगा। इसके बाद पुन: आपने निवेदन किया कि ऐसी कोई भी मेरी भूल या असावधानी दिखे तो आप नि:सकोच बताने की कृपा करे।

15.

गुरु की आज्ञा आवै, गुरु की आज्ञा जाय

(1)

श्री अभिलाष साहेब जी को गृहत्याग किये पांच-सात वर्ष बीते होंगे। आप अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के सान्निध्य में बड़हरा कबीर आश्रम में

रहते थे। बड़हरा कबीर आश्रम के पास एक गांव में सभी संतों का निमंत्रण था। श्री अभिलाष साहेब जी भी निमंत्रण में गये थे।

आपके पिता पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल जी कबीर आश्रम बड़हरा जाकर गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी से मिले और निवेदन किये कि साहेब, अभिलाष साहेब जी को एक दिन के लिए खानतारा भेज दें। गुरुदेव जी ने कहा कि पास के गांव में सब संतों के साथ वे (अभिलाष दास जी) निमंत्रण में गये हैं। वहीं से कुछ संतों को लेकर मुहम्मदनगर शंकर भक्त जी के यहां जायेंगे। जाकर कह दो कि आज खानतारा आपके घर होकर मुहम्मदनगर चले जाये।

पंडित जी उस गांव में आकर संत श्री अभिलाष साहेब जी से आग्रह किये कि एक-दो दिन के लिए खानतारा गांव चलने का कष्ट करें। गुरु जी ने आज्ञा दे दी है।

संत श्री—अच्छा ठीक है, आप चलें मैं बाद में आता हूं।

संत श्री अभिलाष साहेब जी उस गांव से लौटकर आश्रम आ गये।

गुरुदेव ने कहा—मैंने तो पंडित जी से कह दिया था कि ले जाओ। तुम्हें उसी तरफ से चले जाना चाहिए था। इतना दूर लौटकर क्यों आये?

पूज्य श्री ने कहा—पिता जी से आपने कह दिया था सो तो ठीक है, लेकिन मैंने सोचा गुरुदेव मुझे सीधे आज्ञा दें तब जाऊंगा।

गुरुदेव ने कहा—इतना सोचने की जरूरत नहीं है। जाओ, खानतारा होते हुए मुहम्मदनगर चले जाना।

श्री अभिलाष साहेब जी एक संत को साथ लेकर खानतारा गये। एक दिन वहां रहकर आप मुहम्मदनगर चले गये। अन्य संतों को पहले ही मुहम्मदनगर भेज दिये थे।

(2)

एक बार मुहम्मदनगर के शंकर भगत जी बड़हरा आश्रम आये। आश्रम में स्नानादि से निवृत्त होकर जल-भोजन ग्रहण किये। विश्राम के बाद उन्होंने संत श्री अभिलाष साहेब जी से कहा—साहेब जी, मुहम्मदनगर की कुटिया में चलकर कुछ दिन रहा जाये।

संत श्री ने कहा—भगत जी, आप तो हमारा स्वभाव जानते हैं। हमें अपने मन से न तो कहीं आना है और न कहीं जाना है।

शंकर भगत जी ने जाकर गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी से कहा—साहेब जी, श्री अभिलाष साहेब जी को मुहम्मदनगर की कुटिया में कुछ दिन के लिए भेजने की कृपा करें।

गुरुदेव ने कहा—हां, हां ठीक है। चले जाये, कुछ दिन रह आयें। गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जो ने संत श्री अभिलाष साहेब को बुलाकर कहा—अभिलाष दास जी, भगत जी तुम्हें बुलाने आये हैं। जाओ, उनकी कुटिया में कुछ दिन रह आओ।

आपने गुरुदेव से पूछा—साहेब जी, कितने दिनों में आ जाऊगा?

गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी—जितना तुम्हारा मन कहे और जितना संयोग पड़े उतना रह लेना। मुझे बीच में जरूरत पड़ेगी तो बुला लूंगा।

16. आपका धैर्य

यह घटना वर्ष 1960 के आस-पास की है। सत श्री अभिलाष साहेब जी गोडा जिला में विचरण कर रहे थे। भ्रमण करते हुए आप उतरौला बाजार में आये। बरसात के दिन थे। आपके पास एक छाता था। छाता की सिलाई टूट गयी थी। आप एक दजी की दुकान पर गये और दर्जी से छाता सिलने के लिए कहे। दर्जी ने कहा—महाराज, बैठ जाइये, जो कपड़ा अभी मैं सिल रहा हूं इसको पूरा कर लूं फिर आपका छाता सिल दूंगा। श्री साहेब जी प्रतीक्षा करते हुए बैठ गये।

इतने में एक मौलवी आ गये। वे किसी आवेश में थे। आते ही दर्जी से बातें करने लगे। बड़े जोरों से बिना रुके, एक घंटा से भी अधिक समय तक वे बोलते रहे। दर्जी सिलता भी रहा और बीच-बीच में जी हां! अच्छा! तो फिर! करता रहा। गुरुदेव जी चुपचाप सुनते रहे। मौलवी साहेब जब चलने लगे तो उन्होने दर्जी से कहा—यार! इन महात्मा जी का काम जल्दी कर दो। ये बड़े गमखोर (संतोषी) हैं। तब तक दर्जी का काम भी पूरा हो गया और वह आपका छाता सिल दिया।

सद्‌गुण सबके दिल को आकर्षित करते हैं। फूल की सुगन्ध हवा की अनुकूल दिशा में जातो है कितु सद्‌गुणों की सुगन्ध हवा की विपरीत दिशा में भी जाती है। एक बहिर्मुखी, दुनियादारी में डूबा व्यक्ति भी आपकी संतोष वृत्ति से प्रभावित हो गया और आपके लिए उसको कहना पड़ा—बड़े गमखोर हैं।

17.

खिजुवा खीजि न बोले हो

सद्गुरु रामसूरत साहेब जी अपनी सत मडली सहित एक बार उत्तर प्रदश के प्रतापगढ़ जिले मे थे। गाव के बाहर एक बगीचे मे सत्सग मडप बनाया गया, जिसमे द्र-द्र से सत-भक्त सत्सग मे आये। गुरुदव श्री अभिलाष साहेब जी का प्रवचन चल रहा था। उसी समय गाव के कुछ उजड्ड लोग सत्सग मे विघ्न पहुचाने एव सतो को खिझाने की दृष्टि से वहा पहुचे। वे लोग स्वय सामने के घर से खाट घसीट लाये और पडाल के पास ही बिछाकर उस पर बैठ गये। सत्सग सुनना तो द्र, बैठते ही सभी लोग बीड़ी जलाकर पीने लगे और आपस मे जोर-जोर से बाते करने लगे।

भक्तो को बहुत बुरा लगा, वे उन सबको डाट-फटकार कर वहा से भगा दना चाहते थे, लेकिन गुरुदव ने सबको शात रहने का सकेत किया। आप स्वय भी उनकी अशिष्टता पर कोई प्रतिक्रिया नही किये। आपका प्रवचन चलता ही रहा। थोड़ी दर मे उन लोगो ने सोचा, यहा हमारी दाल नही गलेगी। वे सभी वहा से उठे और जोरो से बड़बड़ाते हुए खाट को उठापटक करते हुए चल दिये। अब वे गुरुदव श्री रामसूरत साहेब जी के पास पहुचे। गुरुदव बगीचे मे खाट पर लेटे हुए थे। कुछ अन्य सत जन सेवा कार्य मे लगे थे, ये लोग वहा पहुचे और अशिष्टतापूर्वक खाट बिछाकर बैठ गये। कोई सुपारी निकाल कर सरौता से काटने लगा तो कोई बीड़ी पी रहा है। एक व्यक्ति आगे आकर गुरुदव से पूछता है, बाबा, आप सत्सग मे नही गये, क्या बहुत थके हैं।

गुरुदव शात रहे। अन्य सत जन भी समझ गये कि ये परेशान करने के लिए ही यहा आये हैं। इसलिए इनसे मौन रहना ही उचित है। कुछ दर मे वे सभी उठे और चलने लगे।

चलते वक्त उन सबको अपनी अशिष्टता, अभदता एव असभ्यता पूर्ण व्यवहार पर पछतावा होने लगा। एक ने कहा—यार, कितने अच्छे सत हैं। इनसे हमे कुछ सीखना चाहिए। इसके बाद उन सबका स्वभाव ही बदल गया और वे सत्सग मे आने लगे।

18.

गुरुदेव की शरण में रहना ही ऊंची गद्दी है

दिसम्बर 1963 की बात है। अभिलाष साहेब उन दिनों अपने गुरुदेव जी के साथ भ्रमण करते हुए उत्तर प्रदेश के धानेपुर कबीर आश्रम पहुंचे। उस समय

आप अपने गुरुदेव की सेवा में लगे हुए थे। तब तक आपकी 'वैराग्य संजीवनी' पुस्तक छपकर समाज में फैल चुकी थी। लोग उसे पढ़ते और आदर देते।

सत श्री सजीवन साहेब[1] उस समय घर में रहते थे। गुरुदेव की 'वैराग्य संजीवनी' पुस्तक पढ़कर उनके मन में वैराग्य जगा और वे गुरुदेव की शरण में आना चाहे। मृत्यु और वैराग्य किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। श्री सजीवन साहेब के वैराग्य का समय आ गया। धानेपुर कबीर आश्रम में जहां उन दिनों गुरुदेव जी थे वहीं पर वे आये। वैराग्य संजीवनी पुस्तक पढ़कर उनके मन में यही कल्पना थी कि श्री अभिलाष साहेब जी एक ऊची गद्दी पर सब समय बैठे रहते होंगे और कई लोग उनकी सेवा में रात-दिन लगे रहते होंगे। लेकिन जब आपको उन्होंने देखा तो उनकी कल्पना सिकुड़कर मन के किसी कोने में विलीन हो गयी। वहां तो उनके मन की कल्पना के विपरीत स्थिति थी। श्री सजीवन साहेब ने देखा कि वहां आप स्वय दौड़-दौड़कर अपने गुरुदेव की सेवा कर रहे हैं। श्री सजीवन साहेब अपने मन की इस बात को छिपा न सके और आपसे उन्होंने अपने मन की बात बतायी।

आपने कहा—ऊची गद्दी पर जो बैठा रहे क्या वही वैराग्यवान हो सकता है? वैराग्य तो अपने मन की दशा है। जो साधना से सिद्ध होती है। वस्तुत: समर्पित भाव से गुरुदेव की शरण में रहना ही साधक के लिए ऊची गद्दी है।

19.

अद्‌भुत तितिक्षा

पूज्य सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जो अपनी जमात सहित छत्तीसगढ़ पधारे हुए थे। आपके साथ श्री अभिलाष साहेब जी भी थे। भादों का महीना था, गुरुदेव जी तथा पूरा संत समाज कोलियारी गांव में थे। वहां रहते हुए पास के सेमरा गांव के भक्तों ने गुरुदेव एवं संत समाज को एक दिन भोजन के लिए निमंत्रित किया।

कोलियारी से सेमरा गांव थोड़ी दूर है। वहा गुरुदेव के प्रेमी भक्तों की संख्या काफी है। गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब के साथ पूरा संत समाज सेमरा गांव गया। वहां भोजन, विश्राम के बाद कुछ सत्संग हुआ। इसके बाद गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब संत समाज सहित कोलियारी गांव वापस आ गये। वे सभी संत तो प्रकाश

---

1. श्री सजोवन साहेब पारख सिद्धान्त के प्रखर विचारक संत हैं। आप इस समय कबीर आश्रम कटिहार, बिहार के महंत हैं।

रहते-रहते आ गये किन्तु पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी से मिलने के लिए काफी भक्त लोग आ गये इसलिए आपको कोलियारी आने में काफी देर हो गयी।

गाव के बाहर एक नाला पड़ता था। नाले के पहले दूर तक काटे बिखरे पड़े थे, जो पानी के साथ आयी मिट्टी के नीचे दबे हुए थे। गुरुदेव जब उस नाले को पैदल पार करने लगे आपका एक पैर काटो पर पड़ गया और कई काटे उसमे गड़कर टूट गये, इसी प्रकार दूसरे पैर मे भी। किसी प्रकार आप नाला से बाहर आये और खेत की मेड़ पर बैठकर जितना हो सका काटे निकाले, परतु अभी बहुत-से काटे पैर मे चुभे थे, इसलिए धीरे-धीरे चलकर गाव पहुचे और तुरत बिस्तर पर पड़ गये। पता चलने पर भक्तो ने पैर धोकर उसमे से सत्ताइस काटे निकाले जबकि इससे अधिक काटे आप स्वय पहले निकाल चुके थे।

अनेक कांटे ऐसे थे जो काफी गहराई तक गड़े थे। दर्द के कारण दो-तीन दिनों तक बड़ी मुश्किल से आप चल पाते थे। ऐसी स्थिति में भी आपकी मुखाकृति से ऐसा लगता था कि मानो कुछ हुआ ही नहीं।

20.
निर्णय तो यहीं मिलता है

वर्ष 1961 के आस-पास की बात है। पूज्य श्री उस समय अपने गुरुदव जी के साथ अयोध्या के पास करमा गाव मे थे। बड़ा गाव था जिसमे सभी वर्ग के लोग रहते थे और वहा बराबर पारखी सन्तो का आगमन होता रहता था। सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जी तथा अन्य वरिष्ठ सन्तो के होते हुए भी जब से पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी समाज मे आये तब से आप ही अधिकतम कथा-वार्ता कहते थे।

उस समय शाम को गाव स बाहर एक बगीचे मे प्रतिदिन श्री अभिलाष साहेब एक घण्टा भवयान की कथा सुनाया करते थे। जिसमे गुरुदव श्री रामसूरत साहब जी भी विराजमान रहते थे। सत्सगी भक्त लोग आकर बैठते थे। भक्तो मे केवल उसी गाव के नही बल्कि द्र-द्र के गावो स लोग सत्सग श्रवण करने आते थे, और उनमे केवल पारखी ही नही बल्कि वैष्णव, वेदान्ती, आर्य समाजो आदि वि॥॥न लोग भी आकर बैठते और सुनते थे।

एक दिन जड़-चेतन निर्णय, प्रकृति-पुरुष विचार पर खूब ज्ञान की झड़ी लगी थी, सब लोग खूब खुश थे। जब कथा समाप्त हुई तो एक सज्जन जिनका नाम था उमादत्त सिंह, उन्होने बड़ी भावनापूर्वक हाथ जोड़कर कहा—भगवन; आपने मिट्टी के कारण समूह बड़े पिड 'पृथ्वी' को बताया, अग्नि के कारण

समूह आग के विशाल पिड 'सूर्य' को बताया, जल के कारण समूह 'समुद' को बताया और हवा का 'वातावरण' बताया, जरा जीव के भी कोई कारण समूह को बता दोजिए।

एक दसरे ठाकुर बैठे थे उन्होने कहा—हा, आप यहा ईश्वरवाद लाना चाहते हैं कि इन जीवो का कारण समूह कोई ईश्वर है।

अब उमादत्त सिंह पुनः बोल पड़े—भाई निर्णय तो यही मिलता है। किसी भी बात का यथार्थ समाधान चाहिए तो पारखी सन्तो से ही मिल सकता है। ये किसी भ्रान्ति-अधविश्वास पर मुलाहिजा नही करते और न स्वय के लिए चमत्कार गढ़कर उसमे विश्राम ही करते हैं। पक्षपात रहित साफ-साफ सब के लिए सत्य निर्णय दते हैं।

21.
भाति-भाति के लोग

1961 ई0 का फाल्गुन का महीना था। गुरुदेव उन दिनों संत समाज सहित मोहम्मदनगर (बस्ती) मे शंकर भक्त जी द्वारा बनवायी कुटिया में विराजमान थे। वहां रोज सुबह-शाम सत्संग-प्रवचन, बीजक का पठन-पाठन होता रहता था। इस प्रकार वहां संतों का समागम लगा रहता था। एक दिन शंकर भक्त जी ने भण्डारा किया जिसमें लगभग 65-70 संत-भक्त आये थे। इस प्रकार संतों का स्वागत और गहमा-गहमी देखकर एक ठाकुर जी को बड़ी जलन होती थी।

वे गुरुदेव जी एवं संतों के सामने तो बड़े विनम्र रहा करते थे। मिलने पर 'साहेब-साहेब' करके पहले ही हाथ जोड़ लेते थे। लेकिन उनको यह सब देखा नहीं जाता था। भीतर-भीतर ईर्ष्या में जलते रहते थे।

एक दिन उन्होंने अपने मित्रों से कहा—अगर मेरा वश चले तो गांव भर में मैं कबूतर के पंख उड़ाता। उनके कहने का भाव था कि इन संतों की साधु रहनी और पवित्रता मैं नष्ट कर देता। ऐसी बातें छिपती कहां हैं! बात छनकर गुरुदेव के पास आयी लेकिन आप सुनकर शांत रहे।

* * *

उन दिनों पूरे भारत में जनगणना का कार्य चल रहा था। जनगणना की वह अंतिम तारीख भी थी। अंतिम तारीख को यह नियम होता है कि जो व्यक्ति जहां कहीं भी मिल जाये उसका नाम वहीं पर लिख लिया जाये।

उस क्षेत्र में भी लोगों का नाम लिखने के लिए डुमरियागंज से दो युवक आये हुए थे। किसी ने उन्हें बताया कि मुहम्मदनगर की कुटिया में आज सकड़ो लोग आये हैं। इतना सुनते ही वे लोग खुश हो गये कि इतने लोग एक ही जगह मिल गये। वे लोग नाम लिखने के लिए कुटिया पहुंचे और कुटिया के कुआं पर खड़े हुए तो लोगों की थोड़ी संख्या देखकर उदास हो गये।

गुरुदेव अन्दर बैठे थे। किसी ने उन लोगों से कहा—महाराज जी अन्दर बैठे हैं चलकर मिल लीजिए। गुरुदेव से मिलने के लिए उन लोगों का मन नहीं था लेकिन अरुचि से ही वे अन्दर चले गये।

उस समय पश्चिमी हवा जोरों से चल रही थी। वहीं पास में केवांच की बेलि पेड़ों पर चढ़ी हुई थी जिसमें बड़ी-बड़ी फलियां लगी हुईं थीं। उन फलियों के रोंये हवा के झोंकों में उड़-उड़कर उन युवकों के शरीर में लगे जिससे उनके शरीर में भारी खुजली शुरू हो गयी। वे जितना खुजलाते खुजली उतनी बढ़ती चली जाती। खुजली से वे बेचारे परेशान हो गये।

गुरुदेव ने जब यह जाना तो तुरन्त समझ गये। वे लगाने के लिए तेल लाकर उनको दिये। जब वे पूरे शरीर में तेल लगाये तब खुजली शांत हो गयी। फिर वे आपके पास बैठे।

गुरुदेव उनको संयम, सदाचार के निर्णीत विचार सुनाते रहे। वे दोनो युवक बड़े प्रेम से गुरुदेव के विचारों को सुनते रहे। शाम हो गयी। उन लोगों ने कहा—महाराज जी, आपके पास हम लोगों को आने का मन ही नहीं था और आने के बाद जब खुजली शुरू हो गयी तो बहुत परेशान हो गये, लेकिन महाराज, अब तो आपके पास से जाने का मन ही नहीं करता है।

गुरुदेव ने कहा—ठीक है, लेकिन काफी समय हो गया है और अब आप लोग चले जाये नहीं तो रात्रि हो जायेगी और जाने में परेशानी होगी।

मनुष्यो का समूह स्वभावो का अजायबघर है। सब अपने-अपने विचार से बर्ताव करते हैं। एक व्यक्ति है जो सतो की रहनी-पवित्रता नष्ट करना चाहता है। दूसरा उनसे रहनी-पवित्रता और जीवन-कल्याण की कला सीखता है।

22.

सच्चे गुरु की शरण ही अमृत है

साधना काल की शुरुआत में अभिलाष साहेब जी काफी दिनों तक अपने गुरुदेव की सेवा में रहे। आपका तो सहज स्वभाव ही था कि किसी कार्य को उत्साह, लगन और तत्परता से करना। आपके मन में बारम्बार यही होता था कि मैं अकेला ही गुरुदेव का, आश्रम का सारा काम कर डालूं। इसलिए आप सब

समय श्रमशील रहते थे। गुरुदेव के एक मित्र थे जो आपसे छह महीने पहले गृह त्यागकर एक संत से विरक्त वेष ले लिये थे। वे गुरु के ऐन में रहना अपनी गुलामी समझते थे। एक बार वे गुरुदेव जी से मिले। उन्होंने छूटते ही कहा—हम गुरु से चोटी कटाकर थोड़े बैठे हैं। उनके कहने का अर्थ यह था कि हम सब समय गुरु के पास या उनके अनुशासन में ही थोड़े बैठे रहेंगे, स्वतंत्र होकर घूमेंगे।

उनकी यह बात आपको अच्छी नहीं लगी क्योंकि जो सच्चा साधक होता है वह सच्चे गुरु की शरण में पहुंचकर सर्वतोभात्या अपने आपको समर्पित कर देता है। हां, उचित मर्यादानुसार उसका भ्रमण भी सहज रूप से होता रहता है।

एक बार गुरुदेव गोंडा जिला के उतरौला के पास एक गांव के आश्रम पर कार्यक्रम में थे। आप उस समय अपने गुरुदेव की सेवा में थे। वे संत वहां भी आ गये। उन्होंने आपसे कहा—गुरुभाई, सुनो तो जरा! मेरे पास बैठो, आपसे कुछ बातें करनी है। फिर वे बोले—आप तो गुरु के पास चोटी कटाये घूम रहे हैं।

आप ने कहा—मैं अभी आपके पास नहीं बैठ सकता क्योंकि गुरुदेव की सेवा में रहने के कारण मुझे व्यस्तता है। जब गुरुदेव रात्रि में सो जायेंगे तब मैं आपसे बात कर सकता हूं।

रात्रि आठ बजे के बाद जब गुरुदेव शयन के लिए चले गये तब आपने उन संत के पास बैठकर कुछ बातें की। उन संत के मन में वही स्वतंत्रता की बात उबल रही थी। आपने उन्हें बताया कि गुरु की शरण में रहकर, सेवा-साधना करना गुलामी नहीं बल्कि यही असली स्वतंत्रता है। संत-गुरु के घेरे से अलग होकर केवल घूमना-खाना बहिर्मुखता के लक्षण हैं। ऐसे लोग अपने मन-इन्द्रियों की ही सब समय गुलामी करते हैं। गलत स्वभाव और इन्द्रियों की गुलामी की अपेक्षा संत-गुरु की गुलामी अच्छी है क्योंकि वहां वैचारिक और मानसिक स्वतंत्रता मिलती है। सद्‌गुरु विशाल साहेब जी कहते हैं—

बिके बिना नहिं बाचिहौ, चाहे जहां बिकाय।
गुरु के बिके बिकब मिटै, जग के बिके बिकाय॥

23.

शृंगीऋषि पर्वत पर गुरुदेव का प्रवचन

मार्च 1963 की बात है। गुरुदेव जी के कार्यक्रम उन दिनों छत्तीसगढ़ में चल रहे थे। कार्यक्रमों के दौरान धमतरी जिला के सिरसिदा गांव के भक्तों ने आपको आमंत्रित किया। गुरुदेव जी अपने संत समाज सहित वहां पधारे।

सिरसिदा गांव से एक दिन आप समाज सहित शृगीऋषि पर्वत पर गये जो वहां से कुछ दूरी पर पड़ता है। लोगों का मानना है कि उस पर्वत पर शृगीऋषि रहकर तपस्या किये हैं। शृगीऋषि पर्वत में एक गुफा है जो पत्थरों से स्वत: निर्मित है।

गुफा तक पहुंचने के लिए टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता है। उसमें कहीं झुककर चलना पड़ता है तो कहीं बैठकर। गुफा के अन्दर काफी प्रशस्त जगह है। जिसकी बनावट भी काफी रमणीय है। उसमें कुछ ऊचे पर प्राकृतिक मंच रूप चबूतरा है और सामने समतल भूमि है। सभी संत वहां बैठ गये। गुरुदेव पारख सिद्धान्त के परम वैराग्यवान सद्‌गुरु श्री पूरण साहेब कृत वैराग्य शतक पर कुछ प्रवचन किये। प्रकृति मनुष्य की भावनाओं का विरोध नहीं करती है बल्कि उस तरफ परिश्रम करने पर वह सहयोग करती है। चाहे राग करें या वैराग्य, कर्म कर लेने के बाद वह अच्छा या बुरा परिणाम स्वत: सामने लाकर रख देती है।

वहां के प्राकृतिक वन्य क्षेत्र में शृगीऋषि पर्वत की गुफा में बैठकर वैराग्य मूर्ति पूज्य श्री अभिलाष साहेब के मुखारविन्द से वैराग्यनिष्ठ सद्‌गुरु श्री पूरण साहेब कत वैराग्य शतक पर प्रवचन सुनकर साधकों के रोम-रोम पुलकित हो उठे।

गुरुदेव ने कहा—साधक को सब समय देह की अंतिम स्थिति पर विचार करना चाहिए। सदगुरु श्री पूरण साहेब ने कहा है—

अंत दशा लिये आदि में, सोई साँच वैराग।
सो सुखिया तिहुँ लोक में, जाको निश्चय त्याग॥

24.

आप भी उन्हीं के पक्ष में हो जाइये

वर्ष 1964 से गुरुदेव जी कलकत्ता जा रहे हैं। कलकत्ता के भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी की सेवा, भक्ति, सत्संग के प्रति निष्ठा एवं समझदारी अत्यन्त प्रशंसनीय है। श्री प्रेमप्रकाश जी की मां विद्यावती पढ़ी-लिखी, तेज-तर्रार पारख विचारवाली दृढ़ महिला थीं। उनसे उनके बच्चे और पति भी अदब खाते थे। उन्होंने अपने जीवन में कई सामाजिक आन्दोलन किये थे। वे अंधविश्वास और उच्छृंखलता को जरा भी सहन नहीं करती थीं।

अनेक पत्र-पत्रिकाएं, अखबारों एवं पोस्टरों में जो स्त्रियों का अर्धनग्न अश्लील चित्र छापकर विज्ञापन दिया जाता है इसका उन्होंने खुलकर विरोध

किया था। पश्चिमी उत्तरप्रदेश के शहर खुर्जा में सैकड़ो स्त्रियों को लेकर उन्होंने जुलूस निकाला और सरकार को काला झंडा दिखाया। नारियों का चित्र, विज्ञापन एवं प्रदर्शन बन्द हो इसका नारा लगाते हुए उन्होंने पूरे शहर में तहलका मचा दिया। उनके इस काम की सराहना की गयी और उनका बड़ा सम्मान हुआ।

1967 में गुरुदेव जी काशी, बुलानाला के विश्वेश्वर प्रेस के ऊपर दूसरी मंजिल पर प्रकाशन कार्य के लिए निवास कर रहे थे, तभी प्रेमप्रकाश जी के माता-पिता भी आपके पास कुछ दिन रहने के लिए वाराणसी आये।

एक दिन माता विद्यावती जी ने गुरुदेव से कहा—आज-कल जवान लड़के कैसे फूहड़ हैं। वे जब शाम को ऑफिस से आते हैं तब अपनी पत्नी को लेकर बाजार घूमने जाते हैं। बहुएं सबके खाने के बाद अपने-अपने पति को लेकर एक ही थाली मे खाने बैठती हैं और साथ-साथ गप्पें मारती हैं। ऐसा हमने कभी नहीं किया।

गुरुदेव ने कहा—माता जी! इसमें आपको आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वे अपनी पत्नी को साथ लेकर घूमने जाते हैं न, किसी दूसरे की पत्नी को लेकर तो नहीं जाते। बहू बेचारी दिन भर घर के काम-धन्धा में उलझी रहती है, उसका पति बाहर रहता है। शाम को दोनो एक साथ बाहर घूमने चले जाते हैं तो क्या बुरा करते हैं। दोनो के तन-मन हलके हो जाते हैं। घर के लोगों को खिलाकर पति-पत्नी एक साथ बैठकर खाते हैं तो इसमें भी आपको एतराज नहीं करना चाहिए।

वाह साहेब! आप भी उन्हीं का पक्ष ले रहे हैं—माता जी ने कहा।

गुरुदेव जी—तुम भी उन्हीं की तरफ हो जाओ फिर सारा मामला ठीक हो जायेगा।

माता जी समझदार थीं। उन्होंने गुरुदेव जी की बातों को स्वीकार किया कि जमाने को अपने अनुसार नहीं बदला जा सकता, बल्कि जमाने के अनुसार अपने को बदला जा सकता है।

25.

गुरु जी जो कहैं हैं वह सच लगै है!

गुरुदेव जी श्री प्रेमप्रकाश जी के घर कलकत्ता पहली बार 1964 में गये थे। साथ में श्री शरणपाल साहेब तथा श्री अटल साहेब थे। बाद मे छत्तीसगढ़ से श्री कमल सिह जी भी गये।

श्री प्रेमप्रकाश जी के जीजा बनवारी लाल वैश्य प्रेमप्रकाश के ही ऑफिस में सेवारत थे। एक दिन श्री प्रेमप्रकाश जी ने अपने जीजा जी से कहा कि आइये, हमारे घर संत आये हैं, कुछ सत्संग से लाभ लीजिए। वैश्य जी ने कहा कि भाई, मुझे बहस नहीं आती है। प्रेमप्रकाश जी ने कहा—बहस की कोई बात नहीं है। केवल प्रवचन सुन लीजिए।

जीजा जी मुलाहिजा में आ गये। प्रवचन में अनमने ढंग से बैठे रहे, किंतु उनके कान में संसार की नश्वरता, कर्मफल भोग और मन की निर्मलता से शांति आदि की बातें पड़ीं ही। गुरु जी एक महीना कलकत्ता रहकर बड़हरा गुरु आश्रम चले गये।

दुर्भाग्य से बनवारी लाल वैश्य की धर्मपत्नी अर्थात प्रेमप्रकाश जी की बहिन 'संतोष' भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गयीं। डॉक्टरो के बहुत प्रयास करने पर भी वे बची नही। इससे बनवारी लाल जी को बड़ा धक्का लगा।

वर्षों बाद जब अभिलाष साहेब जी अपने गुरुदेव जी एव दस-बारह संत सहित कलकत्ता गये, तब की बात है। बनवारी लाल वैश्य ने अपनी सास विद्यावती जी से कहा—माता जी! गुरु जी जो कहैं हैं वह सच लगै है। फिर तो उनकी भावना सतो के प्रति बढ़ गयी।

इसके बाद जब गुरुदेव जी पुनः संत समाज सहित हावड़ा स्टेशन उतरे। वैश्य जी वहां लेने गये थे। फिर वे भक्त हो गये। सद्‌गुरु कबीर ने सच कहा है—

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, दुख काहे को होय॥

26.

हम आपकी चाल जानते हैं

गुरुदेव जी उस समय कोलकाता प्रवास मे थे। ज्येष्ठ का महीना था, कबीर जयन्ती का पर्व आने ही वाला था। एक रविवार को आप धर्मतल्ला मैदान मे प्रवचन दने गये। प्रवचन के आरम्भ मे आपने सद्‌गुरु कबीर की महिमा एव उन पर लगाये गये चमत्कारो का वर्णन किया, जैसे—कबीर साहेब का जन्म किसी माता-पिता से नही हुआ, वे काशी के लहरतारा तालाब मे एक कमल फूल पर ज्योति रूप मे प्रकट हुए। उनका शरीर मिट्टी, पानी, आग, हवा आदि जड़ तत्त्वो से नही बना था, तभी तो उनका शरीर आग से जलाने पर, पानी मे डुबाने पर,

तलवार से काटने पर भी नष्ट नही होता था। कबीर साहेब ने अपनी आज्ञा से लकड़ी की चौकी को चला दिया। गोरखनाथ जी चालोस हाथ लम्बा त्रिशूल गाड़कर उसकी नोक पर बैठ गये, वही से उन्होने कबीर साहेब को चैलेज दिया कि आइए कबीर साहेब कुछ बातचीत हो जाय, तो कबीर साहेब ने अस्सी हाथ लम्बा एक सूत ऊपर फेका और उसकी नोक पर जाकर स्वय बैठ गये फिर उन्होने कहा—आइए गोरखनाथ जी, बाते हो जाये, तो गोरखनाथ जी हार गये। कबीर ने मुर्दे को जिन्दा कर दिया, भैंसे से वेद-मत्र बोलवा दिया आदि-आदि।

उपस्थित श्रोता समाज गुरुदेव के इन विचारो को मत्रमुग्ध होकर श्रवण कर रहा था, सभी एकदम गद्‌गद थे। फिर गुरुदेव जी ने कहा—लेकिन सज्जनो! क्षमा करना, ये सारी चमत्कारी बाते बिलकुल झूठी हैं। गुरुदेव के इतना शब्द सुनकर सभी स्तब्ध रह गये। इसके बाद आपने सद्‌गुरु कबीर के वैज्ञानिक-क्रान्तिकारी स्वरूप का विशद विवेचन किया। आपके पारख विचारो को सुनकर सभी आनन्दित हुए। उस सभा मे पौराणिक विचारधारा के एक बुजुर्ग कबीरपथी भक्त बैठे थे। गुरुदेव के विचारो से वे परिचित थे, वे भी प्रभावित हुए। किन्तु उनकी मान्यता मे कुछ ठेस लगी। प्रवचन के बाद जब आप अलग आकर बैठे तो वे सामने आकर बोल पड़े—हम आपकी चाल जानते हैं, बड़े चतुर हैं आप, पहले तो सबको पेड़ पर चढ़ा देते हैं फिर नीचे जड़ से ही खट से काट देते हैं, जरा भी मुलाहिजा नही। उनके व्यग्यात्मक और विनोद भरे शब्दो को सुनकर गुरुदेव मुस्कुराते रहे, उपस्थित अन्य लोग भी हस पड़े।

27.

बोध और विवेक से ही कल्याण है

किसी भी मत, पंथ और समाज को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए नियम की आवश्यकता पड़ती है और देश-काल परिस्थिति के अनुसार उसमें संशोधन भी करना पड़ता है। मनुष्य दो प्रकार के होते हैं—भावनाप्रधान और तर्कप्रधान। लेकिन दोनो में विवेक का होना अति आवश्यक है। विवेक के बिना भावना मनुष्य को जड़ एवं हिंसक बनाती है, जबकि तर्क उच्छृंखल (उद्दण्ड) बनाता है। इसलिए न भावना की खाई में जाना है और न तर्क की अग्निशिखा में। गुरुदेव जी ने इन दोनो के बीच का रास्ता अपनाया है।

आज से 30-40 वर्ष पूर्व चरणामृत, महाप्रसादी, चरण स्पर्श आदि का भक्त समाज में बाहुल्य था।

वर्ष 1964 की बात है। श्री अभिलाष साहेब जी अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला के बोड़रा गांव में थे। आपके गुरुदेव जी भक्त के घर में बैठे भोजन कर रहे थे और आप पंखा झल रहे थे। उस समय एक भक्त महाप्रसाद लेने आया। आते ही उसने गुरुदेव के सामने पत्तल रखकर बंदगी की। आपने उसके पत्तल को उठाया और मोड़कर दूसरी तरफ फेंक दिया।

यह देखकर आपके गुरु जी हंस पड़े। वह भक्त आप पर नाखुश हो गया। आपने कहा—नाखुश मत होओ। यह प्रसादी का चक्कर छोड़ो। आप अपने लिए ले जाये तो कोई बात नहीं है। यह गुरु के प्रति भक्ति एवं भावना का व्यक्तिगत मामला है लेकिन जब आप आम लोगों में सबके बीच चलाते हैं तो यह उचित नहीं है। आपके ऐसे स्पष्ट कथन से उस भक्त को संतोष हुआ। और उसने आपकी बात को स्वीकार किया। साथ-साथ आपके गुरुदेव पूज्य श्री रामसूरत साहेब जी ने भी हंसते हुए आपकी बातों का समर्थन किया।

28.

अद्वैत ब्रह्मवाद की समीक्षा

वर्ष 1965 की बात होगी। गुरुदेव अयोध्या से उत्तर एक गांव में थे। उन दिनों उस क्षेत्र के लोगों में वेदान्त के अद्वैत ब्रह्मवाद के प्रति काफी भावना थी और इसकी शिक्षा-दीक्षा देनेवाले वेदान्ती संत-भक्त भी थे। गोंडा जिला में धानेपुर बाजार के पास एक सत हैं श्री रामाधार साहेब। श्री रामाधार साहेब अयोध्या के पलटू साहेब के अखाड़ा से दीक्षित साधु हैं। परन्तु वे गोंडा क्षेत्र में रहनेवाले वेदान्तियों के विचारों से प्रभावित थे। जब श्री अभिलाष साहेब जी के संपर्क में आये तो उनके निर्णय एवं निष्पक्ष विचारों से प्रभावित होकर श्री रामाधार साहेब पारखी हो गये। वेदान्त की शिक्षा देनेवाले उनके अन्य वेदान्ती लोग इनको पारखी होना जानकर पुनः वेदान्ती बनाने के लिए अनेक पयास करते रहे।

वेदान्त के एक प्रखर प्रवक्ता थे श्री मुन्नीलाल जी। वे इटियाथोक बाजार के निवासी थे। गुरुदेव का कार्यक्रम उन दिनों अयोध्या से उत्तर इटियाथोक से पूर्व तरफ एक गांव में था। आप प्रातःकाल भक्त के घर एकान्त कक्ष में समाधिस्थ बैठे थे। मुन्नीलाल जी श्री रामाधार साहेब को अकेला समझकर वहीं पर्दे की आड़ मे गुरुदेव के कक्ष में अद्वैत ब्रह्म का उपदेश देने लगे। उन्होंने कहा—

आत्मा केवल एक है, वह दो हो ही नहीं सकता। नाना देहधारियों में जो भिन्नता प्रतीत हो रही है वह आभासमात्र है। सत्ता केवल एक अद्वैत ब्रह्म की है। उन्होंने कहा—देखो, दिल्लो से ब्राडकास्टिग होती है तो भारत के विभिन्न जगहों में बैठे लोग जब रेडियो खोलते हैं तो वहां की बातें एक समान सुनते हैं। इसी प्रकार आत्मा केवल एक है, अद्वैत ब्रह्म मात्र, दूसरे की सत्ता ही नहीं है। यहां जो कुछ दिखाई देता है वह सब मात्र एक ब्रह्म है।

श्री मुन्नीलाल जी की बात सुनकर श्री रामाधार साहेब को कोई जवाब ही नहीं सूझ रहा था। इन लोगों के जोर-जोर से बोलकर अद्वैत ब्रह्म सिद्ध करने के कारण ध्यान तो लग नहीं पायेगा इसलिए अब इन्हीं का समाधान हो जाना चाहिए, ऐसा सोचकर गुरुदेव जी ने मुन्नीलाल जी को अपने पास बुलाया—मुन्नीलाल जी, यहां आओ, क्या समस्या है?

गुरुदेव को पास में ही बैठा जानकर वे हड़बड़ा गये और झिझकते हुए दोनो आपके पास आये।

गुरुदेव ने दोनो को अपने पास बैठाया और कहा—देखिये, दिल्लो से ब्राडकास्टिग होती है तो वहां से जो प्रसारित किया जाता है, वही रेडियो से सभी लोग सुनते हैं। यदि वहां से धार्मिक गीत प्रसारित किया जाता है तो सब जगह धार्मिक गीत सुनाई देता है, वहां से गाली प्रसारित की जाती है तो हर जगह वही सुनाई देता है। इसी प्रकार जब एक ब्रह्म ही सब में बोल रहा है तो एक ढंग से सबका व्यवहार होना चाहिए। फिर मनुष्यों एवं प्राणियों में भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति क्यो है?

गुरुदेव के इस प्रकार तर्कपूर्ण अकाट्य उत्तर सुनकर मुन्नीलाल जी लाजवाब हो गये। श्री रामाधार साहेब खूब खुश हो गये।

* * *

गुरुदेव अपने गुरु आश्रम बड़हरा में थे। एक वेदान्ती आये। उन्होने गुरुदेव के सामने अपना अद्वैत ब्रह्म सिद्ध करते हुए कहा—महाराज, देखिये एक सूरज है तो उसका प्रतिबिम्ब जमीन पर रखे हुए हजारो घड़ों के जल में पड़ता हैइसी प्रकार एक ब्रह्म है और उसका प्रतिबिम्ब सभी देहधारियों में पड़ता है। वस्तुत: एक ब्रह्म के अलावा कुछ है ही नहीं।

गुरुदेव ने कहा—सूरज और घड़ा दो हैं और दोनो में देश की दूरी है इसलिए सामने पड़ने पर प्रतिबिम्ब पड़ता है। लेकिन आपके विचारानुसार ब्रह्म एक है और वह सर्वत्र है, दूसरा कुछ है ही नही तो किसका प्रतिबिम्ब किस पर

पड़ेगा? प्रतिबिम्ब देश की दूरी से होता है। सूरज सब जगह हो जाये तो उसका प्रतिबिम्ब कहा पर पड़ेगा। वह ब्रह्म भी कैसा जो स्वय तो किसी को दिखाई नही देता उसका प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। *"लहर देख पड़ते समुन्दर न दिखते, ऐसे अचम्भो को मुनियों ने लिखते।"*—(श्री निर्मल साहेब)

वस्तुतः सभी देहधारियों में बसनेवाला यह आत्मा ही ब्रह्म है। जड़ और चेतन दो मूलभूत पदार्थ हैं। उसको अद्वैत ब्रह्मवाद की फूक मारकर उड़ाया नहीं जा सकता। गुरुदेव की इतनी स्पष्ट बातें सुनकर वे सज्जन चुप होकर ठगमारे आपको देखते रहे।

29.

ज्ञान की पुस्तके पढ़ते हो?

सन् 1965 की बात है, गुरुदेव उन दिनों छत्तीसगढ़ के एक गांव में थे। जिस घर में आप ठहरे थे वहां आपके दर्शनार्थ एक भक्त आये। वे गुरुदेव से सुपरिचित थे। उनकी काफी उम्र ढलने के बाद उनको एक लड़का पैदा हुआ था। वह बच्चा भी उनके साथ में था।

कुशल-मंगल पूछने के बाद गुरुदेव ने उस बच्चे से बात करते हुए पूछा—बेटा, कुछ ज्ञान की पुस्तकें भी पढ़ते हो? उस बच्चे के बोलने के पहले ही उसकेपिता बोल पड़े—साहेब, इसको अपने कोर्स की पुस्तकों को पढ़ने से ही फुर्सत नहीं मिलती है।

गुरुदेव ने उस वृद्ध को झिड़कते हुए कहा—यह बताओ कि यह खेलता है या नहीं? अन्य लड़को के साथ इधर-उधर जाता है कि नहीं, गप्पबाजी करके समय बरबाद करता है कि नही? और उपन्यास-अखबार आदि पढ़ता है या नहीं? क्या रात-दिन अपने कोर्स की पुस्तकों को पढ़ने में ही लगा रहता है? थोड़ा समय ज्ञान की पुस्तके भी पढ़ लेगा तो क्या फेल हो जायेगा?

गुरुदेव के इतना कहने पर वे वृद्ध भक्त चुप हो गये।

आपने पुनः उन भक्त को समझाते हुए कहा—यह आपकी असावधानी है। बच्चे केवल स्कूल में ही नहीं पढ़ते हैं बल्कि स्कूल से ज्यादा वे घर और समाज में पढ़ते हैं। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि वे ज्ञान-विचार की पुस्तके पढ़ने के लिए भी बच्चों को प्रेरित करते रहें। समय-समय से उनको पास बुलाकर कहो कि बेटा, जरा यह पुस्तक पढ़ो, मैं भी सुनूंगा। इसी बहाने वह पढ़ेगा और उसके चित्त में भी ये बातें कुछ बैठेंगी। सफेद चादर में छाप अच्छी पड़ती है। घर

और समाज में संयम-सदाचार की शिक्षा पाये बिना मात्र स्कूल की शिक्षा बच्चों को उच्छृंखल बना देती है।

30.

सम्बन्ध से घबराहट

मई 1965 ई0 की बात है। गुरुदेव संत समाज सहित बस्ती जिला के बभनान बाजार में थे। एक भक्त थे जिनका नाम था रामरूप जी। रामरूप जी संत श्री सुखसागर साहेब (अजगैबा-गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) के शिष्य थे। गुरुदेव जी के प्रति उनका अनन्य प्रेम था। उस समय उनकी उम्र पचास से ऊपर थी। उनकामकान बाजार में था जो दो मंजिल का और काफी प्रशस्त था। उसके नीचे तल्ल में दुकान थी और ऊपर तल्ला खाली रहता था। जब गुरुदेव जी वहां जाते थे तो आपका और संत-समाज का निवास उसी मकान में ऊपर रहता था।

एक दिन शाम को जलपान के बाद गुरुदेव भ्रमण करने गये। अंधेरा होते-होते आप वापस आ गये और हाथ-पैर धोकर अपने कक्ष में जाकर ध्यान में बैठ गये। पूरा मकान अंधकार से ढंका सूनसान था। अन्य किसी व्यक्ति के न होने से किसी प्रकार की आवाज भी नहीं थी। भक्त रामरूप जी आये और अंधेरे में टटोलते हुए धीरे-धीरे ऊपर जा रहे थे और साथ-साथ जोरों से बोलते भी जा रहे थे—अरे कोई है नहीं? कोई है हो? कोई नहीं है का?

उनकी आवाज से गुरुदेव का ध्यान टूट गया। आपने कहा—भगत जी, आइये मैं हूं। उन्होंने कहा—अरे साहेब, आप अकेले बैठे हैं, घबराते नहीं?

गुरुदेव ने कहा—अभी तक तो नहीं घबरा रहा था लेकिन आपके आने से अब घबरा रहा हूं।

रामरूप जी हंस पड़े। उन्होंने कहा—साहेब, हमारे आने से आप कैसे घबराने लगे?

गुरुदेव ने कहा—अभी तक मैं अपने आप में था। मेरे में कोई द्वन्द्व नहीं था, मैं निश्चित था लेकिन आपके आने से चित्त आपकी तरफ देना पड़ रहा है। आपसे बात कर रहा हूं। चित्त का बाहर चलना ही घबराना है। अंतर्मुखी साधक जगत से लौटकर अधिक से अधिक समय अपने आप में रहना चाहता है। अपने आप की स्थिति में विघ्न पड़ना ही साधक का घबराना है।

मनुष्य भीड़ का इतना प्रेमी हो गया है कि उसके अभाव में वह जीवन को अधूरा समझता है। जितना ही उसका भीड़ से प्रेम बढ़ता जाता है उतनी ही

उसकी अपने आप से दूरी बढ़ती जाती है। यह मन और आत्मा की दूरी ही दुख का कारण है। ऐसी स्थिति में किसी को अकेला देखते हैं तो उसका जीवन नीरस प्रतीत होता है।

31.

सब ब्रह्मचारी हो जायेंगे तो सृष्टि कैसे चलेगी?

वर्ष 1~{Z-66 का समय होगा। सत श्री अभिलाष साहेब जी अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ अवध क्षेत्र के भक्तों में भ्रमण कर रहे थे। उस समय संतों का छोटा समाज था। एक गांव में एक लाला जी थे जो बस्ती जिला के थे। उस समय उनकी उम्र पैंसठ वर्ष की थी।

एक दिन सत श्री अभिलाष साहेब जी प्रवचन कर रहे थे। मनुष्य को अधिक से अधिक संयमी होना चाहिए और जो साधना करना चाहे, जिसको कल्याण का लक्ष्य हो उसे मन, वाणी, कर्म से पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

लाला जी उस सभा में बैठे थे। वे बीच में ही बोल पड़े—यदि संसार के सब लोग ब्रह्मचारी हो जाये तो सृष्टि कैसे चलेगी?

गुरुदेव जी ने कहा—जब सबके सब ब्रह्मचारी हो जायेंगे और ब्रह्मचारी होने के कारण सृष्टि रुकने लगेगी तो मैं आकाश से सृष्टि पैदा कर दूंगा।

लाला जी—ऐसा आप नहीं कर सकते।

गुरुदेव जी—पहले आप संसार के सारे लोगों को ब्रह्मचारी बनाइये। बाद में जब मैं आकाश से सृष्टि न कर दूं तो आप मुझे उलाहना देना।

लाला जी—मैं संसार भर के लोगों को ब्रह्मचारी नहीं बना सकता।

गुरुदेव जी—तो आप अपने घरवालों को ही ब्रह्मचारी बना दें।

लाला जी—यह भी मुझसे सम्भव नहीं होगा।

गुरुदेव जी—अच्छा, आप स्वयं ब्रह्मचारी बन जाइये।

लाला जी गुरुदेव की बात सुनकर हंस कर रह गये। इसका मतलब है कि लाला जी स्वयं भी ब्रह्मचारी बनने को तैयार नहीं हैं। जिनकी पैंसठवर्ष की उम्र हो गयी है वे स्वय ब्रह्मचारी बनने को तैयार नही हैं लेकिन उनको सृष्टि की चिता है कि संसार में सब ब्रह्मचारी हो जायेंगे तो सृष्टि कैसे चलेगी।

संसार के सारे लोग पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करके कल्याण-पथ में लगकर मुक्त हो जाये और सृष्टि रुक ही जाये तो हानि ही क्या है!

32.

कोई चिंता तो नहीं है?

गुरुदेव जी एक बार बस्ती जिला मुहम्मदनगर में शंकर भक्त जी के घर विराजमान थे। एक दिन शाम के समय भक्त जी गुरुदेव जी के पास आये और बंदगी करके बैठ गये। गुरुदेव जी ने पूछा—भगत जी, कोई चिंता-फिक्र तो नहीं रहती है?

भगत जी ने कहा—साहेब जी, आपकी कृपा से और तो कोई चिंता-फिक्र नहीं है, लेकिन एक चिंता रहती है।

गुरुदेव जी—किस बात की?

भगत जी—मैं सोचता रहता हू कि कभी रात में डाक् न आ जाये। यद्यपि मेरे पास कुछ रहता नहीं है, जो रहता है वह भी बैंक में, फिर भी लोगों में यह शोहरत है कि इनके पास पैसा रहता है। मन में यही भय होता रहता है कि कभी चोर आकर मारें-पीटें तो क्या होगा?

गुरुदेव जी—यह भय आपको कितने दिनों से होता है?

भगत जी—लगभग बीस वर्षों से।

गुरुदेव जी—आज तक क्या कभी डाकू आये?

भगत जी—नहीं आये।

गुरुदेव जी—हो सकता है कि आपकी जिंदगी बीत जाये और डाकू आयें ही न। और यदि कभी आ ही जायेंगे तो वे मिनटों में अपना काम करके चले जायेंगे। जो कुछ सहना होगा आप उसी समय सह लीजिएगा। आप बीस वर्षों से मन ही मन डाकुओं से अपने को पिटवा रहे हैं और डाकू अभी तक नहीं आये। आप बिलकुल निर्भय हो जाइये।

शंकर भगत बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति थे। उन्हें एक बार जो बात गुरुदेव जी समझा देते थे वे बिलकुल उस पर दृढ़ हो जाते थे। भगत जी को यह बात समझ में आ गयी कि इन बातों को लेकर चिंता करना बिलकुल निरर्थक है।

वर्षों के बाद गुरुदेव ने एक बार उनसे पुनः पूछा—भगत जी, अब कोई भय-चिंता है?

भगत जी—साहेब जी, आपकी कृपा से अब कोई भय-चिंता नहीं है।

गुरुदेव जी—चोर-डाकुओ का भय?

भगत जी—साहेब, अब इसका भी कोई भय नही है।

गुरुदेव जी के समझाने के बाद 15-20 वर्षों तक भगत जी जीवित रहे, लेकिन अन्त तक उनके पास न कोई चोर-डाकू आये और न भय-चिता ही।

33.

गुरुदेव की करुणा

वर्ष 1966 की बात है। श्री अभिलाष साहेब जी अपने ग्रुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ संत समाज सहित छत्तीसगढ़ में थे। वर्षा के दिन थे, समय-समय से वर्षा होती रहती थी, लेकिन ऐसी स्थिति में भी जहां निश्‍चित कार्यक्रम होता था वहां तो जाना ही पड़ता था। उस समय आप दुर्ग जिला के बासिन गांव में थे। वहां से आप सब को खुंदनी (दर्रा) गांव जाना था।

उन दिनों न गाड़ी मिलती थी और न सड़क थी। पैदल का जमाना था। सब लोग पैदल चलते थे। गाड़ी के नाम पर यदि कभी कोई साधन आता तो बैलगाड़ी आती थी। जिस पर सामान लाद दिया जाता था और आवश्यकता पड़ने पर कोई व्यक्ति विशेष बैठ लेता था। लेकिन वहां उस समय बैलगाड़ी भी नहीं थी। खुदनी गांव से लोग कांवर लाये हुए थे। इसे बहंगी भी कहा जाता है। आठ-दस कांवर में संतों का सामान और पुस्तकें बांधी गयीं। उनके ऊपर प्लास्टिक बांधा गया जिससे वर्षा से सामान भीग न जाये।

भक्त लोग कांवर (सामान) लेकर चले गये। गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी और सभी संत भी चले गये। कितु अभिलाष साहेब जी किसी कारण से पीछे रह गये। आपके साथ एक नवयुवक था जो कांवर का बोझा कंधे पर रखकर चल रहा था। चारों तरफ वर्षा का पानी फैला हुआ था, उस समय थोड़ी-थोड़ी बारिश भी हो रही थी। वहां की फिसलन भरी काली मिट्टी की मेड़ों से होकर रास्ता था। वहां बबूल के कांटे बहुत थे। चलते-चलते साथ के नवयुवक के पैर में एक बड़ा-सा कांटा चुभ गया जिससे वह चीख उठा और तुरन्त वहीं बैठ गया। लेकिन संभलकर वह उठा और पुनः लगड़ाते हुए चल दिया। गुरुदेव ने उसे देख लिया और कहा—बेटा, रुक जाओ, लेकिन सकोचवश वह रुक नहीं रहा था।

गुरुदेव ने पुनः जोर देते हुए कहा—बेटा, रुक जाओ, नहीं तो तुम परेशान हो जाओगे। आपके आग्रह से वह एक सूखी जगह पर रुका। दर्द के कारण वह विह्वल हो रहा था। गुरुदेव ने तुरन्त अपने कमंडलु के पानी से उसके पैर को धोया। वह संकोचवश बारम्बार 'न-न' करता रहा लेकिन आपने कहा—बेटा, तुम संकोच न करो, तुम्हें कष्ट है और मैं साथ में हूं तो इतना करना तो मेरा

कर्तव्य है। जब उसके पैर की मिट्टी साफ हो गयी तो आपने बड़ी सावधानी से उसके पैर का कांटा निकाला। पैर से थोड़ा रक्त भी निकल रहा था। गुरुदेव ने अपने सिर की साफी से एक किनारा फाड़ा और उससे उसके पैर में पट्टी बांध दी।

पैर का कांटा निकल जाने से दर्द काफी कम हो गया और वह युवक धीरे-धीरे गुरुदेव के साथ आराम से चलने लगा। कुछ देर में दोनो लोग गांव पहुंच गये।

34.

बातो का प्रभाव

1966-67 का समय होगा, गुरुदेव जी का कार्यक्रम कानपुर मे था। कानपुर के पास ही किसी बाजार मे एक गृहस्थ महन्त रहते थे। उन्होने एक प्रतिष्ठित आश्रम के एक सत की कुछ भूलो को लेकर, उनके विरोध मे और वहा के कुछ सतो की आलोचना मे एक पुस्तक ही लिख डाली। महत जी के द्वारा किसी सत की ऐसी आलोचना लिखना गुरुदेव जी को अच्छा नही लगा।

गुरुदेव जी कानपुर मे थे ही, वहा से महत जी का मुकाम दूर नही था। आप भक्त श्री रामलाल जी को लिए और महत जी से मिलने चल दिये। उनके बाजार मे पहुचते ही एक व्यक्ति मिले, उनसे महत जी के बारे मे पूछने पर उन्होने कहा—वे यही कही पास मे ही ठेले पर सब्जी बेचते होगे।

महत जी की उस समय 50 वर्ष की उम्र रही होगी। वे कुर्ता और लुगी पहने ठेले पर सब्जी बेच रहे थे। गुरुदेव जी देखते ही उनको पहचान गये। आपने हाथ जोड़कर नमस्कार किया तथा उनका कुशल समाचार पूछा।

गुरुदेव जी ने उनकी लिखी हुई पुस्तक का नाम लेते हुए कहा—आप जैसे विद्वान पुरुष की कलम से ऐसा नही होना चाहिए था।

महत जी ने कहा—ये लोग सब अपने को बहुत लगाते हैं, हम ही से सब पैदा हुए और हमे ही भूल गये, अपने को ही सर्वेसर्वा मान बैठे हैं।

गुरुदेव जी ने कहा—हम सब आपके बच्चे हैं तो अपने बच्चो पर रहम करना चाहिए की बेरहमी?

गुरुदेव के इस प्रकार निर्मान और कोमल वचन सुनकर महत जी पानी-पानी हो गये। उन्हाने अफसोस करते हुए कहा—ऐसा कहने वाला मुझे पहल कोई मिला होता तो मैं यह सब लिखता ही नही। महन्त जी ने प्रतिपक्षी पर आरोप लगाते हुए कहा—उनको भाषा का ज्ञान नही और उलटा-पुलटा लिखते

हैं। गुरुदेव जी ने कहा—आपको तो ज्ञान है, ''वो तो वैसा ही हुआ, तू मत होहु अयान।'' आपको ध्यान देना चाहिए। उनके आदर-सम्मान पर आप विशेष ध्यान देते रहे। गुरुदेव ने कहा—आप अपनी जीविका के लिए यह जो कर रहे हैं, बहुत अच्छा है। कबीर साहेब ने तो सभी कर्म को पूजा कहा है ''जो कुछ करौं सो पूजा।''

गुरुदेव की बातो से वे बहुत प्रभावित हुए, उन्होने पुन: कहा—आप जैसे लोग पहले हमे कोई मिले होते तो हम कुछ न लिखते।

35.

एक-एक शब्द स्वर्ण अक्षरो मे लिखकर टागने लायक है

ऋषिकेश वह स्थान है जहा पर गगा पर्वतीय क्षेत्रो से उतरकर मैदानी भाग मे आती है। वहा पर गगा की निर्मल पवित्र धारा अत्यन्त मनोरम है। वहा पर सतो की साधना के लिए एव साधको के विद्याध्ययन के लिए भो अनेक सस्थाये हैं। यह घटना अप्रैल 1966 ई0 की है। उस समय ऋषिकेश, परमाथ निकेतन मे श्रhय सत श्री ज्ञान साहेब जी सस्कृत अध्ययन कर रहे थे। उन्होने गुरुदेव से वहा पर पधारने के लिए अनेक बार आग्रह किया, किन्तु अभी तक आपको अवसर नही मिल पाया था।

वर्ष 1965 का प्रयाग कुंभ मेला करने के बाद गुरुदेव जी से अनुमति लेकर पहले आप राजस्थान के कार्यक्रमों में गये। उसके बाद वहीं से अप्रैल महीने में रामनवमी के पर्व पर ऋषिकेश गये। आपके साथ कबीर मदिर बुरहानपुरवासी सत श्री विवेक साहेब तथा अन्य कुछ सत-ब्रह्मचारी थे। ऋषिकेश परमार्थ निकेतन मे आप सबका निवास होता था। एक दिन श्री ज्ञान साहेब जी ने परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष महोदय से निवेदन किया कि सत श्री अभिलाष साहेब जी को प्रवचन का अवसर दिया जाय। उनकी बात सुनकर अध्यक्ष महोदय पशोपेश मे पड गये कि वे कबीरपथी सत हैं, क्या कैसे बोल जाये। यहा सभो सनातनधर्मी और विभिन्न स्वभाव के लोग हैं, किसी को बुरा न लग जाय। श्री ज्ञान साहेब जी ने उनको आश्वासन दिया कि उनके विषय मे आप बिलकुल निश्चिन्त रहे। उनके विचारो से किसी को आपत्ति आ ही नही सकती।

परमार्थ निकेतन मे सुबह आधा घटा की एक सभा होती थी, इस सभा मे सबको उपस्थित होना अनिवार्य होता था। सुबह की सभा मे अध्यक्ष महोदय

गुरुदेव को समय नही दे सके। शाम को सामान्य सभा होती थी उसमे उन्होने गुरुदेव को आधा घटा समय दिया।

सायकालीन सभा मे गुरुदेव ने अपने विचार आरम्भ किया और मात्र छब्बीस मिनट बोलकर बन्द कर दिये। उस छब्बीस मिनट के प्रवचन ने वह जादू किया कि सभा के सभी लोग भावविभोर हो गये। अध्यक्ष महोदय भी आपके विचार सुनकर गद्‌गद हो गये। उन्होने पहली बार किसी सत से ऐसा विचार सुना था। फिर तो माइक लेकर वे बोलना शुरू किये—महाराज जी का एक-एक शब्द स्वर्ण अक्षरो मे लिखकर रखने लायक है। इसके आगे शेष चार मिनट तक वे गुरुदेव की प्रशसा मे ही बोलते रहे। इसके बाद फिर सुबह के सत्र मे आपक विचार होने लगे। परमार्थ निकेतन मे गरमी के दिनो मे वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ इन तीन महीनो मे गुरुपूर्णिमा तक चौमासा बहुत से सत जन रहते हैं। अध्यक्ष महोदय ने गुरुदेव से उसी सभा मे कह दिया कि आप अब गुरुपूर्णिमा तक यहा विराजे। आपने कहा—हमे समय नही है, गुरुदेव जी से समय लेकर आया हू और वही वापस जाना है।

इसी क्रम मे देहरादन से एक सत आये जो प्रवक्ता बुलाने आये थे। परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष महोदय ने उनसे कहा—हमारे यहा बहुत बड़े प्रवक्ता आये हैं उनको ले जाओ। ऐसा विचार आप कभी नही सुने होगे। इतना सुनते ही वे सत आपके पीछे पड़ गये। उनके बहुत आग्रह करने पर गुरुदेव को वहा भी जाना पड़ा, साथ मे श्री ज्ञान साहेब जी भी थे। देहरादून मे आप सबको एक सेठ के घर ठहराया गया। वही से आप सत को यज्ञ सभा मे प्रवचन करने के लिए आते थे।

यह यज्ञ शक्ति-यज्ञ के नाम से चल रहा था। इसके महन्त ने सभा मे सभी प्रवक्ताओ को कह दिया कि यह शक्ति-यज्ञ है इसलिए यहा पर सबको शक्ति पर बोलना है।

रात्रि मे सभा आरम्भ हुई, कोई प्रवक्ता शक्ति के नाम पर श्लोक बोल रहा था तो कोई कह रहा था कि आदि शक्ति ने जगत को बनाया। कोई कहता था शक्ति की उपासना करने से अमुक-अमुक लाभ होता है आदि। गुरुदेव का नम्बर आया तो आप भी शक्ति पर बोले। आपने कहा—शक्ति दो है। एक चित शक्ति, दूसरो अचित शक्ति। इस प्रकार जड़-चेतन निर्णय पर आप बोले। इसके बाद आपने कहा—शक्ति स्वरूपा ये माताए हैं। नारी एक शक्ति है जो उत्पत्ति, पालन और सहार करने वाली है। यदि नारी शक्ति का सुधार नही हुआ तो समाज का विनाश है, इसके आगे आपने नारी शिक्षा और नारी सुधार पर विचार

दिया। आपके इन व्यावहारिक और प्रासगिक विचारो ने सभा मे उपस्थित सभी लोगो को मत्रमुग्ध कर दिया। यज्ञ स्थल से निकलने के बाद जिधर आप जाते उसी तरफ लोग आपको घेर लेते और प्रशसा करते।

दूसरे दिन गुरुदेव ने योग दर्शन के मुदिता, मैत्रो, करुणा, उपेक्षा इन चार शक्तियो पर सयम-सदाचार की बाते बतायी।

36.

रूह के लिए भी कुछ काम करते हैं?

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के विरक्त होने के पूर्व आपके पिता जी देश सेवा का काम करते थे। एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होने के नाते आपके दरवाजे पर सब समय नेताओं, अफसरों और साधु-संतों का आवागमन बना रहता था। उन दिनों आपके घर एक कांग्रेसी नेता आया करते थे, जिनकी उम्र उस समय बयालीस वर्ष की रही होगी। वे पेशे से वकील थे। उनका नाम था काजी जलील अब्बासी। उनका घर बस्ती जिला के बयारा गांव में था, जो खानतारा से करीब तीन किलोमीटर की दूरी पर था।

1970 ई0 के लगभग वे चुनाव प्रचार के दौरान निकले थे। प्रचार करते हुए वे मुहम्मद नगर शंकर भक्त के घर पहुंच गय। उस समय गुरुदेव जी का निवास वही था। दोपहर का समय था। गुरुदेव जी भोजन करके दरवाजे पर एक पत्थर की चौकी पर बैठे कुल्ला कर रहे थे। उसी समय काजी जलील अब्बासी साहब अपने साथियों सहित वहा पहुंचे। गुरुदेव ने उनको देखते ही पहचान लिया। किंतु अब्बासी जी गुरुदेव को पहचान नहीं पाये।

काजी जलील अब्बासी जी सामने कुर्सी पर बैठ गये। गुरुदेव ने उनकी तरफ रुख करके कहा—जिस्म के लिए तो बहुत मेहनत कर रहे हैं, रूह के लिए भी कुछ काम करते हैं या नहीं? इतना सुनते ही काजी साहब चौंक गये। ऐसे हृदयस्पर्शी प्रश्न आजतक मुझसे किसी ने नहीं किया। कुछ अन्य बातें होती रहीं। काजी जलील अब्बासी साहेब ने कहा—आप हैं कौन? मैंने आपको पहचाना नहीं।

गुरुदेव ने कहा—मैं तो आपको पहचानता हूं।

काजी जलील अब्बासी जी—आपकी वाणियों से ऐसा लगता है कि मानो जन्नत का कोई फरिस्ता बोल रहा हो। आपका परिचय क्या है? आप रहनेवाले कहां के हैं, महाराज?

गुरुदेव जी—जहां यह शरीर जन्मा है वहां आप अनेक बार गये हैं। खानतारा गांव के पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल इस शरीर के जन्मदाता हैं।

इतना सुनत ही अब्बासी जी भावविभोर हो गये। उन्होंने कहा—मैं तो अभी तक आपके साधुत्व के बारे में केवल सुनता था। आज खुदा की ऐसी मर्जी हुई कि आप से मुलाकात हो गयी।

काजी जलील अब्बासी साहेब बयारा अपने घर गये और उसी दिन खानतारा भी जाकर गुरुदेव के पिता पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्ल से मिले। अब्बासी जी बहुत गद्‌गद थे। उन्होंने शुक्ल जी से कहा—आपका लड़का तो बहुत ही आगे बढ़ चुका है। उसने तो खुदा को पाने के लिए इस संसार का मार्ग छोड़ दिया। धन्य हैं शुक्ल जी आप, जो ऐसे सुपुत्र को जन्म दिये।

37.

कोई किसी का उद्धारक नहीं!

यह घटना 1970 ई0 की होगी। गुरुदेव का कार्यक्रम छत्तीसगढ़ दुर्ग जिला के करहीभदर कबीर आश्रम मे चल रहा था। एक दिन शाम को कार्यक्रम के पश्चात आप कुछ सतो के साथ चर्च की तरफ घूमने के लिए गये। गुरुदेव ने कहा—चलो, आज चर्च मे भी जरा घूम लते हैं। जब चर्च मे प्रवेश किये तो वहा एक पादरी मिले। वे स्वय आगे आकर सबको चर्च दिखाने लगे। घूमते-घूमते गुरुदेव जी और पादरी दोनो मे बाते भी हो रही थी, इसी बीच गुरुदेव ने कहा—ईसा तो महान सत थे। आपकी बात सुनते ही पादरी ने कहा—अच्छा, ऐसा आप मानते हैं? गुरुदेव जी—इसमे मानने की क्या बात, ईसा महान थे ही। गुरुदेव ने दृढ़तापूर्वक कहा।

पादरी ने गुरुदेव की सरलता को देखते हुए सोचा, अच्छा भोला-भाला भगत मिला, इनसे तो और भो कुछ मनवाया जा सकता है। उन्होने बड़ी आशा से गुरुदेव से कहा—अच्छा, यदि आप प्रभु ईसा मसीह की महानता को स्वीकारते हैं तो मेरा आपसे एक आग्रह और है। प्रभु ईसा को आप अपना उhारक मान लीजिए। गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए कहा—मैं कबीर अनुगामी हू और कबीर साहेब को अपना उhारक नही मानता, फिर ईसा मसीह को अपना उhारक कैसे मान सकता हू। हा, इतना मैं अवश्य मानता हू कि सत ईसा एक बहुत बड़े जन समाज को सत्य का रास्ता दिखाये। इसी प्रकार सुकरात, जरथुस्त्र, लाओत्जे, कन्फ्यूशियस, बुh, महावीर, कबीर आदि हैं। इन महापुरुषो के बताये हुए रास्ते पर चलकर हमे खुद अपना कल्याण करना है। इस विश्व सत्ता मे कोई

किसी का उhार-कल्याण करने वाला नही है। सत ईसा किसी के उhारक हैं, यह धारणा विचारक इसाई ही नही मान सकते। इसके विरोध मे अमेरिका, इग्लैंड मे लोगो की आवाज उठ रही है। उन्होने चौंकते हुए पूछा—यह आप कैसे जानते हैं? गुरुदेव ने कहा—पढ़-सुनकर हमे भी कुछ पता चल जाता है।

38.

क्या आपने वैदिक मार्ग को छोटा समझा?

गुरुदेव जी को गृहत्याग किये उस समय अठारह वर्ष बीते थे। एक सज्जन मिले जो वृद्ध थे और आपसे पूर्व परिचित थे। 18 वर्ष के बाद जब वे आपसे मिले तो बहुत प्रसन्न हुए। परस्पर के शिष्टाचार और कुशल-मंगल के बाद वेबोल पड़े—

महाराज! आप वैदिक धर्म में थे। उसे छोड़कर कबीरपंथ में आ गये। तो क्या आपने वैदिक धर्म को छोटा समझा?

गुरुदेव जी ने कहा—आपके प्रश्न के अनुसार अगर उत्तर दूं तो यही कहूंगा कि मैंने वैदिक धर्म को छोटा समझकर कबीरपंथ को ग्रहण किया। कितु अपने अनुसार कहूं तो यही कहूंगा कि यहां छोटा-बड़ा कुछ नहीं है। पहले मैं वैदिक धर्म में था तो मेरे धर्मग्रंथ वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि थे। कितु कबीरपंथ को पाकर तो वेद, उपनिषद्, गीता आदि ग्रंथों के साथ-साथ कुरान, बाइबिल, जिन्दावेस्ता, गुरुग्रंथ आदि भी मेरे धर्मग्रंथ हो गये। पहले मैं हिन्दू परम्परा में था। सनातन धर्म को मानता था, कितु अब सनातन धर्म के साथ-साथ इसलाम, सिक्ख, इसाई, यहूदी, पारसी, जैन, बौद्ध आदि परम्पराए भी मेरे धर्म-पंथ हो गये। पहले मेरे पूज्य महापुरुष थे राम, कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु और महेश लेकिन अब कबीर को पाकर इन महापुरुषों के साथ-साथ मुहम्मद, ईसा, मूसा, कनफ्यूसियस, जरथुस्त्र, लाओत्जे, सुकरात, बुद्ध, महावीर आदि भी मेरे पूज्य महापुरुष हो गये।

कबीर को पाकर मैं संकुचित नहीं हुआ बल्कि फैल गया। अब सभी महापुरुष, सभी धर्मग्रंथ और सभी मत-पंथ मेरे हो गये।

हां, इन सबको अपना मानने का मतलब यह नहीं कि कारण-कार्य व्यवस्था के विपरीत (ऊल-जुलूल) बातों को भी मान्। विवेक की कसौटी पर जो खरा उतरता है उसको मानता हूं और उसमें जीता हूं।

गुरुदेव जी के इस प्रकार बेलाग निर्णय और समतापूर्ण उत्तर सुनकर वे सज्जन बहुत ग्लानि किये कि ऐसा तो मैंने कभी सोचा भी नहीं था। मैं अभी तक भ्रम में जी रहा था। आपकी ऐसी भावनाओं से मैं अत्यन्त हर्षित एवं प्रभावित हूं।

39.

तभी तो आप इतना गरजते हैं!

बस्ती जिला के रुदौली नामक गांव में महादेव सिंह नाम के एक ठाकुर रहते थे। वे कांग्रेस में गांधीवादी विचार के बड़े धाकदार नेता थे। महादेव सिंह जी का एक घर रुदौली गांव में था लेकिन वे बस्ती में रहा करते थे। महादेव सिंह जी साधु-संतों को हेय दृष्टि से देखते थे क्योंकि उनके सामने जो भी साधु-संत थे वे प्रायः गंजेड़ी-भंगेड़ी ही थे।

उनके रुदौली गांव के घर पर एक बैंक मैनेजर किराये पर रहते थे जिनका नाम कोदई प्रसाद गुप्त था। वे गुरुदेव के शिष्य थे। उनके निमंत्रण पर गुरुदेव रुदौली गये थे। रात का कुछ समय हो गया था। ठाकुर महादेव सिंह के हवादार चौबाहे में आप बैठे थे और आपके साथ कुछ नेमी-प्रेमी लोग भी बैठे थे। सत्संग चर्चा चल रही थी। उसी समय महादेव सिंह बस्ती से आ गये और वे भी उस बैठक में शामिल हो गये। गुरुदेव जी तो उन्हें पहचान गये परन्तु महादेव जी गुरुदेव जी को नहीं पहचान पाये।

वे दण्ड-प्रणाम करके गुरुदेव जी के पास नीचे बिछी हुई कालीन पर बैठ गये और बातें करने लगे। सिंह जी समझते थे कि यह संत भी कोई घूमने-खानेवाले हैं। उन्होंने कहा—आज-कल तो जिसे देखो वही कपड़ा बदलकर साधु बन जाता है और गांव के बाहर पोखरे पर कुटी बनाकर धूनी रमा देता है। घूमने और कमाने-खाने का यह सबसे सस्ता साधन बन गया है।

गुरुदेव अभिलाष साहेब जी ने तपाक से कहा—हां, हां, हम भी जानते हैं इन राजनेताओं को जो खद्दर पहन लेते हैं और घूमने लगते हैं। बस्ती, लखनऊ और दिल्ली में पंडे की तरह डेरा डाले बैठे जनता को ठगते रहते हैं। ये देश को ठगकर अपना घर भरते हैं। तिसपर भी कहते हैं कि हम गांधी जी के रास्ते पर हैं।

महादेव सिंह जी—इन नेताओं की बात छोड़िए।

गुरुदेव जी—छोड़ें क्यों? ये भी तो समाज और देश में रहते हैं।

इस प्रकार और भी अनेक बातें गुरुदेव जी और श्री महादेव सिंह जी के बीच होती रहीं। महादेव सिंह जी की हर बात का गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी निर्भयतापूर्वक झरझराते हुए जबाव देते गये तथा वेद, शास्त्र, पुराण, महाभारत, रामायण और कबीर वाणी आदि के उदाहरण देकर समयोचित ज्ञान की बातें कहते गये।

महादेव सिंह जी बहुत खुश हुए। उन्होंने पूछा—अच्छा महाराज जी, आप कौन दूध हैं?

गुरुदेव जी—अच्छा! आप दूध-दही पूछ रहे हैं? आप तो अपने को गांधीवादी मानते हैं न। गांधी जी ने क्या कभी किसी से दूध पूछा है?

महादेव सिंह जी—अच्छा महाराज, आपका परिचय क्या है?

गुरुदेव जी—एक मनुष्य हूं बस, और क्या परिचय चाहिए?

महादेव सिंह जी—फिर भी कुछ बताने की कृपा करें।

गुरुदेव जी हंसते हुए—बचपन में आपकी मैंने अनेक बार सेवा की है।

इतना सुनकर महादेव सिंह जी को और जिज्ञासा हुई। उन्होंने कहा—महाराज, आपका दैहिक परिचय क्या है?

गुरुदेव जी—खानतारा के पंडित श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल जी इस देह के पिता हैं।

इतना सुनते ही महादेव सिंह जी ने हंसते हुए कहा—तभी तो आप इतना गरजते हैं। हम नहीं समझते थे कि आप वही हैं। बड़ा अच्छा हुआ महाराज, आप हमारे घर पधारे। आपके दर्शन हुए। मैंने तो सुना भर था कि आप विरक्त हो गये है किंतु अभी तक आपसे मुलाकात नहीं हो सकी। आपका इतना विशाल अध्ययन और ज्ञान है, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

महादेव सिंह जी किसी भी साधु-संत के सामने कभी भी विनम्र नहीं होते थे, किंतु आज गुरुदेव जी के निष्पक्ष विचार और प्रतिभा से वे आपके प्रति श्रद्धावान हो गये।

40.
है कोई बैगा?

गुरुदेव 1954 से ही छत्तीसगढ़ जा रहे हैं। आज तो काफी कुछ वहां की जीवन-शैली बदल चुकी है। लेकिन आज से बीस-पचीस वर्ष पूर्व अशिक्षा के कारण लोगों में बहुत भ्रांतियां थीं। यद्यपि आज भी इसकी कमी नहीं है और यह

भ्रांति एवं अंधविश्वास केवल छत्तीसगढ़ की ही बात नहीं है बल्कि सभी देश एवं सभी काल में कमोबेश रहा है।

गुरुदेव शुरू से ही सारे अंधविश्वासों का खुलकर खंडन करते आ रहे हैं। आप तो हजारो के बीच में भरी सभा में चुनौती देते हुए कहते हैं कि यदि यहां कोई बैगा, ओझा, सोखा और टोना मारनेवाली टोनही है तो वह आये और मुझ पर टोना मारे। जितना भी भूत-प्रेत हो वह मेरे सिर पर कर दे। मैं देखता हूं कि भूत-प्रेत और टोना आदि मेरा क्या बिगाड़ते हैं। लेकिन आज तक कोई बैगा, सोखा या टोनही आदि गुरुदेव के पास आने की हिम्मत नहीं किया। ये सारी भ्रांतियां शब्दमात्र हैं और कमजोर मन की उपज हैं। कमजोर एवं मूढ़ मनवाले व्यक्तियों के मन में ऐसी ही मान्यताएं घर कर गयी हैं। जिससे उनको भूत-प्रेत आदि की सनक सवार हो जाती है। जब उन्हें कोई बैगा, सोखा आदि झाड़ता है तो उनको लगता है कि हमारा भूत उतर गया है। जो भावनामात्र है।

इसके विषय में गुरुदेव कहते हैं—मैं साठ वर्षों से भूत-प्रेत का खण्डन करता आ रहा हूं। यदि वे कहीं होते तो अबतक मेरी जबान उखाड़ डालते। अगर भूत-प्रेत हैं और वे हमसे डरते हैं तो हाथ जोड़कर ही हमारे सामने आ जाये कि महाराज, आप हमारा खंडन न करें। हम लोग हैं। लेकिन ऐसा कुछ नहीं। वस्तुतः भूत-प्रेत अस्तित्वहीन हैं।

एक बार गुरुदेव छत्तीसगढ़ में ही गुरुर के पास घोघोपुरी गांव में थे। दोपहर के समय भोजन में एक व्यक्ति आया जो विचित्र वेश-भूषा का था। लोगों ने कहा—साहेब, यह बैगा है।

गुरुदेव ने उसको अपने पास बुलाया और पूछा—बताओ, तुम्हारी क्या विशेषता है? वह बैगा बहुत घबरा गया और अपनी बोली में कहा—कुछ नहीं जानता महाराज, मैं कुछ नहीं जानता। उसने गुरुदेव को समझा कि ये शायद मुझसे भी बड़े बैगा हों!

41.
प्रेम की निस्सीमता

यह घटना लगभग 1977 की होगी। कालेज का एक छात्र गुरुदेव जी के पास एक कैलेण्डर बनाकर भेजा। उसने कहा, इसे आप 'पारख प्रकाश' में छाप दीजिये। गुरुदेव ने उसे पढ़ा, पढ़ने पर आपको लगा कि यह 'पारख प्रकाश' में छापने लायक नहीं है।

आपने उसे पत्र लिखा—

प्रिय बेटा, तुम्हारा कैलेण्डर प्राप्त हुआ। उसे मैंने देखा भी किंतु उसे मैं पारख प्रकाश में छाप नहीं सकता क्योंकि वह छापने लायक नहीं है।

गुरुदेव जी का पत्र पाते ही उसने गुरुदेव जी को बहुत कटु शब्दों में लिखकर निंदा की।

इतनी-सी बात में वह उबल पड़ा और उस उबाल को उसने अपने पत्र में उड़ेल दिया। गुरुदेव जी भी उसको जवाबी पत्र लिखे—

प्रिय बेटा.......!

खूब खुश रहो,

तुम्हारा पत्र मिला, तुमने मुझे निर्देश किया, तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद। जो तुमने मेरे लिए लिखा है वह सब मेरे में है। त्रुटियों के अलावा मेरे में और कुछ नहीं है। तुम्हारे द्वारा जो सावधानी मुझे मिली है, मैं बहुत-बहुत उपकार मानता हूं। तुम्हें बहुत-बहुत प्यार, धन्यवाद तथा पुनः आशीर्वाद।

तुम्हारा शुभचिंतक
अभिलाष दास

रायपुर अग्रसेन भवन में गुरुदेव जी का प्रवचन चल रहा था। प्रवचन जब समाप्त हुआ तो धीरे-धीरे लोग हाल से बाहर निकलने लगे। एक लड़का आया। कक्ष में जाकर उसने गुरुदेव जी का पैर पकड़ लिया और रोने लगा। गुरुदेव जी समझ गये कि इसक रोने का कारण क्या हो सकता है। आपने पूछा—बेटा, तुम्हीं ने पत्र लिखा था?

उसने कहा—हां महाराज, वह मैं ही हूं। उसकी हिचकी बंधी रही।

क्या हो गया बेटा, क्यों रोते हो?

उसने कहा—महाराज, आपका पत्रोत्तर आया। मैं घर पर नहीं था, कालेज में था। डाकिया दरवाजे की दराज से आपका पत्र डाल दिया था। मैं घर आया तो दरवाजा खोला और देखा—पत्र, और प्रेषक में देखा तो आपका नाम। सोचा कि आप भी डांट-फटकार कर मुझे पत्र लिखे होंगे। लेकिन जब खोला तो पढ़कर मैं खाट पर गिर गया और बहुत रोया। महाराज, मुझसे बहुत अपराध हो गया है, मेरे उद्धार का रास्ता क्या है?

गुरुदेव जी ने कहा—तुम्हारा उद्धार हो गया, घबराओ मत। जो तुमने लिखा है वैसा मैं हूं। हां, तुमने सभ्यता का बरताव नहीं किया। लेकिन सत्य कहने में

सभ्यता का बरताव छूट जाता है। तुमने सत्य कहा, ठीक किया। जब गुरुदेव जी ने इतना कहा तो वह और रोने लगा।

पुनः आप उसे समझाये। फिर वह गुरुदेव का प्रेमी हो गया और जगह-जगह मिलने लगा। अब वह गुरुदेव जी का प्यार और स्नेह पाकर कृतकृत्य हो गया। ऐसे हैं गुरुदेव जी, जो निंदा करने एवं कटु कहने वाले को भी स्नेह, प्रेम एवं सभ्यता के बरताव से अपना बना लेते हैं।

42.

समस्या तो अहंकार में है

गुरुदेव छत्तीसगढ़ में थे। एक दिन एक साधु आकर कहने लगे—साहेब जी, अमुक संत आप को भला-बुरा कहते रहते हैं। वे सबसे आपकी निंदा ही करते रहते हैं। इससे हमें बहुत दुख होता है। वे आपके पास भी आते रहते हैं। आप उनको समझा दीजिए।

गुरुदेव जी ने कहा—वे मेरी जितनी बुराई जानते हैं कहते होंगे। अगर वे मेरी सारी बुराई जान जायें तो उनको और भी कहना पड़ेगा।

वे संत हंसने लगे। उन्होंने कहा—तब तो कोई समस्या ही नहीं है।

गुरुदेव जी ने कहा—समस्या है ही नहीं। जो भवसागर से तरने की बुद्धि रखे उसके पास समस्या है ही नहीं। समस्या तो अहंकार में है, इच्छा और कामना में है। जिसने सारा अहंकार, सारी इच्छा और कामना का त्याग कर दिया उसको समस्या है ही नहीं।

जिस गांव में गुरुदेव जी विराजमान थे, उस गांव से दूसरे गांव में जाना था। रास्ते में उन संत की, जो गुरुदेव जी की बुराई करते थे, कुटिया पड़ती थी। वे संत उसी दिन गुरुदेव जी के पास आये और हाथ जोड़कर विनय करने लगे—साहेब, कल आप यहां से अमुक गांव को जायेंगे। रास्ते में मेरी कुटिया पड़ती है। वहां कृपा करके दो मिनट रुक लीजिएगा।

गुरुदेव जी ने कहा—ठीक है।

दूसरे दिन गुरुदेव जी संत समाज सहित उस संत की कुटिया में गये। वे संत बैठने के लिए आसन दिये। सब संतो को भी बैठाये।

वे गुरुदेव जी के चरण धोये, चरणामृत लिये और आरती किये। पुनः हाथ जोड़कर कहने लगे, बन्दीछोर! हमारे कल्याण के लिए कुछ बातें बता दीजिए।

गुरुदेव जी कुछ विवेक, विचार तथा रहनी की बातें सुना दिये।

वे संत भी वहीं थे जिन्होंने गुरुदेव जी को यह बात बतायी थी कि ये संत आपकी बुराई करते हैं, जब वहां से चले तब रास्ते में उन्होंने गुरुदेव जी से कहा—साहेब, ये तो भीगी बिल्लो बन गये।

गुरुदेव जी ने कहा—नही-नहीं, ऐसा मत कहो। उनका विचार है। सत्कार करते हैं तो उनका विचार है और तिरस्कार करते हैं तो भी उनका विचार है। सब लोग अपने विचार से काम करते हैं। हमें कैसे रहना चाहिए, इस बात पर हमें विचार करना चाहिए।

43.

आप बुद्धिवादी हैं या...?

एक बार गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी सरयू नदी के तट से होकर कहीं जा रहे थे। किसी कारण से आप हाथ-मुंह धोने के लिए सरयू में उतरे। आपने देखा कि सामने नाव आयी है और उस पर से दो युवक उतरे। दोनो की उम्र W}-30 वर्ष की रही होगी।

एक ने दूसरे से कहा—यार! लाओ जरा सिगरेट पी लें तब चलें।

गुरुदेव जी उनकी बातें सुन रहे थे। आपने उनसे पूछ लिया, प्रिय बन्धुओ! आप लोग बुद्धिवादी हैं या उसके विपरीत?

एक ने कहा—मैं बुद्धिवादी नहीं हूं।

दूसरे ने कहा—महाराज, मैं तो बुद्धिवादी हूं।

गुरुदेव ने कहा—कोई आदमो किसी से कहे कि एक पत्थर लाओ और मेरा सिर फोड़ दो तो मैं तुम्हें सौ रुपये दूंगा। तो उसे आप क्या कहेंगे?

दोनो ने एक स्वर में कहा—महाराज, उसे तो हम महामूर्ख ही कहेंगे।

गुरुदेव—फिर आप लोग यह क्या कर रहे हैं? पैसा देकर सिगरेट लात हैं, उससे अपना कलेजा जलाते हैं। यह पैसा देकर सिर फोड़ना ही तो है।

उन्होंने कहा—महाराज, हम दोनो अध्यापक भी हैं।

गुरुदेव—तब तो विनाश ही है! अध्यापक तो गुरुस्थानीय होता है और यदि अध्यापक ही सिगरेट पीये तो बच्चों को क्या सीख देगा! क्या आदर्श स्थापित करेगा?

दोनो ने सिगरेट तोड़कर सरयू में फेक दिया। उन्होंने कहा—महाराज, आज से हम लोग सदा के लिए सिगरेट त्यागते हैं।

गुरुदेव ने कहा—शाबाश! आप दोनो को मेरा बहुत-बहुत धन्यवाद!

44.

नाम-रूप से परे

सन् 1962 की घटना है। काशी मे बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर की दुकान मे नीचे पुस्तक छपाई का काम चल रहा था। किसी कार्यवश गुरुदेव जी वहा गये हुए थे। प्रेस के मैनेजर वहा थे, जिनका नाम गोपाल सिह था। वे आपके पास बैठे कुछ बाते कर रहे थे। झासी के एक भक्त रामाधार जी वहा आ गये। वे रेलवे मे सर्विस करते थे। रामाधार जी गुरुदेव की पुस्तके पढ़ चुके थे तथा आपके त्याग-वैराग की महिमा पहले से सुन रखे थे किन्तु अभी आपसे परिचित नही थे।

आते ही उन्होने गोपाल सिह से पूछा कि अभिलाष साहेब कहा रहते हैं? क्या आप उनका पता बता सकते हैं?

गोपाल सिह के बोलने के पहले गुरुदेव जी ही बोल पड़े, अरे, उनके बारे मे क्या पूछते हैं आप। वे कोई अच्छे आदमी थोड़े हैं, उनकी चर्चा ही न करो। आपकी बात सुनकर भक्त रामाधार जी आप पर नाखुश हो गये। उन्होने कहा—आपके लिए वे भले ही अच्छे न हो लेकिन हमारे लिए तो उनसे अच्छा कोई नही है। गुरुदेव ने पुनः मुस्कुराते हुए कहा—तुम भी जानोगे तो उनको अच्छा नही मानोगे। यह सुनकर मनेजर गोपाल सिह जी हस दिये। उनका हसना देखकर रामाधार जी को कुछ सदेह हुआ और वे आपकी तरफ मुखातिब होकर गौर से देखने लगे। गुरुदेव जी भी हस दिये।

अब उनका सदेह मिट गया कि जिनके बारे मे मैं पूछ रहा था वे खुद ये स्वय हैं। फिर तो वे आपके चरणो मे लिपट गये। उन्होने गुरुदेव से पूछा—साहेब! आपने ऐसा क्यो कहा?

गुरुदेव ने कहा—जिसको तुम अभिलाष साहेब कहते हो वह हाड़, चाम, मल, मास का पिड है, इसको क्या बहुत महत्त्व देना।

45.

एक तपस्वी संत और वैराग्य संजीवनी

फैजाबाद-सुलतानपुर के बीच में तमसा नदी बहती है। बीसवीं शताब्दी में इसी नदी के किनारे एक संत रहते थे। जो कि वहीं पास के गांव के रहनेवाले थे। उन्होंने कहीं से सुना था कि तपस्या करने से भगवान के दर्शन होते हैं। तो वे

भी तपस्या करना शुरू कर दिये। अपने जीवन के पूर्वाध में ही वे साधना में लग गये थे और उनकी साधना अत्यन्त कठिन थी।

वे सब समय खुले आकाश में रहा करते थे। घर में रहने की तो बात ही नहीं पेड़ के नीचे भी नहीं रहते थे। ठंडी, गर्मी, वर्षा सब समय खुले आकाश में जमीन पर बैठे रहते थे। बैठने के लिए कोई निश्चित स्थान भी नहीं था और नीचे कपड़ा-पैरा कुछ नहीं बिछाते थे।

वे प्राय: मौन रहते थे और किसी से कुछ लेते नही थे। उनके घर से एक समय भोजन आता था और वे वही खा लेते थे।

एक बार गुरुदेव अभिलाष साहेब जी के बड़े गुरुभाई पूज्य संत श्री निर्बन्ध साहेब जी से वे गुरुदेव की रचना 'वैराग्य संजीवनी' पुस्तक पा गये। उस पुस्तक से वे अत्यन्त गद्‌गद थे। श्री निर्बन्ध साहेब जी उनके पास समय-समय से जाया करते थे। तपस्वी संत ने श्री निर्बन्ध साहेब जी से एक बार लिखकर बताया कि 'वैराग्य संजीवनी' को पढ़ने से ऐसा लगता है कि सर्प के सामने बीन बजाने पर जैसे वह फन काढ़कर मनमनाता है, वैसे ही इसको पढ़ने से मन मे वैराग्य भाव मनमनाता है।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी की इस पुस्तक ने तो उनके जीवन को बदल दिया। अब वे परमात्मा को बाहर न खोजकर अन्दर खोजना शुरू कर दिये। वैराग्य संजीवनी पुस्तक को रखने के लिए वे एक हण्डी मंगवाये, उसी में वे उस पुस्तक को रखते थे। वर्षा के दिनों में पुस्तक को हण्डी में रखकर हण्डी को उलट कर पेड़ में बांधकर लटका दिया करते थे।

उन्होंने श्री निर्बन्ध साहेब से अनेक बार लिखकर बताया था कि मुझे पहले वैराग्य संजीवनी तथा पारख सिद्धान्त मिला होता तो मैं इतना घोर तपस्या न करता। आवश्यकता से अधिक कष्ट उठाने की आवश्यकता न पड़ती।

संत श्री निर्बन्ध साहेब जी से उन्होंने अनेक बार गुरुदेव जी के लिए कहा कि साहेब को यहां एक बार ले आओ। मैं उनके दर्शन करना चाहता हूं कितु गुरुदेव अभिलाष साहेब जी को उनके पास जाने का अवसर नहीं पड़ा।

46.
वैराग्य की उत्कर्षता

वर्ष 1970 की बात होगी। श्री अभिलाष साहेब जी अपने गुरुदेव के साथ छत्तीसगढ़ के कांकेर क्षेत्र के कार्यक्रमो में थे। एक दिन एक ब्रह्मचारी जिसका

मन साधना में नहीं लग रहा था, चुपके से भाग गया। उसके चले जाने से एक संत जो भावुक हृदय के थे बहुत परेशान हो गये।

उन्होंने आपसे कहा—साहेब! उस साधक का पता लगाना चाहिए। बेचारा बहुत अच्छा था लेकिन चला गया। आपसे अलग होकर वह दुखी हो जायेगा।

आपने उन संत को समझाया और कहा—जब उसका मन कच्चा था तो चले जाने दो। इसमें दुखी होने की बात क्या है? लेकिन वे संत उस ब्रह्मचारी के चले जाने से इतना बेचैन हो गये कि बारम्बार उनको उसी ब्रह्मचारी की याद आया करे।

एक शाम को एक पेड़ के नीचे आपने उन संत को अपने पास बुलाकर समझाना शुरू किया—किसी से अपने मन को बहुत जोड़ लेना ही दुख है। यहां कौन किसका है? व्यवहार में सब हमारे हैं किंतु परमार्थ में कोई अपना नहीं है। यहां तो सभी जीव पथिक हैं जो बराबर आते-जाते रहते हैं। इसलिए अपने चित्त को सबसे हटाकर रखना चाहिए। जहां अनुकूलता होती है वहां मन में राग बनता है। यह राग ही जीव को रुलाता है। इसलिए वैराग्य-साधना द्वारा मन के राग को काटते रहना चाहिए।

इसी बोच सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जी उसी तरफ से निकलकर शौच जा रहे थे। उन्होंने देखा कि अभिलाष दास साथ के सत को समझा रहे हैं। शौच क्रिया से निवृत्त होकर जब वे सतों के बीच गये तो उन्होंने कहा—अभिलाष दास जी की सेवा में वह ब्रह्मचारी रहता था। उनके कपड़े धोता था। उनको अंग्रेजी पढ़ाता था। फिर भी उसके चले जाने से उनको कष्ट नहीं है। वे उसकी कोई चर्चा ही नहीं करते हैं। लेकिन यह साधु तो मानो इनका लड़का मर गया हो, इतना शोक से पीड़ित हैं।अभिलाष दास को तो उनको समझाने मं बड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

*　　　　*　　　　*

22 मार्च, 1982 की बात है। गुरुदेव अभिलाष साहेब जी उस समय कुछ संतों को साथ लेकर उड़ीसा के कार्यक्रमों में थे। आपके आश्रम कबीर संस्थान इलाहाबाद में अन्य संतगण थे। उन्हीं में से एक होनहार साधक संत श्री महेन्द्र साहेब को कुछ दिन पहले विद्युत करेंट लग गया था। इसलिए उनका स्वास्थ्य ढीला चल रहा था। वे ज्यादा अस्वस्थ हो गये। उन्हें इलाहाबाद के सरकारी हास्पिटल में भरती कराया गया। परन्तु उनकी हालत बिगड़ती गयी और उनका शरीर छूट गया। उस समय वे लगभग 30 वर्ष के थे।

इस घटना के सम्बन्ध में आपके पास पत्र द्वारा संदेश गया। इस दुखद घटना को सुनकर कुछ साधकों की आंखों से आसू निकलने लगे तथा कुछ साधक यूं ही गमगीन होकर दुखित थे। कितु गुरुदेव के मन में इस घटना को सुनने के बाद भी न कोई पीड़ा थी और न कोई बेचैनी। आप उसी भाव से सबको समझाने लगे कि देह की अंतिम गति ही है वियोग हो जाना। संसार का स्वभाव ही है परिवर्तन। फिर दुख किस बात का! सत-गुरुजनो का ज्ञान और उपदेश अन्ततः इसी समय के लिए है। सब लोग अपने-अपने मन में वैराग्य भाव दृढ़ करो और अपने अंतिम दिन की तैयारी करो। यह तो एक घटना है जो अकाट्य सत्य है और तथ्य भी। सद्गुरु कबीर ने कहा है—

जो ऊगै सो आथवै, फूलै सो कुम्हिलाय।
जो चूनै सो ढहि परै, जन्मे सो मरि जाय॥

47.

दिल में जो दिल बनके धड़के

सन् 1972 मे पहली बार गुरुदेव जी का गुजरात मे पदार्पण हुआ। उस समय आप लगभग छह महीने वहा रहे। बड़ौदा जिला मे एक गाव है तादलजा वहा भी आपका जाना हुआ। जहा आप ठहरे थे उसी घर म एक अठारह वर्षीय नवयुवक था जिसका नाम था सुरेश भाई। वह आपके पास आया। सुरेश भाई को आपके पास बैठने और बात करने मे अच्छा लगता था। वह उस समय पढ़ता था। उसने गुरुदेव जी से कहा—साहेब जी, आपको एक गीत सुनाऊ?

आपने कहा—सुनाओ।

सुरेश भाई ने गाया—

ज़िंदगी कैसी है पहेली हाय, कभी तो हंसाये कभी ये रुलाये॥ टेक॥
तो भी देखो मन नहि जागे, पीछे-पीछे सपनों के भागे।
एक दिन सपनों का राही, चला जाय सपनों से आग कहां॥ 1॥
जिन्होंने सजाये यहा मेले, सुख-दुख संग-संग झेले।
वही चुनकर खामोशी, यूं चले जाय कहां॥ 2॥
दिल में जो दिल बनके धड़के, गये तो न देखा जरा मुड़के।
रह गयी मन की डगर पे, यादों कि धुकों से उड़के॥ 3॥

सुरेश भाई ने इस गीत को बहुत अच्छे ढग से गाया जो गुरुदेव को भी अच्छा लगा। जब आप सन् 1978 ई0 मे दूसरी बार गुजरात गये तो सुरेश भाई के घर भी गये। तब तक उसकी शादी हो चुकी थी। गुरुदेव ने उनसे कहा—वह गीत सुनाओ जो पहले सुनाये थे। सुरेश भाई—साहेब, वह तो भूल गया हू। गुरुदेव ने कहा—अच्छा तो लो, मैं तुम्हे सुना देता हू। आप बिना गाये ही सहज ढग से सुना दिये। सुरेश भाई ने गाया था और उसे सुनकर ही गुरुदेव ने याद कर लिया था। आज भी गुरुदेव इस गीत को अपने प्रवचनो मे प्रसग के अनुसार प्राय: कहते रहते हैं। गुरुदेव ने कहा—यह फिल्म का गीत है लेकिन किसी वेद-शास्त्र, कुरान और गुरुवाणी से कम नही है।

48.

परंपरा के प्रति प्रेम भाव

गुरुदेव जी तो सभा में, जनसमूह में, हजारो के बीच में अपने विचार कहते हैं जिससे लोगों का सुधार होता है और उनका कल्याण होता है। किंतु आपकी पुस्तकें भक्तों के घरों में, दुकानों में, आफिसों में, खेतों में, बगीचों में और निर्जन एकान्त स्थलों में लोगों को अपने विचार देती रहती हैं। जहां कहीं भी जब इन पुस्तकों को लोग पढ़ते हैं उनको साधना-शांति के लिए मार्गदर्शन मिलता रहता है।

वर्ष 1975 के पूर्व बस्ती जिला के बभनान बाजार में भक्त श्री रामलाल जी के घर पर गुरुदेव जी का बीच-बीच में खूब रहना होता था। आपकी निजी पढ़नेवाली और बिकनेवाली पुस्तकों का संग्रह भी वहीं पर रहता था।

1972 की बात है। एक बार गुरुदेव उनके दुकानवाले घर मे अन्दर बैठे थे। दुकान मे एक पंडित जी आये जो बस्ती और बभनान के बीच एक गांव में रहते थे। वे एक स्कूल में अध्यापक थे। पंडित जी गुरुदेव जी से अभी तक मिले नहीं थे कितु आपकी पुस्तकों को पढ़कर आपके विचारों से खूब परिचित थे। आते ही उन्होंने रामलाल जी से कहा—सेठजी, अन्दर कोई और बैठा लगता है। रामलाल जी ने कहा कि इस समय साहेब जी यहां पधारे हुए हैं।

सुनते ही वे खुश हो गये, उन्होंने कहा—मैं तो उनको खोज ही रहा था, आज अच्छा संयोग हुआ।

रामलाल जी पंडित जी को गुरुदेव के पास लाये। उन्होंने बड़ी शालीनता से आपको नमस्कार किया और विनम्रतापूर्वक सामने फर्श पर बैठ गये। उन्होंने

अपना परिचय दिया और कहा कि मैं मार्क्सवाद के भौतिक द्वन्द्ववाद का कट्टर पक्षपाती हूं। मैं आपकी वाणियों को पढ़कर आपकी शालीनता, आपकी विनम्रता से बहुत खुश हूं। आपने गोस्वामी तुलसीदास जी को 'गोस्वामी जी' लिखा है, 'तुलसीदास' नहीं। गोस्वामी जी के बहुत सारे विचार दकियानूसी हैं लेकिन फिर भी आपने उनको आदर देते हुए 'गोस्वामी जी' लिखा है। मैं आपके ऐसे विचारों से बहुत खुश हूं। एक लेखक को, एक विचारक को और किसी समाज के अगुआ को ऐसा ही होना चाहिए। इसके बाद फिर अपनी कुछ बातें कहने लगे।

पडित जी ने कहा—एक बार मैं अपने ड्राइंगरूम में बैठा था। मेरे सामने टेबल पर आपकी लिखी 'ब्रह्मचर्य जीवन' पुस्तक रखी थी। मेरे दो मार्क्सवादी मित्र आये। उन्होंने पुस्तक को देखते ही कहा—ब्रह्मचर्य जीवन! आप और धर्म की पुस्तक? यह धर्म की पुस्तक आपके पास कैसे रखी है? हटाइये इसे यहां से।

मैंने उनसे कहा—मेरा वश चले तो मैं भारत के हर स्कूल, कालज, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में इस पुस्तक को पाठ्य पुस्तक बना दूं और सबके लिए पढ़ना अनिवार्य कर दूं।

पंडित जी ने कहा, मेरी इतनी बात सुनकर मेरे दोनो मित्र हतप्रभ रह गये। उन्होंने सोचा भी नहीं था कि पंडित जी मार्क्सवाद के कट्टर पक्षपाती होते हुए भी अध्यात्म की इतनी गहराई में हैं और ऐसा साफ कह सकेंगे। इसके बाद पंडित जी गुरुदेव जी से समय-समय से अनेक बार मिलते रहे।

49.

ठडा तेल लगा दू!

1973 ई0 की बात है। गुरुदव उस समय शकर भक्त की कुटिया मोहम्मद नगर (बस्ती) मे विराजमान थे। वर्षा के दिन थे, आपके साथ छह-सात सत-ब्रह्मचारी थे। एक दिन शाम के समय एक ब्रह्मचारी किसी बात को लेकर एक दसरे साधक से उलझ गया और आश्रम के पास बगीचे मे थोड़ा तू-तू मैं-मैं होने लगो। वे जिस पर गुस्साये थे वे तो शात ही रहे लेकिन ब्रह्मचारी जी काफी लाल-पीले हो गये थे।

यह सारा दृश्य गुरुदव जी ऊपर से दख रहे थे। जब ब्रह्मचारी जी शान्त हुए तो गुरुदव जी ने उनको ऊपर बुलाया और अपने पास बैठाकर प्यार से कहा—बेटा, तुम्हारा सिर गरम हो गया होगा, थोड़ा ठडा तेल लगाकर मालिश कर दता हू।

गुरुदव का प्यार भरा वचन सुनते ही वे पानी-पानी हो गये, फिर उन्होने अपनी भूल महसूस की और निश्चय किया कि अब आज के बाद ऐसी गलती कभी नही करेगे।

50.

परमत वालों से भी समता का भाव

1973 के मई की बात है। गुरुदेव गुजरात बड़ौदा जिला में थे। वहीं पर आप संत समाज को छोड़कर कलकत्ता आये थे। आपके साथ उस समय ब्रह्मचारी नन्दकुमार जी थे।

रविवार के दिन गुरुदेव धर्मतल्ला के मैदान में प्रवचन करने गये। सत्संग समाप्त होने के बाद आप एक आर्यसमाज की सभा में चले गये। वहां पर भी गुरुदेव के काफी भक्त बैठे सुन रहे थे। वहां जो आर्यसमाजी प्रवक्ता बोल रहे थे वे अपनी सभा में किसी का आदर करना अपनी तौहीन समझते थे।

जैसे ही गुरुदेव जी वहां पहुंचे भक्त लोग आपको देखकर खड़े हो गये। लोगों को खड़े होते देखकर महाशय जी—'आं-आं-आं ये क्या?'—कहते हुए चौंक गये। उनके भावों से ऐसा लगा कि गुरुदेव का वहां जाना उन्हें अच्छा नहीं लगा।

कुछ दिनों के बाद इन्हीं विद्वान से राजनारायण सिह चौहान ने एक प्रश्न पूछ लिया कि सृष्टि स्वत: है कि ईश्वर ने बनायी है? उन्होंने कहा—भाई, मुझे कुछ दिन का समय दीजिए तो बताऊगा। सिंह जी ने कहा—ठीक है।

महाशय जी घर जाकर सांख्य दर्शन का खूब अध्ययन किये और कुछ दिनों के बाद उसी के आधार पर बताये लेकिन राजनारायण सिंह जी को संतोष नहीं हुआ। सिंह जी न गुरुदेव के बारे में बताया तो महाशय जी ने कहा—ठीक है, मैं उनसे मिलना चाहता हूं। दूसरे दिन राजनारायण सिंह जी के साथ महाशय जी श्री प्रेमप्रकाश जी के घर आये।

शाम का समय था। उस समय गर्मी होने के कारण गुरुदेव छत पर खाट पर विश्राम कर रहे थे। राजनारायण सिंह जी ने उनको पहले प्रेमप्रकाश जी के पुस्तकालय में गुरुदेव जी की पुस्तकें दिखायीं। गुरुदेव की बीजक टीका तथा अन्य बहुत सारी पुस्तके देखकर उनका मनोभाव काफी बदल गया। ऊपर गुरुदेव जी के पास गये। प्रणाम-अभिवादन के बाद वे बैठे। स्वयं कहने लगे कि सिंह जी ने मुझसे सृष्टि के बारे में प्रश्न किया तो मैंने कहा—मुझे समय दीजिए

तब मैं बताऊंगा तो सांख्य दर्शन पढ़कर उसके अनुसार मैंने बताया। लेकिन इनको संतोष नहीं हुआ। आपके पास आया हूं।

गुरुदेव ने कहा—ठीक है, जो बात करना हो कर लें। चाहे आप पूछें मैं जवाब दूं या मैं पूछूं आप बतायें।

वे महाशय जी यही चाहते ही थे—स्वयं प्रश्न करने लगे। गुरुदेव स्पष्ट जवाब देते जाते, वे जहां नर्वस होने लगते तो आप वहां शांत हो जाते। तब महाशय जी दूसरी बात पूछते, उसमें भी जब वे कटने लगते तब गुरुदेव जी उनको संभालते हुए दूसरी बातें कहने लगते।

प्रेम प्रकाश जी कहीं बाहर गये हुए थे। घर आने पर जब वे जाने कि साहेब जी के पास कोई आया है तो वे तुरन्त आपके पास ऊपर आ गये और बैठकर सुनने लगे।

महाशय जी के प्रश्नों का जब गुरुदेव उत्तर देते तो जब कहीं वेद-प्रमाण, ईश्वर या सृष्टि पर कोई बात आती तो वे परेशान होने लगते तो गुरुदेव जी शांत हो जाते। प्रेम जी चाहते थे कि उनको सीधा जवाब दिया जाये, लेकिन गुरुदेव जी ने उनको शांत करते हुए कहा—आप शांत रहें। जब ये स्वयं निरुत्तर हो रहे हैं तो उनको और परेशान न करें। कुछ समय बाद महाशय जी चलने लगे। चलते समय उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—महाराज जी, आज मैंने आपसे बहुत कुछ सीखा।

उनके चले जाने पर प्रेम जी ने कहा—साहेब, आप भी अद्भुत हैं। अरे, सीधी बात कह देनी चाहिए।

गुरुदेव जी—नहीं भाई, मैं काफी देर से उनको संभाल रहा हूं। अंतिम में जाते समय मैं उनको हताश कर दूं यह अच्छा नहीं है। श्री प्रेमप्रकाश जी—आपका आदर भाव, आपका समन्वय विलक्षण है।

51.

मा जैसी ममता

1973 ई0 की बात है। गुरुदव जी उन दिनो छत्तीसगढ़ मे थे। आपकी सेवा मे उस समय ब्रह्मचारी श्री राम प्रकाश जी लगे हुए थे। एक दिन राम प्रकाश जी को बुखार आ गया। बुखार इतना बढ़ गया कि वे बिस्तर पर पड़ गये और उनको अचेती आ गयी। गुरुदव जी को जैसे ही पता चला आप उनके पास गये, दखे तो पूरा शरीर तप रहा था। आप कपड़े की पट्टी बनाये और उसे भिगा-भिगाकर उनके मस्तक पर रखने लगे। काफी दर तक भोगी पट्टी लगाने के बाद

बुखार कुछ सामान्य हुआ लेकिन उनका मस्तक अभी काफी दद कर रहा था। गुरुदव खड़ाऊ पहने उकड़ू बैठे उनके मस्तक की मालिश करने लगे। राम प्रकाश जी को जब होश आया तो वे गुरुदव के हाथो को पकड़कर अलग कर दते और कहते—गुरुदव जी, आप क्या कर रहे हैं? हम आपकी सेवा करनी चाहिए, आप हमारी करे यह कैसे उचित हो सकता है?

गुरुदव जी ने प्यार से कहा—बेटा, इस समय तुम्हे तकलीफ है। तकलीफ मे गुरु और शिष्य की मर्यादा नही होती। गुरुदव जी उनका सिर दबाते रहे और कुछ दर मे राम पकाश जी को नीद आ गयी।

52.

परमात्मा कब मिलेगा?

एक बार गुरुदेव जी छत्तीसगढ़ मे बस्तर जिला के कोदागांव में निवास कर रहे थे। एक शाम प्रवचन करके आप जंगल की ओर चले गये। निर्जन, शांतस्थल देखकर एक झुरमुट में ध्यानस्थ होकर बैठ गये।

कुछ समय बाद एक नवयुवक आपको खोजते हुए पहुंचा। आहट पाकर गुरुदेव ने आंखें खोलीं। उस युवक ने बहुत दीनता एवं सजल नेत्रों से विरहपूर्वक पूछा—महाराज! परमात्मा कब मिलेगा?

आपने कहा—बेटा, परमात्मा के बिछुड़ने की तारीख तुम बता दो तो मिलने की तारीख मैं बता दूं। इतना सुनते ही वह बेचारा ठगमारा खड़ा रहा।

आपने उसे पास बैठाकर समझाया कि बेटा, परमात्मा बिछुड़ा ही नहीं है। फिर बाहर खोजने की क्या आवश्यकता। उसे तो जानना है और उसका बोध प्राप्त करना है। परमात्मस्वरूप तुम खुद हो। पहले सोचो परमात्मा को कौन खोज रहा है? खोजने वाला ही परमात्मा है। अपने को पहचानो। परमात्मा को बाहर न खोजकर अन्दर देखने की जरूरत है। सद्गुरु कबीर साहेब ने कहा है—

जेहि खोजत कल्पौ गया, घटहिं मांहि सो मूर।
बाढ़ी गर्भ गुमान ते, ताते परि गइ दूर॥

(बीजक, साखी 282)

ज्यों तिल मांही तेल है, ज्यों चकमक में आगि।
तेरा साईं तुझ ही में, जागि सके तो जागि॥

(साखी ग्रंथ)

53.

खोजी प्रवृत्ति

सन् 1974 की बात है। सद्गुरु श्री रामरहस साहेब कृत पचग्रन्थी की टीका गुरुदेव लिख चुके थे। काशी मे रहकर आप उसका प्रकाशन कार्य करवा रहे थे। पचग्रथी पारख सिद्धान्त का बहुसदर्भीय ग्रन्थ है, इसमे एक-एक विषय को बहुत विवरणपूर्वक बताया गया है। पचग्रन्थी मे श्री रामरहस साहेब ने एक जगह ओम शब्द का वर्णन किया है, जिसमे पाच मात्राए बतायी गयी हैं। उसी के अनुसार गुरुदेव जी ने उसकी टीका की है। एक दिन आप श्री हनुमान स्वामी के आश्रम मे उनके पास बैठे बाते कर रहे थे। एक विद्वान ने गुरुदेव से कहा कि ओम मे ढाई मात्रा ही होती है, श्री रामरहस साहेब ने पाच मात्रा कहकर गलत किया है। उनके ऐसा कहने से गुरुदेव इसकी खोज मे पड़ गये।

इस सबध मे सबसे पहले आप पडित रामतेज शास्त्रो के पास गये जो पुराणा के व्याख्याता थे। शास्त्रो जी ने कहा—महाराज, यह हमारा विषय नही है।यह तो पडित गोपीनाथ कविराज का विषय है, उनके पास आप जाइए। वहा से थोड़ी दूर पर ही गोपीनाथ जी का निवास था। गुरुदेव उनके पास पहुच गये।

अनेक भाषाओ के विद्वान महामहोपाध्याय पडित गोपीनाथ कविराज किसी भी विषय को लिखते थे तो उसे पूरा समर्पित होकर लिखते थे। पडित गोपीनाथ जी उस समय अस्सी वर्ष की उम्र के थ। वे अधिकतम लेटे रहते थे। पास मे उनके सक्रेटरी बैठे थे, गुरुदेव ने उनसे अपनी बात कही। सक्रेटरीने कहा—महाराज जी, पडित जी जो लिखे होगे उनको अब याद भी नही होगा कि यह विषय कहा है। आप इनकी अमुक पुस्तक ले लीजिए उसमे मिल जायेगा।

गुरुदेव ने तुरन्त वह पुस्तक खरीद ली जिसमे वह विषय था कि ओम मे पाच मात्रा कौन-कौन है। उसका प्रमाण आपने अपनी पचग्रन्थी टीका की भूमिका मे उद्धत किया है।

54.

पांडित्य काम नहीं देता

यह घटना सन् 1975 कबीर आश्रम जियनपुर अयोध्या की है। इस घटना के कुछ दिन पहले जियनपुर कबीर आश्रम में सद्गुरु श्री विशाल साहेब पधारे हुए थे। श्री अभिलाष साहेब जी उस समय अयोध्या आश्रम में ही थे। एक शास्त्री जी आये जो तरबगंज-गोण्डा के थे। वे कई शास्त्रों के प्रकाण्ड पंडित थे। उनके

साथ एक पाठक जी भी थे जो फैजाबाद डिग्री कालेज के प्रोफेसर थे। पाठक जी के पिता भी थे जो विद्वान पुरुष थे। पाठक जी और उनके पिता जी आपसे काफी परिचित थे। पाठक जी ने शास्त्री जी से पहले ही बात कर लिया था कि चलो, आज आप अभिलाष साहेब जी से शास्त्रार्थ करो।

शास्त्री जी ने कहा—बिलकुल ठीक आपने कहा। मुझे तो कई शास्त्रों का गहरा अध्ययन है। यदि महाराज जी सांख्य दर्शन पर कहेंगे तो मैं न्याय दर्शन ले लूंगा। और यदि वे न्याय पर कुछ कहना शुरू करेंगे तो मैं सांख्य ले लूंगा। इस प्रकार आपस में काफी अटकल लगा लिये कि किस प्रकार पूज्य श्री को हराना है।

तीनो लोग आश्रम में आये। श्री अभिलाष साहेब जी आश्रम में थे ही। उन्होंने तीनो का स्वागत कराया। सब लोग बैठे। उनकी भावनाओं से और बातों से आपको पता चला कि ये लोग क्यों आये हैं। आप ने कहा—शास्त्री जी, आप प्रश्न करें मैं उत्तर दूं या मैं प्रश्न करूं आप उत्तर दें।

शास्त्री जी बेचारे चुप रहे। आपने स्वयं अपनी बातें कहना शुरू किया। जिसका विषय था—आत्मज्ञान, सद्‌गुणों के धारण से मनुष्य की श्रेष्ठता, कर्मफल भोग, कोई ऐसा ईश्वर नहीं जो ग्रंथ रचना करता हो, सारे ग्रथ मनुष्यकृत हैं, वेद अपौरुषेय नहीं हैं आदि।

आपने जब इन विषयों पर अपने बोधगम्य एवं तार्किक विचार थोड़ी देर कहा तो शास्त्री जी अवाक् रह गये। वे बिना कुछ उत्तर दिये ही मौन होकर सुनते रहे। तब पाठक जी ने शास्त्री जी से कहा—शास्त्री जी, अब दीजिए न उत्तर। शास्त्री जी स्वीकारात्मक भावों में शांत रहकर सुनते रहे। यह उनकी गंभीरता ही थी जो आग्रहरहित होकर सत्य को स्वीकारे।

पाठक जी ने कहा—शास्त्री जी, आप तो शास्त्रों के विद्वान हैं। कोई बात करनी हो तो आप शास्त्र खोलकर देखेंगे तब उत्तर देंगे और साहेब जी को तो सब कण्ठ है। उन्होने शास्त्रों की बातों को आत्मसात कर लिया है। पाठक जी ने चलते समय कहा—शास्त्री जी तो साहेब जी से हार गये।

जब श्री साहेब जी ने यह सुना तो उन्होंने पाठक जी को रोका और कहा कि ऐसा न कहें। शास्त्री जी हारे नहीं, सत्य को स्वीकारे हैं। जो सत्य को स्वीकारता है, वह हारता नहीं है।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी, जो जिज्ञासु पात्र होते हैं उनके लिए कल्याण का सदुपदेश करते हैं। जो किसी अंधविश्वास, दुष्कर्म या चमत्कार आदि में डूबे हैं उनको ऐसे भटकाव से निकालने के लिए विवेक-मशाल का

प्रकाश देते हैं। जो मत-पंथों के आग्रह में पड़कर कुतर्क करते हैं तो उनको तर्कयुक्त उत्तर देकर चुप करा देते हैं किंतु यदि वे बातों से कटकर लज्जित होने लगते हैं तो उनको उन्ही के अन्य सद्गुणों का प्रश्रय देकर उन्हे प्रोत्साहित करते हैं। उनके जो भटकाव के कारण हैं उन्हे त्यागने के लिए साहस देते हैं। आप किसी के दिल को कभी दुखाते नहीं है।

55.

विश्वास से विश्वास बढ़ता है

सन्1975-76 की बात है। सद्गुरु श्री विशाल साहेब लखनऊ के पास किसी गाव मे विराजमान थे। श्री अभिलाष साहेब जी अपने कुछ साधको को साथ लेकर विशाल देव के दर्शन करने जा रहे थे। सद्गुरु विशाल देव को समर्पित करने के लिए आपको कुछ फल लेना था। लखनऊ मे एक फल की दुकान पर आप गये। दुकानदार खराब फल न दे दे, ऐसा सोचकर साथ के एक साधक ने कहा—भैया, अच्छा फल देना। आपने कहा—ऐसा क्यो कहते हो? वे स्वय अच्छा देगे।

गुरुदेव जी की इतनी बात सुनते ही दुकानदार बहुत प्रभावित हुआ और स्वय छाट-छाट कर अच्छे-अच्छे फल निकालकर तौल दिया।

56.

आत्म-सुधार ही समाज-सुधार है

V~|Z-76 की बात होगी। गुरुदेव जी का कार्यक्रम छत्तीसगढ़ में परसुली नाम के गांव में चल रहा था। एक दिन शाम का सत्संग-प्रवचन समाप्त हो चुका था। अभी आप प्रवचन स्थल में ही बैठे थे। लोग आपसे मिल-जुल रहे थे। लेकिन काफी भीड़ छंट चुकी थी। गुरुदेव वहां से उठने वाले ही थे कि आपके पास तीन नवयुवक आये। वे नमस्कार करते हुए खड़े हो गये। उनमें से एक ने कहा—महाराज जी, हम समाज-सुधार करना चाहते हैं। इसका रास्ता बताइए।

गुरुदेव ने कहा—आप लोगों ने अपना सुधार किया है?

तीनो मौन रहे।

गुरुदेव ने पूछा—कोई नशा लेते हो?

तीनो ने स्वीकार किया कि हम बीड़ी पीते हैं।

गुरुदेव ने कहा—समाज नाम की कोई चीज नही है। एक-एक व्यक्ति से ही समाज बनता है और उसी समाज के तुम एक अग हो इसलिए पहले अपना सुधार करो, तब पीछे दूसरे के सुधार के विषय में सोचो। अपना सुधार कर लिये तो मानो समाज के एक अग का सुधार हो गया।

57.

आपको कोई चिन्ता होती है?

गुरुदेव एक बार समाज सहित बस की यात्रा कर रहे थे। लम्बी यात्रा थी, एक पैंसठ वर्षीय सज्जन बगल मे बैठे थे। आपका शान्त मुखमडल और प्रसन्न चेहरा काफी देर से वे देख रहे थे। अपने मन की जिज्ञासा को वे रोक न सके और गुरुदेव जी से पूछ ही लिए—महाराज, आपका कोई चिन्ता होती है?

गुरुदेव ने कहा—मुझे कोई चिन्ता नही होती है।

उन्होने कहा—थोड़ी-बहुत चिन्ता तो जरूर होती होगी?

गुरुदेव जी—चिन्ता की कोई बात ही नही, अब चिन्ता के सारे कारण समाप्त हो गये।

उन्होने कहा—आश्चर्य है।

गुरुदेव जी—इसमे कुछ आश्चर्य नही है। जो भी यह काम करेगा वही चिन्तामुक्त हो जायेगा। इस छूटने वाले परिवर्तनशील ससार मे यदि मोह करेगे तो चिन्ता से बच नही सकते। किन्तु जो मानता है कि यहा मेरा कुछ है ही नही वह चिन्ता क्यो करेगा। गुरुदेव की ऐसी बाते सुनकर वह व्यक्ति अद्‌भुत आनन्द का अनुभव कर रहा था।

58.

इस नकल का क्या नाम है?

यह घटना 1977 की है। गुरुदेव अपने बड़े गुरुभाई श्रद्धेय संत श्री निष्पक्ष साहेब की छावनी प्रयाग कुंभ मेले में थे। उन दिनों ठंड खूब जोरों से पड़ रही थी। एक दिन दोपहर भोजन के बाद आप गेट के पास खड़े कुछ संतों से बातें कर रहे थे। उसी समय सड़क से एक महिला सामने से होकर निकली। वह विचारवान एवं अत्यन्त खरे स्वभाव की थी। वह किसी संत के विचारों से पहले

से प्रभावित थी। गुरुदेव के सामने आते ही उसने आपसे पूछ लिया—साहेब, इस नकल का क्या नाम है?

गुरुदेव ने उससे कहा—अभिलाष।

आपका नाम सुनते ही वह अत्यन्त हर्षित हो उठी। उसने कहा—अरे, अभिलाष पर तो मेरा लड़का मरता है।

गुरुदेव ने कहा—कहां है तुम्हारा लड़का? उसने कहा—इसी मेले में कहीं घूमने गया है।

बाद में न वह महिला मिली और न उसका लड़का ही। लेकिन उस देवी की इस बात ने कि इस नकल का क्या नाम है? गुरुदेव को अत्यन्त प्रभावित किया।

आपने विचार किया कि अनपढ़ लोग भी ज्ञान-वैराग्य की बात सूत्ररूप में कह देते हैं। यह शरीर नकल ही तो है। असलो चीज तो आत्मा है। उसके होने से ही इस नकल (शरीर) की सत्ता है। जिस दिन आत्मा निकल जाता है उस दिन इसे कोई देखना तक नहीं चाहता। सद्‌गुरु कबीर का अमर वाक्य है—
''ढोला फूटा बोला गया, कोई न झांके द्वार॥'' (बीजक, साखी 293)

59.

हम मनुस्मृति फूंकना चाहते हैं

सन् 1977 की बात है। गोरखपुर मे गुरुदव जी का प्रवचन कार्यक्रम चल रहा था। गोरखपुर पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्य केन्द है। इसके पूर्व सन् 1971 मे ग्यारह दिवसीय कार्यक्रम गुरुदव जी का वहा हो चुका था। इसलिए आपके विचारा की गूज पहले से वहा चल रही थी तथा आपको सुनने के लिए बहुत-से लोग उत्सुक थे। इस बार एक दिन का कार्यक्रम रेलवे ने ही बैडमिटन हाल मे करवाया था।

साय प्रवचन के बाद गुरुदव प्रवचन स्थल मे ही बैठे थे, लोग मिल-जुल रहे थे। जब बहुत लोग चले गये तो कुछ तार्किक और विचारक लोग आपसे मिलने आये। उन्होने कहा—महाराज आप जो कहते हैं वही सच है। यही बात हम लोग कहेगे तो मारे जायेगे, लेकिन आपके कहने का ढग इतना मधुर और मीठा होता है कि खडन होते हुए भी वह आकर्षक लगता है। जिसका आप खडन करते हैं उसको भी आदर दते हुए कहते हैं जैसे तुलसीदास न कहकर 'गोस्वामी तुलसीदास जी' 'मा सीता खेत मे पायी गयी' आदि।

महाराज जी, हम लोग कल एक चौराहे पर मनुस्मति को फूकना चाहते हैं, क्योकि इसमे समाज मे ऊच-नीच, छुआछूत, जातिवाद, वर्णवाद आदि जैसी गहरी खाई तैयार की गयी है। इसके लिए आपकी क्या राय है?

गुरुदव ने कहा—ठीक है, आप फूकना चाहते हैं तो फूक दीजिए, अधिक से अधिक तादात मे मगाकर फूकिये। इससे प्रकाशक का लाभ हो जायेगा और वह मनुस्मृति का पुन: नया सस्करण छापेगा। आपका नाम और चित्र अखबारो मे छप जायेगा, इसके अलावा तो कोई लाभ नही होगा। किसी का दिल दुखाकर आप उनका सुधार कभी नही कर सकते। उसके सुधार के लिए प्रेम करे, लेकिन उसके गलत पक्ष का त्याग करे। प्रतिक्रिया कभी हितकारी नही होती। एक पक्ष है छुआछूत जैसी गर्हित बाते लिखना और दूसरा पक्ष है इन लिखने वालो को गाली दना, ये दोनो गलत हैं। इन सब बातो को भुलाकर आज मानवता और प्रेम की जरूरत है। सहिष्णुतापूर्वक प्रेम और हमदर्दी से ही किसी के दिल को जीता जा सकता है।

60.

कबीर संगति साधु की, कटै कोटि अपराध

यह घटना वर्ष 1977 की है। गुरुदेव कबीर आश्रम जियनपुर अयोध्या में थे। वहां एक दिन आप सभा में प्रवचन कर रहे थे। एक युवक जो गोडा जिला का रहने वाला था, अयोध्या होकर फैजाबाद की ओर जा रहा था। उसने गुरुदेव जी का नाम पहले से सुन रखा था। गुरुदेव जी की याद आने पर वह अयोध्या आश्रम चला आया और प्रवचन सुनने लगा। प्रवचन सुनकर वह फैजाबाद न जाकर घर लौट गया और बम्बई अपने भाई को फोन किया कि भैया, अब उस काम की जरूरत नही है, जो हम करने जा रहे थे।

वस्तुत: पट्टीदारो से कुछ जमीन को लेकर उन लोगो मे विवाद चल रहा था और विवाद इतना बढ़ गया कि उसका भाई जो बम्बई मे रहता था, बदमाशो से मिलकर पट्टीदार के पूरे परिवार की हत्या की योजना बना लिया था तथा बदमाशो को पैसा भी दे दिया गया था।

वह नवजवान जब गुरुदेव का थोड़ी देर सत्संग सुना तो उसके दिमाग में पूरा परिवर्तन आ गया। वह घर आया और अपने भाई लोगों को बबई फोन किया कि हम लोग बहुत अनर्थ की ओर जा रहे हैं। आज मैंने संत श्री अभिलाष साहेब जी का प्रवचन सुना, उससे मेरे विचार अब बदल गये हैं। उसने फोन पर

ही हत्या के सारे दुष्परिणाम की बातें कहीं। उसने यह भी बताया कि इससे बच जाने में शांति है। सुखी जीवन जीना है तो सहन, धैर्य, गम, संतोष से ही जीया जा सकता है। सारी असलीयत उसने कह दी।

उसके भाई लोगों के मन में भी परिवर्तन आ गया। उसने बदमाशों से कह दिया कि इस काम की जरूरत नही। इसके बाद यह सम्भावित हत्याकाण्ड रुक गया। गुरुदव को कुछ पता नहीं कि मेरे विचारों को सुनकर इन लोगों में क्या परिवर्तन हो रहा है।

कुछ महीने बाद वह युवक गुरुदेव के पास आया। चरण स्पर्श करने के बाद वह बैठ गया। गुरुदेव ने कुशल मंगल पूछा। उसने कहा—महाराज! आपने हम लोगों का जीवन बचा लिया।

गुरुदेव ने कहा—कैसे?

युवक ने बताया—महाराज, आप न मिले होते तो पता नहीं आज हम कहां जेल में सड़ रहे होते। तब उसने अपनी सारी बातें गुरुदेव जी के सामने कह सुनाई।

❸

संत-भक्तों का सान्निध्य

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेब : जीवन दर्शन

1.

सद्गुरु श्री विशाल देव का सान्निध्य

श्री अभिलाष साहेब जी समर्पित भाव से गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी की शरण मे रहते रहे। उन्ही से आपकी दीक्षा एव भेष हुआ और उन्ही की आज्ञा, सेवा एव उपासना मे आप तत्पर रहे लेकिन आपके जीवन मे सद्गुरु श्री विशाल साहेब की जो छाप पड़ी है उसे झुठलाया नही जा सकता। आपकी वाणी एव विचारो मे सद्गुरु श्री विशाल साहेब के विचार शरीर मे प्राण की भाति समाये हैं।

सद्गुरु श्री विशाल साहेब की उच्चतम साधना, उत्कट वैराग्य, निस्पृहता, निश्चितता, अनासक्ति, निर्विवादिता, अतर्मुखता, व्यवहार की सजगता, एकान्तप्रियता, आत्मपरायणता आदि का आपके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वैसे तो सद्गुरु श्री विशाल साहेब क विचारो से आपका परिचय 1950-ZV मे घर पर रहते-रहते उनकी रचना 'भवयान' नामक ग्रथ से हो गया था। नवम्बर, 1953 मे जब आपने सदा के लिए गृहत्याग कर दिया तो तीन दिन के बाद कार्तिक शुक्ल अष्टमी को गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी द्वारा आपका साधुवेष हुआ। साधुवेष होने के एक दिन बाद आप बुरहानपुर की यात्रा मे निकले।

बुरहानपुर पहचने के पूर्व आप अपने बड गुरुभाई श्री आज्ञा साहेब के साथ सद्गुरु श्री विशाल साहेब के दर्शन करने बाराबकी गये। उस समय गुरुदेव श्री विशाल साहेब बाराबकी जिला के तरावा गाव मे विराजमान थे। यह आपका श्री विशाल साहेब का प्रथम दर्शन था। उस समय आप इक्कीस वर्ष के तरुण थे और सद्गुरु श्री विशाल साहेब अड़सठ वर्ष के प्रौढ़ सत थे। विशाल देव उस समय मुक्तिद्वार के पद समय-समय से रचते थे।

इसके दो महीने बाद 1954 की जनवरी मे आप दुबारा अपने गुरुदेव के साथ श्री विशाल साहेब के दर्शन करने गये। उस समय वे सीतापुर जिला के दानपुरवा ग्राम मे विराजमान थे। अबकी बार आपको कई दिनो तक विशालदेव के दर्शन एव उनकी वाणी सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसके तत्काल बाद दानपुरवा से ही मार्च महीने मे सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब आपके गुरुआश्रम बड़हरा पधारे थे।

बड़हरा आश्रम मे करीब सवा महीने तक सत समाज सहित सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब विराजमान रहे। इस पूरे सवा महीने मे वहा सतो-भक्तो की खूब भीड़ बनी रही। सद्‌गुरु श्री विशाल देव जी के दर्शन और पूज्य सत श्री प्रेम साहेब तथा अन्य सतो के सत्सग का खूब लाभ प्राप्त हुआ। परन्तु सवा महीने श्री कबीर मदिर बड़हरा मे गुरुवर श्री विशाल साहेब जी के विराजमान रहने पर भी आप न उनके निकट बैठ सके और न कुछ वार्ता ही कर सके। क्योकि सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जी का आदेश था कि सभी सत एव भक्त श्री विशाल साहेब जी के केवल शाम को एक बार बदगी एव दर्शन कर ले और चार मिनट मे वहा से चले आव। वहा कोई भीड़ न लगावे। श्री विशाल देव जनरहित एकान्त के प्रेमी थे। अतएव आप डर एव सकोचवश उस समय उनके पास न जा सके।

1955 मे आप बाराबकी जिला के लोहजर ग्राम मे श्री विशाल साहेब के दर्शन किये। इस बार आप उनके निकट कई बार बैठे परन्तु विशेष बातचीत न कर सके।

इसके बाद आप 1958 मे लखनऊ जिला के गोदौली ग्राम मे श्री विशाल साहेब के दर्शनार्थ गये। तब तक आपकी प्रथम पुस्तक 'वैराग्य सजीवनी' छपकर श्री विशाल साहेब जी तक पहुच चुकी थी और वे आपके विचारो से परिचित हो चुके थे। लेकिन तब तक शायद श्री विशाल देव को ख्याल न था कि 'अभिलाष दास' कौन है।

गुरुदेव जी रात मे गोदौली पहुचे, लालटेन के प्रकाश मे सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब जी के दर्शन किये। दूसरे दिन करीब तीन बजे शाम को पुनः उनके पास आप गये। अबकी बार श्री विशाल साहेब जी ने गम्भीरता से अपनी दृष्टि आप पर डाली। सद्‌गुरु विशाल साहेब और श्री अभिलाष साहेब दोनो के वार्तालाप की शुरुआत के यही क्षण हैं। इसके बाद तो जब भी श्री विशाल देव के दर्शन करने आप जाते बिलकुल अभिन्न हो जाते। उठते-बैठते, खाते-पीते, चलते-फिरते आप उनके साथ बने रहते। आप उनको पखा झलते और सत्सग-वार्ता भी करते रहते। सब समय दोनो की वार्ता चलती रहती।

सद्गुरु विशाल देव निर्णय के बड़े प्रेमी थे। वे सच्चे जिज्ञासुओ से बड़ा प्रेम करते थे। सच्चे जिज्ञासु अगर उनको मिल जाते तो वे उनसे खुलकर निर्णय चर्चा करते। श्री विशाल देव के शरीर मे बहुत गर्मी रहा करती थी। इसलिए वे ज्यादा देर तक बोल नही पाते थे। इसलिए आपसे ही बोलने के लिए कहा करते थे। बीच-बीच मे आवश्यकता पड़ने पर वे विषय की पुष्टि कर दिया करते थे।

अभिलाष साहेब जी वर्ष मे करीब दो बार श्री विशाल साहेब जी के दर्शन करने जाया करते थे। जब भी आप उनके पास जाते तुरन्त उनके अग-सग हो जाते। सद्गुरु विशाल देव और अभिलाष साहेब के बीच ज्ञान-चर्चा कुछ इस प्रकार हुआ करती थी। आप जब कुछ प्रश्न करते तो गुरुवर श्री विशाल साहेब आपको ही इसका उत्तर देने के लिए कहते। वे कहते कि मेरे शरीर मे गर्मी रहती है इसलिए मैं ज्यादा देर तक बोल नही सकता। तुम खुलकर बोलो। जब जहा मुझे लगेगा वहा मैं बताऊगा।

इस प्रकार आप जब श्री विशाल देव का मन्तव्य जाने तो आप भी निर्भय हो गये और खुलकर उनके समक्ष अपने विचार कहने लगे। उसमे समय-समय से श्री विशाल देव कुछ सुधार कर दिया करते। कभी-कभी श्री विशाल देव स्वय आपसे प्रश्न कर लिया करते। जिसका निर्णय-विचार आप विस्तार से कहा करते। श्री विशाल देव के समक्ष किये गये आपके निर्णय-विचार लेख रूप मे आपके ग्रथ 'कल्याण पथ' मे छपे हुए हैं।

सद्गुरु श्री विशाल साहेब और श्री अभिलाष साहेब—इन दोनो का सम्मिलन बड़ा ही अद्भुत था। श्री विशाल देव के समक्ष जब भी जाते आप बालवत सरलता से उनसे बाते करते थे। आप श्री विशाल देव से इतना घुलमिल गये थे कि उनके सामने अपनी गभीरता नही रख पाते थे।

आपके कार्यक्रमो की व्यस्तता को देखकर कभी-कभी श्री विशाल साहेब आपसे विनोद करते और कहते—तुम्हे तो बड़ा काम है। तुम सब जगह जाकर प्रचार कर डालोगे।

श्री विशाल देव जीवनपर्यंत निश्चितता और निवृत्तिपराणयता के अभ्यासी रहे हैं। इसलिए वे आपको भी अधिक से अधिक निश्चित और निष्फिक्र देखना चाहते थे। इसका मतलब यह नही कि वे आपके कार्यक्रमो को बुरा मानते थे। वे आपके कार्यक्रमो से प्रसन्न रहते थे।

कभी-कभी आपके वैराग्य भाव, स्वरूप भाव की पुष्टि के लिए श्री विशाल देव आपसे पूछ लेते—तुम्हे कोई हानि तो नही लगती है?

उनका यह वाक्य बहुत गभीर अर्थ समेटे हुए रहता था क्योकि सब समय मनुष्य धन-हानि, पुत्र-हानि, मान-हानि, स्वार्थ-हानि, जीवन-हानि आदि की कल्पनाओ से पीड़ित रहता है। मनुष्य की इच्छाए अपार हैं। वे सब तो पूरी होती नही। अत: उसे सब समय चारो तरफ से हानि का अनुभव होता है। जिसके हृदय मे विवेक का पूर्ण उदय हो जाता है उसके हृदय से हानि की कल्पना समाप्त हो जाती है।

श्री अभिलाष साहेब उत्तर देते—गुरुदेव, हानि तो अब बीत गयी। आपका बोध मिला तो अब हानि कहा! गुरुदेव, अब आपकी कृपा से मैं सर्वथा हानिरहित हो गया हू।

सद्गुरु विशाल देव और अभिलाष साहेब का सन् 1953 से 1976 तक 23 वर्षों तक गुरु-शिष्यवत सम्बन्ध रहा। 9 फरवरी सन् 1977 को प्रात:काल धर्म के उस अनुशास्ता श्री विशाल देव की इस असार ससार से विदेह-मुक्ति हुई।

सद्गुरु श्री विशाल देव का सस्मरण गुरुदेव अभिलाष साहेब के ही शब्दो मे 'मोक्षशास्त्र' नामक ग्रथ के प्रथम अध्याय के सत्ताइसवे सदर्भ मे विस्तृत रूप मे देखा जा सकता है।

2.

एसा हमे भी निश्चय है

एक बार सद्गुरु विशाल दव से किसी साधक ने पूछा—गुरुदव, हम भक्तो मे जाते हैं तो वहा उनके द्वारा पूजा-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, श्रद्धा-आदर भाव तथा अन्य चीजे भी मिलती हैं तो इससे अह जगता है। यह अह जीव का बधन एव पतन का कारण है तो इससे कैसे बचे? इसके समाधान मे विशाल दव ने उनको कुछ समझाया।

दूसरे समय मे उन्होने यही बात श्री अभिलाष साहेब से कहा कि ऐसा वे पूछ रहे थे।

श्री अभिलाष साहेब जी ने कहा कि गुरुदव फिर उससे कैसे बचे? विशाल दव ने कहा—समझ मे नही आता।

इतना शब्द सुनते ही श्री अभिलाष साहेब जी को हसी आ गयी। विशाल दव तो पूर्ण पुरुष थे, उनके लिए यह छोटी-सी बात समझ मे न आना सभव ही नही था, वे आपसे कुछ कहलाना चाहते थे। उन्हाने कहा—तो पूजा-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान आदि से उत्पन्न अहभाव को कैसे मिटाया जाये?

विशाल दव के आग्रह पर अभिलाष साहेब जी इस विषय पर कुछ दर बोले। आपने कहा—गुरुदव, अध्यात्म पथ मे चलने वाला कोई भी साधक हो, ससार के लोग स्वाभाविक उसको ऊचा मानते हैं। क्योकि वे समझते हैं कि भोग और सासारिक जीवन से त्याग और वैराग्यमय जीवन श्रेष्ठ होता है। इसलिए वे अपने मन की शुद्धि के लिए सतो का आदर-सत्कार करते हैं। लेकिन साधक को यह समझना चाहिए कि हम श्रेष्ठ किसलिए हैं? हम तो अनादि काल से इस भवाटवी मे जन्म ले-लेकर द्‌ख ही पात रहे हैं। इस द्‌ख को मिटाने के लिए हम साधना कर रहे हैं। मन की शान्ति के लिए वैराग्य की औषधि ले रहे हैं। मानसिक विकारो के शमन के लिए भक्ति, क्षमा, दया, सयम, शील आदि का सेवन कर रहे हैं। गुरुदव ने शरीर रक्षार्थ साधु का वेष द दिया है फिर हम बड़े किसलिए? यह तो अपनी गर्ज से हम कर रहे हैं। द्‌सरे लोग अपने चित्त की शुद्धि के लिए हमे आदर-सम्मान दते हैं। फिर इन आदर-सम्मान दने वालो की भी क्या स्थिरता? जो आज सिर दने को तैयार है वही कल मन बदलने पर सिर लेने को तैयार हो जायेगा। मान-सम्मान पाने वाला और दने वाला दोनो एक दिन मर जाते हैं फिर इस क्षणिक एव झूठी प्रतिष्ठा का क्या अहकार? अतत: भक्ति, वैराग्य और बोध भाव मे दृढ़ रहना ही सफलता है। इतना बोलकर आप चुप हो गये।

द्‌सरे दिन श्री विशाल दव के पास श्रद्धेय श्री सतशरण साहेब मिलने आये उनसे चर्चा करते हुए श्री विशाल दव ने कहा—एक साधक ने पूछा था कि भक्तो मे जाते हैं तो वहा मान-सम्मान मिलता है जिससे मन मे अह उत्पन्न होता है और यह अह ही सारे द्‌खो का कारण है तो इससे कैसे बचे? तो इसके समाधान मे अभिलाष दास जी ने जो बताया है बहुत अच्छा था। ऐसा ही हमे भी निश्चय है। यह सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब की निर्मानता थी। वे तो पूर्ण पुरुष थे।

3.

पूज्य श्री प्रेम साहेब जी के साथ

बाल हृदय, आशुकवि, कुशल प्रवक्ता रहनीसम्पन्न परम श्रद्धेय सत श्री प्रेम साहेब जी, सद्‌गुरु विशाल साहेब जी के श्रेष्ठतम शिष्यो मे से थे। आप अपनी किशोरावस्था मे वैराग्य जीवन मे सद्‌गुरु श्री विशाल देव की शरण मे आये और सदा के लिए समर्पित हो गये। पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी और पूज्य श्री प्रेम

साहेब जी के अनेक मधुर सस्मरण हैं। आप दोनो सत सदैव एक दूसरे को आदर और पूज्य की दृष्टि से देखते थे।

सद्गुरु श्री विशाल देव और पूज्य श्री प्रेम साहेब जी के प्रति श्री अभिलाष साहब जी की अगाध श्रद्धा थी। इसी प्रकार आपके प्रति उन दोनो का महापुरुषो का वात्सल्य एव स्नेह भाव भी अद्भुत था। श्री विशाल देव और श्री प्रेम साहेब जी आपको अधिक से अधिक अपने पास रखना चाहते थे। रुकने के लिए उनके आग्रह करने पर आप यही कहते—साहेब जी, कार्यक्रमो की व्यस्तता होने से समय कम मिल पाता है।

कोई भी लेखक दिवगत सतो का तो अपने साहित्य मे उद्धरण दे सकता है। लेकिन अपने समकालीन और साथ मे रहने वाले सतो को स्थान देना कठिन होता है। गुरुदेव अभिलाष साहेब जी ने सारी सकुचितता मिटाकर यह काम किया। आपने अपने अनेक ग्रन्थो मे श्री प्रेम साहेब जी से सम्मतिया लिखवाई हैं। उपयुक्त न होने पर आपने उसे काटा भी, लेकिन श्री साहेब जी इतने निर्मान पुरुष थे कि ऐसी स्थिति मे भी उनको कभी मान-हानि का बोध नही हुआ। सदगुरु विशाल देव की वाणियो की आपने छककर टीका व्याख्या लिखी थी जो विश्वेश्वर प्रेस, काशी से प्रकाशित होती रही लेकिन इसके बावजूद पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी के विचार और शैली के महत्त्व को समझते हुए आपने स्वय श्री साहेब जो से आग्रह किया कि विशाल देव के ग्रन्थो की टीका आप करें।

पूज्य श्री प्रेम साहेब जी के आग्रह से गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी ने भवयान, मुक्तिद्वार, सत्यनिष्ठा-नवनियम इन चारो ग्रन्थो की टीका लिखी, जो इलाहाबाद कबीर सस्थान से प्रकाशित है।

पूज्य श्री प्रेम साहेब जी गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब की इन पक्तियो को अपने प्रवचनो और सामान्य चर्चाओ मे भी बड़े प्रेम से गाते थे—

बहुत बोलने वाले को भी, मौन साधना होगा।
बहुत जानने वाले को भी, स्मृति खोना होगा।।
बहुत भीड़ भी छंट जायेगी, टुट जायेगा नाता।
जीव पथिक आया इकला ही, और अकेले जाता।।

जीवन के दिन बदले। पूज्य सत श्री प्रेम साहेब जी की वृद्धावस्था आ गयी। शरीर की जीर्णता के साथ-साथ लकवा भी आ गया। ऐसी स्थिति मे बोलना भी कठिन हो गया। घटो बोलने वाले कुशल वक्ता को समय ने मूक बना दिया। लेकिन साधना और शाति का अखूट खजाना उनके पास था, जिससे ऐसी स्थिति मे भी वे सब समय आनन्द सागर मे रहते थे।

9 नवम्बर, 1995 की बात है। गुरुदेव जी गोडा जिला के करनैलगज बाजार मे थे। वही से आप कुछ सतो को साथ लेकर श्रद्धेय श्री प्रेम साहेब जी के दर्शनार्थ गये। उन दिनो पूज्य श्री साहेब जी बाराबकी जिला के सरैया ग्राम के कबीर आश्रम मे थे। यह स्थान सदगुरु श्री विशाल देव की प्रसिद्ध तपस्थली बधियाबाग है।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी जब पूज्य श्री प्रेम साहेब जी के पास बदगी करने गये तो आपको देखकर वे मुस्कुरा दिये। कुशल समाचार पूछने के बाद श्री अभिलाष साहेब ने कहा—'बहुत बोलने वाले को भी, मौन साधना होगा।' इतना सुनते ही वे पुनः खिलखिलाकर हस दिये। लड़खड़ात शब्दो मे धीरे से उन्होने कहा—शरीर की यही दशा है। मैं इससे अलग अविनाशी नित्य सत्ता हू।

श्री अभिलाष साहेब जी ने पूज्य श्री प्रेम साहेब जी की बातो का समर्थन किया।

4.

पूज्य श्री आज्ञा साहेब जी के साथ

ज्ञान वयोवृद्ध पूज्य सत श्री आज्ञा साहेब जी का जन्म काठमाडू, नेपाल मे हुआ। आप अपनी प्रारम्भिक अवस्था मे ही विरक्त रूप मे सद्गुरु श्री विशाल साहेब जी की शरण मे आ गये। आप विशाल देव की नजदीकी सेवा मे बड़ी कुशलता से बहुत दिनो तक रहे। जीवन के मध्याह्न मे कबीर आश्रम बानेश्वर, काठमाडू, नेपाल की जिम्मेदारिया भो आपने बखूबी निभाई। अनेक बार आपने भारत-काठमाडू की यात्रा पैदल की है। आपके प्रति श्री अभिलाष साहेब जी का बड़ा आदरभाव रहता था। पूज्य श्रो आज्ञा साहेब ज्येष्ठ-श्रेष्ठ होते हुए भी श्री अभिलाष साहब के प्रति अत्यन्त विनम्र भाव रखते थे। आपने अनेक बार कबीर आश्रम बानेश्वर मे श्री साहेब जी को आमन्त्रित किया था।

एक बार श्री आज्ञा साहेब जी और श्री अभिलाष साहेब जी सत-समाज सहित इलाहाबाद से नवापारा-राजिम, छत्तीसगढ़ ध्यान-शिविर मे जा रहे थे। इलाहाबाद स्टेशन पर कुछ पैदल चलकर प्लेटफार्म पर पहुचना था। धूप बहुत तेज थी। श्री अभिलाष साहेब जी के पास छाता था। आप पूज्य श्री आज्ञा साहेब जी के ऊपर छाता तानकर उनके साथ-साथ सीढ़ी की ओर चलने लगे। साथ मे एक युवक भक्त श्री रामकेश्वर जी थे। उन्होने श्री अभिलाष साहेब जी के हाथ से छाता पकड़ते हुए कहा—गुरुदेव जी, पूज्य साहेब जी के ऊपर हम छाता लगा दे।

पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी ने स्वय छाता सभालते हुए कहा—नही, तुम रहने दो, यह सेवा कार्य हमे करना ह।

धन्य हैं ऐसे महापुरुष, जो स्थिति की सर्वोच्च दशा मे होते हुए भी सतो की सेवा करना चाहते हैं।

5.

गुरुदेव जी और आचार्य श्री रामविलास साहेब

पूज्य आचार्य श्री रामविलास साहेब जी काशी कबीर चौरा के गद्दीनशीन महन्त थे। आप वैराग्यवान, अत्यन्त सरल और त्यागवान सत थे। V~{• से 1970 ई0 तक आपसे सत श्री अभिलाष साहेब का परस्पर सम्पर्क बना रहा। पुस्तक छपाने के उद्देश्य से जब भी आप काशी जाते तो अनेक बार आप आचार्य श्री रामविलास साहेब के दर्शन करने कबीर चौरा जाते। आप जब भी उनके पास जाते देर तक खूब बाते करते रहते। आपके प्रति उनका बहुत स्नेह था।

एक बार की बात है, श्री अभिलाष साहब जी उनके पास बैठे थे। बात करते-करते उनको एक पारखी साधु की बात याद आ गयी। उन्होने कहा—एक साधु आये थे उन्होने कहा—कबीर साहेब कहते हैं—'तहिया हम तुम एकै लोहू।' ये पारखी लोग ऐसे ही कबीर साहेब को सामान्य मनुष्यो की तरह माता-पिता स जन्म लिये बताते हैं। आप चुपचाप शात होकर सुनते रहे।

कुछ क्षण के बाद विनम्रतापूर्वक श्री अभिलाष साहेब जी बोले—साहेब! कबीरपथ मे जो गैर पारखी हैं वे कबीर साहेब के ऊपर ईश्वर मानते हैं। लेकिन पारखी लोग कबीर साहेब को ही सर्वोपरि मानते हैं। उनके ऊपर ईश्वर आदि की कल्पना नही करते हैं। पारखी लोगो की श्रद्धा कबीर साहेब के लिए कम नही है, किन्तु साथ-साथ वे विचारपूर्ण वैज्ञानिक बात कहते हैं तो उसको ऐसे ही उड़ा देना उचित तो नही है।

आपकी बातो को आचार्य साहेब ने भी अपनी मौन स्वीकृति दी। दोनो सतो के बीच आजीवन प्रगाढ़ सबध बना रहा। पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी के मन मे आचार्य श्री रामविलास साहेब जी के लिए सम्मान का भाव हमेशा रहा। समय से वे अपने साधको से इसकी चर्चा करते रहते थे।

6.

गुरुदेव जी और श्री रामेश्वरानन्द साहेब

पूज्य श्री रामेश्वरानन्द साहेब कबीरपथ मे एक अच्छे प्रतिष्ठित और प्रतिभावान सत हो चुके हैं। आप काशी कबीर चौरा के थे। हिन्दी, सस्कृत तथा

व्याकरण के प्रकाण्ड पडित और त्याग, साधना, वैराग्य के धनी थे। आप अपने जीवन के उत्तरार्ध मे गुजरात, बड़ौदा नगर के पानी गेट कबीर आश्रम मे रहा करते थे। पूज्य श्री रामेश्वरानन्द साहेब और श्री अभिलाष साहेब दोनो का बड़ा अच्छा सम्बन्ध था। सन् 1966 के प्रयाग कुम्भ मेले मे पूज्य श्री निष्पक्ष साहेब (तपसी साहेब) की छावनी लगी हुई थी। उसमे श्री अभिलाष साहेब जी भी पधारे हुए थे। उस समय धनौती कबीर मठ की और श्री निष्पक्ष साहेब (चकबसवा) की दोनो की छावनी एक साथ लगी थी। दोनो का पडाल अलग-अलग होते हुए भी दोनो के बीच मे कोई घेरा नही था। आगन एक था। धनौती मठ की छावनी मे श्री रामेश्वरानन्द साहेब पधारे थे। वही पर काठमाडू के श्री सतशरण साहेब तथा बलिया के श्री साधुशरण गोस्वामी जी के साथ श्री अभिलाष साहेब जी आपसे शाम को मिलने गये। देर तक बातचीत हुई।

इसके बाद सन् 1967 मे श्री रामेश्वरानन्द साहेब काशी कबीर चौरा आये थे। गुरुदेव जी पुस्तक-प्रकाशन के लिए काशी बुलानाला के विश्वेश्वर प्रेस पर रह रहे थे। आप कबीर चौरा जाते ही रहते थे। वही पर दूसरी मुलाकात हुई।

नवम्बर सन् 1972 मे भक्तराज नाथा भाई के आग्रह से गुरुदेव गुजरात गये तो 1973 की मई तक वहा रहे। श्री रामेश्वरानन्द साहेब ने आपको अपने आश्रम मे निमत्रित किया। आप उनक आमत्रण को स्वीकार कर वहा गये और लगभग V•-12 दिनो तक उनके आतिथ्य मे रहे। इस मिलन मे आप दोनो सतो की खूब आपसी चर्चाए हुईं। तभी से दोनो मे मैत्री हो गयी। एक बार श्री रामेश्वरानद साहेब ने बड़ौदा निवासी भक्त श्री लखी एन0 परियानी जी स कहा—साहेब का जीवन यदि कुछ दिन और रह गया तो कबीर साहेब का प्रचार तो होगा ही साथ-साथ उनके द्वारा गथ रत्न भी समाज को ख़्ब मिलेगा, सबका बड़ा लाभ होगा।

एक बार गुरुदेव जी और श्री रामेश्वरानन्द साहेब बैठे दोनो आपस मे कुछ वार्तालाप कर रहे थे। बीच मे आपकी पुस्तक 'कबीर दर्शन' की चर्चा आ गयी। श्री रामेश्वरानन्द साहेब बहुत गद्‌गद हुए। उन्होने कहा—अहह! कैसी पुस्तक आपने लिख दी है। इतना अनूठा ज्ञान का सागर! ऐसा तो सोचा भी नही जा सकता था।

गुरुदेव और श्री रामेश्वरानन्द साहेब के अनेक मीठे-मीठे सस्मरण हैं। आप दोनो महापुरुषो का लम्बे समय तक समय-समय से मिलना-जुलना, सत्सग, वार्ता होती रही। जीवन तो सबका एक दिन बीत जाता है। लेकिन महापुरुषो की एक-एक बात और एक-एक कर्म हमारे लिए आदर्शरूप हो जाते हैं।

7.

गुरुदेव और आचार्य श्रीराम शर्मा

अप्रैल 1974 का समय था। उस समय हरिद्वार कुम्भ मेला चल रहा था। जिसमे गुरुदेव के बड़े गुरुभाई श्रद्धेय सत श्री निष्पक्ष साहेब जी की कबीर सत्सग शिविर नाम से छावनी लगी हुई थी। उस शिविर मे आप भी निमत्रित थे। आप राजस्थान के सत्सग कार्यक्रम करते हुए हरिद्वार आये।

हरिद्वार के सप्तसरोवर मुहल्ले मे एक अधविद्यालय चल रहा था। वहा पर एक महत जी सर्वधर्म सम्मेलन करवाये। वे महत जी भी प्रज्ञाचक्षु थे। कबीरपथ से उन्होने गुरुदेव जी को एव काशी लहरतारा के धर्माधिकारी सत श्री मनोहर साहेब जी को निमत्रित किया था। गुरुदेव के साथ एक सत श्री साधुशरण गोस्वामी, जो बलिया जिला के थे, वे और दूसरे एक अन्य सत, इस प्रकार दो लोग आपके साथ मे गये। अधविद्यालय की विचार गोष्ठी के बाद आपने कहा—यही पास मे आचार्य श्रीराम शर्मा जी रहते हैं। चले उनके दर्शन कर आते हैं। गुरुदेव साथ के दोनो सतो को लेकर आचार्य श्रीराम शर्मा जी के पास गये।

जहा पर आचार्य जी रहते थे वहा दरवाजे पर एक दरबान बैठा था। पूछने पर उन्होने बहाना बनाते हुए कहा—आचार्य जी अभी मीटिग मे हैं। गुरुदेव ने कहा—भैया, बहाना न बनाओ। कम से कम एक बार जाकर उनसे बता दो कि साधु आये हैं। वे आपसे मिलना चाहते हैं। गुरुदेव के इतना कहने पर दरबान अन्दर गया और बताया। आचार्य जी ने तुरन्त कहा—जाओ, बुला लाओ।

गुरुदेव अन्दर गये। आचार्य जी उस समय एक बड़े कक्ष मे कुर्सी पर बैठे कुछ लिख रहे थे। फर्श पर दरी बिछी थी। आपके पहुचने पर वे खड़े हो गये। गुरुदेव ने कहा—आप कुर्सी पर बैठे। उन्होने कहा—आप नीचे बैठे और मैं कुर्सी पर बैठू, यह कैसे होगा? यह कक्ष ही मेरा जेलखाना है। दिनभर यही बैठा लिखता रहता हू। घूमने की भी फुर्सत नही मिलती है। जब कोई मिलने आता है तो उससे बाते करते हुए मैं इसी मे घूमता रहता हू। उसी मे मेरा घूमना भी हो जाता है। ऐसा कहकर वे कक्ष मे घूमने लगे। आपसे वे बड़ी सरलतापूर्वक बात भी करते जाते थे मानो बहुत दिनो के पूर्व परिचित हो।

गुरुदेव ने कहा—आप मुझे कुछ बताइये। उन्होने कहा—आप सत हैं, आपको मैं क्या बताऊ। लेकिन फिर कुछ बोले। उन्हाने गुरुदेव से कहा—गायत्री, ईश्वर और सदाचार इन तीन को हम मानते हैं। गुरुदेव—सदाचार तो सार्वभौमिक है लेकिन ईश्वर बाहर है इस पर कैसे विश्वास किया जाये?

आचार्य जी ने कहा—यह मकान है तो इसका कोई बनानेवाला भी होगा। इसी प्रकार इतनी बड़ी दुनिया है तो इसे भी कोई बनानेवाला होगा। गुरुदेव ने कहा—ऐसा भी लोग मानते हैं कि दुनिया को बनानेवाला कोई नही है। आचार्य जी—हा, ऐसा भी है। वे साख्य दर्शन के विचार जानते थे। क्योकि उसका अनुवाद वे स्वय किये हैं। गुरुदेव जी—गायत्री क्या है? ऊपर देखते हुए उन्होने कहा—इसके विषय मे मेरी तीन पुस्तके हैं उन्ही को पढ़ लीजिएगा। गुरुदेव जी ने कहा—थोड़ा कुछ सक्षेप मे बता दीजिए। आचार्य जी ने पुन: वही उत्तर दिया कि उन्ही प्स्तको को पढ़ लीजिएगा। इसके बाद अन्य बाते होती रही। आचार्य जी बड़ी सरलता से निर्भेद होकर बात करते रहे। श्री साधुशरण गोस्वामी ने गुरुदेव के बारे मे बताया कि आपने कबीर साहेब की वाणी पर अनेक टीका-व्याख्या लिखी है।

आचार्य जी—अच्छा, तो कबीर की 'उलटावासिया' मुझे दीजिए। मैं उनकी 'उलटावासिया' पढूगा। (आचार्य जी उलटवासियो को उलटावासिया कहते थे) लेकिन मुझे टीका सहित देना, नही तो समझ मे नही आयेगा। गुरुदेव जी—आप नही समझ पायेगे? आचार्य जी—बड़ा मुश्किल है समझना। बीच मे श्री साधुशरण गोस्वामी जी ने बताते हुए कहा—टीका-व्याख्या के साथ-साथ आपकी कई अन्य मौलिक रचनाए भी हैं। आचार्य जी—तो मुझे उनमे से भी दीजिएगा। इसके बाद गुरुदेव जी वहा से आ गये।

दूसरे दिन गुरुदेव ने श्री रामेश्वर दयाल तिवारी जी[1] को एक बडल म सारी पुस्तके भरवाकर शर्मा जी के पास भेजा। आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने स्वय बहुत- सी पुस्तके छाटकर रख लिया और सबका पैसा भी वे तत्काल दे दिये।

8.

गीताप्रेस के जयदयाल गोयन्दका का दर्शन

मार्च 1960 की बात है। गुरुदेव जी उन दिनो मोहम्मदनगर के शकर भक्त की कुटिया मे निवास कर रहे थे। मोहम्मद नगर के ही एक सज्जन थे जो मिस्त्रो थे और गोरखपुर के इजीनियरिग कालेज मे छात्रो को प्रायोगिक शिक्षा देते थे और वही रहते थे। उन्होने गुरुदेव से एक दिन कहा—साहेब, आप हमारे यहा

---

1. **श्री रामेश्वर दयाल तिवारी जी गुरुदेव के भक्त हैं जो गभाना, जिला अलीगढ़ के निवासी हैं।**

भी कभी आइये। उनके निवेदन को स्वीकार करते हुए गुरुदेव जी एक दिन मोहम्मदनगर से गोरखपुर गये। आपके साथ रामचन्द्र जी भी थे जो मिस्त्री के पुत्र थे। गुरुदेव दोपहर को उनके घर पर भोजन बनाये, खाये और उनका कारखाना देखे।

इजीनियरिग कालेज से गुरुदेव जी गीताप्रेस घूमने गये। वही पर आपने सत श्री रामसुख दास जी महाराज का पहली बार दर्शन किया और उनका भाषण भी सुना। प्रवचन के बाद गुरुदेव जो ने महाराज जी से गोयन्दका जी के बारे मे पूछा तो उन्होने बताया कि इस गली मे जाकर आगे अमुक मकान मे वे रहते हैं।

गोयन्दका जी मकान के ऊपरी कमरे मे रहते थे। एक छोटा कमरा था। पलग लगी थी और उसमे गद्दा तथा चादर बिछी थी। किंतु उस समय गीताप्रेस के कुछ काम करने के नाते गोयन्दका जी पलग के पास नीचे गद्दे पर बैठे थे। उनके पास 28-29 वर्षीय दो नवयुवक बैठे थे जो बाहर से आये हुए पत्रो को पढ़ते थे जिसका गोयन्दका जी जवाब देते थे। वे युवक थोड़े मे उसी पत्र मे नोट कर लिया करते थे। फिर वे उसी के आधार पर जवाब लिख दिया करते थे। गोयन्दका जी को उस समय दिखाई नही पड़ता था। उसी समय गुरुदेव जी वहा पहुचे। वे तो जान नही पाये कि कौन आये हैं। जब बातचीत होने लगी तो गुरुदेव ने बताया कि मैं आपके दर्शन करने आया हू। उन्होने कहा—अच्छा-अच्छा, भोजन कर लीजिए।

गुरुदेव—भोजन हम किये हैं।

गोयन्दका जी—अच्छा कोई बात नही, कुछ पूछना हो तो पूछिये।

गुरुदेव जी—पूछना कुछ नही है। आपका दर्शन करना था, इच्छा पूरी हो गयी।

गोयन्दका जी—यह गीताप्रेस का काम है। और यहा करीब पचास लाख का पुस्तक प्रकाशन का कारोबार चल रहा है। कही कुछ भेजना, कही से कुछ मगाना आदि यही सब यहा होता रहता है। इस प्रकार बड़ी सरलता से वे गुरुदेव जी से बाते करते रहे।

गुरुदेव जी—महापुरुष लोग सब सेवा करते ही हैं।

गुरुदेव वहा कुछ देर बैठे यह पत्रोत्तर का काम देखते रहे। फिर आपने कहा—अच्छा, अब मैं चलना चाहता हू।

गोयन्दका जी ने कहा—अच्छा ठीक है, लेकिन कुछ पूछना हो तो पूछ लीजिए।

गुरुदेव जी—पूछना कुछ नही है। बस आपके दर्शन हो गये। अब मुझे आज्ञा दे।

गुरुदेव जी जब जोने से उतरे तो गोयन्दका जी ने युवको से पूछा होगा कि कौन थे और वे बताये होगे कि एक साधु थे। इसलिए गोयन्दका जी तुरन्त एक सज्जन को भेजे कि सत जी को बुला लाओ। लेकिन तब तक गुरुदेव जी नीचे उतर चुके थे। वे सज्जन जीने से ही आपको बुलाने लगे।

गुरुदेव ने कहा—समय नही है। हमे ट्रेन पकड़ना है। तब उन्होने कहा—अच्छा तो गोयन्दका जी कहते हैं कि यदि आप अभी न लौट सके तो ऋषिकेश आये। अगले महीने मे गोयन्दका जी वहा मिलेगे और वे दो महीने वहा रहेगे।

गुरुदेव ने कहा—अभी कुछ कहा नही जा सकता। देखा जायेगा।

9.

गुरुदेव जी और हनुमान प्रसाद पोद्दार जी

नवम्बर 1965 की बात है। बड़हरा कबीर आश्रम का सत्सग कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद गुरुदेव जी का विचार अजगैबा कबीर आश्रम देखने का हुआ। अजगैबा गोरखपुर जिला मे पाली तहसील के पास पड़ता है। सयोग से उन दिनो अजगैबा आश्रम का सत सम्मेलन भी आ गया था। आप बड़हरा कबीर आश्रम से चलकर बभनान स्टेशन आये और वहा से ट्रेन पकड़कर अजगैबा आश्रम आये। उस समय गुरुदेव के साथ सत श्री निगम साहेब, सत श्री शरणपाल साहेब और सत श्री पुरुषोत्तम साहेब थे। अजगैबा का कार्यक्रम करने के बाद आप सब लोग मगहर भी देखने गये और वहा से लौटकर खलीलाबाद आ गये। खलीलाबाद से गुरुदेव को बस्ती जाना था लेकिन बस स्टेशन पर काफी प्रतीक्षा करने के बाद भी गोरखपुर की ओर से कोई बस नही आ रही थी। बल्कि इधर खलीलाबाद से गोरखपुर की तरफ खूब बसे जा रही थी। तो गुरुदेव ने साथियो से कहा—अच्छा, चलो अब हम लोग गोरखपुर चलकर हनुमान प्रसाद पोद्दार जी से मिल ले। आज इसके लिए अच्छा सयोग है।

गुरुदेव जी के साथ सभी सत बस मे बैठे और गोरखपुर आ गये। सबसे पहले आप गीताप्रेस गये। गुरुदेव जी तो गीताप्रेस एक बार इसके पूर्व भी देख चुके थे। लेकिन अन्य सतो को दिखाना था। गीताप्रेस देखने के बाद लोगो से पूछा गया कि पोद्दार जी कहा हैं। तो पता चला कि वे गीतावाटिका मे रह रहे हैं। गुरुदेव वहा गये। तबतक शाम हो चुकी थी। दरवाजे पर एक दरबान था। पूछने पर उसने कहा—भाई जी (पोद्दार जी) नही मिलेगे।

गुरुदेव जी ने कहा—भाई, जाकर एक बार बता दो कि कुछ सत आये हैं। लेकिन वह बारम्बार नही-नही ही करता रहा। उसी समय अन्दर से एक प्रौढ़ सज्जन निकले जो पोद्दार जी के पास ही से बाहर आ रहे थे। उन्होने कहा—जाने दो, तब वह चुप हुआ और गुरुदेव अन्दर गये।

अन्दर पहचते ही सामने नीचे जीने के पास एक कमरा था। उसमे से पोद्दार जी का सेवक निकला तो उसने कहा—ऊपर जाइये महाराज।

दूसरी मजिल पर एक छोटा-सा कमरा था। पोद्दार जी फर्श पर कुछ बिछाये नीचे बैठे हुए थे। उनके सामने ही एक छोटा-सा डेस्क रखा था।

गुरुदेव के पहुचते ही वे प्रसन्न हो गये और स्वय अपने हाथ से बैठने की जगह साफ करने लगे। आगे हाथ बढ़ाते हुए उन्होने कहा—आइये-आइये महाराज। बैठाये और नमस्कार किये। बैठते ही कुशल-मगल पूछे फिर उन्हाने पूछा—कहा से आगमन हुआ?

गुरुदेव जी—आश्रम तो हमारा है गोडा जिला के बड़हरा गाव मे, किंतु अभी अजगैबा-मगहर होते हुए आ रहे हैं।

पोद्दार जी—आज कहा रहेगे?

गुरुदेव जी—आज आपही के यहा रहने का विचार है।

पोद्दार जी—बड़ी कृपा-बड़ी कृपा! भोजन कर लीजिए।

गुरुदेव जी—हम लोग तो अपने से...........।

पोद्दार जी—अच्छा-अच्छा, आप लोग अपने हाथ से बनाते हैं, तो अपने हाथ से ही बना लीजिए।

गुरुदेव जी—कुछ वार्ता के लिए भी समय चाहेगे।

पोद्दार जी—इस समय मैं कल्याण विशेषाक के सम्पादन मे लगा हू।

गुरुदेव—तो भी थोड़ा समय दीजिए।

पोद्दार जी—अच्छा, तो ठीक है, लेकिन अभी आसन आदि लगाये।

एक सज्जन आये जो गुरुदेव एव सतो का आसन आदि लगवाये। वहा के कोठारी आये और वे पूछे—महाराज, आप लोग क्या बनाये-खायेगे?

गुरुदेव जी—हम लोग लीटी-चोखा[1] खायेगे।

---

1. **आटा को गूंथकर गोल-गोल तथा मोटी-मोटी लिट्टी बनाकर कण्डे की आग में सेंक लिया जाता है और आग में आलू भूनकर उसमें नमक-तेल आदि मसाला मिलाकर चोखा बना लिया जाता है ।**

कोठारी ने तुरन्त आटा, आलू, घी, नमक तथा बरतन आदि दिया। आगन मे कडा लाकर रख दिया।

सतो ने लीटी-चोखा बनाया और खाया। खा-पीकर निवास पर विश्राम कर ही रहे थे कि एक व्यक्ति आया और कहा—महाराज जी, भाई जी बुला रहे हैं। तब गुरुदेव जी उनके पास गये। कुछ आपसी चर्चाए हुईं फिर उन्होने पूछा—आश्रम का क्या साधन है?

गुरुदेव जी—जीवन निर्वाह के लिए गुरु जी कोई चिता नही करते। कुछ खेत था उसे भी बेच दिया गया है। अतत: आपने कहा—मनुष्य के मन मे सतोष हो तो इस शरीर के लिए कोई कमी नही रहती।

पोद्दार जी—हा, यह बात तो है। फिर उन्होने साधना के विषय मे पूछा—गुरुदेव ने साक्षी-द्रष्टा अभ्यास के बार मे बताया। आपने कहा—प्रथम अभ्यास काल मे किसी नाम, मत्र, नाद, बिन्दु या किसी महापुरुष का ध्यान करके मन को रोका जा सकता है।

अतत: इन सबको एव नाना सकल्पो को छोड़कर द्रष्टा जीव का अपने आप मे शेष रह जाना ही सहज समाधि है। यही जीव की अपनी स्थिति है।

पोद्दार जी आखे बन्द किये गुरुदेव की बाते बड़ी तन्मयता से सुनते रहे। जब आप बोलना बन्द किये तो उन्होने कहा—हा, इसमे यही सावधानी होनी चाहिए कि नीद न आने पाये।

इसके बाद गुरुदेव ने कहा—अब आप हम लोगो को कुछ बताये।

उन्होने कहा—आप लोगो को क्या बताऊ?

उन्होने गीता का एक श्लोक कहा—

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानव:।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते॥

अर्थात जो व्यक्ति अपने आप मे प्रेम करता है, अपने आप मे तृप्त होता है तथा अपने आप मे सतुष्ट होता है, उसे और कुछ करना बाकी नही रहता है।

इसके बाद उन्होने कहा—निष्काम होकर भगवान की भक्ति मे लग जाना चाहिए।

गुरुदेव जी—हा, परिश्रमी होना चाहिए।

पोद्दार जी—इसका अहकार हो जायेगा कि हम परिश्रमी (पुरुषार्थी) हैं।

गुरुदेव जी—अहकार न करे।

पोद्दार जी—इससे दिखावा होगा कि हम अहकारी नही हैं।

गुरुदेव जी—दिखावा न करे।

इतना सुनकर पोद्दार जी मुस्कुराने लगे। फिर उन्होन कहा—कुछ सेवा हम आपकी करना चाहते हैं।

गुरुदेव जी—हम यहा कुछ सेवा लेने नही आये हैं केवल आपके दर्शन की इच्छा थी वह पूर्ण हो गयी।

पोद्दार जी—अच्छा-अच्छा, कोई आग्रह नही है लेकिन यदि स्वीकारते हो तो...।

गुरुदेव जी—खैर स्वीकारते तो हैं ही।

पोद्दार जी की बेटी भी आ गयी थी। वह भी सामने बैठकर सुन रही थी।

जब गुरुदेव शयन कक्ष मे चले गये तो एक सज्जन सौ-सौ रुपये के दो नोट लेकर आये और कहे—भाई जी ने कुछ आपकी सेवा मे समर्पित किया है। महाराज जी इसे स्वीकार कर लीजिए। गुरुदेव जी ने साथी सतो से कहा कि ले लो।

10.

गुरुदेव जी और स्वामो रंगनाथानन्द जी महाराज

स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन मे स्वामी रगनाथानन्द जी महाराज एक अच्छे प्रतिष्ठित त्यागसम्पन्न, वैराग्यवान, प्रतिभा के धनी योग्य सत हो चुके हैं। उन दिनो आप श्री रामकृष्ण मठ हैदराबाद के अध्यक्ष थे। जीवन के उत्तर काल मे आप कोलकाता बेलूर मठ के भी अध्यक्ष रहे। इसी पद पर रहते-रहते आपने देह का त्याग किया।

सन् 1986-87 का समय है। उमरकोट, उड़ीसा मे गुरुदेव का कार्यक्रम था। उसी समय उमरकोट मे ही श्री रामकृष्ण मठ का शिलान्यास होना था। इस शिलान्यास कार्यक्रम मे हैदराबाद से स्वामी श्री रगनाथानन्द जी महाराज वहा पधारे हुए थे। श्री महाराज जी जब भक्तो द्वारा गुरुदेव के बारे मे सुने कि वे यही पधारे हुए हैं तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने आपको अपने यहा बुलाने का आयोजन किया और तुरन्त भक्तो द्वारा दो गाड़िया गुरुदेव के निवास पर भेजवा दी।

स्वामो रगनाथानन्द जी महाराज के आग्रह को गुरुदेव जी टाल नही सके। वे उस समय वहा के सर्किट हाऊस मे ठहरे हुए थे। गुरुदेव जी समाज सहित वहा गये। दोनो सत परस्पर मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। गुरुदेव ने अपनी पुस्तके भी उनको दी। इसके बाद महाराज श्री ने गुरुदेव को अपने मच पर ले जाकर

प्रवचन भी करवाया। आपके विचार सुनकर वे अत्यन्त गद्‌गद थे। उन्होने कहा—मैं विदेशो मे जाता हू तो वहा भी कबीर साहेब का पुष्कल प्रचार है। भारत मे सब जगह कबीर के ही गीत गाये जाते हैं। उन्हाने गुरुदेव से पूछा—आपके साथ कोई भजन गानेवाला है?

गुरुदेव ने कहा—हा, है। फिर साथ के सत ने भजन गाया।

स्वामी रगनाथानन्द जी कबीर साहेब की प्रशसा मे 'रैशनल' और 'पुष्कल' शब्द का बारम्बार प्रयोग करते थे—कबीर साहेब के विचार रैशनल हैं और उनकी वाणी का देश-विदेश मे पुष्कल प्रचार है।

स्वामो रगनाथानन्द जी ने कहा—कबीर साहेब एक ऐसे निराले सत हो चुके हैं जिनको सभी अपना मानते हैं। उनके भजन सभी सम्प्रदायो के उपासना स्थलो मे गाये जाते है।

अत मे गुरुदेव ने कहा—अच्छा तो महाराज, अब मुझे आज्ञा दे। मैं चलता हू। महाराज जी ने कहा—आपकी बड़ी कृपा जो आपने दर्शन दिया। दोनो महापुरुष खड़े होकर एक दूसरे को हाथ जोड़कर नमस्कार किये और गुरुदेव जी चल दिये।

11.

गुरुदेव और झाली जी महाराज

उत्तर प्रदश गोडा जिला मे झाली जी महाराज नाम से एक वैष्णव सत हो चुके हैं। झाली जी महाराज त्याग, वैराग्य, साधना सम्पन्न सत थे। साधना काल के पूर्वार्ध मे वे गाव से बाहर बाग-बगीचे, झाड़-झखाड़ मे अलग-थलग पड़े रहते थे। तभी से उनका नाम झाली जी महाराज हो गया।

झाली जी महाराज गुरुदव के प्रति अत्यन्त भावना वाले थे। गुरुदव की पुस्तके तथा आपके विचारो से वे अत्यन्त प्रभावित थे। एक बार कुछ सतो के साथ आप झाली जी महाराज से मिलने गये, मिलते ही वे आपको गले से लगा लिये। गुरुदव पहले से उनकी त्याग वृत्ति से परिचित थे, अत: आप स्वय उनके चरणो मे न चढ़ाकर एक सत से कुछ पैसे चढ़वा दिये। उस समय तो वे जान नही पाये, बाद मे जब लिफाफा दखे तो अन्य सतो से कह रहे थे साहेब कितने चतुर हैं, कब पैसा चढ़ा दिये हम जान ही नही पाये। महाराज जी का सिद्धान्त ईश्वरवाद है और ईश्वर की प्राप्ति ही अतिम उद्देश्य है, लेकिन वे गुरुदव के आत्मवाद और अतत: मोक्ष की प्राप्ति इस सिद्धान्त से बहुत खुश रहते थे।

सायकालीन सत्सग सभा मे गुरुदव से वे कुछ सुनना चाहते थे लेकिन अतत: आपके आग्रह से महाराज जी को ही बोलना पड़ा। थोड़ी दर साधना, वैराग्य, स्वरूपस्थिति आदि विषय पर सावधानीपूर्वक बोले, इसके बाद गुरुदव के लिए उन्होने स्वय घोषणा कर दिया। उन्होने कहा—सज्जनो, अब आपके सामने एक महामहिम सत आ रहे हैं जो ज्ञानियो मे, विचारको मे, सतो मे, वि||||नो मे और लेखको मे उच्चकोटि के सत हैं। उनके विचार आप बड़ी एकाग्रता से सुने।

गुरुदव व्यवहार, साधना और रहनी के विषय मे थोड़ी दर बोलकर बद किये तब झाली जी महाराज ने कहा—सज्जनो! इसे कहते हैं प्रवचन। किस्सा-कहानी तो लोग सुनते ही रहते हैं। साहेब की बाते सीध आत्मा के कल्याण के लिए हैं।

द्सरे दिन गुरुदव किसी भक्त के आतिथ्य मे पास के गाव मे गये। वहा आप भोजन-भडार बना रहे थे। इधर झाली जी महाराज के पास वही निकट के ही राजा के गुरु आये। उनसे बाते करते हुए उन्होने गुरुदव के ज्ञान, वैराग्य, साधना आदि के विषय मे बाते की तो वे ब्राह्मण गुरु इतना प्रभावित हुए कि झाली जी महाराज के पास से उठकर सीधा गुरुदव के पास पहुच गये। मिलते ही उन्होने प्रणाम किया फिर कुछ बाते होती रही, अत मे उन्होने कहा—महाराज, आज हम आपके ही भडार मे भोजन करेगे।

गुरुदव ने कहा—हम लोग घुमतू साधु ठहरे और जाति-पाति का कोई ठिकाना नही, आप हमारे भडार मे भोजन कैसे करेगे?

ब्राह्मण गुरु ने कहा—महाराज, आप जैसे सच्चे ब्राह्मण, सच्चे ज्ञानी सत, आपके जैसी आचार-विचार की पवित्रता और कहा मिलेगी? हमारा सौभाग्य है जो आप जैसे सत मिले।

गुरुदव ने कहा—तो ठीक है, जो रूखा-सूखा भोजन हमारे भडार मे है उसे आप भी ग्रहण कीजिए।

बड़े ही श्रद्धा-भावना के साथ उन्होने गुरुदव क साथ भोजन ग्रहण किया।

12.

गुरुदेव जी और महत श्री नृत्यगोपालदास जी महाराज

एक सत थे श्री शीतल साहेब जिनके गुरु थे खलीलाबाद कबीर आश्रम के सत श्री सुखसागर साहेब। श्री शीतल साहेब का गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब

के प्रति अनन्य निष्ठा एव प्रेम का भाव था। दूसरी तरफ अयोध्या की मणिराम छावनी के वैष्णव सत श्री नृत्यगोपालदास जी महाराज से भी उनका प्रेम भाव था। इन दोनो पारखी और वैष्णव सतो को श्री शीतल साहेब मिलाना चाहते थे।

एक बार श्री शीतल साहेब जी गुरुदेव जी को लेकर अयोध्या मणिराम छावनी आये। यह आपका मणिराम छावनी मे प्रथम आगमन था। गुरुदेव जी तथा छावनी के महत श्री नृत्यगोपालदास जी महाराज परस्पर मिलकर अभिवादन किये और प्रेम से बात-व्यवहार हुआ। आप सब लोग श्रीराम मदिर के सामने ही बैठे थे। आरती का समय हो गया। सत, भक्त एव दर्शक सब हाथ जोड़कर खड़े हो गये। गुरुदेव जी ने भी वहा अन्यो की तरह हाथ जोड़ लिया, किन्तु श्री शीतल साहेब यू ही हाथ लटकाये खड़े रहे। उन्होने सोचा हम मूर्ति के सामने हाथ क्यो जोड़े?

परिक्रमा के दौरान जब-जब श्री नृत्यगोपालदास जी महाराज सामने आते तो श्री शीतल साहेब को देखकर मुस्कुरा देते थे। श्री शीतल साहेब और नृत्यगोपाल दास जी महाराज की पहले से जान-पहचान थी ही। जब आरती का कार्यक्रम समाप्त हुआ तो श्री नृत्यगोपाल दास जी महाराज, गुरुदेव जी तथा श्री शीतल साहेब आदि सभी सत एक साथ बैठे और आपस मे कुछ भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की चर्चा हुई। श्री नृत्यगोपाल दास जी महाराज और गुरुदेव जी के मिलन का यही पहला अवसर था। इसके बाद तो दोनो सत समय-समय से मिलते थे।

महाराज जी के पास से जब गुरुदेव जी और श्री शीतल साहेब निकले तो आपने श्री शीतल साहब को समझाया कि वहा के सतगण अपने इष्ट की उपासना कर रहे थे। जब आप वही खड़े थे तो आपको भी हाथ जोड़ लेना चाहिए था। उन्होने कहा—मूर्ति के सामने हाथ जोड़ना कहा तक उचित है?

गुरुदेव जी—यदि आपको ऐसा लगता है तो वहा जाना ही नही चाहिए था और जब गये तो हाथ जोड़ लेने मे आपकी कोई हानि थोड़े हो जायेगी। गुरुदेव की ये बाते उनको काफी अपील की। उन्होने महसूस किया कि मैंने ठीक नही किया।

* * *

सन् 1970 की बात होगी। गुरुदेव जी अपने सत समाज सहित नृत्यगोपाल दास जी महाराज से मिलने अयोध्या गये। उस समय वे अपने स्वागत कक्ष मे बैठे थे। गुरुदेव को देखकर उनको काफी प्रसन्नता हुई। कुछ समय बाद उन्होने कहा—हम और आप ऊपर चले।

नृत्यगोपालदास जी महाराज गुरुदेव जी को साथ लेकर ऊपर अपने कक्ष मे गये और अन्दर से फाटक बन्द कर लिये। महाराज जी ने स्वय गुरुदेव के लिए एक आसनी बिछायी और आपसे बायी तरफ सटकर वे भी बैठ गये। उन दिनो वे गुरुदेव की लिखी पुस्तक 'जगन्मीमासा' पढ़ लिये थे।

उन्होने कहा—कुछ साधना की बात बताइये। गुरुदेव ने कुछ समय थोड़े मे अपने विचार रखे—साधक इन्द्रिय-मन के बाह्य दृश्य-प्रपच एव अपने माने हुए नाम-रूप से मुड़कर अपने आप मे स्थित हो जाये, केवल अपने आप मे निराधार स्थित हो जाये, बस, यही साधक की अतिम स्थिति है। इसके आगे न कोई राह है और न कोई मजिल। आत्मस्थिति के लिए अलग से कुछ पाना नही है। हमारा प्राप्तव्य हमारे अन्दर ही ह जो नित्य, सदा एकरस प्राप्त है।

*   *   *

दिसम्बर 2003 की बात होगी, गुरुदेव जी का कार्यक्रम अवध क्षेत्र मे चल रहा था। एक दिन आप अयोध्या होते हुए सुबह के समय यात्रा कर रहे थे। साथ के कुछ साधको ने कहा—मणिराम छावनी देख लिया जाये। गुरुदेव जी ने कहा—ठीक है।

सभी सत गुरुदेव के साथ मणिराम छावनी मे श्री नृत्यगोपाल दास जी महाराज के आश्रम मे प्रवेश किये। कुछ सत तो आश्रम घूमने चले गये लेकिन गुरुदेव के साथ सत श्री गुरुभूषण साहेब जी तथा एक अन्य साधक महाराज जी के पास बैठे। उन दिनो महाराज जी अयोध्या मे हो रहे राजनीतिक उत्पात के कारण कुछ उदास दिख रहे थे। बात करते हुए उन्होने गुरुदेव जी से निराश स्वर मे कहा—न बाहर दिखता है और न भीतर दिखता है।

गुरुदेव जी ने कहा—यह तो अपनी-अपनी दृष्टि है। लेकिन वह (परमात्मा) तो बाहर भी दिखता है और भीतर भी। बाहर मनुष्यो एव प्राणियो का समूह है जो परमात्मा है और भीतर मेरा आत्मा, जो मेरी स्वय की सत्ता है। मेरा स्वय का होना इससे स्पष्ट और क्या हो सकता है? मेरी अपने आप म स्थिति ही परम तृप्ति है। अन्दर मेरी स्वय की सत्ता और बाहर प्राणियो के अलावा अलग से भगवान कहा मिलेगा।

महाराज जी के इस कथन को लेकर कि न बाहर दिखता है और न भीतर दिखता है। गुरुदेव ने एक लेख लिखा—'बाहर और भीतर का भेद' जो कबीर सस्थान, इलाहाबाद से प्रकाशित त्रैमासिक पत्र 'पारख प्रकाश' मे प्रकाशित हुआ।

13.

गुरुदेव और सत श्री शीतल साहेब

सत श्री शीतल साहेब उत्तर प्रदेश हमीरपुर जिला के एक गाव मे ब्राह्मण परिवार मे जन्मे थे। जिनका घर का नाम था 'सरजू प्रसाद पाण्डे।' सरजू प्रसाद पाण्डे जी बड़े रोबीले स्वभाव के साथ-साथ बहुत दयालु भी थे। वे गरीबो के रक्षक और दुष्टो का दलन करने वाले थे। कोई भी व्यक्ति दुराचार कर रहा हो तो आप उसे सहन नही कर पाते थे। गरीबो की सेवा मे आप अपना सब कुछ खोने के लिए तैयार हो जाते थे।

सरजू प्रसाद पाण्डे जी अपनी साठ वर्ष की उम्र सन् 1962-63 मे वैराग्य जीवन स्वीकार कर लिये। गृहत्याग के बाद आप अजगैबा (सत कबीर नगर) निवासी सत श्री सुखसागर साहेब की शरण मे आ गये। सत श्री सुख सागर साहेब के द्वारा ही आपका साधु वेष हुआ। आपका नाम 'शीतल दास' रखा गया जिन्हे हम आदर से सत श्री शीतल साहेब कहते हैं।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी से बड़हरा आश्रम मे ही सत श्री शीतल साहेब की 1965 ई0 मे प्रथम मुलाकात हुई। उस समय गुरुदेव की कुल 32 वर्ष की उम्र थी। शारीरिक अवस्था मे इतना अतर होते हुए भी आपको श्री शीतल साहेब गुरुवत मानते थे।

श्री शीतल साहेब की किसी गलती के लिए गुरुदेव जी ने उन्हे समझाया। श्री शीतल साहेब एकदम मौन हो गये। उन्हे महसूस हुआ कि मैंने गलत किया। वे वहा से उठकर एक पड़ के नीचे जाकर बैठ गये और एक घटा तक वहा मनन करते रहे। कुछ सत उनके पास आ गये। उनसे बाते करते हुए उन्होने कहा— आज साहेब ने हमे खूब डाटा। (भावनापूर्वक) साहेब हमारी माता के समान हैं। वे हमारे कल्याण के लिए बताते हैं।

श्री शीतल साहेब जैसे पूर्वाश्रम मे बहुत तेज और उग्र थे वैसे ही साधना जीवन मे भी बहुत तेज थे। वे किसी की गलती सहते नही थे। कितु गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के प्रति वे अत्यन्त विनम्र भाव रखते थे। आप जो कह देते थे उसे वे विनम्रता से स्वीकारते थे।

एक बार श्री शीतल साहेब सतो से बात करते हुए कह रहे थे कि मैं प्रतिक्रिया और क्रोध की अग्नि मे जल रहा था लेकिन साहेब जी ने हमे शीतल कर दिया।

14.

गुरुदेव और संत ह्रदयराम जी महाराज

गुरुदेव का कार्यक्रम भोपाल के गाधी भवन मे चल रहा था। उस वर्ष मध्य प्रदेश सरकार 'कबीर षटशताब्दी' मना रही थी और गुरुदेव जी को राज्य अतिथि घोषित किया गया था। आपका निवास वी0आई0पी0 गेस्टहाउस मे रखा गया था। प्रथम दिन ही कुछ सज्जन आये, निवेदन करते हुए उन्होने कहा—स्वामी जी, इसी भोपाल मे हमारा आश्रम है जो सत ह्रदयराम जी महाराज के सरक्षण मे चल रहा है। वे काफी वृद्ध हो चुके हैं। जब से वे सुने हैं कि आप भोपाल पधारे हैं तब से महाराज जी आपसे मिलना चाहते हैं। सत ह्रदयराम जी महाराज गुरुदेव जी की पुस्तके पढ़कर बहुत प्रभावित थे। वे गुरुदेव की वाणी मे चमत्कार और अलौकिकता से रहित ठोस कर्म-सिद्धान्त पाते हैं। इससे वे गद्‌गद थे।

गुरुदेव जी जैसे ही सुने कि "सत और वृद्ध सत" तो तुरन्त आपने स्वीकार करते हुए कहा—ठीक है, मैं अवश्य महाराज जी के दर्शन करने आऊगा।

दूसरे दिन 10 जनवरी 1998 को सुबह ही कुछ भक्तो की गाड़िया आ गयी, जिसमे गुरुदेव जी सत समाज सहित महाराज जी के पास गये। गुरुदेव के पहुचते ही महाराज जी स्वय खड़े होकर आपका स्वागत किये। सतो-भक्तो की भीड़ इकट्ठी थी। दोनो महापुरुषो के मुखारविन्द से कुछ सुनने के लिए लालायित थी। गुरुदेव ने महाराज जी से कहा—महाराज जी कुछ सुनाने की कृपा करे। महाराज जी ने स्वय गुरुदेव जी से आग्रह किया कि आप ही सुनाने की कृपा करे। सब लोग आपको सुनना चाहते हैं।

गुरुदेव कुछ समय अपने विचार रखे। आपने कहा—पूजनीय महाराज जी एव सभी साधको! सभी गृहस्थ-विरक्त साधको को सब समय सत-गुरु और सत्सग के आधार मे रहना चाहिए। जीवन का मूल उद्देश्य मन की शाति है। शाति के अभाव मे ससार की सारी उपलब्धिया व्यर्थ हैं। आत्मज्ञान और आत्मबोध के बिना मनुष्य कभी सुखी नही हो सकता। रहनी सम्पन्न बोधवान सत चाहे जिस देश-काल मे रहे हो, सबका अनुभव एक रहा है। जीवन जीने के तरीके मे अतर हो सकता है किन्तु सत्य सिद्धान्त मे अतर नही होता है। इसलिए सभी कल्याण इच्छुको को चाहिए कि सत-गुरुजना के प्रति भक्ति भाव रखते हुए कल्याण पथ मे आगे बढ़ते रहे। इतना कहकर आपने महाराज जी से आग्रह किया कि अब आप कुछ सुनाने की कृपा करे।

महाराज जी ने सद्‌गुरु कबीर साहेब के बीजक की एक साखी कही—

मरते मरते जग मुवा, मुये न जाना कोय।
ऐसा होय के ना मुवा, जो बहुरि न मरना होय॥

सत जी ने कहा—कबीर साहेब ने तो इस एक साखी मे ही सब कुछ कह दिया है कि ससार मे मरते तो सब लोग हैं किन्तु ऐसा काम करके नही मरते कि पुनः मरना न पड़े।

सत हृदयराम जी महाराज हृदय के बड़ निर्मल, पवित्र और सरल सत थे। सादगी, पवित्रता के वे बड़े प्रेमी थे। 10 जनवरी 1998 मे उनके आश्रम मे गुरुदेव के जाने के बाद आपके वेष एव विचारो से वे इतना प्रभावित हुए कि उन्होने अपने आश्रम का नियम ही बना दिया कि बिना सफेद कपड़ा पहने आश्रम मे कोई प्रवेश नही कर सकता है।

15.

लीलाशाह जी की समाधि भूमि पर

सन् 1979 मे गुरुदव जी गुजरात के सत्सग कार्यक्रमो मे थे। उन्ही दिनो आपका त्रिदिवसीय सत्सग आदिपुर मे था। आदिपुर पश्चिमी गुजरात के कच्छ जिला मे पड़ता है। वहा पर श्री लीलाशाह जी महाराज नाम के एक वैराग्यवान सत रहते थे। उन्ही की समाधिभूमि पर गुरुदव का यह कार्यक्रम था। आपका प्रवचन चल रहा था, एक वृद्ध सज्जन आये। माथे पर चदन लगाये, धोती-कुर्ता पहने उनके वेषभूषा से ही लग रहा था कि ये कोइ कर्मकाण्डी ब्राह्मण हैं। वे पडाल मे ही एक बास के खभे के सहारे खड़े-खड़े पूरा प्रवचन सुनते रहे। गुरुदव को लगा कि शायद मेरे विचार इनको पसद न आये हो।

प्रवचन के बाद गुरुदव मच से उठकर उसी तरफ से निवास की ओर जाने लगे तो वे रास्ते मे मिले। सामने मिलते ही उन्होने नमस्कार किया और विनम्रतापूर्वक कहा—महाराज, आपके विचार समाज के लिए अत्यन्त हितकारी हैं। ऐसे ही विचारो की आज जरूरत है। आप हमे भी समय दोजिए।

गुरुदव ने कहा—जो हमारे विचारो को समझता है और उसकी लगन लगी रहती है तो मैं अपनी सुविधानुसार समय द पाता हू, इतना जल्दो तो सभव नही हो पायेगा। हम कोई पेशेवर प्रवक्ता तो नही हैं कि जहा कोई बुलाये वही चले जाये।

16.

मदर टेरेसा से मुलाकात

1974 ई0 की बात है गुरुदव जी उन दिनो कोलकाता भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के घर मे थे। एक दिन आप श्री प्रेम जी के साथ पारख प्रकाश पत्रिका के सम्बन्ध मे रत्नाकर प्रेस जा रहे थे। रास्ते मे एक बैनर लगा हुआ दिखा, जिसमे मदर टेरेसा और उनकी सस्था का नाम लिखा हुआ था। गुरुदव तुरन्त गाड़ी रुकवाये और श्री प्रेमप्रकाश जी के साथ अन्दर प्रवेश किये। पूछने पर पता चला कि मदर टेरेसा अभी यही हैं। गुरुदव जी ने उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त की तो लोगो ने मदर जी को अन्दर सूचित किया, वे आयी। आते ही वे बड़ी सरलता और आत्मीयता से मिली। कुशल समाचार पूछने के बाद सब लोग बैठे बाते करते रहे।

मदर टेरेसा की इस सस्था मे अनाथ, अपग, दखी बच्चे और बूढ़े सब प्रकार के लोग रहते हैं। जिनकी बहुत अच्छे ढग से सेवा होती है। गुरुदव जी मदर के साथ अन्दर घूमने भी गये। उस समय उनके उस 'निर्मल हृदय कक्ष' मे 150 बच्चे थे। दो बच्चे दो दिन के थे। अन्य सभी एक या डेढ़ वर्ष के अन्दर के थे। सुबह का समय था, बच्चो की मालिश हो रहो थी लेकिन कोई बच्चा रो नही रहा था। सभी नन्स बहने बड़े प्यार और स्नह से बच्चो की सेवा करती थी।

मदर ने कहा—जितनी हमारी नन्स बहने हैं उन सबके कमरो मे कोई पखा नही है, क्योकि उसी खर्चे से हम इन अनाथो की कुछ अन्य सेवा कर सकती हैं। जहा हम लोग बैठे हैं यह सार्वजनिक मिलने-जुलने की जगह है। इसलिए यहा पखा लगा दिया गया है। व्यक्तिगत रूप से किसी के कमरे मे पखा नही है। मदर ने यह भी कहा कि हम सबसे निष्पृह रहती हैं, इन्ही मे से लोग समय से घर वापस भी चले जाते हैं। जो वापस जाना चाहते हैं तो उनको रुकने के लिए बहुत आग्रह भी नही किया जाता।

17.

गुरुदेव जी और भदन्त आनन्द कौशल्यायन

सत श्री सनाथ साहेब के अनुरोध पर 1984 ई0 मे गुरुदेव जी महाराष्ट्र, नागपुर जिले के रघवापट्टी के कार्यक्रम मे गये। वहा से आपको नागपुर आकर

इलाहाबाद के लिए ट्रेन पकड़नी थी। आपने सोचा नागपुर मे भिक्षु श्री भदन्त आनद कौशल्यायन जी रहते हैं, उनसे मिल लिया जाये। अतः आप नागपुर आकर भदन्त जी से मिलने गये।

जब गुरुदेव सत समाज सहित भदन्त जी के पास पहुचे उस समय वे एक चौकी पर बैठे थे। जैसे ही वे गुरुदेव जी को देखे, स्वय उठकर चटाई बिछाने लगे। गुरुदेव जी और सभी सत भदन्त जी को नमस्कार किये, और सब लोग चटाई पर बैठ गये। बैठने के बाद भन्ते जी ने पूछा, यह चलता-फिरता विश्वविद्यालय किधर से आ रहा है?

गुरुदेव जी ने बताया, हम लोग महाराष्ट्र के कुछ कार्यक्रमो से आ रहे हैं। लौटते समय आपके दर्शन करने आ गये।

काफी देर तक भदन्त जी से गुरुदेव जी की बाते होती रही।

गुरुदेव जी की इच्छा थी कि कुछ पुस्तके भदन्त जी को भेट की जाये लेकिन उस समय गुरुदेव जी के पास पुस्तके लगभग समाप्त हो चुकी थी। कुछ दिनो के बाद आप इलाहाबाद कबीर पारख सस्थान से डाक द्वारा पुस्तके भेजवा दिये थे जिनमे कबीर दर्शन भी था। कबीर दर्शन पढ़कर आनन्द जी बहुत भावविभोर थे। उन्होने गुरुदेव जी को एक पत्र लिखा जिसका भाव इस प्रकार था—

आपका भेजा हुआ ग्रथ 'कबीर दर्शन' मुझे मिला। इस समय मेरे पास ऐसा कोई भी व्यक्ति नही है जो गथ को पढ़कर मुझे सुना सके। मेरी आखो मे मोतियाबिन्द है फिर भी धीरे-धीरे करके कबीर दर्शन पूरा पढ़ लिया हू। इसके एक-एक सदर्भ अत्यन्त मार्मिक एव महत्त्वपूर्ण हैं। मेरे विचार से इसके अनेक सदर्भों को आप अलग-अलग पुस्तकाकार रूप मे छाप दे तो इससे लोगो का बहुत हित होगा।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी समय-समय से भदन्त आनन्द कौशल्यायन जी की चर्चा करते हुए कहते थे कि ऐसा महापुरुष जो बौद्ध धर्म का उद्भट विद्वान, त्याग-वैराग्य सम्पन्न एक अच्छे सत, तेरह भाषाओ के पडित, इग्लैण्ड, श्रीलका, आदि अनेक देशो के विद्यालयो मे पढ़ाने वाले, जिसकी लगभग 75 पुस्तके हैं, गाधी-जवाहर के साथी जिसकी विद्वत्ता, साधना, व्यक्तित्व सब कुछ अद्वितीय था, फिर भी लोग उसको समझ नही पाते थे।

भदन्त जी का जीवन अत्यन्त सादा और सरल था। ठड के दिनो मे भी बहुत थोड़े कपड़े पहनते थे। उन दिनो भदन्त जी दीक्षा भूमि मे न रहकर नागपुर मे ही एक पारसी सज्जन द्वारा दिये गये बगले मे रहते थे।

18.

गुरुदेव जी और आनन्द मूर्ति गुरु मा

11 दिसम्बर, 2009 को आनन्दमूर्ति गुरु मा का फोन गुरुदव जी के फोन पर आया। दोनो ने आपस मे अभिवादन-प्रत्याभिवादन किया, और कुशल समाचार जानने के बाद मा जी ने कहा—साहेब, आपकी बीजक व्याख्या हमारे पुस्तकालय मे बहुत दिनो से रखी थी लेकिन उसे कभो स्थिरतापूर्वक मैंने पढ़ा नही था, अब की बार जब आश्रम आयी तो पुस्तकालय की सफाई करवा रही थी। अचानक बीजक व्याख्या पर मेरी नजर पड़ी, उसको लेकर मैंने पढ़ना शुरू कर दिया, फिर तो उसे छोडने का मन ही नही हो रहा है। कबीर साहेब की प्रतिभा, उनके सोचने का ढग, उनका साहस, उनकी निष्पक्षता अद्भुत थी। साथ-साथ उनकी बातो को आज की भाषा मे व्याख्यायित करने का आपका जो ढग है वह अति सरल और सराहनीय है।

उन्होने पूछा—साहेब, इस समय आप कहा हैं? हम आपसे मिलना चाहते हैं। गुरुदव ने कहा—अभी तो मैं इलाहाबाद आश्रम मे ही हू, लेकिन थोड़े ही दिनो के बाद मध्य प्रदश, महाराष्ट, गुजरात, राजस्थान आदि के कार्यक्रमो मे जा रहा हू। उन्होने हसते हुए कहा—आप तो द्र-द्र तक आग लगाते रहते हैं फिर हमे आपके दर्शन कैसे हो पायेगे, आप हमारे इस छोटे आश्रम मे कभी पधारने की कृपा करे। गुरुदव ने कहा—जब कभी सयोग पड़ेगा तो यह भी हो जायेगा। गुरु मा जी ने हसते हुए कहा—सयोग तो हमे और आपको ही बनाना पडगा, कोई भगवान तो बैठा नही है जो बना दगा। हमारा निवेदन यही है कि आप हमारे आश्रम मे भी दर्शन दने की कृपा करे, फिर जैसी आपकी मौज।

गुरुदव जब गुजरात, राजस्थान की तरफ से दिल्ली आश्रम कबीर जयती के कार्यक्रम मे आये तो वही से आनन्द मूर्ति गुरु मा के आश्रम मे जाना हुआ।

21 मई, 2010 दिल्ली से चलकर सुबह सात बजे तक आनन्द मूर्ति गुरु मा के आश्रम गन्नौर, सोनीपत (हरियाणा) पहुचे। वहा दोनो का आपसी शिष्टाचार अभिवादन हुआ। गुरुदव ने अपनी बहुत-सी पुस्तके दो। पुस्तके पाकर वे हर्षित हो गयी। उन्होने कहा—पुस्तके तो मेरे आभूषण हैं, आपने मेरे लिए अमूल्य धन द दिया। जब मेरे पास कोई वाणी का व्यापारी आ जाता है तो मैं उसके सामने कबीर साहेब के दो-चार दोहे रख दती हू और कहती हू कि बताओ, इसका क्या अर्थ है? फिर उसकी जबान बन्द हो जाती है।

उन दिनो उनके आश्रम मे विद्यार्थी बच्चो का एक शिविर चल रहा था, उन्होने गुरुदव जी के लिए भी निवेदन किया कि आप भी वहा पधारे और दो शब्द आशीर्वाद के रूप मे बच्चो को सुनाये।

निश्चित समय पर गुरुदव सभागृह मे पधारे, कुछ समय तक आप उनके विचारो को श्रवण करते रहे, फिर अन्त मे गुरुदव जी भी कुछ अपने विचार प्रस्तुत किये।

गुरुदव जी के प्रवचन के बाद मा जी ने सक्षेप मे गुरुदव जी का तथा आपके आश्रम, समाज, साहित्य का परिचय दिया।

शाम को पुनः वे गुरुदव के पास आयी और काफी दर तक ज्ञान चर्चा होती रही। गुरुदव ने कहा—हमे अपनी बाते कह दना है, किन्तु यह नही मानना चाहिए कि हम सबका सुधार कर दगे। इतनी बात सुनकर वे खुश हो गयी। उन्होने कहा—इसे हम स्वर्ण अक्षरो मे लिख सकते हैं कि इस ससार का पूरा सुधार नही किया जा सकता। हम यही मानते हैं कि ऐ लोगो! तुम हमारे पास आते हो तो आओ, तुम्हारे साथ समय बरबाद करने के लिए हमारे पास काफी समय है। हम तुम्हे कुछ सुनाते हैं तो यह नही मानते हैं कि तुम सुधर ही जाओगे। हम यह मानते हैं कि हम अपना अभ्यास कर रहे हैं। गुरुदव के पास से चलते समय उन्होने कहा—साहेब! हम आपको अपना ससार दिखा दना चाहते हैं। गुरुदव ने कहा—ठीक है शाम को छह बजे के बाद घूमने चलूगा।

आनन्द मूर्ति गुरु मा दो दिनो मे गुरुदव के पास लगभग चार-पाच घटे तक बैठी। वे गुरुदव के निष्पक्ष, तर्कपूर्ण, अधविश्वास-चमत्काररहित विचार खूब पसद करती हैं, क्योकि वे स्वय ऐसा जीवन जीती हैं। वे किसी समाज की झूठी मान्यता की पूछ पकड़कर चलना पसद नही करती।

19.

ग़ुरुदेव और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को मुलाकात

गुरुदेव जी पुस्तक प्रकाशन के उद्देश्य से बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर के बुलानाला स्थित विश्वेश्वर प्रेस काशी मे रह रहे थे। यही सन् 1957 से लेकर 1975 तक आपकी पुस्तके छपती रही।

उन दिनो गुरुदेव जी के पास श्री रामलाल जी आये हुए थे। श्री रामलाल जी बस्ती जिला, बभनान बाजार के रहनेवाले, गुरुदेव के अनन्य प्रेमी भक्त हैं। सन् 1969 का समय था। बीजक टीका की छपाई चल रही थी। एक दिन सुबह गुरुदेव जी रामलाल जी को साथ लेकर घूमने निकले।

गुरुदेव जी तथा रामलाल जी रिक्शा से हिन्दू विश्वविद्यालय देखने गये। विश्वविद्यालय की सड़क पर रिक्शा चल रहा था। पास लॉन मे एक भव्य भवन दिखायी पड़ा, अन्दर फूलो की क्यारिया सजी हुई थी। गेट पर लिखा था—'डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी' गुरुदेव जी ने जैसे ही द्विवेदी जी का नाम पढ़ा तुरन्त रिक्शावाले को रोका और उसे पैसे देकर दोनो वही उतर पड़े।

दरबान से गुरुदेव ने कहा—हम द्विवेदी जी से मिलना चाहते हैं। दरबान ने कहा—यह फार्म है। इसमे आप अपना नाम, पता और मिलने का उद्देश्य भर दीजिए। तब मैं उन्हे बताऊगा। इसके बाद फिर वे मिलेगे।

गुरुदेव ने कहा—यह सब छोड़ो और जाकर कह दो कि एक साधु मिलने आये हैं। वे आपसे मिलना चाहते हैं। दरबान ने जाकर बताया।

द्विवेदी जी ने कहा—ठीक है, बुला लाओ।

गुरुदेव अन्दर आ गये। द्विवेदी जी कमरे से निकलकर बरामदे मे हाथ जोड़े खड़े थे। गुरुदेव जी ने भी हाथ जोड़कर प्रत्याभिवादन किया। द्विवेदी जी गुरुदेव जी को अन्दर स्वागत कक्ष मे ले जाकर बैठाये। कुछ देर बाते होती रही।

गुरुदेव जी ने पूछा—आप 'कबीर' नाम की पुस्तक के परिशिष्ट मे लिखे हैं कि पारख पर भी कुछ लिखूगा लेकिन लिखे नही।

द्विवेदी जी ने कहा—क्या लिखू? कोई पढ़ता तो है नही।

गुरुदेव जी ने कहा—आपके साहित्य खूब पढ़े जाते हैं।

उन्होने कहा—जितना चाहिए उतना कहा लोग पढ़ते हैं? हा, तबसे तो बड़े-बड़े प्रपच मे फस गया। करीब 15-20 मिनट तक बाते होती रही। उन्होने घड़ी की ओर देखा, गुरुदेव समझ गये कि द्विवेदी जी के पास समयाभाव है। आप नमस्कार करके रामलाल जी के साथ बाहर आ गये।

कुछ महीने के बाद आप अपनी बीजक टीका छपने पर उसकी एक प्रति उनके पास भेजे। बीजक टीका पढ़कर वे काफी प्रसन्न थे। इसके चार महीने बाद वाराणसी सस्कृत विश्वविद्यालय मे कबीर विचार गोष्ठी के अवसर पर मुलाकात हुई जिसमे आचार्य परशुराम चतुर्वेदी अध्यक्ष थे।

20.
गुरुदेव जी और डा0 ब्रजलाल वर्मा

अनेक भाषाओ के विद्वान, जीवनभर साहित्य की सेवा करनेवाले लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश के सदस्य रहे डां० ब्रजलाल वर्मा का घर तो कही अन्य

जगह था लेकिन आपका विशेष निवास कानपुर मे हुआ करता था। एक बार आप कबीर पर कुछ लिखना चाहे। आपके एक मित्र हैं डां० प्रकाश द्विवेदी जो अवध के रहनेवाले हैं। उन्होने कहा—कबीर पर लिखने के लिए उनके विषय मे अध्ययन करना जरूरी है।

वर्मा जी—मैंने बड़थ्वाल जी को पढ़ा, हजारीप्रसाद द्विवेदी को पढ़ा, परशुराम चतुर्वेदी को पढ़ा, डां० रामकुमार वर्मा को पढ़ा, इन विद्वानो को पढ़ने के बाद और बाकी क्या रहता है? इनके अलावा कबीर पर किसी ने कुछ लिखा भी नही है।

प्रकाश द्विवेदी—इन विद्वानो के अलावा एक लेखक और हैं जो इन सबसे कुछ हटकर हैं। वे हैं सत श्री अभिलाष साहेब। क्या आपने उनको पढ़ा?

वर्मा जी—ये कौन हैं?

प्रकाश द्विवेदी—ये कबीर पर एक महान चितक और सत हैं।

वर्मा जी—अरे, द्विवेदी जी, इन विद्वानो को पढ़ने के बाद सत को क्या पढ़ना! ये लोग तो अपनी पथाही की बात करते रहते हैं।

द्विवेदी जी—आप एक बार उनको पढ़कर तो देखे। कबीर पर लिखने के लिए अगर आप अभिलाष साहेब को नही पढ़े तो कुछ नही पढ़े।

वर्मा जी—अच्छा, मैं तो आज तक उनको जानता नही। ऐसा है तो उनका साहित्य उपलब्ध कराइये।

वर्मा जी के ऐसा कहने पर द्विवेदी जी ने इलाहाबाद आश्रम पर गुरुदेव को एक पत्र लिखा। गुरुदेव उस समय गुजरात के कार्यक्रमो मे थे। द्विवेदी जी का पत्र इलाहाबाद से लौटकर गुरुदेव के पास गया। आपने फोन से ही आश्रम मे बता दिया कि अमुक-अमुक पुस्तके वर्मा जी को कानपुर भेज दो। साथ मे 'कबीर पर शुक्ल की और मेरी दृष्टि' भी भेज देना। गुरुदेव की आज्ञा पाते ही सतो ने तत्काल वर्मा जी को कानपुर पुस्तके भेज दी।

गुरुदेव की पुस्तके पाते ही वर्मा जी ने सबसे पहले 'कबीर पर शुक्ल की और मेरी दृष्टि' पढ़ना शुरू किया। उस पुस्तक को पाते ही वे एक ही बार मे पढ़ डाले और उससे काफी प्रभावित हुए। अब तो वे आपके प्रति सदैव के लिए श्रद्धावान हो गये। द्विवेदी जी से उन्होने कहा—द्विवेदी जी! महाराज के अब मुझे दर्शन कराइये।

1995 के वार्षिक अधिवेशन मे द्विवेदी जी वर्मा जी को लेकर इलाहाबाद कबीर आश्रम आये। उस समय वर्मा जी को हृदय का बाईपास आपरेशन हुआ

था। इसलिए वे सीढ़ी पर चढ़ नही सकते थे। इसलिए आश्रम मे नीचे ही एक कक्ष मे उनको बैठाया गया। गुरुदेव जी स्वय ऊपर से नीचे आ गये। वर्मा जी ने कहा—मैं महाराज जी के चरणो मे अपना सिर रखना चाहता हू।

द्विवेदी जी—महाराज जी ऐसा पसन्द नही करते हैं लेकिन आपका आग्रह है तो ठीक है। गुरुदेव के न चाहते हुए भी वे आपके चरणो मे साष्टाग दण्डवत किये। उठते ही उन्होने कहा—आपके सामने मेरी सारी विद्या भहराकर गिर गयी। इसके बाद वे बैठे और गुरुदेव से काफी देर तक बाते होती रही। तभी से वर्मा जी गुरुदेव जी से अत्यन्त घुल-मिल गये। वे जब भी आते पहले कुछ देर तक हसी-विनोद की बाते करते। इसके बाद शात होकर बैठ जाते और गुरुदेव की बाते बड़ी गभीरता से श्रवण करते थे।

एक बार डा0 वर्मा जी गुरुदेव की 'गीतासार' पुस्तक पढ़े। उसकी आलोचनात्मक भूमिका से वे अत्यन्त भावविभोर हो गये। उन्होने कानपुर से ही आपको फोन किया। कुशल-मगल पूछने के बाद वर्मा जी ने कहा—महाराज जी, आपसे मुझे बड़ी ईर्ष्या हो रही है।

गुरुदेव—क्यो भाई, क्या बात है?

वर्मा जी—आप जो कुछ लिखते हैं उसम कुछ छोड़ते नही हैं कि कोई दूसरा भी उस विषय पर थोड़ा लिख सके। फिर उन्होने कहा—यह गीतासार की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसको आप अलग से भी छपा दीजिए। उनके कहने से ही गुरुदेव ने 'श्रीकृष्ण और गीता' नाम से उसको अलग से छपा दिया। जिसके आज अनेक सस्करण निकल चुके हैं।

एक बार गुरुदेव जी का कार्यक्रम कानपुर मे था। वर्मा जी वहा आये थे। शाम को गुरुदेव जी के प्रवचन के बाद आपके प्रति उन्होने अपनी भावना प्रगट किया। उन्होने कहा—सज्जनो, किसी विषय को ऊपर-ऊपर लिखने-पढ़नेवाले तो बहुत लोग मिल जायेगे लेकिन जिन महापुरुष के समक्ष आप लोग बैठे हैं इनके समान गहराई से अध्ययन करनेवाले, खोज और तर्कपूर्ण ग्रथ रत्न देनेवाले कम हैं। वर्मा जी का शरीर 2010 मे छुट गया।

21.

गुरुदेव जी और महर्षि महेश योगी

सन् 1965 मे प्रयाग का महाकुम्भ मेला था। इसमे गुरुदेव के गुरुभाई सत श्री निष्पक्ष साहेब जी का कबीर आश्रम चकबसवा, फतेहपुर (उ0 प्र0) कबीर

सत्सग शिविर लगा हुआ था। जिसमे उन्होने आपको भी निमत्रित किया था। श्रद्धेय सत श्री निष्पक्ष साहेब के सत्सग शिविर मे प्रतिदिन गुरुदेव का प्रवचन चलता था। शाम को खाली समय मे आप कुछ सतो को साथ लेकर दूसरे सतो-विद्वानो के पडालो मे उनके विचार श्रवण करने जाया करते थे।

एक दिन गुरुदेव जी महर्षि महेश योगी के शिविर मे पहुच गये। उस समय उनका प्रवचन चल रहा था। गुरुदेव की उस समय 'सत महिमा' नाम की पुस्तक प्रकाशित हुई थी। आपने योगी जी को इस पुस्तक की लगभग चालीस प्रतिया दी। इस पुस्तक से योगी जी बहुत प्रभावित हुए।

दूसरे वर्ष सन् 1966 मे ऋषिकेश के परमार्थ निकेतन मे आपका प्रवचन था। वही पास मे चौरासी कुटिया है। उन दिनो योगी जी वहा पर निवास कर रहे थे। एक दिन गुरुदेव अपने सतो के साथ उनके दर्शन करने गये। गुरुदेव ने योगी जी को कुछ फल आदि समर्पित किय। उनके साधक ने योगी जी को बताया कि परमार्थ निकेतन मे महाराज जी का प्रवचन चल रहा है। इसलिए उनको जल्दी जाना है। योगी जी ने हसते हुए बड़ी सरलतापूर्वक आपसे कहा—थोड़ा यहा भी आप प्रवचन कर दे।

गुरुदेव—महाराज, यहा तो मैं आपके दर्शन करने आया हू, प्रवचन करने नही। उस दिन तो आप वहा से जल्दी ही चले आये। जब दूसरे दिन गये तो उनके पास कुछ भारतीय लोग बैठे प्रश्न कर रहे थे। एक सज्जन लखनऊ के थे, उन्होने पूछा—महाराज, मन वश मे कैसे हो?

योगी जी ने कहा—यह तो हजारो वर्षो स कहा जाता है कि मन जीतो, इन्द्रिय जीतो, विषय त्यागो। लेकिन यह सब कुछ करने की जरूरत नही, यहा तीन दिन के ध्यान से सब ठीक हो जाता है। इसके बाद गुरुदेव जी उठकर प्रणाम करके चलने लगे तो उनका एक साधक आपका हाथ पकड़कर रोकने लगा। उन्होने कहा—महाराज, आप भी कुछ पूछिये।

गुरुदेव जी ने कहा—जो मैं सुना हू उसी का मनन करूगा। लेकिन वे बहुत आग्रह करने लगे कि पूछिये महाराज, कुछ तो पूछिये। तब गुरुदेव जी ने कहा—महाराज—ऋषियो ने साधक के लिए "आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः...." जो कहा है।

योगी जी इस मत्र को तुरन्त समझ गये, क्योकि वे जानते थे। लेकिन इसके जवाब मे उन्होने सकारात्मक रुचि नही लिया।

यह मत्र उपनिषद् का है, जो इस प्रकार है—

आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृति लम्भे सर्वग्रंथीनां विप्रमोक्षः॥

(छादोग्योपनिषद्)

अर्थात, ''आहार शुद्ध होने से अत:करण शुद्ध होता है, अत:करण शुद्ध होने से स्मृति अचल हो जाती है और स्मृति स्थिर हो जाने से सारी ग्रथिया पूर्णत: कट जाती हैं।''

यहा आहार है शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध, इन्द्रियो से जो हम ग्रहण करते हैं और मन से जो अच्छा-बुरा सोचते हैं।

महेश योगी जी का 05.02.2008 को नीदरलैंड मे निधन हो गया। इलाहाबाद सगम के दक्षिणी तट पर अरैल मे आपका वेद विद्या आश्रम है। उनके पार्थिव शरीर को नीदरलैंड से हवाई जहाज द्वारा इलाहाबाद (भारत) लाया गया और 11 फरवरी को अत्येष्टि सस्कार हुआ जिसमे देश-विदेश के हजारो गणमान्य राजनेता, धर्मनेता एव श्रद्धालु भक्त लोग उपस्थित थे।

22.

गुरुदेव जी और पथिक जी महाराज

मुगेर जिला के असरगज बाजार मे गुरुदव जी का त्रिदिवसीय सत्सग कार्यक्रम चल रहा था। उस समय पथिक जी महाराज एक भक्त के घर थोड़े समय के लिए पधारे हुए थे। वहा महाराज जी बैठे शिक्षा-उपदश कर रहे थे।

गुरुदव जी को जब पता चला तो आप उनके दर्शनार्थ गये। आपको दखते ही महाराज जी खड़े हो गये। गुरुदव जी ने कहा—महाराज जी, यह आप क्या कर रहे हैं, आप बैठे। लेकिन वे माने नही। गुरुदव को अपनी कुर्सी पर बैठाकर स्वय दसरी कुर्सी पर बैठे। थोड़ी दर कुछ बाते हुई, इसके बाद गुरुदव वापस होने लगे। चलते समय आपने अपने मच के लिए भी उन्हे आमत्रित किया। पथिक जी महाराज आपके आग्रह को स्वीकार कर मच पर भी पधारे।

गुरुदव जी ने उनको अपनी दायी तरफ बैठाया, कुछ स्वागत हुआ। इसके बाद उनके सामने माइक लगवाते हुए आपने कहा—सज्जनो, हमारे बीच एक निर्मल ज्ञान वयोवृद्ध सत पधारे हुए हैं। आप सब उनके विचारो से लाभान्वित हो।

बोलने से पूर्व महाराज जी ने गुरुदव जी से पूछा—कितना समय बोलू? गुरुदव जी ने कहा—महाराज जी! पूरा समय आपका है। उन्होने हसते हुए

कहा—सज्जनो, दखो सत कितने चतुर हैं, हमे ही पूरा समय द दिये। एसे स्वभाव वालो को कहते हैं सत। लोग तो भयभीत होते रहते हैं कि हमारे मच पर कोई द्सरा बोले तो कही उसी का प्रभाव न पड़ जाय।

पथिक जी महाराज को द्सरी जगह कार्यक्रम मे जाना था, थोड़ी दर बोलकर वे प्रस्थान कर गये तत्पश्चात गुरदव जी न सभा को सबोधित किया।

23.

गुरुदेव जी से एक वैष्णव सत की वार्ता

गुरुदेव जी का कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के गाडा जिला मे चल रहा था। W{, W| नवम्बर 2006 को आप सत-समाज सहित इटियाथोक नाम के गाव मे थे। उस समय ठड खूब जोरो से पड़ रही थी। अन्य समय मे तो गुरुदेव प्रातः चार बजे ही टहलने के लिए बाहर चले जाया करते हैं कितु विशेष ठड के दिनो मे आप ब्राह्ममुहूर्त मे घूमने नही जाते हैं। धूप निकलने के बाद छत पर या आगन मे टहल लिया करते हैं। वहा पर आपका निवास गाव के बाहर एक स्कूल मे था। आप सुबह का जलपान करने के बाद बरामदे मे टहल रहे थे। पचहत्तर वर्षीय एक वैष्णव सत उसी रास्ते से होकर निकले। आपसे अपरिचित थे लेकिन आपका नाम वे सुन रखे थे और आपसे मिलना चाहते थे। लेकिन आपको वे पहचान न पाने के कारण आगे बढ़ गये। गाव मे लोगो से पूछने पर पता चला और वे पुनः वापस आ गये और सामने आकर प्रणाम करके बाते करने लगे। गुरुदेव जी भी वही खड़े-खड़े उनसे काफी देर तक बाते करते रहे।

वैष्णव सत ने कहा—कुछ लोग कहते हैं कि हम ही सब कुछ हैं। हमसे अलग कही कोई नही है।

गुरुदेव जी—ऐसी बात नही है। उपासना और दर्शन की अनेक शाखाए हैं लेकिन मुख्य रूप से दो हैं—एक विश्वासवादी और दूसरी विवेकवादी। विश्वासवादी कहता है कि परमात्मा हमसे अलग है इसलिए उसकी उपासना करना है। फिर उसमे मिलकर आनन्दित होना है। विवेकवादी कहता है कि आत्मा ही परमात्मा है, मिलना किसी से नही है। अपने मन की सारी वासना को छोड़ना है। वासना-त्याग के बाद आत्मा स्वय अपने आप पूर्ण है। उसको मिलना किससे? ये दोनो धाराए सदा से चली आ रही हैं।

वैष्णव सत—महाराज, हम लोग तो यही मानते हैं कि भगवान से मिलकर कल्याण है। हम अपने को भगवान कैसे मान ले?

गुरुदेव जी—यह आपकी भावना ठीक है लेकिन दूसरो की भावना वैसे है कि आत्मा ही परमात्मा है। अलग कही कोई परमात्मा नही है। यही वेदान्त कहता है, साख्य भी यही कहता है, सूफी सतो का भी यही मत है, कबीर साहेब तो झाराझार यही बात कहते हैं। और विश्वासवादी भी अत मे विवेकवादी बनते हैं। क्योकि यही अतिम धरातल है। कहा तक बाहर परमात्मा को पुकारते रहेगे?

गुरुदेव की ऐसी साफ साधनापूर्ण बातो से वैष्णव सत बहुत प्रभावित और सतुष्ट हुए। उनको बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होने कहा—महाराज, ऐसा कोई समझाता नही है। इसके बाद गुरुदेव जब प्रवचन स्थल पर गये तो वहा भी वे सत बैठे थे और खूब गद्‌गद होकर आपके विचारो को श्रवण किये।

24.

गुरुदेव और नाथाभाई

गुजरात बड़ौदा जिला मे कई गावो को मिलाकर पाल क्षेत्र कहा जाता है। इन गावो मे अधिकतम लोग भक्त हैं, ये सभी रामकबीर सम्प्रदाय को मानते हैं। रामकबीर मत कबीरपथ की ही एक शाखा है। इस परम्परा को चलानेवाले सत ज्ञानी जी महाराज थे। ज्ञानी जी महाराज राजस्थान जैसलमेर के राजकुमार थे। ये विवाह मडप से उठकर और घर छोड़कर चल दिये थे और गुजरात आकर रामानन्द सम्प्रदाय के एक वैष्णव सत श्री खोजी जी महाराज के पास रहने लगे थे।

काफी दिनो तक वहा रहने के बाद भी उनकी जिज्ञासाओ का समाधान नही हुआ। गुरुदेव स पूछने पर भी वे बता नही सके। उन्ही दिनो गुजरात भरूच जिले मे नर्मदा नदी के तट पर तत्त्वा-जीवा नामक दो ब्राह्मण बन्धुओ के आतिथ्य मे सद्‌गुरु कबीर साहेब पधारे हुए थे। ज्ञानी जी से उनके गुरुदेव ने कहा—इस समय कबीर बड़ मे कबीर साहेब पधारे हुए हैं। तुम उनके पास जाओ, वे ही तुम्हारी जिज्ञासाओ का समाधान कर सकेगे।

नर्मदा के तट पर कबीर बड़ के नीचे सद्‌गुरु कबीर साहेब विराजमान थे। ज्ञानी जी महाराज वहा गये और सद्‌गुरु कबीर से उनकी सारी जिज्ञासाओ का समाधान हुआ। उसी समय ज्ञानो जी महाराज के मुख से सद्‌गुरु कबीर साहेब के लिए उद्‌गार निकला—

ज्ञानी का गुरु कहे कबीर।
वटक वृक्ष की मांझ में देखि भया मन थीर।।
जन ग्यानी का संसा मिटैया सतगुरु मिल्या कबीर।।

ज्ञानी जी महाराज पहले अयोध्याधीश महाराज श्री राम को इष्ट मानते थे किन्तु परोक्ष इष्ट से उनको पूर्ण सतोष नही हुआ। जब सद्‌गुरु कबीर मिले तो उन्होने बताया कि वह राम तो तुम स्वय हो। इस प्रकार सद्‌गुरु कबीर से इन्हे अपरोक्ष आत्मा 'राम' का बोध हुआ। जो राम मेरा स्वरूप ही है उसका बोधदाता सद्‌गुरु कबीर साहेब हुए तभी से उन्होने रामकबीर मत चलाया। इसे पीछे जीवन जी महाराज ने विस्तार दिया। उसी रामकबीर मत को माननेवाले पाल क्षेत्र के अधिकतम लोग हैं।

पाल क्षेत्र मे एक गाव है नाना अमादरा। यही के रहनेवाले भक्त नाथाभाई थे। नाथाभाई बाल ब्रह्मचारी और आजीवन सतो की सेवा करने वाले थे। नाथाभाई महाराज श्री राघव साहेब, सद्‌गुरु श्री लाल साहेब, सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब और सद्‌गुरु श्री रामस्वरूप साहेब, पूज्य श्री हनुमान स्वामी आदि महान सतो को अपने घर बुलाकर उनकी सेवा-सत्सग का लाभ लेते रहे।

1972 ई0 मे गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी को पहली बार गुजरात लानेवाले नाथाभाई ही हैं। 1972 के नवम्बर (कार्तिक) मे सद्‌गुरु श्री पूरण साहेब की पुण्य तिथि समारोह मे गुरुदेव बुरहानपुर आये हुए थे। उसी मे गुजरात से भक्त नाथाभाई भी आये हुए थे। गुरुदेव से नाथाभाई पहले से निश्चित कर लिये थे कि बुरहानपुर आने पर वही से गुजरात चलना सम्भव हो सकता है। बुरहानपुर कबीर निर्णय मदिर का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद नाथाभाई के साथ गुरुदेव अपने सत समाज सहित गुजरात गये। उस समय आप छह महीना वहा रहे। एक महीना तो मात्र नाथाभाई के ही गाव मे रहे।

* * *

एक बार गुरुदेव प्रवचन कर रहे थे। आपके विचारो मे तो वेद, शास्त्र, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत, भागवत, कुरान, पुरान, बुद्ध वाणी, जैन शास्त्र आदि समस्त साहित्यो का प्रमाण रहता था। इन सबको सुनकर एक दिन नाथाभाई आश्चर्यपूर्वक गुरुदेव से नाटकीय ढग से कहने लगे—ओह! ऐसे विचार, ऐसे प्रवचन तो लाखो रुपये देकर भी नही मिल सकते। लेकिन साहेब आपका मोक्ष कैसे होगा? इतना भरा है, इतना ज्ञान है कि ओह! कहा से निकलता है, फट-फट-फट! उनका कहना भी जरा अद्‌भुत रहता था।

गुरुदेव ने कहा—तू भी कुछ याद किये है तो तेरा भी तो मोक्ष नही होगा।

नाथाभाई समझते थे कि ज्ञान-विचार की बात याद करने मात्र से किसी का मोक्ष नही रुक सकता बल्कि मोक्ष रुकता है अबोध, विषयासक्ति और अज्ञान से, लेकिन ऐसा कहकर वे एक प्रकार से विनोद किये थे।

31 जनवरी, 1997 ई० को भक्तराज श्रीनाथाभाई का उन्ही के घर मे निधन हुआ।

25.

गुरुदेव जी और आत्माप्रसाद अस्थाना

गुरुदेव जी का इलाहाबाद मे जब पदार्पण हुआ तभो से आत्माप्रसाद अस्थाना जी से आपका सम्पर्क हो गया था। अस्थाना जी अपने जीवन काल मे ए0जी0 आफिस मे सेवारत थे। गुरुदेव जी एव सतो के प्रति आपका प्रेम था। आप एक अच्छे स्वतत्र चितक थे। गुरुदेव के विचार एव सिद्धान्त से आपके विचारो मे कुछ भिन्नता रही।

आत्माप्रसाद अस्थाना जी बोलने मे बड़े कुशल थे। जब भी गुरुदेव जी के पास आप आते थे तो जो-जो याद आता था सब बोलते जाते थे। इसका वे स्वय भी एहसास करते थे कि मैं ज्यादा बोल जाता हू। एक बार जब गुरुदेव जी इलाहाबाद आश्रम मे विशेष ध्यान शिविर लगवाये तो वे आख चमकाकर गुरुदेव जी से कहने लगे—आप साधू लोग आख मूदकर बैठ तो बैठे लेकिन गृहस्थ-भक्तो को आप क्यो परेशान करते हैं? गुरुदेव शात होकर उनकी यह बात सुन लिये और मुस्कुरा दिये। धीरे-धीरे गुरुदेव जी के शील, सरलता एव नम्रता आदि सद्‌गुणो का उन पर गहरा असर पड़ा। वे स्वय आपके गथो का अध्ययन करने लगे। धीरे-धीरे ध्यानाभ्यास भी करने लगे। फिर तो वे स्वय ध्यान-साधना के आनन्द का अनुभव करते थे। एक बार प्रसन्न होकर गुरुदेव जी से कहने लगे—ससार की सारी इच्छा-कामना छोड़कर अपने आप की दशा मे रहने मे ही आनन्द ह। अब मुझे कोई दुख नही है।

अस्थाना जी इतिहास के अच्छे ज्ञाता थे। आप सस्थान के सतो को दो बार इतिहास पढ़ाये थे।

स्वभाव एव विचारो की भिन्नता होने के बाद भी गुरुदेव के प्रति उनका प्रेम बना रहा। एक बार गुरुदेव जब छत्तीसगढ़ प्रवास से इलाहाबाद आये तो अस्थाना जी और उनकी धर्मपत्नी मिलन आ गये। उन दिनो अस्थाना जी शरीर से काफी कमजोर थे। उन्होने कहा—हम जैसे ही सुने कि साहेब आये हैं वैसे ही तुरन्त

यहा आने की तैयारी कर लिये। हमे लगा कि कही हमसे पहले ही साहेब जी हमारे पास न आ जाये। गुरुदेव ने कहा—आज प्रीतमनगर आश्रम म रविवारीय सत्सग है। मैं सोच ही रहा था कि यहा से कुछ समय पहले चलूगा, आपसे मिलने के बाद तब सत्सग म जाऊगा लेकिन आप ही आ गये। जब वे वापस चलने लगे तो गुरुदेव स्वय उनका हाथ पकड़कर कुर्सी से उठाये और सहारा देकर बाहर गाड़ी तक लाये।

गुरुदेव जी तो सब प्रकार के स्वभाव-सस्कार के लोगो से व्यवहार निपटाने मे अत्यन्त कुशल हैं। आपने जीवन भर मनुष्यो का ही अध्ययन किया है कि किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। आप सामनेवाले व्यक्ति मे कुछ भी पात्रता देखते हैं तो उसको सब प्रकार से निभाने की चेष्टा करते हैं।

अस्थाना जी गुरुदेव जी एव सस्थान के सतो के प्रति बड़े आस्थावान थे। आपकी निष्ठा, समझदारी एव प्रेम-भाव की प्रशसा समय-समय से गुरुदेव जी स्वय करते थे। आपका 9 अगस्त, 2010 को निधन हो गया। कबीर पारख सस्थान से प्रकाशित त्रमासिक पत्रिका 'पारख प्रकाश' मे अस्थाना जी के लेख बराबर छपते रहे। उनके लेख साप्रदायिकता के विरोध मे, सूफी चिन्तन और कबीर चिन्तन से ओत-प्रोत रहते थे। उन्ही लेखो का सकलन एक पुस्तक के रूप मे आया, जिसका नाम—'कबीर : एक गहरा चिन्तन' है। जिसकी भूमिका गुरुदेव जी ने लिखी है।

26.

गुरुदेव जी और भक्त श्री रामलाल गुप्त

श्री रामलाल गुप्त जी बस्ती जिला के बभनान बाजार के एक भक्त सज्जन हैं। आप सन् 1960 मे गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के सम्पर्क मे आये। इनकी श्रद्धा, भावना और लगन को देखकर अभिलाष साहेब जी ने अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी से इनको दीक्षा दिलायी। रामलाल जी श्री अभिलाष साहेब के अनन्य प्रेमी हो गये। वे जब कभी सतो मे आते तो आपके बिना उन्हे सब कुछ अधूरा लगता। रामलाल जी बिलकुल खुलेदिल के और साफ कहनेवाले सरल व्यक्ति हैं।

रामलाल जी जब भी सतो म आते तो वे अपना आसन भी पूज्य श्री साहेब जी के पास ही लगाते। जितना बन सकता उन्ही के कमरे मे रहना पसन्द करते थे।

*　　　*　　　*

बात उन दिनो की है जब पूज्य गुरुदेव जी काशी मे रहकर पुस्तको का प्रकाशन कर रहे थे। भक्त रामलाल जी आपके पास आये हुए थे। एक दिन गुरुदेव जी ने उनसे कहा—रामलाल जी, जाओ कही घूमना चाहो तो घूम आओ।

रामलाल जी ने कहा—साहेब जी, आपके बिना हमारा घूमना, घूमना नही होगा। आपके बिना हम कही नही जायेगे।

रविवार के दिन भोजन के बाद गुरुदेव जी और रामलाल जी सारनाथ-भ्रमण के लिए निकले। एक रिक्शा पर दोनो बैठे जा रहे थे। चलते-चलते एक सुन्दर भवन दिखाई दिया। रामलाल जी ने कहा—देखिये साहेब, देखिये, कितना सुन्दर भवन है। गुरुदेव शात रहे, आगे बढ़े, सुन्दर फूलो से भरा बाग मिला। उसे देखकर रामलाल जी ने कहा—देखिये साहेब, दखिये कितना सुन्दर बाग है और कितना अच्छा लगता है।

गुरुदेव मुस्कुरा कर रह गये। और आगे बढ़े तो एक गाड़ी दिखाई दी। रामलाल जी ने कहा—देखिये साहेब, यह कितनी अद्भुत गाड़ी है।

पूज्य गुरुदेव जी ने कहा—इन दृश्यो मे क्यो आकर्षित होते हो? सब लकड़ी, मिट्टी, पानी और ईंट-पत्थर तो है। तब रामलाल जी ने कहा—वाह साहेब! आप तो सब पर पानी फेर दिये।

गुरुदेव ने कहा—बिना सब पर पानी फेरे अपने पर पानी नही चढ़ेगा। इन ससारी चीजो पर पानी चढ़ाते-चढ़ाते (महत्त्व देते-देते) हम अपने को धोखा देते रहे। अब सबसे मुड़कर अपने महत्त्व को समझना है। इन समस्त कृत्रिम चीजो के कर्ता तुम स्वय श्रेष्ठ हो।

*   *   *

एक बार पूज्य गुरुदेव जी मुहम्मदनगर मे शकर भक्त की कुटिया मे विराजमान थे। भक्त रामलाल जी उस समय वहा पर आये हुए थे।

मुहम्मदनगर से श्री अभिलाष साहेब जी को सद्गुरु श्री विशाल साहेब के दर्शन करने जाना था। साथ मे सत श्री शरणपाल साहेब जी और भक्त रामलाल जी भी थे। बाराबकी जिले मे बुढ़वल स्टेशन पर तीनो लोग गाड़ी से उतरे, छह किलोमीटर दूर एक गाव मे जाना था। तीनो लोग अपना-अपना सामान लिये पैदल चल रहे थे। रामलाल जी थोड़े मोटे शरीर के थे इसलिए थोड़ी दूर चलने पर वे हाफने लगे। गुरुदेव जी ने उनसे कहा—देखो, जिसके पास सामान कम रहता है उसको चलने मे कितना आराम रहता है। तब रामलाल जी ने कहा—हा

साहब, यह बात तो है। कम सामान रहने पर कही भी आराम से जाया जा सकता है।

गुरुदेव ने कहा—इसीलिए मैं थोड़ा सामान रखता हू।

आगे रास्ते म एक नवयुवक मिल गया। उसको भी वही जाना था जहा आप लोग जा रहे थे। उसने अपनी साइकिल पर तीनो लोगो का सामान रखकर निश्चित स्थान तक पहुचा दिया।

27.

गुरुदेव जी और भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी की प्रथम गद्यात्मक पुस्तक विवेक प्रकाश टीका है। यह पुस्तक अत्यन्त मार्मिक और हृदयस्पर्शी है।

कलकत्ता के भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी इसी विवेक प्रकाश टीका को पढ़कर गुरुदेव जी से जुड़े हैं। श्री प्रेमप्रकाश जी और उनकी माता श्रीमती विद्यावती देवी जब इस पुस्तक को पढ़े तो उन्होने सोचा कि इस लेखक से मिलना चाहिए।

उन्होने कबीर आश्रम बड़हरा को पत्र लिखकर श्री अभिलाष साहेब जी को सूचित कर दिया कि हम लोग अमुक तारीख को आना चाहते हैं। श्री अभिलाष साहेब जी ने भी पत्रोत्तर दे दिया कि ठीक है, आप लोग आ जाये।

नवम्बर 1963 मे श्री प्रेमप्रकाश जी अपनी मा को साथ लेकर कलकत्ता से बड़हरा आश्रम के लिए पुस्तक के पता के आधार पर चल दिये। बस्ती जिला मे बभनान स्टेशन पर आप लोग उतरे। आश्रम के भक्त आपके लिए बैलगाड़ी लेकर बभनान गये और उन सबको लेकर बड़हरा आश्रम आ गये।

आश्रम मे श्री अभिलाष साहेब जी ने आप लोगो का स्वागत किया। स्नान आदि से निवृत्त होकर सब लोग सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब के दर्शन करने की इच्छा व्यक्त किये। श्री अभिलाष साहेब जी आप लोगो को दर्शन कराने के लिए ऊपर ले गये। गुरुदेव के दर्शन-बदगी के बाद आपने ही सबको प्रसाद दिया। गुरुदेव से मिलने के बाद श्री प्रेमप्रकाश जी तथा अन्य लोग अपने-अपने आसन पर आकर विश्राम करने लगे।

श्री प्रेमप्रकाश जी के मन मे सत श्री अभिलाष साहेब जी से मिलने की बड़ी लालसा थी। क्योकि उन्ही से प्रभावित होकर वे कलकत्ता से चले थे। उन्होने सतो से पूछा—हम अभिलाष साहेब जी के दर्शन करना चाहते हैं। वे कहा हैं?

सतो ने कहा—श्री अभिलाष साहेब तो आश्रम मे ही हैं और उन्हाने ही तो आप लोगो का स्वागत-सत्कार किया है। गुरुदेव जी के पास जब आप लोग बदगी करने गये थे तो उन्हाने ही आप लोगो को प्रसाद दिया है। इस समय वे गुरुदेव के पास ऊपर हैं।

प्रेम प्रकाश जी ने कहा—हम लोग अभी ऊपर से आये हैं। मेरे लिये तो कोई बात नही है लेकिन माता जी को अब दुबारा चढ़ने मे मुश्किल है।

सतो ने जाकर श्री अभिलाष साहेब जी को ये बाते बतायी। उन्होने कहा—उन्हे यहा आने की कोई जरूरत नही है। मैं स्वय चलकर उन लोगो से मिल लेता हू।

श्री साहेब जी जैसे ही प्रेमप्रकाश जी के कमरे मे गये तो वे हाथ जोड़कर बदगी किये और बड़े जोर से हस पड़े। श्री प्रेमप्रकाश जी ने श्री साहेब जी को अपने आसन पर बैठा लिया। उन्होने कहा—अभी तो आपसे बड़ी आशा है।

उस समय श्री साहेब जी की कुल इकतीस वर्ष की उम्र थी। प्रेम प्रकाश जी ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा—आप इतनी कम उम्र म ऐसा प्रौढ़ और अनुभवपूर्ण ग्रथ की टीका लिख डाले, आश्चर्य है। हम समझते थे कि इतना गभीर और चितनपूर्ण गथ का लेखक इस समय कम से कम साठ-पैंसठ वर्ष का होगा।

भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी 1963 ई0 मे पूज्य गुरुदेव जी के सम्पर्क मे आये और उसी समय से सदा के लिए अनन्य प्रेमी भक्त बन गये। आपकी समझदारी, लगन, श्रद्धा, भक्ति सदैव एकरस बनी रही। आप एक गृहस्थ भक्त होते हुए भी साधु का जीवन जिये। सम्माननीय श्री प्रेमप्रकाश जी का निधन 13 अगस्त, 2011 ई0 (रक्षाबधन के दिन) उनके घर कोलकाता मे हुआ।

28.

गुरुदेव जी एव श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

यह घटना काशी की है। सन् 1970 का समय था। अपने कुछ साधको के साथ गुरुदेव काशी नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय मे पढ़ रहे थे। वही पर श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी (आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के छोटे भाई) भी काम कर रहे थे। वे गुरुदेव को देखते ही पहचान गये। क्योकि उसके पहले जून 1969 मे वाराणसी सस्कृत विश्वविद्यालय की कबीर विचार गोष्ठी की एक सभा मे वे

आपको सुन चुके थे। जिसमे आचार्य परशुराम चतुर्वेदी अध्यक्ष थे। डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि कई विद्वान प्रवक्ता थे और गुरुदेव जी भी प्रवक्ता के रूप मे वहा पर थे। उस दिन श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी आपको देखकर आपके पास आकर नमस्कार करके बैठ गये।

गुरुदेव ने उनका परिचय पूछा तो वे पीछे की सारी बाते बताये आर उन्होने कहा—महाराज, सस्कृत विश्वविद्यालय मे आपका व्यग्यात्मक प्रवचन सुना हू, जो अत्यत आकर्षक था।

जिस गोष्ठी की ऊपर चर्चा आयी है उसी मे बोलते हुए नागरी प्रचारिणी सभा के महामत्री श्री सुधाकर पाडे ने कबीर साहेब के लिए कहा था कि जिसके माता-पिता का पता न हो उनको बहुत क्या पढ़ना-लिखना।

उनके इस कथन के उत्तर मे गुरुदेव ने कहा था कि जो लोग कबीर के माता-पिता का पता लगाने के बाद उनका मूल्याकन करने को कहते हैं वे पहले अपने माता-पिता का पता लगा ले। क्या वे दावा के साथ कह सकते हैं कि हमारे कुल का रक्त शुद्ध है? वैदिक काल के बहुत-से ऐसे ऋषि हैं जिनके माता-पिता का पता नही है तो क्या उनको टाट-बाहर कर दिया जायेगा, जैसे—मा सीता, वे राजा जनक की बेटी नही हैं, उनको तो राजा जनक ने खेत मे पाया था। सत्यकाम जाबाल, वसिष्ठ, व्यास, नारद, पराशर, वाल्मीकि, अगस्त्य, विश्वामित्र, शुकदेव, विदुर, हनुमान, भरद्वाज, पाचो पाडव आदि के माता-पिता का क्या पता है?

जब इन महापुरुषो की कीमत समझते हैं और मूल्याकन करते हैं तब कबीर जैसे निराले-निष्पक्ष महापुरुष पर उगली उठाना कि उनके माता-पिता का पता नही इसलिए उनको क्या पढ़े, यह तो अपनी ही आखो मे धूल झोकना है।

इस प्रकार गुरुदेव का कुछ मिनटो का यह विचार उनको बहुत पसद आया था। पूर्व की बातो की याद करते हुए नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने कहा—महाराज, आप लोग अपनी साधना मे ही सीमित न रहे, कबीर साहेब का बहुत व्यापक विचार है उसको फैलाने के लिए भी प्रयास करें।

इसके एक-डेढ़ वर्ष बाद गुरुदेव ने जब 'पारख प्रकाश' पत्रिका निकालना शुरू किया और श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी के पास पत्रिका गई तो वे बहुत खुश हुए। फिर वे अलग समय मे अपने एक मित्र को लेकर गुरुदेव के पास मिलने आये। अब वे बहुत प्रसन्न थे। उन्होने कहा—मैं जो सोच रहा था वह काम आप कर रहे हैं। इससे लोगो का बहुत हित होगा। जब इलाहाबाद मे कबीर पारख सस्थान

की स्थापना हुई तब वे अनेक बार यहा आये, यहा का विकास देखकर हर्षित होते थे।

29.

दो वैज्ञानिको से गुरुदेव जी का मिलन

V~}}-89 की बात होगी। एक बार गुरुदेव जी भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के साथ फैजाबाद से कोलकाता जा रहे थे। श्री प्रेमप्रकाश जी साथ होने के कारण आप दोनो का ए0सी0 कोच मे रिजर्वेशन था। फैजाबाद मे जब आप लोग ट्रेन मे अपनी सीट पर पहुचे तब देखे कि एक सज्जन उस पर बैठे हैं। आप यहा कैसे? पूछने पर उन्होने कहा—महाराज, मैं देहरादून से आ रहा हू और बनारस म उतर जाऊगा।

श्री प्रेमप्रकाश जी ने पूछा—आप रहनेवाले कहा के हैं?

उन्होने बताया—मैं देहरादून मे एक वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत हू और स्थाई रूप से रहनेवाला तो बिहार का हू।

तीना लोग बैठे आपस मे प्रेम से बाते कर रहे थे। वैज्ञानिक महोदय ने पूछ लिया कि महाराज, आत्मा क्या है? वह कैसे बन जाता है?

गुरुदेव ने कहा—आप लोग जो हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, आक्सीजन, रेडियम आदि शताधिक जड़ तत्त्व मानते हैं, क्या उनमे कही चेतना है?

गुरुदेव का यह प्रश्न सुनकर वैज्ञानिक महोदय गभीर हो गये। कुछ क्षण सोचकर उन्होने कहा—इन भौतिक पदार्थों मे चेतना नाम की कोई चीज नही है।

गुरुदेव ने पुन: पूछा—कितु चेतना तो है जो सभी प्राणियो मे प्रत्यक्ष रूप से देखी जाती है। तो वह किसका गुण है? इतना सुनकर वैज्ञानिक महोदय चुप हो गये। उन्होने कहा—यही तो महाराज, हम लोग नही समझ पाते हैं।

गुरुदेव ने कहा—आप लोग उस तत्त्व को भी सडसी-चिमटी से पकड़ना चाहत हैं कितु वह सडसी-चिमटी से पकड़ने की चीज नही है। आत्मा की स्वतत्र सत्ता है। चेतना उसी का गुण है। वह सभी जड़ तत्त्वो से पृथक, एकरस और नित्य है। सारे जड़तत्त्व पर-प्रत्यक्ष हैं किन्तु आत्मा स्वय प्रत्यक्ष है। यही अमर आत्मा कर्म वासनानुसार ससार मे जन्म-मृत्यु के चक्र मे भटक रहा है। जब यह सारी वासनाओ को त्यागकर अपने आप मे स्थित हो जाता है तब इसका ससार चक्र मे भटकना बन्द हो जाता है।

वैज्ञानिक महोदय गुरुदेव जी की बाते बड़ी गभीरता से सुनते रहे। वे अध्यात्म की इन वैज्ञानिक बातो को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने कहा—हम लोगो को चाहिए कि आप लोगो के पास आकर कुछ दिन रहे तभी कुछ अध्यात्म के तत्त्व मिल सकेगे। बनारस स्टेशन आने पर वैज्ञानिक महोदय गुरुदेव जी तथा श्री प्रेमप्रकाश जी को प्रणाम करते हुए उतर गये।

* * *

जनवरी 1998 मे गुरुदेव का पाच दिवसीय कार्यक्रम भोपाल मे था। उस वर्ष मध्य प्रदेश सरकार ने आपको राज्य-अतिथि घोषित किया था। और आपको वी० आई० पी० हाउस मे ठहराया गया था।

11 जनवरी को एक सज्जन आये और बोले—मैं स्वामी जी के दर्शन करना चाहता हू। मैंने गुरुदेव से बताया कि एक सज्जन दर्शनार्थ आये हुए हैं। गुरुदेव अपने कक्ष से निकलकर स्वागत कक्ष मे आ गये।

मैंने आगन्तुक सज्जन को बुलाया, आते ही उन्होने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। गुरुदेव जी अभिवादन स्वीकार किये और उनको सोफे पर बैठने का सकेत किये। कुशल समाचार के बाद गुरुदेव ने पूछा—आपका परिचय?

आगन्तुक सज्जन ने कहा—स्वामी जी, मेरा नाम बी0बी0 सिह (बम बहादुर सिह) है। मैं मुम्बई मे इस समय वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत हू। एक सेमिनार मे भोपाल आया था। यहा की सरकार ने मुझे रहने के लिए यही व्यवस्था दी है। कल मैंने बोर्ड मे आपका नाम पढ़ा तो लगा कि कोई सत यहा ठहरे हैं। तो आज मैं आपके दर्शन करने आ गया। मैं मूलतः इलाहाबाद के पास प्रतापगढ़ का रहनेवाला हू।

वैज्ञानिक महोदय ने गुरुदेव जी से कहा—स्वामी जी, मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य होता है कि कबीर साहेब पढ़े-लिखे न होने पर भी इतने महान ज्ञानी कैसे हो गये। वास्तव मे कबीर साहेब सुपर-ह्यूमैन थे। वे बारम्बार सद्गुरु कबीर के विचारो की प्रशसा करते रहे।

फिर उन्होने कहा—स्वामी जी, हम लोग आत्मा का खण्डन नही करते हैं, लेकिन उसके बारे मे ठीक से समझ भी नही पाते हैं। पूर्व मे मिले हुए वैज्ञानिक ने जो पूछा था वही प्रश्न बी0बी0 सिह ने भी पूछा। गुरुदेव का भी वही जवाब था। गुरुदेव ने कहा—शताधिक तत्त्वो की खोज वैज्ञानिको ने किया है तो क्या किसी तत्त्व मे चेतना के गुण-लक्षण हैं?

कुछ क्षण सोचकर बी0बी0 सिह ने कहा—किसी भी तत्त्व मे चेतना के गुण-लक्षण नही हैं।

गुरुदेव—लेकिन चेतना एक गुण है, वह किस द्रव्य का है?

बी0बी0 सिह—यही तो हम लोग समझ नही पाते।

गुरुदेव—क्योकि इसका आप लोग अध्ययन नही करते हैं। आप लोग केवल भौतिक पदार्थों का अध्ययन करते हैं इसलिए उसी की जानकारी होती है। भौतिक पदार्थों की जरूरत है किन्तु साथ-साथ आत्मबोध होना उससे भी जरूरी ह। इस विद्या की प्राप्ति के लिए अध्यात्म विद्यालय मे जाना पड़ेगा। चेतन आत्मा इन जड़ तत्त्वो से सर्वथा पृथक है। वह अपने आप स्वय, स्वतत्र, नित्य सत्ता है। समस्त भौतिक पदार्थों मे परिवर्तन होता है, लेकिन आत्म सत्ता अपरिवर्तनशील और एकरस है। उसको इन स्थूल हाथो और स्थूल नेत्रो से पकड़ा और देखा नही जा सकता बल्कि वही इन हाथो और आखो को चलानेवाला है।

ग़ुरुदेव के इन थोड़े समय के तर्कपूर्ण विचारो से बी0बी0 सिह को बहुत आनन्द आया। उस दिन वे किसी मीटिग मे जानेवाले थे, इसलिए जल्दी ही चले गये। दूसरे दिन वे पुनः गुरुदेव जी से मिलने आये। अबकी बार वे एक भक्त की तरह काफी फल और मिठाई लेकर आये। गुरुदेव का चरण स्पर्श करके नीचे दरी पर बैठ गये। गुरुदेव के कहने पर भी वे सोफे पर नही बैठे। गुरुदेव ने उनको कुछ अपनी पुस्तके दी। समय मिलने पर वे अपने कमरे मे उन्ही पुस्तको के अध्ययन मे डूबे रहते थे।

4

व्यक्तित्व

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेब : जीवनदर्शन

1.

व्यक्तित्व

शरीर तो सबका पचभौतिक ही होता है। निर्वाह के लिए देह, इन्द्रिय और कार्य-व्यवहार भी सबके वही होते हैं। ससार मे सभी मनुष्य अपना निर्वाह करते हुए जी रहे हैं किंतु इन्ही मे से कुछ ऐसे दिव्य सस्कारी महापुरुष होते हैं जो साधना से अपने जीवन को ऐसा तपा लेते हैं कि उनकी एक-एक वाणी, एक-एक कर्म और उनका खाना-पीना, उठना-बैठना सब समाज के लिए आदर्शरूप हो जाता है। वे जो बोलते हैं वही शास्त्र हो जाता है, जो करते हैं वही पूजा हो जाती है और जहा जाते हैं वही तीर्थ हो जाता है।

समाज को जितना लाभ उनकी वाणियो से होता है उससे कही ज्यादा लाभ उनके जोवन को नजदीक से देखने पर होता है। ऐसे महापुरुष के मन मे, विचारो मे जो पवित्रता होती है उसको हम बाहर से क्या समझ सकते हैं! बाह्य कर्म-व्यवहार, टकसार, उच्चार आदि तो उनकी आतरिक पवित्रता की छायारूप झलक है।

यहा पर सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब के बाह्य जीवन के व्यक्तित्व पर यत्किंचित निवेदन करने की चेष्टा की जा रही है।

2.

शारीरिक बनावट

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का आतरिक व्यक्तित्व जिस प्रकार पवित्र चुम्बकीय एव आकर्षक था उसी प्रकार उनका बाह्य व्यक्तित्व भी अत्यन्त भव्य, सुन्दर एव आकर्षक था।

आपका मस्तक चौड़ा, बड़ी-बड़ी निर्मल आखे, चेहरे के मुताबिक बड़ी नाक, भरा-पूरा विकसित सुन्दर चेहरा, गौर वर्ण, सर्वांग सम्पन्न स्वस्थ और बलिष्ठ शरीर था। गुरुदेव जी के शरीर की लम्बाई पाच फीट आठ इच थो जिसका वजन जीवन के मध्याq| (1981) मे 81 किलोग्राम था और उत्तरार्द्ध मे 75 किलोग्राम था। आपका शरीर इतना वजन होने के बाद भी न भद्दा लगता था और न ही पेट बाहर निकला हुआ था। आपका शरीर कसा हुआ सुगठित था। मोटा-महीन हर कार्य मे आप सब समय स्फूर्तवान रहते थ।

आपके हाथ-पैर की उगलिया खिली हुई थी तथा इस बुढ़ापे तक रक्ताभ थे। आपके चलने, बैठने, बोलने एव मुस्कुराने का तरीका भी अद्‌भुत आकर्षक था। आप बीस से पचीस दिनो मे बाल बनवा लेते थे और दाढ़ी-मूछ एव सिर के बाल एक साथ बनवाते थे। आपके सिर के बाल इस बुढ़ापे मे भी पूर्ववत सघन थे। आपके बाल काफी कुछ पक अवश्य गये थे किंतु झड़े नही थे। कुल मिलाकर आपका शारीरिक व्यक्तित्व सुव्यवस्थित एव आकर्षक था।

3.

स्वास्थ्य

गुरुदेव का स्वास्थ्य तो अधिकतम ठीक ही रहता था लेकिन फिर भी शरीर है तो शरीर ही। गुरुदेव को भी समय-समय से छोटी-मोटी दैहिक व्याधिया आती रहती थी।

वर्ष 1957 मे बड़हरा कबीर आश्रम मे एक नये सीमटेड कमरे मे जमीन पर आसन लगाने से आपको पीठ दर्द हो गया जो वायु-दर्द के रूप मे शरीर मे बस गया। वह ठीक हो-होकर भी निमित्त पाकर कभी-कभी शरीर मे कही उभर जाता। जो दवा और सयम से ठीक रहता था। गुरुदेव को एक बार कलकत्ता मे प्रेमप्रकाश जी के यहा बुखार आया था। उसके बाद उनको बुखार नही आया।

एक बार आपको गले मे टासिल का दर्द हुआ था, जो तीन दिन तक रहा और एक बार साइटिका हुई थी इसके बाद आपको कभी कोई गभीर बीमारी नही हुई। हा, निरतर के प्रवास मे ठडी, गरमी, स्थान, जल, वायु परिवर्तन के कारण आपको कभी-कभी जुकाम हो जाता था।

4.

खान-पान (भोजन)

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का भोजन अत्यन्त सादा होता था। आपके भोजन मे मुख्य रूप से रोटी, सब्जी, दाल और भात होता था। भोजन के समय

आप थोड़ा-सा फल भी खाना पसन्द करते थे। भोजन मे फल होने पर आप एक-डेढ़ रोटी खाते थे और फल न होने पर दो रोटी तक खा लेते थे। खाते समय आप पहले केवल रोटी को देर तक चबाते, फिर सब्जी खाते थे। आपकी सब्जी सादी और मधुर होती थी। उसमे तेल बहुत ही कम पड़ता था। आपकी सब्जी मे मिर्च और गरम मसाला तो पड़ता ही नही, केवल थोड़ा नमक, हल्दी, धनिया, जीरा पड़ता था। खाते समय आप दाल का पानी निकाल कर एक कटोरी मे अलग रख लेत थे और गाढ़ी दाल के साथ थोड़ा-सा भात खाते थे।

समय-समय से आप खिचड़ी खाना भी पसद करते थे। आपकी खिचड़ी प्राय: भुजिया चावल-अरहर दाल की बनती थी।

भोजन मे गुरुदेव सलाद खाना पसन्द करते थे। जिस दिन सलाद या अधिक चबानेवाला भोजन होता था उस दिन आपके भोजन करने मे अधिकतम 16 से 18 मिनट लगते थे लेकिन सामान्य रूप से आप 12-13 मिनट मे भोजन कर लेते थे। भोजन करते समय बीच मे पानी नही पीत थे। अत मे मात्र गला साफ करने के निमित्त दो कुल्ला भर पानी पीते थे।

भक्तो के द्वारा श्रद्धा से समर्पित किये हुए मेवा-मिष्ठान्न आदि भी आप खा लेते थे। आश्रम मे कभी जब पकवान आदि बनता था उसे भी आप थोड़ा लेते थे। क्षुधा निवृत्ति के बाद कितना भी बढ़िया व्यजन क्यो न हो उसे आप नही खाते। गुरुदेव जी ने जीवन मे भोजन का नही बल्कि भूख का शौक किया। यही उनके स्वास्थ्य का राज था। आप आत्मशोधन मे जितना सयमित थे उतना ही भोजन मे भी। थोड़े मे कहा जाये तो आपके उपदेशो का सार यही था—पेट और मन पर सयम। भोजन करत समय आप अधिकतम मौन रहते थे। आवश्यकता पड़ने पर कभी-कभी साधक से बाते कर लेते थे। आप न तो अधिक गरम भोजन करते थे और न अधिक ठण्डा।

मस्तिष्क से कठिन से कठिन परिश्रम करने के बाद भी आप कभी भी दूध-दही और मेवा आदि की इच्छा नही करते थे बल्कि साधारण सहज उपलब्ध भोजन-जलपान मे ही आप सारा विटामिन और पौष्टिक तत्त्व मानते थे। आप कभी-कभी नमक का बिलकुल त्याग कर देते थे।

कभी-कभी भोजन या जलपान मे गुरुदेव जी को मेवे दे दिया गया तो आप विनोद मे कह देते थे—ये क्या ककड़-पत्थर ला दिये हो? महापुरुषो के लिए लोगो की कल्पना होती है कि उनका भोजन बहुत कीमती होता होगा, लेकिन गुरुदेव जी का स्वभाव इस कल्पना से बिलकुल विपरीत था। एक चीज आपको अवश्य पसद थो, वह है सत्तू। सत्तू एक प्रकार का आटा है जो चना, जौ, मक्का या गेहू आदि को भूनकर विशेष प्रकार से बनाया जाता है। इसे नमक या चीनी

के साथ पानी से सानकर खाया जाता है। सत्तू का प्रचलन बिहार, बगाल और उत्तर प्रदेश मे विशेष है।

गुरुदेव सुबह |-30 बजे तक जलपान कर लेते थे। जलपान मे थोड़ा फल, दूध आदि ले लेते थे। वैसे दूध से आपको विशेष प्रेम नही था। आप शाम का जलपान बहुत थोड़ा करत थे और जितना सम्भव हो 5-30 से 6-30 बजे तक कर लेते थे। शाम के जलपान मे आप फल आदि कुछ लेते थे। यदि फल नही रहता तो आप रोटी-सब्जी ही खा लेते थे। सब समय भोजन या जलपान धीरे-धीरे करते थे।

जीवन के उत्तरार्द्ध मे आप उबला पानी पीते रहे। यात्रा मे भी उबला पानी ठडा करके थर्मस मे भर लेते थे। पानी की मात्रा और पानी पीने का समय भी लगभग निश्चित होता था। समय-समय से शर्बत अथवा नीबू का भी प्रयोग करते थे।

5.

वस्त्र एव खड़ाऊ आदि

गुरुदेव के वस्त्र सादे, स्वच्छ एव श्वेत होते थे। सब समय आप सूती कपड़े पहनते थे। गुरुदेव मुख्यरूप से एक अचला पहनते थे जो पाच मीटर लम्बा होता था। आप अचला के ऊपर कन्धे पर एक साफी भी रखते थे। आप सब समय साथ मे एक छोटी साफी रखते थे जिससे मुह एव हाथ पोछने का प्रयोग करते थे।

ठडी के दिनो मे आप सूती कपड़े की बडी और उसके ऊपर ऊनी कपड़े का इनर और स्वेटर भी पहनते थे। सिर पर एक ऊनी टोपी लगाते तथा ऊनी चादर भी ओढते थे। ठडी के समय मे गुरुदेव सोते समय सिर मे टोपी लगा लेते थे लेकिन अन्य समय मे सिर और कान को एक साफी से हल्के-से बाध लेते थे।

पैरो मे गुरुदेव काष्ठ की खड़ाऊ पहनते थे। खड़ाऊ पहनकर आपको चलने का बहुत अभ्यास था। आप खड़ाऊ पहनकर इतना चल चुके थे कि आपके दोनो पैरो मे उसके गहरे चिह्न पड़ गये थे। यात्रा के समय आप खड़ाऊ नही बल्कि चप्पल पहनते थे और सुबह-शाम टहलने के लिए जूता पहन लेते थे।

6.

गुरुदेव का टकसार

टकसार का शुद्ध शब्द है टकसाल जिसका अर्थ होता है—प्रमाणित, निर्दोष, खरा, चोखा, सिक्को की ढलाई का स्थान। लेकिन पारख सिद्धान्त मे टकसार

एक पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है सफाई-स्वच्छता, पवित्रता आदि। गुरुदेव अपने खान-पान, रहन-सहन आदि मे जितनी स्वच्छता रखते थे उतनी स्वच्छता रखनेवाला कोई बिरला होगा।

गुरुदेव के लिए लोग कलम समर्पित करते थे उसे भी आप बिना धोये प्रयोग नही करते। जिस पुस्तक या रजिस्टर मे आपको पढ़ना-लिखना होता था उसे पहले गीले कपड़े से अच्छी तरह चारो तरफ और अन्दर भी कुछ पन्ने पोछकर शुद्ध किया जाता था, तब आप उसमे पढ़ते-लिखते थे। जब आप प्रूफ या कोई पुस्तक पढ़ते थे जो शुद्ध नही किया गया है तो उसका अपने कपड़ो मे स्पर्श नही होने देते थे और पढ़ने के बाद हाथ धोकर ही कुछ छूते थे।

भोजन करने के पूर्व आप मिट्टी या पाउडर से हाथ जरूर धोते थे। भ्रमण के दौरान आप जहा जिस घर मे जाते थे वहा जिस चौकी पर आपका आसन रहता था उसे पहले धोया जाता था अथवा गीले कपड़े से अच्छी तरह पोछ दिया जाता था। जिस कुर्सी-टेबल पर आप बैठकर लिखते-पढ़ते थे उसे भी पानी से खूब धो दिया जाता था। जिस कमरे मे आप रहते थे वहा के दरवाजे, ताखे, खूटिया एव आसन के पास की दीवार भी गीले कपड़े से पोछकर शुद्ध कर दिया जाता था। लाइट और पखे के जिन बटनो का प्रयोग आपको करना होता था उन्हे भी साफ कर दिया जाता था। जिस आसन पर आप बैठते या सोते थे उसे भी बिना हाथ धोये कोई छू नही सकता। आपके पास भक्त लोग आते थे वे फूल-माला, पैसा, फल आदि कुछ चढ़ाना चाहते थे उसे भी अपने बिस्तर पर आप कभी नही रखने देते। उसके लिए अलग से एक टेबल रख दिया जाता था। उसी पर लोग अपनी भेट-पूजा की सामग्री समर्पित करते थे।

गुरुदेव कभी पैसा छूते थे तो बाद मे हाथ अवश्य धोते थे। जीभ से थूक लगाकर रुपये गिनते या पुस्तक के पन्ने खोलते किसी को अगर आप देख लेते थे तो उसे अवश्य टोकते थे कि ऐसा नही करना चाहिए।

गुरुदेव प्रवचन करते समय अक्सर एक बड़े कपड़े से अपने दोनो पैरो को ढककर बैठते थे जिससे कोई अगर चरण-स्पर्श करना चाहे तो कपड़े के ऊपर से ही स्पर्श कर सके। वैसे भी वे पैर छुवाने से बचते थे।

गुरुदेव प्रतिदिन दो बार स्नान करते थे। आपके पहने हुए सारे कपड़े दोनो बार धोये जाते थे। गुरुदेव यात्रा मे जिन कपड़ो को पहनते थे उन्हे स्नानादि करने के बाद नही पहनते थे। ठडी के दिनो मे यात्राओ मे भी आप गरम कपड़ो का प्रयोग करते थे लेकिन निवास पर पहुचने के बाद उनको उतारकर अलग रख दिया जाता था। उनको आप दूसरी यात्राओ मे फिर पहनते थे। ये कपड़े मोटे

और ऊनी होते थे इसलिए कुछ दिनो के बाद ही धोये जाते थे। किसी भी नये कपड़े को गुरुदेव धोने के बाद ही पहनते थे।

गुरुदेव सब समय मोटे कपड़े से छना हुआ पानी पीते थे। बाल्टी या कमडल मे पानी कुछ समय खुला रखा रह गया तो उसे आप प्रयोग मे नही लेते। आपके भोजन करते समय मक्खी यदि भोजन पर बैठ गयी तो उतने अश का भोजन आप निकाल देते थे। किसी भी खाद्य-वस्तु को आप बिना हाथ धोये नही छूते। फल आदि खाद्य वस्तुओ को धोने के बाद ही खाते थे। दूध, पानी अथवा दाल पीते समय यदि वह ज्यादा गर्म होते तो उसे आप मुख से फूक मारकर ठडा नही करते। स्वाभाविक ठडा होने पर ही आप उसे पीते थे या फिर थाली मे डालकर ठडा कर लेते थे।

कुछ लोग होते थे जो मुख धोते समय हाथ से मुख मे पानी लेते, और उसी हाथ से प्रे चेहरे का स्पर्श कर लेते, किंतु गुरुदेव ऐसा नही करते। आप जब हाथ से मुख मे पानी लेते थे तो उस हाथ को धोकर पुनः दूसरे पानी से चेहरे को धोते थे। गुरुदेव जब भी लघुशका जाते तो एक बड़े गिलास मे साफ पानी लेकर जाते थे और शौच जाते समय आपके लिए एक बड़ी बाल्टी म पानी भरकर रख दिया जाता था। आप जब शौच जाते थे तब साथ मे पिसी हुई मिट्टी ले जाते थे। शौच के बाद गुरुदेव मिट्टी से तीन बार मलद्वार धोते थे और तीन बार हाथ भी। इसके बाद जब तक साबुन से आप अच्छी तरह पुनः हाथ नही धो लेते तब तक उस हाथ से आप न तो अपने कपड़े छूते थे और न शौचालय के दरवाजे, बाल्टी आदि ही छूते थे। शौच के बाद गुरुदेव कुल्ला करते थे और आखो मे पानी के छीटे मारकर आखो को धोते थे। तत्पश्चात स्नान करते थे।

7.

बातचीत करने का ढग

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के बात करने का ढग भी बड़ा अद्भुत रहता था। आपको यदि एक व्यक्ति से बात करना होता था तो उतनी ही ऊची आवाज मे आप बोलते थे जितने मे अगला व्यक्ति आराम से सुन सके। अनेक बार आप ऐसे बात करते थे कि सामने वाले व्यक्ति के अलावा दूसरा व्यक्ति सुन नही पाता था। लेकिन जब आपको ज्यादा लोगो से बात करनी होती थी तो आप की आवाज बढ़ भी जाती थी।

आपके इस गुण की सद्गुरु श्री विशाल साहेब भी सराहना करते थे। बात 1963 ईस्वी की है। गुरुदेव काशी से 'बीजक शिक्षा', 'रहनि प्रबोधिनी', आदि

लगभग चौदह-पन्द्रह पुस्तके छपवाकर सद्गुरु श्री विशाल साहेब के दर्शनार्थ पुरनापुर (बाराबकी) गये हुए थे। वहा पर श्री विशाल साहेब जी ने आपसे अनेक प्रश्न किया था। उन प्रश्नो मे एक यह भी था कि साधक के मानसिक विकार कैसे दूर हो? इस पर आप एक घटा तक श्री विशाल साहेब जी के सामने अपने विचार रखे जो लेखरूप मे 'कल्याणपथ' मे छपा है। श्री विशाल साहेब जी खाट पर करवट लेटे-लेटे आपके विचार सुनते रहे और आप नीचे चटाई पर बैठकर बोलते रहे। श्री विशाल साहेब एक करवट लेटे-लेटे जब थक जाते थे तो पैताने तरफ सिर करके पुन: दूसरी करवट लेटकर आपकी ओर मुख करके सुनते रहे।

एक घटे बाद जब आपने बोलना बन्द किया तो श्री विशाल देव ने आपसे कहा—तुम एक घटा बोले, हमे सुनने मे थकान नही लगी। अन्य लोग बोलते हैं तो हम थोड़े मे थक जाते हैं। तुम सभा मे क्या ऐसे ही धीरे-धीरे बोलते हो?

आपने कहा—नही साहेब, वहा आवाज बढ़ा देता हू।

विशाल देव—अच्छा, यू बात है! आवाज बढ़ा भी लेते हो!

गुरुदेव नये आगन्तुको से बातचीत की शुरुआत उन बातो से नही करते थे जिनमे विचारो का अन्तर या विरोध हो। आप समतापूर्ण विचारो से ही बात की शुरुआत करते थे और आपकी बातो म स्नेह, करुणा एव प्रेम सहज समाया रहता था। गुरुदेव दूसरो की भावनाओ की रक्षा करते हुए अपनी बात कहते थे। आपके पास जो एक बार आता था उसे निश्चित रूप से यही महसूस होता था कि मुझे आज बहुत कुछ मिला और अतत: वह गद्गद होकर ही वापस जाता था।

गुरुदेव का मुमुक्षु जिज्ञासुओ के प्रति विशेष प्यार रहता था। गूढ़ से गूढ़ विषय के पढ़ने-लिखने मे आप लीन हो लेकिन ऐसे समय मे भी यदि कोई साधक आपके पास आकर आपसे बातचीत करना चाहता था तो आप अपना सारा काम छोड़कर उससे सरलतापूर्वक बात करने लगते थे। आप जब बाते करते थे तो आपकी एक-एक बात मे स्नेह एव करुणा का रस टपकता रहता था। अपने पास आये हुए सभी साधको से आप उनके सुख-दुख एव उनके दिल की बात जानने की चेष्टा करते थे जिससे आप उनकी शारीरिक एव मानसिक आवश्यकताओ को पूरा कर सके।

किसी भी साधक के सद्गुणो को देखकर आपको बड़ी प्रसन्नता होती थी। आप दूसरो के सामने उसके गुणो की प्रशसा किये बिना नही रहते। दूसरी तरफ यदि किसी साधक से कोई त्रुटि हो गयी हो तो आप उसकी त्रुटियो को कभी

नही फैलाते बल्कि जिसकी गलती होती उसी को बुलाकर प्यार और सहृदयतापूर्वक एकान्त मे उससे उसकी गलती के बारे मे बाते करते थे। साधक को उचित मार्गदर्शन करते हुए आप कहते थे—बेटा! इसका सुधार करने से तुम्हारा ही हित है। तुम्हे खुद को सतोष मिलेगा और यदि ऐसा नही किया तो तुम्हे अशाति के दिन देखने पड़ेगे। इस प्रकार गुरुदेव छोटे-बड़े सभी के मन की रक्षा करने मे अत्यन्त सावधान रहते थे।

गुरुदेव थोड़े ही समय मे साधक के मन को जीत लेते थे। जब कोई साधक आपके पास आता था तो उसे आपसे मिलकर अन्दर से यही सुखानुभूति होती थी कि मुझे कोई मेरा अपना मिल गया।

विद्यार्थियो के प्रति गुरुदेव काफी कृपालु रहते थे। गुरुदेव के पास जब कोई विद्यार्थी आता था और पैसा चढ़ाकर बन्दगी करना चाहता था तो आप उसका पैसा लौटा देते थे और उससे कहते थे—बेटा! अभी तो तुम स्वय पढ़ते हो। जब कमाना तब दान करना। किसी विद्यार्थी को आप देखते थे कि यह जिज्ञासु है तो उसे पढ़ने के लिए कुछ सद्ग्रथ भी अपनी ओर से भेट स्वरूप दे देते थे।

कोई विद्यार्थी जब गुरुदेव के पास आता था तो आप उसको यह सीख अवश्य देते थे कि बेटा! तुम्हारा यह पढ़ने का समय है, अपनी सारी शक्ति को पढ़ने मे लगाओ। कुसग से सावधान रहना। तुम कभी भी विजाति घट से मित्रता नही करना और सजाति मे भी किसी से बहुत मित्रता के चक्कर मे न पड़कर अपने काम से मतलब रखना। सदैव माता-पिता के आज्ञाकारी रहना। आप उसको बताते थे कि विद्यार्थी का जीवन साधक की तरह होना चाहिए। इस प्रकार गुरुदेव विद्यार्थियो क जीवन मे साहस और शक्ति का ऐसा प्राण फूक देते थे जिससे उसके जीवन मे ज्ञान का एक नया प्रकाश-पथ प्राप्त हो जाता था।

8.

बोधदाता के प्रति उपकार

गुरुदव जी के विचारो मे, प्रवचनो मे एव चर्चा के अतर्गत सद्गुरु रामसूरत साहेब की अपेक्षा सद्गुरु विशाल दव का नाम अधिक आता है। सामान्यत: नये लोगो को यह भ्रम हो जाता है कि श्री अभिलाष साहेब के गुरु श्री विशाल दव हैं या श्री रामसूरत दव? आपके पास रहने वाले साधक ने एक बार आपसे पूछा—गुरुदव, आप गृह त्याग के पूर्व ही विशाल दव की विशालता, उनके

ज्ञान, विचार, वैराग्य, रहनी, ग्रन्थ आदि की महिमा सुन चुके थे और उनसे लाभ भी ले रहे थे, लेकिन फिर भी आप सद्गुरु विशाल दव की शरण मे न जाकर सद्गुरु रामसूरत देव की शरण मे क्यो गये?

गुरुदव अभिलाष साहेब ने कहा—विशाल दव विशाल थे, इसमे सदह की कोई बात ही नही। लेकिन हमे प्रथम मिलन अपने गुरुदव से हुआ। उन्होने हमे सोते से जगाया, रास्ता बताया और सब प्रकार से भ्रम-भटकाव के रास्ते से अलग करके कल्याण का रास्ता दिखाया। उन्होने प्रत्यक्ष हमारे घर आकर हमे प्रेरणा दी, उन्ही की कृपा से मेरे मन मे कल्याण के लिए वैराग्य का अकुर जगा और लम्बे समय तक घर मे रहकर उन्ही के सरक्षण मे उस अकुर को पोषण मिला। इस प्रकार मेरे जीवन मे गुरुदव का अनन्त उपकार है, फिर मैं उनको छोड़कर अन्यत्र कही क्यो जाऊ? हा, समय-समय से सद्गुरु विशाल दव के पास जाकर उनके सान्निध्य, सहचरण, उपदश, रहनी आदि से भी लाभ लेता रहा। मैंने अपने गुरुदव के पास से अलग जाने को कभी सोचा भी नही।

जिस भक्ति भाव एव उद्देश्य से आप गुरुदव की शरण मे आये वही उद्देश्य एव भक्ति आपने जीवन भर निभाया।

सद्गुरु रामसूरत साहेब जी अपने जीवन के अतिम क्षणो मे अधिकतम वैराग्य सजीवनी के छन्दो को पढ़ते रहते थे। एक बार उन्होने कहा—भक्ति तो अभिलाष दास ने निभाया है। वे जैसा लिखते हैं, जैसा बोलते हैं, वैसा ही जीते हैं।

9.

प्रवचन-शैली

गुरुदेव के प्रवचन करने का ढग बहुत आकर्षक था। जब आप बोलते थे तो न बहुत अधिक गति से बोलते थे और न रुककर ही बोलते थे। स्वर न तो ऊचा होता था, न मद। आपके स्वर मे स्निग्धता, कोमलता, एकरसता एव मिठास होती थी। प्रवचन करते समय आप वाक्य-व्यायाम बिलकुल नही करते। सरल भाषा मे शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करते थे। बोलते समय कभी न तो हाथ हिलाते थे और न चेहरे, आख आदि से ही भाव-भगिमा करते थे। प्रवचन करते समय गुरुदेव पालथी मारकर बैठते थे और आपके हाथ गोद मे होते थे। आप हमेशा सीधा बैठते थे। आपको चाहे एक घटा बोलना पड़े या दो घटा, प्रायः आप पैर बदलते नही थे।

गुरुदेव के प्रवचन गाव-शहर, शिक्षित-अशिक्षित, सतो-विद्वानो, धनी-गरीब, हिन्दू-मुसलमान, ब्राह्मण-शूद्र, स्त्री-पुरुष, स्कूल-कालेज, राम मदिर-कृष्ण मदिर, फैक्ट्री एव जेलखानो और जन समुदायो-सभी जगह होते रहते थे। आपके प्रवचन के विषय बहुआयामी थे। आप जहा जैसे श्रोता देखते थे उसी प्रकार उनकी आवश्यकतानुसार नये-नये विषय देते रहते थे।

गुरुदेव के प्रवचनो मे ओजपूर्ण धारावाहिकता के साथ-साथ गहन अध्ययन, साधना की गहराई और मानव जीवन का रहस्य झलकता था। आपकी स्मरण शक्ति का बड़े-बड़े सत और विद्वान भी लोहा मानते थे।

गुरुदेव के प्रवचनो मे व्यावहारिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक विचार होते हुए भी बीच-बीच मे घटनाए, दृष्टात, चुटकुले और कहावते भी आती रहती थी। किसी विषय को शास्त्रोक्त प्रमाणो के सहित विस्तारपूर्वक कहना तो आप जानते ही थे, लेकिन समय सीमा के अन्दर कम-से-कम समय मे अपनी बाते स्पष्ट कह देना इसकी कला भी आप अच्छी तरह जानते थे। विषयवस्तु की गभीरता एव प्रमाण के लिए आप वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत, गीता, भागवत, पुराणो, बुद्ध वाणी, विद्वानो एव वैज्ञानिको का उदाहरण भी देते रहते थे। वेद वाणो एव औपनिषदिक दर्शन पर जिस अधिकार से आप बोलते थे, वैसा कम ही सुनने को मिलता है। सूत्र-मत्र का सस्कृत मे शुद्ध उच्चारण, उसका अन्वय करना, उसकी तर्कसगत व्याख्या करना—यह सब सुनते ही बनता था। आपके प्रवचन मे सस्कृत मानो जीवत हो उठती थी। विषयानुसार प्रवचनो मे कभी-कभी खिलखिलाकर, खुलकर हसते भी थे। तब सामने वाला भी बिना हसे नही रह पाता। किसी भी महापुरुष का नाम आप लेते थे तो बड़े आदर से लेते थे। उन महापुरुषो के विचार आपके सिद्धान्त के विपरीत होने पर भी आप उनके लिए कभी अनादरसूचक शब्दो का प्रयोग नही करते। महापुरुषो को जब आप सम्बोधित करते थे तो आपके शब्द कुछ इस प्रकार होते थे जैसे—महाराज श्रीराम, महाराज श्रीकृष्ण, गोस्वामी तुलसीदास जी, हजरत मुहम्मद, सत ईसा, पूज्य तथागत, महावीर स्वामी, स्वामी शकराचार्य आदि।

गुरुदेव के प्रवचन निष्पक्ष होते थे और आपके विचारो मे राष्ट्रीय एकता की भावना समायी रहती थी। गुरुदेव अनेकता मे एकता देखते थे। स्वतत्र भारत का सृजन करनेवाले महापुरुषो क नाम आपके प्रवचन मे समय-समय से आते रहते थे। जैसे—महात्मा गाधी, पडित जवाहरलाल नेहरू, लौहपुरुष सरदार पटेल, चन्द्रशेखर आजाद, बाबा साहेब अबेडकर, सुभाषचन्द्र बोस आदि।

प्रवचनो मे राजनैतिक चर्चा करने से बचते थे किंतु तथाकथित धर्म, जाति, राष्ट्रवाद और हिसा आधारित राजनीति का खुलेआम खण्डन करते थे। वे समन्वय, समरसता एव लोक-कल्याण की राजनीति को प्रश्रय देते थे। अनेक बार वे चाणक्य नीति का उपहास करते।

10.

आपका समन्वय

एक बार गुरुदेव अभिलाष साहेब जी से एक वैष्णव सत मिलने आये। दण्ड-प्रणाम के बाद आपस मे कुछ चर्चा होने लगी। वैष्णव सत ने कहा—महाराज, हम तो राम के उपासक हैं, भगवान राम ही हमारे इष्ट हैं।

गुरुदेव ने कहा—हम भी राम के उपासक हैं और राम ही हमारे इष्ट हैं। गुरुदेव जी की बात सुनकर वैष्णव सत हैरत मे पड़ गये।

गुरुदेव ने कहा—आश्चर्य करने की जरूरत नही। अच्छा बताइये, आप किस राम की उपासना करते हैं? राम के शरीर की या राम के आत्मा की? यदि उनके शरीर को मानते हैं तो उनका शरीर छूटे हजारो वर्ष हो गये हैं। आज महाराज श्री राम के शरीर का एक कण भी खोजने से कही नही मिलनेवाला। यदि उनके आत्मा को मानते हैं तो वह घट-घट मे विराजमान ही है।

वैष्णव सत ने कहा—खैर, वही आत्माराम हम भी मानते हैं।

गुरुदेव ने कहा—बस, वही आत्माराम हम भी मानते हैं। वही आत्माराम ही सब का इष्ट हो सकता है जो निजस्वरूप ही है। उसे बाहर नही, अन्दर देखना है, समझना है और उसमे स्थित होना है।

वैष्णव सत ने कहा—महाराज, इस प्रकार हम लोगो मे कोई साफ-साफ समझानेवाला नही है। साफ निर्णय के बिना बहुत भटकाव है।

11.

गुरुदेव की सहिष्णुता

गुरुदेव अभिलाष साहेब जी जैसे व्यावहारिक, सामाजिक प्रतिकूलता को अडिग भाव से सहते रहे वैसे शरीर पर आयी हुई विषम परिस्थिति को भी धैर्य एव साहस के साथ सहते थे। किसी भी पीड़ा, कष्ट मे आपको घबराते नही देखा

गया। यहा तक कि भयकर दर्द मे भी आप हाय, आह, सी.... तक नही करते बल्कि तटस्थ होकर कष्ट को सहते थे।

(V)

एक बार आप भक्त प्रेमप्रकाश जी के घर कोलकाता मे निवास कर रहे थे। उस समय आपका दात-दर्द बहुत बढ़ गया था। कुछ दवाइया आपने ली लेकिन कोई विशेष लाभ नही हुआ।

एक दिन शयन करने के लिए आप आसन पर लेटे लेकिन दर्द के कारण रात एक बजे तक नीद नही आयी। दर्द के कारण चित्त उसी तरफ जाता था। आप उसी समय उठकर लाइट जलाकर ग्रथ अध्ययन करने लगे।

साथ मे रहनेवाले साधक (सत श्री अशोक साहेब) की नीद एक बजे खुली। उन्होने देखा कि गुरुदेव के कमरे की लाइट जल रही है। जाकर देखे तो गुरुदेव लाइट जलाकर पढ़ने मे तल्लीन हैं। आपने पूछा—गुरुदेव जी, अभी तो रात्रि का एक बजा है। विश्राम के समय अध्ययन कैसे कर रहे हैं?

गुरुदेव ने कहा—दात मे बहुत दर्द है। बारबार चित्त उसी तरफ चला जाता था। नीद नही आ रही थी तो सोचा कि चलो अध्ययन ही करते हैं। इसी मे चित्त एकाग्र हो जायेगा और समय भी बीत जायेगा।

इस प्रकार कठिन दर्द को भी आप बिना किसी को जगाये सहते रहे। ऐसी दर्द की स्थिति मे बिना किसी घबराहट के आप अध्ययन करते रहे।

(W)

सन् 1998 मे गुरुदेव दक्षिण भारत की यात्रा किये। छत्तीसगढ़ के दो सज्जन—प्रदीप और सदीप हैं, जो ईरोड, तमिलनाडु मे रहकर व्यापार करते हैं। इन लोगो ने ही गुरुदेव जी को अपने घर पर सेवा-सत्सग का लाभ प्राप्त करने के लिए बुलाया था। गुरुदेव उस समय गुजरात मे थे। आप अहमदाबाद से सत श्री धर्मेन्द्र साहेब, श्री सतेन्द्र साहेब, श्री देवेन्द्र साहेब, श्री जिनेन्द्र साहेब, तथा ब्र० रामरूप साहेब को साथ लेकर ईरोड गये। छत्तीसगढ़ से सत श्री शरणपाल साहेब जी तथा भक्त कमल सिह जी गये थे।

आपका दात दर्द अहमदाबाद से ही शुरू हो गया था। एक दात उखड़वा दिये फिर भी दर्द शात नही हुआ। आपको सब्जी तक खाने मे दिक्कत होती थी। सब्जी मे आप केवल आलू ही धीरे-धीरे खा पाते थे। यह दर्द बीस-पचीस दिनो तक बना रहा। इसी बीच आपकी यात्राए भी चलती रही।

ईरोड प्रवास से लौटकर इलाहाबाद मे आप उसी वर्ष ब्रिज दात लगवाये। ये दात जब से लगे तब से दर्द सम्बन्धी शिकायते समाप्त हो गयी।

(3)

15 मार्च, 2000 की बात है। गुरुदेव छत्तीसगढ़ के कार्यक्रमो मे थे, वहा आपको धीरे-धीरे दर्द तो पहले से शुरू हो गया था, लेकिन सरसोपुरी ग्राम के कार्यक्रम मे जब आप आये तो कमर का दर्द भयकर हो गया। गुरुदेव मच तक पैदल चल नही सकते थे। जब आप गाड़ी से मच के पास उतरे और बिलकुल झुककर मच की तरफ चले तो लोगो को आश्चर्य लगा कि गुरुदेव को क्या हो गया है? यह दर्द लगभग डेढ़ माह तक चलता रहा। बीच मे कुछ ठीक हो गया था लेकिन अचानक एक दिन पुनः दर्द असह्य हो गया। गुरुदेव पसीना-पसीना हो गये। उस दिन आपने साथियो से कहा—शीघ्र डॉ० के पास ले चलो, मुझे बेहोश होने का इन्जेक्शन दे दे मैं कुछ विश्राम चाहता हू।

गुरुदेव को उसी दिन प्रियका काम्प्लेक्स, भिलाई मे डॉ० प्रवीण जैन के पास लाया गया और उन्होने इलाज किया।

ऐसी विषम परिस्थिति मे भी आप अविचलित भाव से सब सहते हुए, छत्तीसगढ़ का कार्यक्रम पूरा करके ही इलाहाबाद वापस आये।

12. गुरुदेव की उद्वेगहीनता

गोपाल मदिर, फरीदाबाद की बात है। गुरुदेव जी का कार्यक्रम मदिर के मालिक एक पडित जी ने लिया था। रात की सभा समाप्त हो गयी। सुबह आठ बजे छोटी सभा थी। गुरुदेव जी ने एक वेदमत्र बोला। उसमे कुछ ऐतिहासिक तथ्य था। सभा मे एक आर्य समाजो व्यक्ति भी बैठा था जो शिक्षित और करीब चालीस वर्ष की उम्र का था। उसने कहा—वेद मे इतिहास हो नही सकता। वेद सृष्टि के पहले ईश्वर ने रचा है। उसमे इतिहास कैसे हो सकता है।

गुरुदेव जी ने कहा—मैं मत्र नही बदल रहा हू। अर्थ करने मे तो सब स्वतत्र हैं। उस युवक ने कहा—मैं आपका हाथ पकड़कर नीचे खीच सकता हू। गुरुदेव ने कहा—जब आप कह, मैं नीचे बैठ जाऊ।

सभा मे खलबली मच गयी। मदिर के मालिक उस समय वहा नही थे। वे सुने तो एक पहलवान आदमी को साथ मे लेकर आ गये और अग्रेजी मे उस

युवक को कटु कहे। गुरुदेव ने उन्हे समझाया कि इस युवक ने मुझे कुछ नही कहा है। गुरुदेव ने सबको शात कर दिया।

दूसरे दिन वह युवक पुनः आया और सभा मे बैठा। उसने विनम्रता से पूछा—भगवन्! क्या ससार का चलानेवाला कोई विधाता भी है? गुरुदेव जी के बोलने के पूर्व ही एक वृद्ध विद्वान ने कहा—खुदा की बात खुदा ही जाने।

*　　　　*　　　　*

1998 के दिसम्बर की बात है। बिहार, मोतीहारी जिला के तधवा मठ के महन्त श्री रामरूप गोस्वामी साहेब जी ने अपने उत्तराधिकारी महन्त को चादर देने के उपलक्ष्य मे विशाल कार्यक्रम रखा था। उसमे गुरुदेव जी खास रूप से निमत्रित थे।

दूसरे दिन जो विशेष सभा हुई उसमे हजारो की भीड़ थी। उस सभा मे बहुत से सत, महन्त एव आचार्यगण उपस्थित थे।

प्रवचन कार्यक्रम शुरू हुआ। एक आचार्य को प्रवचन के लिए समय दिया गया। वे पूरा एक घटे तक गुरुदेव जी की कटु आलोचना करते रहे। पूरी जनता मे आक्रोश छा गया। सभी क्षुब्ध हो उठे। इन आचार्य जी के बोलने के बाद एक दूसरे सत को बोलने का अवसर दिया गया तो उन्होने पूर्व प्रवक्ता आचार्य की खूब भर्त्सना की।

उन सत के बाद गुरुदेव जी को समय दिया गया। गुरुदेव जी उन बातो को छूये बिना ही सयम-सदाचार और स्वरूपज्ञानपरक विचार सुनाते रहे। प्रवचन के पश्चात जब गुरुदेव जी वहा से चलने लगे तो जो आचार्य जी गुरुदेव जी की आलोचना किये थे उन्ही के एक शिष्य आकर गुरुदेव जी के पैर पकड़ लिये। उन्होने कहा—हमारे आचार्य जी की बाते क्या आपने नही सुनी? गुरुदेव जी ने मुस्कुराकर कहा—नही सुनी। वे सत गुरुदेव जी को निवास तक साथ-साथ पहुचाने चले। गुरुदव जी ने कहा—अब आप जाये, रात हो गयी है। समय काफी हो गया है। विश्राम करे, साथ मे जाने की कोई आवश्यकता नही है।

उन्हाने कहा—साहेब, आपका साथ छोड़ने का मन नही करता। दूसरे दिन उन आचार्य जी को मच पर कोई नही बुलाया। इधर गुरुदेव जो के प्रति लोगो की श्रद्धा और बढ़ गयी।

क्षमा और सहनशीलता का फल महान होता है। इस गभीर दशा को वही धारण कर सकता है जो अहकार के बोझ को उतार फेके।

*　　　　*　　　　*

एक बार गुरुदेव भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के घर कलकत्ता मे 'पारख प्रकाश' का काम कर रहे थे। रविवार को धर्मतल्ला के मैदान मे शाम के समय गुरुदेव को जाना हुआ। वहा पहुचत ही भक्तो ने गुरुदेव जी को फूल-माला आदि समर्पित किये, खूब भक्ति-भावना से लोग बदगी करते रहे। एक साधुवेषधारी वहा बैठे थे। वे गुरुदेव की प्रतिष्ठा देखकर जलभुन गये।

गुरुदेव जी के प्रवचन के पूर्व उन सत को भी भाषण करने का अवसर दिया गया। अपने पूरे समय तक वे गुरुदेव जी को गाली ही देते रहे। बीच मे भक्त लोग आक्रोश मे आ गये किंतु आप सबको शात रहने का सकेत करते रहे।

उन महात्मा के बोल लेने के बाद गुरुदेव जी उद्वेगशून्य होकर अपना उद्बोधन देना शुरू किये। आधा घटा तक आप अपनी बात कहे किंतु उनकी बातो का स्पर्श तक नही किये। केवल मानव-कल्याण की बाते करते रहे। अन्तत: वह व्यक्ति आपकी सहनशीलता और क्षमा को देखकर लज्जित हुआ।

13.

समय की पाबन्दी

गुरुदेव आश्रम मे प्रात: तीन बजे के पहले और भ्रमण मे चार बजते-बजते बिस्तर छोड़ देते थे। आप प्रतिदिन सुबह-शाम समयानुसार भ्रमण करते थे। गुरुदेव का भोजन, पानी, शयन, स्नान, ध्यान, अध्ययन, प्रवचन, व्यायाम आदि सबके लिए समय निश्चित रहता था। इन सब कामो को आप अपने निश्चित समय पर ही करते थे। कोई विशेष परिस्थिति आने पर ही आप समय का परिवर्तन करते थे। गुरुदेव को किसी सभा मे जाना होता था तो अपने समय पर ही वहा पहुचते थे। प्रवचन करते समय आपका जो समय रहता था उसके एक मिनट पहले ही आप अपना प्रवचन पूरा कर देते थे। गुरुदेव अपने जीवन के एक-एक क्षण का अच्छी तरह उपयोग करते थे। जिसका परिणाम स्वय उनके लिए तो अमोघ था ही समाज के लिए बहुत लाभ और प्रेरणाप्रद है।

14.

स्वाध्याय की रुचि

गुरुदेव की स्कूली पढ़ाई नही के बराबर थी या हम कह सकते हैं कि नही ही पढ़े थे। अपनी आठ-नौ वर्ष की उम्र मे आप स्कूल जाने लगे और कुछ

महीने कक्षा एक मे और कछ महीने कक्षा दो मे पढ़े। स्कूल से केवल अक्षर बोध हुआ था।

किसी स्कूल-कालेज मे पढ़ने का अवसर न मिलने के बाद भी गुरुदेव को बचपन से पढ़ने का बड़ा शौक था। यदि रास्ता चलते कही जमीन पर पड़ा हुआ एक पर्चा भी आपको मिल जाता तो उसे आप उठाकर पढ़े बिना न रहते। गुरुदेव के पढ़ने का यही शौक आगे चलकर अनेक ग्रथो के रूप मे समाज मे आया है।

आप बचपन से ही रामायण, गीता, भागवत, पुराण आदि पढ़ते थे और यहा तक कि वेद भी आप पढ़ते थे। अब उस अवस्था मे वेद आपकी समझ मे कितना आता रहा होगा यह अलग बात थी। घर मे रहते हुए जब आपको कबीर साहेब का ज्ञान मिला तो श्री पूरण साहेब कृत बीजक त्रिज्या आदि ग्रथो का खूब अध्ययन किये। और नवम्बर 1953 मे साधु मार्ग मे आने के बाद तो अध्ययन-मनन की यह धारा विशाल से विशालतम हो गयी।

सद्गुरु कबीर के 'बीजक' द्वारा प्रमाणित जो पारख सिद्धान्त है उसमे दृढ़ता तो आपको घर मे रहते-रहते ही हो गयी थी कितु अब उसके बहुमुखी विकास के लिए आपने वेद, उपनिषद्, बौद्ध ग्रथ, जैन ग्रथ, कुरान, हदीस, बाइबिल, भारतीय दर्शन, पाश्चात्य दशन आदि का खूब अध्ययन किया। साधना एव सेवा कार्य करते हुए प्रतिदिन चार-पाच घटे पढ़ लेना तो आपके लिए बड़ा सहज था। अपने व्यस्त कार्यक्रमो मे रहते हुए भी आप पढ़ने के लिए काफी समय निकाल लेते थे। आप समय का सदुपयोग करना अच्छी तरह से जानते थे। समय-समय से गुरुदेव जी आठ-नौ घटा तक भी पढ़ते थे और कभी-कभी विद्युत प्रकाश न रहने पर भी आप टार्च अथवा लालटेन जलाकर देर तक पढ़ते रहते।

हिन्दी भाषा के साथ-साथ गुरुदेव की सस्कृत, अग्रेजी, पालि आदि भाषाओ पर भी अच्छी पकड़ थी।

गुरुदेव जी के एक साधक थे लालाराम। उनकी बार-बार की प्रेरणा से उन्ही के द्वारा गुरुदेव जी को अग्रेजी का प्रारभिक ज्ञान हुआ और उसी प्रारभिक ज्ञान के आधार पर और स्वय के अभ्यास से आप धीरे-धीरे अग्रेजी की पुस्तके पढ़ने लगे। फिर तो थोड़े दिनो के अभ्यास से गुरुदेव जी स्वामी विवेकानन्द की अग्रेजी की अनेक पुस्तके पढ़ डाले। सर राधाकृष्णन कृत 'इडियन फिलॉसफी' के दोनो खण्डो को आप दो बार पढ़ डाले। जो शब्द समझ मे नही आते उनको समझने के लिए आप शब्दकोष का सहारा ले लेते। आपकी लिखी अनेक

पुस्तको का अनुवाद दूसरो द्वारा अग्रेजी मे हो चुका है। उनको भी आप पढ़ लिये थे।

V978 की बात है। गुरुदेव कलकत्ता मे श्री प्रेमप्रकाश जी के यहा विराजमान थे। उस समय बड़ौदा निवासी श्री लखी एन0 परियानी जी भी वहा थे। परियानी जी उन दिनो गुरुदेव द्वारा लिखी पुस्तक—'मैं कौन हू?' का अग्रेजी मे अनुवाद कर रहे थे। उस पुस्तक मे एक वाक्य आया है—''जीव ब्रह्म मे लीन हो जाता है।'' इस 'लीन' शब्द के लिए प्रेमप्रकाश जी ने अग्रेजी भाषा का शब्द बताया—(exhaust) ऍगजॉस्ट् और परियानी जी ने बताया—(Absorb) एब्ज़ार्ब। कितु दोनो को इन दोनो शब्दो से सतोष नही हो रहा था। दोनो ग्रुदेव के पास आये और अपनी बात बताये। गुरुदेव ने कहा—''इसके लिए तो (Merge) मर्ज़ शब्द उपयुक्त लग रहा है। गुरुदेव के मुख से (Merge) शब्द सुनते ही दोनो खुशी से उछल पड़े और कहा—बिलकुल सही शब्द आपने बताया। यह शब्द हम लोगो के ध्यान मे ही नही आ रहा था। यही शब्द ठीक है।

श्री प्रेमप्रकाश जी एव परियानी जी दोनो आश्चर्य मे पड़ गये और कहने लगे कि देखो, हम लोग पढ़े होकर अनपढ़ हो गये और गुरुदेव जी हम लोगो को इगलिश पढ़ा दिये।

गुरुदेव की सस्कृत भाषा पर भी काफी अच्छी पकड़ थी। बिना कही व्याकरण पढ़े ही आप अनेक सस्कृत ग्रथो को पढ़कर उन पर भाष्य लिखे थे। जैसे—चारो वेदो पर 'वेद क्या कहते हैं', गीता पर 'गीतासार', उपनिषदो पर 'उपनिषद् सौरभ', योगदर्शन पर 'योगदर्शन भाष्य' स्वामी शकराचार्य कृत 'विवेक चूडामणि' पर 'शकराचार्य क्या कहते हैं?' और सम्पूर्ण महाभारत पर 'महाभारत मीमासा'।

आपने बुद्धवाणी 'धम्मपद' पर भाष्य किया है जो पालि भाषा का ग्रथ है। गुरुदेव ने इस गथ के एक-एक शब्द का बहुत सुन्दर एव सरल भाष्य किया है। इस ग्रथ का नाम है—'तथागत बद्ध क्या कहते हैं?'

गुरुदेव की इस बहुमुखी विद्या के विकास को देखकर अनेक लोगो को विश्वास ही नही होता है कि यह सब आपने ही लिखा था। अनेक विद्वान, लेक्चरर, प्रोफेसर आपसे दार्शनिक बातो पर राय लेने आते थे। कई बार तो विद्वान लोग आपसे पूछ बैठते थे—अच्छा, स्वामी जी! आप किस विश्वविद्यालय मे पढ़े हैं?

गुरुदेव सहजता से कहते थे—मैं तो अनपढ़ आदमी हू। विश्वविद्यालय क्या, कक्षा एक की भी मेरी पूरी पढ़ाई नही है।

15.

सोना-जागना

रात्रि के प्रथम पहर मे जितना जल्दी हो सके गुरुदेव सो जाना पसन्द करते थे। जब आप बाहर कार्यक्रमो मे होते थे तब नौ से साढ़े नौ बजे तक सोते थे लेकिन जब इलाहाबाद आश्रम मे रहते थे तो साढ़े आठ बजे तक सो जाते थे। गुरुदेव जब सोते थे तो एक ही नीद मे रात्रि बीत जाती थी। आप प्रात:काल जल्दी उठते थे। जब आप भ्रमण मे होते थे तो साढ़े तीन से चार बजे तक उठते थे और आश्रम मे रहते थे तो तीन बजे तक उठ जाते थे।

गुरुदेव दिन के दोपहर मे भी भोजन के बाद आधा से एक घटे तक विश्राम करते थे। आपका सोना और जागना भी नियमित होता था। रात्रि मे शयन और दिन मे विश्राम क अलावा आप बीच मे कभी नही सोते। चौबीस घटे मे कुल आप छह-सात घटे सोते थे।

गुरुदेव सोते समय एक पतला तकिया लगाते थे अथवा अपना कुछ कपड़ा ही मोड़कर सिरहाने रख लेते थे। आप बहुत गुदगुदे एव मोटे गद्दे पर सोना पसन्द नही करते। सोते समय आप सिर बाध लेते थे या हल्की टोपी लगा लेते थे। अक्सर आप बायी करवट सोते थे।

16.

चलना-बैठना

गुरुदेव शात और नम्र होकर चलते थे। चलते समय आप न तो पैरो को जमीन पर घसीटते हुए चलते थे और न ही पैरो को फेकते हुए। इसी प्रकार आप हाथो को न तो बहुत झटकते हुए चलते थे और न ही स्थिर किये हुए। नेत्रो को चचल न करते हुए इधर-उधर न देखते हुए सामने और नम्र दृष्टि करके आप चलते थे। आपका व्यक्तित्व शात और गभीर रहता था।

पैदल चलने का गुरुदेव को अच्छा अभ्यास था। आप बाहर के अपने कार्यक्रमो मे भी चार-साढ़े चार बजे तक प्रात: भ्रमण के लिए चले जाते थे। उस समय आपके हाथ मे एक टार्च होती थी और एक साधक आपके साथ जाते थे। भ्रमण के समय गुरुदेव तेज चलते थे। आप प्रतिदिन छह-सात कि0मी0 चलते थे। प्रात: और साय भ्रमण के समय तो आप जूता पहनते थे लेकिन जब आप प्रवचन स्थल मे जाते थे तो खड़ाऊ पहनकर जाते थे। मच पर बैठने के पूर्व आप

पैर धोकर बैठते थे। अगर प्रवचन स्थल दूर होता था तो चप्पल पहनकर जाते थे।

प्रवचन स्थल मे आपके पहचते ही लोग आपके स्वागत मे खड़े हो जाते थे किंतु इसे आप पसन्द नही करते। श्रद्धालु भक्तो की इस भावना को आप बिलकुल रोक भी नही पाते किंतु कभी-कभी आप कह देते थे कि मेरे आने पर किसी को खड़े होने की जरूरत नही है। सब लोग बैठे ही रहा करे। भक्त लोग यदि कभी गुरुदेव का नाम लेकर जय बोलाने लगते थे तब आप बिलकुल रोक देते थे। गुरुदेव कहते थे—कबीर साहेब की जय बोलाओ, अभिलाष की जय नही। जो महापुरुष हो चुके हैं उनकी जय बोलाओ, जिससे सबका कल्याण है। मेरे इस नाम-रूप की कोई याद न करे। सच है, विवेक-वैराग्य से सम्पन्न महापुरुष अपने लिए सम्मान नही चाहते।

गुरुदेव प्रथम साधना काल मे ध्यान-समाधि के लिए प्रायः प्रतिदिन एकान्त मे वन, बाग, जगल, नदी तट, पहाड़ो, खेतो आदि स्थानो मे चले जाया करते थे। वहा आप ध्यान, अध्ययन एव लेखन ये तीन कार्य किया करते थे। कभी-कभी दो-तीन घटे आप ध्यान मे ही बैठे रहते। और प्रौढ़ावस्था मे भी गुरुदेव ज्यादातर निवास स्थान पर ही रहकर अध्ययन, ध्यान-समाधि मे लीन रहा करते थे। आपका अधिक समय अध्ययन-मनन एव लेखन कार्य मे ही जाता था। बीच-बीच मे दर्शनार्थी लोग आते रहते थे उनसे भी आप मिलते रहते थे।

गुरुदेव चाहे आसन मे बैठे हो चाहे कुर्सी पर बैठे हो, चाहे और कही, सब समय आपका मुखमडल शात एव गम्भीर रहता था। आपके बाह्य व्यक्तित्व स ही साधु-रहनी साफ झलकती थी। गुरुदेव को देखने से ही लगता था कि मानो सब समय आप अखण्ड समाधि मे स्थित हैं।

17.

लोगो से मिलना-जुलना

गुरुदेव चाहे भ्रमण मे रहे या आश्रम मे, सब जगह आपके लिए दर्शनार्थियो की भीड़ बनी रहती थी। आपसे मिलने के लिए कोई निश्चित समय नही रहता। कोई भी व्यक्ति कभी भी आये यदि आप किसी विशेष परिस्थिति म नही रहते तो उनसे अवश्य मिलते थे। गुरुदेव से मिलनेवालो मे सभी वर्ग के लोग होते थे। भक्त समाज तो आपके दर्शन के लिए लालायित रहता ही था, जो भक्त नही थे वे भी आपके पास आकर अपना सौभाग्य समझते थे।

गुरुदेव से मिलनेवालो मे गाव और शहर के धनी-गरीब, किसान-व्यापारो, साधु-गृहस्थ, बालक-वृद्ध, नेता, डाक्टर, मास्टर, वकील, विद्यार्थी, पत्रकार, तथाकथित ब्राह्मण-शूद्र, हिन्दू, मुसलमान, आदि सभी प्रकार के नर-नारी आते रहते थे। आप सबसे मिलते थे और खुलकर बाते करते थे। सबसे कुशल समाचार पूछते थे और सबकी शकाओ का समाधान करते थे।

गुरुदेव जब आश्रम मे रहते थे तब भी आपको मिलनेवालो से फुरसत नही रहती। अन्यान्य प्रान्तो से लोग आश्रम मे आपसे मिलने आते रहते थे। जब आप बाहर कार्यक्रमा मे रहते थे तब तो और अधिक व्यस्तता रहती थी। चाहे जिस पदेश मे आपका कार्यक्रम हो सभी जगह आपके दर्शन के लिए भीड़ उमड़ पड़ती थी।

गुरुदेव जी प्रवचन के बाद भी मच पर थोड़ी देर बैठे रहते थे जिससे जो भक्त मिलना चाहे आकर मिल सके। मच पर अवसर न देने पर निवास स्थान पर बहुत भीड़ बढ़ जाती थी।

गुरुदेव के पास आश्रम मे जो भी सत-भक्त आते थे उनसे आप बाते करते थे। उनको रहने के लिए आसन आदि की भी व्यवस्था करवा देते थे। यदि वे घर वापस जाना चाहते थे तो उनको आप भोजन करके ही जाने के लिए कहते थे। किसी को लम्बी यात्रा करनी होती थी तो गुरुदेव उसके लिए रास्ते मे खाने-पीने के लिए भोजन, फल आदि भी रखवा देते थे। सतो के लिए योग्यतानुसार उनको पूजा-बिदाई देने के लिए भी आप विशेष ध्यान रखते थे।

गुरुदेव जी मिलने वालो को उनकी पात्रता के अनुसार ज्ञान, वैराग्य, सयम, साधना की बाते सुनाते रहते थे। अधिकतर लोगो को आप टोकते रहते थे कि स्वाध्याय करने के लिए समय निकालते हो कि नही, मन की शाति का काम करते हो कि नही। इस प्रकार आप पारमार्थिक खुराक देते हुए व्यावहारिक खुराक भी देते रहते थे। घर-परिवार मे भाई को भाई के साथ, पुत्र को पिता के साथ, पत्नी को पति के साथ, पति को पत्नी के साथ, सास को बहू के साथ और बहू को सास के साथ कैसे रहना चााहिए, कैसे आपस की मधुरता बनी रहे—इन विषयो पर लोगो को आप सदुपदेश सुनाते रहते थे।

कभी-कभी गुरुदेव के पास ऐसे लोग भी आ जाते थे जो बातूनी होते थे। वे केवल अपनी ही बात सुनाते जाते थे। उनकी बातो को आप मौन होकर सुन लेते थे। इससे उन लोगो को भी सतोष हो जाता था। जब वे बोलते-बोलते थक जाते थे और चलने को तैयार होते तो कहते थे—साहेब जी, आज आपके सत्सग से बड़ा आनन्द आया। जबकि कहते सब वे स्वय अपना ही थे! गुरुदेव जी तो मूक श्रोता बने रहते थे।

18.

गुरुदेव का निवास-स्थान

गुरुदेव का अधिकतम समय बाहर भ्रमण मे हो बीतता था। वर्षावास के अवसर पर और वर्ष के बीच-बीच के दिनो को मिलाकर कुल चार-साढ़े चार महीने इलाहाबाद कबीर आश्रम मे रहते थे। गुरुदेव चाहे भ्रमण मे रहे या आश्रम मे, सब जगह आपके दर्शन करने एव आपके विचारो को सुनने के लिए सतो-भक्तो की भीड़ बनी रहती थी। इसलिए जितना सम्भव होता गुरुदेव का निवास स्थान बड़ा रखा जाता था। आप जहा रहते थे वहा आस-पास का वातावरण शात रहता था। वहा कोई भी व्यक्ति जोर से नही बोलता। मिलने-जुलनेवालो को भी निर्देश कर दिया जाता था कि वे शात रहे।

गुरुदेव काष्ठ की सादी चौकी पर सोना पसन्द करते थे। उसके ऊपर मध्यम दर्जे का गद्दा बिछाया जाता था जो न तो अधिक कड़ा होता था और न अधिक गुदगुदेदार। उसके ऊपर एक चादर बिछती थी। फिर उसके ऊपर आपका एक सफेद, पतला कपड़ा बिछाया जाता था। उसके ऊपर गुरुदेव की दो स्वच्छ चादरे बिछाई जाती थी। अपने सिरहाने मे आप अपना ही कुछ कपड़ा मोड़कर रख लेते थे। अलग से तकिया का प्रयोग आप बहुत कम करते थे।

कार्यक्रमो मे सदा गुरुदेव की चौकी से सटाकर एक साफ की हुइ मेज लगायी जाती थी जिस पर प्लास्टिक का एक मेजपोश बिछा दिया जाता था। मेज पर सब समय मूल बीजक तथा कुछ समसामयिक पुस्तके रखी रहती थी। एक-दो कलम, चश्मा एव एक घड़ी भी टेबल पर रखी रहती थी। आवश्यकता पड़ने पर सेवा मे रहनेवाले साधक को बुलाने के लिए आपके टेबल पर एक स्प्रिग-घटी भी रखी होती थी। आपके लिए धोकर एक कुर्सी रख दी जाती थी जिस पर बैठकर आप पढ़ते-लिखते थे या आगन्तुक दर्शनार्थियो से मिलते-जुलते थे।

गुरुदेव के निवास-स्थान के पास ही एक कमरा और होता था जिसमे आपकी सेवा मे रहनेवाले साधक रहते थे। आपकी सेवा मे सब समय दो या तीन साधक रहते थे। आपके साथ मे रहनेवाले साधक भी वहा पर तेज नही बोलते। गुरुदेव जहा भी रहते थे, आपका पढ़ना-लिखना, ध्यान, चितन, जिज्ञासुओ को हितोपदेश, शका-समाधान, प्रवचन आदि चलता रहता था।

19.

सामाजिक नियमो के पक्के

आत्मकल्याण एव आत्मशाति के जो नियम हैं उस पथ पर चलने के लिए गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी अपनी इक्कोस वर्ष की उम्र मे ही कटिबद्ध हो गये थे। और अत तक आप उसी नियम पर चलते रहे।

गुरुदेव का आश्रम इलाहाबाद कबीर नगर मे है ही, इसके अलावा भी आपके सरक्षण मे अनेक आश्रम हैं—

1. कबीर आश्रम नवापारा, राजिम, रायपुर, छत्तीसगढ़।

2. कबीर पारख आश्रम, सणिया हेमाद, सूरत, गुजरात।

इसके अलावा पाच आश्रम नारी साधिकाओ के लिए भी हैं—

1. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, पोटियाडीह, धमतरी, छत्तीसगढ़।

2. कबीर पारख आश्रम, धर्मपुरी, बड़ौदा, गुजरात।

3. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, दर्रा, बालोद, छत्तीसगढ़।

4. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, मूरा, धमतरी, छत्तीसगढ़।

5. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम, जोटवड, पचमहाल, गुजरात।

इस प्रकार खास रूप से आठ आश्रम आपके सरक्षण मे चलते हैं। अब तक आपके सरक्षण मे दर्जनो आश्रम हो जाते लेकिन आप सबको त्यागते रहे। गुरुदेव कहते थे कि शाखा बढ़ाना सरल है लेकिन उसके बाद उसे चलाना महा अशाति और उलझन का घर है। आपके सरक्षण मे जितने आश्रम हैं सभी स्वतत्र एव सस्थागत हैं। उनके लिए यह नियम है—

1. साधको के आश्रम मे पुरुष साधक ही रह सकते हैं। उसमे पाच वर्ष की बच्ची और नब्बे वर्ष की बुढ़िया भी नही रह सकती।

2. बिना अभिभावक के आश्रम के अन्दर अकेली स्त्री रात मे नही रह सकती।

इसी प्रकार साधिकाओ के आश्रम मे नियम है—

1. साधिकाओ के आश्रम मे साधिका नारी ही रह सकती है। वहा पाच वर्ष का लड़का और नब्बे वर्ष का बूढ़ा भी नही रह सकता।

2. अतिथि रूप मे आये हुए सत या भक्त पुरुष को साधिकाए दूर से जल-भोजन दे दे। वहा कोई भी पुरुष आश्रम मे अन्दर नही रह सकता।

गुरुदेव के दिये गये इन नियमो को जो साधक पालन नही करता वह बुज़र्ग से बुजूर्ग और प्यारा से प्यारा क्यो न हो, उससे आप सम्बन्ध नही रखते। गुरुदेव

किसी भी साधक से पक्षपात नही करते। वे सबके साथ प्यार और समता का भाव रखते थे। गुरुदेव साधक की योग्यता के अनुसार उससे काम लेते थे। किसी साधक से यदि उससे बड़ी से बड़ी गलती हो गयी हो लेकिन यदि वह गलती स्वीकार ले और उसे सुधारने के लिए तैयार हो तो आप उसे नही त्यागत। उसको एक बार मौका देते थे कितु कुटिल और हठी व्यक्ति के स्वभाव का पता चलते ही आप उसे सावधान कर देते थे। यदि इतने पर भी वह नही सुधरता तो गुरुदेव उसके सम्बन्ध का त्याग कर देते थे।

गुरुदेव कहते थे—

1. साधक सादा और सात्विक वेष पहने, वह चटक-मटक एव फैशन वाले कपड़े न पहने।

W. साधक को बहुत बड़े-बड़े बाल नही रखने चाहिए और रोज-रोज बनवाने का हठ भी नही करना चाहिए।

3. विरक्त साधक को व्यक्तिगत बहुत धन का सग्रह नही करना चाहिए।

y. साधक जातिवाद, सम्प्रदायवाद एव राजनीति का प्रचार न करे।

Z. साधुवेषधारी को स्त्री मात्र से दूर रहना चाहिए।

6. साधक जन्म-स्थान से पारिवारिक सम्बन्ध न रखे।

7. आश्रम मे रहनेवाले साधु-भक्तो का भोजन एक साथ और एक जैसा बने और सब एक साथ बैठकर भोजन करे।

8. आश्रम मे रहनेवाले साधु-भक्त किसी भी प्रकार का दुर्व्यसन न करे।

9. पाठ, सत्सग और ध्यान मे सबको बैठना अनिवार्य है।

20.

गुरुदेव द्वारा दीक्षा एवं साधुवेष देने की विधा

V~Z~-60 का समय होगा। उस समय आपकी उम्र 27-28 वर्ष की थी। आप अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ गोडा जिला के धानेपुर बाजार के कबीर आश्रम मे थे। कुछ लोग ग्राम-महादेव ज्वालापुर की ओर से आये थे। सभी पूर्व परिचित थे। आते ही सब लोग गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी से निवेदन करने लगे कि साहेब जी, हम लोग अभिलाष साहेब को चाहते हैं कि हमारे गाव मे पधारे। कुछ लोगो को दीक्षा लेनी है।

गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी ने अभिलाष साहेब जी को बुलाकर कहा— अभिलाष दास, देखो ये लोग तुम्हे बुलाने आये हैं। जाओ, चले जाओ कुछ लोगो को दीक्षा भी लेनी है। इसलिए दीक्षा भी दे देना।

आपने कहा—गुरुदेव, यह दीक्षा देने का काम मुझे न दिया जाये, यह काम मैं नही कर पाऊगा।

गुरुदेव जी ने कहा—जाओ, तुम्हे जाना ही है। सोचो, यदि मैं तुम्हे दीक्षा न देता, तुम्हे अपने पास न रखता तो तुम्हे कैसा लगता? इतनी बात सुनकर अभिलाष साहेब चुप हो गये।

गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी ने श्री सुशील साहेब को बुलाकर उनसे कहा—सुशील दास, यह चदन और कठी माला ले लो और अभिलाष दास के साथ चले जाओ। महादेव मे कुछ लोग दीक्षा लेना चाहते हैं। तुम दीक्षा दिला देना।

इस प्रकार गुरुदेव के बहुत आग्रह करने पर न चाहते हुए भी भक्तो को दीक्षा देने के लिए आपको स्वीकार करना पड़ा।

गुरुदेव भक्तो एव साधक ब्रह्मचारियो को दीक्षा एव साधुवष देने मे जल्दी नही करते थे। भक्तो को भी आप खूब पूछ-परखकर ही दीक्षा देते थे। पहले तो आप उनसे कहते थे—शिक्षा ही दीक्षा है। भाई, पहले कबीर साहेब के विचारो को पढ़ो, अध्ययन-मनन करो। देखो-समझो, आपके मन को स्वीकार होता है कि नही। जब पूर्णरूप से स्वीकार होने लगे तब दीक्षा लो।

फिर गुरुदेव खानपान की कसौटी लेते थे। पान-बीड़ी, तम्बाकू, मास-मदिरा आदि कोई खाता-पीता हो उसको छोड़ने के लिए आप सकल्प करवाते थे। यदि ये सब आदते नही छोड़ पाता था तो आप उसको कहते थे कि तुम दीक्षा न लो। जब ये सारे दुर्व्यसन छोड़ देना और खूब मजबूत हो जाना तब दीक्षा लेना।

कोई व्यक्ति पहले से किसी गुरु से अगर जुड़ा होता था लेकिन अब वह आपके विचारो से प्रभावित होकर आपसे दीक्षा लेना चाहता है तो आप उसे समझाते थे—हमारे विचार आपको अच्छे लगते हैं तो ठीक है, इन विचारो का अध्ययन एव मनन-चितन करो। इससे लाभ लो। लेकिन जिन सत-गुरुजनो से तुम्हारी पहले से शिक्षा-दीक्षा हुई है उन्ही के सरक्षण मे रहो। उन्हे न छोड़ो।

कुछ लोग ऐसे होते थे जो आपके तेजोमय ज्ञान-वैराग्य, रहनी से प्रभावित होकर आपके पास आ जाते थे कितु वे दीक्षा-भक्ति के महत्त्व को जानते ही नही थे। वे आपसे ही पूछने लगते थे कि—साहेब, क्या दीक्षा लेना जरूरी है? तब आप उनसे कहते थे—ठीक है, ऐसे ही सतो की सगत करते रहो, अध्ययन-मनन मे लगे रहो, दोक्षा लेना कोई जरूरी नही है।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब के गृहत्याग के कुछ दिन बाद से ही आपकी सुकीर्ति चारो तरफ फैलने लगी थी। धीरे-धीरे आपके त्याग-वैराग्य और

रचनाओ से प्रभावित होकर सतो-भक्तो मे आपकी विशेष माग होने लगी। आपके साथ साधक ब्रह्मचारियो का समाज चलने लगा। सन् 1977 मे इलाहाबाद कबीर सस्थान स्थापित होने के बाद सतो के विशेष आग्रह से 1977 मे ही सर्वप्रथम एक ब्रह्मचारी को आपने साधुवेष दिया।

बहुत निरख-परख करने के बाद ही गुरुदेव साधको को ब्रह्मचारी या साधु का वेष देते थे। कोई भी साधक घर छोड़कर आता था तो कम से कम साल भर के बाद ही आप उसे ब्रह्मचारी वेष देते थे। साधुवेष के लिए आठ-दस वर्ष और कभी-कभी पन्द्रह वर्ष तक कसौटी पर कसकर ही साधुवेष देते थे।

21.
सबसे बच-बचकर रहने की प्रवृत्ति

जो साधना से चलते हैं, अतर्मुख होते हैं, ससार से उदास रहते हैं, उनके पास ससार का ऐश्वर्य, धन, प्रभुता और कीर्ति आदि अपने आप आते रहते हैं। ऐसी स्थिति मे यदि साधक उन ऐश्वर्यों मे आनन्द मानता है, रस लेता है और यह मानता है कि मेरी बड़ी योग्यता है क्योकि लोग मुझे बड़ा मानते हैं तो धीरे-धीरे ऐसे साधक के मन मे अनादि के अध्यस्त सस्कार उभरने लगते हैं, फिर साधक भटक जाता है। लेकिन जो साधक श्रद्धालुओ द्वारा मिले हुए पदार्थों को आवश्यक देह-निर्वाह के अलावा त्यागता रहता है और समझता है कि इन सबके पाने मे मेरी कोई विशेषता नही है, बल्कि यह तो गुरु की कृपा से हो रहा है। मैं तो एक साधक मात्र हू। इस प्रकार जो सावधान रहता है वह भटक नही सकता।

सन् 1953 से 1958 तक बीच-बीच म गुरुदेव सद्गुरु विशाल देव के दर्शन करने जाया करते थे। लेकिन सन् 1958 से 1977 तक तो बराबर वर्ष मे दो बार अवश्य जाया करते थे। श्री विशालदेव के पास जाते ही आप उनके अतरग हो जाया करते थे। आपके त्याग-वैराग्य, साधना, रहनी, लेखनी एव प्रवचन शैली से सभी सत-भक्त आपको चाहते थे। प्राय: शाम को वहा सत्सग चला करता था। श्री प्रेम साहेब जी या अन्य सतो की सत्सग-सरिता मे सभी आप्लावित होते रहते थे। लेकिन जब श्री अभिलाष साहेब जाते तो भक्त लोग कहते कि साहेब आप बोलिए।

श्री विशालदेव एव अन्य लोगो के बहुत चाहने पर भी आप वहा अधिक नही ठहरते थे। श्री विशालदेव के पास आप जाते, दरश-परश तथा सत्सग करते और दो-चार दिनो मे अपने गुरुस्थान पर वापस आ जाते थे।

धीरे-धीरे आपकी प्रतिष्ठा एव प्रचार बढ़ता गया, लोग आपकी उज्ज्वल रहनी और शातिमय जीवन से स्वाभाविक आकर्षित होते गये। आपके उज्ज्वल चरित्र और जीवन से प्रभावित होकर बहुत से सत-भक्त आपको अपनी जमीन, आश्रम आदि समर्पित करना चाहते थे। आश्रम-जमीन आदि देने की दर्जनो ऐसी घटनाए हैं कि लोग सामने मिलकर, पत्र देकर, फोन करके, और सदेश के माध्यम से आपको आश्रम निर्माण हेतु अपनी अचल सम्पत्ति समर्पित करना चाहते। लेकिन आप इन सबको उपाधि समझकर त्यागते रहे। वर्ष 1982 मे एक महत आये जिनके लगभग पचास एकड़ जमीन और आश्रम आदि थे। वे चौबीस घटे तक गुरुदेव के पास इलाहाबाद आश्रम मे डटे रहे कि हमारा धन स्वीकार लीजिए, नही तो हमारे भाई-भतीजे उसे ले लेगे और सब गृहस्थो के हाथ चला जायेगा। लेकिन गुरुदेव नकारते रहे। जाते वक्त उन्होने कहा—कभी विचार बदले तो सदेश दीजिएगा मैं सब समय तैयार हू। गुरुदेव जी ने कभी कोई सदेश नही दिया।

कुछ लोग होते हैं कि उनके पास कोई मिलने न आये तो वे अपने को अकेला एव खाली-खाली महसूस करते हैं। कितु गुरुदेव इसके बिलकुल विपरीत थे। आपसे कोई मिलने आता था तो आप उससे आत्मीयता से प्रसन्नतापूर्वक मिलते थे और कोई नही मिलने आता था तो आप अपने आप मे रहते थे। गुरुदेव अनेक बार कहते थे कि मिलने से अच्छा है न मिलना।

लोग चाहते हैं कि हमारा कोई शिष्य हो जाये, कितु गुरुदेव इस विचारधारा के विपरीत थे। आप शिष्य एव प्रचार बढ़ाने की कल्पना ही नही करते थे कि मेरे पास कोई आये। लेकिन न चाहते हुए भी आपके पास गृहस्थ-विरक्त शिष्यो का हुजूम लगा रहता था। परन्तु उनमे से आपके पास से कोई अगर वापस जाने लगता था तो आप उसे कभी नही रोकते थे बल्कि जाते वक्त कुछ राह खर्च भी दे देते थे। अतत: उनको आप यही आशीर्वाद देते थे कि खूब प्रसन्न रहो और जहा रहो साधना करते रहो।

22.
बड़ो के प्रति मर्यादा

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी अपने से बड़े सत-गुरुजनो के प्रति अदब, श्रद्धा भाव एव मर्यादा पालन मे बहुत सावधान रहते थे। बड़ो के सामने आप सब समय विनम्र रहते थे। बड़ो से पहले बदगी कर लेना, हाथ जोड़ लेना, भक्तो के सामने भी पहले से स्वय हाथ जोड़ लेना आपका सहज स्वभाव था।

आप अपने गुरुदेव के पास कभी खड़ाऊ पहनकर नही जाते थे। जब भी आपको उनके पास जाना होता था तो दूर ही अपनी खड़ाऊ उतार कर नगे पैर जाया करते।

जब भी आप गुरुदेव जी के दर्शन करने जाया करते तो खाली हाथ कभी नही जाते थे। फल, फूल, कपड़े और रुपये-पैसे आदि जरूर लेकर जाते थे। आप गुरुदेव का चरणामृत लेने के लिए अपने साथ गिलास मे पानी भी लेकर जाते थे। तीन बार बदगी करके गुरुदेव का चरण-स्पर्श जरूर करते।

आप अपने से बड़े गुरुभाइयो के आसन पर कभी नही बैठते थे। बड़े गुरुभाइयो की खड़ाऊ पहनना तो दूर आप उस पर कभी पैर तक नही रखते थे। यदि कदाचित भूल से पैर पड़ जाता तो स्वय खड़ाऊ को हाथ से उठाकर उसे पानी से धोकर पुन: यथास्थान रख देते।

आप बड़े गुरुभाइयो के कमडलु-गिलास आदि लेकर कभी भी शौच या लघुशका आदि नही जाते थे। इन सब बातो पर आप बहुत सावधान रहा करते थे।

आप बड़ो को नाम लेकर कभी नही पुकारते। सब समय आदरपूर्वक 'साहेब जी' या उचित मर्यादा अनुसार ही सम्बोधन करके पुकारते थे।

वरिष्ठ सतो एव गुरुजनो की सेवा आप बड़े उत्साह से करते। आप सतो को सब समय ऊची दृष्टि, पूज्य दृष्टि से देखते थे। स्व मत के हो या पर मत के आप स्वय चलकर वरिष्ठ सतो के दर्शन करने जाते थे। आप सबसे भेद-भाव रहित समता का बरताव करते हुए सबका यथोचित आदर करते थे।

23.

वृhो से विशेष प्रेम

वृद्धो का जीवन दर्पण के समान होता है। वे अपने लम्बे जीवन के अतराल मे ससार को काफी देखे-परखे होते हैं और अनुकूल-प्रतिकूल सभी प्रकार के अनुभवो के थपेड़े खाये होते हैं। ससार से मिलनेवाले सुख के बारे मे कोई वृद्ध ही बता सकता है कि यहा कितना सुख है! इसलिए वृद्धो की मित्रता बड़ी उपयोगी होती है। गुरुदेव बचपन से ही वृद्धो से ज्यादा मित्रता करते थे। जब आपकी उम्र 10-15 वर्ष की थी तभी से आपके मित्र 60-70 वर्ष के वृद्ध रहा करते थे। आप उन लोगो के पास बैठते तथा उनसे नीति, धर्म एव शास्त्रो की बाते सुना करते थे।

कुछ लोग होते हैं जो शरीर से तो वृद्ध होते हैं लेकिन मन से चचल बने रहते हैं क्योकि उन्होने जीवन मे मन की शाति का कोई काम ही नही किया। इस बात पर कभी उन्होने सोचा ही नही कि भौतिक धन से बढ़कर शाति धन सर्वोच्च धन है। वे तो रुपये-पैसे रूपी ककड़-पत्थर के ही धन को बटोरने मे अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। फिर ऐसे लोग वृद्धावस्था मे कैसे सुखी हो सकते हैं।

ससार मे कुछ लोग होते हैं जो पत्नी, पुत्र, धन, सम्पत्ति, पद-प्रतिष्ठा आदि ससार की सारी उपलब्धियो को प्राप्त होने के बाद भी उन्हे लगता है कि ये सब तो औपाधिक ह। मिलने-बिछुड़नेवाली चीजे हैं। इन सारी चीजो से मनुष्य को शाति नही मिल सकती। शाति प्राप्त करने के लिए तो कुछ और ही करना पड़ेगा। वह है अतर्मुखता का काम। इसके लिए जब मनुष्य अपने मन-इन्द्रियो को स्ववश करके विवेकी सत-गुरुजनो की भक्ति, सेवा, सत्सग मे लगता है तब धीरे-धीरे उनका चित्त अपने आप शुद्ध हो जाता है। ऐसी मनोवृत्ति वालो का बुढ़ापा आनन्दप्रद होता है और उन्ही का जीवन सफल होता है।

गुरुदेव के पास जब कोई वृद्ध आता था तो उनसे आप पूछते थे—मन प्रसन्न रहता है? स्वाध्याय कुछ कर पाते हैं कि नही? जितना बन सके अतर्मुखता की ओर चलो। चादर हो गयी बहुत पुरानी, समय बहुत थोड़ा रह गया है इसलिए जल्दी से उस दिन के लिए अपनी तैयारी कर लो।

वृद्धो को गुरुदेव राय देते थे कि अपनी जिम्मेदारियो को घटाओ, लड़के बड़े हो गये हैं। गृहस्थी का भार उनको दे दो। जितना बन सके आप स्वाध्याय-साधना मे मन को लगाओ।

गुरुदेव के ये सूत्र-वाक्य थे जिन्हे आप भरी सभा मे भी कहते रहते थे—नवजवानो को 24 घटे मे एक घटा का समय एकान्त साधना के लिए निकालना चाहिए। 40 वर्ष से ऊपर वालो को दो घटे का समय निकालना चाहिए। 50 वर्ष से ऊपर वालो को तीन घटे का समय निकालना चाहिए। और 60 वर्ष से ऊपर वाले चार घटे के अलावा भी अधिक से अधिक जितना समय निकाल सके, निकाले। इस अवस्था मे भी वे माया-मोह और दुनिया के प्रपच मे फसे रहे तो ठीक नही करते हैं।

वृद्धो को चाहिए कि वे घर के सेवा कार्य मे भी कुछ हाथ बटा ले। जैसे—दरवाजे पर झाड़ू लगा देना, फूलो मे पानी डाल देना, कभी-कभी बच्चो को सभाल लेना और उन्हे पढ़ा देना आदि। जिससे उनका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और बहू-बेटे भी खुश रहेगे। बच्चो को सभालने के नाम पर उन्ही के माया-

मोह एव चिता मे न फसे रहे। आपने अपने बच्चे को पाल-पोषकर पढ़ा-लिखाकर बड़ा बना दिया। अब वह अपने बच्चो की जिम्मेदारी निभायेगा। उसके बच्चो मे आप न लगे रहे।

गुरुदेव जी कहते थे—वृद्धो को चाहिए कि वे अपने खान-पान, पहनने-ओढ़ने आदि मे सादगी रखे और थोड़े मे निर्वाह ले। सादगी और थोड़े मे निर्वाह लेने का मतलब यह नही है कि सारा धन लड़को मे बाटकर अपना खाली हाथ होकर बैठ जाये। बुढ़ापे मे हाथ बिलकुल खाली कर लेगे तो अत मे बहू-बेटे भी अपना हाथ खीच लेगे। इसलिए बच्चो मे धन तो बाट दे लेकिन एक हिस्सा अपने पास भी रखे। जिससे कभी कुछ व्यवहार मे आवश्यकता पड़े, कही कुछ दान-पुण्य करने का मन हो या सत-गुरुजनो की सेवा मे खर्च करने का मन हो तो कर सके। अपने हाथ मे कुछ न रहने पर तो परोपकार-सेवा करना चाहत हुए भी नही कर सकगे।

जवानी मे जब व्यक्ति सेवा, भक्ति, सत्सग, सयम से चलते हुए सद्ग्रथो का अध्ययन, चितन-मनन करता रहता है तो उसके सस्कार अच्छे रहते हैं। गुरुदेव जी वृद्धो को राय देते रहते थे कि सारी कामनाओ को त्यागकर सादगीपूर्वक और कम से कम वस्तुओ से गुजर-बसर करना चाहिए। इससे बुढ़ापा सुखपूर्वक बीतता है।

24.

निष्काम सेवा भाव

लोग गुरु की सेवा तो बड़ी श्रhा-भाव से करते हैं लेकिन यदि कोई शिष्य एव अपरिचितो की सेवा करता है तो यह उसकी महानता मे चार चाद लगा दता है। गुरुदेव अभिलाष साहेब जी ऐसे ही थे—

बहुत पुरानी घटना है। गुरुदेव जी एक बार हाइड्रोसील के आपरेशन के लिए श्री राम हास्पिटल अयोध्या मे एडमिट थे। उन दिनो हाइड्रोसील जैसे छोटे आपरेशन के लिए भी हास्पिटल मे कई दिनो तक रहना पड़ता था। गुरुदेव जी का आपरेशन हो चुका था किन्तु अभी घाव सूखा नही था। जिस वार्ड मे आपको बेड मिला था वही पर अन्य कई मरीजो का भी आपरेशन हुआ था। ठडी के दिन थे, रात्रि का समय था, अचानक उसी वार्ड मे दूर एक व्यक्ति के कराहने की आवाज आयी। देर तक वह व्यक्ति छटपटाता रहा लेकिन उसका कोई भी सहायक वहा न आ सका। गुरुदेव जी कुछ देर तक तो उसकी आवाज सुनते रहे, लेकिन आगे सुन न सके। आप अपने बिस्तर से उठे और धीरे-धीरे उसके पास

गये, वह व्यक्ति छटपटा रहा था। आपने पूछा तो उसने बताया, पेशाब लगी है। तत्काल आपरेशन होने के कारण वह उठकर चल नही सकता था और बिस्तर पर कर दे तो ठड मे वहा रहना मुश्किल। गुरुदेव उसके पात्र को उठाये और उसे पेशाब कराकर धीर से बाहर फेक आये। फिर वह व्यक्ति आराम से सो गया और गुरुदेव जी भी अपने बिस्तर पर आकर विश्राम करने लगे।

जिस वार्ड मे गुरुदेव जी थे उसी मे हनुमानगढ़ी, अयोध्या के महन्त जी भी एडमिट थे। रात्रि मे गुरुदेव जी के इस कार्य व्यवहार को बड़े ध्यान से देख रहे थे। वे आपके इस कार्य से बहुत प्रभावित हुए। उन्होने सुबह गुरुदेव जी के पास आकर प्रशसा करते हुए कहा—आप साधु होकर अपरिचित व्यक्ति की ऐसी सेवा किये। ऐसा तो मैं सोच भी नही सकता था। गुरुदेव जी ने कहा—साधु होने का मतलब ही है यथाशक्ति समाज की विनम्र सेवा करना, न कि अहकारी होना।

*　　　　*　　　　*

1994 ई0 का समय रहा होगा, गुरुदेव उस समय कबीर आश्रम प्रीतम नगर मे विराजमान थे। कुछ दिनो से आश्रम के एक सत का स्वास्थ्य खराब चल रहा था। समय-समय से आप उनके पास देखने के लिए जाया करते थे। एक दिन दोपहर भोजनोपरान्त आप उनके पास गये, तब तक सतो के लिए भोजन की घन्टी बजी और आश्रमवासी सभी सत भोजनालय मे भोजन करने गये।

गुरुदेव जी अभी उन सत के पास बैठे उनके स्वास्थ्य के बारे मे पूछ ही रहे थे कि उनको बिस्तर पर ही बहुत जोरो से उलटी (वमन) हो गयी। गुरुदेव बिना कुछ देर लगाये बड़े प्रेम से अपने हाथो से उस वमन को एक पात्र मे भरकर बाहर फेके और उनके बिस्तर के उस कपड़े को निकालकर दूसरा कपड़ा बिछाये। तब तक अन्य सत जन आ गये और उनकी सेवा मे लग गये।

25.
छोटी-छोटी बातो मे सजगता

गुरुदव जी हर काम के लिए पहले से उचित सावधानी रखने मे कभी कमी नही रखते। व्यवहार की छोटी-छोटी बातो मे भी आप अत्यन्त सजग रहते हैं। जैसे आपके कमडलु को यात्राओ के दौरान आपके साधक लोग रखते हैं। समय से उसे टेबल, चौकी या तहखाने आदि जगहो मे रखना ही पड़ता था। कभी-कभी असावधानीवश कोई साधक कमडलु को टेबल के किनारे भाग मे रख

दिया तो आप तुरन्त टोकते और बताते थे कि इसे ऐसा नही रखना चाहिए। ऐसा करने से तुम्हारी थोड़ो असावधानी मे कोई भी मूल्यवान चीज टूटकर खराब हो सकती है।

एक बार गुरुदव जी कार्यक्रमो मे थे। आपकी सेवा मे सत श्री गुरुक्षेम साहेब और ब्रह्मचारी श्री भूषण साहेब थे। एक दिन श्री गुरुक्षेम साहेब से टेबल पोछते समय अचानक आपकी टेबल घड़ी जमीन पर गिर गयी। समय दखने के लिए इस घड़ी को आप सब समय साथ रखते थे। जमीन पर गिर जाने से घड़ी के ढक्कन का कुछ अश टूट गया। श्री गुरुक्षेम साहेब उसे झट उठाये और सभालने लगे। उनको बहुत कष्ट हुआ और दखी मन से आत्मग्लानि करने लगे कि मुझसे ऐसी भूल क्यो हो गयी।

तब तक गुरुदव जी सामने आ गये। आपने दखा कि गुरुक्षेम उदास खड़े हैं। आपने उनसे पूछ लिया, क्यो बेटा क्या बात है?

सत श्री गुरुक्षेम साहेब न रुधे स्वर मे कहा—टेबल पोछते समय असावधानी वश यह घड़ी गिर गयी और थोड़ी टूट गयी।

गुरुदव ने झट उनको गले से लगाकर पीठ सहलाते हुए कहा—मेरे लाल, दखी मत होओ। तुम्हारे सामने इस घड़ी की कोई कीमत नही है। तुम मेरे प्यार हो, घड़ी नही। यह टूट भी जायेगी तो दसरी आ जायेगी। इसके लिए तुम अफसोस न करो।

बाद मे उनको समझाते हुए गुरुदव ने कहा—बेटा, इसीलिए मैं छोटो-छोटी बातो के लिए कहता रहता हू कि सब जगह सावधानी रखो। हमने उचित सावधानी रखी, इसके बाद भी कोई क्षति हो जाये तो इसमे कोई दख की बात नही। हा, हमने असावधानी किया है तो बाद मे पछताने-दखो होने से हमे कोई बचा नही सकता।

26·
हानि-लाभ से ऊपर

जीवन के एक-एक क्षण का दोहन, प्रत्येक कदम पर सावधानी, निश्चित रहन के लिए चिन्ता, लालसाओ को उखाड़ फेकने की तीव्र इच्छा, मन के एक-एक सकल्प-तन्तु पर स्ववशता प्राप्ति का निश्चय, मोह को सब समय कुपित दृष्टि से देखना, ससार की समस्त सबधित चीजो को काल के गाल मे जाते हुए देखना, विजाति जड़ दृश्यो से अखण्ड उपरामता—इस प्रकार अपने आत्म-प्रदेश मे निरन्तर रमण करने का जिसे तीव्र अनुराग हो जायेगा वह त्रयताप से भरे इस

दुखद असार ससार म सुख क्यो मानेगा! गुरुदेव अभिलाष साहेब, किसी विषय एव किसी पदार्थ पर सोचने के लिए जब जरूरत पड़ती है तब, उस पर साफ एव स्पष्ट चितन करते हैं अन्यथा अन्य समय मे आपकी चित्तवृत्ति शात एव आत्मचिन्तन मे रहती है।

सामान्य मन:स्थिति का व्यक्ति थोड़ी-थोड़ी घटनाओ मे विचलित होता रहता है। थोड़ा-सा कुछ ऐसा दृश्य देखा जो अनुकूल है तो उसमे प्रसन्नता से फूल उठता है और कुछ ऐसी घटना देखी जो अनुकूल नही है तो उसमे वह दुखी होकर छटपटाने लगता है। लेकिन गुरुदेव जी को यहा की कोई भी अनुकूल-प्रतिकूल घटना विचलित नही करती क्योकि सभी मिली हुई चीजे एव उनका आधार यह अपनी मानी हुई देह को ही आप अपना नही मानते। फिर इन क्षणिक चीजो के मिलने मे प्रसन्नता कैसी! एक बार सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब ने आपसे पूछा था कि तुम्हे कुछ हानि तो नही लगती है? आपने जवाब दिया था—गुरुदेव, आपकी कृपा से अब मन की सारी हानि बीत गयी।

सामान्य मनुष्य के मन मे धनहानि, पदहानि, प्रतिष्ठाहानि, पुत्रहानि आदि की भावना सब समय उसको उद्वेगित करती रहती है किंतु गुरुदेव के जीवन मे हानि नाम की कोई चीज ही नही है।

कभी-कभी कोई ऐसा व्यक्ति आ जाता है जो आपके स्वभाव एव विचारो से परिचित नही रहता है। वह आपसे ही पूछ बैठता है—साहेब जी! आपके बाद इस समाज, सस्था एव साहित्य का क्या होगा? इसकी व्यवस्था के बारे मे आप कभी सोचते हैं कि नही?

गुरुदेव उनसे कहते हैं—मेरे शरीर के रहते-रहते यह सब बिगड़ जाये तो भी मैं इसके बारे मे कभी नही सोचता। जैसे आज सब व्यवस्थित चल रहा है, वैसे ही योग्य लोग रहेगे तो आगे भी चलता रहेगा; नही चलायेगे तो मेरा क्या जायेगा? यद्यपि कोई भी समझदार व्यक्ति यह नही चाहेगा कि यह सब बिगड़ जाये लेकिन अन्तत: इसकी चिन्ता करने से तो कोई लाभ है नही। और कौन एक व्यक्ति बैठा इसकी व्यवस्था देखता रहेगा? ये सब बिगड़नेवाली चीजे तो हैं ही। ससार स्वचालित यत्र है जो बनते-बिगड़ते सब समय अपने आप चलता रहता है। आजकल मे शरीर छूट जायेगा और इसके छूटते ही अपना माना हुआ सब कुछ सदा के लिए ओझल हो जायेगा। ऐसी दशा को हमे शरीर रहते-रहते अपने मन मे अपनाना चाहिए।

6 सितम्बर, 2008 की बात है। गुरुदेव चीन के महान सत लाओत्जे की पुस्तक 'ताओ ते चिग' का ब्रह्मचारी देवेन्द्र साहेब के साथ मनन-चितन कर रहे

थे। बीच-बीच मे आपसे मिलनेवाले लोग भी आते रहते। आपके भोजन करने का समय हो गया था। इसलिए आप आसन पर बैठे विश्राम कर रहे थे। उस समय मैं आपके पास पहुच गया और बन्दगी करके सामने बैठ गया।

गुरुदेव जी ने वैराग्य की कुछ चर्चा चलायी और बात करते-करते आपने कहा—अभी यहा बैठे-बैठे मैं मन की इस स्थिति मे था मानो मेरा शरीर मरणासन्न होकर बिस्तर पर पड़ा है। मिलने वाले बहुत-से लोग आ रहे हैं। सतजन मेरे पास बैठे हैं। एक सत मुझसे पूछते हैं—साहेब, इस आश्रम और समाज की व्यवस्था के बार मे अन्ततः कुछ बताते जाय। मैंने कहा—इस नश्वर और छूटनेवाले जड़-जगत की मुझे पुनः क्यो याद दिलाते हैं। बस इतने मे तुम आ गये।

आपने इसी बात को पुनः स्पष्ट करते हुए कहा—मान लो, मैं गुरुदेव की शरण मे रहकर साधना-भजन करते हुए अपने कल्याण का काम कर लिया होता और एक भी शिष्य न बनाता, कोई भी आश्रम न बनाता, कोई भी पुस्तक न लिखता और सादा फकीरो ढग से जीवन जीता फिर ऐसी स्थिति मे जब शरीर छूटने लगता तो उस समय मेरा अपना माना हुआ क्या छूटता! लेकिन शिष्य, समाज, आश्रम और ये अनेक पुस्तके होते हुए भी मेरे अपने आप मे नही के समान हैं। मेरा मन तो निरन्तर अकेलेपन और असगभाव मे ही डूबा रहता है। ये सब प्रपच का विस्तार तो बाहर का ही विस्तार है। इसका मेरी कल्याण दशा से क्या लेना-देना है?

27.

सुन्दर जीवन का शौक

गुरुदेव की निर्विकारिता, प्रसन्नता, निवृत्ति-परायणता एव निष्कामता जीवन के पूर्वार्ध से ही एकरस चली आ रही है। सच है, मनुष्य जिस चीज के लिए निश्चय कर लेता है, जिस चीज के लिए शौक हो जाता है उसे वह पूरा करके ही रहता है। ऐसे ही दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को सफलता खोजती फिरती है। मनुष्यो मे शौक करने के अनेक आयाम हैं।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी ने मन को परखने और उसे स्ववश करने का शौक किया। इसी मे आपने अपने जीवन को समर्पित कर दिया। तभी तो इस चल-विचल ससार के अनेक झझावातो के बीच आप स्वर्ण स्तम्भ की तरह खड़े हैं। इस अविचल स्थिति को प्राप्त करने के लिए निरन्तर की सजगता और

समस्त प्रलोभनो का त्याग आपकी रहनी है। आपने सद्‌गुरु कबीर की इस साखी को अपने जीवन मे चरितार्थ कर दिया—

फहम आगे फहम पाछे, फहम दाहिने डेरि।
फहम पर जो फहम करे, सो फहम है मेरि॥

(बीजक, साखी 1}})

गुरुदेव समय-समय से अपने प्रवचन मे भी कहा करते हैं—मैंने अपने जीवन मे कोई ऐसा काम नही किया है जिससे मुझे कभी पश्चाताप करना पड़ा हो। यह छोटा-सा वाक्य है लेकिन अपने आप मे बहुत बड़ा अर्थ समेटे है। ऐसा कहने का साहस, ऐसी मन:स्थिति रखना किसी शूरवीर महापुरुष के ही बलबूते हो सकता है। किसी के लिए तो यह बात अह भी हो सकती है लेकिन बोधवान के लिए यह एक सामान्य बात है। किन्तु ऐसे महापुरुष को भी लोग नही समझ पाते हैं। इतना ही नही, निकट रहनेवाले लोगो को भी भ्रम हो जाता है। सच है किसी भी दृश्य को बहुत दूर से बिलकुल साफ नही देखा जा सकता है। उसे समझने के लिए तो निकट जाना ही पड़ेगा। जो अतर्द्रष्टा सत हैं, वे अपनी स्थिति की बहुत ऊचाई पर स्थित होते हैं। उनको पूर्णत: समझने के लिए कुछ निकटता और वैचारिक साम्यता तो होनी ही चाहिए। दूर से तो केवल अटकल लगायी जा सकती है।

28.

वस्तु का सदुपयोग

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी किसी वस्तु का पूरा-पूरा सदुपयोग करते थे समय और वस्तु का अपव्यय आपको बिलकुल पसद नही था। यही राय आप अपने सभी साधको को भी देते थे।

जिस साफी से आप स्नान के बाद अपना शरीर पोछते थे, पुरानी होने पर भी कभी मैं अगर बदलने की चेष्टा करता तो आप कहते कि अभी बदलने की क्या जरूरत है। काम तो हो ही रहा है। जब फट जायेगी तो बदल देना। इसी प्रकार लगोटी को भी आप फटने तक उपयोग मे लाते थे।

ठड के दिनो मे आप बडी और स्वेटर का प्रयोग करते थे। एक बार छत्तीसगढ़ से सतो को इलाहाबाद आना था। उनके साथ अन्य कपड़े भेजने के साथ-साथ बडी भी आप भेज रहे थे। देखा गया तो वह बडी काफी पुरानी हो गयी थी। साधक ने कहा—गुरुदेव, यह बडी तो अब पहनने लायक नही है। इसे न भेजा जाये। गुरुदेव ने कहा—अभी ज्यादा फटी नही है। भेज दो अगले वर्ष पहनने मे कुछ दिन और काम आ जायेगी।

पहले तो आप केवल खड़ाऊ पहनते थे। यात्रा के समय नगे पैर चलते थे। सन् 1984 मे गुजरात के गड़ौथ नाम के गाव मे कार्यक्रम था। आपका निवास ऊपरी तल्ल पर था। जिस पर खड़ाऊ पहनकर चलना खतरे से खाली नही था। उस पर चलने के लिए भक्त ने चप्पल ला दिया, तभी से आप चप्पल पहनने लगे कितु जूता आप नही पहनते थे।

ठड के दिनो मे प्रातः भ्रमण के समय पैर काफी ठड हो जाया करते थे। कितु आप किसी से कुछ कहते नही थे। 2002 मे लखनऊ मे श्री रामअवतार अग्रवाल के घर कार्यक्रम था। उस समय ठड खूब पड़ रही थी। अग्रवाल जी बिना पूछे गुरुदेव जी के लिए कपड़े का नया जूता ला दिये। पहनने पर पैरो मे अनुकूल लगा। तब से आप प्रातः भ्रमण के समय कपड़े के जूते भी पहनना शुरू कर दिये।

एक बार की घटना है, जिस जूता को आप पहन रहे थे वह काफी पुराना हो गया था। उगली के घर्षण से उसमे छेद भी हो गया था। इस साधक ने उस जूते को बदलने के लिए आपसे कहा, आपने इन्कार कर दिया। आपने कहा—अभी नया जूता लाने की जल्दीबाजी नही करना। इसके छह महीने बाद मैंने बिना आपसे पूछे ही नये जूते ला दिये। आपने कहा—ला दिये हो तो ठीक है, लेकिन अभी रख दो, समय से पहनूगा। वर्तमान मे तो ये मेरे पुराने जूते ही काम आ रहे हैं। इस प्रकार पूरा फट जाने पर ही आपने उसका परित्याग किया।

ठीक इसी तरह साबुन के उपयोग की बात थी। स्नान करने वाला साबुन जब घिस कर छोटा हो जाता था तो स्नान करते समय गीले कपड़े मे लपेटकर उसका पूरा उपयोग कर लेते थे।

इसी प्रकार सभी चीजो का आप पूरा-पूरा सदुपयोग करते थे। मितव्ययी के नाम पर आप कजूस बिलकुल नही थे। सतो, साधको, भक्तो की सेवा मे आप खुले दिल से रुपये, पैसे, कपड़े, खाने-पीने की चीजे आदि वितरित करते रहते थे। आपका अमर वाक्य है, ''धन, धन नही है, मनुष्य धन है।''

29.

हसी-विनोद

गुरुदेव समय-समय से अपने साथियो, साधको एव भक्तो से विनोदपूर्ण बाते भी कर लेते थे। आपका हसी-विनोद सात्विक, शिक्षाप्रद तथा ज्ञानवर्धक होता था। आप बहुत थोड़े मे विनोद करते थे। कुछ विनोदपूर्ण घटनाए नीचे दी जा रही हैं—

6 मई, 1994 को गुरुदेव जी जामनगर गुजरात मे थे। वहा पर डॉ० दिनेश भाई परमार ने आपका तीन दिनो का सत्सग कार्यक्रम करवाया था। जामनगर मे पानी की बहुत समस्या रहा करती थी। अकसर टैंकर से पानी लाने के बाद ऊपर टकी मे भरा जाता था। उस दिन अचानक सुबह ही पानी खत्म हो गया। प्रातः भ्रमण के बाद जब निवास पर वापस आप आये और स्नान-मजन आदि के लिए बाथरूम मे गये देखे तो पानी खत्म, वापस आकर सेवा मे रहने वाले साधक से गाकर आपने कहा—"जतन बताये जइयो, कैसे दिन कटिहैं।" भैया पानी खत्म है।

साधक हसने लगा, जल्दी से जाकर उन्होने व्यवस्थापक को बताया कि शीघ्र पानी का टैंकर मगाये।

* * *

जून 1999 की बात है। उस समय आप दक्षिण भारत इरोड मे थे। एक दिन घूमने के लिए रामेश्वरम जाना था। आपने ब्र0 रामरूप साहेब से कहा—यह छाता भी रख लो। जब पानी बरसे तो इसे मुझे दे देना और यदि नही बरसेगा तो अपने पास रखना। दोनो लोग जोर से हसते रहे।

* * *

गुरुदेव जी भ्रमण काल मे अपने साथ एक छड़ी रखते थे। सुबह-शाम जब आप बाहर घूमने जाते थे तो कुत्ते आदि से रक्षा के लिए उसे साथ लिये रहते थे। चार दिसम्बर 2000 की बात है। गुरुदेव उत्तर प्रदेश के भीखमपुरवा नामक गाव मे थे। शाम को जब आपका घूमने जाने का समय हुआ तो छड़ी खोजने लगे किंतु मिली नही क्योकि जहा उसे रखा जाता था उस स्थान पर रखा नही गया था। रामरूप साहेब दूसरी जगह से उसे खोज लाये और आपको दिये।

छड़ी लेते हुए गुरुदेव जी ने श्री रामरूप साहेब से मुस्कराते हुए कहा—अगर यह छड़ी खो गयी तो इसी छड़ी से तुम्हे पीटूगा।

गुरुदेव का इतना मधुर विनोद सुनते ही वहा उपस्थित सभी लोग हसने लगे।

* * *

गुरुदेव जी के दर्शनार्थ एक बार बहुत से भक्त एक गाड़ी मे बैठकर आये और आपके पास पुष्प-पत्र समर्पित करके बन्दगी करके बैठे।

गुरुदेव ने सबका कुशल पूछा। अत मे आपने उन भक्तो से कहा—तुम लोग दूर से आये हो। जाओ, भोजन कर लो।

भक्तो ने कहा—गुरुदेव, हमलोग भोजन करके आये हैं। भोजन की जरूरत नही है।

गुरुदेव ने कहा—अच्छा है भाई, पहुना अगर खा-पीकर आये तो अच्छा रहता है, खिलाना नही पड़ता। गुरुदेव की बात पर सब लोग हसने लगे।

* * *

12 अप्रल 2007 को गुरुदेव छत्तीसगढ़ के उपरवारा ग्राम मे थे। कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम मूरा (धमतरी) मे गुरुदेव की शिष्या-साधिकाए श्रद्धा और सुमन रहती हैं। उन लोगो के साथ अन्य कई साधिकाए भी रहने के लिए तैयार थी। उन सबको लेकर साध्वी श्रद्धा और सुमन गुरुदेव के दर्शन करने आयी थी। उन सब लोगो को बन्दगी करते देखकर गुरुदेव ने पूछा—ये सब बच्चिया कहा से आयी हैं?

साध्वी श्रद्धा ने बताया—गुरुदेव, ये सब हम लोगो के साथ आयी हैं।

गुरुदेव—(मुस्कराते हुए) तुम लोगो की सख्या देखकर तो हमे ईर्ष्या हो रही है।

गुरुदेव का ऐसा प्यार भरा विनोद सुनकर सब लोग हस दिये।

* * *

8 अप्रैल 2007 की बात है। गुरुदेव छत्तीसगढ़ के आगेसरा ग्राम मे विराजमान थे। आमदी ग्राम की भक्तिमती छबिदेवी के सम्बन्धियो का घर आगेसरा के निकट उमरपोटी ग्राम मे है। उन लोगो ने गुरुदेव से निवेदन किया कि गुरुदेव दस मिनट के लिए हमारे घर आप पधारकर हम लोगो को कृतार्थ करने की कृपा करे।

गुरुदेव ने कहा—अब मैं घर-घर जाना बन्द कर दिया हू। तुम्हारा बहुत आग्रह है तो सुबह घूमने निकलता हू, उसी समय वहा आ सकता हू।

दूसरे दिन सुबह साढ़े पाच बजे तक गुरुदेव उमरपोटी गाव पधार गये। साथ मे सत श्री गुरुभूषण साहेब और मैं था। आप आसन पर विराजमान हो गये। हम दोनो को स्नान से निवृत्त हुआ जानकर गुरुदेव ने कहा—"नहाय खोर उत्तम होय आये?" (बीजक)

गुरुदेव की बात सुनकर हमलोगो को हसी आ गयी। और सत श्री गुरुभूषण साहेब जी ने कहा—गुरुदेव, इसके आगे की पक्ति न कहा जाय। इसके आगे की पक्ति है—"विष्णु भक्त देखत दुख पाये।"

* * *

2 मई, 2008 को गुरुदेव बिहार के अररिया जिला के जगता गाव मे थे। शाम को आप आगन मे घूम रहे थे। कुछ अधेरा हो गया था। ब्रह्मचारी भूपेन्द्र

जी से आपने कहा—राम की टार्च ले आओ। तब भूपेन्द्र जी ने गुरुदेव को ही टार्च ले जाकर दे दिया। गुरुदेव समझ गये कि यह मेरी टार्च है। सोते समय रात्रि मे ब्र0 भूपेन्द्र जी जब टार्च वापस करने गये तो आपने कहा—मैं तो उसी समय समझ गया था कि यह मेरी है लेकिन मुझे लगा कि दोनो गुरुभाई मिलकर मेरी टार्च हड़प लेगे क्या!

* * *

जुलाई 1991 की बात है। गुरुदेव जी उन दिनो भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के घर कोलकाता मे विराजमान थे। आपके साथ उस समय सत श्री धर्मेन्द्र साहेब, सत श्री गुरुभूषण साहेब, ब्र0 भूषण (अब श्री देवेन्द्र साहेब) ब्र0 गगाराम (अब श्री गुरुवेन्द्र साहेब) थे। एक दिन गुरुदेव ने कहा कि कल से सुबह के सत्सग मे वैराग्य शतक (श्री पूरण साहेब कृत) पर कुछ बोलने का विचार है। सयोग से उस समय वैराग्य शतक पुस्तक किसी के पास नही थी। जिसके आधार पर गुरुदेव जी सभा मे बोल सकें।

दूसरे दिन से सत श्री गुरुभूषण साहेब और ब्र0 भूषण साहेब दोनो लोग स्मृति के आधार पर उसे एक कापी मे लिखने लगे। जहा भूल जाते वहा 'कबीर दर्शन' के दूसरे अध्याय के 'श्री पूरण साहेब' सदर्भ से वैराग्य शतक के भावो के आधार पर उसकी साखियो को लिख लेत।

एक दिन ब्र0 भूषण साहेब को भोजन बनाते समय एक साखी याद आयी। उसी समय आप उसे कापी मे लिखने लगे। इतने मे गुरुदेव जी वहा घूमते हुए आ गये, आप दबे पाव उनके पास पहुच गये और आपने दोनो हाथो से श्री भूषण साहेब की आखो को बन्द कर लिया।

श्री भूषण साहेब किसी बात को समझने मे अत्यन्त तेज हैं। वे धीरे से आख बन्द करने वाले के पैर टटोलने लगे। टटोलते-टटोलते वे पैर के निचले हिस्से तक गये तो देखे कि खड़ाऊ युक्त पैर है। वे तुरन्त समझ गये कि गुरुदेव जी ही हैं। फिर गुरुदेव ने हाथ उठाते हुए कहा—बड़े चतुर हो, खड़ाऊ छूकर जान लिये। इसके बाद आपने कहा—बेटा! इस प्रकार भोजन बनाते समय पुस्तक आदि पढ़ने या लिखने का कोई काम नही करना चाहिए क्योकि ये सब चीजे अशुद्ध होती हैं। इनके ससर्ग के बाद भोजन आदि का काम करना उचित नही है।

* * *

सितम्बर 2004 की बात है। गुरुदेव कबीर सस्थान इलाहाबाद मे विराजमान थे। एक दिन आप शाम को भ्रमण करके आये और जूता उतारकर कुर्सी पर बैठ

गये। जूता को झाड़कर मैंने यथास्थान रख दिया। इसके बाद खड़ाऊ लेकर आपके चरण धोने के लिए पानी की टोटी के पास गया। आपका एक पैर धोकर मैंने एक खड़ाऊ दे दी और गुरुदेव ने उसको पहन लिया। दूसरा पैर धुलने के बाद मैंने दूसरी खड़ाऊ भी दे दिया। खड़ाऊ देते समय मैं यह ध्यान ही न दे पाया कि खड़ाऊ उलटो है। वस्तुत: खड़ाऊ बाये पैर की दाये पैर मे और दाये पैर की बाये पैर मे हो गयी थी। चप्पल यदि उलटी हो जाये तो थोड़ा चला भी जा सकता है लेकिन खड़ाऊ उलटी हो जाये तो चलना बड़ा मुश्किल होता है। गुरुदेव धीरे-धीरे चलने लगे।

मैंने गुरुदव को असहजरूप मे धीरे-धीरे चलते देखा तो सोचने लगा कि आखिर गुरुदेव इतने धीरे-धीरे क्यो चल रहे हैं। तब मेरी नजर खड़ाऊ पर गयी तो समझ पाया कि खड़ाऊ तो उलटी पहना दिया हू। दौड़कर मैं गुरुदेव के पास गया और कहा—गुरुदेव, भूल हो गयी। खड़ाऊ मैंने उलटो पहना दी।

गुरुदेव ने हसते हुए कहा—"जाहि बिधि राखे राम ताही बिधि रहिये।"

*　　　*　　　*

कबीर नगर कबीर आश्रम मे गुरुदेव अपने कक्ष मे बैठे भोजन कर रहे थे। प्रतिदिन तो आप अधिकतम दो रोटी खाते थे कितु उस दिन आपको भूख ज्यादा थी। दो रोटो के बाद भी आपको और खाने की इच्छा थी। इसलिए आपने थरमस से तीसरी रोटी निकाली। इसके बाद मैंने थरमस को हटाकर वहा से अलग रख दिया। गुरुदेव हसते हुए कहे—क्या तुम्हे यह डर हो गया कि कही चौथी रोटी भी न निकाल ले? ऐसा कहकर वे हसने लगे।

*　　　*　　　*

एक बार गुरुदेव काशी कबीर चौरा आश्रम मे सत श्री गगाशरण साहेब से मिलने गये। इसके कुछ दिन पूर्व गुरुदेव का गोरखपुर मे रेलवे के कर्मचारियो के बीच ग्यारह दिनो का प्रवचन चला। जिसमे आपको सुनने के लिए हजारो की भीड़ उमड़ पड़ती थी। यह भीड़ विद्वानो, शिक्षितो और अफसरो की होती थी। जिसमे आपके निर्णय विचारो से समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसी प्रसग को लेकर श्री गगाशरण साहेब ने गुरुदेव से विनोदपूर्वक कहा—देखो, गोरखपुर की तरफ बहुत नास्तिकता का प्रचार न करो।

गुरुदेव ने कहा—साहेब, नास्तिकता का प्रचार किये बिना गुरुवा लोगो का भ्रम नही टूटेगा।

आपकी भी विनोद भरी बात सुनकर श्री गगाशरण साहेब कहने लगे—हा, हा, हा, अरे क्या कहते हैं। उपस्थित अन्य सभी सतो मे हसी की लहर आ गयी।

*　　　*　　　*

24 अक्टूबर 2001 की बात है। इलाहाबाद के पास ही यमुनापार मे भक्त श्री भरतराज द्विवेदी के गाव बसती से कार्यक्रम करके गुरुदेव चित्रकूट जिला मे श्री नीलकठ मिश्र के गाव शिवपुर (मऊ) जा रहे थे। वहा का कार्यक्रम तो शाम को होना था। इसलिए सतो ने सोचा अभी समय है। आज चित्रकूट घूम लिया जाये। गाड़ी के नाम पर एक ही मार्सल थी। जिसमे ऊपर कैरियर भी नही था। लेकिन समाधान तो उसी मे करना था। जितने बड़े-बड़े बैग थे उनको पीछे सीटो पर रख दिया गया और बीच मे सब लोग बैठे। आगे की सीट पर गुरुदेव जी ही बैठते हैं। लेकिन आवश्यकता पड़ने पर कोई एक साधक भी उनकी बगल मे बैठ लेता है। उस दिन गुरुदेव जी के साथ सत श्री देवेन्द्र साहेब और मुझे भी बैठना पड़ा।

मेरे पास झोली भी थी जिसमे आवश्यकता पड़ने पर राहखर्च के लिए पैसे रहना स्वाभाविक ही है। मेरे पास बैठने के लिए जगह कम थी इसलिए झोली साथ मे रखने मे कठिनाई हो रही थी। पीछ बैठे सत श्री गुरुभूषण साहेब जी ने मुझसे कहा—राम जी, झोली मुझे दे दो, वहा रखने मे दिक्कत होती होगी।

मैंने उनसे कहा—ठीक है, साहेब जी चल जायेगा। उन्होने फिर कहा—लाओ झोली मुझे दे दो।

झोली उनको देने के लिए मैं अपने कन्धे से उतारने लगा। यह देखकर गुरुदेव ने विनोदपूर्ण ढग से कहा—अरे, तुम झोली क्यो देते हो? आजकल जमाना खराब चल रहा है। ऐसा किसी के कहने मे नही आना चाहिए!

गुरुदेव का इतना कहना सुनकर गाड़ी मे बैठे सभी सत हसने लगे।

30.

सफाई-स्वच्छता मे तत्परता

(1)

यह घटना सन् 1975 की है। उस समय पूरे देश मे इमरजेसी लगी थी। गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब का कार्यक्रम उत्तरप्रदेश के गाडा जिला के रगड़गज बाजार मे था। आप वहा समाज सहित पधारे थे। कई दिनो तक आप वहा विराजमान रहे। एक दिन आप बाजार मे होते हुए सड़क-सड़क जा रहे थे। सड़क पर आपकी दृष्टि पड़ी तो आपने देखा कि चारो तरफ सड़क मे गदगी पड़ी हुई है। आपके मन मे हुआ कि यहा सफाई होनी चाहिए। शाम को निवास पर आकर आपने साधु समाज से बात कर लिया कि कल सड़क साफ करना है।

इसलिए शाम को ही झाड़ने के लिए अरहर के डठल के बड़े-बड़े झाड़ू और फावड़ा आदि की व्यवस्था कर ली गयी।

तीन बजे रात से ही सब लोग लग गये। गुरुदेव के बड़े गुरुभाई श्रद्धेय सत श्री विमल साहेब जी भी लग गये। पूरे बाजार की दोनो सड़को को करीब एक-एक कि०मी० दूर तक साफ कर दिये। सारे कचड़े बीच-बीच मे इकट्ठा कर दिये। झाड़ते, साफ करते प्रकाश हो गया। टोकरी मे भर-भरकर सारे कचड़े को दूर डाल आये। जो बीच मे कचड़े की ढेरी लगायी गयी थी उसे प्रकाश होने पर भक्तो ने बैलगाड़ी मे भरकर दूर डाल दिया।

दिन मे बाजार के ठेकेदार जब यह सब पता पाय तो उन्होने दुकानदारो को बहुत फटकारा। उन्होने कहा—आप लोग अपनी-अपनी दुकान के सामने सफाई नही रख पाते। जिन सतो को हम दिन मे पूजते हैं, वे रात मे हमारी गदगी साफ करे तो हमारे लिए यह कितनी लज्जा की बात है!

मनुष्य का मन आलसी है। काम न करने से बाहर प्राणी-पदार्थों की और भीतर कामादि विकारो की गदगी इकट्ठी हो जाती है, जो जीवन को दुर्गन्धी से भर देती है। इसलिए सारे आलस्य को छोड़कर अपने व्यवहार और परमार्थ का काम करना चाहिए।

(2)

यह घटना 1990 ई० की होगी। आप दुर्ग जिले के 'भरदा कला' गाव मे पहुचे। दूसरे दिन प्रातः आप टहलने के लिए बाहर निकले। सड़क पर गये तो देखे कि सड़क के दोनो किनारे दूर तक नयी-पुरानी टट्टी से पटे पड़े हैं। आपने सोचा कि ऐसे कहने पर कोई विशेष ध्यान देगा नही। चलो, हम लोग ही स्वय लगकर साफ कर दे।

उन्हाने साथ मे चल रहे ब्रह्मचारी भूषण (अब सत श्री देवेन्द्र साहेब) से एक गृहस्थ के घर से फावड़ा मगवाया और स्वय टट्टी फकने के लिए तैयार हो गये। ब्र० भूषण ने फावड़ा लेना चाहा। गुरुदेव ने कहा कि तुम फावड़ा चलाने के अभ्यासी नही हो। यह काम मैं क\\गा, कितु ब्र० जी ने फावड़ा ले लिया। गुरुदेव जी निर्देश करते रहे और ब्रह्मचारी जी फावड़ा से टट्टी उठा-उठाकर गड्ढे मे डालते रहे। कुछ समय बाद पास के मदिर का हनुमान जी का पुजारी एक युवक आ गया, वह भी सफाई मे लग गया।

ब्रह्मचारी श्री भूषण साहेब तथा वह युवक दोनो मिलकर पूरी टट्टी साफ कर दिये। इसके बाद दोनो पास की एक नदी मे स्नान करके वापस आये।

दूसरे दिन गुरुदेव जी ने ब्रह्मचारी भूषण साहेब को सुबह भेजा और कहा कि जाओ जरा देखो तो सड़क की क्या स्थिति है। वे गये, सड़क की हालत देखे और आकर गुरुदेव से बताये कि गुरुदेव सड़क पुन: वैसे हो गयी है। लगता है, सड़क साफ देखकर और अधिक सख्या मे लोगो ने आज वही शौच किया है। इतना सुनकर गुरुदेव जी को गाधी जी का वाक्य याद आया, ''जितना समाज सुधारको को समाज सुधार की चिन्ता है, उतना समाज के लोगो को अपने सुधार की चिन्ता नही है।'' लेकिन गुरुदेव जी इससे निराश नही हुए। आपने कहा—कोई बात नही, हमारा प्रयास व्यर्थ नही जा सकता। इससे कुछ लोगो को चेतना आयेगी ही कि अपना घर, दरवाजा, गली, सड़क आदि साफ रखना चाहिए।

(3)

यह घटना सन् 2002 की है। गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी सत समाज सहित किशनगढ़ (राजस्थान) का कार्यक्रम करके नागपुर आ रहे थे। ट्रेन मे गुरुदेव जी तथा अन्य सतो का रिजर्वेशन एक ही डिब्बे मे था।

जिस कोच मे गुरुदेव जी बैठे थे उसके शौचालय मे एक सत सुबह शौच गये। फाटक खोलकर देखे तो चारो तरफ गदगी फैली थी। कोई यात्री शौचालय की सीट मे शौच न करके बाहर कर दिया था। वह पानी से चारो तरफ फैल गया था। वे सत तुरन्त दरवाजा बन्द किये और दूसरी तरफ के शौचालय मे चले गये। वहा से आकर उन्होने सतो को बताया कि अमुक शौचालय मे बहुत गदगी है। गुरुदेव यह बात सुन रहे थे।

गुरुदेव जी को लघुशका जाना था। आप ट्रेन मे भी एक बड़ा गिलास लेकर लघुशका जाते थे। गुरुदेव उसी शौचालय मे गये जिसमे गदगी भरी थी। आप गिलास से पानी लेकर एक पुराने अखबार से शौचालय की फर्श को पूरी तरह धो दिये। वह शौचालय बिलकुल साफ हो गया। फिर पाउडर मगाकर आप अपना गिलास और हाथ माज लिये। सीट पर वापस आकर आप बैठ गये और हसते हुए उन सत से कहते हैं—अब उस शौचालय मे जा सकते हो। मैंने धोकर उसको साफ कर दिया है।

सभी सत सुनकर चौक गये। अनेक बार ऐसा देखा गया कि जगह गदी रहती है तो गुरुदेव स्वय ही बिना किसी को बताये उसे साफ कर देते हैं और सतुष्ट होकर बैठ जाते।

(4)

एक बार गुरुदेव एक साप्ताहिक कार्यक्रम मे उड़ीसा के उमरकोट कसबे मे गये और एक धर्मशाला मे निवास हुआ। सुबह का समय था। सभी सत स्नान आदि मे लगे हुए थे। गुरुदेव के साथ रहनेवाले साधक गुरुदेव के कक्ष की सफाई आदि कार्यों मे लगे हुए थे। एक सत ने आकर कहा—शौचालय एक ही है और वह भी सूखे मल से पूरा पटा है। उन्होने जाकर गृहस्वामी से बताया तो उन्होने कहा—अच्छा साहेब, अभी मैं सफाई करनेवाले को बुलाता हू। सफाईकर्मी की प्रतीक्षा मे कुछ समय बीत गया, कोई नही आया। गुरुदेव तब तक स्नान किये नही थे।

आप बिना किसी को बताये वहा पहुच गये और देखे तो पूरा शौचालय सूखे मल से भरा है। उसके बाहर भी गदगी पड़ी है। उसको खोदने के लिए आप एक लकड़ी खोज लाये। उसी से खोद-खोदकर आप मल को एक टोकरी मे रख दिये। पानी, पाउडर और नारियल के बूच से रगड़-धोकर आपने शौचालय को बिलकुल साफ कर दिया। शौचालय एकदम चमकने लगा।

काफी देर के बाद गृहस्वामी आकर देखे तो हैरान रह गये। वे पूछने लगे कि साहेब, शौचालय किसने साफ किया है?

गुरुदेव ने कहा—किसी मनुष्य ने ही किया होगा।

(5)

अगस्त 2004 की बात है। इलाहाबाद कबीर नगर का कबीर आश्रम दो भागो मे बटा है। दोनो के बीच मे सड़क जाती है। वहा कुछ राहगीरो ने कई जगह पान खाकर थूक दिया था। सुबह-सुबह गुरुदेव ध्यान कक्ष के सभागार मे जा रहे थे। सड़क पर पान की थूक देखे तो रुक गये। आप स्वय झाड़ू और पानी लेकर धोने लगे। मैंने देखा तो जाकर आपके हाथ से झाड़ू ले लिया। गुरुदेव खड़े होकर बताते रहे और मैं पानी डाल-डालकर झाड़ू से साफ कर दिया।

(6)

एक बार गुरुदेव 2004 मे ही छत्तीसगढ़ मे थे। उस समय रायपुर जिले के नवापारा आश्रम मे वार्षिक अधिवेशन चल रहा था। हजारो भक्तो की भीड़ गुरुदेव को सुनने के लिए पडाल मे प्रतीक्षा कर रही थी। आप प्रवचन स्थल की ओर जा रहे थे। जैसे ही आप आश्रम से नीचे उतरे तो देखते हैं कि फर्श पर पान की थूक पड़ी है। गुरुदेव रुक गये। स्वय उसे खरोचकर हाथो से उठाने लगे।

इतने मे कुछ सत आ गये, वे एक पात्र ले आये और उसी मे थूक मिश्रित मिट्टी को रख दिये। वे सत ले जाकर उसे बाहर फक दिये। गुरुदेव को मच पर जाने के लिए देरी हो रहो थी। आप तुरन्त मिट्टी-पानी से हाथ धोकर मच पर पधारे। तत्पश्चात एक घटा तक ज्ञानामृत की वर्षा करते रहे।

31.

यात्राए

गुरुदेव की यात्रा को हम दो भागो मे बाट सकते हैं—एक तो वर्ष 1985 के पूर्व की और दूसरी 1985 के बाद की।

1971 के पूर्व श्री अभिलाष साहेब अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ भक्तो मे भ्रमण किया करते थे। समय-समय से बड़हरा आश्रम मे भी रहते थे। उन दिनो आपके कार्यक्रमो की व्यस्तता नही रहती थी। उन दिनो एक-एक गाव मे पाच, दस या पन्द्रह दिन भी आप रहते थ।

प्रवचन कार्यक्रम भी इतने बृहत् नही हुआ करते थे। सुबह बदगी के बाद अक्सर एकान्तवास के लिए बाहर चले जाया करते। साथ मे कमडलु और कुछ पुस्तके ले लेत, वही ध्यान-चितन और अध्ययन-मनन किया करते। कभी-कभी जलपान की कुछ सामग्री भी वही ले जाते और जलपान कर लेते। फिर नौ, दस या ग्यारह बजे तक वापस लौटते। फिर स्नानादि से निवृत्त होकर बारह-एक बजे भोजन करने के बाद कुछ विश्राम करते। फिर शाम को अध्ययन-मनन सेवा कार्य मे समय बीत जाता। रात्रि मे भक्तो के दरवाजे पर या आगन मे बीजक पाठ होता और उसके पश्चात सत्सग।

एक गाव से दूसरे गाव सत समाज के साथ आप भी पैदल चलकर जाते। उस समय पैदल का ही जमाना था। जिस गाव मे जाना रहता उस गाव से बैलगाड़ी आ जाया करती जिसमे सतो का सामान और पुस्तके लाद दिया जाता। उन दिनो सड़क की स्थिति भी इतनी अच्छी नही थी। जो सड़के थी भी वे धूल, गड्ढे एव कीचड़ से भरी रहती थी।

वर्षा के दिनो मे एक गाव से दूसरे गाव जाने के लिए बड़ी कठिनाई होती थी। नदी-नालो मे पुल भी नही हुआ करते थे। ऐसी परिस्थिति को देखते हुए गुरुदेव ने 1985 ईस्वी मे निर्णय लिया कि अब वर्षा के चार महीने इलाहाबाद के कबीर आश्रम मे बिताना है। गुरुदेव का यह निर्णय सतो और भक्तो दोनो के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा। इससे आठ महीने भक्तो को आपके

सत्सग-गगा मे निमज्जन करने का लाभ मिलता ही था, चार महीना सघनरूप से आश्रम के साधको तथा क्षेत्रीय लोगो को भी आपके सान्निध्य का लाभ प्राप्त हो जाता था।

अब 1985 ईस्वी के बाद की यात्रा पर विचार करते हैं। गुरुदेव जी का कार्यक्रम वर्ष मे केवल एक ही दिन बनता था। इसके बाद किसी विशेष परिस्थिति के अलावा बीच मे कोई कार्यक्रम नही बनता। कबीर सस्थान, इलाहाबाद वार्षिक अधिवेशन के बाद कुछ कार्यक्रम इलाहाबाद के आस-पास ही होते थे। दीपावली के बाद कार्तिक शुक्ल अष्टमी, नवमी और दशमी तिथि को प्रतिवर्ष कबीर आश्रम रामपुरा, दिल्ली मे आपका कार्यक्रम होता था। वहा के बाद गुरुदेव दिल्ली के ही आस-पास हरियाणा आदि मे कुछ कार्यक्रम करने के पश्चात उत्तर प्रदेश के लिए प्रस्थान करते।

उत्तर प्रदेश म प्राय: प्रतिवर्ष अक्टूबर और नवम्बर मे लगभग एक-डेढ़ महीने आपके कार्यक्रम होते थे। इसके बाद राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, बिहार, बगाल आदि प्रदेशो मे आपका पदार्पण होता था।

गुरुदेव एक जगह रह रहे हो या यात्रा म चल रहे हो सब समय आपकी मन:स्थिति निष्काम रहती थी। आप अपने मन से स्वय योजना बनाकर किसी देश-प्रदेश और क्षेत्र आदि मे घूमने के लिए नही निकलते। गृहत्याग के बाद अठारह वर्ष तक तो आप अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ ही घूमते-विचरते रहे। इसके बाद जब स्वाभाविक सतो-भक्तो की आपके लिए विशेष माग होने लगी तो सत समाज के साथ जहा लोगो का आग्रह होता वहा आप जाते थे। इसीलिए भारत के कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जहा पर आप नही जा सके लेकिन कुछ ऐसे भी क्षेत्र-प्रदेश हैं जहा पर आप दर्जनो-दर्जनो बार पधार चुके हैं।

छत्तीसगढ़, उत्तर-प्रदेश, गुजरात और बिहार आदि मे बहुत ऐसे क्षेत्र हैं जहा आप गाव-गाव, गली-गली मे अनेक बार जा चुके हैं। उन जगहो के युवा, बालक, वृद्ध, गाव के देहाती मा-बहने भी आपसे सुपरिचित थे। गुरुदेव जी अपने जीवनकाल मे कुल पाच बार कबीर निर्णयमदिर बुरहानपुर गये हैं— पहली बार 20 नवम्बर 1953, दूसरी बार 1972, तीसरी बार 1978, चौथी बार 1992, और पाचवी बार 24 से 29 नवम्बर 1996।

छत्तीसगढ़ के दो प्रेमी भक्त—सदीप और प्रदीप के आग्रह से एक बार गुरुदेव 2 से 22 जून 1999 तक दक्षिण भारत की यात्रा किये। इन इक्कीस दिनो

के प्रवास मे विभिन्न जगहो मे आप 2700 कि0मी0 तक एक लक्जरी बस के माध्यम से घूमे।

सन् 1971 से 1985 तक गुरुदेव 'पारख प्रकाश' त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादन के सम्बन्ध मे वर्ष मे दो बार कलकत्ता जाते थे क्योकि वही से पत्रिका छपती थी। कितु 1985 से जब 'पारख प्रकाश' इलाहाबाद से छपने लगा तो वहा आपका एक बार जाना बन्द हो गया। 1986 से अब आप वर्ष मे केवल एक बार करीब 20-25 दिनो के लिए भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के आतिथ्य मे जाते थे।

समय-समय से गुरुदेव काठमाण्डू (नेपाल) भी जाते थे। वहा आप पहली बार 1981 मे नवम्बर माह मे श्री आज्ञा साहेब के आग्रह से गये थे। दूसरी बार 18 से 29 अप्रैल, 1995 मे; तीसरी बार 1 से 19 जून, 2002 मे; चौथी बार 8 से 26 जून, 2007 मे; पाचवी बार 17 से 31 मई, 2009 मे और छठी बार 1 से 15 मई, 2011 मे गये।

गुरुदेव जब एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश मे जाते थे तो अक्सर ट्रेन से जाते थे। और उसी प्रदेश मे जब दूर की यात्रा होती थी तब भी आप ट्रेन से यात्रा करते थे।

गुरुदेव किसी भी प्रदेश मे रहे जब आप एक गाव से दूसरे गाव प्रस्थान करते तो प्रात: काल ही चलते थे। कठिन ठडी मे भी आप प्रात: पाच-छह बजे तक चल देते थे। इससे आपका समय भी खराब नही होता था और भक्तो का कार्यक्रम भी व्यवस्थित रूप से हो जाता था। एक गाव से दूसरे गाव जाने के लिए भक्त लोग स्वय समयानुसार गाड़ी लाते थे। गाड़ी चलाते वक्त यदि चालक कुछ असावधानी करता या आवश्यकता से अधिक गति से गाड़ी चलाता था तो उसको आप धीमी गति से चलाने का निर्देश भी करते थे। अपने गतव्य पर पहुचने के बाद गुरुदेव चालक को कुछ प्रसाद अवश्य देते थे। कभी-कभी दूर की यात्रा करने के बाद आप चालक को अपनी तरफ से कुछ रुपये भी दे देते थे।

कार्यक्रमो के दौरान कोई एक-दो स्थान होते होगे जहा आपको पाच-छह दिन रुकना पड़ता था। अन्य सभी जगहो मे तो दो-तीन दिनो मे गाव बदल जाता था। वर्ष मे लगभग 75-80 स्थानो मे आप रहते थे। इनमे कुछ ऐसे भी स्थान होते थे जो आपको रहने के लिए भव्य एव अनेक सुविधाओ से पूर्ण होते थे। लेकिन अधिकतम जगहे सामान्य ही होती थी। कुछ जगहे ऐसी भी होती जो बहुत साधारण होती थी। वहा बाथरूम, शौचालय और बिजलो-पानी की कोई व्यवस्था नही रहती थी। ऐसी जगहो मे स्नानादि के लिए भी दूर से पानी लाना पड़ता था।

32.
अद्भुत क्राति

कबीरपथ शब्द आते ही ऐसा लगता है कि यह मत, यह सिद्धान्त सद्गुरु कबीर साहेब के ज्वलत स्वरूप को सामने रखता होगा किंतु पूर्णत: ऐसा नही है। कबीरपथ मे जब से पौराणिकता और अलौकिकता आ गयी है तब से कबीर साहेब का निर्भ्रान्त, तेजोमय विवेकज्ञान का पूर्ण प्रकाश तिरोहित होने लगा है और इसमे अनेक अधविश्वास-चमत्कार फलने-फूलने लगा है। हा, इसी कबीर पथ मे 'पारख सिद्धान्त' एक शाखा है जो आज भी ज्यो-का-त्यो सुरक्षित है। सद्गुरु कबीर साहेब के बाद से ही उनके स्वतत्र चितन को आगे बढ़ानेवाले अनेक महापुरुष इस परम्परा मे होते आये हैं। जैसे—सत श्री गुरुदयाल साहेब, सत श्री रामरहस साहेब, सत श्री पूरण साहेब, सत श्री निर्मल साहेब, सत श्री काशी साहेब, सत श्री लाल साहेब, सत श्री विशाल साहेब, सत श्री रामस्वरूप साहेब, सत श्री प्रेम साहेब, सत श्री रामसूरत साहेब आदि अनेक तेजोमय महान चितक सत हो चुके हैं। इन सतो ने अपने कल्याण का काम तो किया ही, साथ-साथ अपने प्रवचन एव रचनाओ से समाज एव सिद्धान्त का भी अनुपम काम किया है और पारख सिद्धात की धारा को अक्षुण्ण प्रवाहित बनाये रखा है।

सन् 1953 मे अभिलाष साहेब इस सिद्धात मे आये और यहा आने के बाद आपकी साधना, रहनी, विचार, वक्तव्य एव प्रतिभा ने समाज मे एक अद्भुत क्राति कर दी। वह क्राति चाहे जातिवाद को लेकर हो, चाहे छुआछूत को लेकर हो, चाहे लेखन-प्रवचन को लेकर हो, चाहे समाज की व्यवस्था को लेकर हो और चाहे परम्परा को लेकर हो आपने जो सत्य समझा उसको कहने और लिखने मे तनिक भो सकोच नही किया। आपने सहृदयता एव आदर से कहा लेकिन स्पष्ट कहा।

सद्गुरु कबीर का विचार मनुष्य मात्र के लिए है। वे मनुष्य को केवल मनुष्य के रूप मे देखते थे, ब्राह्मण-शूद्र, हिन्दू-मुसलमान के रूप मे नही। उनका वचन है—''एकै त्वचा हाड़ मल मूत्र, एक रुधिर एक गूदा। एक बुन्द से सृष्टि रची है, को ब्राह्मण को सूद्रा।'' सद्गुरु कबीर का ऐसा साफ और सत्य सिद्धान्त होते हुए भी कबीरपथ की सभी शाखाओ एव आश्रमो मे अभी तक यह पूर्णत: मान्य नही हो पाया था।

गुरुदेव अभिलाष साहेब जी को साधु समाज मे आये कुछ ही दिन बीते होंगे, आपने देखा कि सत आश्रमो मे भी मनुष्य-मनुष्य के साथ भेद-बर्ताव है। आपके मन मे इसके प्रति टीस शुरू हुई। अपने गुरु आश्रम बड़हरा मे आप रहते

थे। कभी-कभी भोज-भण्डारा मे जिनका शूद्र नाम दिया जाता है वे लोग भो आ जाते। उन लोगो को सबसे अतिम समय मे अलग से बैठाकर खिलाया जाता था। उनके लिए भोजन पारस करने का तरीका भी कुछ अलग था।

भोजनालय से भोजन निकालकर बाहर लाया जाता था। उस भोजन को एक दूसरे व्यक्ति के पात्र मे डाल दिया जाता था। तब उस पात्र से उन लोगो के लिए पारस किया जाता था। जिस पात्र से शूद्रो को भोजन पारस किया जाता था उसको भोजनालय मे ले जाना मर्यादा के खिलाफ माना जाता था।

गुरुदेव को यह बात अखरती थी। आप कभी-कभी भोजनालय से सीधे भोजन लाकर पारस कर दिया करते थे। तब कुछ सत आपको टोकते कि ऐसा करके आप मर्यादा बिगाड़ रहे हैं। आप उन सतो से कहते—इसमे कौन-सी मर्यादा बिगड़ गयी? आखिर वे भी तो मनुष्य हैं। तब वे सत चुप हो जाते।

कुछ दिनो के बाद आपने अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब से इस बिन्दु पर बात किया और कहा—साहेब जी, इन लोगो को अलग से क्यो बैठाया जाता है? सबके साथ बैठने और साथ-साथ भोजन करने मे क्या हर्ज है?

गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी को भी यह बात अच्छी लगी। धीरे-धीरे उन लोगो के लिए साथ मे बैठने और खाने की छूट हो गयी। फिर तो आप अपने प्रवचनो और पुस्तको मे कहने-लिखने लगे। और जब इलाहाबाद कबीर पारख सस्थान स्थापित हुआ है तब आपने खुलकर घोषणा कर दी कि यहा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, हिन्दू, मुसलमान, सभी वर्ग के लोग एक साथ रहे और एक साथ बैठकर भोजन-भजन करे।

1968 की बात है। श्री रामशब्द तिवारी जी के निवेदन से गुरुदेव जी गोडा जिला के परसदा गाव गये। स्नानादि के बाद एक व्यक्ति गुरुदेव के पास आया, उसने आपसे पूछा—साहेब, आपके सतो मे कोई ब्राह्मण हो तो चले भोजन बना ले। वह क्षेत्र ही ब्राह्मणो का गढ़ है। वहा किसी भी भोज मे ब्राह्मण ही भोजन बनाता था। इसलिए उसी भाषा मे उन्होने गुरुदेव से भी बात की। गुरुदेव ने कहा—इन साधुओ मे सभी ब्राह्मण हैं लेकिन तुम्हारे जैसे नकली ब्राह्मण नही। गुरुदेव के पास ही रामशब्द तिवारी भी बैठे थे। उन्होने उस व्यक्ति को फटकारते हुए कहा—अरे, तुम साहेब के पास बभनई की बात क्या करते हो? साहेब ब्राह्मण, शूद्र कुछ नही मानते। वे केवल मनुष्य मानते हैं।

गुरुदेव के कुछ सत भोजनालय मे गये और भोजन बनाये। शाम को दरवाजे पर सत्सग की एक सभा लगी, जिसमे करीब सवा दो सौ लोग रहे होगे। उस सभा मे पचानबे प्रतिशत तो ब्राह्मण लोग ही थे। वहा के लोगो को यह लोभ था

कि साहेब एक प्रतिभाशाली, अच्छे सत हैं, साथ-साथ ब्राह्मण खानदान के हैं इसलिए ये हमारे समाज के धर्मगुरु होगे तो बहुत अच्छा होगा।

गुरुदेव उन लोगो की मनोभावना को अच्छी तरह समझते थे। आपने अपने विचार प्रकट करते हुए उस सभा मे कहा—तुम लोग यदि ब्राह्मण बनते हो और ब्राह्मण गुरु चाहते हो तो मुझे यहा आन की कोई जरूरत नही है। कितु यदि मुझे चाहते हो तो न ब्राह्मण बनो और न मेरे सामने इसकी चर्चा ही करो। यह ब्राह्मणत्व का अहकार ही तो हिन्दू समाज को चौपट करके रख दिया है। एक बिना किसी योग्यता के ही अपने को सबसे बड़ा मान लिया और अधिकार जमाये बैठा है तथा दूसरा उसी का भाई जो सब प्रकार से योग्य होते हुए भी अछूत कहलाता है और उसे हेयदृष्टि से देखा जाता है।

आपकी इतनी बात सुनकर सभी लोग स्तब्ध रह गये लेकिन सबको यह अहसास हो रहा था कि गुरुदेव ठीक ही तो कह रहे हैं।

गुरुदेव ब्राह्मणो के खिलाफ नही हैं बल्कि ब्राह्मणवाद के खिलाफ हैं, इसके लिए आपने अपार साहस और शक्ति का परिचय दिया। जिस त्याग और निष्पक्षता के साथ सद्गुरु कबीर ने मानवता का वृक्षारोपण किया उसी साहस और शक्ति के साथ इस बीसवी शताब्दी मे गुरुदेव अभिलाष साहेब जी ने मानवता की उस वाटिका को पुष्पित-पल्लवित होने के लिए मधुकरवत अनेक मत-मतान्तरो के शास्त्रो से गुण ग्रहण किया। जिससे सद्गुरु कबीर का यह सिद्धान्त अत्यन्त व्यापक हो गया।

आज (2007) करीब तीस वर्षों से आश्रम मे प्रति वर्ष वार्षिक अधिवेशन होता है। हजारो-हजारो की सख्या मे सभी क्षेत्रो से सभी वर्ग के लोग आते हैं। सब एक साथ प्रेम से बैठते, खाते एव सत्सग करत हैं।

मनुष्य-मनुष्य के बीच छुआछूत की भावना एक सामाजिक अपराध है। हा, सफाई-स्वच्छता की दृष्टि से आप छुआछूत मजबूती से मानते हैं। गदे हाथ से किसी भी खाने-पीने की वस्तु को नही छूना चाहिए। कोई शौचालय से निकला है तो बिना स्नानादि किये भोजनालय मे प्रवेश नही कर सकता है। ऐसा आपका कड़ा विधान है।

लोग दूसरे मत के अधविश्वास का खडन करते हैं और अपने मत के अधविश्वास मे विश्राम करते हैं। लेकिन गुरुदेव ने अपने-पराये सभी मत-पथो के अधविश्वासो का निर्भयता से खडन किया है वह चाहे राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद के लिए हो चाहे कबीर के लिए। अधविश्वास और चमत्कार मानने से किसी का भी कल्याण नही होता है। उपरोक्त सभी महापुरुष मनुष्य थे। सबने अपने-अपने देश, काल और परिस्थिति के अनुसार लोगो को

कल्याण का रास्ता दिखाया और स्वय का कल्याण किया। कोई अवतार, पैगम्बर और अलौकिक नही होता। इन सारी बातो को हम सहज समझ सकते हैं।

सन् 1978 की बात होगी, गुरुदेव भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के घर कोलकाता मे निवास कर रहे थे। वही रहते-रहते उस वर्ष आपने 'कबीर दर्शन' ग्रथ लिखना शुरू कर दिया था। गथ के प्रारम्भ मे ही आपने सद्गुरु कबीर का जीवन परिचय बताते हुए उन पर लगाये गये सारे चमत्कारो का खण्डन किया है। दूसरे दिन सत्सग के समय जब आपने श्री प्रेमप्रकाश जी को पढ़कर सुनाया तो उन्होने हसते हुए कहा—साहेब, आप कबीर दर्शन लिख रहे हैं या कबीर खडन।

गुरुदेव ने कहा—मैं कबीर दर्शन लिख रहा हू। जो कबीर ज्ञान के क्षेत्र मे आग का गोला थे, सारे चमत्कार, अधविश्वास एव कुरीतियो पर कटाक्ष किये थे, कबीर प्रेमियो ने महिमा के रूप मे सब का सब उन्ही पर थोप दिया है जो उनके साथ अपराध करना है और उनके ज्ञानालोक को तिरोहित कर देना ह। आज कबीर साहेब होते तो वे सबसे ज्यादा अपने अनुगामियो को ही फटकारते।

लोग अपनी मान्य पुस्तको का तो आदर करते हैं कितु दूसरो की पुस्तको से नाक-भौ सिकोड़ते हैं, उनसे घृणा करते हैं। कितु गुरुदेव अभिलाष साहेब जी इसके विपरीत हैं। आप अपने मान्य ग्रथो का विवेकपूर्वक आदर देते हैं और दूसरे मत-पथ के ग्रथो से सार-सत्य ग्रहण करते हैं। गीतासार, मानसमणि, तुलसी पचामृत, रामायण रहस्य, उपनिषद् सौरभ, तथागत बुद्ध क्या कहते हैं?, शकराचार्य क्या कहते हैं?, वेद क्या कहते हैं?, योगदर्शन भाष्य, अष्टावक्र गीता भाष्य आदि ग्रथ आपके मधुकरवत गुणग्राही दृष्टि का ही परिचय देते हैं। सबसे आपने सार-सार लेकर अपने सिद्धान्त म मिला लिया। आप किसी शब्द, भाषा और शैली से घृणा नही करते बल्कि समन्वय करते हुए उसका आदर करते हैं।

गुरुदेव ने समाज को लिखने एव पढ़ने के लिए एक नयी और व्यवस्थित शैली दी है। अभी तक पारखी सत अपने सिद्धान्त की ज्ञान, वैराग्य, बोधपरक बाते तो कहते थे लेकिन परमत के लिए सीधे तीखा खण्डन करते थे। इससे सद्गुरु कबीर साहेब का पारख विचार व्यापकरूप से समाज के सामने नही आता था। गुरुदेव अभिलाष साहेब के कहने और लिखने का ढग ही कुछ विलक्षण रहा। आप कम खण्डन नही करते लेकिन आपका तरीका ऐसा है कि सारे अवरोधो, अधविश्वासो और गलत मान्यताओ का खण्डन करते हुए भी आपकी वाणियो से किसी को कष्ट नही होता। गुरुदेव खण्डन करते हुए भी उन्ही के शास्त्रो और महापुरुषो का प्रमाण देकर समाधान करते चलते हैं। जिससे सभी

वर्ग के लोग आपके विचारो से प्रभावित होते हैं और लोग प्रेम से पढ़ते-सुनते हैं। आज कबीरपथ मे अधिकतम प्रवक्ता सत-भक्त आपकी ही भाषा-शैली के आधार पर अपने व्याख्यान देते हैं जो समन्वयपरक और सर्वग्राह्य होता है।

कुछ लोग कहते हैं कि कबीर साहेब ने नारियो की निन्दा की है और कबीरपथ मे नारियो को हेय दृष्टि से देखा जाता है। परन्तु ये दोनो बाते न समझने के कारण हैं। सद्गुरु कबीर की वाणियो मे जहा नारियो का खण्डन किया गया है वह मर्यादा की दृष्टि से है। पुरुष साधको का मन नारियो की ओर खिचता है तो उन्होने साधको के मन को उधर से हटाने के लिए नारी शरीर की आलोचना की, ''इस हाड़, चाम, मल-मूत्र के शरीर मे क्यो आकर्षित होता है। यह तो गदगी की टोकरी है।'' यह निन्दा तो नही हुई बल्कि इससे उनकी ही सुरक्षा है। इसी प्रकार नारी साधिकाए पुरुषो से अपने मन को हटाने के लिए उनके शरीर मे दोष दृष्टि कर सकती हैं।

गुरुदेव ने पुरुष साधको के समान ही नारी साधिकाओ को भी अधिकार दिया है। वे विद्या, श्रम, साधना, शान्ति सभी क्षेत्रो मे आगे बढ़ सकती हैं। हा, स्त्री-पुरुष दोनो अपनी मर्यादा से रहे। गुरुदेव साधक हैं इसलिए उनका विषय ही साधना सम्बन्धी है। उनका दिया हुआ नियम है कि जिस आश्रम मे पुरुष साधक रहते हैं वहा नारिया न रहे और जहा नारी साधिकाये रहती हैं वहा पुरुष न रहे। अपने-अपने स्थान पर दोनो समान हैं, दोनो साधना करे, दोनो कल्याण के अधिकारी हैं। कोई साधक-साधिका यदि अभेद बरताव करते हैं तो इसके आप सख्त खिलाफ हैं। ऐसा करके वह आपके सरक्षण मे नही रह सकता है।

इस बीसवी सदी मे गुरुदेव ने जो किया है वह आपके त्याग, तप, धैर्य, साहस, वैराग्य, दृढ़ता और विनम्रता का परिणाम है।

---

❺

विभिन्न घटनाएं

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेबः जीवन दर्शन

1.

आत्मा को जाननेवाला ब्राह्मण है!

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का कार्यक्रम उत्तरप्रदेश के गाडा जिला मे ब्राह्मणो के एक गाव मे था। स्नान आदि करके जब आप आसन पर बैठे तो आपके पास एक पडित जी आये। वे नमस्कार कर बैठ गये। बैठते ही उन्होने पूछा—महाराज, आपके इन सतो मे कोई ब्राह्मण भी होगा।

गुरुदेव ने कहा—इनमे सभी ब्राह्मण हैं। इतना सुनकर वे पडित जी आश्चर्य मे पड़ गये। उन्होने कहा—इनमे सभी ब्राह्मण कैसे हैं?

गुरुदेव ने कहा—हा, ये सभो ब्राह्मण हैं। कुछ लोग ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर चुके हैं और कुछ लोग ब्राह्मणत्व की ओर चल रहे हैं। कितु आप जैसे नकली ब्राह्मण ये नही हैं।

यह सुनकर पडित जी हसने लगे। उन्होने कहा—महाराज, हम नकली ब्राह्मण कैसे हैं?

तब गुरुदेव ने कहा—

जितेन्द्रियः धर्मपरः स्वाध्याय निरतः शुचिः।
कामक्रोधौ वशौ यस्य तं देवा ब्राह्मणं विदुः॥

(महा0, वनपर्व 206/34)

अर्थात—जो जितेन्द्रिय, धर्मपरायण, स्वाध्याय मे तत्पर और पवित्र है तथा काम-क्रोध को जिसने जीत लिया है, उसे देवता लोग ब्राह्मण कहते हैं।

पडित जी ने कहा—ऐसे तो हम नही हैं महाराज। गुरुदेव ने कहा—तभी तो मैंने कहा कि आप नकली ब्राह्मण हैं। ये सब असली ब्राह्मण हैं या उधर गतिशील हैं। ब्रह्म मे जो स्थित है या उस स्थिति के लिए जो प्रयत्न करता है वह सच्चा ब्राह्मण है। केवल ब्राह्मण कहलाने मात्र से कोई ब्राह्मण नही हो जाता। ब्राह्मणत्व का जो काम करे वह ब्राह्मण है।

2.

ये हरिजन हैं

(1)

एक बार गुरुदेव अभिलाष साहेब जी गोण्डा जिला के एक गाव मे एक भक्त के दरवाजे पर स्नान कर रहे थे। साधक कुआ से पानी भर-भरकर आपको स्नान करा रहा था। एक सज्जन नीचे किसी कार्यवश खड़े थे। उसी समय गाव से एक व्यक्ति पानी भरने आ गया। उस व्यक्ति ने कहा—रुको, रुको, अभी कुआ पर न चढ़ो।

गुरुदेव ने कहा—क्यो इनको रोकते हो? इनको पानी भर लेने दो।

उस व्यक्ति ने कहा—साहेब, ये हरिजन हैं।

गुरुदेव—हरिजन हैं तब तो बड़ी अच्छी बात है। हरिजन और दुर्जन ये दो ही तो हैं। मैं हरिजन को ही पसन्द करता हू। तुम दुर्जन हो तो हटो यहा से। बेटा! तुम आ जाओ और पानी भर लो।

इस प्रकार गुरुदेव जी ने उस व्यक्ति को बुलाकर पानी भरने को कहा और उससे आपने कहा—बेटा! कोई छोटा-बड़ा नही, सब मनुष्य समान होते हैं।

(2)

गुरुदेव राजस्थान के कार्यक्रम मे थे। ठड के दिन थे। एक दिन गुरुदेव सुबह धूप का सेवन कर रहे थे। सामने दरी बिछी हुई थी, जिस पर दर्शनार्थी भक्त आते और बदगी करके बैठ जाया करते थे। कुछ सत्सग वार्ता चल रही थी।

कुछ समय बाद एक नवयुवक आया, वह दूर एक किनारे छाया मे जमीन पर बैठ गया। गुरुदेव ने कहा—दरी पर बैठ जाओ, बेटा। लेकिन वह उसी स्थान पर बैठा रहा। एक व्यक्ति ने कहा—साहेब, यह हरिजन है।

गुरुदेव ने कहा—बहुत बढ़िया, हरिजन और दुर्जन दो ही प्रकार के व्यक्ति होते हैं। वह हरिजन है और मैं हरिजन को ही पसन्द करता हू। अगर तुम लोग दुर्जन हो तो हटो यहा से। आओ बेटा, तुम बैठो दरी पर। गुरुदेव ने कहा—मैं समझ रहा था कि तुमको धूप अनुकूल नही है इसलिए छाया मे बैठ गये हो लेकिन अब तो तुम्हे दरी पर ही बैठना होगा। भक्त लोगो ने भी उससे आग्रह किया तब आकर वह दरी पर बैठा।

गुरुदेव—इस छुआछूत के कोढ़ ने समाज को तोड़ कर रख दिया है। जब तक इस कोढ़ को मनुष्य स्वय निर्मूल नही करेगा, तब तक इसके दुष्परिणाम को

भारतीय समाज भोगता रहेगा। यह तभी सम्भव है जब हम सब एक दूसरे से प्रेम एव भाईचारे का बरताव करेगे।

3.

मनुष्य मे त्याग की शक्ति है

गुरुदेव का कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के गाडा जिला के परसदा गाव मे श्री रामशब्द तिवारी जी के यहा था। एक दिन आप शाम के समय भ्रमण करने के लिए निकले। गाव से बाहर निकलते ही एक सज्जन मिले जो सड़क के किनारे घास छील रहे थे। गुरुदेव को देखकर उन्होने विधिवत 'साहेब बदगी' की। गुरुदेव ने उनका अभिवादन स्वीकार किया। आपने देखा उनके कान मे एक अधजली बीड़ी खोसी हुई है।

आपने उनसे पूछा—आपका नाम क्या है?

उन्होने कहा—मेरा नाम 'राम अभिलाष' है महाराज।

गुरुदेव—मेरा भी नाम यही है, तो भाई, मेरा नाम आप क्यो बदनाम कर रहे हैं?

रामअभिलाष—(घबराते हुए) मैं समझ नही पाया महाराज।

गुरुदेव—राम अभिलाष होकर आप बीड़ी पीये यह शोभा नही देता। क्या यह बीड़ी पीना आप छोड़ सकेगे?

रामअभिलाष कान से बीड़ी निकाले और तोड़कर वही फेक दिये। उन्होने कहा—महाराज, आज से मैं सदा के लिए बीड़ी पीना छोड़ता हू लेकिन मैं गाजा भी पीता हू।

गुरुदेव—तब तो हमारे नाम को और डुबा रहे हो। गाजा पीना तो घोर पतन-पथ है। तो क्या गाजा छोड़ पाओगे?

रामअभिलाष—(कुछ क्षण सोचकर) महाराज, मैं आज से सदा के लिए गाजा भी पीना छोड़ता हू।

गुरुदेव—धन्यवाद, अपने निश्चय पर दृढ़ रहना।

गुरुदेव भ्रमण करके अपने निवास पर आ गये। रात्रि मे आपके उपदेश सुनने के लिए बहुत-से भक्त लोग इकट्ठा हुए। गरुदेव ने कहा—भाई, आपके गाव मे रामअभिलाष जी आज बीड़ी, गाजा छोड़ने के लिए सकल्प किये हैं।

लोगो ने कहा—साहेब! वे गाजा तो नही छोड़ पायेगे। वे इस क्षेत्र के सबसे बड़े गजेड़ी हैं। वे एक खोन्हा (मिट्टी का एक बड़ा पात्र) मे सालभर के लिए गाजा इकट्ठा करके रखते हैं। उनके दरवाजे पर गजेड़ियो की भीड़ बनी रहती है।

वे खूब गाजा पीते और पिलाते हैं। उनके लिए गाजा छोड़ना हम लोगो को असम्भव-सा लग रहा है।

गुरुदेव—लेकिन उन्होने तो हमसे निश्चय किया है। देखो, अब वे क्या करते हैं।

कुछ दिनो बाद पता चला कि वे सचमुच गाजा पीना छोड़ दिये हैं। उनके पास जब कोई दूसरा भी गाजा पीने आता तो रामअभिलाष उसे भी समझा देते कि गाजा घोर विनाशक है। इसे नही पीना चाहिए। इस प्रकार गाव का एक साधारण, अशिक्षित व्यक्ति जो पक्का गजेड़ी था, गुरुदेव की बातो से प्रभावित होकर सदा के लिए बीड़ी, गाजा, तम्बाकू आदि खाना-पीना छोड़ दिया।

4.

मेरा सब रिजर्वेशन है

यह घटना 1979 की होगी। एक बार गुरुदव जी कोलकाता से ट्रेन IIIारा टाटानगर आये थे। टाटानगर मे कार्यक्रम करके पुनः कोलकाता वापस जा रहे थे। आपके साथ दो सत और एक भक्त थे। गाड़ी मे आपका रिजर्वेशन था। सीट के नीचे सामान रखकर आप लोग अपनी अपनी सीटो पर बैठ गये। गाड़ी चल पड़ी। अगले स्टेशन पर एक सूटेड-बूटेड व्यक्ति आया और आते ही सामने अपनी अटैची रख दो। एक सत से कहा—उधर खिसको, यहा मुझे बैठना है।

गुरुदव जी ने कहा—भैया, हमारा रिजर्वेशन है अलग कही बैठ जाओ। उन्होने आख चमकाते हुए कहा—मेरा सब रिजर्वेशन है।

गुरुदव शात हो गये। अपने सतो से आपने कहा—इधर खिसक आओ। वह व्यक्ति आकर बैठ गया।

सामने दो बगाली बाबू बैठे थे। वे उसकी बात सह नही पाये। उन्होने कहा—तुम्हारा सब रिजर्वेशन है, तो जाओ जहा रिजर्वेशन हो। एक सीट का रिजवेशन करा नही सकते और डीग हाकते हो कि मेरा सब रिजर्वेशन है। इन सीधे-साद सतो को परेशान करते हो। किसी और से कहते तो अब तक गाड़ी से नीचे फेक दिये गये होते। गुरुदव जी ने बगाली बाबू को रोका, लेकिन वे उनको फटकारते रहे।

सहनशीलता मे कितनी शक्ति है। गुरुदव जी ने उनकी बात सह ली। बगाली बाबू कोई परिचित नही थे, किन्तु गुरुदव की सहनशीलता से प्रभावित होकर उस व्यक्ति पर बरस पड़े। किसी ने कैसा सुन्दर कहा है—

गम समान भोजन नही, जो कोई गम को खाय।
अम्बरीष गम खाइया, दुर्वासा बिललाय॥

5.

मैंने कबीर का दर्शन किया है

सन् 1980 के पूर्व की बात है। गुरुदेव कलकत्ता मे भक्त प्रेमप्रकाश जी के यहा रहकर, उस समय पारख प्रकाश पत्रिका का सम्पादन कर रहे थे। वहा उस समय एक बुजुर्ग पौराणिक कबीरपथी भक्त आपके पास आया करते थे, जिनका नाम था श्री लखी बाबू। लखी बाबू की सद्गुरु कबीर के प्रति अनन्य निष्ठा थी वे कबीर साहेब को जगतनियन्ता, सुप्रीम पावर, अनन्त ब्रह्माण्डनायक मानते थे। उन्होने एक दिन गुरुदेव को अपने घर ले जाकर सेवा, सत्सग का लाभ लेना चाहा। वे गुरुदेव स निवेदन किये। गुरुदेव ने स्वीकारते हुए कहा—ठीक है।

निश्चित तारीख को वे स्वय श्री प्रेमप्रकाश जी के घर आपको लेने के लिए आये। मार्गदर्शन के लिए लखी बाबू को ड्राइवर के बाये आगे की सीट पर बैठाया गया। कुछ सतो के साथ गुरुदेव पीछे की सीट पर बैठे। बात करते-करते लखी बाबू ने कहा—साहेब जी! मैंने साक्षात् सद्गुरु कबीर साहेब के दर्शन किया।

गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए कहा—मैं तो आपके दर्शन पाकर कृतार्थ हो गया। लखी बाबू गुरुदेव पर खीझते हुए कहते हैं—यही ता आप मानते नही हैं। गुरुदेव ने कहा—मानता हू भाई, कबीर साहेब मुझे दर्शन देगे ऐसी मुझे आशा नही। लेकिन आप उनके दर्शन कर चुके हैं तो मैं आपके दर्शन पाकर ही अपने को कृतार्थ समझता हू। इतना सुनते ही भगत जी थोड़ा नाखुश हो गये। बाद मे गुरुदेव जी ने सतो मे इस घटना का जिक्र करते हुए कहा—लखी बाबू बुजुर्ग हैं मेरी उम्र कम है इसलिए मुझ पर नाखुश होने का उनको अधिकार है। लेकिन अब बुजुर्ग होने स असत्य के साथ समझौता तो नही किया जा सकता।

6.

कर्मशील बनो!

जून 1980 की बात है। गुरुदेव जी भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के घर न्यू अलीपुर कोलकाता मे थे। एक व्यक्ति आया जिसकी उम्र लगभग पैंतीस वर्ष की थी। वह पढ़ा-लिखा अच्छे व्यक्तित्व का था लेकिन अपने जीवन से उदास था। वह एक क्लब मे सेक्रटरी था। वहा से वह किसी कारणवश निकाल दिया गया।

काफी परेशान था। वह व्यक्ति श्री प्रेम प्रकाश जी के पास आया और उनसे काम मागा। श्री प्रेमप्रकाश जी ने उनको समझाया और चलते वक्त कुछ पैसे दिये कि जाओ कुछ खा-पी लेना। इसके बाद एक दिन गुरुदेव जी के पास वह पहुचा और निराश बैठा रहा। गुरुदेव जी उसे कुछ समझाये और चलते वक्त करुणावश दस रुपये का नोट दे दिये।

उसने कहा—साहेब, मैं अपना सामान एक मोटर गैरेज मे ड्राइवर के पास रख आया हू। मुझे यही पर कुछ काम दे दिया जाये। थोड़ी देर बाद प्रेम प्रकाश जी भी आ गये। गुरुदेव के पास बदगी करते हुए बैठ गये। उनसे उस युवक ने कहा—मैं इन गमलो मे पानी आदि डालने का काम कर सकता हू। गुरुदेव ने प्रेम जी की तरफ देखा तो वे हसते रहे।

गुरुदेव जी ने उस युवक को समझाया—तुम कैसे कायर बनते हो, तुम्हारे स्थान पर मैं होता तो मूगफली, गुब्बारे या कुछ खिलौने लेकर सड़क के एक किनारे बैठ जाता और उसे बेचकर मैं अपना जीविकोपार्जन कर लेता।

गुरुदेव की बाते सुनकर उसने कहा—साहेब, मैं ग्रेजुएट हू।

गुरुदेव जी ने डाटते हुए कहा—ग्रेजुएट हो तो क्या हाथी-घोड़ा हो गये हो? जीविका चलाने के लिए मोटा काम करने मे अपनी तौहीन समझते हो। दूसरे लोग जो यह काम करते हैं वे भी तुम्हारे समान मनुष्य हैं।

उसने कहा—तो साहेब, यह आम का समय है। मेरे कुछ ऐसे मित्र हैं जो मुझे उधार पैसे दे सकते हैं। उनसे पैसे लेकर मैं आम बेचकर पैसे कमा सकता हू।

गुरुदेव ने कहा—बिलकुल, कुछ शुरू करो। इस प्रकार निकम्मा बनकर ग्रेजुएट होने का अहकार पाले रखोगे तो कुछ नही कर पाओगे। कोई काम छोटा नही है। मोटा से मोटा काम मनुष्य को प्रसन्नतापूर्वक करना चाहिए।

उसके चले जाने पर गुरुदेव ने प्रेम प्रकाश जी से पूछा—आपने उसे काम मे क्यो नही लगाया? प्रेम जी स्वभाव के अत्यन्त गभीर और मनोवैज्ञानिक परख रखने वाले पुरुष हैं। उन्होने कहा—साहेब, गमले म पानी डालने वाले का स्वभाव ही कुछ और होता है। इसको रख लगे तो चार दिन बाद यह मुझे ही सिखायेगा क्योकि यह ग्रेजुएट है।

7.

धर्म का स्तम्भ नही टूटता

कबीर पारख सस्थान के निर्माण मे गुरुदेव के सहयोगियो मे सैकड़ो लोगो का हाथ है, लेकिन तीन भक्त इसके आधार स्तभ हैं। वे हैं—मुहम्मदनगर

(बस्ती, उत्तर प्रदेश) वासी शकर भक्त, नाना अमादरा (बड़ौदा, गुजरात) के भक्त श्री नाथाभाई और कलकत्ता के भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी। इन तीनो ने अपने तन, मन, धन से सस्था को आगे बढ़ाने मे बहुत सहयोग किया है।

वर्ष 1981 इलाहाबाद मे शकर भक्त के निधन के बाद प्रीतमनगर वासी श्री आत्मा प्रसाद अस्थाना जी ने गुरुदेव से कहा—साहेब जी! आपके तीन स्तभो मे से एक स्तभ आज टूट गया।

गुरुदेव जी ने कहा—अस्थाना जी, धर्म का स्तभ कभी टूटता नही है। किसी भी सस्था, समाज, पार्टी के महत्त्वपूर्ण से महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का निधन होता है और सस्था-समाज चलता रहता है। यहा निराश होने की कोई जरूरत नही है। सारी यौगिक चीजे परिवर्तनशील हैं। यह नियम सनातन सत्य है। इस बात को जो सब समय याद रखता है उसके लिए निराश होने की कोई जगह नही है।

अस्थाना जी ने कहा—साहेब, हर स्थिति मे आप एक समान रहते हैं। आपको मैंने कभी निराश, उदास होते नही देखा।

गुरुदेव जी ने कहा—जो ससार सब समय चल-विचल है उसके बनने-बिगड़ने मे अपने मन को दुखी क्यो करे? दुख मनुष्य की कमजोरी है।

8.

आपसी कलह का समाधान

वर्ष V~}V-82 की बात है। गुरुदेव जी इलाहाबाद के प्रीतमनगर कबीर आश्रम मे विराजमान थे। काशी के एक भक्त का सदेश आया कि साहेब जी आप एक दिन के लिए यहा आ जाये। गुरुदेव वहा गये।

घर मे बहुत कलह बढ़ गया था। घर मालिक के एक बेटा और चार बेटिया थी। बेटा बड़ा था। उसकी शादी हो चुकी थी। कुछ दिनो के बाद सास-बहू और ननद-भाभी के बीच कलह होने से घर के सभी सदस्य काफी परेशान थे।

शाम को घर के सभी सदस्यो के साथ गुरुदेव जी बैठे तब गुरुदेव ने उन लड़कियो से कहा—तुम लोग यहा अपनी भाभी को परेशान करती हो, जब तुम लोग अपनी ससुराल जाओगी तो वहा तुम्हे भी ननदे मिलेगी। और वे तुम्हे परेशान करे तो तुम क्या सोचोगी? तब एक ननद ने कहा—साहेब जी, हम दोनो बहने अपनी-अपनी ससुराल हो आयी हैं और वहा हम लोगो के साथ यही व्यवहार शुरू हो चुका है। गुरुदेव ने कहा—तब बताओ, इसका फल और क्या

होगा? तो दोनो लड़कियो ने अपनी माता को कहा—देखो अम्मा, तुम अपनी बहू को प्यार दो, हम लोगो को तुम्हारा प्यार नही चाहिए।

गुरुदेव ने माता को समझाया—तुम दिन पर दिन बूढ़ी होती जा रही हो, और अब तुम्हे दूसरे से सेवा लेने की जरूरत होगी तो तुम्हारा साथ कौन देगा? तुम्हारी बहू कि तुम्हारी ये बेटिया? बेटिया तो रहेगी अपने-अपने घर और जब तुम बहुत कोशिश करके बुलाओगी तब आयेगी और एक-दो दिन रहने के बाद कहगी कि मा, हमे छुट्टी दो क्योकि हमारे घर मे रोटी बनानेवाला, घर की देखभाल करने वाला कोई नही है। वे चली जायेगी। तुम्हारा साथ देगी तुम्हारी बहू। लेकिन जो तुम्हारा साथ देनेवाली है उस बहू को करती हो परेशान और उसके मन मे तुम्हारे किये के सस्कार बैठते होगे। जब तुम और बूढ़ी होकर असमर्थ हो जाओगी तो वही बहू होगी घर की मालकिन, फिर उस समय सारा बदला वह तुमसे लेगी। क्योकि मन मे सस्कारो की गथिया बन जाती हैं। इसलिए तुम्हे चाहिए कि बहू को अपनी पुत्री समझकर उसे प्यार दो।

फिर गुरुदेव ने बहू से कहा—तुम इस घर की बहू हो। कुछ वर्षों के बाद तुम्हारी भी बहू आ जायेगी। तब तुम सास हो जाओगी और चाहोगी कि तुम्हारी भी मर्यादा हो। तो आज तुम्ह अपनी सास की मर्यादा करनी है कि नही? अगर नही करोगी तो तुम्हारी मर्यादा कैसे होगी? क्योकि यह तो एक चक्र की तरह है जो बारी-बारी से सबके ऊपर आता है। कोई इससे बच नही सकता। बहू ने भी अपनी सास की सेवा एव मर्यादा करने के लिए स्वीकार किया।

गुरुदेव ने कहा—सब लोग आपस मे प्रेम, स्नेह से रहो, एक दूसरे को देवी-देवता समझो। यह सुन्दर मनुष्य का जीवन कलह मे बिताने के लिए नही है बल्कि आपस मे प्रेम से हिल-मिलकर रहकर स्वर्ग एव मोक्ष-सुख लेने के लिए है।

9.

आपकी पुस्तक मैंने फेक दी

सन् 1983 मे श्रद्धेय सत श्री ज्ञान साहेब जी गुजरात भ्रमण मे गये थे। भ्रमण के दौरान वे बड़ौदा जिला के बोड़ेली तालुका भी गये। बोड़ेली मे बाइस-तेइस वर्षीय एक नवयुवक आपको मिले जिनका नाम था गोपाल जी। गोपाल जी ऐलोपैथ के डाक्टर हैं। उनकी प्रैक्टिस नयी थी परतु अपनी कार्य कुशलता के कारण थोड़े दिनो मे प्रसिद्ध हो गये थे। उनके माता-पिता तथा पूरा परिवार कृष्ण

भक्त था। उसी सगुण उपासना के रग मे गोपाल जी भी रगे हुए थे। लेकिन श्रद्धेय सत श्री ज्ञान साहेब जी के सम्पर्क मे जब वे आये तो कबीर साहेब का विचार उनको अच्छा लगा।

डॉ0 गोपाल जी की जिज्ञासा एव उत्साह को देखकर श्री ज्ञान साहेब जी ने गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी एव उनके साहित्य के बारे मे बताया कि इलाहाबाद मे एक महान सत रहते हैं जिनकी लिखी हुई दर्जनो रचनाए हैं, जिनका विचार एव मार्गदर्शन समाज के लोगो के लिए प्रेरणादायी है।

गोपाल जी के मन मे गुरुदेव की पुस्तके पढ़ने का विचार हुआ। पुस्तक प्राप्ति के लिए उन्होने एक पत्र लिख दिया, जिससे डाक द्वारा इलाहाबाद कबीर सस्थान से छोटी-बड़ी अनेक पुस्तके भेज दी गयी। पुस्तके पाकर उनको प्रसन्नता हुई कितु जब उलट-पलटकर उन्हे देखे तो उनकी प्रसन्नता निराशा मे बदल गयी। बस, इसी भावावेश मे उन्होने गुरुदेव के नाम से एक पत्र लिखा—

सम्माननीय महात्मा जी, बोड़ेली, दिसम्बर 1984

सादर प्रणाम,

आपकी पुस्तको की प्रशसा सुनकर मैंने आपके आश्रम इलाहाबाद से कुछ पुस्तके मगा ली, लेकिन उन्हे देखकर मेरे मन मे बड़ी निराशा हुई। न ऐसा अरविन्द जी लिखते हैं, न स्वामी विवेकानन्द लिखते हैं, न रजनीश जी लिखते हैं और न अन्य कोई लिखता है। इन पुस्तको को पढ़ने का मेरा विचार नही कहता है। मैंने आपकी इन पुस्तको मे से किसी को छत पर फेक दिया है, किसी को जीने पर और किसी को कही। हा, बीजक टीका को अपने पास रख लिया हू। क्योकि यह मोटी पुस्तक है, शायद यह गहन गभीर होगी। पुनः प्रणाम!

आपका
गोपाल

गुरुदेव उस समय प्रीतमनगर, इलाहाबाद के कबीर आश्रम मे थे। एक साधक गोपाल जी का पत्र लेकर आया। पत्र को पढ़ते ही गुरुदव जी को हसी आ गयी कितु आपने उसका कोई जवाब नही दिया।

इधर गोपाल जी ने जब बीजक टीका पढ़ी तो उनकी आखे खुली की खुली रह गयी कि मैंने क्या अनर्थ कर डाला। गोपाल जी ने फेकी हुई सारी पुस्तको को इकट्ठा किया और उन सबको श्रद्धापूर्वक अध्ययन शुरू कर दिया। फिर तो आप गुरुदेव जी के विचारो के ही कायल नही हुए अपितु गुरुदेव जी के अत्यत श्रद्धालु हो गये।

डॉ0 गोपाल जी इस समय बोड़ेली तहसील के सुलझे हुए विचारो के एक अच्छे डॉक्टर हैं। गुरुदेव जब भी उस क्षेत्र मे जाते थे तो व आपके दर्शन करने अवश्य आते।

10.

आधी शताब्दी बीत गयी!

17 अगस्त 1983 की बात है। गुरुदेव जी श्री प्रेमप्रकाश जी के घर कलकत्ता मे थे। प्रात: स्नान के बाद आप आसन पर बैठे थे। अचानक आपके मन मे यह विचार बिजली की भाति कौध उठा कि आज मेरे शरीर के पचास वर्ष बीत गये! इस शरीर मे रहते-रहते आधी शताब्दी बीत गयी। बहुत लम्बा समय बीत गया। इतने समय मे तो दर्जनो बार कल्याण का काम किया जा सकता है। लेकिन कल्याण की दशा ऐसी है कि एक बार प्राप्त होने के बाद फिर उसमे कुछ और प्राप्त करने को बाकी नही रहता।

11.

महाराज कृष्ण को हम नाचते हुए नहीं देख सकते

गुरुदेव का कार्यक्रम महाराष्ट्र के एक गाव मे चल रहा था। चारो तरफ से भक्तो का जमाव था। गुरुदेव के निर्णीत पारख विचारो से जनता खूब खुश थी। अतिम दिन आपके पास एक सज्जन आये। वे गाव के बड़े भक्त थे। उन्होने गुरुदेव से कहा—महाराज, कार्यक्रम के अतिम दिन हम आपके पडाल मे भगवान कृष्ण की रासलीला करना चाहते हैं।

गुरुदेव ने कहा—रासलीला कैसे करेगे?

भक्त ने कहा—महाराज, पडाल मे जगह-जगह माखन बाध दिया जायेगा और कुछ लड़के गोपिकाए बनेगे। उनके साथ एक कृष्ण बनेगा और श्रीकृष्ण माखन चुराकर खायेगे।

गुरुदेव—लेकिन मैं तो इसमे बैठ नही सकता।

भक्त—(आश्चर्यपूर्वक) महाराज आप क्यो नही बैठेगे? यह तो भगवान की लीला है। आप नही बैठेगे तो हमारी रासलीला की यह सभा ही बेकार है।

गुरुदेव—आपके घर मे गाये हैं कि नही?

भक्त—है महाराज, एक गाय है।

गुरुदेव—कितना दूध देती है?

भक्त—डेढ़-दो लीटर।

गुरुदेव—आपके बच्चे दूसरे के घर मे माखन चुराने जाते हैं कि नही?

भक्त—नही महाराज, हमारे बच्चे दूसरे के घर मे माखन चुराने कभी नही जाते।

गुरुदेव—नन्दबाबा के घर जब दस हजार गाये थी तो क्या उनके बच्चे दूसरे के घर मे माखन चुराने जाते थे?

गुरुदेव की इन तर्कपूर्ण बातो को सुनकर भक्त ने आपसे क्षमा मागी। उन्होने कहा—ऐसा तो महाराज, आज तक हमे किसी ने सुझाव ही नही दिया। हम तो बहुत भ्रम मे थे। आपकी कृपा से आज हमे यह बात समझ मे आयी। इस पर तो मैंने कभी सोचा ही नही था।

गुरुदेव से इतना विचार-विमर्श होने के बाद उनका रासलीला करने का विचार ही समाप्त हो गया और आपको नमस्कार करके वापस चले गये।

*   *   *

1989 का प्रयाग कुभ मेला चल रहा था। उसमे कबीर सत्सग शिविर के नाम से छावनी लगी हुई थी। एक दिन आप दोपहर के बाद अपने कक्ष मे बैठे थे। दो लोग आपके पास बाहर से आये। प्रणाम करके सामने बिछी हुई दरी पर बैठ गये।

गुरुदेव ने उन लोगा से कुशल-समाचार पूछा और यह भी पूछा कि आप किस उद्देश्य से यहा आये हैं।

उन्होने कहा—महाराज, हम लोग भगवान श्री कृष्ण की लीला करते हैं। आप केवल अपना पडाल दे दे। उसके बाद अपने खर्चे से हम आपके यहा रासलीला कर देगे। उसमे जो पूजा-चढ़ावा चढ़ेगा उसी से हम सतोष कर लेगे, अलग से कुछ नही चाहिए।

गुरुदेव ने कहा—हम महाराज कृष्ण को नाचते हुए देखना नही चाहते और अपने पडाल मे तो यह सम्भव ही नही है।

आपने उन्हे और भी समझाया कि यही सारी विकृति ने हिन्दू समाज को डुबाकर रख दिया है। जो अपने इष्ट-महापुरुषो को चोर-व्यभिचारी बनाकर जनता के सामने नचायेगा वह दूसरो को क्या सीख दे सकता है। इसी का

फायदा ईसाई-इसलामी लोग उठाते हैं और कहते हैं कि देखो, तुम्हारे राम और कृष्ण तो ऐसे थे वैसे थे, हमारे यहा आओ, हमारे ईसा-मुहम्मद निर्मल हैं।

गुरुदेव की ऐसी निष्पक्ष एव दो टूक बाते सुनकर वे लज्जित होकर वापस चले गये।

12.

मूड़ मुड़ाये कौन नर तर गय?

वर्ष 1985 की बात है। गुरुदेव का कार्यक्रम इलाहाबाद के सी0 एम0 पी0 डिग्री कालेज मे था। कालेज के एक बड़े हाल मे आपका व्याख्यान हुआ।

प्राचार्य, शिक्षकगण तथा नगर के कुछ गणमान्य लोग और सैकड़ो विद्यार्थी बैठे हुए थे। एक घटा गुरुदेव का प्रवचन होने के बाद बहुत-से विद्यार्थी कुछ प्रश्न करने लगे।

एक ने कहा—महाराज जी, कबीर साहेब ने कहा है—''मूड़ के मुड़ाये से कौन नर तर गये, भेड़ न तरे जो मुड़ाये सरासर है।'' लेकिन आप तो मूड़ मुड़ाये हैं?

गुरुदव ने कहा—कबीर साहेब ठीक कहते हैं। मूड़ मुड़ाने मात्र से कल्याण नही होता, इसीलिए हम रोज-रोज नही मुड़ाते हैं और कुछ दिनो मे इसलिए मुड़ा लेते हैं कि कही जटा न हो जाय। क्योकि कबीर साहेब ने यह भी कहा है— ''जटा के रखाये से कौन नर तरि गये, मोर न तरे जाके लबे लबे पर हैं।''

इस प्रकार गुरुदेव का मार्मिक और मनोरजक जवाब सुनकर सभी बच्चे गद्गद हो गये।

13.

शास्त्रार्थ नही, सत्सग कल्याणकारी है

मार्च, 1986 की बात है। हरिद्वार का कुभ मेला चल रहा था। उसमे पूज्य गुरुदेव जी की भी 'सद्गुरु कबीर सत्सग शिविर' के नाम से छावनी लगी हुई थी। हरिद्वार कुभ मेले मे गुरुदेव जी की छावनी दो जगह लगती है। एक पावनधाम सन्यास आश्रम के पास और दूसरी वहा से कुछ दूर पर। दूर वाला कैम्प बड़ा था। उसी मे गुरुदेव जी, सतो एव भक्तो का निवास होता था तथा वही पर भोजन-भडार एव दोपहर का प्रवचन भी होता था। पावनधाम के पास

वाले कैम्प मे शाम को चार से छह बजे तक प्रवचन होता था और वहा की व्यवस्था क लिए मात्र दो-चार सतो का निवास होता था।

पावनधाम के पास ही एक आश्रम मे एक वैष्णव सत रहते थे। न्यायदर्शन पर उन्होने आचार्य की डिग्री प्राप्त की थी। उनको गुरुदेव जी की दो पुस्तके 'कबीर दर्शन' और 'कबीर पर शुक्ल की और मेरी दृष्टि' मिलो। उनको पढ़कर वे गुरुदेव जी से बहस करने का विचार कर लिए। वे अपने लोगो मे भी लड़ने-भिड़ने के लिए चर्चित थे।

पावनधाम के पासवाले कैम्प मे प्रवचन करके जैसे गुरुदेव जी चलने लगे, वे सत आ गये। उन्होने नमस्कार के बाद बात करने का समय मागा और बताया कि मैं न्याय दर्शन मे आचार्य हू। गुरुदेव ने कहा—मैं तो कुछ नही हू। उन्होने कहा—लेकिन आपकी पुस्तको के विषय बड़े मार्मिक हैं।

उनके द्वारा बात करने का बहुत आग्रह करने के कारण गुरुदेव जी ने कहा—अच्छा, परसो आ जाइये।

कैम्प मे गुरुदेव जी के प्रवचन सुबह रिकार्डिंग द्वारा प्रसारित होते थे। उन्हे सुन-सुनकर थाने की पुलिस प्रभावित थी। पुलिस अफसर ने जब सुना कि कबीर कैम्प मे परसो कोई बहस करने आनेवाला है, तो उसने उन सत को बुलाकर डाटा कि आप अपने कैम्प मे प्रवचन कीजिए। आपको कबीर पडाल मे बहस करने नही जाना है।

पुलिस द्वारा ही यह सदेश पुलिस के सबसे बड़े अफसर के पास पहुच गया। तो शाम तक पूरे मेले मे लाउडस्पीकर की आवाज बन्द करवा दी गयी। इससे स्वाभाविक कबीर पडाल का प्रचार हो गया। अतत: तीसरे दिन लाउडस्पीकर बजना खुल गया।

तीसरे दिन बड़े पडाल मे जहा गुरुदेव जी तथा सत-भक्त समाज रहता था वहा पुलिस फैल गयी। बहस करने की इच्छावाले सत तो नही आ सके, कुछ अन्य सत आये जो उनसे परिचित थे। उनमे जो श्रेष्ठ थे उन्होने गुरुदेव जी से कहा कि आपका नाम बहुत दिनो से सुनता था। इसी बहाने आपसे मिलना हुआ।

गुरुदेव जी के सकारात्मक विचारो के कारण उनकी पुस्तको, प्रवचनो तथा रहनी की सुगध सर्वत्र फैल गयी, जिससे सब आपकी बड़ाई करते थे और उन बहसबाज सत की हरकत लोग अच्छा नही माने।

एक दिन गुरुदेव अखडानन्द आश्रम की सभा तथा भोजन मे आमत्रित थे। सभा के बाद आप भोजन के लिए उस कक्ष मे बैठाये गये जहा वरिष्ठ सन्यासी

तथा मडलेश्वर बैठे थे। एक मडलेश्वर ने गुरु जी की ओर उन्मुख होकर कहा—आपकी सुकीर्ति पूरे मेले मे गूज रही है।

एक बड़ा पुलिस अफसर गुरुदेव जी से मिलने आया और उसने आपसे कहा कि मैं आपको इसलिए देखने आया हू कि आपने अपने विरोधी को भी अपने पास आने के लिए स्वीकार कर लिया है।

पूरे मेले मे गुरुदेव जी की ही चर्चा होने लगी, आपसे मिलन वालो की सख्या बढ़ गयी। आपके प्रवचन सुनने के लिए पडाल मे श्रोताओ की भारी भीड़ उमड़ पड़ती थी। अपेक्षा से कही बहुत ज्यादा आपकी पुस्तके बिकी। न्यायाचार्य आपको पिछाड़ना चाहते थे लेकिन उनका विरोध आपको सबके सामने सबसे आगे लाकर बैठा दिया। ठीक ही कहा गया है ''क्वचित दोष गुणायते।'' कभी दोष ही गुण बन जाते हैं!

14.

ऊच-नीच और छूआछूत शास्त्रसम्मत नही

V~}{ हरिद्वार कुभ की बात है। एक दिन हरिद्वार के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी गणेशानन्द जी महाराज आकर गुरुदेव से मिले और कैलाश आश्रम के स्वामी श्री विद्यानन्द के पास ले गये।

स्वामी जी के आश्रम मे अनेक सत, विद्वान उपस्थित थे।

सभी बैठे आपस मे बाते कर रहे थे। बात धीरे-धीरे ऊच-नीच, छुआछूत, सवर्ण-अवर्ण तक पहुची। कुछ लोग मानवीय एकता की इन विध्वसक बातो के पक्षधर थे। गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी ने कहा—जिसे हम अछूत मानते हैं यदि वह स्नान करके आया है, साफ कपड़े पहना है, स्वच्छ हाथ से यदि वह जल-भोजन दे रहा है तो उसे लेने मे क्या हर्ज है?

स्वामी विद्यानन्द ने कहा—हा, आप ठीक कहते हैं किन्तु मर्यादा तो मर्यादा है।

गुरुदेव ने कहा—कौन-सी मर्यादा और किसकी मर्यादा?

स्वामी विद्यानन्द जी हाथ उठाकर व्यास गद्दी की ओर सकेत किये। उनके कहने का मतलब था कि इस गद्दी पर कोई शूद्र व्यक्ति नही बैठ सकता।

गुरुदेव जी—यह व्यास गद्दी है न? स्वामी जी ने कहा—हा।

गुरुदेव जी—कोई धीवरी का बच्चा आये तो वह इस पर बैठ सकता है कि नही? इतना सुनते ही सभी सन्यासी हस पड़े। स्वामी जी भी शर्मिन्दा हो गये।

गुरुदेव ने कहा—जिस धीवरी के बच्चे व्यास जी के नाम से बने वेद, महाभारत, भागवत आदि ग्रथो के आधर पर पडित अपनी पुरोहिताई करता है। उन्ही व्यास (वेद व्यास) के नाम से व्यास गद्दी बनी है, उस गद्दी पर आज धीवरी का बच्चा नही बैठ सकता। आखिर हमारे भारतीय ज्ञान के मूल मे कौन से शास्त्र हैं?

स्वामी जी चुप रहे। वे जानते थे कि भारतीय शास्त्र के मूल मे वेद हैं और वेदो मे छुआछूत, ऊच-नीच की बात नही है बल्कि वेदो मे यहा तक कहा गया है:—

समानी प्रपा सहवो अन्नभाग: (अथर्ववेद 3/30/6)

अर्थात—हमारी पौशाला एक हो और हम एक साथ भोजन ले।

ऋग्वेद मे कहा गया है—

सं गच्छधवं सं वदध्वं स वो मनांसि जानताम्।
देवा भागे यथापूर्वे संजानाना उपासते॥ (ऋ0v•/v~v/w)

अर्थात—हे मनुष्यो! एक साथ चलो, एक साथ मिल-बैठकर बाते करो और मन को समता मे रखकर सत्य को जानने का प्रयास करो। पहले के देवता (सज्जन) लोग समता और सह-अस्तित्व का भाव रखकर ही अपना-अपना भाग लेते और निर्वाह करते थे। वेदो मे कही भी ऊच-नीच छुआछूत की विभाजक रेखा नही खीची गयी थी। ये सब बाते तो बीच मे पुरोहित वर्ग ने गढ़कर सामान्य लोगो के सिर पर थोपा है।

इस प्रकार गुरुदेव साफ निष्पक्षतापूर्वक अपनी बाते कहते रहे। सभी लोगो ने गभीरता से सुना और महसूस किया कि बात सच है।

15.

काले लोग किनके अश हैं?

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी से एक बार कुछ ब्राह्मण लोग मिलने आये। गाव का माहौल था। आप अपने निर्णय ज्ञान की वर्षा कर रहे थे। आपने कहा—मनुष्य केवल मनुष्य है, इसमे न कोई छोटा है और न कोई बड़ा, न कोई हिन्दू है न मुसलमान, न कोई ब्राह्मण और न कोई शूद्र।

एक पडित जी ने कहा—ब्राह्मण-शूद्र कैसे नही होते महाराज? ब्राह्मण ब्राह्मण हैं और शूद्र शूद्र ही हैं। दोनो की बराबरी कैसे हो सकती है?

गुरुदेव ने कहा—इसकी क्या पहचान है कि अमुक ब्राह्मण है और अमुक शूद्र है।

उन्होने कहा—ब्राह्मण गारे होते हैं और शूद्र काले होते हैं।

गुरुदेव ने कहा—शूद्रो मे भी गोरे होते हैं।

पडित जी ने कहा—महाराज, वे सब ब्राह्मणो के अश हैं।

गुरुदेव जी ने कहा—ब्राह्मणो मे जा काले हैं वे किनके अश हैं?

इतना सुनकर पडित जी लज्जित हो गय। अन्य लोग हसने लगे।

गुरुदेव जी ने कहा—अभी तक एकागी-पक्षपातपूर्ण जो व्यर्थ की बाते चलाते आये हो अब वह चलने वाली नही है। इस ब्राह्मण और शूद्र के पर्दे को फाड़कर फेकना होगा, तभी आप सबको अपना सकते हैं, तभी आप मानवता के पथ पर आ सकते हैं।

16.

दिखावे से दूर

भागलपुर, बिहार मे एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन था, जिसमे अनेक सत-महत, विाातगण पधारे थे। उस कार्यक्रम मे गुरुदव जी भी निमत्रित थे। अनेक प्रवक्ता होने से सबको थोड़ा-थोड़ा ही समय दिया जाता था। सचालक प्रवक्ताओ को 15-15 मिनट समय द रहे थे, परतु अधिकतम प्रवक्ता 20-25 मिनट से पहले बद नही करते थे, वह भी सचालक ाारा घटी बजाने पर। अत मे गुरुदव जी को समय दिया गया, आपके लिए समय की पाबदो नही थी, किन्तु आप 15 मिनट बोलकर ही बद कर दिये। इससे जनता के मन पर गहरी छाप पड़ी, साथ ही प्रवक्ताओ के मन पर भी और आपके 15 मिनट के प्रवचन ने लोगो का मन मोह लिया।

भागलपुर के एक सत जो लाल कपड़ा पहनते थे, वे अपने मन की बात को रोक न सके। वे आपके पास आकर कहने लगे—साहेब, मैं जहा भी जाता हू प्रवचन-भजन के लिए झगड़ जाता हू कि मुझे समय दोजिए। लेकिन आपको दखता हू कि अपने लिए समय मागने की तो कोई बात ही नही, आपके लिए समय सीमा भी नही बाधी गयी फिर भी आप 15 मिनट के अदर ही अपने विचार दकर बद कर दिये। मच पर आगे बैठने, अपने को दिखाने आदि की कोई इच्छा ही नही, जबकि मैं पूरे पडाल मे घूम कर दख आया हू कि सब

आपके दर्शन के लिए लालायित हैं, सब आपको सुनना चाहते हैं। दसरी तरफ हम लोग हैं जिन्हे कोई सुनना नही चाहता, फिर भी बोलने के लिए झगड़ते रहते हैं।

साहेब जी, आज आपको दखकर हमे बड़ी प्रेरणा मिली, आज मैं अपने पर बहुत लज्जित हू। अब मैं सकल्प करता हू कि बोलने के लिए कभी विवाद नही करूगा और अपनी तरफ से समय भी नही मागूगा। सहज जब कोई स्वय आग्रह करेगा तो बोल दगा।

गुरुदव ने कहा—बैठने मे क्या रखा है? हम आगे बैठ जाये, लोग हमे जान जाये, बड़ा मान ले तो हमे क्या मिल जायेगा? सावधान नही रहेगे तो इससे अहकार का ही पोषण होगा, फायदा कुछ नहो। इस मिट्टी के लौंद शरीर को दिखाने की इच्छा, यह तो साधना के बिलकुल विपरीत है। प्रवचन मे भी हमे कभी यह तृष्णा नही रखना चाहिए कि हम कुछ मिनट अधिक बोल दगे तो लोग काग से हस हो जायेगे। हमे स्वय विवेक-विचार साधना से रहना चाहिए, सत्पात्रो मे इसकी चर्चा कर दनी चाहिए, लेकिन सुनाने के लिए बेताब होना केवल बालकपन है।

17·

विवादी से विवाद न करना

दिसम्बर, 1988 की बात है। सद्गुरु श्री विशाल साहेब की तपस्थली बधिया बाग के पास सरैया गाव मे भक्त के यहा श्रद्धेय सत श्री प्रेम साहेब जी विराजमान थे। शाम का समय था। वहा सत श्री अभिलाष साहेब भी विद्यमान थे। एक सज्जन वहा आये जिनकी उम्र पैंतालीस-पचास वर्ष की रही होगी। वे पढ़े-लिखे और बुद्धिमान थे कितु भौतिकवादी विचार के थे। वे गुरुदेव जी के पास आये और नमस्कार करके बैठ गये। बैठते ही उन्होने पूछा—साहेब, लोग आत्मा-आत्मा बारम्बार कहते रहते हैं, यह आत्मा क्या चीज है?

उनकी बातो एव विचारो से गुरुदेव समझ गये कि यह व्यक्ति भौतिकवादी विचार का है। ऐसे लोगो को अपना विचार समझा पाना बड़ा मुश्किल होता है।

गुरुदेव ने कहा—यह आत्मा का चक्कर छोड़ो। आज हम और आप हैं कि नही?

उन्होने कहा—हा, हैं ही।

गुरुदेव—हम लोग चोरी, हिसा और व्यभिचार आदि जब घोर कर्म करते हैं तो इससे हमको और आपको भय होता है तथा समाज से दण्ड मिलता है, इससे दुख की अनुभूति भी होती है कि नही?

उन्होने कहा—हा, होती है।

गुरुदेव ने कहा—कोई हमारी सेवा कर दे, हमस प्रेम से मीठी वाणी बोले, हमारी गलतियो पर हमे क्षमा कर दे, हमारे साथ सहयोग की भावना रखे तो ऐसा व्यवहार हमे कैसा लगेगा?

उन्होने कहा—अच्छा लगेगा, सुखानुभूति होगी।

गुरुदेव ने कहा—तो यही हमे भी करना चाहिए। सदाचार और सयम से रहते हुए सत्पथ पर चले और दुराचार, दुर्गुण, दुष्कर्मों का परित्याग करे। इससे जीवन मे शाति रहेगी। मरने के बाद जो होगा सो होगा। आत्मा है कि नही, इसका चक्कर छोड़ो, वर्तमान मे सुखी रहने के लिए अच्छे कर्म करो।

गुरुदेव के इतने जवाब से वह चुप हो गया। उस व्यक्ति के पास अब कोई प्रश्न नही रह गया था। थोड़ी देर मे वह नमस्कार करके वापस चला गया। उस व्यक्ति के जाने के बाद श्रद्धेय सत श्री प्रेम साहेब जी ने आपसे कहा—आप तो दो मिनट मे ही छुट्टी लिये। हम होते तो इससे दो घटे तक जूझते तो भी समाधान न हो पाता।

गुरुदेव जी ने कहा—साहेब, हम विवादी से विवाद नही करते क्योकि ऐसे लोगो को समझाया नही जा सकता। जो भटके हुए हैं, सदेहग्रस्त हैं, उनको निर्णय मिलता है तो वे ग्रहण करते हैं और उनके जीवन मे परिवर्तन आता है, लेकिन जिसने पहले से ही अपनी मान्यता का घेरा बना रखा है वह उसके विपरीत स्वीकार कर ही नही सकता। फिर उसके सामने अपना समय बर्बाद क्यो करे?

18.

सतोष से उन्नति

1988 की बात है। गुरुदेव जी प्रीतमनगर कबीर मदिर मे विराजमान थे। आपके एक सिक्ख प्रेमी हैं चावला जी। चावला जी जानसेनगज, इलाहाबाद के रहनेवाले हैं। एक बार वे अपने बड़े सुपुत्र को लेकर गुरुदेव जी के पास आये। पिता-पुत्र दोनो प्रणाम करके सामने फर्श पर बैठ गये। कुशल-मगल पूछने के बाद गुरुदेव ने उनके सुपुत्र से पूछा—बेटा, पढ़ते हो कि कोई काम-धन्धा मे लगे हो?

उन्हाने कहा—साहेब, पढ़ाई तो पूरो हो गयी है लेकिन अभी किसी काम मे नही लगा हू। अब मैं कोई दुकान करना चाहता हू, आप बताये कि किस चीज की दुकान क\ ?

उसके पूछने पर गुरुदेव ने सहज यू ही कह दिया कि बिजली के सामान की दुकान करो। वह युवक आपकी बात मान गया और कुछ दिनो मे बिजली के सामान बेचने की एक दुकान खोल लिया।

कुछ महीने बाद अपने पिता के साथ वह युवक फिर गुरुदेव जी के पास आया। आपने उन दोनो का कुशल-समाचार पूछा और पूछा कि बेटा, तुम्हारी दुकान की क्या स्थिति है? उन्होने कहा—साहेब, ठीक है, काम चलता है, लेकिन कोई ज्यादा फायदा नही होता है।

गुरुदेव—कोई बात नही, अच्छा सामान रखो, थोड़ा मुनाफा लेकर उचित रेट पर बेचो। पूरा समय दुकान पर बैठो और ग्राहको से मीठा व्यवहार रखो, धीरे-धीरे और लाभ होगा।

उस युवक ने कहा—साहेब, हमारी दुकान के सामने ही बिजली की एक दुकान और है जो मेरे मित्र की है। उसकी दुकान खूब चलती है और कमाई भी अच्छी होती है। वह मुझसे कहता है कि यार, आज ईमानदारी का जमाना नही है। अगर पैसा कमाना है तो दो नम्बर का काम करना ही पड़ेगा। देखो, मेरी दुकान खूब चलती है। मैं दस रुपये का लोकल सामान लाता हू जो असली-जैसा दिखता है और उसे पचास रुपये मे बेच लेता हू। इससे कमाई अच्छी हो जाती है। तुम भी ऐसे करो। बताइये मैं क्या क\ ?

गुरुदेव—बेटा, तुम उसकी बात बिलकुल मत मानो। तुम अच्छा सामान रखो और उसमे थोड़ा मार्जिन लेकर बेचो। नकली सामान देकर असली की कीमत लेना तो घोर अनर्थ है। इस प्रकार ग्राहक कब तक धोखा खायेगे? वह युवक धोखे मे है। उसे पछताना पड़ेगा। तुम ऐसा कभी मत करना। तुम ईमानदारी से करोगे तो तुम्हारे ग्राहक बढ़ेगे और तुम्हारा व्यापार चमक जायेगा।

एक वर्ष बाद वे पिता-पुत्र पुनः आये। गुरुदेव से मिले, आपने कुशल पूछा। उसने कहा—साहेब, उस लड़के की दुकान बैठ गयी है और उसके ग्राहको की सख्या बिलकुल घट गयी है।

गुरुदेव ने पूछा—तुम्हारी दुकान का क्या हाल है?

उसने कहा—मेरी दुकान की स्थिति अच्छी है। मेरे ग्राहक भी बढ़ गये हैं और आमदनी भी कामभर की होने लगी है। अब मैं अपने काम से सतुष्ट हू।

आपका मार्गदर्शन न होता और मेरे ऊपर आपकी कृपा न होती तो अब तक मैं भी भटक गया होता।

19.

मास-मास मे भी लोग अतर मानते है!

एक बार गुरुदेव बिहार मे थे। एक कार्यक्रम मे जाने के लिए भागलपुर के पास एक छोटे स्टेशन पर आप सत समाज सहित गाड़ी की प्रतीक्षा मे बैठे थे। गुरुदेव के पास एक मुसलिम बधु आ गये। वे अध्यापन कार्य करते थे। उनकी बातो से पता चला कि वे अपने को मानते थे कि मैं अपने वाक्यजाल से किसी को भी परास्त कर सकता हू।

गुरुदेव को वे देखे तो समझ गये ये साधु हैं और हिन्दू होगे। इनसे बात करना अच्छा रहेगा। वे आये और पास मे बैठकर बाते करने लगे। उन्होने कहा—महाराज, लोग मास खाते हैं तो कुछ लोग बुरा मानते हैं। वे कहते हैं मास नही खाना चाहिए। लेकिन वे लोग स्वय साग-सब्जी खाते हैं, अन्न खाते हैं तो उनमे भी तो जीव होते हैं।

उन मुसलिम सज्जन से गुरुदेव ने कहा—भैया, यह दुनिया ऐसी ही है। यहा अनेक ढग के लोग हैं, आप क्या करेगे? यहा एक से एक भोले लोग हैं। शाकाहार-मासाहार का भेद पूरी दुनिया जानती है। जहा घोर मासाहार है वहा भी लोग समझते हैं कि यह शाकाहार है और यह मासाहार। ऐसे भी भोले लोग हैं जो बकरा तो खायेगे सुअर नही खायेगे। एक जानवर का मास खायगे और दूसरे का मास नही खायेगे जबकि दोनो मास है। अब आप क्या करेगे?

गुरुदेव का तर्कपूर्ण और व्यग्यात्मक जबाब सुनकर वे लज्जित हो गये। उन्होने कहा—हा-हा महाराज, आप ठीक कहते हैं। इस प्रकार कुछ देर बाते होती रही।

गुरुदेव ने पुनः कहा—अब देखो, हिन्दू लोग राम-कृष्ण को अवतार माने बैठे हैं। ये लोग कहते हैं कि भगवान अवतार लेता है।

मुसलिम सज्जन ने कहा—हा महाराज, यह तो बिलकुल गलत है। भला ईश्वर कभी देह धरकर आयेगा।

गुरुदेव—अब दूसरी तरफ देखो तो कुछ लोग मानते हैं कि ईश्वर पैगम्बर भेजता है। कहा ईश्वर बैठा है जो पैगम्बर भेजता है? यह सब चालाकी है प्रचार

करने की। गुरुदेव की इतनी बात सुनकर उनका चेहरा उतर गया। वे समझ गये कि महाराज जी के पास मेरी दाल नही गलेगी। चुपचाप उठे और वापस चले गये।

20.
पिता अपने पुत्र से जाति पूछे!

दिसम्बर, 1988 की बात है। प्रयाग कुम्भ मेले की तैयारी चल रही थी। गुरुदेव कबीर मदिर इलाहाबाद मे विराजमान थे। एक साधक आपके दर्शनार्थ आया। आपके विचार, प्यार और आपकी रहनी से अत्यन्त प्रभावित हुआ। उसका मन हुआ कि मैं गुरुदेव के पास रहकर अपनी कल्याण साधना करू तो मेरा सौभाग्य होगा। ऐसा निश्चय कर वह गुरुदेव के पास गया और अपना मतव्य गुरुदेव से कहा कि आपकी शरण मे मैं रहना चाहता हू लेकिन मेरी जाति.......। वह इतना ही कह सका था कि गुरुदेव ने उसे बोलने से रोक दिया। आपने कहा—तुम मुझे क्या मानते हो?

साधक ने कहा—आपको मैं अपना गुरुदेव मानता हू।

गुरुदेव—जब मुझे गुरु मानते हो तो मैं और तुम गुरु-शिष्य हो गये। गुरु और शिष्य पिता और पुत्र के समान होते हैं। अब पिता अपने पुत्र से जाति पूछे कि बेटा, तुम्हारी जाति क्या है? तो ऐसा पिता डूबा है, मूर्ख है। वह साधक ऐसी बात सुनकर गद्‌गद हो गया।

गुरुदेव—तुम्हारा साधना का लक्ष्य है और मेरे पास रहना चाहते हो तो पूरा-पूरा सत्कार है। मनुष्य केवल मनुष्य है, जाति पूछकर उसका मूल्याकन करना, उसकी पहचान करना हद दर्जे की बेवकूफी है। जिस प्रकार अन्य बच्चे मेरे पास रहते हैं उसी प्रकार तुम भी रह सकते हो। तुम मेरे प्यारे लाल हो।

गुरुदेव के ऐसे वचन सुनकर साधक का हृदय भावविभोर हो गया।

21.
मनुष्य है तो ईश्वर है

सन् 1988 की बात है। इलाहाबाद मे एक ईसाई मिशनरी ने दो दिन का कार्यक्रम करवाया। यह कार्यक्रम कोई पब्लिक कार्यक्रम नही था बल्कि यह कुछ विद्वानो का कार्यक्रम था। कार्यक्रम के आयोजक फादर धीरानन्द भट्ट थे।

भट्ट जी न गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी को भी एक प्रवक्ता के रूप मे निमत्रित किया था।

प्रसिद्ध आर्यसमाजी वेद-विद्वान प0 गगा प्रसाद उपाध्याय जी के सुपुत्र डॉ0 सत्यप्रकाश जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे और अब सन्यासी हैं, सभा का सचालन कर रहे थे। वे सबको पाच-पाच मिनट बोलने के लिए समय दे रहे थे।

एक भद्र वृद्ध पुरुष को समय मिला तो वे बोलना शुरू किये—सज्जनो! ईश्वर है तो धर्म है। ईश्वर ही ससार को चला रहा है। उसकी कृपा के बिना यहा कुछ नही हो सकता, मनुष्य तो ईश्वर का बन्दा है।

उनके बोलने के तुरन्त बाद गुरुदेव जी को समय दिया गया। गुरुदेव जी ने कहा—सज्जनो! ईश्वर कही होगा तो वह अपना धर्म जानता होगा। मनुष्य है तो धर्म है। ईश्वर बेचारा भले जगत बनाया हो लेकिन वह उसे चला नही पा रहा है। आतकवादी आते हैं और बदूक से धड़ाधड़ दर्जनो को भूनकर चले जाते हैं। और ईश्वर बेचारा टकर-टकर ताकता रह जाता है। इसलिए मनुष्य स्वय अपने कर्मों को सुधारे तभी वह सुखी हो सकता है।

गुरुदेव का इतना कहना हुआ कि सभी लोग ठहाका मारकर हस दिये। जिसमे मुल्ला और पादरी भी थे। गुरुदेव जी के पूर्व जो प्रवक्ता बोले थे "ईश्वर है तो धर्म है" वे तो खूब हसे। सचालक महोदय बेचारे चुपचाप बैठे रह गये। प्रसिद्ध विद्वान डा0 रघुवश जो कम्युनिस्ट विचार के थे, वे पहले बोल चुके थे। उन्हाने आपसे कहा—आप तो बेलाग सत्य कह दिये। मैं ऐसा कह नही पाया। गुरुदेव जी ने कहा—आपको कोई भय रहा होगा।

गुरुदेव जी के बोलने के साथ ही उस दिन की वह सभा समाप्त हो गयी।

22.

आश्रम मे गाय रखना ठीक नही

सितम्बर, 1988 की बात है। गुरुदेव उन दिनो प्रीतमनगर कबीर मदिर मे रह रहे थे। आपके पास सुलेम सराय से एक वृद्धा माता समय-समय से सत्सग श्रवण करने आश्रम आया करती थी। उनका नाम था भक्तिमती मीरा देवी।

एक दिन मीरा देवी गुरुदेव के पास अलग से मिलने आयी। उन्होने निवेदन किया कि गुरुदेव, कल हमारे घर पर आप दर्शन देने की कृपा करे। आपने उन्हे

समझाया कि तुम आ गयी, मिल ली, बस, हो गया। घर पर बुलाने का चक्कर छोड़ो। लेकिन वे मानी नही। अतत: गुरुदेव ने उनके घर जाने के लिए स्वीकार लिया।

दूसरे दिन एक रिक्शा पर बैठकर आप और साथ मे ब्र0 भूषण जी गये। मीरा के घर पर पहचते ही उन्होने गुरुदेव जी का स्वागत किया। इसके बाद आपने उनको कुछ उपदेश सुनाया। चलते वक्त मीरा ने गुरुदेव से कहा—साहेब, यह जो सामने बड़ी गाय और बछड़ा बधे हैं। इन्हे आप ले जाये। आश्रम मे गाय रहेगी तो सतो को दूध पीने के लिए अच्छा रहेगा।

गुरुदेव ने कहा—सतो को दूध पीने की कोई जरूरत नही है। जिनको जरूरत पड़ती है उनको दूध मिल जाता है। आश्रम मे गाय पालने का झमेला हम नही रखेगे।

मीरा ने कहा—साहेब, कोई झमेला नही रहेगा। कबीर नगर मे गाय रहेगी। वहा चारा की व्यवस्था स्वाभाविक हो जायेगी।

मीरा के बहुत आग्रह करने पर गुरुदेव ने कहा—देखो, इस गाय को तुम मुझे देना चाहती हो न, तो मेरी आज्ञा है कि इसे मेरी ही मानकर इसकी तुम सेवा करो। आश्रम मे गाय रखना ठीक नही है। गुरुदेव जी ने कुछ और समझाया। आपके समझाने पर मीरा ने कहा—ठीक है साहेब, जैसी आपकी आज्ञा।

23.

हम घल बना रहे है!

सन् 1989 प्रयाग का कुभ मेला चल रहा था। गुरुदव अपने निवास के घेरे मे बैठे धूप ले रहे थे। सामने दरी बिछी थी, भक्त लोग आते और दर्शन-बदगी करके दरी पर बैठ जाते। जानसेनगज, इलाहाबाद से गुरुदव के एक प्रेमी भक्त चावला जी अपने परिवार सहित आये। सब लोग गुरुदव के समक्ष पुष्पादि चढ़ाकर सामने धूप मे दरी पर बैठ गये। चावला जी का दो-तीन वर्षीय नाती भी साथ मे था। वह वही रेत मे खेलने लगा। बालू बटोरकर हाथो से उसे घेरकर कुछ आकार बना रहा था।

गुरुदव जी ने चावला जी से कहा—दखो, यह बच्चा कोई काम मे लगा है। आपने बच्चे से पूछा—क्या कर रहे हो बेटा?

बच्चा—हम घल बना रहे हैं।

गुरुदव—तुम्हारा यह कैसा घल है?

बच्चा—ये मेरा कमरा है, ये पापा का, ये दादो का...

गुरुदव—लेकिन यहा तो गगा मे पानी आयेगा तो तुम्हारा घल बह जायेगा।

बच्चा—नही बहेगा, हमारा घल मजबूत है।

गुरुदव ने अन्य लोगो की तरफ दखते हुए कहा—जैसे यह बच्चा इस रेत मे अपना घर बना रहा है और मानता है कि यह मेरा मजबूत घर है, लेकिन थोड़ी ही दर मे सब कुछ यहा से छोड़कर चल दगा, घर की याद भी नही करेगा। इसी प्रकार यह राही जीव भी जहा जन्मता है, अपना घर बनाता है, सारा ऐश्वर्य इकट्ठा करता है, लेकिन काल-बली का फेरा आते ही सबको छोड़कर चल दता है। यहा का सब अपना माना हुआ क्षण मे छूट जाता है। इसलिए घर बनाये, चीजे इकट्ठी करे, लेकिन यह भी याद रखे कि यह सब बच्चो का खेल है। एक दिन सब छोड़कर चल दना है। बोधपूर्वक ऐसा निश्चय है तो यह समझदारी ह, अन्यथा बच्चे और बूढ़ो मे क्या अन्तर।

24.

विवेकपूर्वक चरण स्पर्श

भक्तिभावना एव श्रद्धा भाव से बड़ो का, माता-पिता का और सत-गुरुजनो का चरण-स्पर्श करना तो अच्छा है, लेकिन गुरुदेव जी का सदेश यहा पर विशेष रूप से साधक-साधिकाओ के लिए है। पहले कबीरपथ मे विरक्त साधिकाए बहुत कम होती थी। जो होती भी थी वे अपने नैहर या ससुराल मे रहकर साधना करती थी। लेकिन इधर करीब दो दशको से कबीरपथ मे ब्रह्मचारिणी साधिकाओ की सख्या काफी बढ़ गयी है। उनका भी एक बृहत् समाज हो गया है। जहा समाज या समूह होता है वहा बिना नियम के विकृतिया भी बहुत आने लगती हैं।

यह स्वाभाविक है कि साधिकाए भी गुरुदेव का चरण-स्पर्श करना अवश्य चाहेगी। गुरुदेव के बाद अन्य सतो का भी चरण स्पर्श करना चाहेगी, लेकिन इसी मे ढीले मन के साधक-साधिकाओ मे दोष आ सकता है। जिससे समाज मे गदगी फैलेगी। इसके लिए गुरुदेव ने यह नियम दिया है कि गृहस्थ नारिया अपने पति के अलावा पर-पुरुष का स्पर्श न करे। विरक्त साधिकाए पुरुष मात्र का स्पर्श न करे और सत-गुरुजनो का भी चरण स्पर्श न करे क्योकि वे भी हैं तो पर-पुरुष ही। इसी प्रकार गृहस्थ पुरुष अपनी पत्नी के अलावा पर-स्त्री का

स्पर्श न करे। विरक्त साधक-पुरुष, स्त्री मात्र का स्पर्श न करे। सेवा-भक्ति दूर से करे। हा, इसमे पुरुष-पुरुष सत-गुरुजनो का चरण-स्पर्श, चरण धोना आदि सेवा कर सकते हैं। और नारिया नारी साधिकाओ का चरण स्पर्शादि कर सकती हैं।

गुरुदेव के इस नियम से पहले तो लोगो की भावनाओ मे ठेस लगी लेकिन समझने पर अच्छा लगा कि गुरुदेव की यह दूरदृष्टि साधक-साधिकाओ के लिए कल्याणकारी है। आखिर चरण-स्पर्श आदि के फल मे हम यही तो चाहते हैं कि हमारा मन शुद्ध हो और शाति की प्राप्ति हो। तो यह काम मन की कोमलता, त्यागभाव, कर्म-सुधार और निष्काम दशा से होगा। केवल चरण धोने और प्रसाद खाने से नही।

इस नियम की घोषणा गुरुदेव ने पहली बार 23 फरवरी, 2008 को नवापारा कबीर आश्रम मे विरक्त साधक-साधिकाओ के बीच मे किया। इसके बाद तो बीच-बीच मे आप आम सभाओ मे भी करते रहते थे।

25.

मैं भी लड़ने चलूगा!

गुरुदेव जब भी कोलकाता प्रवास मे रहते प्रति रविवार को धर्मतल्ला मैदान मे प्रवचन के लिए जाते। 1990 ई0 के आस-पास की घटना है। एक रविवार को आपके प्रवचन का विषय था 'अहिसा'। आप कोई भी विषय उठाते हैं तो उसके सारे पहलुओ पर सुन्दर विवेचन करते हैं।

धर्मतल्ला मैदान मे ही 'फोर्ट विलियम' है जहा पर सेना की छावनी है। कुछ सैनिक भी गुरुदेव का प्रवचन उस दिन सुन रहे थे। प्रवचन के बाद जब आप कुर्सी लेकर अलग बैठे तब सेना के जवान आपके पास आकर खड़े हो गये।

एक ने कहा—महाराज, आज तो आप अहिसा पर खूब बोले।

गुरुदेव मुस्कुराते हुए सुनते रहे।

दूसरे ने कहा—महाराज, आपके इस अहिसा के विचार को मान लिया जाय तो चीन और पाकिस्तान एक ही दिन मे हमे दबोच लेगे।

गुरुदेव जी ने कहा—जब ऐसा होगा तो मुझे भी एक बन्दूक दीजिएगा, मैं भी उन हमलावरो से लड़ने चलूगा। देश की रक्षा करना हम सब देशवासियो का धर्म है। लेकिन अहिसा न मानोगे तो साथ रहते हुए एक दूसरे को ही मार डालोगे। बार्डर पर गोली चलाने तथा पाकिस्तान और चीन से हमले का अवसर

तो कभी आता होगा। कितने सैनिक रिटायर्ड हो जाते हैं लेकिन उनको किसी पर गोली चलाने का अवसर ही जीवन मे नही आता। किंतु अहिसा की तो पदे-पदे जरूरत है। आपकी पत्नी ने कुछ कटु कह दिया तो क्या उसका आप गोली मार देगे? पुत्र से कुछ भूल हो जाय तो क्या पिता उस पर गोली चला दे, आपसे कुछ भूल हो जाय तो क्या आपके कमान्डर आपको गोली मार दे? अहिसा का पालन तो सब कर रहे हैं, बस इसमे और मिठास की जरूरत है। मन से दूसरे के अहित की भावना को बिलकुल निकाल देना पूर्ण अहिसा है।

26.

क्या हम गुलाम बन जाय?

यह घटना सन् 1990 की होगी। गुरुदेव जी इलाहाबाद के प्रीतमनगर आश्रम मे विराजमान थे। शाम के लगभग चार बज रहे होगे।

एक महिला गुरुदेव जी के दर्शनार्थ आयी और गुरुदेव को प्रणाम करके सामने बिछे हुए गद्दे पर बैठ गयी।

उसने कहा—महाराज, मेरे पति फौज मे थे। मैं उनसे बहुत परेशान हू। वे बहुत गुस्सा करते हैं।

गुरुदेव—जिस बात को लेकर उन्हे गुस्सा आता है उसे समझकर उनके अनुसार काम कर दो तो उन्हे सतोष हो जायेगा और फिर गुस्सा नही करेगे।

महिला—वाह साहेब! मैं उन्ही के अनुसार करती रहू, गुलाम बन जाऊ।

गुरुदेव—यह गुलामी नही है। यह तो व्यवहार चलाने का एक तरीका है। घर, परिवार और समाज मे सबको एक दूसरे का गुलाम होना पड़ता है। अब आप कहे हम स्वतत्र हैं, सड़क पर कभी बाये चलेगे, कभी दाये चलेगे तो क्या होगा? यही होगा कि कही रगड़ दिये जायेगे। यहा जो सबकी सह-सहकर व्यवहार करता है वह सुख से जीता है। पिता की पुत्र को सहना पड़ता है तो पुत्र की पिता को सहना पड़ता है। गुरु की शिष्य को तो सहना ही पड़ता है गुरु को भी शिष्य की सहना पड़ता है। इसी प्रकार पति की पत्नी और पत्नी की पति सहकर व्यवहार करेगे तो सुखी रहेगे। गुरुदेव जब सरल ढग से कुछ समझाये तो उसे सतोष हुआ।

कुछ दिनो के बाद वह देवी अपने पति को साथ लेकर गुरुदेव के पास आयी।

गुरुदेव—(सज्जन की ओर देख करके) आपकी पत्नी बहुत समझदार हैं। यह आपकी प्रशसा कर रही थी।

पति—(हसते हुए) प्रशसा तो नही करती रही होगी महाराज, यह तो मेरी निन्दा ही करती रही होगी। लेकिन ये जब से आपके पास आने लगी हैं इनके व्यवहार मे बहुत सुधार हो गया है। मुझे बहुत राहत मिली है।

गुरुदेव के विचारो से उस देवी के स्वभाव मे सहनशीलता, विनम्रता आने लगी और धीरे-धीरे उनका जीवन ही बदल गया। अब पति-पत्नी दोनो के व्यावहारिक जीवन मे खुशियो के फूल खिलने लगे।

27.
उपनिषद्-सौरभ

6 अगस्त, 2010 की बात है। गुरुदव नागपुर से लौटकर रायपुर मे गुजराती भक्तो के आतिथ्य मे थे। वही से शाम को आप अपने सभी सतो के साथ विवेकानन्द आश्रम मे श्री सतोष जी महाराज से मिलने आये। यहा के मुख्य सत स्वामी आत्मानन्द जी गुरुदव जी के मित्र थे। स्वामी आत्मानन्द जी से गुरुदव की काशी मे पहली मुलाकात हुई, इसके बाद फिर समय-समय से मिलते रहे।

गुरुदव का कबीर दर्शन ग्रन्थ पढ़कर वे बहुत खुश थे, उन्होने आपको पत्र लिखा था। ''कबीर दर्शन आपका मानक ग्रन्थ बन गया है जो लोगो के लिए अत्यन्त कल्याणकारी है।'' सन् 1989 मे उनका सड़क दर्घटना मे निधन हो गया था। इसके बाद उनके उत्तराधिकारी श्री सतोष जी महाराज हुए, जो उनके अनुज थे।

श्री सतोष जी महाराज साधु स्वभाव के विनम्र, सरल, वि॥॥न एव अच्छे सत हैं। काफी दर तक बाते होती रही, वे गुरुदव की पुस्तक उपनिषद् सौरभ पढ़कर गदगद थे। उन्होने कहा—लोग उपनिषदो का भाष्य करते हैं तो वह मूल से भी अधिक गूढ़ हो जाता है। लेकिन आपकी 'उपनिषद् सौरभ' पढ़कर मन को पूरा सतोष हो जाता है। यह उपनिषद् सौरभ मेरा प्रिय शास्त्र है। मैं इसी को अनेक बार पढ़ता रहता हू। ऐसा कहकर वे अन्दर चले गये और उस पुस्तक को उठा लाये। उन्होने कहा—यह मेरी उपनिषद् सौरभ फट गयी है, आप कृपया इसकी दसरी प्रति भेजने की कृपा करे।

गुरुदव ने कहा—ठीक है महाराज, इसकी दो-तीन प्रतिया भेज दो जायेगी। नवापारा कबीर आश्रम मे आकर गुरुदव उपनिषद् सौरभ की तीन प्रतिया तथा अन्य नयी कृतिया भी उनके पास भेज दिये।

28.

क्या आपको श्रद्धा नही है?

एक बार गुरुदेव मध्यप्रदेश के मडला शहर मे थे। गुरुदेव का निवास मडला मे नर्मदा नदी के किनारे था। सामने ही नदी बह रही थी। एक दिन आप दोपहर के बाद नल पर स्नान कर रहे थे। गाव के एक सज्जन आ गये। उन्होने कहा—महाराज, सामने पवित्र-पतित पावनी नर्मदा बह रही है। उसको छोड़कर आप नल पर स्नान कर रहे हैं। जिस नर्मदा के दर्शन मात्र से मोक्ष होता है उसके पास आकर भी आप अवसर खो रहे हैं। नर्मदा मे स्नान करने का अवसर बार-बार नही आता।

गुरुदेव ने कहा—वर्षा होने से नदी का पानी गदा हो गया है।

आगतुक सज्जन ने कहा—महाराज जी, क्या आपको नर्मदा मे श्रद्धा नही है?

गुरुदेव ने कहा—क्या श्रद्धा का अर्थ यही होता है कि बिना विचार किये सब कुछ करता रहे। श्रद्धा शब्द मे दो पद हैं—"श्रत्+धा।" श्रत् का अर्थ है सत्य और धा का अर्थ है धारण करना। मन की वह शक्ति जो सत्य को धारण करे उसे श्रद्धा कहते हैं। व्यक्ति स्वय सत्य है। विवेक और विचार के आधार पर जो खरा उतरे उसको स्वीकारना श्रद्धा है। अधविश्वास श्रद्धा नही, अधश्रद्धा है।

29.

जीने की भी इच्छा नही होनी चाहिए

इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे मनोविज्ञान के एक प्रोफेसर थे जिनका नाम था इन्द्रपाल सचदेव। आपका इगलिश भाषा पर अच्छा अधिकार था। आपने जीवनभर मनोविज्ञान पढ़ाया और मनोविज्ञान पर ही आपने पुस्तक भी लिखी है। जिसमे एक पुस्तक है—'काम्पलेक्स फ्री पर्सनालिटी' (Complex Free Personality)।

सचदेव जी जब इलाहाबाद मे रहते थे तो समय-समय से गुरुदेव से मिलने आते रहते थे। एक बार उन्होने कहा—मेरा तो अब सब काम पूरा हो चुका है लेकिन कल्याण (मोक्ष) कार्य मे थोड़ी कसर है। इसलिए चाहता हू कि थोड़े दिन और शरीर रह जाये तो यह काम भी पूरा कर लू।

गुरुदेव ने कहा—जीने की इच्छा बिलकुल छोड़ दे, बस कल्याण का काम पूरा हो जायेगा। देखने, सुनने, खाने, भोगने, मिलने, पाने, करने, जानने आदि की इच्छा होने से जीने की इच्छा होती है। जब अन्य कोई इच्छा नही है, तो जीने की इच्छा छोड़ दीजिए। बस, तत्काल मोक्ष ही है।

सचदेव जी—(गभीर होकर) अच्छा, ऐसा तो मैंने कभी सोचा भी नही था, आप ठीक कहते हैं। सचदेव जी विचारमग्न हो गये। उन्होने कहा—आपने तो मेरे सोचने का ढग ही बदल दिया।

30.

शब्दो का प्रभाव

सन् 1991-92 की बात होगी। गुरुदेव जी कबीर मदिर प्रीतमनगर मे विराजमान थे। आश्रम मे प्रति रविवार को साय छह बजे से आठ बजे तक सत्सग कार्यक्रम चला करता है। इस सभा मे प्रीतमनगर कालोनी के ही एक रिटायर्ड अफसर समय-समय से आते थे। इसके अतिरिक्त भी वे गुरुदेव जी से मिलने के लिए आ जाया करते थे।

एक दिन वे गुरुदेव जी से मिलने आये और कुछ सामान्य बातो के बाद अपने मन का दर्द सुनाने लगे। उन्होने कहा—साहेब जी, मैं बहुत परेशान हू। हम पति-पत्नी दोनो को हमारे बहू-बेटे बिलकुल नही चाहते हैं। थोड़ी-थोड़ी बात को लेकर नाको दम कर देते हैं। मेरी पत्नी तो सहकर उसी मे घुसकर बिता लेती है लेकिन मैं न उनमे सेट हो पाता हू और न अलग ही हो पाता हू। क्या करू, कुछ समझ मे नही आता। उनको कुछ समझाने का प्रयास करता हू तो मामला और उलझता जाता है।

गुरुदेव ने उनकी सारी बाते धैर्य से सुनी, फिर कुछ विचारकर कहा—मामला तो जटिल है फिर भी एक प्रयोग करके देखो। लड़का जब घर मे न हो तब बहू से बड़े प्रेम और शालीनता से कहना कि बेटी, हम लोग यहा रहते हैं तो तुम लोगो को दिक्कत होती है, इसलिए अब मैं अपनी अलग व्यवस्था कर रहा हू। थोड़े दिनो मे हो जायेगा और हम दोनो अलग चले जायेगे। फिर तुम लोग आराम से रहना। लेकिन यह ध्यान रखना, केवल इतना कहना, कही जाने की चेष्टा नही करना और न कोई गलत प्रतिक्रिया ही उनके साथ करना।

वे सज्जन गुरुदेव की बातो को बड़े ध्यान से सुने और प्रणाम करके चले गये। घर आने के कुछ ही दिन बाद यह अवसर आ गया। लड़का तो आफिस

चला गया और बहू घर पर थी। वे दोनो वृद्ध पति-पत्नी बैठे हुए थे। उन्होने गुरुदेव की बतायी हुई बात को ज्यो का त्यो बड़े प्रेम से बहुरानी से कह दिया। निशाना बिलकुल मर्मस्थल पर ही लगा। श्वसुर की बात सुनते ही बहू स्तब्ध रह गयी। उसने सोचा कि यह क्या होने जा रहा है। उसका पति शाम को घर आया। निश्चित है कि बहू ने उससे यह बात बतायी होगी। पिता की कही बात पत्नी से सुनते ही डाक्टर साहब के पैरो तले की धरती खिसक गयी। उन्होने सोचा होगा कि पिता जी का इस घर से अलग अपनी व्यवस्था करना तो हमारे लिए घोर लज्जाजनक है। उन्ही का यह घर, धन, सब कुछ और वे अलग जाकर कही रहे, लोग हमे क्या कहेगे? फिर तो माता-पिता के प्रति उनका व्यवहार कुछ और ही हो गया।

गुरुदेव तो कुछ दिनो के बाद बाहर कार्यक्रमो मे चले गये। जब कुछ महीने बाद आप आश्रम मे आये तो वे सज्जन आपसे मिलने आये। उन्होने कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा—साहेब जी, आपके उन शब्दो ने जो चमत्कार किया उसका मैं आपके सामने कैसे वर्णन करू। उन शब्दो ने मेरे बहू-बेटे का जीवन ही बदल दिया और अब मैं बड़े आराम और शाति से घर मे रहता हू।

गुरुदेव ने पुनः उनको समझाते हुए कहा—आगे भी आप सावधान रहियेगा। आपके द्वारा ऐसा कोई भी व्यवहार नही होना चाहिए जिससे बहू-बेटे को खटक हो और उनके अह मे ठेस लगे। कुछ ऊच-नीच आ जाये तो उसे सहकर सतोषपूर्वक जीवन जीने की चेष्टा करना, फिर तो सब समय सुखी रहोगे।

31.
यहा कोई बड़ा नही है

एक बार कबीर पारख सस्थान का वार्षिक अधिवेशन चल रहा था। प्रथम दिन के प्रथम सत्र मे गुरुदेव प्रवचन करके जैसे ही मच से उठकर चलने को तैयार हुए कुछ लोग आपसे मिलने के लिए आ गये, उसी समय दो पत्रकार आपका साक्षात्कार लेने आ गये। उन्होने कबीर साहेब के विषय मे कुछ पूछने के बाद आपसे पूछा—अच्छा महाराज जी, यहा सबसे मुख्य सत कौन है?

गुरुदेव ने कहा—यहा सबसे मुख्य कोई नही है। सत रहते हैं। सब आपस मे मिलजुलकर आश्रम का काम करते हैं और अपनी साधना करते हैं। गुरुदेव की

इस प्रकार निरपेक्षतापूर्ण बाते सुनकर वे लोग चल दिये। रास्ते मे कुछ और सत मिले उनसे उन्होने बात किया। वे सत किसी दूसरे सत की महिमा बताते हुए कहे—ये यहा पर एक अच्छे प्रवक्ता हैं। उनकी बात सुनकर पत्रकार ने उनका चित्र लिया। अधिवेशन की रिपोर्ट देते हुए उन्होने उन सत का नाम और चित्र छापा।

दूसरे दिन जब अखबार आया तो उसे पढ़कर कुछ भक्तो को नाखुशी हुई। क्योकि वे पता पा गये थे कि गुरुदेव ने पत्रकार को ऐसा कह दिया था। वे भक्त आकर गुरुदेव से कहने लगे कि साहेब, आप पत्रकार से ऐसा क्यो कह दिये थे? वास्तविकता आपने क्यो नही बता दी? गुरुदेव ने कहा—भाई, नाराज मत होओ, मैंने तो ठीक ही कहा कि सब सत यहा रहते हैं। सब अपनी-अपनी योग्यता अनुसार सेवा कार्य करते हैं। मैं भी सबके साथ हू। तुम लोगो को मेरे प्रति जो भाव रखना हो रखो, लेकिन मैं अपने नाम-रूप को सबसे आगे रखू, यह अच्छा नही है।

32.
ब्राह्मण है तो तपस्या करे

इलाहाबाद कबीर आश्रम मे एक वृद्ध सज्जन गुरुदव से मिलने आये। प्रणाम-आशीर्वाद के बाद अपना परिचय दते हुए उन्होने कहा—महाराज, मैं जीवन भर एक छोटी नौकरी करता था, अब रिटायर्ड हो गया हू। मात्र छह सौ रुपये (600) पेशन मिलती है। इतने मे जीवन गुजर करना कठिन होता है।

गु. दव ने कहा—घर पर रहते ही हो, जीविका के लिए छोटी-मोटी दकान कर लो।

उन्होने कहा—महाराज, म ब्राह्मण आदमी हू, दकान क गा तो लोग आयेगे और समय से उलटा-पलटा कहेगे, यह तो अच्छा नही लगेगा।

गुरुदव ने कहा—ब्राह्मण हो तो तपस्या करो। घर मे रहो, वही रहते हुए जो रूखा-सूखा मिले खाओ-पियो, उपवास रहना पड़े तो उपवास रहो। उसी मे प्रसन्न रहो और भजन करो, ब्राह्मण को तपस्वी होना ही चाहिए।

उन्होने कहा—महाराज, यह तो और कठिन बात आपने बता दो।

गुरुदव—जब यह कठिन है तो ब्राह्मण बनने का जोखिम न उठाओ। अगर सुखपूर्वक रहना है तो दकान करो, मेहनत करो, कोई उलटा-पलटा कहे तो उसको सहो।

गुरुदव के कहने पर उन्हे साहस आया और उन्होने दकान की। थोड़े दिनो मे उनकी दकान अच्छी चली और उनके घर मे काफी सम्पन्नता आ गयी।

33.

मनुष्य केवल मनुष्य है

यह घटना मई, 1992 की होगी। गुरुदेव का कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के एक गाव मे था।

वहा के जिस भक्त ने गुरुदेव को बुलाया था वह तथाकथित निम्न जाति का था। किन्तु गुरुदेव को इस जाति-पाति, छुआछूत से क्या मतलब! आप तो सत्य-अहिसा एव पवित्रता के पथ पर चलनेवाले शुद्ध मानवता के पुजारी हैं।

उस गाव म कुछ ब्राह्मण कहलानेवाले लोग थे। उन्होने कहा—महाराज जी, आप ऐसे व्यक्ति के घर पर ठहरे हैं कि आपके सत्सग मे हम लोग आये तो कैसे आये?

गुरुदेव ने कहा—आप लोग आये अथवा न आये, इसकी मुझे कोई चिन्ता नही है। जिस भक्त ने मुझे बुलाया है, जो मुझे चाहता है आखिर उसी के घर तो मैं ठह गा। आपके घर म अनेक सुविधाए हैं और आप लोग ब्राह्मण हैं तो आप लोगो के ब्राह्मण होने से इनको छोड़कर मैं आपके घर तो आ नही सकता। क्या फूल कभी सोचता है कि मैं उच्च जाति के खेत मे हू या निम्न जाति के? वस्तुत: मनुष्य केवल मनुष्य है। इसमे ब्राह्मण और शूद्र की दीवार हृदयहीन लोगो ने खड़ी की है। जो मनुष्यता के साथ भयकर अपराध है।

34.

थोड़ा गुड़ और पानी!

नवम्बर, 1993 की बात है। गुरुदेव जी का कार्यक्रम कौशाम्बी जिला के अधावा ग्राम मे था। अधावा जाने के रास्ते मे कबीर आश्रम बैगवा भी पड़ता है। बैगवा आश्रम के सतो ने विचार किया कि गुरुदेव इस तरफ से प्रस्थान करेगे तो हम लोग भी दर्शन-सेवा का लाभ क्यो न ले। इसी विचार से एक सत गुरुदेव के पास कबीर मदिर प्रीतमनगर, इलाहाबाद निवेदन करने के लिए आये। उन्होने कहा—गुरुदेव, अमुक तारीख को आप अधावा के लिए प्रस्थान करेगे, रास्ते मे

हमारी कुटिया है। दो मिनट के लिए हम गरीबो के यहा भी दर्शन देने की कृपा करे।

गुरुदेव जी—तुम गरीब क्यो हो? भोजन-वस्त्र मिलता ही है, जीवन गुजर हो ही रहा है। फिर भी गरीब हो? इतना कहने के पश्चात आपने कहा—ठीक है, अधावा से लौटते समय तुम्हारे यहा आने मे अच्छा रहेगा। थोड़ी देर के लिए आना है, कुछ विशेष तैयारी के चक्कर मे मत पड़ना। एक कटोरी मे थोड़ा-सा गुड़ रख लेना और पानी। बस, इतने मे स्वागत हो जायेगा। गुरुदेव का इतना वचन सुनते ही उन सत की आखो मे श्रद्धा के आसू आ गये।

35.

फकीर कौन?

यह घटना 1993 की है। गुरुदेव जी का कार्यक्रम उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिला के नरोत्तमपुर गाव मे था। तीन दिनो का कार्यक्रम करने के बाद आप समाज सहित दिल्लो के लिए प्रस्थान किये। उन्नाव मे ट्रेन मे बैठते ही कई नवजवान लड़के आकर आपके ही डिब्बे मे बैठ गये। उन सबकी उम्र 25 से 30 वर्ष के बीच की रही होगी। सतो को देखकर वे हुल्लड़बाजी शुरू कर दिये। एक ने कहा—महाराज, साधु की क्या परिभाषा होती है? दूसरे ने कहा—महाराज, टिकट कटाये भी हो कि यू ही आकर गाड़ी मे बैठ गये? गुरुदेव मौन रहे। एक साधु कुछ बोलना चाहे परन्तु उन्हे भी आप शात करा दिये। अन्य सभी सत मौन रहे।

गुरुदेव जी एव सतो की सहनशीलता को देखकर अतत: सभी लड़के बहुत प्रभावित हुए। फिर तो वे बहुत नरम हुए। एक ने कहा—महाराज जी असली सत हैं। एक मुसलिम नवयुवक था। कानपुर स्टेशन नजदीक आ गया तो उसने साथियो को सकेत करते हुए कहा—हम लोगो ने इन सतो से कुछ सीखा? देखो, सभी कितने शात हैं? कुछ भी कहो, शात चुपचाप सब सुन लिये। किसी से कुछ लेना-देना नही। महाराज जी, हमारे इस्लाम मे भी ऐसे फकीर होते हैं जो अल्लाह मे लीन रहते हैं। उनको कुछ भी कहो, इसकी वे परवाह नही करते। उन्हे दुनियादारी से कुछ लेना-देना नही रहता। ऐसे ही लोगो से ख़ुदा प्यार करता है।

36.

त्यागी कैसे?

1992-93 की बात है गुरुदव का कार्यक्रम टाटानगर मे था। सत समाज सहित आपका आसन एक ऐसी जगह मे रखा गया जो आश्रम के समान था। वहा के पुजारी तथा महन्त सभी गृहस्थ थे।

गुरुदव जी एव आपके सतो के बारे मे जब वे महन्त जी जाने कि ये लोग विरक्त, स्त्री त्यागी हैं, तब वे गुरुदव के पास जाकर व्यग्य करते हुए कहते हैं— साहेब कुछ लोग विरक्त हो गये तो बड़े कैसे हो गये। एक नारी को उन्होने त्याग दिया, किन्तु शरीर मे तो हजारो नारिया (नाड़िया) हैं। उनको नही त्याग पायेगे, फिर मात्र एक नारी का त्याग करने से क्या होता है। इसलिए कैसे माना जाये कि वे लोग त्यागी सत हैं?''

गुरुदव जी समझ गये कि ये क्या कहना चाहते हैं। आपने कहा—भैया, हम लोग त्यागी कहा हैं? हजारो नाड़िया शरीर मे हैं और वे सब साथ रहेगी, तो त्यागी कहा हुए? हम लोग कायर-कूचर हैं, त्याग का केवल दिखावा है हमारा।

गुरुदव की विनम्रता पूर्ण इतनी बात सुनकर वे शरमा गये।

37.

यूरोपीय बहने और गुरुदेव जी

जोधपुर नगर (राजस्थान) से करीब आठ-दस कि0मी0 दूर पर सालावास नाम का एक गाव है। वहा 31 दिसम्बर, 1994 से 4 जनवरी, 1995 तक गुरुदेव जी का पाच दिनो का कार्यक्रम था। उन दिनो सालावास मे एक उद्योग धन्धा चल रहा था जिसका नाम था—'पारखी दरी उद्योग'। उस मिल मे ही गुरुदेव जी एव सतो के निवास की व्यवस्था की गयी थी। एक दिन सुबह कक्ष से बाहर बैठे आप धूप सेवन कर रहे थे।

सालावास मे कई ऐसी चीजे बनती हैं जिन्हे देखने के लिए विदेशी लोग भी जोधपुर से सालावास आते हैं। इसी क्रम मे यूरोप की छह युवतिया जो अट्ठाइस-तीस वर्ष की उम्र मे थी सालावास आयी। उनके साथ दिल्लो तथा जोधपुर के दो दुभाषिये थे। वे सब गुरुदेव जी के पास नमस्कार करके बैठ गये।

उन बहिनो मे से एक ने कहा—हम लोग जहा रहते हैं, जीवन गुजर की चीजो को लेकर किसी को कोई कमी नही है। वहा सबके पास आवश्यकता से

अधिक सब चीज हैं, लेकिन हम सबका मन सब समय खिन्न बना रहता है। हमको यह कभी लगता ही नही है कि हमारा अपना कोई है। किसी से अपनत्व का सम्बन्ध ही नही है, इसलिए चित्त बहुत निराश रहता है। सब समय यही लगता है कि मेरा अपना कुछ खो गया।

गुरुदेव जी ने कहा—बाहर की सम्पन्नता से मन मे शाति आ ही नही सकती। बाहरी धन-दौलत से जीवन गुजर होता है, मन की शाति के लिए तो सदाचार, सयम और स्वरूपज्ञान चाहिए। जहा रह रहे हैं माता-पिता, भाई-भतीजे आदि परिवार के सभी लोगो के साथ प्रेम एव सौहार्द की भावना होनी चाहिए, एक दूसरे के दिल के सुख-दुख को समझने की चेष्टा करनी चाहिए।

जितना हो सके वही काम करना चाहिए जिससे दूसरो का भी दुख दूर हो। अपने पर सयम रखे। मन-इन्द्रियो की जो स्वाभाविक दशा है उसी के अनुसार बहते रहने मे कभी सतोष नही मिल सकता है। इसके लिए जीवन के सारे कर्मों पर सयम चाहिए। उचित देखो, उचित बोलो, उचित खाओ, उचित सुनो, उचित सोचो। इस प्रकार जब अपने आप पर पूरा सयम हो जायेगा तो दूषित विचार स्वयमेव छूट जायेगे। फिर मन मे पवित्र विचारो का जन्म होगा और स्वाभाविक मन मे सतोष होगा। अतिम बात यह समझना चाहिए कि आप यह दिखता हुआ शरीर का आकार मात्र नही हैं। यह तो प्रारब्ध वेग से बना एक आवरण मात्र है, इसके फटने मे देरी नही है। आप तो इससे अलग स्वतत्र, शुद्ध चेतन हैं। आपकी सत्ता इस जड़ शरीर से अलग है जो इस शरीर के जन्म-मृत्यु के बीच तो है ही, इसके जन्म के पहले भी थी और मृत्यु के बाद भी रहेगी। मनुष्य को अपनी अमरता-अखडता का बोध होना चाहिए। इससे वह निर्भय और शातिपूर्ण जीवन जी सकेगा।

गुरुदेव की बाते सुनकर उनको अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई, साथ-साथ आश्चर्य भी हुआ कि ऐसा भी ज्ञान का उपदेश करनेवाले और ऐसा जीवन जीनेवाले भी यहा हैं। उन्होने कहा—हमारे देश मे ऐसा कोई नही है जो इस प्रकार ज्ञानोपदेश लोगो के बीच मे सुना सके। चर्च मे कुछ लोग जाते हैं और वहा पादरी आ जाते हैं, थोड़ी देर प्रार्थना हो जाती है, प्रसाद वितरण हो जाता है। बस इतना ही हमारी धर्म-सस्कृति के सात्विक कर्म हैं। इतने मात्र से जीवन मे क्या बदलाव आयेगा?

अत मे गुरुदेव जी ने उनको 'Who am I'?, 'What is life?' आदि छोटी-छोटी कुछ पुस्तके दी। सबको बहुत अच्छा लगा। चलते-चलते उन्होने अत मे कहा—हमारा भारत आना आज सफल हो गया।

38.

बाह्य मर्यादा की भी आवश्यकता

कबीर मदिर, पोतमनगर इलाहाबाद मे प्रवेश द्वार पर ही आश्रम की नियमावली का एक बोर्ड टगा है। इस बोर्ड मे आश्रम मे रहनेवाले सत-ब्रह्मचारियो और भक्तो के लिए गुरुदेव जी ने तेईस नियम लिखकर दिया है। जिसमे चौथा नियम इस प्रकार है—

''आश्रम मे पुरुषरहित अकेली स्त्री का प्रवेश वर्जित है। बाहर से अतिथि रूप मे आयी हुई स्त्रियो के साथ कोई पुरुष अभिभावक हो। तभी वे कुछ दिनो के लिए रह सकती हैं।''

एक दिन आश्रम मे एक देवी आयी जो पूर्व मे मत्री भी रह चुकी थी और वर्तमान मे वकील हैं। वह तेज स्वभाव की हैं। उन्होने जब आश्रम के इस नियम को पढ़ा कि बिना अभिभावक के अकेली स्त्री आश्रम मे प्रवेश न करे तो वे नाखुश होकर बड़बड़ाते हुए चली गयी। उन्होने कहा—ऐसे आश्रम मे मैं कभी नही आ सकती जहा स्त्रियो को जाना ही पाप समझा जाता है।

गुरुदेव को यह सूचना मिली तो आपने सूचना देनेवाले से कहा कि जाओ और उनको बुला लाओ। वे देवी आयी। गुरुदेव अपने कक्ष म विराजमान थे। सामने गद्दे पर वे बैठी। गुरुदेव ने उनसे कहा—आप यह बताये! यहा इस कक्ष मे हम और आप दोनो बैठे देर तक बाते करते रहे, यद्यपि हमारा और आपका मन पवित्र है लेकिन कोई बाहर से आये और देखे तो वह क्या समझेगा?

थोड़ी देर गुरुदेव के समझाने से उनको एहसास हुआ। उन्होने कहा—हा महाराज, कोई देखेगा तो उसके मन मे सदेह हो सकता है।

गुरुदेव ने कहा—इसीलिए यह नियम है कि बिना किसी अभिभावक के अकेली स्त्री आश्रम मे न आये। उसके साथ मे उसका पति, भाई, बेटा या अन्य कोई पुरुष होना चाहिए। इस प्रकार गुरुदेव ने जब उन्हे कुछ समझाया तो वे सरल हुईं। उन्होने कहा—महाराज, मुझसे भूल हुई। मैं यह बात समझ ही नही पायी।

39.

कण-कण में नहीं, घट-घट में है

गुरुदेव जी का कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के एक बड़े बाजार मे था। वहा पर प्रतिदिन रात्रि मे आपका प्रवचन होता था।

एक दिन आप सद्गुरु कबीर के बीजक के एक पद के आधार पर बोल रहे थे—

भाई रे अद्‌बुद रूप अनूप कथ्यो है, कहौं तो को पतिआई।
जहाँ-जहाँ देखो तहाँ-तहाँ सोई, सब घट रहा समाई॥

(शब्द 27)

इसी पद पर विस्तृत चर्चा करते हुए आपने कहा—जिस परम तत्त्व को लोग आश्चर्यपूर्वक वर्णन करते हैं वह सभी देहधारियो (घट-घट) मे विराजमान है।

एक विद्वान पडित जी वहा बैठे सुन रहे थे। प्रवचन समाप्त होने के बाद उस दिन तो वे चले गये। दूसरे दिन उन्होने अपने मित्र से चर्चा करते हुए कहा—महाराज जी घट-घट मे उस परमतत्त्व आत्मा को बता रहे थे जो व्यावहारिक नही है। वस्तुत: परमतत्त्व को कण-कण मे मानना व्यावहारिक है।

शाम को पडित जी के मित्र गुरुदेव जी के दर्शनार्थ आये, और पडित जी की बाते भी बताये।

गुरुदेव जी ने कहा—पडित जी जब वस्तु तथ्य को समझेगे तो उन्हे भी घट-घट मे ही मानना पड़ेगा। अच्छा बताइये, आप कही थूकेगे तो किसी घट (देहधारी) पर तो नही थूकेगे, लेकिन किसी कण पर तो थूकना पड़ेगा ही। इसी प्रकार टट्टो-पेशाब किसी घट पर तो नही करेगे, लेकिन किसी कण पर तो करना ही पड़ेगा। तो कण-कण मे व्यावहारिक हुआ या घट-घट मे?

गुरुदेव जी की बाते सुनकर वे सज्जन बहुत खुश हुए। उन्होने कहा—ऐसा तो मैं सोचा ही नही था। अब जाकर मैं पडित जी से कहता हू कि पडित जी परमतत्त्व को कण-कण मे नही घट-घट मे मानना ही व्यावहारिक है।

दूसरे दिन वे सज्जन पडित जी से गुरुदेव जी की पूरी बात कहे तो उन्होने भी स्वीकारा और कहा—महाराज जी का तर्क बिल्कुल सत्य और अकाट्य है। घट-घट (प्राणी-प्राणी) मे परमतत्त्व को मानना ही व्यावहारिक है।

40.

व्यर्थ सशय क्यो?

श्रद्धेय सत श्री आज्ञा साहेब जी के आग्रह पर गुरुदेव जी अप्रैल 1995 मे काठमाडो, नेपाल गये थे।

एक दिन गुरुदेव बानेश्वर कबीर आश्रम मे प्रवचन कर रहे थे। उसी बीच yz-50 वर्ष के एक प्रौढ़ पुरुष आये। लेकिन केवल दस ही मिनट मे वे उठकर चल भी दिये।

उनके जाने के बाद लोग आपस मे एक दूसरे को सकेत करने लगे कि इनको गुरुदेव का प्रवचन अच्छा नही लगा। गुरुदेव जब प्रवचन बन्द किये तो लोग चर्चा करने लगे कि वे सज्जन बीच मे ही उठकर चले गये, निश्चित है वे नाराज हुए होगे।

गुरुदेव ने कहा—आप लोग व्यर्थ मे सदेह क्यो करते हैं? हो सकता है कि उनको आवश्यक काम रहा हो इसलिए गये हो। बिना जाने इस प्रकार क्यो कल्पना कर रहे हैं?

चार दिनो के बाद वे सज्जन आये। गुरुदेव कमरे मे विराजमान थे। पास मे अन्य सत-भक्त भी बैठे थे। वे भी प्रणाम करके बैठ गये। उन्होने कहा—महाराज जी, चार दिन पहले मैंने आपका प्रवचन सुना है, ऐसा प्रवचन तो सभी आश्रमो और मदिरो मे होना चाहिए।

एक भक्त ने पूछा—अच्छा, तो महाराज जी का प्रवचन आपको पसन्द आया?

सज्जन—अरे, इससे अच्छा और क्या हो सकता है! ऐसा प्रवचन तो हमार वेद-विद्या आश्रम मे भी होना चाहिए। मैंने उस दिन थोड़ा ही सुना था। मुझे पोस्ट आफिस जाना था। समय न होने के कारण बीच मे ही उठकर चला गया।

उनकी बात सुनकर भक्तो को ग्लानि हुई कि हम लोग भ्रम मे थे कि यह नाखुश होकर चले गये। लेकिन इनकी तो समझ, भावना, उदारता अत्यन्त प्रशसनीय है।

गुरुदेव ने कहा—किसी की थोड़ी चेष्टा पर उसके विचारो का सिद्धान्त निकालना केवल धोखा है। मनुष्य को समझने के लिए उसके हृदय की भावना को समझना होगा।

41.

जीवन भी शुक्ल है!

1996 की बात होगी, गुरुदेव की पुस्तक 'उपनिषद् सौरभ है' जो ग्यारहो उपनिषदो का सार है। इसे पढ़कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सस्कृत विभागाध्यक्ष बहुत गद्‌गद हुए और उन्होने कहा—लोग किसी शास्त्र की टीका

करते हैं तो वह मूल से भी ज्यादा कठिन हो जाता है, लेकिन महाराज जी द्वारा लिखी गयी उपनिषद् सौरभ नामक यह पुस्तक ऐसी है जो हमारे मन मे ऋषियो-मुनियो के लिए श्रद्धा जगा देती है। हमारे बच्चे ऐसी सामग्री न पाने के कारण ही इगलैंड, अमेरिका, जर्मनी आदि देशो मे जाकर विदशी सस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। लेकिन महाराज जी का ऐसा विचार उनको मिले तो निश्चित ही भारतीयता के प्रति उनकी निष्ठा जग जायेगी। जर्मनी, इगलैंड मे पढ़ रहे अपने बच्चो को भी यह पुस्तक मैं भेजूगा और उनको कहूगा कि इसे पढ़ो और अपने देश की सम्पत्ति को समझो।

गुरुदेव के आश्रम के पास ही प्रीतमनगर कालोनी मे एक नवयुवक रहता था जिनका नाम है रजनीश। रजनीश गुरुदेव जी से जुड़े हुए थे और साथ-साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे पढ़ते भी थे। उनके सस्कृत विभागाध्यक्ष ने जब उपनिषद् सौरभ पढ़ा तो उन्होने रजनीश जी से पूछा—ये लेखक बड़े मानवतावादी हैं, उनका चितन भी अत्यन्त गहन-गभीर है। उनके विचारो मे वेद, शास्त्र, रामायण, गीता आदि समस्त भारतीय शास्त्रो का सार समाया हुआ है। वे न किसी के पक्ष मे हैं न विपक्ष मे। अच्छा, ये लेखक किस कुल-गोत्र के हैं?

सर, वे ब्राह्मण हैं और ब्राह्मणा मे शुक्ल हैं। केवल गोत्र के ही शुक्ल नही हैं बल्कि उनका रग भी शुक्ल है, वेश भी शुक्ल है, जीवन भी शुक्ल है और उनका मन भी शुक्ल है—रजनीश जी ने कहा।

सर, महाराज जी केवल पुस्तके ही नही लिखते बल्कि वे सत हैं और हजारो श्रोताओ के बीच म उनके प्रवचन होते हैं। उनके साथ सैकड़ो सतो का समाज है और वे हजारो-लाखो के उपास्य हैं।

दुर्भाग्य से विद्वान प्रोफेसर असमय ही काल-कवलित हो गये। चाहते हुए भी उनकी गुरुदेव से मुलाकत न हो सकी।

42.

मै तो पक्का स्वार्थी हू!

1996 का समय था। गुरुदेव उस समय इलाहाबाद के प्रीतमनगर कबीर मदिर मे रह रहे थे। इलाहाबाद शहर के ही दो नवयुवक आपसे मिलने आये। उनमे एक अनूप जी थे और दूसरा उनका साथी था। बदगी-प्रणाम के बाद वे गुरुदेव के पास बैठे। अनूप जी ने गुरुदेव जी से कहा—साहब जी, आपने समाज की सेवा कहा से शुरू की थी? हम भी समाज की सेवा मे लगना चाहते हैं।

गुरुदेव जी—क्या तुम अपनी सेवा कर लिये?

दोनो युवक चुप बैठे रहे। उन्हे कुछ जवाब नही सूझ रहा था।

गुरुदेव जी—मैं तो पक्का स्वार्थी हू। मैंने कभी सोचा भी नही था कि मैं समाज की सेवा कर रहा हू। जबसे गुरुदेव की शरण मे आया, अपनी शाति और कल्याण का काम करता रहा, उसी मे समाज की थोड़ी सेवा भी अपने आप हो रही है।

समाज-सेवा की भी आवश्यकता है। किसी का मन सतगुण प्रधान है लेकिन रजोगुण का जोर है और वह अपने आप मे एकरस स्थित नही हो पाता है तो वह अपना सुधार करते हुए समाज की सेवा भी करे। जैसे स्कूल चलाना, गरीबो की सेवा करना, अनाथालय चलाना आदि। लेकिन जो मुमुक्षु है, पूर्णरूप से शाति चाहता है वह केवल आत्मशोधन का ही काम करे। क्षण-क्षण अपने मन की चाल को देखे कि कहा जा रहा है। अपने मन-इन्द्रियो के समस्त उद्वेगो को शात कर देना ही सच्ची समाज-सेवा है।

गुरुदेव की बात सुनकर अनूप जी ने मुस्कुराते हुए कहा—साहेब जी, अब मैं भी पक्का स्वार्थी बनूगा।

43.

घटनाओं से ऊपर

7 जून, 1996 की बात है। गुरुदेव जी उस वर्ष के सारे बाहरी कार्यक्रमो को निपटाकर 'कबीर पारख सस्थान, इलाहाबाद' मे कबीर जयन्ती मनाये। इसके दो दिन बाद दो साधको को साथ लेकर आप भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के आतिथ्य मे कलकत्ता गये। वहा पहचने के दूसरे दिन ही प्रातः इलाहाबाद कबीर सस्थान से सत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी का फोन गया। उन्होने गुरुदेव जी से बताया कि कल रात्रि मे इतनी जोर से आधी और तूफान आये कि बिजली के बहुत-से खम्भे टूट गये, बहुत-से वृक्ष उखड़ गये। बहुत-से घरो के छप्पर आदि उड़ गये। हमारे आश्रम मे कबीर नगर की अधिकतम प्राचीर ध्वस्त होकर जमीन पर आ गयी है।

आश्रम मे इतनी बड़ी हानि होने के बाद भी गुरुदेव के मन मे कोई क्षोभ, कोई परिवर्तन नही आया। आपने सहज भाव से कहा—कोई बात नही, यह सब उथल-पुथल होता रहता है। इसे ही ससार कहते हैं। यहा जो अपने से सम्भव हो वह कर्तव्य कर्म करो और निर्द्वन्द्व रहो। तुम्हारे स्वरूप मे न ससार है और न किसी प्रकार की हानि है। सब समय प्रसन्न रहने मे हमारा अधिकार है।

गुरुदेव आकर अपने आसन पर ध्यान मे बैठ गये। एक घटा तक समाधि की अचल स्थिति मे होकर आप निर्विचार बैठे रहे। इसके बाद अध्ययन आदि कार्य मे लग गये। कलकत्ता प्रवास का एक महीना पूरा करके गुरुदेव गुरुपूर्णिमा के पूर्व ही कबीर आश्रम इलाहाबाद वापस आ गये। जब आप स्नानादि करके अपने कक्ष मे बैठे तो ब्र0 भूषण साहेब बदगी करने गये। बदगी के पश्चात उन्होने दर्दभरे शब्दो मे बताया कि गुरुदेव कबीर नगर के घेरे की अधिकतम दीवार आधी मे गिर गयी है। इस घटना से आश्रम को बहुत नुकसान हो गया है। महीना भर हो गये अभी तक सभी सत दीवार की उन ईंटो की सफाई आदि मे लगे हुए हैं।

गुरुदेव ने कहा—बेटा! इसमे दुखी नही होना है। तुम्हारे अपने आप मे कोई नुकसान नही हो सकता। जो बाहर से मिलता है उसी मे कभी कुछ बढ़ जाता है तो उसी मे कुछ घट भी जाता है। तुम्हारे पास आश्रम था, दीवार थी तो उसमे कुछ नुकसान हो गया। फिर समय से सब ठीक हो जायेगा। एक दिन ऐसा आयेगा कि इन घटनाओ की याद भी नही होगी। इसलिए सब समय निर्भय रहो, निश्चित रहो।

44.
तुमने सच्ची परख की

महापुरुष अपने गुणो का दिखावा नही करते। वे तो अपने जीवन को देखते हैं और उसे तिल-तिलकर शोधते हैं। वे अपनी प्रशसा सुनकर आनन्द मे पुलकित नही होते और अपनी निदा सुनकर क्षुब्ध भी नही होते। वे अपनी सहज स्थिति मे प्रशात रहते हैं। ससार के लोग अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार उनका मूल्याकन करते रहते हैं।

गुरुदेव जी बिहार के फारबिसगज बाजार मे एक स्कूल के पास मकान मे थे और स्कूल के प्रागण मे कार्यक्रम था। आप अपने निवास स्थान पर बैठे थे। भक्त लोग मिल-जुल रहे थे। कोई भी व्यक्ति अपने इष्ट के पास जब जाता है तो स्वाभाविक ही वह अपनी शक्ति के अनुसार फल-फूल, पैसे आदि कुछ न कुछ चढ़ाता ही है। गुरुदेव जी के पास भी भक्त लोग फल-फूल और पैसे यथाशक्ति चढ़ाकर बदगी कर रहे थे। गुरुदेव के साथ रहनेवाले साधक-ब्रह्मचारी उसे उठा-उठाकर यथोचित स्थान पर रखते जा रहे थे।

वही खड़ा एक नवयुवक यह सब देख रहा था। उस समय तो वह कुछ नही बोला, सब कुछ वह चुपचाप देखता रहा और देखकर वापस चला गया। दो

महीने के बाद गुरुदेव जी के नाम से उसने एक पत्र लिखा—मैं तो समझता था कि आप सत हैं, त्यागी हैं लेकिन आपके सामने रुपये-पैसे चढ़ रहे थे। उसे आपके साधु उठा-उठाकर रख रहे थे। यह मुझे बड़ा विचित्र लगा और मुझे बहुत दुख हुआ। आपसे मुझे बड़ी आशा थी किंतु मेरी वह आशा निराशा मे बदल गयी।

उसका पत्र गुरुदेव जी पाये। आपने उस नवयुवक को लिखा—

प्रिय बेटा...........!

बहुत-बहुत प्यार,

बेटा, तुम हमारी महिमा सुन रखे थे, इसलिए समझ लिये कि ये बहुत बड़े सत होगे। ऐसा समझकर भूल किये। मैं सत नही हू, केवल साधु का वेष पहना हू। अपने ढग से जी रहा हू। तुमने सच्ची परख की, तुम्हे बहुत-बहुत धन्यवाद देता हू। मुझे साधु मानने का भ्रम छोड़ दो। तुम्हे पुनः बहुत-बहुत प्यार।

तुम्हारा शुभचितक

अभिलाष दास

वह युवक यह पत्र पाया होगा। फिर वह कभी मिला नही और न दुबारा कोई पत्र ही लिखा।

45.

सब्जी-रोटी बना दो

जुलाई, 1997 की बात है। गुरुदेव इलाहाबाद के प्रीतमनगर कबीर मदिर मे विराजमान थे। एक दिन छत्तीसगढ़ से एक नवयुवक आया। आश्रम मे कुछ दिन रहने के बाद वह अयोध्या, बनारस आदि घूमने गया। चार दिन के बाद सुबह इलाहाबाद आश्रम मे लौटा। उसी दिन उसको सारनाथ एक्सप्रेस से छत्तीसगढ़ वापस जाना था। गुरुदेव जी ने उससे कहा—रास्ते मे कुछ खाने के लिए यही से रोटी-सब्जी लेते जाना। उन्होने कहा—ठीक है गुरुदेव।

इसके बाद गुरुदेव ने एक ब्रह्मचारी को बुलाकर कहा—इनके लिए रोटी-सब्जी बना दो। उन्होने स्वीकारते हुए कहा—ठीक है। किंतु कुछ कारणवश वे ढीले हो गये। पूछने पर उन्होने कहा—जो सब्जी सबके लिए बनी है उसी मे से लेते जायेगे। अलग से बनाने का अभी समय नही है। किसी से जब ऐसा गुरुदेव ने सुना तो आप स्वय भडारघर मे जाकर आलू निकालकर छीलने लगे। लोग

देखे तो घबराये और आकर गुरुदेव के हाथ से छिलनी-चाकू लेकर आलू सुधारने लगे।

गुरुदेव ने कहा—यात्रा मे ले जाकर खाना है तो रस से भरी हुई सब्जी कैसे ले जायेगे। लोगो को अपनी भूल समझ मे आयी। फिर तो तुरन्त सूखी सब्जी और रोटी बनाकर उस युवक को दिया गया।

46.

मैं तुम्हें शाप देता हू कि तुम हार जाओ!

जून, 1997 का समय था। गुरुदेव इलाहाबाद मे कबीर जयती कार्यक्रम के पश्चात भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के यहा कलकत्ता आये हुए थे। साथ मे सत श्री गुरुभूषण साहेब एव एक अन्य साधक थे। एक दिन सुबह के लगभग दस बजे गुरुदेव जी अपने निवास मे बैठे थे। पास मे श्री प्रेमप्रकाश जी भी बैठे थे। गुरुदेव जी के पास इलाहाबाद से लौटकर धानेपुर कबीर आश्रम से सत श्री रामआधार साहेब का पत्र आया। जिसमे उन्होने लिखा था कि मैं बहुत लोगो के आग्रह से लोकहित के लिए ग्रामप्रधान के चुनाव मे खड़ा हू। आप मुझे विजय का आशीर्वाद दे, लेकिन आप यदि मुझे चुनाव लड़ने से रोकेगे तो मैं आपकी बात नही मानूगा, मुझे तो आपसे विजय का ही आशीर्वाद चाहिए।

पत्र पढ़कर गुरुदेव जी को उनके भोलेपन पर हसी आयी और आपने उनको लिखा—

प्रिय साधु रामआधार दास जी,

खूब प्रसन्न रहो।

तुम्हारे पत्र से पता चला कि तुम प्रधानी का चुनाव लड़ने जा रहे हो और इसकी पूरी तैयारो कर चुके हो। मैं तुम्हे शाप देता हू कि तुम चुनाव हार जाओ।

तुम्हारा शुभचिन्तक

अभिलाष दास

सचमुच यही हुआ। सत श्री रामआधार साहेब चुनाव हार गये। गुरुदेव का पत्र पाकर वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्हे अपने पर ग्लानि भी हुई कि मैं साधु होकर कहा प्रपच मे फस रहा था। गुरुदेव का मेरी योजना के विरुद्ध जो आशीर्वाद आया है वह मेरे लिए वरदानस्वरूप है। प्रधानी के इस राजनीतिक चुनाव मे मेरी हार हो जाना ही मेरी आध्यात्मिक विजय है।

47.

इनका पानी नहीं चलता

उन दिनो गुरुदेव जी इलाहाबाद प्रीतमनगर कबीर मदिर मे विराजमान थे। सुबह के लगभग दस बजे होगे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पाच-छह विद्यार्थी आपसे मिलने आये। काफी देर तक वे आपसे अनेक विषयो पर प्रश्न करते रहे। आपके तर्कपूर्ण उत्तर से वे बहुत पसन्न हुए।

जब वे चलने को तैयार हुए आश्रम मे भोजन की घटी बज गयी। गुरुदेव ने उन विद्यार्थियो से कहा—बेटा, भोजन की घटी बज गयी है। भोजन कर लो तब जाओ।

उन छात्रो ने कहा—नही साहेब जी, हम लोगो को अभी भोजन नही करना है। अतः अब जाने दे। गुरुदेव जी ने कहा—नही बेटा, अन्य समय मे जाते तो कोई बात नही थी। आश्रम के सभी सत भोजन करने जा रहे हैं इसी समय तुम लोग बिना खाये यहा से चले जाओ तो यह उचित नही है। इसलिए तुम लोग भी खाकर ही यहा से जाओ। खाने मे आखिर हर्ज क्या है?

किसी भाति वे विद्यार्थी गुरुदेव का अनुरोध स्वीकार किये कितु अभी भी उनके मन मे भय था कि ये सत हम लोगो को जानेगे तो क्या कहेगे? भोजनालय के दरवाजे तक जाकर वे लोग लौट आये। एक ने कहा—साहेब जी, इनका पानी नही चलता ह।

गुरुदेव जी ने उनको साहस दिया और कहा—बेटा, जाओ भोजन करो, जब पानी नही चलेगा तो मैं आकर चला दूगा।

सभी हसने लगे।

गुरुदेव जी ने एक साधु को भेजते हुए कहा—जाओ इनको थाली-कटोरी और गिलास आदि देकर भोजन कराओ।

उनमे मुसलिम, हिन्द् तथा ब्राह्मण, हरिजन कहे जानेवाले छात्र थे। सभी विद्यार्थी भोजन करके अत्यन्त हर्षित हुए। उनके मन मे जो भय था कि हमे नीची जाति का जानेगे तो कही डाटे न, इसके बिलकुल विपरीत व्यवहार उनको मिला।

48.

हम आपके परोक्ष शिष्य हैं

गुरुदेव जी का कार्यक्रम 1998 ई0 मे बिहार प्रदेश मे था। मुगेर जिला के असरगज बाजार मे आपका निवास सोहन शास्त्री के घर था। शाम का प्रवचन

करके गुरुदेव निवास पर आ गये थे। ब्रह्मचारी चूड़ामणि और राम सेवा मे लगे हुए थे। ऊपरी तल्ल पर गुरुदेव आगन मे कुर्सी पर विराजमान थे। शाम को दो वकील सादे ड्रेस मे आये। दोनो के कधो पर झोला था और दोनो की उम्र लगभग पचास वर्ष की रही होगी।

वे दोनो दण्ड-प्रणाम करके बैठ गये। बैठते ही उन्होने कहा—महाराज, हम दोनो आपके परोक्ष शिष्य हैं। हम आपके गथ वर्षों से पढ़ रहे हैं और कैसेट के माध्यम से प्रवचन भी सुनते हैं। आपके विचारो से हम परिचित और पूर्णतः सहमत भी हैं। बहुत पहले ही हम आपको हृदय से सद्गुरु मान लिये हैं किंतु आपके दर्शन करने का सौभाग्य आज प्राप्त हुआ है। आपके विचार अत्यन्त कल्याणकारी हैं, किंतु एक बात जो आप लिखते और बोलते हैं, वह हमारे अनुभव मे नही आ रही है। आपके अनेक ग्रथो मे हमने पढ़ा है कि साधक ध्यान मे बैठे और धीरे-धीरे सारे सकल्पो को छोड़कर सकल्पहीन अवस्था मे स्थित हो जाये। इसी को निर्विचार समाधि या योगदर्शन की भाषा मे असप्रज्ञात समाधि कहते हैं। इसी से दुखो का अत होता है। यही साधक की अतिम मजिल है। महाराज, यह विचारशून्यता की स्थिति नही आ रही है।

गुरुदेव ने कहा—आप लोग जीवन भर.........। बस इतना ही आप कहे थे कि दोनो लोग बोल पड़े—हा साहेब, हम लोग हर समय खुराफात मे लगे रहते हैं फिर मन शात कैसे हो जायेगा?

गुरुदेव ने कहा—मन तो पूर्ण शात तब होगा जब पूरा जीवन सयमित हो। देखना, सुनना, बोलना, करना, सोचना और जानना सयमित हो, पूर्व की वासनाओ का वेग साधना द्वारा समाप्त कर दे और पुनः नया वग न भरे। इसके लिए विवेकवानो की सेवा, सगति और सत्सग चाहिए। ससार की असारता सब समय मन मे दिखनी चाहिए। इस प्रकार आत्म-अनुराग मे ही जब साधक का चित्त लगा रहता है तब धीरे-धीरे मन शात होने लगता है।

गुरुदेव की वाणी सुनने मे दोनो इतने तद्गत थे कि उन्हे पता ही नही चला कि कब अधेरा छा गया। गुरुदेव ने कहा—अच्छा, शाम हो चुकी है, अधकार बढ़ता जा रहा है, अब आप लोग जाये, नही तो रात्रि हो जायेगी।

49.

स्थायी आश्रम

V~98 ई0 की बात है। इलाहाबाद कबीर पारख सस्थान का इक्कोसवा वार्षिक अधिवेशन हो चुका था। अल्लापुर (इलाहाबाद) निवासी श्री परशुराम

त्रिपाठी के घर गुरुदेव जी का तीन दिनो का कार्यक्रम था। गुरुदेव जी आश्रम से ही उनके यहा गाड़ी से जाते थे और कार्यक्रम के बाद आश्रम वापस लौट आते थे।

दूसरे दिन गाड़ी लेकर एक नवयुवक आया। गुरुदेव जी और दो-तीन सत गाड़ी मे बैठे और चल दिये। जैसे ही आश्रम के गेट के बाहर गाड़ी निकलो, उस नवयुवक ने गुरुदेव से कहा—अच्छा हुआ महाराज, आपने यहा एक स्थायी आश्रम बना लिया।

गुरुदेव ने कहा—यह मेरा स्थायी आश्रम कहा है? मेरा स्थायी आश्रम तो कुछ और है। यह तो एक पड़ाव है।

गुरुदेव की इतनी बात सुनकर वह आश्चर्य मे पड़ गया कि स्थायी आश्रम कुछ और है.....! और यह एक पड़ाव है...!

आपने उसको पुनः समझाते हुए कहा—बेटा, यह मेरा स्थायी आश्रम कैसे हो सकता है? जहा चलकर पहुचा जाता है वह स्थायी नही होता है। मेरा स्थायी आश्रम तो मेरी आत्म स्थिति है, मेरा अपना आपा है। वह मुझसे अलग हो ही नही सकता। वहा आना और जाना नही है। वह चलकर मिलनेवाला भी नही है। मेरा आश्रम, मेरा स्थायी निवास मेरे अपने-आप मे है जो कभी छूट ही नही सकता है।

उस युवक ने पुनः आपसे पूछा—महाराज, आप कभी 'फॉरेन' (विदेश) जाते हैं?

गुरुदेव ने कहा—बेटा, यह सारा ससार ही फॉरेन है। अब इससे लौटकर अपने आप मे रहने का निश्चय है। गुरुदेव जी के इस आत्मपरक जवाब से वह युवक बहुत खुश हुआ। फिर आपने व्यावहारिक बाते भी बतायी कि भक्त लोग तो बहुत खीचते हैं किंतु मैं जा नही सका।

50.

गुरुदेव आप कितने अच्छे हैं!

गुरुदेव जी का कार्यक्रम दिल्लो तथा उसके आस-पास कुछ जगहो मे था। वहा से चलकर आप 24 नवम्बर, 1999 को ज्योतिबा फुले नगर जिले मे शेखपुर-झकड़ी ग्राम मे आये। यहा आपका तीन दिनो का कार्यक्रम था। यह एक

साधारण गाव है जहा सामान्य लोगो का निवास है। आपका निवास जहा था वह भी एक सामान्य और छोटा-सा कमरा था जिसमे बहुत कम हवा-प्रकाश आ पाता था।

वहा के एक क्षेत्रीय सत थे जिनका नाम था सत श्री लाहौरी साहेब। आपकी सौजन्यता से ही गुरुदेव वहा पधारे थे। श्री लाहौरी साहेब किसी कारणवश दो दिनो तक वहा नही आ सके। अतिम दिन भक्त श्री दिनेश जी को लेकर आये। गुरुदेव का दर्शन पाकर वे अत्यन्त गद्‌गद हो गये। उन्होने उस गाव के भक्तो को कोसते हुए कहा—इन लोगो को इतनी भी समझ नही है कि ऐसे महापुरुष की कैसी सेवा की जाती है! उन्होने कहा—गुरुदेव, आज ही आप लोग सामान बाधे और हसनपुर चले। वहा हमारे भक्त का घर है, वहा सारी व्यवस्था है और वही रहकर ही कल शाम को आप लोग गाड़ी पकड़े।

गुरुदेव ने कहा—यहा ठीक है, हम कोई परेशानी नही है। यहा रह रहे हैं, भोजन मिलता ही है, दो दिन बीत गया। आज भी बीत जायेगा। यहा क्या साथ रहनेवाला है? इसलिए अब अलग ले जाने का विचार ही छोड़ दे।

श्री लाहौरी साहेब—साहेब, आप निर्मानी पुरुष हैं। जहा जैसा पाते हैं, वहा वैसे मे ही रह लेते हैं, लेकिन हमे बहुत दुख होता है।

इसके एक वर्ष बाद जहा वे गुरुदेव को ले जाना चाहते थे उसो शहर (हसनपुर) मे ही उन्होने आपका तीन दिनो का कार्यक्रम करवाया। एक डॉक्टर के घर मे सत समाज सहित आपका निवास था। डॉक्टर साहेब समर्पित भक्त स्वभाव के थे। वहा सत्सग कार्यक्रम एक स्कूल के प्रागण मे होता था।

हसनपुर मे कार्यक्रम क प्रथम दिन ही सत श्री लाहौरी साहेब आपसे मिलने आये। आते ही सामने फल-फूल आदि सामग्री रखकर भावविह्वल हो गये। गुरुदेव के प्रति प्रेम एव भावना मे इतना तन्मय हो गये कि वे बदगी करना ही भूल गये। बैठते ही बाते करने लगे। उन्होने कहा—अहह! साहेब, आप कितने अच्छे लगते हैं! आपके समान केवल आप ही हैं। आपकी साधना, आपकी रहनी महान है और आप कठिन परिश्रम करके जन-जन तक ज्ञान का अटूट धन बाट रहे हैं। आपके इस धन की बराबरी मे हम अबोधी जीव आपकी क्या सेवा कर सकते हैं? इतनी बाते होने के बाद उनको याद आया कि अभी तो उन्होने बदगी ही नही किया और वे तुरन्त हड़बड़ाकर बदगी करने लगे।

लाहौरी साहेब ने कहा—गुरुदेव, जब भी हम निवेदन करे, इसी तरह हम सब पर कृपा करके दर्शन देते रहे।

51.

सच्चा आनद

जून, 1999 ई0 को दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान गुरुदेव जी 10 जून को कन्याकुमारी पहुचे और साथ के सत-भक्तो के सहित समुद्र तट घूमने गये। कन्याकुमारी मे अरब सागर, हिन्द महासागर तथा बगाल की खाड़ी का सगम माना जाता है। समुद्र के किनारे आप सब लोग खड़े वहा की ठडी हवा लेते हुए उसका मनोरम दृश्य देख रहे थे। एक भक्त घुटने भर पानी मे जाकर खड़े हो गये। उन्होने समुद्र की उत्ताल तरगो भरे दृश्य की ओर आकर्षित होते हुए कहा—साहेब, जब मैं समुद्र के किनारे आता हू तो मेरा मन आनन्द से भर जाता है।

गुरुदेव ने कहा—अच्छा! तुमको हम यही छोड़ देते हैं रातभर यही पानी मे खड़े रहो तो तुम्हारा आनन्द बहुत बढ़ जायेगा और चार दिनो तक यही खड़े रहो तो तुम्हारा आनन्द सीमातीत हो जायेगा।

गुरुदेव की इतनी बात सुनकर वे हसने लगे, उन्होने कहा—तब तो मैं यहा बिलकुल नही रह सकता।

वस्तुत: बाहर का सारा आनन्द क्षणिक है, आत्मजनित आनन्द ही सच्चा और स्थायी आनन्द है।

52.

महा पाप लगा

आज भी समाज मे कुछ ऐसे लोग हैं जिनको रोटी-कपड़े के लिए रुपये इकट्ठा कर पाना मुश्किल हो जाता है। लेकिन कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनके पास पैसे का तो भडार है लेकिन उनका अधिकतम पैसा विलास और दिखावा मे जाता है।

गुरुदेव उन दिनो गुजरात बड़ौदा जिला के चलामली गाव मे थे। वहा के एक प्रसिh भक्त श्री पुरुषोत्तम भाई थे। वे उन दिनो आपके सत्सग मे बराबर रहा करते थे लेकिन उस दिन नही थे। दूसरे दिन जब आये और आपसे मिले तो गुरुदेव ने पूछा—कल तुम सत्सग मे नही थे। पुरुषोत्तम भाई ने कहा—साहेब, एक बारात मे बड़ौदा गया था। एक सेठ की लड़की की शादी थी जिसमे एक ही बार के भोज मे साठ लाख रुपये खर्च हुए और उस बारात मे लगभग पौने दो करोड़ रुपये खर्च हुए।

अन्त मे पुरुषोत्तम भाई ने पूछा—साहेब जी, यह सब आपको कैसे लगा? आपने कहा—महा पाप लगा। इन पूजीपतियो का पैसा गरीबो का पैसा है। इतने रुपये मे तो एक अच्छा हास्पिटल खोला जा सकता था, जिससे स्थायी रूप से समाज की सेवा होती।

पुरुषोत्तम भाई ने कहा—आप ठीक कहते हैं।

53.

एक कृष्ण मंदिर मे गुरुदेव जी का प्रवचन

गुरुदेव का कार्यक्रम नजफगढ़ (दिल्ली) म था। वहा आपका प्रवचन एक कृष्णमदिर मे रखा गया था। आपके प्रवचन तो समय-समय से राम मदिर, कृष्ण मदिर, शिव मदिर, विष्णु मदिर, आर्य समाज मदिर, गायत्री मदिर, गुरुद्वारा आदि जगहो मे होते ही रहते हैं। नजफगढ़ के कृष्ण मदिर मे आपका प्रवचन होना सुनकर एक सज्जन झल्ला उठे।

उन्होने कहा—कृष्ण मदिर मे किसी कबीरपथी का प्रवचन होना तो अनर्थ है। जो न किसी भगवान को मानता हो और न किसी देवी-देवता को, उसका कृष्ण मदिर मे प्रवचन हो यह घोर नास्तिकता है। वे सज्जन इस प्रकार कुढ़ते रहे किन्तु गुरुदेव का प्रवचन कृष्ण मदिर मे होना रुका नही।

गुरुदेव का प्रवचन जब शुरू हुआ तो वे सज्जन भी उदासीनतापूर्वक आकर सत्सग मे एक किनारे बैठ गये। जब वे एक घटा 'कर्म, भक्ति और ज्ञान' पर आपके वैज्ञानिक प्रवचन सुने तो उनकी मान्यता ही बदल गयी। वे गुरुदेव जी से अत्यन्त प्रभावित हो गये।

दूसरे समय मे वे गुरुदेव के पास आकर अपनी बाते कहने लगे। उन्होने कहा—महाराज! मैं तो घोर अनर्थ की ओर जा रहा था। जब मैंने सुना कि किसी कबीरपथी सत का प्रवचन कृष्ण मदिर मे होने जा रहा है तो मुझे बहुत बुरा लगा। आपके विरोध मे मैं अभी तक पता नही क्या-क्या कल्पना करता था। जब आपका प्रवचन शुरू हुआ तो वहा बैठने का मेरा मन ही नही होता था लेकिन सोचा कि चलो थोड़ा बैठ ले और देखे कि क्या कहते हैं। थोड़ा सुनने के बाद लगा कि इन विचारो से अच्छा तो कुछ और हो ही नही सकता है। महाराज, मैं तो उसी क्षण से आपका दास हो गया। आपके इन विचारो की बड़ी आवश्यकता है। आपके प्रवचन हर कृष्ण मदिर, राममदिर, शिवमदिर मे होना चाहिए। आपके ये विचार जन-जन तक पहुचना चाहिए और आपकी पुस्तके भी

हर व्यक्ति के पास होना चाहिए। आपने सद्‌गुरु कबीर की क्राति के उस मशाल को पुन: अपने हाथो मे ले लिया है। निश्चित है इक्कोसवी सदी के आप कबीर हैं। धन्य हैं मेरे भाग्य जो मुझ जैसे अधम व्यक्ति को आप जैसे महान सत मिले। इसके बाद वे सज्जन गुरुदेव से जुड़ गये।

54.

थोड़ी भी ठेस पहुचाये बिना

एक बार कबीर आश्रम कबीर नगर मे कुछ जमीन खरीदो गयी थी। जो जमीन खरोदो गयी थो वह आश्रम से सटी हुई लम्बी पट्टी किन्तु टेढ़ी-मेढो थी। गुरुदव ने सोचा कि जमीन के अनुसार टेढ़ी दोवार उठाना तो बहुत भद्दा लगेगा। यदि यह सीधी हो जाये तो कितना अच्छा होता।

गुरुदव ने जमीन मालिक को बुलाया और अन्य कुछ सज्जनो को बुलाया। जमीन को दिखाते हुए आपने कहा—इस टेढ़ी जमीन के अनुसार दोवार उठाना तो अच्छा नही होगा। हम चाहते हैं कि इसे सीधी कर ले। इसमे जितनी भी जमीन हमारी कटेगी उसे हम मुफ्त मे छोड़ दगे और बगल वाले की जमीन से यदि हमे मिलती है तो उसका हम पूरा पैसा द दगे।

गुरुदव की यह बात सुनकर आगन्तुक सभी सज्जनो को आश्चर्य हुआ कि यह कौन-सा न्याय है। उचित न्याय तो यह है कि आपका कटे तो आप सहे और हमारा कटे तो हम सहे। लेकिन गुरुदव ने तो ऐसा शस्त्र चलाया जो अचूक था। बगल जमीन का मालिक झट से तैयार हो गया। उसको जमीन भी कुछ मिली। साथ-साथ रकम भी। आगन्तुक सभी सज्जन जाते समय आपका यशोगान गाते हुए यही कह रहे थे कि धन्य हैं गुरुदव जो किसी को थोड़ो भी ठेस पहुचाये बिना अपना काम बनाना चाहते हैं।

55.

दान आत्म-प्रशंसा के लिए नहीं

गुरुदेव आश्रम मे रहे या आश्रम से बाहर, आपके पास यदि कोई आया है और उसको कुछ द्रव्य-वस्त्र की आवश्यकता है तो उसे यथाशक्ति अवश्य देते हैं। कोई सत या भक्त आपके पास से कही जा रहा है तो आप कुछ खाने-पीने की चीजे और आवश्यकता पड़ने पर कुछ पैसे भी देते हैं।

कई बार तो ऐसा भी अवसर आता है कि आप खा चुके हैं। हाथ धोने के लिए बाहर निकले हैं। वहा देखते हैं कि बाहर कोई कुत्ता बैठा है तो उसके लिए भी आप अन्दर से रोटी लाकर दे देते हैं। यह करुणा-दृष्टि आपका सहज स्वभाव है।

सन् 1958 की बात है, बरसात के दिन थे। बड़हरा कबीर आश्रम से चलकर बाराबकी क्षेत्र मे आपको सद्गुरु विशालदेव के दर्शन करने जाना था। आपके साथ अन्य कई सत और मुहम्मदनगर के शकर भक्त जी भी थे।

बड़हरा कबीर आश्रम के पास आज भी कोई विशेष सड़क नही है, फिर उन दिनो की बात ही क्या कहना। सब लोग पैदल चलकर मसकनवा आये जहा से ट्रेन पकड़कर बाराबकी जाना था।

रास्ते मे एक कुटिया पर रुकना हुआ। रात वही बीती, सुबह चलते समय गुरुदेव जी ने उस कुटी के सत को एक कपड़ा दिया। एक दूसरे सत आ मिले थे। उन्हे केवल मसकनवा तक ही जाना था। उन्होने कुटी के सत को लगोटी का कपड़ा दिया। मसकनवा तक आते-आते उन सत ने पाच-छह लोगो से कहा कि मैंने महात्मा जी को लगोटी का कपड़ा दिया। जब मसकनवा प्लेटफार्म पर पहुचे और वे सत साथ छोड़ने लगे तब शकर भक्त ने उनसे कहा कि गुरु जी ने कुटी मे रहनेवाले सत को बड़ा कपड़ा दिया और एक आदमी से भी नही कहा कि मैंने उन्हे कपड़ा दिया है और आपने एक लगोटी देकर अनेक लोगो से उसे बता डाला।

गुरुदेव ने कहा—किसी को कुछ हमने दे दिया तो उसको आत्म-प्रशसा के रूप मे सबसे बताते रहने की क्या आवश्यकता है?

* * *

नवम्बर, 1999 की बात है। गुरुदेव दिल्ली के पास गुड़गाव मे थे। शाम के समय कुछ भक्तो के आग्रह से उनके घर आपको जाना था। जाते वक्त तो आप गाड़ी से चले गये कितु लौटते समय कुछ कारणवश गाड़ी नही मिली। तो गुरुदेव एक रिक्शा करके साथ के साधक के साथ निवास पर आ गये। गुरुदेव ने रिक्शाचालक के पहने हुए कपड़े को देखा वे कुछ फटे थे। निवास पर आकर आपने मुझसे कहा—राम! कोई अच्छा कपड़ा लाओ और साथ मे कुछ फल भी।

मैं लेकर आया। गुरुदेव ने कहा—इसके साथ-साथ उसके किराये से कुछ अधिक ही पैसा दे देना। मैंने ले जाकर रिक्शाचालक को दिया। वह युवक कपड़ा, फल और पैसा पाकर अत्यन्त गद्गद हो गया।

56.

परिश्रम करो और प्रसन्न रहो

4 जनवरी, 2000 ई0 की बात है। गुरुदव प्रतापगढ़ (राजस्थान) भक्त श्री भगवान माली के कार्यक्रम मे जा रहे थे। प्रतापगढ़ के लिए सुवासरा (मदसौर) होते हुए जाना था। सुवासरा मे गुरुदव के बहुत-से भक्त हैं, उन लोगो को जब पता चला कि गुरुदव इसी तरफ से प्रस्थान करेगे तो वहा भी सबने रात्रि मे एक कार्यक्रम रखा। गुरुदव सुवासरा पधारे। वहा कुछ दिनो के बाद ग्राम पचायत का चुनाव होने वाला था, जिसमे सरपच के लिए आठ उम्मीदवार खड़े थे। वे बारी-बारी से गुरुदव के पास फल-फूल, प्रसाद आदि लेकर दर्शन करने और आशीर्वाद लेने आते रहे।

उन सब से गुरुदव ''प्रसन्न रहो'' कहते। गृहस्वामी नदकिशोर जी उन सबको लेकर गुरुदव के पास आते और परिचय कराते थे। वे सबको दखते रहे कि ये लोग चुनाव मे विजय प्राप्ति का आशीर्वाद लेने के लिए आते हैं और गुरुदव सबको खुश रहो कहकर वापस कर दते हैं। बाद मे उन्होने गुरुदव से कहा—गुरुदव! आप किसी को नही कहे कि तुम जीत जाओ। जब कि ये सभी लोग यही आशीर्वाद चाहते हैं।

गुरुदव ने कहा—इस चुनाव मे जीत जाना कोई सौभाग्य की बात थोड़े है। इसमे जीत भी जायेगे तो यह पद पुनः पाच वर्ष पश्चात छूट जायेगा और जब तक यह पद रहेगा अनेक जिम्मेदारिया, झझटे सामने रहेगी। सावधान नही रहेगे तो लोगो के साथ पक्षपात करेगे, पैसा दबायेगे और अपना नरक करेगे फिर उसमे सुख कहा है? यदि निष्काम भाव से परिश्रम करेगे, जनता की सेवा करेगे तो मन प्रसन्न रहेगा, शान्ति मिलेगी। इसी बात को फिर रात मे गुरुदव ने प्रवचन मे विस्तार से कहा—चुनाव मे जीतने वाले की जिम्मेदारी बढ़ जाती है, यदि तुम खुशी मनाओगे, जुलूस निकालोगे, बाजा बजाओगे, फटाखे फोड़ोगे, हारने वाले को चिढ़ाओगे तो अनर्थ करोगे। जीतने वाला चुपचाप शात रहे और हारने वाले के पास जाकर बात करे कि मुझे जिम्मेदारी मिली है, इसमे आपके सहयोग से ही कुछ कर पाऊगा। यदि वह पद पाकर खुश होगा, विलासी बनेगा तो फिर पाप करेगा और अपना नरक करेगा।

दसरे दिन नन्दकिशोर जी गुरुदव के पास पुनः बैठे। उन्होने कहा—गुरुदव आपकी बात बिलकुल यथार्थ है। इन्ही विचारो से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का सुधार हो सकता है।

57.

चतुर्दिक सावधानी

25 मई, 2000 को गुरुदेव बिहार के कटिहार जिला के मकदमपुर गाव मे थे। आपका निवास एक स्कूल मे था। वहा पर बहुत बड़ा कार्यक्रम था। चारो तरफ भक्तो की भीड़ थी।

कार्यक्रम समाप्ति के बाद वहा से जब दूसरी जगह जाने का समय आया तो प्रात: ही दो गाड़िया आ गयी। सारा सामान गाड़ी मे लादकर सभी सत गुरुदेव के पास प्रात: बदगी मे आये। बदगी के बाद सभी सत आकर गाड़ी मे बैठ गये। लेकिन अभी गुरुदेव नही आये। मैं आपका थर्मस-कमडलु आदि लेकर बाहर आया तो देखा कि गुरुदेव नल की तरफ सफाई कर रहे हैं। वहा पर नल के पास फल आदि खाकर लोग उसके छिलके वही आस-पास फेक दिये थे जो यत्र-तत्र पड़े थे। गुरुदेव उसे देखे तो उठाकर कचरे के स्थान मे डालने लगे। जैसे ही मैंने गुरुदेव को छिलके उठाते देखा तो दौडकर गया और छिलके उठाकर फेकने लगा।

मैंने गुरुदेव से कहा—गुरुदेव! आप चले, हाथ धोकर गाड़ी मे बैठे। मैं साफ करके अभी आता हू। लेकिन आप साफ करते रहे। जब पूरी सफाई कर लिये तब आप नल पर आये और हाथ धोकर गाड़ी मे बैठे।

दूसरे दिन बदगी के बाद सभी सतो को समझाते हुए गुरुदेव ने कहा—फल आदि खाकर छिलके यत्र-तत्र फेकना ठीक नही है। कचरे की जगह यदि है तो उसमे फेको। और यदि कचड़ादान नही है तो सारे छिलके एक जगह रख दो। अपने आस-पास जितना हो सके गदगी न फैले, इसका सब समय ध्यान रखो।

58.

सुख-दुख मे समता साथ रहे

यह घटना 22 दिसम्बर, 2000 की है। उस समय गुरुदेव उत्तर प्रदेश का कार्यक्रम करके 14 दिसम्बर को इलाहाबाद मे आ गये थे। कबीर सस्थान की ओर से प्रयाग कुभ मेले मे छावनी लगाने की तयारी हो रही थी। उन दिनो गुरुदेव की सेवा मे मेरे साथ ब्रह्मचारी श्री रामरूप साहेब थे। 22 दिसम्बर की शाम को हम दोनो फल आदि अमनिया करके गुरुदेव को जलपान कराये। इसके बाद हम लोग स्वय जलपान किये। जलपान करने के बाद आसन पर बैठे पढ़

रहे थे। पाठ की घटी बजी। श्री रामरूप साहेब ने कहा—मैं पाठ मे जाता हू। आप यही रहे।

रात्रि के साढ़े आठ बजे गुरुदेव सोने की तैयारी करने लगे। मैंने मच्छरदानी बाध दी और आप सो गये। गुरुदेव की बदगी करके कुछ समय पढ़ने के बाद नौ बजे तक मैं भी सो गया।

सत्सग कक्ष मे पाठ, भजन, सतो के प्रवचन आदि हुए। बीच-बीच मे हसी-विनोद की बात आने पर सब लोग हसते थे और रामरूप साहेब तो ठहाका मारकर हसनेवाले थे ही। अत म सामूहिक ध्यान हुआ। साढ़े नौ बजे तक सभागार से सभी सत बाहर आ गये। रामरूप साहेब रास्ते मे भी साथियो से बातचीत करते हुए अपने कक्ष मे आये। आसन पर वे अपनी चादर-रजाई एक मे साटकर, मच्छरदानी लगाकर बिस्तर पर सो गये।

सोने के मात्र दस मिनट बाद उनका हाफना और छटपटाना शुरू हुआ। पास ही मे मैं सो रहा था। मुझे कुछ हलचल महसूस हुई और मेरी नीद खुल गयी। मैं उठा और देखा चारो तरफ कुछ नही। तब तक मेरी नजर उनके बिस्तर पर गयी तो देखा कि वे तड़फड़ा रहे थे।

मैंने उनकी मच्छरदानी हटायी और लाइट जलाकर गुरुदेव को जगाया। आपको बताया कि रामरूप साहेब की हालत काफी बिगड़ गयी है। गुरुदेव देखते ही तुरन्त अन्य सतो को बुलाने चले गये। मैं उनको सभालता रहा।

लोग आये लेकिन प्रतिक्षण उनकी स्थिति बिगड़ती जा रही थी। उन दिनो आश्रम मे गाड़ी नही थी, ठेला था। ठेले पर ही उनको लिटाकर प्रीतमनगर लाये। वहा से श्री अतुल जी की मारुति वैन मे लिटाकर सत श्री गुरुभूषण साहेब, श्री गुरुरमन साहेब, ब्रह्मचारी श्री महेश जी और श्री ईश्वर जी स्वरूपरानी अस्पताल ले गये। तुरन्त इमरजेसी वार्ड मे भरती कराये। लेकिन तब तक उनकी स्थिति डाक्टर के वश के बाहर हो चुकी थी। डाक्टर ने जो समझा उपचार किया लेकिन सब उपचार असफल रहा। रात्रि मे दो बजे के करीब अस्पताल से ही सत श्री गुरुभूषण साहेब जी का फोन आया कि ब्र0 रामरूप जी का शरीर नही रहा। टेलीफोन पर उनकी इतनी बात सुनकर मैं तो हतप्रभ रह गया। मन की पीड़ित अवस्था मे यह समाचार मैंने गुरुदेव जी को बताया कि रामरूप साहेब का शरीर नही रहा।

गुरुदेव ने अविचलित भाव से कहा—मैं तो फोन पर तुम्हे बात करते समय ही समझ लिया था कि क्या हुआ। क्या करोगे? रामरूप का प्रारब्ध ही इतना था।

कैसा यह ससार है? इक्कोस वर्ष का नवजवान, तन-मन से बिलकुल स्वस्थ। अचानक ऐसा कालचक्र उस पर आया कि बेचारा एक शब्द भी न बोल सका।

प्रात: चार बजे उनका पार्थिव शरीर अस्पताल से लाया गया। सामने बरामदे की दीवार से टिकाकर बैठा दिया गया।

गुरुदेव अपने कमरे मे बैठे हैं। आज इस शोक सदेश को सुनकर बाहर से आनेवाले भक्तो की सख्या ज्यादा है। आप सबसे मिलते-जुलते हैं, बात करते हैं, आज आप सबसे विशेष रूप से वैराग्य की ही चर्चा कर रहे हैं। आपने कहा— देखो, रामरूप के लिए दिन और रात समाप्त हो गये। अब वे उसी रूप मे इस आश्रम मे कभी नही आ सकते। इसी शरीर का बड़ा गर्व है और यह क्षण मे कुछ का कुछ हो जाता है। इसलिए वैराग्य ही एक सार और निर्भय पद ह, जहा किसी प्रकार का दुख नही रहता है। तब तक आश्रम के ही प्रागण मे पश्चिम की ओर उनके लिए समाधि खुद गयी। श्री रामरूप साहेब के चेतनारहित शरीर को ठेला पर बैठाकर साफ कपड़े और पुष्पहार आदि पहनाकर सभी सत उनको अतिम मजिल की ओर ले चले। उसी समय आश्रम मे कबीर साहेब का यह भजन बजने लगा—

हमका ओढ़ावे चदरिया चलत बेरिया॥ टेक॥
प्राणराम जब निकसन लागे, उलट गयी दोउ नैन पुतरिया॥ V ॥
भीतर से जब बाहर लाये, छूटि गयी सब महल अटरिया॥ W ॥
चारि जने मिलि खाट उठाइनि, रोवत लै चले डगर डगरिया॥ X ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधा, संग चली वहि सूखी लकरिया॥ y ॥

जिसकी मनोवृत्ति एकरस आत्माकार है वह सब समय अपने माने हुए शरीर को अपने से अलग मृतरूप ही देखता है। फिर वह किसी घटना से शोकाकुल क्यो हो?

59.

व्यवहार और परमार्थ का ज्ञान

कुछ लोगो के जीवन मे उनके परिश्रम-पुरुषार्थ करने से धन तो बढ़ जाता है लेकिन आध्यात्मिक कमाई न होने के कारण वही धन उलझन और अशाति का कारण हो जाता है।

मई, 2001 की बात है। गुरुदेव गुजरात के अनेक कार्यक्रम करके समाज सहित भोपाल (म0प्र0) आये। भोपाल मे उस वर्ष 16 से 21 मई

तक आपका पाच दिनो का प्रवचन कार्यक्रम था। वहा कार्यक्रम आयोजक गाधीभवन के सचिव श्री रामचन्द्र भार्गव जी थे। आपके सहयोगियो मे से कुछ इस प्रकार थे—डॉ0 श्री चरणदास महन्त (छत्तीसगढ़-बिलासपुर के सासद), डॉ0 एम0 पी0 चन्द्रवशी, श्रीमती शीला टण्डन और श्री माधुरीशरण अग्रवाल जी आदि।

श्री माधुरीशरण अग्रवाल जी उद्योगपति हैं। उनकी उम्र गुरुदेव जी की उम्र से एक-दो वर्ष अधिक ही है। अग्रवाल जी एक सम्पन्न तथा समझदार व्यक्ति हैं। आपने एक दिन गुरुदेव जी को अपने घर आमत्रित किया। उनका आमत्रण स्वीकार कर सत समाज सहित गुरुदेव उनके घर गये।

गुरुदेव जी एव सतो के स्वागत-सत्कार के बाद गुरुदेव जी ने कुछ मिनट अमृत उपदेश सुनाया। आपने कहा—मानव जीवन का सुख है प्रेम और सतोष। सबको प्रेम की दृष्टि से देखे। प्रेम शब्द कह देने से श्रद्धा, प्रेम और स्नेह तीनो के भाव इसी मे आ जाते हैं। प्रेम के अभाव मे व्यवहार ही शुद्ध नही रहेगा फिर परमार्थ कैसे अच्छा हो सकता है। सतोष तो मन की शाति का आधार स्तम्भ है। कितना ही धन बढ़ जाये, पद, प्रतिष्ठा, परिवार, प्रचार, अनुगामी, मकान, गाड़ी आदि बढ़ जाये सतोष के बिना तृष्णा की वृद्धि होती है, क्योकि कितना ही हमारे पास चीजे बढ़ जाये उससे अधिकवाले लोग मिल ही जायेगे। यदि सतोष न हुआ तो मन जलेगा ही। इसलिए जहा रहे घर, परिवार, समाज मे सबके साथ प्रेम का बरताव करे और मन मे सब समय सतोष रखे। सतोष से ही सुख होता है। इतना कहकर गुरुदेव जी शात हो गये।

60.
सृष्टि किसने बनाई?

1 दिसम्बर, 2001 की बात है। गुरुदेव जी सत समाज सहित झज्झर से चलकर फरीदाबाद हरियाणा मे पधारे हुए थे। वहा पर आपका त्रिदिवसीय कार्यक्रम था। फरीदाबाद मे इसके पूर्व भी आपका पदार्पण हो चुका था इसलिए वहा के लोगो के मानस-पटल पर आपके विचारो की सुगन्धी छायी हुई थी। वहा पहुचने पर प्रथम दिन से ही दर्शनार्थी भक्तो का आना शुरू हो गया। वहा आपस साक्षात्कार लेने के लिए कुछ पत्रकार आ गये, सभी बैठे। उनसे अभी विधिवत कोई चर्चा शुरू नही हो पायी थी तभी एक सज्जन आ गये। आते ही उन्होने एक प्रश्न ठोक दिया—महाराज, सृष्टि कब और किसने बनाई?

गुरुदेव जी ने सोचा, इनकी बातो मे उलझना ठीक नहो है। अत: आपने उन्ही से उलटकर प्रतिप्रश्न कर दिया कि जब आप जन्म लिये तो यह सृष्टि थी कि नही?

सज्जन—थी, महाराज।

गुरुदेव जी—जब आप इस ससार से जायेगे तो सृष्टि रहेगी या नही?

सज्जन—अवश्य रहेगी महाराज, मेरे मरने से सृष्टि न होने का कोई मतलब ही नहो।

गुरुदेव जी—जैसे आपके जन्म के पहले ससार था वैसे ही सबकी बात है। पहले से ससार है तब उसमे किसी का जन्म होता है, फिर वह ससार की उत्पत्ति की हकीकत को कैसे बता सकता है। वैज्ञानिक तथ्य तो यह है कि यहा जड़ और चेतन दो मौलिक पदार्थ हैं। मिट्टी, पानी, आग, हवा ये चार जड़ तत्त्व हैं। इन्ही के सयोग से वृक्ष, वनस्पति, समुद्र, नदी, झरने, पेड़, पहाड़, छह ऋतुए, पानी बरसना, भूकम्प, आधी, ज्वालामुखी आदि जड़ात्मक सृष्टि चलती है। चेतन जीव अनादि अजर-अमर हैं जो अपने ही कर्म-वासना के अनुसार अनेक खानियो मे जन्मते-मरते हैं। यह सृष्टि अनादि-अनन्त है। एक सिरे से न इसकी उत्पत्ति हुई है और न इसका सर्वथा नाश हो सकता है। सभी जड़ तत्त्वो मे अपनी शक्ति है जो अपने गुण-धर्मों के अनुसार स्वाभाविक क्रियाशील हैं।

थोड़े दिन का जीवन है, यहा आकर हमे काम की बाते सोचना चाहिए। इस सृष्टि की लालबुझक्कड़ी कहानी के पीछे पड़कर अपना समय बरबाद नही करना चाहिए। इसके लिए सब मजहबी लोग अपने-अपने ढग से कल्पना करते हैं। कोई कहता है अमावस्या ने सृष्टि बना दिया, किसी ने कह दिया सूर्य से टूटकर पृथ्वी बनी, कोई कहता है हमारे प्रभु ने इसे छह दिन मे बना दिया, तो कोई कहता है हमारे ईश्वर ने कहा—'हो जा' बस, सृष्टि हो गयी आदि। यह सब अनर्गल प्रलाप और भावुकता मात्र है। अपने समय और शक्ति को कल्याणकारी कार्यों मे लगाने से ही शाति है। मेरे सामने तो सृष्टि बनी नही, फिर मैं कैसे बताऊ कि इसे किसने और कैसे बनाया?

गुरुदेव का ऐसा सकारात्मक और वैज्ञानिक विचार सुनकर पत्रकार महोदय भी बहुत प्रसन्न हुए। आपके अनेक सदेशो के साथ-साथ इस बात को भी उन्होने अखबारो मे छापा।

61.

वे भी तो मनुष्य हैं

एक देवी, जो सम्पन्न परिवार की थी, एक दिन गुरुदेव जी के पास आयी। प्रणाम के बाद सामने दरी पर बैठ गयी। गुरुदेव ने पूछ लिया—कहो बेटी, कोई बात?

देवी ने कहा—साहेब जी, मुझे अपने बच्चो के भविष्य के बारे मे बड़ी चिता रहती है। मेरे पतिदेव कई भाई हैं, जिसमे हम सबसे छोटे हैं। बड़े (ज्येष्ठ) के हाथ मे ही घर की बागडोर रहती है। बड़ा कारोबार है, सयुक्त परिवार खूब सम्पन्न है। मैं सोचती हू कि बड़े भाई साहेब कही सब धन लेकर बैठ गये तो हमारे बच्चो का क्या होगा?

गुरुदेव ने कहा—वे मजदूरी करके खायेगे और प्रसन्न रहेगे। बास की कमचिया झुकाकर उसके ऊपर प्लास्टिक डालकर फुटपाथ पर रहनेवाले बच्चो से बढ़कर हैं क्या तुम्हारे बच्चे? वे भी तो मनुष्य हैं। वे भी तो हसते-खाते और जीते हैं। उनका भी तो जीवन चलता है। फिर तुम भवन मे रहने पर भी चिता कर रही हो?

आशा के विपरीत गुरुदेव जी से ऐसा कटु सत्य सुनकर वह देवी काप गयी। गुरुदेव ने कहा—घबराओ न। अच्छा यह बताओ कि तुम्हारे ज्येष्ठ आज तक कुछ गबन किये?

देवी ने कहा—नहो साहेब जी, अभी तक तो ऐसा नही हुआ।

गुरुदेव जी ने कहा—यही विश्वास करो कि आगे भी वे नही करेगे। यदि कुछ धन दबा भी लेगे तो कुछ न कुछ उसका भी समाधान हो जायेगा। पहले से ही सदेह करके अपने मन को अवसादग्रस्त न करो। तुम लोग न हुआ दुख स्वय बुलाकर अपने सिर पर ढोती रहती हो। माता-पिता बच्चो को जो दे देते हैं केवल उसी से उनका विकास नही होता। उनके अपने प्रारब्ध-पुरुषार्थ भी हैं। अन्ततः यह सोचो कि सबका गुजर-बसर होगा। सब कमायेगे-खायेगे। तुम बहुत सोच-सोचकर व्यर्थ मे दुखी मत होओ।

गुरुदेव का ऐसा स्पष्ट समाधान पाकर वह देवी प्रसन्न और सतुष्ट हो गयी। दुबारा मिलने पर वह कही—अब मैं उन बातो को सोचती ही नही हू।

62.

चिंता तो वे करें

कुछ लोगो की आदत होती है कि वे अपने साथियो और घरवालो की शिकवा-शिकायत करते रहते हैं। बात-बात मे उन पर सदेह करते हैं, ऐसे लोग कभी सुखी नही हो सकते।

एक वृद्ध सज्जन गुरुदेव जी के पास आये। वे आपसे मिलते-जुलते रहते थे और समझदार भी थे लेकिन उस दिन उनको पता नही क्या हो गया था। अपने लड़को पर अविश्वास प्रकट करते हुए उन्होने कहा—साहेब, मुझे सदेह है कि जब मेरा शरीर छूट जायेगा तो मेरे लड़के मेरे शरीर को दफनायेगे भी या नही।

उन वृद्ध के भोलेपन पर आपको हसी आ गयी। आपने झिड़कते हुए उनसे कहा—बड़े भोले हो! बिलकुल व्यर्थ की बाते सोचते हो। अरे, जब तुम मर ही जाओगे तो लड़के तुम्हारे मृत शरीर को गाड़े चाहे धरे रहे, तुम्हे क्या चिता होगी? चिता तो वे लड़के करे जिनको तुम्हारे मरने पर सोचना पड़ेगा कि पिता जी को कहा गाड़े। नही गाड़ेगे तो क्या तुमको दुर्गन्ध लगेगी? जिनको दुर्गन्ध लगेगी वे झख मारकर बाहर ले जायेगे। तुम इन बिना सिर-पैर की बातो को सोच-सोचकर क्यो जल रहे हो?

गुरुदेव की बातो को सुनकर वृद्ध स्तब्ध रह गय। उन्होने भी महसूस किया कि व्यर्थ की बात को सोचकर मैं परेशान हू। अतत: कुछ दिनो मे उन वृद्ध की मृत्यु हो गयी और उनका अतिम सस्कार भी हो गया। अब उनसे कैसे कहा जाये कि आप निश्चित रहो, आपके शरीर को दफना दिया गया है।

63.

सयोग-वियोग से ऊपर

8 मार्च, 2002 की बात है। गुरुदेव छत्तीसगढ़ के कबीर आश्रम भैंसमुड़ी (मगरलोड) मे थे। एक दिन शाम को प्रवचन करने के बाद आप जगल की तरफ भ्रमण करने निकले। आपके साथ एक ब्रह्मचारी और एक अन्य साधक भी थे। चलते-चलते ब्रह्मचारी ने आपसे पूछा—गुरुदेव! आपके पास जो भी साधक आते हैं, आप सबसे प्यार-स्नेह का व्यवहार करते हैं और सबकी सारी आवश्यकताओ की पूर्ति करते हैं। लेकिन जब उनमे से कोई आपका साथ छोड़कर चला जाता है तब आपको दुखित होते मैं बिलकुल नही देखता हू।

गुरुदेव ने कहा—बेटा! मैं एक गलती करता हू, वह यह कि तुम सबको आधार देने की झझट मे पड़ता हू। लेकिन कोई बात नही, इसे सह लेता हू क्योकि इससे बहुत लोगो को लाभ होता है, कल्याण होता है। लेकिन अब इन्ही मे से कोई चला जाये तो दुखी होऊ, यह दूसरी गलती मैं नही क्M गा। जिसको जाना हो खुशी से जा सकता है। यहा आना-जाना तो लगा हो रहेगा। इन आने-जानेवालो मे दुखी-सुखी होता रहा तो मैं दो कौड़ी का हो गया।

64.

गम-सतोष का प्रभाव

गुरुदेव जी उलझन-झगड़नेवालो से न तो उलझते हैं और न झगड़ते हैं। बल्कि ऐसे लोगो को भी आप अपने गम, सतोष, सहनशीलता और क्षमा भाव के पुनीत प्रसाद से शात और सतुष्ट कर देते हैं। मई, 2003 की बात होगी। गुरुदेव जी सत समाज सहित भोपाल से चलकर बड़ौदा, गुजरात जा रहे थे। ट्रेन मे सत समाज सहित आपका रिजर्वेशन था। जैसे भोपाल स्टेशन पर गाड़ी आयी, सभी सत रिजर्वेशन कोच मे बैठने के लिए प्रवेश करने लगे। प्रवेश करते ही अपनी आरक्षित सीटो के नीचे सत जन सामान रखने लगे। वही सामने एक वृद्ध सज्जन बैठे थे। सतो को देखते ही उन्होने भौ चढ़ाते हुए कहा—यहा आप लोग सामान नही रख सकते। गुरुदेव ने कहा—भैया, ये हमारी सीटे हैं। उन्होने कहा—नही, दोनो तरफ की सीटो के नीचे मेरा कब्जा रहेगा।

सीटो के नीचे काफी जगह खाली होने के बाद भी वे अपना एकाधिकार मानकर डटे रहे। गुरुदेव जी ने सतो को कहा कि तुम लोग यहा कोई सामान न रखो। सतो का सारा सामान जहा-तहा डिब्बे के गलियारे मे पड़ा रहा। सतजन चुपचाप बैठ गये। सतजन चाहते तो वहा अपना सामान रख देते। वे वृद्ध सज्जन कुछ कर नही पाते। लेकिन गुरुदेव का आदेश था। इसलिए सब शात बैठे रहे।

कुछ समय बाद वे सज्जन गुरुदेव के शाति और क्षमाभाव से इतना पिघले कि कहने लगे—महाराज, यहा बहुत जगह खाली पड़ी है इसमे सामान रख दे। इस प्रकार कहते हुए वे स्वय सतो का सामान खिसकाकर सीटो के नीचे रखने लगे। उनके सरल हो जाने पर सतो ने अपना सामान सीटो के नीचे व्यवस्थित रख दिया। इसके बाद तो वे सज्जन बहुत विनम्र हो गये और पूरी यात्रा मे एक भक्त की तरह विनम्र बने रहे।

बड़ौदा स्टेशन आने पर गुरुदेव जी एव सभी सत उतर गये। अभी सब प्लेटफार्म पर ही खड़े थे कि वे वृद्ध सज्जन गाड़ी से उतरकर गुरुदेव के पास आ

गये। वे केले से भरी एक थैली देते हुए कहने लगे—महाराज जी, यह गाड़ी मे ही छूट गया था। गुरुदेव ने उसे ले लिया जबकि आपने उसे जानबूझकर आवश्यकता न होने से छोड़ दिया था कि कोई मागनेवाले बच्चे आयेगे तो खा लेगे। तब तक गाड़ी की सीटी बजी और वे सज्जन प्रणाम करके गाड़ी मे चढ़ गये।

जहा पर सद्‌गुण और रहनी के जल की शीतल धारा है वहा कठोर पत्थर को भी विवश होकर रास्ता देना पड़ेगा।

65.

गाधी जी की जन्मस्थली और तपस्थली पर

कबीर आश्रम सूरत (गुजरात) का कार्यक्रम करते हुए गुरुदेव छह दिसम्बर 2003 को पोरबन्दर पहुचे। दूसरे दिन शाम को एक साधक को साथ लेकर आप समुद्र के किनारे घूमने निकले। लौटते वक्त रास्ते मे महामना महात्मा गाधी की जन्मस्थली पड़ती थी, वहा आप रुक गये। कुछ वर्ष पहले गुरुदेव 1994 ई0 मे यहा आ चुके थे लेकिन साथ के साधक को घुमाने के उद्देश्य से आप अन्दर प्रवेश किये और दिखाने लगे। बापू जी के इस पैतृक मकान की लम्बाई-चौड़ाई करीब सत्तर-चौबीस फिट होगी। पक्की दीवार पर दो तल्ले के मकान मे छोटे-छोटे कमरे हैं। कमरे के सभी दरवाजो की ऊचाई कुछ कम है जिसमे झुककर प्रवेश करना पड़ता है। यह मकान लकड़ियो की धरन और कड़ियो से बना है। अन्दर प्रवेश करते ही वह कमरा मिला जिसमे बापू जी का जन्म हुआ था, वहा पर स्वास्तिक चिह्न बना हुआ है। बापू जी के मकान के दो-तीन मकान के बाद ही कस्तूरबा गाधी का मकान है। उनके जन्म की जगह पर भी स्वास्तिक चिह्न बना हुआ है। उनका भी मकान पक्की दीवार पर लकड़ियो की धरन और कड़ियो के आधार पर बना हुआ है। वर्तमान मे ये दोनो मकान सरकार के सरक्षण मे हैं। सब कुछ दिखाकर चलते वक्त गुरुदेव ने साधक से कहा—किसी का कुछ रह नही जाता है। अधिकतम के नाम और काम भी डूब जाते हैं, कुछ लोगो के अच्छे और बुरे कर्मों की चर्चा कुछ दिन रहती है, परन्तु इससे उनको कोई मतलब नही रह जाता।

बापू जी की तपस्थली सेवाग्राम और साबरमती ये दो मुख्य हैं। सेवाग्राम मे गुरुदेव दो बार पधारे। 14 मार्च, 2001 को गुरुदेव जब वहा पहुचे तो वहा का वर्णन उन्होने अपनी डायरी मे इस प्रकार किया है—महात्मा गाधी का सेवाग्राम आश्रम 100 एकड़ से अधिक जमीन मे है। बापू जी की यहा की कुटिया मे

मिट्टी की दीवार और मिट्टी की जमीन है। और खपड़े से छायी है। महात्मा गाधी बीसवी शताब्दी के दुनिया के सबसे बड़े मानव थे। बापू जी की स्नान स्थली, भोजन की जगह, सोने और बैठने की जगह सब अति साधारण है। जहा से भारत से लेकर इग्लैण्ड तक की राजनीति खनखना उठती थी, वह बापू का आश्रम अत्यन्त सादा और साधारण है।

यह सब देखने के बाद गुरुदेव जी ने एक जगह साथियो के साथ खड़े होकर कहा—गाधी जी का साहस, त्याग, दृढ़ निश्चयता को देखते हुए आश्चर्य होता है, अद्‌भुत पुरुष था वह!

66.

ऋणमुक्त व्यक्तित्व

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी की उम्र उस समय नौ वर्ष की थी। तब आपके पिता सन् 1942 के स्वतत्रता आन्दोलन मे जेल चले गये थे। घर की सारी जिम्मेदारी आपके ही ऊपर आ पड़ी। घर के बाहर-भीतर की व्यवस्था का भार आप कुशलता से सभालने लगे। खानतारा गाव के पास एक गाव है मस्जिदिया। आवश्यक घरेलू सामान वही से लाये जाते थे। मस्जिदिया मे एक दुकानदार थे 'पटेश्वरी प्रसाद' उनसे लेन-देन का आपका विशेषरूप से सम्बन्ध था। पिछले हिसाब मे उनको करीब पन्द्रह रुपये देना और बाकी था।

कुछ दिनो के बाद आपका गृहत्याग हो गया और पटेश्वरी प्रसाद से मुलाकात नही हो सकी। एक दो बार आप खानतारा गये भी तो उस समय इस बात का स्मरण ही न हुआ कि पटेश्वरी प्रसाद जी को पैसा देना है। इसप्रकार वर्षों बीत गये। एक बार बड़हरा कबीर आश्रम मे आपके पिता जी आये हुए थे। उन्हाने आपसे पूछा—साहेब जी, पटेश्वरी प्रसाद से कुछ सौदे का पैसा बकाया रह गया है क्या? तब आपको याद हो आया। आपने कहा—हा, उनको पद्रह रुपये देने थे। बीच-बीच म मुझे याद आया किन्तु उस समय देने का अवसर नही रहता था।

पिता जी तो चले गये और निश्चित है कि वे पैसे का चुकता कर दिये होगे। किन्तु आप पिता जी से पूछ नही पाये थे कि पैसे दिये गये या नही। फिर पिता जी का शरीरात हो गया।

इधर 2004 ई0 मे गुरुदेव का कार्यक्रम कबीर आश्रम सूरत मे था। बस्ती जिला के एक डाक्टर श्री भीखीदास जो आश्रम मे आये हुए थे। बातो-बातो मे गुरुदेव जी ने उनसे पूछ लिया कि पटेश्वरी प्रसाद तो अब शायद जीवित

नही होगे। डा0 साहेब ने कहा—हा साहेब, वे तो वर्षों पूर्व चल बसे। उनके बच्चे हैं।

गुरुदेव ने कहा—जब मैं पूर्वाश्रम मे था, तो घर के कुछ सामान लेन-देन मे करीब पन्द्रह रुपये चुकाने को रह गये थे। पिता जी से एक बार चर्चा हुई थी। निश्चित है कि वे दे दिये होगे लेकिन मैं उनसे पूछ नही सका कि पटेश्वरी प्रसाद को पैसे दिये या नही। फिर बाद मे पिता जी का शरीर ही छूट गया। तो आप पैसे लेते जाये, पटेश्वरी के बच्चो को दे दीजिएगा।

डा0 भीखीदास जी ने कहा—उनको तो यह बात याद भी नही होगी, रहने दीजिए।

गुरुदेव ने कहा—नही, नही, आप लिये जाये। उन्हे दे दीजिएगा। उनको भी हसी आयेगी कि इक्यावन साल बाद आज पैसे मिल रहे हैं। उस समय का पन्द्रह रुपये आज कितना होगा?

डा0 साहेब ने कहा—उधार चाहे जितना पुराना हो, कानून है कि डबल से ज्यादा न दिया जाये।

गुरुदेव ने कहा—लेकिन मैं सात गुना देना चाहता हू। गुरुदेव ने उनको सौ रुपये दिये। जब पैसे ले जाकर पटेश्वरी प्रसाद के बच्चो को दिये तब वे सब बहुत हसे।

67.

अनात्म पर समीक्षा

8 जून, 2004 रीवा नगर की बात है। अपराह्न के साढ़े तीन बज चुके हैं। आकाश मे हल्के बादल छाये हुए हैं। हवा शात है। शहर का कोलाहल कमरे मे आ रहा है। गुरुदेव जी अपने आसन पर आखे बन्द किये ध्यानस्थ बैठे हैं। दो सज्जन दरवाजे के पास आकर खड़े हो गये। मैंने पास जाकर पूछा—आप लोगो का कैसे आगमन हुआ? उन्होने कहा—हम साहेब जी से मिलना चाहते हैं। मैंने गुरुदेव जी से आज्ञा लेकर उनको अन्दर आने की अनुमति दे दी। दोनो आये और प्रणाम करके गद्दे पर बैठ गये। उनमे से एक की उम्र करीब 65 वर्ष की तथा दूसरे की लगभग 60 वर्ष की रही होगी।

दोनो सज्जन बौद्ध विचार के थे। बैठने के बाद उसमे से एक सज्जन एक पर्चा निकाले और गुरुदेव जी को देने लगे। गुरुदेव जी ने मुझे सकेत किया कि पर्चा देखो। मैं हाथ मे लेकर पढ़ने लगा। उसमे करीब बीस प्रश्न थे। प्रश्न कुछ

इस प्रकार के थे—आप आत्मा को अमर मानते हैं, यदि आत्मा अमर है तो वह कहा रहता है? शरीर के किस अग मे आत्मा रहता है? किसी एक अग मे रहता है या पूरे शरीर मे? किसी एक अग मे रहता है तो अन्य अगो का सचालन कैसे होता है? यदि पूरे शरीर मे रहता है तो क्या शरीर के साथ आत्मा भी बड़ा होता जाता है? यदि वह है तो उसका प्रत्यक्षीकरण क्या नही होता? वह आत्मा शरीर छूटने के बाद कहा रहता है? दूसरे शरीर मे यदि जाता है (पुनर्जन्म होता है) तो कैसे? आदि-आदि।

पर्चा मैं पढ़ ही रहा था कि गुरुदेव जी मेरे हाथ से पर्चा लेकर स्वय पढ़ने लगे। पढ़कर गुरुदेव जी मुस्कराते हुए पर्चा वापस कर दिये। गुरुदेव जी ने कहा—आपने तो अपने अनुसार कुछ निश्चय किया ही होगा? उन्होने कहा—महाराज, हम तो आपसे जानने आये हैं। आप बतावे, यह सब कैसे है?

कुल मिलाकर वे लोग गुरुदेव जी से वाद-विवाद करके अनात्मवाद को सिद्ध करने आये थे।

गुरुदेव जी अब अपने विचार बोलना शुरू किये—जो चीज है वह गायब कहा हो जायेगी? जो नही है वह आ कहा से जायेगी? आत्मा यदि नही है तो कौन बोल रहा है? ज्ञान-विज्ञान की हलचल धरती पर कौन मचा रखा है? तथागत बुद्ध ने धम्मपद मे कहा है—

अत्ता हि अत्तनो नाथो को हि नाथो परो सिया।
अत्तना'व सुदन्तेन नाथं लभति दुल्लभं॥

अर्थात—आत्मा ही आत्मा का स्वामी है। उसका स्वामी दूसरा कौन हो सकता है? जब मनुष्य अपने आप का पूर्ण दमन कर लेता है, तब वह दुर्लभ दमित आत्मस्वामी को पाता है।

अत्तना चोदयत्तान पटिवासे अत्तमत्तना।
सो अत्तगुत्तो सतिमा सुखं भिक्खु विहाहिसि॥

अर्थात—जो अपने को अपने से प्रेरित करता है तथा अपने द्वारा अपने मे स्थित होता है, वह आत्मसुरक्षित तथा सावधान भिक्षु सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

अत्ता हि अत्तनो नाथो अत्ता हि अत्तनो गति।
तस्मा सञ्ञमामयत्तानं अस्सं भद्रं' व वाणिजो॥

अर्थात—आत्मा ही आत्मा का स्वामी है और आत्मा ही आत्मा का प्राप्तव्य है। इसलिए वैसे ही आत्मा पर सयम करे जैसे व्यापारी अच्छे घोड़े को सयमित करता है।

तथागत बुद्ध कहते हैं—अनादि काल से हम जन्म पर जन्म धरते चले आये हैं। ऐ गृहकारक! मैंने अब कड़िया खीच ली हैं, इस गृह को बनाना बन्द कर। तृष्णा ही शरीर रूपी घर को बनाती है। जिसने तृष्णा के साथ राग-द्वेष रूप कड़ियो को खीच लिया है वह पुनः जन्म नही लेता। इस प्रकार आत्मसत्ता के करीब आठ उदाहरण बुद्ध वचन से गुरुदेव जी ने दिया।

गुरुदेव जी ने कहा—यदि आत्मा नही मानोगे, पुनर्जन्म नही मानोगे तो ईश्वरवाद मानना पड़ेगा। जबकि महात्मा बुद्ध ने ईश्वरवाद का खुलकर खडन किया है। फिर एक चमत्कार मानना पड़ेगा। आखिर यह शरीर कहा से आया? अचानक मा के गर्भ से जन्म लेकर कुछ दिनो मे लुप्त हो गया, यह एक चमत्कार नही है तो और क्या है? लेकिन ऐसी बात नही है। एक जन्मते ही मर जाता है, एक जन्म के कुछ काल बाद मरता है, एक बूढ़ा होकर साठ, सत्तर या नब्बे-सौ वर्ष बाद मरता है और एक मा के पेट ही मे मर जाता है, तो ऐसी विषमता क्यो?

एक मा के जुड़वा बच्चे पैदा होते हैं। उनमे एक महा बुद्धिमान और एक महा बुद्धिहीन और मूढ़ होता है, ऐसा क्यो? एक सर्वांग सम्पन्न, सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट और दूसरा जन्म स ही अपाहिज और रोगी है, यह कैसे हो गया? जब आत्मा नही है तो यह अचानक चमत्कार नही है तो और क्या है? चमत्कार जितना भी होता है वह निरानिर झूठ और छल-कपट होता है। आत्मा को माने बिना सृष्टि को नही समझ सकते। आत्मा है तभी तो उसको अपने कर्मों का फल आज, आगे अथवा अगले जन्म मे मिलता है। कर्म-फल अकाट्य है, इसको कोई भले झुठला ले, लेकिन परिणाम से बच नही सकता। एक साथ जन्मे बच्चो मे यह जो विषमता दिख रही है वह अपने-अपने कर्मों का फल ही है। आत्मा नही मानोगे तो बस आज का सुख ही सब कुछ दिखेगा। तो इसके लिए चलो तलवार-बदूक लो और लूटो-फूको। हा, शासन से बचना है, पुलिस न जान पाये, बस! पुलिस भले न जान पाये लेकिन आप की आखे तो देखती हैं, आपकी अतरात्मा तो जानती है। आप छिपकर किसी की हत्या कर देगे, निरपराध को लूट लेगे, कोई नही जान पाया लेकिन अन्दर-अन्दर जलते रहेगे।

आत्मा कोई सूत का बण्डल या दीपक की ज्योति नही है, जो खुलते-खुलते या जलते-जलते एक दिन समाप्त हो गया, और काम खत्म। यह आत्मा क्षणिक विज्ञान भी नही है कि इस क्षण जो विज्ञान काम किया दूसरे क्षण अगले विज्ञान पर अपनी सत्ता दे जाये। तीसरे क्षण तीसरा विज्ञान सभाले।

एक व्यक्ति ने चोरी की, वह पकड़ा गया, जेल गया, मुकदमा चला। आठ वर्ष के बाद उसको फासी की सजा हुई। क्षणिक विज्ञान के हिसाब से यह बहुत

बड़ा अन्याय हुआ। चोरी तो किसी विज्ञान ने की, पकड़ा गया दूसरा विज्ञान, मुकदमा लड़ा किसी और विज्ञान ने और फासी हुई किसी और विज्ञान को जो एकदम निरपराध था। इतने दिनो मे तो करोड़ो विज्ञान आये-गये। लेकिन आत्मा ऐसा क्षणिक विज्ञान नही है। आज से 20 वर्ष, 40 वर्ष, 50 वर्ष पूर्व की घटनाए हम याद करते हैं। यदि आत्मा क्षणिक होता तो ये घटनाए कैसे याद होती?

एक आदमी खाये, एक देखे, एक सुने, एक सूघे और एक स्पर्श करे तो इन पाचो विषयो का ज्ञान किसी छठे व्यक्ति को नही हो सकता। लेकिन चेतन जीव इन पाचो इन्द्रियो के विषयो का अनुभव करता है।

धर्म मे आज दो मत ऐसे हैं जो अपने ही पैरो मे कुल्हाड़ी मार रहे हैं। एक हैं—स्वामी शकराचार्य के अनुयायी। ये अद्वैत ब्रह्मवाद मानते हैं। इनके ख्याल से एक ब्रह्म के अलावा दूसरे की सत्ता ही नही है। सुननेवाला यदि कहे कि यहा तो नानात्व भासता है तो ये तुरन्त बोल पडेगे—भ्रम से ही ऐसा आभास हो रहा है।

विवेकवान कहते हैं जब सर्वत्र एक ही ब्रह्म है तो आज तक किसी की मुक्ति भी नही हुई? क्योकि यह ससार प्रत्यक्ष दिख रहा है। यदि आजतक कोई मुक्त हो गया होता तो यह ससार होता ही नही, क्योकि ब्रह्म तो एक ही है। वह मुक्त हो गया तो बस ससार समाप्त! पूछनेवाले ने अद्वैत ब्रह्मवादी से पूछा कि स्वामी शकर, शुकदेव आदि की मुक्ति हुई कि नही? तो ये सिद्धान्त-मोही उनके लिए भी यही कह देते हैं कि उनकी मुक्ति नही हुई। यह अपने पैरो मे कुल्हाड़ी मारना ही तो है!

इसी प्रकार बुद्ध के अनुयायी भी हैं। ये कहते हैं—आत्मा ही नही है। आत्मा ही नही है तो यह साधना किस काम की? निर्वाण किस काम का? निर्वाण होगा किसका? आत्मा जब नही है तो कौन बधन मे है और कौन मुक्त होगा? निर्वाण के लिए जो यह प्रयास किया जा रहा है वह फिर एक खिलौना मात्र रह जायेगा।

वस्तुत: आत्मा है, यह ध्रुव सत्य है। यह आत्मा ही—'है' और 'नही है'—ऐसा कह रहा है। जहा से यह ज्ञान-विज्ञान प्रस्फुटित हो रहा है, 'है', 'नही है' का जहा से सदेह हो रहा है वही आत्मा है। उसको आखो से कैसे देख सकते हो। वही तो इन आखो से ससार को देखता है।

गुरुदेव का निर्णय सुनकर उनमे से एक ने बीच मे प्रश्न किया—महाराज, मैं पेशे से ड्राइवर हू। जैसे एसिड तथा कुछ अन्य पदार्थ मिलाकर उसके सम्बन्ध से गाड़ी चलाई जाती है, उसी प्रकार क्या यह शरीर नही हो सकता?

गुरुदेव जी ने कहा—आपका भाव मैं समझ गया। कई चीजो के सम्बन्ध से जो बनेगी वह चेतन नही हो जायेगी। वह जड़ ही रहगी। 'कारण गुणपूर्वक: कार्य गुणो दृष्ट:।' कारण के गुणो के अनुसार ही कार्य मे गुण होगे। मिर्चा तीता है तो उसका शर्बत भी तीता ही होगा। शताधिक जितने तत्त्व माने गये हैं उनमे किसी मे भी चेतना नही है। फिर उनके सयोग से चेतना कहा से आ जायेगी। स्वय सोचे, किसी के पिछलग्गू बनकर उसी मे बह जाने से सत्य को नही समझा जा सकता। चेतना एक गुण है। जिसका द्रव्य चेतन, जीव है। वह सभी देहधारियो मे है। उसी को रूह, सोल, जीव, आत्मा इन शब्दो से जाना जा सकता है।

इस प्रकार निरर्थक प्रश्न करके अपने समय-शक्ति को बरबाद नही करना चाहिए। साधना करना चाहिए। आज तथागत बुद्ध होते और आप यह पर्चा लेकर उनके पास जाते तो वे आपके इस पर्चे को फाड़कर फेक दिये होते। वे आप लोगो से कहते कि साधना करो, विकारो का त्याग करो, बोध प्राप्त करो और ससार से उपराम होकर शाति लो। इतना कहकर गुरुदेव जी मौन हो गये।

उन दोनो सज्जनो को प्रसाद दिया गया। दोनो गुरुदेव के इस निर्णय वचन से बहुत गद्‌गद थे। फिर गुरुदेव जी ने उन दोनो से कहा कि अब आप लोग रात्रिकालीन सत्सग मे भी आइये।

68·

गुरुदेव का धैर्य

सन् 2005 के मई मे झारखण्ड के गोड्डा जिला मे तीन दिन का कार्यक्रम था। विशाल भीड़ थी। पडाल मे एक छोर से दूसरे छोर के व्यक्ति को पहचानना भी मुश्किल होता था।

एक दिन शाम के कार्यक्रम मे जैसे ही गुरुदेव का प्रवचन शुरू हुआ वैसे ही पानी बरसने लगा। मच के ऊपर हालाकि वाटर-प्रूफ शामियाना लगा हुआ था लेकिन गुरुदेव जी जहा बैठे थे उसके ऊपर वाटर-प्रूफ नही था। अतएव आपके ऊपर पानी गिरना शुरू हो गया। कितु आप उठे नही प्रवचन करते रहे, सारे कपड़े भीग गये। आधे घटे तक बारिश होती रही लेकिन पानी की परवाह किये बिना ही आप पूरा एक घटा तक प्रवचन करते रहे।

जब गुरुदेव जी स्वय भीगते हुए प्रवचन करते रहे तब श्रोता लोग क्यो उठे! वे भी सबके सब बैठे ज्ञानामृत का पान करते रहे। पानी बरसने से सत्सग मे कोई विघ्न नही हुआ। लोगो को आपके विचार सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि

ऐसे महापुरुष को सुनने का हमे सौभाग्य प्राप्त हुआ जो केवल कहता ही नही कितु करता भी है।

69.

भेद-भाव रहित बरताव

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी का कार्यक्रम फैजाबाद जिला मे सोहावल के पास दो गाव मे था। एक ग्राम मिझौरा मे श्री भगौती प्रसाद केवट द्वारा आयोजित तथा दूसरा कुछ ही दूर पर ग्राम करेरू मे श्री शिवचरण बनिया तथा ब्राह्मणो द्वारा आयोजित। ये सभी गुरुदेव जी के भक्त एव प्रेमी थे।

गुरुदेव को पहले केवट परिवार का कार्यक्रम करके तब उन बनिया एव ब्राह्मणो के कार्यक्रम मे जाना था। ब्राह्मणो को जब इस बात का पता लगा तो उन्होने कहा—केवट के घर से गुरु जी ब्राह्मणो के घर आये यह अच्छा नही है। उन ब्राह्मणो ने कहा—केवट का कार्यक्रम या तो रद्द कर दिया जाये या तो हमारे गाव मे कार्यक्रम होने के बाद गुरुदेव जी उस केवट के घर पर जाये ।

गुरुदव ने कहा—तुम लोग चाहो तो मैं तुम्हारा कार्यक्रम रद्द कर सकता हू। लेकिन केवट परिवार को मैं कार्यक्रम दिया हू तो उनका रद्द नही कर सकता। हा, यदि वे चाहे तो उनका भी रद्द किया जा सकता है। कितु यदि दोनो चाहते हैं कि मैं तुम लोगो के घर आऊ तो इसमे कोई परिवर्तन नही किया जा सकता। जैसा है वैसा रहेगा।

यदि तुम लोग यह मानते हो कि केवट के घर से आये हुए गुरुदेव को हम कैसे पूजे, अपने बरतन मे हम कैसे भोजन कराये तो इसकी चिता नही है। मत पूजो; मुझे आटा, सब्जी दे देना मैं अलग बना-खा लूगा। तुम लोगो के बरतन नही छूऊगा।

गुरुदेव की ऐसी दो टूक बाते सुनकर ब्राह्मण लज्जित हो गये। उन्होने कहा—गुरुदेव, जैसा आपका कार्यक्रम बना है उसी के अनुसार आप हमारे यहा पधारे, हमे स्वीकार है।

70.

गुरुदेव की सहनशीलता

9 सितम्बर, 2006 की बात है। सुबह ध्यान के पश्चात गुरुदेव जी ने सतो को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु कबीर की एक साखी कही—

कबीर नौबत आपनी, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर पट्टन यह गली, बहुरि न देखहु आय॥

यह मानव जीवन का समय दस दिन अर्थात थोड़े समय का है। इसमे जो नौबत-नगाड़े बजाना हो, बजा लो, अपना कुशल-कार्य कर लो। बाद मे ये गाव, बाजार, गलिया, सड़के पुनः देखने को नही मिलेगी।

जीवन की सारी परिस्थतिया एक समान नही रहती। यहा सब कुछ उथल-पुथल रूप है। कोई महापुरुष हो या साधारण पुरुष, सबको सहने की जरूरत है। प्रतिकूलता सहना है तो अनुकूलता भी सहना है। दुख सहना है तो सुख भी सहना है। अपमान सहना है तो सम्मान भी सहना है। वियोगजनित पीड़ा सहनी है तो सयोगजनित आनन्द भी सहना है। जो सारी परिस्थितिया को सहन करना सीख लिया, अपने मे पचाना सीख लिया फिर उसे दुख कहा! वह सब समय अपने आप को देखता है। इसके बाद गुरुदेव जी ने तथागत बुद्ध की एक कथा सुनायी—

एक बार तथागत बुद्ध अपने भिक्षु सघ को सम्बोधित करने लगे। जैसे ही तथागत ने अपना भाषण आरम्भ किया कि पाच सौ भिक्षु उठकर सभा से चल दिये। किसी भी महापुरुष के इतने अनुगामी अपमान करने के भाव से इस प्रकार उनके सामने से उठकर ही चल दे, यह बहुत बड़ी बात है। बाद मे सारिपुत्र आदि श्रेष्ठ भिक्षुओ ने जाकर उन भिक्षुओ को समझाया और फटकारा भी। तब उनको अपनी मूर्खता समझ मे आयी। फिर अपने अनुशास्ता से वे क्षमा मागकर ठीक ढग से रहने लगे।

गुरुदेव जी ने कहा कि यह तो एक कथा है जो तथागत बुद्ध के सामने घटी है। मेरे भी सामने ऐसी घटनाए घटी हैं। ऐसा ही अपना एक अनुभव मैं सुनाता हू।

V~|• ई0 के पूर्व की बात होगी। मैं कुछ सतो के साथ लखनऊ के एक कार्यक्रम मे गया था। भक्त ने शहादतगज की एक धर्मशाला मे ऊपर सतो का निवास रखा था और उसी धर्मशाला मे नीचे एक हाल था उसमे प्रवचन का कार्यक्रम रखा था। जब मेरे प्रवचन करने का समय आया और मैं प्रवचन शुरू किया तो तुरन्त बीस साधु सभा से उठकर चल दिये। वे साधु वहा से चुपचाप उठकर चल देते तो भी कुशल होता, लेकिन नही; सब लोग खड़ाऊ पहने खटर-पटर की खूब आवाज करते ऊपर गये। ऊपर जाकर जोर-जोर से बाते करने लगे। पूरा विघ्न उत्पन्न करने की चेष्टा उन्होने की। अन्य लोगो को बहुत बुरा लगा लेकिन मैं अपना विचार कहता रहा।

जब कार्यक्रम समाप्त हुआ तो आयोजक भक्त ने उन सतो के पास जाकर उनकी तुरन्त बिदाई कर दी। उन्होने कहा—रात मे तो आप लोग यही सो लीजिए लेकिन सुबह होते ही यहा से आप सब के सब चले जाए। सुबह होते ही सभी साधु चले गये। वे सभी साधु अनियत्रित घूमने वाले बिना बुलाये ही आये थे।

करीब बीस वर्ष बाद इन लोगो के अगुआ सत कोलकाता पहुचे। उस समय मैं भी वही था। वे जानते थे कि धर्मतल्ला मैदान मे रविवार को मैं जाता हू। इसलिए वे भी वहा पहुचे। मैंने सचालक महोदय से उनके लिए कहा—आपको भी कुछ समय बोलने के लिए दीजिए।

उनको समय दिया गया। वे सत बोलने लगे। आधा घटा तक बोले लेकिन पूरे समय वे केवल मुझसे क्षमा ही मागते रहे, विनय और प्रार्थना ही करते रहे। लोगो ने समझा कि ये भक्ति भावना मे यह सब कह रहे हैं। दूसरे दिन वे मेरे निवास (प्रेमप्रकाश जी के घर) पर आकर पैर पकड़कर रोने लगे। उन्होने कहा—प्रभु, मैं अन्दर-अन्दर जल रहा हू।

गुरुदेव ने कहा—अभी तक आप उस बात को लेकर पीड़ित हैं। उसी समय आकर मुझसे मिल लेते तो आपको शाति मिल जाती। ये सब चिता छोड़ो। पुरानी बाते मर चुकी हैं। उस पर सोचने से कोई फायदा नही।

71.

आत्मतृप्ति सर्वोच्च है

10 अक्टूबर, 2006, इलाहाबाद कबीर आश्रम की बात है। उन दिनो गुरुदेव जी स्वामी शकराचार्य जी की 'विवेक चूडामणि' की टीका-व्याख्या कर रहे थे। एक दिन सुबह जलपान के समय मैं कुछ मुसम्मी फल निकाला। गुरुदेव को दिखाते हुए मैंने कहा—गुरुदेव जी, ये फल अपने ही आश्रम के हैं। गुरुदेव ने कहा—अच्छा, आश्रम मे मुसम्मी के पेड़ भी हैं क्या? मैंने बताया—तीन पेड़ हैं किंतु अभी एक ही फलने लायक हुआ है। अन्य दो पेड़ छोटे-छोटे हैं। कुछ दिनो मे तीनो फलने लगेगे तो रस के लिए बढ़िया रहेगा।

गुरुदेव जी ने कहा—अरे भइया, सबसे बढ़िया है आत्मतृप्त रहना। अपने मन को सबसे छुड़ा लेना, सब समय अपने आप मे सतुष्ट रहना, इससे बढ़िया और कुछ नही है। देखो, स्वामी जी इसी बात को कितने जोरदार शब्दो मे कहते हैं—

नियमितमनसामुं त्वं स्वमात्मानमात्मन्ययमहमिति साक्षाद्विद्धि बुद्धि प्रसादात्।
जनिमरणतरंगापारसंसारसिंधुं प्रतर भव कृतार्थो ब्रह्मरूपेण संस्थ:॥

(विवेक चूडामणि, VX{)

अर्थात—तुम एकाग्र चित्त निर्मल बुींh से इस आत्मा को 'यह मैं हू,' स्वय अपने मे प्रत्यक्ष जानो। और जन्म-मरण तरग से भरे ससार-सागर से पार हो जाओ, कृतार्थ हो जाओ और ब्रह्मरूप मे स्थित हो जाओ।

इसलिए जो अपना ब्रह्मस्वरूप चेतन आत्मा है उसमे स्थित होओ, वही बढिया है। उसी मे शाति है। इतना ज्ञानामृत सुनाकर गुरुदेव पुन: अपने लेखन-कार्य मे तल्लोन हो गये।

72.

यथाप्राप्त में सतोष

30 नवम्बर, 2006 की बात है। उन दिनो खूब जोरो की ठड पड़ रही थी। कोई भी मौसम हो और कितना भी प्रतिकूल हो लेकिन एक बार कार्यक्रम निश्चित कर देने के बाद गुरुदेव उसे टालते नही थे। उस दिन गुरुदेव प्रात: ही कबीर आश्रम, धानेपुर गोडा से चलकर फैजाबाद जिला मे भदरसा बाजार आये।

गुरुदेव एव सतो के निवास की व्यवस्था एक छोटे से धर्मशाला मे थी। उस धर्मशाला मे मात्र एक ही कमरा था और एक छोटा-सा किचनरूम था। इसके अलावा एक छोटे बरामदा के रूप मे जगह थी। गुरुदेव के साथ कुल बारह सत थे। आपका आसन यदि कमरे मे रखा जाता तो अन्य सतो का आसन बरामदे मे आ ही नही सकता था। एक सत ने व्यवस्थापक से कहा कि भाई, गुरुदेव के साथ कुल 12 लोग हैं। उस बरामदे मे सब कैसे रहेगे?

व्यवस्थापक ने कहा—साहेब, शक्ति के अनुसार हमने प्रयास किया। अब और व्यवस्था मुश्किल है।

गुरुदेव पीछे खड़े उनकी बात सुन रहे थे, आप धीरे से उसके पास आये और उसके कन्धे पर हाथ धरकर कहे, बेटा, चिन्ता की कोई बात नही, हम तो सड़क के किनारे भी रह सकते हैं। फिर तुम तो मकान की व्यवस्था किये हो। हम सब लोग उसी मे रह लेगे, अलग से व्यवस्था की कोई जरूरत नही है।

गुरुदेव तुरन्त धर्मशाला मे आये, मकान की स्थिति देखी और तुरन्त आपने कहा—इस बड़े कमरे मे सभी सत रहेगे और इस बरामदे मे मैं रहूगा।

गुरुदेव का बरामदे मे रहना किसी को अच्छा तो नही लगा, लेकिन मजबूरी थो। सतो को स्वीकार करना पड़ा। फिर परदा आदि लगाकर उस बरामदे को गुरुदेव के निवास के अनुकूल बनाया गया। उसी मे रहकर दो दिनो का विधिवत कार्यक्रम हुआ।

73.

निंदा-प्रशंसा मे समता भाव

गुरुदेव जी उन दिनो प्रीतमनगर के आश्रम मे समाज सहित रहा करते थे। एक नवयुवक था जो आपके सत्सग मे बराबर आता रहता था। उसके व्यवहार-स्वभाव से ऐसा लगता था कि वह गृह-त्यागकर गुरुदेव के पास आ जायेगा।

गुरुदेव जी उसे समझाते रहते कि बेटा, तुम्हे अभी घर नही छोड़ना है। घर मे रहते हुए सेवा-साधना करो, गृह-त्याग के लिए जल्दबाजी नही करना।

उसका सयम-सदाचार देखकर उनके घर वालो को भ्रम हो गया कि लड़का साधु हो जायेगा। एक दिन उस युवक की मा तथा अन्य कुछ स्त्रिया गुरुदेव जी के पास आयी। आते ही वे आपे से बाहर हो गयी। उसकी मा ने कहा—आप साधु हो गये हैं तो आप साधु बने रहिए, लेकिन दूसरो के बच्चो को क्यो बहकाते हैं। ऐसा करने से आपको पाप पड़ेगा। इस प्रकार जो उसके मन मे आया बोलती गयी।

गुरुदेव जी केवल हसते और मुस्कुराते रहे । ऐसी भोली-भाली स्त्रो को आप क्या समझाते! उसका लड़का वही खड़ा आसू बहा रहा था कि मा गुरुदेव जी को क्या कह रही है।

* * *

दिसम्बर 2006 की बात है। उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिला के भदरसा बाजार मे गुरुदेव का कार्यक्रम चल रहा था। सायकालीन प्रवचन के बाद आप अपने निवास स्थान पर आ गये थे। कुछ क्षण बाद एक डॉक्टर, एक वकील, एक प्रोफेसर, एक लेक्चरर तथा दो और नागरिक आ गये। गुरुदेव कुर्सी पर विराजमान थे। और अन्य सभी लोग सामने बिछे गद्दे पर बैठ गये।

गुरुदेव ने सबका कुशल समाचार पूछा, फिर कुछ बाते होने लगी।

डॉक्टर साहेब ने कहा—आज से छह सौ वर्ष पूर्व सद्गुरु कबीर हो चुके, लेकिन गुरुदेव इस युग के कबीर आप हैं।

गुरुदेव जी—(झिड़कते हुए) चुप रहो, ऐसी बात कभी मुख से निकालना मत। हम कुछ नही हैं। हम तो उन सद्‌गुरु के चरणो के दास हैं।

प्रोफेसर साहेब—लेकिन गुरुदेव, आपने जो काम किया है। वह इस युग के लिए अद्वितीय है।

गुरुदेव जी—ये सब कहने से क्या होगा, जो बन सका मैंने सेवा कर दी है, उसका लाभ लो। यह सब तो उन्ही गुरुजनो की कृपा से हुआ है। यदि सद्‌गुरु कबीर की दृष्टि न मिली होती तो पता नही हम कहा भटकते होते।

74.

मजहबी भावनाओं से ऊपर

इलाहाबाद कबीर पारख सस्थान का वार्षिक अधिवेशन होने जा रहा था। अधिवेशन के पूर्व ही इलाहाबाद शहर मे कुछ जगह बैनर और पोस्टर लगा दिया गया था। एक मुसलिम सज्जन पोस्टर पढ़कर अधिवेशन के बारे मे जाने कि इलाहाबाद मे ही यह कबीर सत्सग होने जा रहा है तो उन्होने फोन किया। गुरुदेव से बात हुई। उन्होने पूछा—महाराज, क्या मैं आ सकता हू?

गुरुदेव ने कहा—हा-हा, बिलकुल आ सकते हैं, आपका पूर्ण स्वागत है। वे सज्जन अधिवेशन के समय ही कबीर विचार गोष्ठी के दिन आये। गुरुदेव के पास बैठे, जलपान आदि किये। इतने मे उनका नमाज पढ़ने का समय हो गया। तो उनको कबीर मदिर के सभागार मे ही जगह दे दी गयी। वे वही पर अपनी चादर बिछाकर नमाज पढ़ लिये। इसके बाद गुरुदेव के साथ प्रवचन पडाल मे गये। कबीर विचार गोष्ठी चल रही थी। उनको भी बोलने का समय दिया गया। उन्होने भी कुछ अपने विचार व्यक्त किये। वे एक अच्छे, समझदार और योग्य व्यक्ति थे। गुरुदेव का स्नेह और आत्मीय भाव को देखकर वे अत्यन्त गद्‌गद थे।

75.

श्री परशुराम त्रिपाठी के वानप्रस्थ आश्रम में

जनवरी, 2007 को माघ मेला प्रयाग मे कबीर सस्थान का कैंप लगा था। वहा प्रवचन देने के बाद गुरुदेव झूसी मे श्री परशुराम त्रिपाठी के आतिथ्य मे गये। त्रिपाठी जी का घर अल्लापुर, इलाहाबाद मे ही पड़ता है। लेकिन उससे भी

अलग एकान्त साधना के उद्देश्य से आप गगा के तट पर एक दूसरा भवन बनवाये हैं। इस भवन का नाम उन्होने 'वानप्रस्थ आश्रम' दिया है। त्रिपाठी जी सात्त्विक प्रवृत्ति के सुलझे हुए विचारक हैं।

गुरुदेव जी आसन पर विराजमान हो गये। सामने दरी पर परशुराम त्रिपाठी तथा उनके अनेक गणमान्य मित्र बैठ गये। वे लोग गुरुदेव जी से सत्सग चर्चा करने लगे।

उनमे से एक ने पूछा—महाराज, श्रीकृष्ण के विषय मे रासलीला बतायी जाती है। क्या वे रास किये थे?

गुरुदेव जी—महाराज श्रीकृष्ण के विषय मे रास जोड़ना हिन्दू समाज के लिए एक कलक है। जब पाडवो द्वारा उनके राजसूय यज्ञ मे श्रीकृष्ण की अग्रपूजा हुई, तब उसे देखकर चेदिनरेश शिशुपाल नही सह पाया है और उसने श्रीकृष्ण जी की अवहेलना करके उन्हे बहुत कटु शब्द सुनाया है। उसने उस समय श्रीकृष्ण को स्त्रीहता और गोहता तक कह दिया है। लगता है इस कथा के उदय होने तक श्री कृष्ण की बाललीला मे पूतना-वध और वृषभासुर-वध तो आ चुका था परन्तु अभो तक रास की कल्पना नही की गयी थी। इसलिए शिशुपाल ने जहा श्रीकृष्ण को बहुत गालिया दी हैं, वहा उन्हे रसिया तथा पर स्त्रियो को लेकर नाचनेवाला नही कहा है। यदि श्रीकृष्ण महाराज रास किये होते तो उसको लेकर शिशुपाल उनकी धज्जिया उड़ा दिया होता लेकिन ऐसा नही हो सका। इसलिए श्रीकृष्ण के साथ रास जोड़ना उनके साथ या भारतवर्ष के साथ, हिन्दू समाज के साथ तथा मानवता के साथ अक्षम्य अपराध करना है।

श्रीकृष्ण महाराज के चरित्र पर प्रकाश डालने वाले वेद, उपनिषद्, महाभारत तथा गीता जब रासलीला का नाम तक नही लेते हैं। तब किस प्रमाण से पीछे के पडितो ने हरिवश, भागवत आदि पुराणो मे उनकी चर्चा कर कृष्ण-चरित्र की हत्या की है? वस्तुत: यह मलिन पडितो के मन की भड़ास है।

आजकल के कुछ विद्वान, ज्ञानी एव महात्मा कहलाने वाले लोग रास का समर्थन करके कहते हैं कि यह भगवान की गुह्यतमगुह्य लीला है। आप भागवत का 'रासपचाध्यायी' पढ़कर देख सकते हैं कि वह आजकल के नाइट-क्लबो के डास से भी अधिक अश्लील है। भागवत आदि मे जैसा रास का वर्णन है, वैसा क्या दस वर्ष का बच्चा कर सकता ह? क्योकि श्रीकृष्ण उस समय दस वर्ष के थे। इसे ईश्वर की गुह्यतमगुह्य लीला कहकर अपने भोलापन मे हिन्दू समाज को धोखा देना है। श्रीकृष्ण स्वय कहते हैं—बड़ा व्यक्ति जैसा करता है छोटे लोग वैसे ही करते हैं। वह जैसा आदर्श स्थापित कर देता है, ससार उसी का अनुसरण

करता है। आश्चर्य है कि जो रास को माने और रासलीला करवाये वह आस्तिक है और जो इसको न माने तथा इससे दूर रहे वह नास्तिक है। ऐसी स्थिति मे भारत की पूरी जनता को इस विषय मे नास्तिक हो जाना चाहिए। तभी वह अपने महान पुरुष पर लगाय इस लाछ्न को मिटा पायेगी।

एक दूसरे सज्जन ने पूछा—महाराज, मूर्ति की पूजा करनी चाहिए कि नही? गुरुदेव ने कहा—जो बोले, डोले, खाये, पिये और आशीर्वाद दे, ज्ञान दे—ऐसी चेतन मूर्ति की पूजा करनी चाहिए। लेकिन लोग चेतन मूर्ति की पूजा न कर उनको धोखा देते हैं, उनकी खुराक छीनते हैं। लोग मिट्टी-पत्थर की एक मूर्ति बनाकर उसे मदिर मे रखकर पूजा करते हैं, उसस भोग-मोक्ष मागते हैं। अच्छे-अच्छे ज्ञानी समझदार लोग भी ऐसा करके अपना समय बरबाद करते रहते हैं।

एक प्रौढ़ सज्जन सामने बैठे थे, वे बोल पड़े—अरे महाराज, ऐसे ज्ञानी लोगो से ज्यादा ज्ञानी तो चोर होते हैं क्योकि वे समझते हैं कि ये पत्थर की मूर्ति है। इसमे से हम कुछ सामान उठा ले जायेगे तो यह हमे पकड़ नही सकती। वे मदिर से भगवान की मूर्ति को भी चुरा ले जाते हैं। उनके मुकुट, आभूषण आदि सब कुछ उठा ले जाते हैं। उन सज्जन के इतना कहते ही सब लोग हस पड़े।

एक दूसरे सज्जन ने पूछा—महाराज, यह कुण्डलिनी क्या है? क्या कुण्डलिनी नाम की कोई चीज शरीर मे होती है?

गुरुदेव जी—कुण्डलिनी नाम की कोई चीज शरीर मे नही होती है? इसकी चर्चा पुराकाल से लोग करते आ रहे हैं, लेकिन यह तथ्य नही, चर्चा मात्र है। मुझे एक वकील ने बताया कि मैं क्रिमिनल यानी आपराधिक मामलो का वकील हू। इसलिए समय-समय से मुझे वहा भी जाकर देखना पड़ता है जहा लोगो का पोस्टमार्टम होता है। मृत लोगो के शरीर को आपरेशन करके देखा जाता है तो वहा कोई कुण्डलिनी नही मिलती है। वस्तुत: हमारे मन के काम, क्रोध, लोभ, मोहादि विकारो की ग्रथि ही कुण्डलिनी है। जिसमे हम अनादि काल से बधे हैं। इन विकारो की गथियो को नष्ट कर देना कुण्डलिनी का भेदन करना है।

परशुराम त्रिपाठी ने कहा—महाराज, कबीर साहेब ने कहा है, ''शब्द बिना साधू नही'' तो यह शब्द क्या है?

गुरुदेव जी ने कहा—शब्द से गाली निकलती है और शब्द से आशीर्वाद भी दिया जाता है। यहा शब्द को इतना महत्त्व क्यो दिया गया है? क्योकि आप शब्द सबके बीच मे नही बताते। हमे जो कहना है हम सबके बीच मे बता देते हैं। पहले आप यह बताइये शब्द को सुनता कौन है?

परशुराम जी—यही प्रश्न मैंने आपसे आठ साल पहले किया था। आपने मुझसे पूछ लिया था कि शब्द को सुनता कौन है? मैंने जाकर अपने गुरु से पूछा कि महाराज जी, शब्द को सुनता कौन है? तो उन्होने कहा—व्यर्थ का प्रश्न कर रहे हो, उसी दिन से मैं उनके पास जाना ही बन्द कर दिया।

गुरुदेव जी—यहा शब्द है निर्णय के शब्द, *''सार शब्द निर्णय को नामा, जाते होय जीव को कामा।''* वह साधु साधु कैसा जिसमे निर्णय के शब्द न हो। शब्द बड़ा नही होता है, शब्द को जाननेवाला बड़ा होता है। रूप बड़ा नही होता है रूप को जाननेवाला बड़ा होता है। वह आप स्वय हैं। इसकी चर्चा उपनषिदो मे भी आयी है—

यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते॥
यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते॥ (केन उपनिषद्)

अर्थात—जो वाणी से व्यक्त नही होता, कितु जिसकी सत्ता से वाणी व्यक्त होती है उसी को तू ब्रह्म जान। वाणी से व्यक्त जिस विषय की तू उपासना करता है वह ब्रह्म नही है।

जिसे आख नही देखती कितु जिसकी सत्ता से आखे देखने मे समर्थ होती हैं, उसी को तू ब्रह्म जान। आखो से देखकर जिसकी तू उपासना करता है वह ब्रह्म नही है।

एक सज्जन ने कहा—महाराज! जाननेवाला बड़ा है तो मैं आपको जानता हू इसलिए क्या मैं आपसे बड़ा हो गया?

गुरुदेव—आप हमे क्या जानते हैं? इस देह को जानते हैं और देह मैं नही हू। आप मुझे जानते हैं और मैं आपको जानता ह् तो दोनो सजाति ठहरे। दोनो चेतन, दोनो ज्ञानवान हैं। यहा जानी हुई वस्तु से जाननेवाला श्रेष्ठ है, इसका मतलब है कि शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध ये दृश्य हैं, जड़ पदार्थ हैं। और जड़ पदार्थ दृश्य हैं, द्रष्टा नही; भोग्य हैं, भोक्ता नही; कार्य हैं, कर्ता नही। इस दृश्य, भोग्य और कार्य से द्रष्टा, भोक्ता और कर्ता श्रेष्ठ होता है। वही आत्मा है। इसलिए अपने को जाने। ऋषि कहते हैं—

''प्रतिबोधविदितं मतममतत्वं हि विन्दते।'' (केनोपनिषद्)

अर्थ है कि मन की अतर्मुखता द्वारा उत्पन्न हुए ज्ञान से ही अमरता प्राप्त होती है। प्रति कहते हैं लौटने को। जब मन ससार से लौटकर अतर्मुख होता है उस समय जो ज्ञान होता है वह प्रतिबोध है। इस प्रसग के अनुसार दृश्य-पदार्थ

रूप ससार को जानना बोध है और उससे लौटकर आत्मा का अपनी ओर देखना प्रतिबोध है। इतना कहकर गुरुदेव मौन हो गये। इसके पश्चात गुरुदेव जी एव सभी सत जलपान किये और वापस कबीरनगर आश्रम आ गये।

76.

तम्बाकू से इतना प्रेम!

10, 11 अप्रैल, 2007 मे दो दिनो का कार्यक्रम चिवरी ग्राम (छत्तीसगढ़) मे था। प्रथम दिन शाम की बात है। सतजन प्रवचन कर रहे थे। गुरुदव को बुलाने के लिए बहुत-से भक्त लोग आपके निवास पर आये। श्री दोनदयाल जी गुरुदव के बहुत पुराने मित्र हैं। जब से गुरुदव छत्तीसगढ़ आना शुरू किये तब से वे आपसे बराबर दर्शन, सत्सग का लाभ लेते रहे। श्री दोनदयाल जी प्रतिष्ठित परिवार के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इतना सब होते हुए भी उनको तम्बाकू खाने की आदत थी। जब वे गुरुदव के पास गये तब भी मुख मे तम्बाकू दबाये हुए थे। इसीलिए वे गुरुदव के सामने ठीक से बोल नही पा रहे थे। फिर भी सभालते हुए उन्होने निवेदन किया कि साहेब जी, पडाल मे अब आप दर्शन दने की कृपा करे।

गुरुदव समझ गये कि ये मुख मे तम्बाकू दबाये हुए हैं। आपने झिड़कते हुए कहा—तम्बाकू से इतना प्रेम हो गया है कि उसे खाये बिना नहो रह सकते हो। जाओ मुख साफ करके आओ। ऐसा सुनते ही श्री दोनदयाल जी अत्यन्त लज्जा महसूस किये। तुरन्त कमरे से बाहर आये और कुल्ला करके मुख साफ किये और गुरुदव के पास आकर बदगी करते हुए कहा कि गुरुदव, आज से सकल्प लेता हू कि मैं सब समय के लिए तम्बाकू का त्याग करता हू।

गुरुदव ने कहा—धन्यवाद! तुम्हारे जैसे समझदार एव प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए यह शोभा नही दता था। वस्तुत: यह मेरी ही गलती है कि मैंने पहले से नही टोका। पहले से यदि टोकता तो निश्चित है बहुत पहले ही तुम ये सब त्याग दिये होते।

77.

क्या बच्चेवाले सुखी हैं?

21, 22 दिसम्बर, 2007 को गुरुदेव का कार्यक्रम गोडा जिला के धानेपुर कबीर आश्रम मे था। उस समय ठड खूब जोरो से पड़ रही थी। धूप निकलने पर

आप आश्रम के आगन मे आये। दर्शनार्थी आपके पास आकर बदगी करके दरी पर बैठ गये। काफी देर तक आपके पास बैठे सत्सग-वार्ता करते रहे। लगभग साढ़े दस बज गये होगे। गुरुदेव आगन से उठकर अपने कमरे मे चले गये। आप कुछ विश्राम करने के लिए दरवाजा बन्द करने ही वाले थे कि दो देविया आप के पास आ गयी। वे सामने बैठकर बदगी की और बैठी ही रह गयी। ये दोनो सास-बहू थी।

गुरुदेव ने कहा—तुम लोग चलो सत्सग मे बैठो, यहा बैठने का समय अभी नही है। मैं भी वही आ रहा हू।

सास ने कहा—साहेब, हम बहुत दुखी हैं।

गुरुदेव ने कहा—क्यो दुखी हो? क्या पेटभर भोजन नही मिलता है?

सास—मिलता है।

गुरुदेव—तब क्या दुख है?

सास—साहेब, यह मेरी बहू है। इसका विवाह हुए सात वर्ष हो गये लेकिन अभी तक इसे बच्चा नही हुआ।

गुरुदेव—क्या बच्चेवाले सुखी हैं?

सास—सुखी तो नही हैं।

गुरुदेव—तब इसको क्यो दुख देना चाहती हो? बच्चेवाले कितना सुखी हैं? बच्चा बेचारा क्या करेगा! अरे बच्चा हो गया है तो पढ़ेगा-लिखेगा। बड़ा होगा, तो वह भी कमायेगा-खायेगा। उसकी पत्नी आयेगी तो उसकी तरफ उसका मन बटेगा। मजबूर होकर उसको पत्नी के अनुसार कुछ करना पड़ेगा। तो आप कहेगे कि बच्चा कलयुगी है। अगर बच्चे नही हैं तो लड़ाई नही करना होगा। और बच्चे हैं तो उनसे लड़ो, उनको लात-जूता सहो, बस। लड़के तो बहुत हैं दुनिया मे, लेकिन हा, एक अपना लड़का होना चाहिए, जो बाप की मूछ उखाड़ सके! दूसरे क लड़के तो मूछ नही उखाड़ेगे। अपने हैं तो गरमाहट आती है।

दोनो महिलाए गुरुदेव की बातो को सुनकर वही बैठे-बैठे हसने लगी। गुरुदेव ने कहा—चलो, सत्सग मे। लड़के-बच्चे के चक्कर मे न पड़ो। कोई बाबा अपनी झोली मे बच्चा नही रखे है जो तुम्हे दे देगा। ये बाबा, महात्मा, पडित, पुजारी नामधारी लोगो से सावधान रहना नही तो बच्चा देनेवाले ऐसे लोग सब प्रकार से शोषण करने के लिए तैयार हैं।

गुरुदेव के इस प्रकार कुछ समझाने से उन्हे सतोष हुआ और बदगी करके दोनो देविया बाहर आ गयी।

78.

कृपा दृष्टि

: 1 :

यह घटना 18 अगस्त, 2007 की है। गुरुदेव 16 अगस्त को सत श्री धर्मेन्द्र साहेब, श्री गुरुवेन्द्र साहेब, श्री गुरुरमन साहेब, राम दास, ब्र0 श्री करमचद तथा कुछ अन्य सतो को साथ लेकर इलाहाबाद से कबीर आश्रम नवापारा (राजिम), रायपुर, छत्तीसगढ़ आये।

जब आप स्नानादि से निवृत्त हो गये तो निकटवर्ती गाव दर्रा के भक्त श्री गुलाब सिह की धर्मपत्नी भक्तिमती अनुसूइया देवी आ गयी। उन्होने गुरुदेव से प्रार्थना करते हुए कहा—हे गुरुदेव, मेरे पति काफी अस्वस्थ रहते हैं। अब उनका लगभग अतिम समय है। एक बार कृपा करके उनको दर्शन दे दे। वे आपकी बराबर याद करते रहते हैं। गुरुदेव ने कहा—ठीक है, तुम चलो, शाम को हम आयेगे। साय तीन बजे गुरुदेव कुछ सतो के साथ उनके घर गय। गुलाब सिह जी खाट पर बैठे हुए थे। आपके पहुचते ही उन्होने नारियल, फूल और पैसे आदि आपके चरणो मे समर्पित किया। गुरुदेव ने उनके स्वास्थ्य के बारे मे पूछा। गुलाब सिह जी ने कहा—दर्द रहता है। गुलाब सिह को गले का कैंसर हो गया था। गुलाब सिह को मानसिक हादसा न हो इसलिए उन्हे यह बात बतायी नही गयी थी। गुरुदेव भी चुप रहे।

आपने उन्हे समझाया—घबराओ मत, सब बीत जायेगा। यह शरीर-ससार दुखो का घर है। इसमे रहने से कोई फायदा नही है। इसलिए जब तक शरीर है तब तक देह और ससार से अनासक्त होने का अभ्यास करना चाहिए। आप देह नही हैं, आपका स्वरूप अजर-अमर है। उसमे न कोई रोग आ सकता है और न कोई पीड़ा। इसलिए बारम्बार अपने मन को शरीर-ससार से हटाकर आत्मा मे लगाने का अभ्यास करो।

गुरुदेव की करुणा एव साहस से भरी वाणी सुनकर श्री गुलाब सिह जी का चेहरा प्रसन्न हो गया। उन्होने कहा—गुरुदेव, आपकी बड़ी कृपा जो इतनी दूर से चलकर मुझे दर्शन दिये।

गुरुदेव ने कहा—अपने बोधभाव मे मस्त रहिए, यह शरीर तो कूड़ा-कचरा है। इसे तो एक दिन छोड़ना ही है फिर चिता किस बात की?

: 2 :

गुरुदेव पहले भक्तो के बुलाने पर उनके घर जाते थे। इधर कई वर्षों से घर-घर जाना आपने बन्द कर दिया है। आपके शरीर की ढलती हुई अवस्था को देखकर सब लोगो को सतोष करना पड़ा।

घर-घर जाना आपने बन्द जरूर कर दिया है लेकिन किसी विशेष कारण वश कोई व्यक्ति बुला रहा है तो उसके घर आप अवश्य जाते हैं।

आप उन दिनो नवापारा कबीर आश्रम मे विराजमान थे। दूसरे दिन से ही वहा का वार्षिक अधिवेशन प्रारम्भ होना था। आपक पास कुछ भक्तो का आग्रह आया कि थोड़ी देर के लिए ही सही गुरुदेव को दो गाव मे जाना ही होगा। उनमे एक था हसदा (मानिकचौरी)। दो वर्ष पूर्व एक युवक पेड़ से गिर जाने पर शरीर से अत्यन्त अशक्त हो गया था। कमर के नीचे के सभी अग चेतनाहीन हो गये। चलना-फिरना तो दूर, टट्टी-पेशाब कब उतर जाती है यह भी उसको पता नही चलता। उस युवक को देखने के लिए उसके पिता जी गुरुदेव को बुलाने आये थे। दूसरा था दर्रा गाव। वहा के प्रसिद्ध भक्त श्री जगतपाल जी का अभी दो दिन पूर्व शरीरात हो गया था। इसलिए उनके घरवालो को सान्त्वना देने हेतु उनके सुपुत्र आपको बुलाने आये थे।

गुरुदेव ने दोनो को कहा—बाईस फरवरी की शाम को यहा का कार्यक्रम खत्म होने के बाद तेईस को सुबह मैं चल सकता हू। लोगो ने स्वीकार किया।

तेईस तारीख को सुबह ही गाड़ी आ गयी। दो अन्य भक्तो के गाव जाने के बाद गुरुदेव पहले हसदा गये। वह युवक कुर्सी पर बैठा हुआ था। घर के अन्य लोग आये। सब लोग नारियल, फल, पैसा आदि गुरुदेव के चरणो मे चढ़ाकर बन्दगी किये। चलते वक्त पुनः आप उस युवक के पास खड़े हो गये। वह कुर्सी पर बैठे-बैठे गुरुदेव को कुछ फल-फूल आदि समर्पित करके चरण-स्पर्श किया। गुरुदेव उसको सबोधित करके कुछ अमृत उपदेश सुनाने लगे—बेटा! हर परिस्थिति मे प्रसन्न रहना चाहिए। किसी भी अवस्था, परिस्थिति से अपने को जोड़ना ही दुख है। अब तुम सोचो कि पहले मैं चलता था, दौड़ता था, घूमता और गाड़ी चलाता था। लेकिन हाय! आज तो कुछ कर ही नही पाता हू। ऐसी स्थिति मे मन दुखी होगा ही। बेटा! तुम यह सोचो कि मैं चल नही पाता हू तो कोई बात नही, बैठ तो सकता हू। देख-सुन तो सकता हू। पढ़ तो सकता हू। ऐसी स्थिति मे तुम्ह बोध-विचारपरक गथो का खूब अध्ययन करना चाहिए। इससे तुम्हारा समय अच्छा बीतेगा और ज्ञान मिलेगा। यह सोचो कि ससार मे ऐसे अनेक असाध्य रोगो से पीड़ित लोग हैं जो अत्यन्त पीड़ा से छटपटाते हुए

जी रहे हैं। उनस तो तुम अच्छे ही हो। इस प्रकार मन मे साहस रखो। गुरुदेव उसके सिर एव गाल को प्यार एव करुणा से सहलाते हुए—खूब प्रसन्न रहो—कहकर वापस चल दिये।

हसदा से लौटकर आप दर्रा गाव भक्त श्री जगतपाल जी के घर आये। जगतपाल जी के बहू-बेटे, पौत्र आदि सभी लोग पहले से प्रतीक्षारत थे। गुरुदेव जी के आते ही सब लोग पुष्पहार, द्रव्य आदि सामग्री चढ़ाकर आपके समक्ष बैठ गये। आपने कहा—जगतपाल जी कोई साधक नही थे। लेकिन उनका स्वभाव ही ऐसा था कि वे सुख-दुख, हर्ष-शोक, अनुकूल-प्रतिकूल, सयोग-वियोग आदि सभी परिस्थितियो मे सम रहते थे। वे न कभी घबराते थे और न कभी दुखी होते थे। प्रसन्न रहना तो उनका सहज स्वभाव ही था।

सामने बैठे हुए लोगो को सम्बोधित करते हुए गुरुदेव ने कहा—इसी प्रकार तुम सब लोग अपने पिता-पितामह का आदर्श लो। ऐसे ही अपने जीवन को बनाओ और सब समय सेवा, भक्ति मे लगे रहो।

79.

गुरुदेव जी श्रावस्ती मे

25, 26 और 27 नवम्बर, 2007 को इकौना बाजार मे गुरुदेव जी का कार्यक्रम था। वहा से सात कि0मी0 दूरी पर तथागत बुद्ध की तपस्थली श्रावस्ती का अवशेष स्थित है। 27 नवम्बर, 2007 को गुरुदेव जी और सभी सत श्रावस्ती घूमने गये। गुरुदेव जी पहले भी कई बार श्रावस्ती जा चुके हैं।

जेतवन के दक्षिण-उत्तर कोण पर सैकड़ो एकड़ का परिसर है जिसे थाईलैण्ड की एक माता जी ने लिया है। उनकी बहुत-सी शिष्याए यहा रहकर सब काम करवाती हैं। गुरुदेव जी के यहा पहुचते ही एक माता जी ने गेट खोला और वे सबको घुमाने ले चली।

यहा पर एक विशाल मदिर बना हुआ है जो लगभग 200 फीट लम्बा और 100 फीट चौड़ा होगा। मदिर की ऊचाई भी 20 फीट से कम न होगी। इसके हाल के अन्दर करीब 30 स्तम्भ होगे। मदिर के अग्र भाग मे बुद्ध की एक विशाल मूर्ति लगी हुई है। जो धातु की बनी है। हाल मे पहुचते ही माता जी ने चटाइया लेकर बिछा दी। गुरुदेव जी एव सभी सत उस पर बैठ गये। सब लोगो ने वहा कुछ मिनट ध्यान किया। अत मे गुरुदेव जी ने पूज्य तथागत की साधना और समाधि के बारे मे कुछ चर्चा सुनायी। यह मदिर अत्यन्त कीमती पत्थरो से

बना तथा आकर्षक एव भव्य है। इस मदिर के बाहर ठीक सामने ही एक विशाल बुद्ध मूर्ति लगी है और यह भी धातु की है।

श्रावस्ती मे तथागत बुद्ध ने छब्बीस वर्षावास किया। यह स्थान मानो उनका विधानसभा भवन था। यही पर भिक्षुओ एव भक्तो के लिए नियम एव कानून बनकर जाते थे। जेतवन मे पूज्य तथागत की गधकुटी तथा उनके भिक्षुओ के रहने के भग्नावशेष हैं। इससे कुछ ही दूर पर श्रावस्ती नगर का भग्नावशेष है। तथागत बुद्ध की गधकुटी के पास गुरुदेव जब आय तो गभीर हो गये। आपने साधको की तरफ देखते हुए कहा—यह महावैराग्यवान, पूर्ण पुरुष का विश्राम स्थल है। उनके इस आश्रम को अनाथपिडक ने साकेत नरेश प्रसेनजित से जमीन खरीदकर बनवाया था। अनाथपिडक ने प्रसेनजित से जमीन कैसे खरीदी, इसका अपना अलग इतिहास है। ये सबसे बुद्ध और बौद्ध साधको की महानता का पता चलता है कि एक सेठ कैसे प्रभावित हुआ। वह केवल प्रभावित ही नही हुआ बल्कि अपना तन, मन, धन सर्वस्व तथागत बुद्ध के चरणो मे समर्पित कर दिया। आज यहा पर भारतीय एव अभारतीय पर्यटको का मात्र आवागमन रह गया है। इस परिवर्तनशील ससार मे चाहे कोई हो किसी का शरीर सब समय रह नही सकता। तथागत बुद्ध का यह विशाल आश्रम जो कभी भौतिक क्षेत्र मे स्वर्णिम सम्पन्नता मे था इसके साथ-साथ ज्ञान, ध्यान एव साधना के क्षेत्र मे भी चरम सीमा पर था, वह आज भारत मे लुप्तप्राय है। लेकिन जो साधना द्वारा बुद्ध होकर अपरिवर्तित निर्वाण को प्राप्त कर लिया वह शाश्वत जीवन प्राप्त कर लेता है।

80.

गुरुदेव जी वैशाली मे

10, 11 मई, 2008 को गुरुदेव का कार्यक्रम बिहार प्रदेश के वैशाली जिला के मसूरपुर गाव मे था। यहा पास मे ही महात्मा महावीर स्वामी की जन्मस्थली और महात्मा बुद्ध की तपस्थली वैशाली है। इसे दिखाने के लिए भक्तो की इच्छा थी ही, साथ-साथ सभी सतो एव गुरुदेव जी का भी विचार था कि ऐसे महान सत की तपस्थली देखना चाहिए।

गुरुदेव जी को वैशाली जाने के लिए ग्यारह तारीख को प्रात: पाच बजे ही गाड़ी आ गयी। उसमे आपके साथ सत श्री धर्मेन्द्र साहेब, श्री कृपाशरण साहेब, श्री गुरुभूषण साहेब, श्री सतेन्द्र साहेब, श्री वीरन्द्र साहेब आदि सोलह सत-ब्रह्मचारी गये। साथ मे निर्देशक के रूप मे दो भक्त भी थे।

सबसे पहले कुआ खोदते समय निकली हुई एक चतुर्मुखी ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्य की मूर्ति देखे। इस मूर्ति के लिए प्रदेश सरकार द्वारा मदिर बनवाया जा रहा है, जा अभी निर्माणाधीन है। वहा से आगे चलकर एक दूसरी जगह गये जो जैन मत के चौबीसवे तीर्थंकर महावीर स्वामी की जन्मस्थली मानी जाती है। यहा पर जैनो के द्वारा एक विशाल मदिर बन रहा है। इसके बाद बौद्धो के एक परिसर मे गये जो सैकड़ो एकड़ का घेरा है। यही पर तथागत बुद्ध ने भिक्षुणियो को सघ मे रहने के लिए आदेश दिया था। यहा पर भिक्षुणियो के लिए उन्होने सघाराम भी बनवाया था। जो आज भग्नावशेष मात्र है।

इस सघाराम के पास मे ही एक सरोवर भी है। सरोवर के पास ही एक टूटा हुआ स्तूप है। वही सम्राट अशोक ने एक स्तम्भ लगवाया था। यह स्तम्भ आज भी ज्यो-का-त्यो खड़ा है। यह ग्यारह मीटर ऊचा है और इसके शिखर पर शेर की मूर्ति है। इस स्तम्भ मे प्राकृत भाषा मे लिखा हुआ है।

वहा से लौटकर जापानी बौद्धो का एक मदिर देखे जिसमे उनके अनेक देवता और मत्र उत्कीर्ण थे। उसी के पास जापान के एक बौद्ध भिक्षु के द्वारा नव निर्मित शाति-स्तूप देखे जो अड़तीस मीटर ऊचा और विशाल घेरे मे है। इसमे तथागत के जन्म, बुद्धत्व प्राप्ति, उपदेश मुद्रा और परिनिर्वाण की चार पतिमाए हैं जो स्वर्णिम रग की हैं। इस स्तूप के कुछ दूर पर ही एक विशाल घटा टगा हुआ है।

पास मे ही लिच्छवियो का बनवाया हुआ अस्थि-स्तूप है। कहा जाता है कि पूज्य तथागत के निधन के बाद उनकी अस्थि को उनके अनेक अनुगामियो ने मागा, तो मल्लो ने उसे आठ भागो मे बाट दिया। उसी मे से एक भाग वैशाली के लिच्छवि लोग लाये और वे उसी पर मिट्टी का स्तूप बनवाये। वह पुराना स्तूप आज भी क्षीणरूप मे बना हुआ है।

वहा से चलकर गुरुदेव ने वैशाली नगर का अवशेष देखा। जो मिट्टी रूप है। बीच-बीच मे ईंटो की कुछ मिटी हुई दीवार मात्र है।

वैशाली नगर के अवशेष पर खड़े होकर गुरुदेव ने सतो से कहा—यहा अत मे किसी का कुछ रह नही जाता है। काल सबको पोछकर रख देता है। हा, जो महापुरुष हो चुके हैं उनकी साधना की तपस्थली मे जाने से उनके सद्गुणो तथा जीवन की स्मृति-सुगन्ध मिलती है। यहा तथागत बुद्ध की करुणा, शील, समाधि और उनकी शिष्य परम्परा तथा महात्मा महावीर स्वामी के त्याग, तप एव अतर्मुखता की रहनी यादकर मन गद्गद हो जाता है। इसके बाद गुरुदेव समाज सहित पौने आठ बजे तक निवास स्थान पर आ गये।

81.

गुरुदेव की करुणा

: 1 :

मई, 1959 की बात है, श्री अभिलाष साहेब अपने गुरुदेव पूज्य श्री रामसूरत साहेब जी के साथ समाज सहित छत्तीसगढ़ गये हुए थे। दुर्ग जिला के पलारी गाव मे श्री फिरतू गौटिया के घर आपका निवास था। पलारी गाव और उस क्षेत्र क भक्तो मे श्री फिरतू गौटिया एक खास भक्त थे। एक दिन ग्राम चिवरी से सदेश आया कि श्री ईंदल गौंटिया का अम्लपित्त बढ़ जाने से स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया है। वे आपको बुलाये हैं।

पूज्य सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी ने अभिलाष साहेब को बुलाकर कहा—चिवरी के भक्त ईंदल गौंटिया का स्वास्थ्य ठीक नही है। वे तुमको बुलाये हैं, चले जाओ। उन दिनो पैदल का ही रास्ता था। पलारी से आप अकेले ही पैदल धमतरी आये और वहा से नैरोगेज की ट्रेन पकड़कर सिर्री उतरे। सिर्री से चिवरी पैदल आये। ईंदल गौंटिया के छोटे भाई श्री कृपाल गौटिया के घर आपका आसन लग गया। उस समय चिवरी मे आप लगभग चार दिन रहे।

गौंटिया जी को जब भी विशेष कष्ट होता तो वे पासवालो से कहते कि साहेब को बुलाओ। खबर पाते ही गुरुदेव तुरन्त उनके पास पहुच जाते थे। आपके आते ही गौंटिया जी लेटे-लेटे नारियल, फूल और पैसे आदि आपके चरणो मे चढ़ाते। कभी-कभी वे कहते—साहेब, आप अपना चरण हमारे सीने पर रख दीजिए। गुरुदेव के न चाहने पर भी उनके हठ से कभी-कभी आपको ऐसा करना पड़ता था। तीन-चार दिनो मे जब उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक हुआ तो आप अपने गुरुदेव के पास पलारी वापस चले आये।

कुछ दिनो के बाद जब उनके स्वास्थ्य मे अधिक बिगाड़ हुआ तो गौंटिया जी पुन: आपको बुलाये। आप दूसरी बार भी आकर उनको ज्ञान-उपदेश देकर स्थिति का बोध कराते रहे। इसके दो दिन बाद गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी भी सत समाज सहित चिवरी आ गये। समय-समय से वे भी ईंदल गौंटिया जी के पास जाते थे।

एक दिन प्रात: छह-सात बजे श्री ईंदल गौंटिया जी का स्वास्थ्य कुछ ज्यादा खराब हो गया। अभिलाष साहेब, आपके गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी तथा कुछ अन्य सत भी उनके पास खड़े थे। गुरुदेव उनपर ज्ञानवृष्टि कर ही रहे थे कि सबके देखते-देखते गौंटिया जी का शरीर छूट गया।

: 2 :

19 मार्च, 2008 की बात है, गुरुदेव छत्तीसगढ़ के बालोद (दुर्ग) जिला के गुरुर बाजार के कार्यक्रम मे थे। सुबह एक सज्जन आपके पास आये जो वहा के सभावित आश्रम की जमीन दिखाने के लिए आपको वहा ले गये। वहा से लौटकर जैसे ही आप निवास पर आये, आपके पास दो महिलाए आ गयी। एक ने रोते हुए कहा—गुरुदेव, मेरे पति काफी दिनो से अस्वस्थ चल रहे हैं। वे आपकी बराबर याद करते हैं। आप कभी समय निकालकर हमारे घर दर्शन देने की कृपा करे।

गुरुदेव ने कहा—तुम घबराती क्यो हो? चलो हम अभी चलते हैं। तुम आगे-आगे चलो।

आप उस देवी के साथ उसके घर गये, साथ मे मैं भी था। वहा पहुचकर गुरुदेव करुणा दृष्टि से उस अस्वस्थ वृद्ध को अपलक देखते रहे और उनसे कुछ बात भी करना चाहे लेकिन वे वृद्ध बोल नही सकते थे। घर के लोगो ने उनको बताया कि गुरुदेव आये है, बदगी कीजिए लेकिन वे अचेत ही रहे। फिर उनके हाथ मे पैसे, फूल, नारियल आदि देकर गुरुदेव के चरणो मे रखवा दिये। गुरुदेव ने घर वालो को कुछ सत्योपदेश दिया और अत मे आपने उनके बेटे से कहा—बेटा! पिता की खूब सेवा करो, इससे तुम्हे खुद को आत्मसतोष होगा और आत्मशाति मिलेगी।

: 3 :

31 जनवरी, 2009 को माघ मेला मे कबीर सत्सग शिविर का अन्तिम दिन था। गुरुदेव जी के पास सुबह ही एक भक्त का फोन आया कि उनकी पत्नी को रक्त का कैंसर हो गया है, जो इलाहाबाद के पार्वती हास्पिटल मे भर्ती हैं। गुरुदेव ने खेद प्रकट करते हुए सान्त्वना दिया और कहा कि बेटा, धैर्य रखो, घबराओ नही। आपने उनसे कहा—मैं शाम को मेले से लौटते वक्त हास्पिटल मे ही मिलने के लिए आऊगा।

गुरुदेव आश्रम से सगम के कैंप मे आये और वहा प्रवचन देने के बाद साय पाच बजे तक चल दिये। आश्रम आने के रास्ते मे ही वह हास्पिटल पड़ता था। आप गाड़ी से उतरकर अन्दर गये और उस देवी से मिले। गुरुदेव जी ने उन्हे ज्ञान के दो शब्द सुनाया—यह शरीर-ससार दुखो से भरा है, यहा घबराना नही। दुख आता है और चला जाता है। वस्तुत: उनको रक्त कैंसर हो गया था, व मात्र कुछ दिनो की मेहमान थी। किंतु यह बात उनसे गुप्त रखी गयी थी। जिससे वे

भयभीत न हो जाये। चलते वक्त गुरुदेव जी ने साथ मे लाये हुए सेब और केले का प्रसाद उनको दिया। मरीज तथा अन्य लोगो ने गुरुदेव जी की बदगी की तत्पश्चात् आप वापस आश्रम आ गये।

82.

मृत्यु सबके निकट है

2 अप्रैल, 2008 की बात है। गुरुदेव जी छत्तीसगढ़ दुर्ग जिला के कचादुर गाव मे थे। एक अप्रैल को पसौद गाव स पुनीतराम साहू का मेरे मोबाइल मे मैसेज आया—''लकड़ी जल कोयला भई, कोयला जल भई राख। मैं पापिन ऐसी जली, कोयला भई न राख।'' सद्‌गुरु कबीर की इस साखी का क्या अर्थ है। इस मैसेज का जवाब देने का मेरा विचार हुआ कितु इस साखी का अर्थ ही मैं नही जानता था।

2 अप्रैल को प्रातः गुरुदेव जी के साथ छत पर घूमते-घूमते मैंने उनसे पूछा कि गुरुदेव जी, इस साखी का भावार्थ क्या है। आपने कहा—यहा साधक अपने मन की अतर्वेदना को व्यक्त कर रहा है कि लकड़ी जलती है तो उसका कोयला बन जाता है। लोग उस कोयले का उपयोग कर लेते हैं। कोयला भी जल जाता है तो उससे राख बन जाती है। लोग राख का भी उपयोग कर लेते हैं लेकिन मैं ऐसा पापी हू कि साधना न करने से न कोयला बन पाया और न राख ही।

उसी समय सत श्री देवेन्द्र साहेब जी आ गये और वे भी गुरुदेव जी के साथ घूमने लगे। गुरुदेव ने कहा—यहा सभी देहधारी दुखो मे जल रहे हैं। शरीर का दुख जो है सो तो है ही, अधिक दुख मन का है। धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, स्त्री-पुरुष सभी जीवन भर केवल दुख भोगते हैं। सभी जीव निरन्तर भय, चिता, शोक की आग मे जल रहे हैं।

गुरुदेव ने किसी भक्त की याद करते हुए कहा—उनका हार्ट अटैक हो गया तो लोग तुरन्त उनको हास्पिटल ले गये। आपने अपनी तरफ लौटते हुए कहा—अब तो हमारा भी शरीर किनारे पर है, आठवा दशक चल रहा है। हमारा भी हार्ट अब फेल हो जाना चाहिए।

सत श्री देवेन्द्र साहेब जी ने कहा—साहेब जी, आपका हार्ट कैसे फल हो जायेगा क्योकि आपको न शोक है, न मानसिक तनाव। हार्ट की बीमारी तो उनको होती है जो सब समय उलझे और तनावग्रस्त रहते हैं।

गुरुदेव ने कहा—अच्छा, तो तुम मुझे अभी ज्यादा दिन जिलाना चाहते हो? भैया, जब प्रारब्ध समाप्त होता है तो कोई न कोई बहाना आ ही जाता है, चाहे वह हार्ट अटैक हो या ब्रेन हेम्रेज, ऐक्सीडेण्ट हो या कोई रोग। मृत्यु के आगे सभी विवश हैं। लेकिन बोधवान के लिए मृत्यु कुछ है ही नही।

श्री देवेन्द्र साहेब जी ने कहा—आपका जीवन जितना अधिक होगा उतना ही सभी सतो-भक्तो का लाभ होगा।

गुरुदेव जी ने हसते हुए कहा—अच्छा, तो कोई व्यवस्था करो जिससे सौ-दो सौ वर्ष और जी जाये।

83.

परिस्थितियो से घबराओ नही

22, 23, 24 मई, 2008 को गुरुदेव का कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिला के गुप्तारगज बाजार मे था। इसके आयोजक भक्त श्री सालिकराम गुप्ता (पोस्टमास्टर) थे। वे इस कार्यक्रम को बड़े समारोह और उत्साह के साथ कर रहे थे। इसकी पूर्वसध्या मे बड़े जोरो से आधी और पानी आ गये, लेकिन इससे कोई नुकसान नही हुआ। पहले दिन का कार्यक्रम भलीभाति हुआ। दूसरे दिन का कार्यक्रम शुरू हो चुका था, भक्तलोग इकट्ठा हो ही रहे थे। दो सत थोड़ी देर बोले। गुरुदेव मच पर पधारने वाले ही थे कि पुनः जोरो से आधी और पानी आ गये। लेकिन इस पानी मे भी गुरुदेव गाड़ी से पडाल तक पहुच गये। तब तक बहुत तेज वर्षा होने लगी। पडाल के निकट पहुचकर आपने देखा कि वहा पर कोई है ही नही, तब आप भी अपने निवास पर वापस आ गये।

तीसरे दिन भक्त श्री सालिकराम गुरुदेव के पास आकर बड़े दुखी होकर कहने लगे—गुरुदेव, इस आधी-पानी के कारण हमारा सारा आयोजन बेकार हो गया।

गुरुदेव ने उनको समझाते हुए कहा—दुखी मत होओ, तुम्हारा सकल्प था सतो-भक्तो को बुलाने का, सब लोग आये। पहले दिन सत्सग भी हुआ। प्राकृतिक विघ्न-बाधा के कारण कल नही हो पाया तो कोई बात नही। जिस पर अपनी स्ववशता नही है, उस पर सोचने से कोई फायदा नही। पानी ही तो केवल बरसा है। लेकिन सोचो कि यदि जोरो का भूकम्प आ जाता और मकान गिरकर हम सब उसमे दबे पड़े होते तो क्या होता! इसलिए दुखी मत होओ, सब समय प्रसन्न रहो। अपने मन की प्रसन्नता मे ही हमारा अधिकार है। इस ससार की

घटनाओ को कोई रोक नही सकता। कुछ विघ्न-बाधा आ गयी तो इसको लेकर दुखी नही होना है। खूब प्रसन्न और मस्त रहो और जाओ जो सेवा का काम हो वह करो।

तीसरे दिन शाम तक मौसम साफ हो गया और भारी सख्या मे गुरुदेव को सुनने के लिए भक्त लोग आये।

84.

गुरुदेव की उदारता

3 अगस्त, 2009 को आप इलाहाबाद के कबीर आश्रम मे विराजमान थे। किसी प्रदेश से एक सत आपके दर्शन के लिए आश्रम मे आये हुए थे। 3 अगस्त को वे वापस जाने लगे। सुबह सत्सग श्रवण एव जलपान के बाद गुरुदेव जी के निवास पर आपसे मिलने के लिए वे गये। वे वृद्ध सत अत्यन्त साधारण वेश मे एव सरल स्वभाव के थे। उनके कपड़े फटे हुए थे, उनके बाल भी बड़े-बड़े एव अस्त-व्यस्त थे। कितु उनकी मन:स्थिति बहुत अच्छी थी। गुरुदेव के पास उनको मैं ले गया। बदगी करने के बाद उन्हाने कहा—सरकार, आज्ञा हो, अब जा रहा हू।

गुरुदेव जी—कहा जाओगे?

सत—मेरे गुरु जी गुजरात के लिमड़ी आश्रम मे रहते हैं, वही जाना है।

गुरुदेव जी—भोजन करके जाइये।

सत—जलपान हो गया है। अब चला जाता हू, भोजन मे अभी समय लगेगा।

गुरुदेव ने मुझे बुलाया और कहा, इन्हे बडी हो तो दे दो, कुछ फल और सौ रुपये भी दे दो।

मैंने दो बडी, पैसे, फल लाकर दिया। चलते वक्त गुरुदेव ने कहा—कोई पुस्तक भी दे दो। तो मैंने 'हसा सुधि करु अपनो देश' नाम की एक पुस्तक दी। फिर उन्हाने गुरुदेव की बदगी की और चले गये।

विद्यार्थियो, जिज्ञासुओ, मुमुक्षुओ, साधको, सतो और किसी भी सत्पात्र को गुरुदेव समय-समय से बिना पैसे के ही पुस्तके देते रहते हैं। यह आपकी साधना काल के आरम्भ से सहज प्रवृत्ति है। प्रति वर्ष आप आश्रम मे हजारो रुपये की पुस्तके यू ही लोगो को दे देत हैं।

इसी प्रकार आप जरूरतमदो को कपड़े, पैसे, फल आदि भी देते रहते हैं। देते समय गुरुदेव कभी यह नही सोचते हैं कि यह चीज अच्छी है, इसे अपने या अपनो के लिए रख ले और इनको सामान्य चीज दे दे। आप सबको अपना मानते हैं। व्यवहार मे आप किसी को पराया मानते ही नही हैं। अपने निर्वाहिक चीजो के लिए भी आप निस्पृह रहते हैं। जो चीजे समाज के लिए होती हैं उन्ही मे आप स्वय भी निर्वाह कर लेते हैं। आपका मत्र ही है—'निष्काम, निष्काम, निष्काम। अनैश्वर्य ही मेरा ऐश्वर्य है।'

कोई भी पुस्तक का प्रथम प्रकाशन होता है तो बहुत-सी प्रतिया आप साधक-साधिकाओ एव अन्य विशेष सतो-भक्तो को प्रसादरूप मे दे देते हैं। आपके इस देने की प्रवृत्ति को देखकर कुछ लोगो को विस्मय होने लगता है कि इतने रुपये की पुस्तके मुफ्त मे ही दे दी जाती हैं........? इसक जवाब मे आप कहते हैं कि सब इन्ही सतो-गुरुजनो की कृपा और भक्तो के प्रेम से ही तो बढ़ा है, हम कुछ लेकर थोड़े आये हैं। किसी को देने से घटता नही है। इस प्रकार खुले दिल से एव खुले हाथो से आप लोगो को देते रहते हैं।

85.

जाति-पाति आधारित ऊंच-नीच की भावना का विरोध

सारे चमत्कार, अधविश्वास, मिथ्या मान्यताओ को छिलके की तरह उतारकर फेकने वाले पारख सिद्धान्त के अनेक सत अभी तक छुआछूत तथा जाति-पाति जैसे भयकर कोढ़ को सर्वथा नही त्याग पाये थे। इस छुआछूत जैसे विनाशक रोग के कारण बहुत-से सत-भक्त उपेक्षा की दृष्टि से देखे जाते थे। यद्यपि सत्सग-साधना मे सब समान रूप से मिलकर काम करते थे। लेकिन भोजन-भडार मे इन बातो को लेकर भेदभाव बरकरार था।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी बचपन से ही इस धारणा के विरोधी थे कि आदमी जन्म-जाति के कारण छोटा-बड़ा, ऊच-नीच होता है। जहा आपका शरीर जन्मा वहा अनेक सामान्य कही जानेवाली जातियो के लोग आते थे। उनको भी आप समान रूप से ही आदर देते थे और उनको भी ऊचे आसन पर बैठाते थे। कभी-कभी वे लोग सकोच मे पड़ जाते थे और आपसे कहते थे—बच्चा ठीक है, हम नीचे ही बैठने लायक हैं। ऐसी बात सुनकर आपके मन मे बहुत कष्ट होता था। आप उनको कहते—बैठो काका, बैठो भइया, सकोच न करो।

जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती गयी वैसे-वैसे आपके ये विचार भी मजबूत होते गये। जब आप सत-समाज मे अपने गुरुदेव को समर्पित हो गये तो भी आपके विचार वैसे ही तरल रहे।

आपके मन मे यह दर्द बना रहता था कि जाति-पाति का यह भयकर रोग कब दूर होगा। समय आने पर आपने स्वय क्राति की जिसमे आप पूर्णत: सफल हुए।

एक बार गुरुदेव जी का कार्यक्रम लखनऊ क्षेत्र मे महन्त श्री गरीब साहेब के आश्रम मे था। सतो-भक्तो की खूब भीड़ इकट्ठी हुई थी। वहा खास रूप से सतो का समाज छोटी कहलाने वाली जाति के लोगो का था।

दूसरे दिन गुरुदेव जी ने सभी सतो को बुलाकर कहा—आप सभी सतजन भडार मे चलकर भोजन बनाने मे सहयोग करे। मेरे साथ आये हुए सत भी उसी भडार मे सहयोग करेगे। सब एक साथ भोजन बनाये और एक साथ बैठकर भोजन करे। आपकी बात सुनकर कई लोग कहने लगे—साहेब, हमारी तबीयत ठीक नही है। कोई कहता कि मुझे अमुक काम करना है। इस प्रकार अनेक बहाना बनाने लगे। गुरुदेव जी ने पुन: जोर देकर कहा—आप लोग बहाना न बनाये। सब सत भोजनालय मे चलकर एक साथ भोजन बनाये। उस समय तत्काल तो कोई उत्तर नही दिया। बाद मे विचार कर सबने स्वीकार किया।

गुरुदेव जी ने यह भी छूट दी कि जिसे ऐसा पसन्द न हो वह स्वय अपना भोजन अलग बना सकता है।

सतो ने कहा—साहेब, जब आप स्वय सबके साथ भोजन करेगे तब हम लोग अलग क्यो बनायगे। किसी ने भी अलग भोजन नही बनाया और सब एक साथ बैठकर भोजन किये।

86.

सकारात्मक सोचो

पूज्य गुरुदेव जी का कार्यक्रम गुजरात मे था। वहा का कार्यक्रम समाप्त कर आप सत समाज सहित वापस लौट रहे थे। थोड़ी दूर चलने के बाद एक स्टेशन पर गाड़ी रुक गयी। क्योकि उसी लाइन मे आगे किसी गाड़ी का एक्सीडेट हो गया था। बहुत समय तक आपकी गाड़ी वही रुकी रही। कई लोग बहुत ऊब और घबरा रहे थे।

दो-तीन घटे बीतने के बाद एक सत परेशानी व्यक्त करते हुए कहने लगे—क्या बताये, बहत परेशानी है। घटो से हम लोग यही पड़े हैं।

गुरुदेव ने उनको समझाते हुए कहा—क्या परेशानी है? गाड़ी मे बैठे हो, अपनी सीटे हैं, बर्थ है, छाया है और स्टेशन का विशाल प्रागण है। लेटो-बैठो, घूमो-टहलो। खाने-पीने के लिए भक्तो ने इतना दे दिया है कि तीन दिन तक खाओ-पीओ, कोई चिता नही है। आराम से अपनी सीट पर बैठकर ध्यान-साधना करो। जरा सोचो, जिस गाड़ी का एक्सीडेट हुआ है उसी मे तुम होते तो क्या दशा होती? यदि शरीर छूट जाता तब तो कोई बात ही नही, तुरन्त काम खत्म हो जाता। लेकिन यदि हाथ-पैर कट जाते, सिर फट गया होता, घायल अवस्था मे कही दबे पड़े होते, पीड़ा मे कही कराहते-छटपटाते होते तो कैसा लगता?

गुरुदेव की ऐसी तुलनात्मक एव विवेकपूर्ण बाते सुनकर उन सत ने कहा—तब तो कोई समस्या ही नही है। ऐसा हम लोग सोच ही नही पाते बल्कि थोड़ी-थोड़ी बातो मे उलझ जाते हैं।

गुरुदेव ने कहा—ऐसा सोचने से ही मन मे शाति आयेगी। किसी भी समस्या का समाधान सकारात्मक विचारो से ही हो सकता है।

87.

चिता त्यागकर जीये

इलाहाबाद कबीर आश्रम प्रीतमनगर मे गुरुदेव का वर्षावास चल रहा था। यहा प्रत्येक रविवार को सार्वजनिक सत्सग कार्यक्रम होता है। एक सज्जन जिनकी उम्र पचहत्तर वर्ष की होगी, वे प्रत्येक रविवार को सत्सग मे आते थे। एक दिन गुरुदेव से व्यक्तिगत मिलने आये।

गुरुदेव ने उनसे कुशल मगल पूछा। उन्होने कहा—महाराज, सब आनन्द है। किसी प्रकार की कोई कमी नही है। तीन लड़के हैं, तीनो के लिए अलग-अलग दुकाने हैं। भोजन सबका एक साथ होता है। शहर मे कई मकान हैं। जिस मकान मे मैं रहता हू उसी मे परिवार रहता है। मेरे लिए लड़के अलग से एक कमरा बनवा दिये हैं। ऊपर एक मदिर बनवा दिये हैं। वही बैठकर पूजा करता हू। महाराज, लड़के बड़े आज्ञाकारी एव सेवापरायण हैं, सब कुछ बढ़िया है। लेकिन नीद नही आती है।

गुरुदेव ने पूछा—नीद क्यो नही आती?

उस सज्जन ने कहा—यही तो समझ मे नही आता है।

गुरुदेव ने कहा—आप सोचते होगे कि मैं नही रहूगा तो घर कैस चलेगा!

सज्जन—बस-बस महाराज! यही ख्याल मन मे बारम्बार आता है कि आगे कैसे होगा?

गुरुदेव जी—तो फिर रुक जाओ हजार-दो हजार वर्ष। आपको इतनी सम्पन्नता है, बच्चे इतने सरल, उदार, उन्नत और समझदार हैं तब भी सोचते हो कि मैं नही रहूगा तो घर कैसे चलेगा।

ऐसा सोचकर अपने को धोखे मे रखना है। यहा जो रहेगे सब कमायेगे-खायेगे। ससार अनादि से चला आ रहा है और आगे भी सदा चलता रहेगा। इसकी व्यवस्था के लिए कोई सदा बैठा नही रहेगा। सोचो! फुटपाथ पर जो लोग रहते हैं, वे बास की कमचिया झुकाकर ऊपर से प्लास्टिक ओढ़ा देते हैं। उसी मे बाल-बच्चो सहित रहते हैं। उनकी भी ठडी, गर्मी, वर्षा बीतती है। उनके भी बच्चे किलकारिया मारकर हसते-खेलते हैं। वे भी तो मनुष्य हैं आखिर! उनसे अपनी तुलना कर ले तो चिन्ता दूर हो जायेगी। यह जीवन निश्चित होकर जीने के लिए मिला है। जब एक दिन यहा से सदा के लिए चले ही जाना है तो चिन्ता किस बात की। उस दिन चाहते हुए भी आप बाल-बच्चो की कोई व्यवस्था नही कर पायेगे। ऐसे क्षणिक और धोखा भरे ससार मे रहकर इसी के लिए अपनी आध्यात्मिक हानि करना बहुत बड़ा प्रमाद है।

इसलिए आज ही चिन्ता को ललकार दे कि खबरदार! आज से मेरे पास फटकना नही। अब मैं इस जीवन के शेष हिस्से को निश्चित होकर बिताऊगा।

उस सज्जन ने हाथ जोड़कर कहा—महाराज, आज तो आपने मेरे हृदय की पीड़ा ही मिटा दी। और आपने मेरे जीवन को बदल दिया। धन्य गुरुदेव, आज मेरा आपके पास आना सफल हो गया।

88.

निर्मोहता कैसे पक्को हो?

11 नवम्बर, 1995 की बात है। गुरुदेव जी का साप्ताहिक कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के गोण्डा जिला के करनैलगज बाजार मे था। साय स्नानादि से निवृत्त होकर गुरुदेव अपने कक्ष मे ध्यानस्थ बैठे थे। एक पुलिस इस्पेक्टर आपसे मिलने आये। आहट मिलने पर गुरुदेव ने आखे खोली। आप उनको दरी पर बैठने के लिए सकेत करके पुनः ध्यान मे लीन हो गये। तब तक इस्पेक्टर साहेब भी ध्यान मे बैठे रहे। VZ-20 मिनट के बाद जब गुरुदेव ने आखे खोली तो आपने उनसे कहा—कुछ आध्यात्मिक जिज्ञासा हो तो पूछ सकते हैं।

इस्पेक्टर—साहेब जी, निर्मोहता कैसे पक्को हो?

गुरुदेव जी—अध्यात्म की भूख रखने वाले साधक के लिए यही प्रथम समस्या है। यह आपका बहुत महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। आप जैसे लोग जो दुनिया की भाग-दौड़ मे लगे रहते हैं उनमे ऐसे प्रश्न पर सोचनेवाले बहुत कम होते हैं।

निर्मोहता ही मोक्ष भवन मे प्रवेश करने का मुख्य द्वार है। ससार से निर्मोह होने के लिए अपने मन को ससार से हटाना ही पड़ेगा। यहा की समस्त चीजे परिवर्तनशील हैं। यहा हम चाहते हुए भी किसी चीज को स्थिर नही रख सकते हैं। प्रिय का वियोग हो जाता है। अप्रिय का सयोग हो जाता है। शरीर को निरन्तर बुढ़ापा की ओर जाना है। सारी निर्मित एव उपलब्ध चीजे एक दिन खो जानेवाली हैं। अनुकूल से अनुकूल और प्यारे से प्यारे लोगो से बिछुड़ने के दिन को देखने के लिए जो पहले से ही तैयार रहता है उसका मन मोहरहित होता है। मोहरहित व्यक्ति ही शाति का अचल धन पाता है।

इस्पेक्टर—यही काम बहुत कठिन लगता है।

गुरुदेव—यही काम सरल है। अन्य दुनियादारी काम तो कठिन ही नही, असम्भव भी है। मनुष्य जितना धन, जमीन, शक्ति, बुद्धि आदि चाहता है वह सब प्राप्त कर पाना बहुत कठिन है। बहुत-सी उसकी ऐसी इच्छाए हैं जिन्हे वह इस जन्म मे पूरी कर ही नही सकता। काले शरीर को गोरा और बूढ़े शरीर को जवान बना पाना असम्भव है। लेकिन अपने मन को हम पवित्र बना सकते हैं। हमारे पास जो कुछ है वही हमारा राजसुख है। हमे कुछ चाहिए ही नही, ऐसा सोचने मे कौन सी परेशानी है। इच्छाओ का त्याग कर देना सर्वथा सम्भव है और यही सुखी होने का साधन है।

इस्पेक्टर—भूत-प्रेत, तत्र-मत्र आदि पर आपका क्या विचार है?

गुरुदेव—यह सब विवेकहीन मनुष्यो की कल्पना मात्र है। भूत-प्रेत आदि अबोधी और भ्रमित मनुष्यो के दिमाग की उपज है जो तत्त्वहीन है।

मत्र-तत्र की निरर्थकता पर भी गुरुदेव ने स्पष्ट समाधन किया। आपने बताया कि मत्र के बल पर जो लोग कुछ का कुछ कर दते हैं, चमत्कार दिखा देते हैं यह सब उनकी जालसाजी है। अत मे आपने सद्‌गुरु कबीर की साखी सुनाई—

मंत्र तंत्र सब झूठ है, मत भरमो जग कोय।
सार शब्द जाने बिना, कागा हस न होय॥

(साखी ग्रथ)

इस्पेक्टर—ध्यान मे प्रवेश कैसे किया जाये?

गुरुदेव—ध्यान मे प्रवेश पाने के लिए सबसे पहले आहार-विहार और व्यवहार को शुद्ध करना चाहिए। इसके बाद किसी एकान्त स्थल मे बैठकर मन का द्रष्टा होकर सारे सकल्पो का त्याग करे। आत्मा का अपने आप शेष रह जाना ध्यान की पराकाष्ठा है।

इस्पेक्टर—अब मुझे जीना निरर्थक लग रहा है।

गुरुदेव—लेकिन मरना भी निरर्थक लगना चाहिए। न जीने की इच्छा रखना चाहिए और न मरने की। जिनका जीना और मरना बराबर हो जाता है, उनका जीवन दिव्य हो जाता है।

89.

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब और छत्तीसगढ़

गुरुदेव जी के सर्वाधिक कार्यक्रम छत्तीसगढ़ मे होते थे। क्योकि यहा भक्तो की सख्या बहुत ज्यादा है। वृहत् क्षेत्र होने के नाते प्रतिवर्ष गुरुदेव के लिए भक्तो की माग बनी रहती थी।

सन् 1954 ई0 मे श्री अभिलाष साहेब जी अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ छत्तीसगढ़ पहली बार आये। दूसरी बार सन् 1956 ई0 के जून मे गुरुदेव की आज्ञा से अपने बड़े गुरुभाई सत श्री निहाल साहेब आदि तीन सतो के साथ आये और पद्रह महीने रहे। तीसरी बार सन् 1959 मे आये। इसके बाद आप हर दो-तीन साल बाद छत्तीसगढ़ आते रहे। पहले गुरुदेव का चार-छह से लेकर आठ महीने तक का कार्यक्रम होता था। जैसे-जैसे आपका प्रचार क्षेत्र वृहत् होता गया, अन्यान्य प्रदेशो मे सर्वाधिक कार्यक्रम होने के नाते समय बटता गया। फिर भी भारत के अन्य प्रदेशो की तुलना मे गुरुदेव छत्तीसगढ़ को समय अधिक देते थे, यहा आपको हर वर्ष दो-ढाई महीने रहना होता था।

छत्तीसगढ़ मे गुरुदेव के कार्यक्रम रायपुर, धमतरी, दुर्ग, बालोद, राजनादगाव, बिलासपुर, कोरबा, जाजगीर-चापा, बस्तर, काकेर, जगदलपुर, दतेवाड़ा और महासमुद आदि जिलो मे होता था।

छत्तीसगढ़ मे आपके सत-ब्रह्मचारियो की सख्या भी भारत के सभी प्रातो से ज्यादा होती थी। यहा पर बीस-तीस साधु-ब्रह्मचारियो का समाज आपके साथ प्रतिवर्ष विचरण करता था।

यहा की बोली छत्तीसगढ़ी और भाषा हिन्दी है।

छत्तीसगढ़ मे आपके सघन कार्यक्रम होते थे। लगभग सभी भक्त सुपरिचित थे और वहा पहुचने के बाद सभी यात्राए छोटी हो जाती रही। इन सब कारणो से

यहा व्यवस्थित कार्यक्रम होता था और गुरुदेव का समय भी खराब नही होता था। आपके अधिकतम ग्रथ यही लिखे गये हैं। छत्तीसगढ़ मे मुख्य रूप से—ब्रह्मचर्य जीवन, विवेक-प्रकाश टीका, सत कबीर और उनके उपदेश, योगदर्शन, धम्मपद, विवेक चूडामणि, वैराग्य सजीवनी, बीजक व्याख्या, महाभारत मीमासा, पलटू साहेब की बानी का अधिकतम हिस्सा तथा अन्य बहुत-सी पुस्तके लिखी गयी हैं।

गुरुदेव के कुछ कार्यक्रम ऐसे रहे जिनकी निश्चित तिथि है। वे अपनी तिथि पर ही होते थे। जैसे कबीर आश्रम नवापारा-राजिम, रायपुर और कबीर आश्रम रामपुरा, नयी दिल्लो। इनके अलावा आपके सभी कार्यक्रमो की तिथि कबीर पारख सस्थान इलाहाबाद के वार्षिक अधिवेशन मे तय होती थी। यहा इस अवसर पर भारत के विभिन्न जगहो से भक्त लोग आते थे। जिनको कार्यक्रम लेना होता था वे सब अपना-अपना आवेदन पत्र लिखकर गुरुदेव जी के पास या सत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी के पास जमा कर देते रह। उनम से जिनको सयोग पड़ता था उन-उन लोगो को कार्यक्रम मिल जाता, बाकी लोग आगामी वर्ष की प्रतीक्षा करते थे।

90.

धन के नाम पर कबाड़

नवम्बर का महीना था। गुरुदेव का कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के गोडा जिले मे था। एक दिन गुरुदेव शाम को स्नानादि से निवृत्त होकर अपने कक्ष मे बैठे थे। एक भक्त के साथ एक सेठ गुरुदेव जी के दर्शन करने आये। भक्त ने परिचय दिया कि साहेब, ये अमुक बाजार के सेठ हैं।

गुरुदेव जी—हा, तो ये बड़े कबाड़ी होगे।

गुरुदेव की इतनी बात सुनकर सेठ जी आश्चर्य से आपको देखने लगे।

गुरुदेव जी—आपको मेरी बातो पर आश्चर्य नही होना चाहिए। मैं सच कह रहा हू। आप सेठ हैं तो आपके पास बड़ा मकान होगा तो लोहा-लक्कड़ आदि का कबाड़ ज्यादा होगा। आपके पास कई गाड़िया होगी तो लोहा, रबर, प्लास्टिक, लकड़ी आदि का कबाड़ ज्यादा होगा। रुपये ज्यादा हैं तो कागज के टुकड़ो का कबाड़ ज्यादा है। इसी प्रकार और भी रेडियो, टी0वी0, फर्नीचर, बरतन आदि का कबाड़ ज्यादा होगा। कुल मिलाकर आप बड़े कबाड़ी हैं।

गुरुदेव के इस प्रकार से स्पष्ट और तर्कपूर्ण ढग से समझाने पर वे समझ गये और सरल होकर हसने लगे।

गुरुदेव ने कहा—यहा सब कबाड़ी हैं। कोई छोटा कबाड़ी है तो कोई बड़ा। ससार की समस्त उपलब्धियो को जो विवेक से समझकर कबाड़ रूप देखता है उससे पाप नही होता। लेकिन जो इसको माल-टाल के रूप मे समझता है वह इसे बढ़ाने और बटोरने के लिए पाप पर पाप करता जाता है। वस्तुत: सच्चा धन तो रामधन है, आत्मधन है जो इस धन की कमाई करता है वही धनी है, वही सेठ है अन्यथा सभी कूड़े-कबाड़ मे जीने वाले दरिद्र हैं।

हा, शरीर एक कबाड़ है, अत: इस कल्पना को चलाने के लिए कुछ बाह्य कबाड़ की आवश्यकता होती है।

91.

अमृत कहा है?

यह घटना 20 अप्रैल, 2005 ई0 की है। गुरुदेव का कार्यक्रम छत्तीसगढ़ जाजगीर-चापा जिला के छपोरा गाव मे था। साय स्नान के बाद आप अपने कक्ष मे विराजमान थे। एक वृद्ध सज्जन अपने चार साथियो को लेकर गुरुदेव के पास आये। सब लोग प्रणाम करके दरी पर बैठ गये। वे सज्जन एक पर्चा निकाले, जिसमे ऋग्वेद के कई मत्र लिखकर लाये थे। गुरुदेव को पर्चा देते हुए कहा—महाराज जी, इसका अर्थ समझ मे नही आता।

गुरुदेव उस पर्चे को लेकर अर्थ समझाने लगे। वृद्ध सज्जन ने कहा—यह सब तो ठीक है महाराज, उस तीसरे मत्र का अर्थ आप बताने का कष्ट करे। वह मत्र इस प्रकार था—

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुष:।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ऋग्वेद 10/90/3॥

गुरुदेव ने उसका भी अर्थ बता दिया—"ब्रह्म के कुल चार हिस्से हैं, जिसमे एक हिस्से से तो यह विकारी जगत बना हुआ है तथा अन्य तीन हिस्से अमृत मे स्थित हैं।"

वृद्ध सज्जन ने पूछा—तो महाराज, ब्रह्म के तीन हिस्से जो अमृत मे स्थित हैं वे कहा हैं?

गुरुदेव—वे केवल कागज मे हैं। उन्हे अलग से कही नही प्राप्त कर सकोगे।

गुरुदेव के सीधे-सपाट विचार सुनकर वे स्तम्भित रह गये। वे बोले—तो क्या महाराज, अमृत कही नही है?

गुरुदेव—है।

वृद्ध सज्जन—कहा है?

गुरुदेव—आप खुद हैं।

वृद्ध सज्जन—परन्तु इसका अनुभव तो नही होता।

गुरुदेव—कामनाओ के त्याग से अनुभव होगा।

वृद्ध सज्जन—महाराज जी, इसका खुलासा करने की कृपा करे।

गुरुदेव—पहली बात है कि जो ब्रह्म के एक पाद से जगत रचने की कल्पना है यह झूठी है क्योकि जगत अनादि-अनन्त है। इसको बनाने के लिए किसो ब्रह्म की आवश्यकता नही है। वस्तुत: अपरोक्ष आत्मा ही स्वय प्रत्यक्ष है। यही ब्रह्म है, यही अमृत है। इसका पूर्ण अनुभव तब होगा जब इस जगत और परोक्ष काल्पनिक ईश्वर-स्वर्ग के मोह से हटकर अपने आप मे स्थित होगे। पूर्ण निष्काम दशा और आत्म सतोष ही अमृत पद है। सद्गुरु कबीर ने कहा है—

अमृत वस्तु जाने नही, मगन भया सब लोय।
कहहिं कबीर कामो नही, जीवहि मरण न होय॥ (बीजक)

वृद्ध सज्जन—महाराज, मैं बड़े-बड़े जगद्गुरुओ, मण्डलेश्वरो, महतो और आचार्यों के पास गया लेकिन आज तक कही किसी से समाधान नही हो पाया था। आत्मा से अलग कही अमृत है ही नही, ऐसा तो कोई कह ही नही सकता। अपनी परम्परा और मान्यता से हटकर स्वय के विवेक से कोई सोचता ही नही है। जहा भी जाता था सब गोल-माल करके रह जाते थे। आपने जैसे साफ काट दिया 'अमृत बाहर कही नही है' ऐसा कहने का साहस मैंने किसी मे नही देखा। आज आपके स्पष्ट समाधान से मुझे पूर्ण सतोष मिला कि अमृत बाहर कही नही है बल्कि कामनाओ का त्याग ही अमृत है।

गुरुदेव—कबीर साहेब का निष्पक्ष पारख विचार ही ऐसा है जहा किसी भी प्रकार के कूड़े-कचरे को रुकने की कोई सम्भावना ही नही है।

92.

भक्ति और अहकार एक-दूसरे के विरोधी हैं

यह घटना 20 अप्रैल, 2004 की बिहार की है। गुरुदेव का कार्यक्रम मधेपुरा जिला के रतवाड़ा गाव मे था। रतवाड़ा गाव कोसी नदी के पास बसा हुआ है।

यहा वर्षा के दिनो मे चारो तरफ पूरी पृथ्वी जलमग्न हो जाती है। उन दिनो किसी को बाजार भी जाना होता है तो नाव से जाता है। वहा प्रत्येक गाव मे कई नावकाए रखी रहती हैं। सड़को की स्थिति बड़ी दयनीय है क्योकि बाढ़ म प्रतिवर्ष सभी सड़के उखड़ जाती हैं और अस्त-व्यस्त हो जाती हैं। वहा गरमी के दिनो मे मुख्य रूप से एक ही फसल मक्का होती है।

गुरुदेव जी नियमित रूप से प्रात: घूमते ही हैं। बीस अप्रैल को प्रात: गुरुदेव जी रतवाड़ा से निकले, साथ मे मैं भी था। खेतो के रास्ते से एक गाव से दूसरे गाव को पार करते हुए आप काफी दूर चले गये। एक झील के पास सुनसान एकान्त स्थल देखकर रुक गये। आपके बैठने का रुख देखकर मैंने अपनी साफी बिछाना चाहा लेकिन आपने मुझे रोक दिया और स्वय अपनी साफी बिछाकर बैठ गये। पास म मैं भी बैठ गया।

गुरुदेव जी कुछ समसामयिक बाते सुनाने लगे—भक्ति और अहकार एक दूसरे के विरोधी हैं। मेरे साधु मार्ग मे आये इक्यावन वर्ष हो गये हैं। इतने दिनो से मैं देख रहा हू कि जिन-जिन लोगो की भक्ति ढीली हुई उनकी साधना ढीली हो गयी। साधना ढीली होने से उनका उद्देश्य ही बदल गया। जब कल्याण का उद्देश्य बदल जाता है तो साधक उसके विपरीत पथ पर चलने लगता है। विपरीत पथ मे चले जाने के मूल मे है अहकार। अहकार जब आता है तो उन्माद, अवज्ञा, अकड़बाजी, प्रमाद ही व्यक्ति को सूझता है और फिर उसको भवधार मे डूबते देर नही लगती।

गुरुदेव ने कई साधको का नाम लिया और कहा कि जिन लोगो ने भक्ति छोड़ी तो उनके अहकार की हरी झडी पहले से मिल जाती है। फिर धीरे-धीरे उसी तरफ उनकी प्रगति होने लगती है। इसलिए अहकार के इस पतन-पथ से बचने के लिए साधक को सत-गुरुजनो की भक्ति का मजबूत आधार बनाये रखना चाहिए।

93.

जापानी महिला को सम्बोधित करते हुए

यह घटना 10 मई 2007 ई0 की है। गुरुदेव कबीर आश्रम झमसीखेल काठमाण्डू (नेपाल) मे विराजमान थे।

एक दिन साय प्रवचन के बाद आप अपने कक्ष मे विश्राम कर रहे थे। आपके पास दो व्यक्ति आये। उसमे से एक थे डा0 उत्तम लामिछाने, जो

काठमाण्डू के ही रहने वाले थे। डा0 लामिछाने जी ने ही साथ मे आई हुई बहन के बारे मे बताया कि यह जापान के टोकियो नगर की रहनेवाली हैं। इनका नाम सुजकी सायूरी है। इनकी उम्र तैंतालिस वर्ष की है। ये एक कम्पनी की चीफ डायरेक्टर हैं। इनके माता-पिता का देहावसान हो चुका है और इन्होने अपना विवाह नही किया है। इनकी मातृभाषा जापानी है। यह न तो हिन्दी समझती हैं और न अग्रेजी। इसलिए आपसे बातचीत करने मे मुझे इनकी सहायता करनी पड़ेगी।

वे गुरुदेव की बात जापानी मे अनुवाद करके सायुरी जो को बताते थे और सायुरी जी की बात हिन्दी मे अनुवाद करके गुरुदेव जी को बताते थे।

सुजकी सायुरी ने कहा—हमारे पास धन की कमी नही है, बहुत सारी सुविधाए हैं। बाहर से हम सब प्रकार से सम्पन्न हैं लेकिन अन्दर से चित्त जल रहा है। मन भटकता है, शाति नही है। यही दशा हमारे देश के अधिकाधिक लोगो की है। मानसिक पीड़ा के कारण ही वहा पर लोग खूब आत्महत्या कर रहे हैं।

गुरुदेव जी ने कहा—जहा त्याग और सयम का अभाव है और जिसकी दृष्टि मे बाहर की चमक-दमक, धन-दौलत और भोग पदार्थ ही सब कुछ है वहा अशाति रहना स्वाभाविक है। हर मनुष्य को अध्यात्म का काम करना चाहिए। अपने आपको समझे बिना मन का भटकाव बन्द नही हो सकता है।

सायुरी जी ने कहा—अध्यात्म का काम कैसे करे?

गुरुदेव जी—सबसे पहले तो यह समझो कि आप स्त्री-पुरुष नही हैं। आप रोगी और बूढ़े नही होते हैं। इस देह से अलग आपकी स्वतत्र सत्ता है जो अजर-अमर है। उसी को चेतन, जीव, आत्मा, सोल, गॉड आदि कुछ भी कह सकते हैं। यह शरीर जड़ है। यह तो आप (जीव) की सत्ता से, आपकी उपस्थिति से ही सुन्दर दिख रहा है अन्यथा यह गदा, कुरूप और घृणित है।

गुरुदेव जी की बात सुनकर उन्होने कहा कि ऐसे विचार मैं पहली बार सुन रही हू।

सुजकी सायुरी जी ने पुनः पूछा—मन को कैसे वश मे किया जाये?

गुरुदेव जी—इच्छाओ को घटाओ। विचार करो कि अत मे आपके साथ क्या जायेगा। मनुष्य के पास जो कुछ है चाहे कौड़ी हो या करोड़, अत मे सब कुछ यही रह जाता है। आपके पास केवल आप हैं। ऐसा विचारकर सबसे निष्काम हो जाओ।

सायुरी जी मानसिक पीड़ा से ग्रसित थी। उत्तम जी ने बताया कि ये छह महीना पूर्व आत्महत्या करने के लिए निश्चय कर ली थी लेकिन फिर इन्होने अपने आप को सभाल लिया।

गुरुदेव ने हाथ से इशारा करते हुए कहा—ऐसा कभी मत करना। वीर बनो, समस्याओ को धैर्यपूर्वक समझो। आत्महत्या करना दुख का अत नही है। दुख का अत कामनाओ के अत करने से होता है। गुरुदेव की इतनी बाते सुनकर सुजकी सायुरी फूट-फूटकर रो पड़ी। उन्होने कहा—आज तक इतने प्यार से मेरी भलाई के लिए इस प्रकार किसी ने मुझसे नही कहा था। सायुरी जी बारम्बार गुरुदेव जी के प्रति धन्यता ज्ञापित कर रही थी।

शाम हो चुकी थी। गुरुदेव ने कहा—अच्छा, अब जाओ किन्तु काठमाण्डू मे जब तक आप हैं फिर मिलना।

सायुरी जी हिन्दी का एक शब्द बोलती थी—'नमस्ते।' चलते वक्त गुरुदेव जी एव सभी सतो को बारम्बार नमस्ते करते हुए वे बाहर चली गयी।

94.

मैं गोपाल कृष्ण की उपासिका हू

गुरुदेव कबीर आश्रम प्रीतमनगर मे विराजमान थे। शाम का समय था, एक दम्पति गुरुदेव जी के दर्शन के लिए आये। पति-पत्नी दोनो प्रणाम करके बैठ गये। गुरुदेव ने कुशल-मगल पूछा। उन्होने कहा—ठीक है महाराज! गुरुदेव ने कहा—आपस मे प्रेम से तो रहते हो न? दोनो बोल पड़े—नही महाराज, हम दोनो का आपसी कलह चलता रहता है।

गुरुदेव जी—कलह क्यो करते हो? पत्नी ने कहा—महाराज, मै गोपाल कष्ण को पूजनेवाली हू इसलिए गोपाल मदिर मे जाती हू। और ये राम को भगवान मानते हैं। कहते हैं कि राम बड़े हैं, तुम भी राम के मदिर मे चलो। तो महाराज, मैं राम के मदिर मे क्यो जाऊ? मैं तो गोपाल-कृष्ण की उपासिका हू।

गुरुदेव ने कहा—भई, इसमे झगड़ा करने की क्या बात है? अच्छा यह बताओ कि तुम अपने पति को तो समर्पित हो न? महिला ने कहा—हा महाराज, हू। गुरुदेव—लेकिन पति को समर्पित होने के बाद भी अपने सास-ससुर, देवर-जेठ, देवरान-जेठान आदि सबको भोजन-पानी देती हो कि नही? उसने कहा—सबको भोजन देती हू।

गुरुदेव—इसी प्रकार तुम गोपाल-कृष्ण को समर्पित हो लेकिन राम मदिर मे जाकर अपने पति के साथ राम को भोजन-पानी भी नही दे सकती हो? तुम्हारे पति तुम्हे कहते हैं तो तुम भी चली जाओ, उनको हृदय से समर्पित न हो लेकिन हाथ जोड़ लेने मे क्या नुकसान है। तुम अपने कृष्ण को समर्पित रहो।

गुरुदेव की इतनी बात सुनकर वह सरल हो गयी। उसने हसते हुए कहा—लेकिन ये ऐसा समझाते नही, कहते हैं कि राम मदिर चलो, राम ही बड़े हैं।

गुरुदेव ने कहा—यह इनका दोष है। किसी बात को कायदे से सरलता से कहकर व्यवहार सुलझता है। गुरुदेव के समझाने के बाद दोनो आपस मे सरल हो गये।

95.

गुरुदेव जी झूसी में शेखतकी की मजार पर

11 नवम्बर, 1999 ई0 को दोपहर के बाद गुरुदेव कुछ सतो को लेकर इलाहाबाद और झूसी के कुछ स्थानो मे घूमने के उद्देश्य से निकले।

सबसे पहले इलाहाबाद का सग्रहालय देखने गये, इसके बाद गुरुदेव झूसी गये जो गगा के पूर्व तरफ तट पर ही है। गुरुदेव जी सद्गुरु कबीर साहेब की वाणियो मे ''झूसी सुनी पीरन को नामा'' और ''एकइस पीर लिखे तेहि ठामा'' यह बहुत पहले से ही पढ़ते आये हैं और उस पर टीका-व्याख्या भी लिखे हैं किन्तु आज तक उस स्थान को देखने का अवसर नही पड़ा था। आज इतने दिनो पर उस स्थान को स्वय देखने गये।

झूसी मे दक्षिण तरफ गगा के तट पर शेखतकी साहब की मजार है। कबीर साहेब ने बीजक मे एकइस पीरो का चित्रण किया है लेकिन कुछ दिनो के बाद शेखतकी की जब मृत्यु हुई तो उनको भी वही पर दफनाया गया। शेखतकी के बाद भी एक कब्र है। वे सब मिलाकर कुल तेईस कब्र इस समय हैं। आज भी लोग वहा जाते हैं और उन कब्रो को सिजदा करते हैं। वहा एक मिया जी थे जो बड़े वाकपटु थे। उन्होने कहा—शेखतकी बड़े सत थे लेकिन उनके पिता और भी बड़े सत थे। उन्होने एक दुराचारी राजा के किला को अपने चमत्कार से उलट दिया।

गुरुदेव न उनकी बातो पर धीरे से तर्क करते हुए कहा—ऐसा कोई नही कर सकता। मिया जी ने कहा—बिलकुल कर सकता है। अभी कुछ दिन पूर्व एक

ट्रक जा रही थी। मैंने उसे रोकने का इशारा किया लेकिन उसने रोका नही। तो मैंने उस घमण्डी ड्राइवर की ट्रक को उगली के सकेत मात्र से उड़ा दिया था। कहिये तो मैं अपनी उगली के सकेत मात्र से इन पेड़ो को उखाड़कर उड़ा दू।

गुरुदेव जी ने कहा—ठीक है, उड़ा कर दिखाये।

मिया जी ने कहा—हाथ मिलाइये। गुरुदेव ने हाथ मिलाया। तब वे हसकर कहने लगे, अभी नही, फिर कभी।

96.

जेलो मे गुरुदेव के प्रवचन

ससार मे अधिकतम मनुष्य होते हैं, जिनका एक ही क्षेत्र होता है। अपने-अपने क्षेत्र मे उनकी माग होती है और उसी के अनुसार उन लोगो का अधिकार होता है। लेकिन सतो का जीवन बहुत व्यापक होता है। स्कूल-कालेज, फैक्ट्री, कल-कारखाने, आफिस, जेलखाने, आश्रम, मदिर, गरीब-अमीर, विद्वान-अविद्वान, गाव-नगर या कहे कि जहा भी मनुष्य रहते हैं वहा सतो की आवश्यकता पड़ती है क्योकि सतो का जीवन करुणा का सागर होता है। सत चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। इनके निकट जो भी आता है वही शीतलता का अनुभव करता है।

गुरुदेव के कार्यक्रम जेल मे भी अनेक बार हो चुके हैं। फैजाबाद के जेल मे अब तक चार प्रवचन कार्यक्रम हुए हैं। वहा पहली बार सन् 1971 मे गुरुदेव बुलाये गये। उस समय जेलर महोदय नही थे तो जेलर का आफिस ही गुरुदेव का प्रवचन स्थल था और जेलर की कुर्सी पर ही गुरुदेव जी बैठकर प्रवचन दिये थे।

यह प्रवचन आपका बी0 क्लास के कैदियो के बीच हुआ था। उन दिनो ए0 क्लास और बी0 क्लास चलता था। जो सम्भ्रात घर के लोग होते थे उनको सुविधापूर्ण बी0 क्लास म रखा जाता था।

दूसरी बार भी सन् 1971 मे ही कुछ महीने बाद बैरेक हाल मे आपका प्रवचन हुआ। यह हाल कैदियो का विश्राम स्थल था। गुरुदेव के इस प्रवचन मे कैदी लोग उपस्थित थे। जिसमे आप कर्म सुधार पर विस्तृत व्याख्यान दिये।

तीसरी बार वर्ष 1973 मे जेल के स्वागत कक्ष मे हुआ। इसमे श्रोताओ की सख्या भी काफी थी। उस समय जेलर मुसलमान थे जो बड़े मस्त स्वभाव के

थे। गुरुदेव के प्रवचन के बीच-बीच मे उर्दू-फारसी के शब्द, शायरी आदि के आने पर वे झूम उठते थे।

चौथी बार गुरुदेव सन् 1974 मे जेल के कम्बलघर मे प्रवचन दिये। इसके बाद फिर वहा जाने का सयोग ही नही पड़ा।

सन् 1995 से भोपाल (गाधी भवन) मे गुरुदेव जी के प्रवचन कार्यक्रम लगभग प्रतिवर्ष होते रहे। इस कार्यक्रम के आयोजक गाधी भवन के सेक्रटरी श्री रामचन्द्र भार्गव जी थे। श्री भार्गव जी के माध्यम से लगभग छह-सात बार भोपाल के केन्द्रीय कारागार मे गुरुदेव जी के प्रवचन हुए।

इसके बाद 16 मार्च, 2004 म छत्तीसगढ़ के बालोद नगर की जेल मे आप एक बार कैदियो और नागरिको के बीच एक घटा प्रवचन दिये।

3 अगस्त, 2010 को नागपुर के केन्द्रीय कारागार मे आपका कैदियो के बीच एक कार्यक्रम हुआ। जिसमे नगर के भी कुछ गणमान्य लोग उपस्थित थे।

गुरुदेव जी ने कहा—विवेक दृष्टि से देखा जाये तो यह पूरा ससार ही जेलखाना है क्योकि यहा सभी के मन मे मोह, आसक्ति की बेड़ी बधी हुई है। जो अपने मन को निर्बन्ध बना लिया, जगत की वासना से अपने मन को हटाकर अपने आप मे स्थित हो गया, वही जन्म-मरण की जगत-जेल से मुक्त ह।

97.

वे तो एक वैज्ञानिक हैं

दिल्लो के एक युवक भौतिकवादी विचार के थे। वे साधु-महात्माओ को ढागी-पाखण्डी तथा जनता को भटकानेवाले समझते थे और उनके पास कभी भूलकर भी फटकना नही चाहते थे। एक दिन वे अपने किसी मित्र के पास गये जो बीजक व्याख्या पढ़ रहे थे। उन्होने मित्र से पूछा—क्या पढ़ रहे हो? मित्र ने बताया हमारे गुरुदेव की लिखी बीजक व्याख्या। वे सज्जन बीजक व्याख्या लेकर उलट-पुलटकर कुछ समय देखे तो उन्हे अच्छी लगी। उन्होने मित्र से कहा—यह पुस्तक मुझे दे दो, यह तो अत्यन्त वैज्ञानिक है। इसको मैं मननपूर्वक अध्ययन करूँगा।

मित्र ने कहा—यह पुस्तक मैं अपने लिए मगाया हू। आपको कैसे दे दू? हा, आप चाहे तो मैं आपके लिए दूसरी प्रति मगा सकता हू।

उन्होने कहा—ठीक है, आप मेरे लिए दूसरी प्रति मगा दीजिए। कुछ दिनो मे इलाहाबाद से बीजक व्याख्या दोनो खण्ड उनके पास आ गयी। अब वे

बीजक व्याख्या मे ही डूबे रहने लगे। एक दिन उन्होने सोचा—इस पुस्तक मे तो पता लिखा ही है, इसलिए इलाहाबाद चलकर अभिलाष दास की अन्य पुस्तके भी क्यो न लाये।

वे दिल्ली से चलकर इलाहाबाद आये। एक होटल मे ठहरे। दूसरे दिन पुस्तक मे लिखे पता के आधार पर कबीर आश्रम पहुचे। वहा देखे कि यहा तो बहुत-से साधु रह रहे हैं। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिससे मैं दूर-दूर रहना चाहता हू, वही मुझे मिल जाता है। उन्होने पुनः पता मिलाया तो देखा कि सब ठीक है। वे सतो के पास जाकर पूछने लगे—आप साधु लोग यहा कैसे रह रहे हैं, यह तो अभिलाष दास जी का निवास स्थान है?

सतो ने कहा—हा, यह उन्ही का निवास स्थान है, वे हमारे गुरुदेव हैं।

उन्होने कहा—वे तो एक वैज्ञानिक हैं। आप साधु-सन्यासी लोग उनके पास कैसे रह सकते हैं?

सतो ने कहा—सबसे पहले वे एक सत हैं। उसके बाद वे धर्म के एक वैज्ञानिक हैं। वे हमारे गुरुदेव हैं इसलिए हम सब उनके पास रहते हैं।

युवक ने कहा—अभी वे कहा हैं?

सतो ने बताया—इस समय वे गुजरात के कार्यक्रमो मे हैं।

युवक—क्या यहा पर अभिलाष दास जी की पुस्तके मिल सकती हैं?

एक सत—हा, मिल सकती हैं।

कमरे से लाकर कुछ पुस्तके वे उनको दिखाये।

वे सज्जन कबीर दर्शन, रामायण रहस्य, कहत कबीर, वेद क्या कहते हैं? पचग्रथी, सत कबीर और उनके उपदेश, मोक्ष शास्त्र, विवेक प्रकाश आदि पुस्तके खरीदे। पैसे भुगतान करने के बाद होटल मे चले गये।

वे तीन दिन तक उसी होटल मे ठहरे रहे। वहा उनके पास अन्य कोई काम था नही, इसलिए अधिक से अधिक समय वे उन गथो को पढ़ने मे लगाते थे। तीन दिनो मे उनकी दृष्टि बदल गयी। अब उनके मन मे साधु-सतो के प्रति उतनी घृणा नही रह गयी। लेकिन वे पुनः कबीर आश्रम नही आये। होटल से ही दिल्ली वापस चले गये।

अभी तक उनका और उनकी पत्नी का वैचारिक विरोध बना रहता था, क्योकि उनकी पत्नी किसी सत से जुड़ी थी और वे सतो के पक्के विरोधी थे। किन्तु अब यह परिस्थिति बदल गयी। उन्होने पत्नी से कहा—अब मैं भी सत से जुड़ गया हू।

अब दोनो की जिदगी भक्ति के एक रास्ते पर चलने लगी।

गुरुदेव जब कबीर आश्रम रामपुरा (नयी दिल्ली) गये तो वे सज्जन आकर गुरुदेव के चरण पकड़ लिये और भावविभोर होकर सारी घटना बताने लगे। उन्होने कहा—गुरुदेव, मैं आपका वैचारिक शिष्य हो गया हू। अब औपचारिक रूप से दीक्षा देने की कृपा करे।

गुरुदेव ने कहा—वैचारिक रूप से शिष्य होना ही खास बात है। जब वैचारिकता पक्की रहेगी तो औपचारिकता भी हो जायेगी।

98.

लोकसभा भवन के पास एक कार्यक्रम

23 से 26 नवम्बर, 2007 ई0 को गुरुदेव का कार्यक्रम डिचाऊकला (नयी दिल्ली) मे चल रहा था। इसी बीच 25 नवम्बर को तीन बजे से पाच बजे तक एक कार्यक्रम दिल्ली म लोक सभाभवन के पास निश्चित हो गया। इस कार्यक्रम के आयोजक श्री कौशलकुमार जी थे। कौशल जी लगभग दस वर्षों से दिल्ली मे रहकर लोगो को योग सिखाते हैं। योग के माध्यम से उनका अच्छे-अच्छे लोगो से सम्पर्क हो गया है। योग पर लिखी उनकी एक पुस्तक भी है। यह कायक्रम लोकसभा भवन के पास एक हाल म हुआ। इसमे अनेक राजनेता एव विद्वतगण उपस्थित थे। अनेक पत्रकार एव मीडिया के लोग भी आये हुए थे। गुरुदेव जी एव अतिथियो के स्वागत के पश्चात कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। गुरुदेव जी का प्रवचन कुछ इस प्रकार रहा—

सम्माननीय अतिथि महोदय, सज्जनो तथा देवियो! सद्गुरु कबीर ने कहा है—

मानुष तेरा गुण बड़ा, मांस न आवै काज।
हाड़ न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज॥

(बीजक, साखी 199)

मनुष्य की विशेषता उसके गुणो से है। सद्गुणो के अभाव मे मनुष्य केवल मनुष्य का शरीर ओढ़े है, वास्तव मे वह मनुष्य है ही नही। इसलिए आवश्यकता है मनुष्य बनने की। सच्ची मनुष्यता हमारे मे तब आयेगी जब हम सबके साथ प्रेम, करुणा, क्षमा और दया का बरताव करना सीखेगे। हमारे हृदय मे प्रेम तब तक नही पनप सकता जब तक हम सकुचित बने रहेगे। कुछ हृदयहीन लोगो ने

समाज मे अपने ही भाई को अछूत कहकर अलग कर दिया है। इस भावना ने हिन्दू समाज का बहुत अहित किया है। किसी मनुष्य को अछूत कहना अपराध ही नही, पाप है। किसी की तलवार से हत्या कर देना पाप है लेकिन किसी इसान के मन मे यह विचार बैठा देना कि तुम जन्म से अछूत हो यह महापाप है। इसका विरोध आज से साढ़े पाच सौ वर्ष पूर्व सद्गुरु कबीर ने ब्राह्मणो की नगरी काशी मे रहकर खुलकर किया है।

इसके बाद गुरुदेव ने वेद, शास्त्र, गीता, रामायण आदि ग्रथो का प्रमाण देते हुए बताया कि मनुष्य केवल मनुष्य ह। यहा जन्म से न कोई छोटा है, न कोई बड़ा और न कोई अछूत। छोटा-बड़ा, छूत-अछूत तो मनुष्य कर्म से होता है। जो घृणित कर्म चोरी, हत्या, व्यभिचार, दुराचार, पापाचार मे डूबा है वही नीच है। किन्तु वही व्यक्ति यदि ऐसे कर्मों को छोड़कर अपना पूर्ण सुधार कर ले तो महान है। कोई नाली साफ कर रहा है, टट्टी साफ कर रहा है, ऐसी स्थिति मे अछूत है किन्तु जब वह स्नान करके साफ कपड़े पहन लिया तो अछूत नही है। नाली साफ करना और टट्टी फेकना तो पवित्र कर्म है लेकिन ऐसे काम करनेवालो को लोगो ने छोटा माना है। अगर टट्टी करके गदगी फैला देनेवाला अछूत और छोटा नही है तो उस जगह को साफ कर देनेवाला छोटा कैसे है?

इसके बाद गुरुदेव ने हिन्दू शब्द की उत्पत्ति और उसका ऐतिहासिक वर्णन करते हुए राष्ट्रीय एकता और नैतिक पक्षो पर विस्तृत प्रकाश डाला। अत म आपने कबीर वाणी, वेद, उपनिषद् एव वैदिक गथो का प्रमाण देते हुए बताया कि मनुष्य का मूल उद्देश्य आत्मशाति ही है।

एक घटा गम्भीर एव तर्कपूर्ण विचार देने के बाद गुरुदेव का प्रवचन समाप्त हुआ। फिर मिलने के लिए कुछ लोग आपके पास आने लगे। उसी समय बजरग बिहारी तिवारी जी भी आये।

गुरुदेव जी ने श्री तिवारी जी से कहा—मैं आपके बारे मे सोच ही रहा था कि आप आयेगे जरूर, अच्छा हुआ आप आये। आपके लेख मैंने पढ़ा, अच्छा लगा। आपके लेख उत्तेजनारहित, सकारात्मक और गम्भीर हैं। ऐसे ही लेखक सफल होते हैं। गुरुदेव ने "स्वामी शकरचार्य क्या कहते हैं?" नाम की अपनी पुस्तक की प्रति उनको दी।

गुरुदेव जी प्रवचन से लौटकर कुछ कि0मी0 दूर पर एक सज्जन के घर गये। वे सज्जन पहले से गुरुदेव जी एव सतो को जलपान के लिए निमत्रित कर रखे थे।

गुरुदेव जी को ले जाकर गृहस्वामी स्वागत कक्ष मे बैठाये। सभी सत भी बैठे और साथ-साथ गृहस्वामी, गृहदेवी एव उनकी बेटी आदि बैठे। गृहस्वामी अनेक विदेशी कम्पनियो के सलाहकार हैं।

गृहदेवी ने कहा—स्वामी जी, मेरा मन बहुत चचल रहता है। जब भी पूजा मे बैठती हू तो दुनिया भर की बाते याद आती रहती हैं। मैं हैरान हो जाती हू। बीच म गृहस्वामी बोल पड़े—मेरा मन तो और अधिक चचल है। यह तो कभी स्थिर होता ही नही है। उनकी बेटी भी बोल पड़ी—स्वामी जी, मेरे दो छोटे-छोटे बच्चे हैं। उनके लिए मेरा मन बहुत चिंतित रहता है। मैं सोचती हू कि मेरे इन बच्चो का क्या होगा?

उनका ऐश्वर्य, सम्पत्ति, सुविधाए और उनके मन की ऐसी स्थिति देखकर गुरुदेव जी को हसी आ गयी। आपने उनकी बेटी से कहा—तुम चिन्ता क्यो करती हो बेटी! ये तुम्हारे माता-पिता चिन्ता करे तो करे। तुम व्यर्थ मे क्यो परेशान होती हो? घबराओ मत, सबका जीवन सुखमय रहेगा।

गुरुदेव ने कहा—सभी जीव मात्र शाति चाहते हैं। शाति की प्राप्ति के लिए सभी छटपटा रहे हैं किन्तु उसका काम न करने से शाति दूर ही रहती है। इसके लिए प्रतिदिन सद्ग्रथो का अध्ययन, आत्मचितन और विचारवान सतो, सज्जनो की सगति करना चाहिए। तब यह काम होता है।

गृहस्वामी ने कहा—महाराज, बचपन से ही हम इगलिश पढ़े। उसो परिवेश मे रहे। हिन्दी समझ मे नही आती इसलिए आपके ग्रथो को पढ़ने मे दिक्कत होती है। गुरुदेव ने कहा—मैं आपको इगलिश की कुछ पुस्तके देता हू। 1. Kabir Bijak (Commentary), 2. Eternal life, 3. Art of Human Behaviour, 4. Kabir Amrit Vani ये चार पुस्तके आपने उनको दिया।

99.

गुरुदेव जी की जम्मू यात्रा

26 नवम्बर, 2007 को डिचाऊकला (नयी दिल्लो) का कार्यक्रम करने के बाद गुरुदेव जी जम्मू गये। श्री नवलकिशोर जी का घर इलाहाबाद मे है। आप जम्मू मे विद्युत विभाग के एक बड़े इजीनियर हैं। वर्षों से आपका विचार था कि गुरुदेव को एक बार हम जम्मू मे लाकर सेवा-सत्सग का लाभ ले। यह आपकी मनोकामना इस वर्ष गुरुदेव ने पूर्ण कर दिया। आपके एकमात्र सुपुत्र वर्षों से गुरुदेव जी के पास साधुरूप मे रहते हैं जिनका नाम ब्रह्मचारी श्री देवेन्द्र साहेब है।

27 तारीख को शाम को गुरुदेव जी श्री नवल किशोर जी के घर पर कुछ भक्तो-सतो के बीच बैठे प्रवचन कर रहे थे उसी समय श्री मधु परमहस जी के दो आदमी कुछ फल और सामान लेकर आये। वे गुरुदेव के चरणो मे समर्पित करते हुए महाराज जी का सदेश बताये कि—कल नौ बजे तक महाराज जी अपने आश्रम मे आपकी प्रतीक्षा करेगे।

गुरुदेव ने पुन: अपना प्रवचन आरम्भ किया—मोह ही सारे दुखो का कारण है। इसमे किसी के लिए क्षमा नही है चाहे स्त्री हो या पुरुष, चाहे गृहस्थ हो या विरक्त, अगर मोह करेगा तो दुख पायेगा। इसलिए जो सदैव आनन्द रस का पान करना चाहे वह मोह का त्याग करे। सद्गुरु कबीर का यह अमर वाक्य सूत्र रूप मे है—''कहहि कबीर ते ऊबरे, जाहि न मोह समाय।''

दूसरे दिन जलपान के पश्चात गुरुदेव समाज सहित 'साहेब बदगी' आश्रम राजणो-जम्मू श्री मधु परमहस जी से मिलने के लिए गये। गुरुदेव के पहुचते हो मधु परमहस जी बड़े आदर भावपूर्वक गुरुदेव एव सतो को आश्रम के अन्दर ले गये। आपस मे कुशल मगल पूछने के बाद महाराज जी स्वय बताने लगे कि महात्मन! मैंने अपने परिश्रम से यहा जम्मू मे और इसके आस-पास सत्तर आश्रमो की स्थापना की है। प्रतिदिन मेरे कार्यक्रम लगे रहते हैं। बहुत परिश्रम करने के बाद मैंने भारत के विभिन्न प्रातो मे अनेक आश्रमो की स्थापना की है। इस समय मेरे कुल 108 आश्रम हैं।

इस प्रकार काफी देर तक महाराज जी गुरुदेव जी से बड़ी भावना उत्साह और तन्मयता से बाते करते रहे। इसके बाद गुरुदेव एव सतो की भट पूजा भी किये।

अत मे उन्होने कहा—महात्मन! मैं आपका ज्यादा समय नही लूगा। जम्मू मे मेरे करीब चालीस आश्रम हैं। उनमे से कम से कम बीस आश्रमो को आज मैं आपको दिखाना चाहता हू। मात्र दो घटे मे आप इन आश्रमो को देख सकते हैं। आपकी सेवा मे जितनी आवश्यकता होगी हम गाड़िया भेज देगे। हमारे पास कुल बीस गाड़िया हैं। आपकी कृपा से हमारे पास इस समय दो सौ करोड़ की सम्पत्ति है। गुरुदेव मुस्कुराते हुए सुनते रहे।

राजणी आश्रम से लौटकर गुरुदेव उनका एक आश्रम देखने गये। वहा से लौटकर जम्मू से करीब सत्तर कि0मी0 दूर मसर झील देखने गये। यह झील काफी ऊचे पहाड़ पर स्थित करीब दो वर्ग कि0मी0 दूर तक फैलो हुई है। इसमे साफ-स्वच्छ गहरा पानी भरा है। इस झील मे हजारो की सख्या मे बड़ी-बड़ी मछलिया हैं। जलाशय के अन्दर बल्लिया गाड़कर ऊपर छत के आकार का

चौबाहा बना दिया गया है। वहा पर खड़े होकर लोग मछलियो का दृश्य देखते हैं।

मसर झील से लौटते समय ड्राइवर ने कहा—महाराज जी, भारत-पाकिस्तान का बार्डर आपको दिखा दू?

गुरुदेव ने कहा—वहा भी तो ऐसे ही जमीन, मिट्टी, धूल होगी?

ड्राइवर ने कहा—हा महाराज, सब वही है।

गुरुदेव—तो रहने दो, व्यर्थ मे दस कि0मी0 क्यो दौड़ा जाय। साय तीन बजे तक गुरुदेव समाज सहित श्री नवलकिशोर जी के घर वापस आ गये। दूसरे दिन विश्राम किये। शाम को कुछ सत्सग हुआ। फिर उसी दिन (29 नवम्बर) नौ बजे रात की गाड़ी से चलकर 30 नवम्बर को आप समाज सहित भक्त श्री बबलू जी के कार्यक्रम मे यमुना नगर (हरियाणा) आ गये।

100.

गुरुदेव की एक पत्रकार से वार्ता

उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिला के कुरावली बाजार मे 5 से 9 दिसम्बर 2007 तक गुरुदेव का पचदिवसीय कार्यक्रम चल रहा था। आठ दिसम्बर को शाम साढ़े सात बजे गुरुदेव निवास स्थान पर बैठे ''स्वामी शकराचार्य क्या कहते हैं?'' पुस्तक पढ़ रहे थे। उसी समय कुरावली बाजार के ही पाच नवयुवक गुरुदेव से मिलने आये। उनमे से एक 'राष्ट्रीय सहारा' के पत्रकार थे। उनका नाम था राहुल।

गुरुदेव ने सबका कुशल-मगल पूछा, इसके बाद आपने कहा—तुम लोगा को कुछ पूछना हो तो पूछ सकते हो।

राहुल जी ने अपना परिचय देते हुए कहा—गुरुदेव! चार दिनो से आपके विचारो को मैं बहुत ध्यान से सुन रहा हू। अब तो आपकी कृपा से मेरा सारा भटकाव समाप्त हो गया है। लेकिन थोड़ी-सो जिज्ञासाए हैं। कल आपके प्रवचन मे आते ही मैंने एक वाक्य सुना जो मेरे मन मे बारम्बार अटैक कर रहा है। आपने कहा था—गुरु भी किसी का उद्धार नही कर सकता है। उसकी बातो पर भी विचार करने की आवश्यकता है।

गुरुदेव ने कहा—धार्मिक जगत मे खूब हो हल्ला है और ग्रथो मे लिखा है कि गुरु जिसका चाहे उसका उद्धार कर सकता है। उसकी कृपा से कुछ भी हो

सकता है। लेकिन यह कुछ अशो मे सत्य है, सर्वांश मे नही। उनकी बातो पर भी विचार करने की आवश्यकता है। विचार और विवेक सबके ऊपर है।

राहुल जी—गोस्वामी जी ने कहा है—माता-पिता और गुरु जो भी कहे उसे मान लेना चाहिए। उस पर विचार नही करना चाहिए। रामचरित मानस मे वह मूल चौपाई इस प्रकार है—

''मात पिता और गुरु की बानी। बिनहि विचार करिय शुभ जानी॥''

गुरुदेव—गोस्वामी जी का यह वचन एक ढग से ठीक है, लेकिन विचार कर लेने मे क्या हर्ज है। माता-पिता की बात भी गलत हो सकती है। किसी की गलत बात को स्वीकार कर लेना उचित तो नही है। आखिर गोस्वामी जी स्वय लिखते हैं कि भरत ने मा कैकेयी की बात नही मानी, वे राज्य स्वीकार नही किये और चित्रकूट जाकर राम के चरणो मे राज्य चढ़ा दिये। तो यहा मा की बात का उल्लघन हुआ। यहा भरत जी ने मा की ऐसी बात न मानकर ठीक ही किया। यह ठीक है कि गृहस्थी मे माता-पिता के आचार-विचार या आचरण मे कोई त्रुटि आ गयी हो तो भी उनकी उन बातो की उपेक्षा करके उनको आदर एव आज्ञा पालन करना चाहिए। क्योकि उनके अन्य बहुत-से उपकार हम पर हैं। लेकिन विरक्त साधक अपना सब कुछ छोड़कर गुरु के पास पूर्णता की पूरी आशा लेकर आता है। यदि गुरु मे आचरण की त्रुटि है तो यह क्षम्य नही है। इसलिए गुरु की बात पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। कबीर साहेब ने कहा है—''बिना विचार भटकत फिरै, पकरि शब्द की छाहि॥'' विचार से ही सारे दुखो का अत हो सकता है—''करहु विचार जो सब दुख जाई।''

राहुल जी—गुरुदेव! लोग नदी, पेड़, पहाड़, समुद्र, गाय आदि की पूजा करते हैं तो यह सब प्राकृतिक चीजो को पूजने का क्या मतलब है?

गुरुदेव—हिन्दू समाज मे तो कही भी हल्ला कर दो कि अमुक जगह देवी रहती है तो वहा पूजनेवालो की लाइन लग जायेगी। गाय तो एक जानदार प्राणी है। उससे दूध मिलता है। लेकिन लोग उसके गोबर को भी गणेश बनाकर पूजते हैं। गणेश जी अगर आज आ जाये तो इन हिन्दुओ पर मुकदमा चला देगे, कि मेरी शक्ल आप लोग गोबर की क्यो बना रहे हैं? पेड़, पहाड़, नदी आदि की स्तुति तो वैदिक ऋषि भी करत थे। वह जमाना ही ऐसा था कि प्रकृति की विचित्रता को देखकर वे मगन हो जाते थे। बहती हुई नदी की विशाल धारा, पहाड़ो की विशालता, वृक्षो का स्वयमेव छोटे पौधे से विशाल वृक्ष बन जाना, समुद्र की गहराई और उसकी अथाह जलराशि को देखकर काव्य रच डालते थे। लेकिन उन्ही वैदिक ग्रथो मे आत्मज्ञान के हीरे-मोती भरे हुए हैं। जो वैज्ञानिक

विचार-चितन ऋषि उस समय किये हैं आज उन्ही की सतान हम लोग इस वैज्ञानिक युग मे होते हुए भी पोगापथी बने रहते हैं। अतः सारग्राही बने, अधविश्वास, चमत्कार से हटकर बोध और विचारपूर्वक काम करे।

राहल जी—कर्म और पुनर्जन्म का क्या सम्बन्ध है?

गुरुदेव—कर्म और पुनर्जन्म दोनो का चोली-दामन का सम्बन्ध ह। कर्म दो प्रकार के होते हैं—सकाम कर्म और निष्काम कर्म। सकाम कर्म के मूल मे है राग; और राग ही बधन है। जहा जीव को राग है, मोह है वहा वह पहुच जाता है। इसी प्रकार ससार के प्राणी-पदार्थों के प्रति यदि मोह है, सुख-भोग की इच्छा है तो मरणोपरान्त पुनः देह मे आना है। किन्तु जिसकी देखने, खाने, भोगने की इच्छा नही है, जो केवल देह निर्वाह के लिए या लोककल्याण के लिए निष्काम भाव से कुछ काम कर देता है और मन ससार से अनासक्त है फिर वह ससार मे क्यो आयेगा। एक व्यक्ति फल खाने की इच्छा से बाग मे झोपड़ी बनाकर रहता है, लेकिन जब फल खाने की इच्छा समाप्त हो गयी तो झोपड़ी को तोड़ देता है और बाग को छोड़कर चल देता है। कर्म ही से बन्धन और कर्म ही से मोक्ष होता है—

एक कर्म है बोवना, उपजै बीज बहूत।
एक कर्म है भूनना, उगै न अंकुर सूत॥

राहुल जी—लोग जानते हुए भी उन कर्मों को क्यो करते हैं जिनके परिणाम मे दुख होता है?

गुरुदेव—अज्ञान एव आसक्ति वश। हम कही जा रहे हैं, सामने सर्प आ गया तो जैसे ही उसे हम देखते हैं तुरन्त वहा से भाग जाते हैं। गोद मे बिच्छू गिर गया तो उसे देखते ही फेक देते हैं। सर्प और बिच्छू को पास मे देखते-जानते हुए भी उससे दूर नही होते हैं तो कहा जानते हैं। आसक्तिवश आदमी समझ नही पाता और उन कर्मों को करता है जिसके परिणाम मे उसे पश्चाताप करना पडता है।

यह अज्ञान और आसक्ति वस्तु-बोध और वैराग्य से मिटती है। राजा भर्तृहरि रानी पिगला मे अत्यन्त आसक्त थे किन्तु जब उसके चरित्र का पता चला तो पिगला के प्रति उनका मन बिलकुल विरत हो गया और राजपाट छोड़कर त्याग का मार्ग अपना लिये।

राहुल जी—अब तो यह समझ मे आ ही गया है कि नियम ही ईश्वर है और यह नियम रूपी ईश्वर किसी को क्षमा नही करता, जो करो उसका फल हमारे सामने रख देता है। उसमे किसी के लिए मुलाहिजा नही है।

गुरुदेव—हा, कारण-कार्य व्यवस्था का ज्ञान हो जाने पर सारी भ्रातिया कट जाती हैं। जड़-चेतन के गुण-धर्मों को ठीक से समझ लेने के बाद बारम्बार ईश्वर की दुहाई देने की जरूरत नही पड़ती है और न नाना देवी-देवताओ के पीछे भटकना पड़ता है। इसके बाद तो एक ही काम बचा रहता है—राग-द्वेष रहित रहते हुए अपने चित्त को सेवा-भक्ति से शुद्ध करना। यह काम भी करते-करते होता है।

101.
बिना बोले कैसे खेले?

एक बार गुरुदेव छत्तीसगढ़ मे खिसोरा नाम के गाव मे थे। चैत्र महीने का समय था। आप दोपहर भोजनोपरान्त अपने कक्ष मे विश्राम कर रहे थे।

गुरुदेव को आसन पर लेटे अभी पाच मिनट ही हुए थे कि बाहर से बच्चो की जोरो से आवाज आने लगी। गुरुदेव का कमरा ऐसी जगह पर था कि पास मे ही गली थी। वहा पर कई बच्चे आकर खेलने लगे। उनकी आवाज से आपके विश्राम मे व्यवधान हो रहा था। कुछ समय तक तो आप लेटे रहे लेकिन जब बच्चो का शोर शात नही हुआ तो आप उठे, बाहर आकर उन बच्चो को समझाये कि बेटा, तुम लोग शोर कर रहे हो, मुझे विश्राम करना है। ऐसा करो कि खेलो लेकिन बोलो मत।

एक लड़का जिसकी पाच-छह वर्ष की उम्र रही होगी वह उन सभी बच्चो से बड़ा था। उसने कहा—लेकिन बोले बिना खेले कैसे?

गुरुदेव को उस छोटे बच्चे की बात बहुत अच्छी लगी। आपने उससे कहा—बेटा, तुम जीत गये मैं हार गया। लेकिन बेटा, मैं विश्राम करना चाहता हू। तुम समझदार हो। ऐसा करो, इन सभी बच्चो को कही दूर ले जाकर खेलो तो यहा आवाज नही आयेगी। उस बच्चे ने कहा—ठीक है साहेब। और वह बालक तुरन्त सभी बच्चो को दूर कही लेकर चला गया और गुरुदेव पुनः विश्राम करने लगे।

प्राणिया मे किसी को अपमान प्रिय नही है। एक छोटे बालक को भी यदि डाट दिया जाये या कटु कह दिया जाये, तो क्रोध मे आकर वह भी बात नही करना चाहेगा और न पास मे बैठना ही चाहेगा। लेकिन उसी से प्यार-स्नेह और आदरपूर्वक बाते करे तो उसे अच्छा लगेगा और सहर्ष आज्ञा-पालन करने के लिए तैयार हो जायेगा।

102.

भगवान अपना कर्मफल भोग रहे हैं!

एक बार गुरुदेव दिल्लो, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि का कार्यक्रम करके गोडा जिला गये और वहा के कार्यक्रमो को निपटाकर इलाहाबाद कबीर आश्रम वापस आ रहे थे। गोडा से आने के लिए अयोध्या होकर आना पड़ता है। अयोध्या मे मणिराम महाराज की छोटी छावनी के महन्त पूज्य श्री नृत्यगोपाल दास जी महाराज गुरुदेव के मित्र हैं। उधर से आते समय गुरुदेव मणिराम छावनी मे गये, किंतु उस समय महाराज जी आश्रम मे नही थे, अन्य सत थे।

छावनी म गुरुदेव एव आपके सत समाज को देखकर वहा के सत प्रसन्न हो गये। वे सभी सतो का स्वागत-सत्कार किये। चलते समय वहा के पुजारी ने गुरुदेव जी से कहा—महाराज, हमारे आश्रम मे चारो धाम का नवनिर्माण हुआ है, आप जरा वहा भी घूम लेते तो अच्छा रहता।

गुरुदेव ने कहा—ठीक है, चले घूम लेते हैं।

पुजारी जी, गुरुदेव और सतो को चारो धाम मदिर घुमाने ले गये। यह चारो धाम—जगन्नाथपुरी, द्वारिका, बद्रीनाथ और रामेश्वरम् आश्रम मे ही सत निवास के पास चार कमरो मे अलग-अलग बनाया गया ह। सभी मे अलग-अलग मूर्तिया हैं। घूमते-घूमते गुरुदेव जी जगन्नाथ धाम पहुचे तो वहा देखे कि मदिर मे महाराज श्रीकृष्ण की मूर्ति के हाथ मे पजे ही नही हैं।

पुजारी ने गुरुदेव से कहा—महाराज, इस मूर्ति को देखकर मुझे बड़ी करुणा लगती है।

गुरुदव ने कहा—भगवान अपना कर्मफल भोग रहे हैं आप क्या करेगे! गुरुदेव की इतनी चुटीली बात सुनकर पुजारी भी हस दिये और वहा उपस्थित सभी लोग हस दिये।

103.

निश्चिंतता और निर्मोहता की सीख

गुरुदेव के प्रवचनो मे वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण आदि साहित्यो के उदाहरण के साथ-साथ सामान्य जनजीवन, पशु-पक्षियो आदि की भी प्रेरणाप्रद बाते आती रहती हैं। आपके विचारो मे कुछ घरेलू पशु-पक्षियो की निर्मोहता, निश्चिन्तता एव अपरिग्रहिता आदि की तुलना मनुष्यो से होती रहती है। आप कहते हैं कि बैल तो जानता भी नही कि मेरा कोई बच्चा है, गाय

जानती है और वह कुछ दिनो तक बच्चे को दूध पिलाती है, उसको प्यार करती है। लेकिन जब बच्चा बड़ा हो गया तो वह उससे निश्चित हो जाती है।

कुत्तो को देखो। जो पालतू हैं उनकी तो कोई बात ही नही, उनको सारी सुविधाए मिल जाती है। लेकिन जो लावारिस हैं उनको खाने को क्या मिलता है? उनके पास कुछ सग्रह भी तो नही, कही टुकड़ा मिल गया तो खा लिये बस, निश्चित होकर दरवाजो पर, गलियो मे, सड़को पर सोते हैं। न कोई गद्दा, न चादर, न तकिया। कोई आ गया तो आख खोलकर देख लेते हैं और फिर बन्द कर लिए। मानो कोई बादशाह हो। इन प्राणियो को टेन्शन कैसे होगा? लेकिन यह अभागा मनुष्य बड़ा नखरेबाज है। रोज खाता है, घर मे रहता है, धन, जमीन, बैंक बैलेस है फिर भी रोता है। ऐसी स्थिति मे इसे टेन्शन नही होगा तो क्या होगा।

यह मनुष्य अपने बच्चो को तो पालता ही है, बच्चो के बच्चो की चिन्ता मे डूबा रहता है। यदि यह दो-चार सौ वर्ष जीवित रहे तो बच्चो के बच्चो के बच्चो को ही पालता रहेगा। लेकिन भजन नही करेगा। इन पशु-पक्षियो से तो कुछ सीखो और निर्मोहता-अनासक्ति का काम करो।

104.

जानवरो से प्रेरणा

गुरुदेव जी का मन सब समय सरल, विनम्र एव जिज्ञासा भाव से भरा रहता है। प्रकृति के विभिन्न दृश्यो एव जानवरो के स्वाभाविक जीवन से आप बहुत कुछ प्रेरणा लेते रहते हैं। जैसे—कुत्तो की निश्चिन्तता, निष्कामता, वफादारी और उनका प्रात: का खेलना, पक्षियो का प्रात: चहचहाना, पशुओ का स्वाभाविक आहार, निर्मोहता आदि से भी आप सीखते हैं।

15 जनवरी, 2008 को गुरुदेव कबीर आश्रम, महला जयपुर मे थे। प्रवचन के बाद आप घूमने गये और वहा से लौटकर निवास पर ही कुर्सी पर बैठे विश्राम कर रहे थे। तब तक मैं आपके पैर धोने के लिए गरम पानी ले आया। आप पास मे बधी भैंस की तरफ एकटक देखते रहे। लगभग एक मिनट बाद आपने मुझसे कहा—भैंस ने एक ग्रास को पैंसठ बार पागुर किया है। इन जानवरो को न किसी ने बताया है, न सिखाया है लेकिन अधिकतम जानवर यह जानते हैं कि यदि पागुर नही करेगे तो आहार पचेगा नही। ये खाते समय तो जल्दी-जल्दी खा लेते हैं किन्तु बाद मे उसी को पेट से पुन: मुह मे वापस ला-लाकर चबाते हैं। इन्ही सब प्राकृतिक नियमो का पालन करने से जानवर स्वस्थ

रहते हैं। लेकिन मनुष्य अनेक नकलबाजी करके तन-मन से रोगी बना रहता है।

कई बार कुत्तो को सड़क पर, गलियो मे, खेतो मे सोते-खेलते देखकर उनकी प्रसन्नता और निश्चितता के बारे मे गुरुदेव जिज्ञासु-श्रोताओ से चर्चा करते थे।

105.

अच्छे स्वास्थ्य के लिए क्या खाना चाहिए?

एक महात्मा जी गुरुदेव के पास आये जो उस समय नवजवान थे। प्रणाम-बन्दगी के बाद बैठते ही उन्होने आपसे पूछा—साहेब, अच्छे स्वास्थ्य के लिए क्या खाना चाहिए।?

गुरुदेव जी ने कहा—सहज रूप से जो भी सात्विक भोजन मिल जाय वही स्वास्थ्यवर्धक है।

गुरुदेव जी की बात सुनकर महात्मा जी एक अखबार की कटिग निकालते हुए कहते हैं—डाक्टर ने लिखा है कि दिन भर मे इतना फल, इतनी हरी सब्जी, इतना दूध, इतना दही, इतना मक्खन, इतना पनीर, इतने मेवे, इतना अन्न जो लेता है, वह स्वस्थ रहता है।

गुरुदेव—कुछ डाक्टर भी आधे-पागल होते हैं, अगर तुमको साधना करनी है तो इस पर्चे को फाड़कर फेक दो। रोटी के साथ सब्जी मिलती है कि नही, यह देखो ही मत, नमक मिल जाय बस उसी के साथ खा लो। नमक भी न मिले तो सूखी रोटी ही खा लो, सूखी रोटी चबाने मे मीठी लगती है। और यदि खाने का ही शौक करना है तो कही जाकर खूब मेहनत करके पैसा कमाओ, जब पैसा हो जाय तो मन इच्छित चीजे खरीदो और खाओ।

तुम दूध पीते हो, फल और मेवे भी खाते हो लेकिन भैंस और बैल केवल घास खाते हैं, उनसे लड़कर देख लो, कौन ज्यादा बलवान है? इसलिए सतोष-पूर्वक सादा-सहज जो मिल जाय उसे प्रेम स खाओ, उसी मे सारा विटामिन-प्रोटीन है।

106.

भगवान का अवतार होने वाला है

2 जनवरी, 2010 को गुरुदेव जी का कार्यक्रम गुजरात बड़ौदा जिला के सरगी गाव मे था। साय आठ बजे के लगभग एक सम्प्रदाय की दो देविया

आपसे मिलने के लिए आयी। बैठते ही वे अपनी लम्बी-चौड़ी बाते शुरू कर दी। उन्होने कहा—एक ईश्वर की शरण मे जो जाता है बस उसी का उhार होता है। अब तो समय की सीमा भी समाप्त होने वाली है, थोड़े ही दिनो मे यहा महा विप्लव हो जायेगा।

कुछ समय तक तो गुरुदेव जिज्ञासु बनकर उनकी बाते सुनते रहे लेकिन जब उनकी अनर्गल बाते समाप्त ही नही हो रही थी तो आपने कहा—सभी सम्प्रदाय के लोगो ने अपना-अपना ईश्वर बना रखा है और सब ने अपने-अपने ईश्वर को डाट दिया है कि खबरदार दूसरे का कल्याण नही करना। हमारे सम्प्रदाय मे जो आयेगा उसी का कल्याण करना। इनकी बात सुनकर ईश्वर बेचारा चुपचाप मूक होकर बैठ गया है।!

मुसलमान कहत हैं जो इस्लाम को स्वीकार करेगा, कुरान और मुहम्मद को मानेगा वही स्वर्ग म जा सकता है अन्यथा सबको नरक मे जाना निश्चित है। ईसाई कहते हैं जो बाइबिल मानेगा और ईसा की शरण मे आयेगा उसका कल्याण है, बाकी सब नरक की आग मे जलाये जायेगे। गोस्वामी जी कहते हैं कि जो श्री रामचन्द्र को भगवान नही मानता वह बिना सीग-पूछ का पशु है। कृष्ण उपासक मधुसूदन सरस्वती कहते हैं, जो कृष्ण को परमात्मा नही मानता वह नरक मे जाता है।

इसी प्रकार अन्य लोग कहते हैं। तो फिर एक-दूसरे के ख्याल स सबको नरक मे जाना पड़ेगा। ये सभी परमात्मा मिलकर मोटिग भी नही कर लेते कि लोगो को एक बात बता दिया जाय। वस्तुत: मनुष्य ही परमात्मा बनाता है और जैसे उसका स्वभाव होता है वैसे ईश्वर को बना देता है।

आज भी भारत मे ऐसे दर्जनो लोग हैं जो स्वय को कहते हैं कि मैं भगवान का अवतार हू। वे भोले-भाले लोगो को बेवकूफ बना सकते हैं लेकिन बाम्बे ट्रेन मे हुई बमबारी, होटल मे हुई गोलाबारी, चीन-पाकिस्तान बाडर की समस्या, अनेक सामाजिक दुराचार आदि समस्याओ का समाधान नही कर सकते। भगवान बेचारा बड़ा कमजोर, बूढ़ा, लाचार, दीन हो गया है, वह कुछ कर नही पा रहा है बल्कि वह लोगो के झगड़े का घर बन गया है।

वस्तुत: मनुष्य को अपने कर्मों का सुधार करना चाहिए और सयम, सदाचार, शील, प्रेम, नैतिकता पूर्ण जीवन बनाना चाहिए। इससे उसके जीवन मे खुशियो के फूल खिल सकेगे। कल्याण किसी के एकाधिकार मे नही है बल्कि जिसका मन निर्मल होगा उसका कल्याण होगा, जिसका मन गदा होगा वह दुखी होगा। कर्म विधान के विपरीत कोई दैव-गोसैया उhार करने वाला नही है।

इस प्रकार गुरुदेव जी दस-बारह मिनट तक उन्ही की बातो से उनको जवाब देते रहे। वे बेचारी निरुत्तर होकर बैठी रही। वे गुरुदेव जी के पास इस आशा से आयी थी कि हम यदि गुरु जी को बदल देगे तो उनके सारे भक्त हमारे पक्ष मे आ जायेगे, लेकिन उनकी यह कामना पूरो न हो सकी और वे उदास होकर वापस चली गयी।

107.

मेरी जगह पर आप होते तो कैसे रहते?

कुछ लोग गुरुदेव जी का शिष्य समाज, आपके खान-पान, प्रवचन, प्रसिद्धि, पूजा-सत्कार, समाज पर प्रभाव, ग्रन्थ आदि को देखकर आपके जैसा ही बनने की नकल करना चाहते हैं। किन्तु उनको यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी की रहनी और सद्‌गुणो का आदर्श लेकर उसके अनुसार जोया जाना चाहिए, न कि वैसा हम जाने जाये। जैसे अमुक की पूजा-सत्कार होता है वैसा ही हमारा हो, जैसे उनको अनेक सुविधाए मिलती हैं वैसे हमे भी मिले, जैसे अमुक को आसन-बिस्तर मिलता है वैसे हमे भी मिले, जैसे अमुक की सेवा होती है वैसे हमारी भी लोग सेवा करें; दूसरो को ऐसी नकल करना अपना खोखलापन प्रदर्शित करना है।

ऐसे ही भावो को लेकर एक बार एक सत ने गुरुदेव जी से पूछा कि साहेब जी, यदि मेरी जगह पर आप होते तो कैसे रहते?

गुरुदेव ने कहा—कैसे रहता? बताने से कोई फायदा नही है। आपकी जगह पर मैं हाता तो मुझे कोई जान ही नही पाता कि मैं कौन ह् और कहा रहता हू। कही एक किनार अकेले रहकर कुछ सेवा कार्य कर लेता और सादा-गोदा जो कुछ मिल जाता उसे खाकर अपनी साधना मे लगा रहता। यह तो अब मेरी मजबूरी है कि मुझे ऊचे-आगे बैठना पड़ता है, लोगो की सेवा स्वीकारनी पड़ती है। अपनी पुस्तको से, विचारा से लोगो मे मैं इतना चर्चित हो गया हू कि अब यदि मैं कही अपरिचितो मे और दूसरे मत-पथो मे भी जाऊ और चुपचाप रहना चाहू भी तो थोड़े दिनो मे लोग मुझे जान जायेगे और फिर वही आदर-सेवा का चक्कर शुरू हो जायेगा।

गुरुदेव की इतनी बात सुनकर व सत हसने लगे और उन्होने महसूस करते हुए कहा—साहेब, आप ठीक कह रहे हैं। सचमुच नकल सच्चाई नही होती। सच्चाई के लिए साधना के साचे मे ढलना पड़ता है और स्थिति की भट्ठी मे पकना पड़ता है।

108.

कटुक बचन मत बोल रे

इलाहाबाद कबीर पारख सस्थान के दोनो आश्रमो मे प्रति शनिवार और रविवार को साय दो घन्टे का सार्वजनिक सत्सग नियमित होता है। जब भी गुरुदेव आश्रम मे रहते तो उसमे आपके भी आशीर्वचन सुनने का सुअवसर प्राप्त होता। एक शनिवार को आप सभा मे बैठे सभी सतो-भक्तो को सम्बोधित करके अपने विचार दे रहे थे—व्यक्ति जहा भी रहे, वहा कुछ व्यक्तियो और वस्तुओ का सम्बन्ध होता है। वस्तुओ के सम्बन्ध मे कोई चक्कर नही है। प्राणियो मे भी बैल, गाय, हाथी, घोड़े आदि पाले हैं तो उनको चारा, पानी, आवास दे दो फिर उनसे कोई शिकायत नही मिलेगी। लेकिन मनुष्यो का सम्बन्ध बड़ा जटिल है। मनुष्य का एक छोटा बच्चा भी यदि आपके पास है तो वह रो-रोकर आपको परेशान कर देगा। वह बड़ा होगा तो उसकी अनेक इच्छाए-कामनाए, रुचिया-सस्कार आदि आपको आन्दोलित करते रहेगे। इसके लिए सहनशीलता, विचार, गम, क्षमा, सतोष, धैर्य, आपसो समझौता आदि से समाधान करना पड़ेगा अन्यथा परिवार-समाज मे कलह हो जायेगा।

प्रवचन के बाद गुरुदेव सभा से उठकर अपने कक्ष की ओर चलने लगे तो एक सज्जन आपके पीछे-पीछे आ गये। उन्होने गुरुदेव से कहा—साहेब जी, आज का प्रवचन तो केवल मेरे लिए किया गया है।

गुरुदेव ने कहा—मैं तो जानता नही था कि तुम्हारे लिए कह रहा हू। मैंने तो सहज अपने विचार कहा था।

उन्होने कहा—आज सुबह मेरा लड़का घर मे पानी व्यर्थ मे खर्च कर रहा था तो मैंने उसे डाट दिया। मेरे डाटने का ढग अच्छा नही था, तो उसने भी मुझे कटु कह दिया। उसी समय से मेरा मन बहुत पीड़ित है कि क्या करू-कहा जाऊ। आज शनिवार है ऐसा याद आते ही मैं आपके सत्सग मे आ गया। आपने जो विचार आज सुनाया उससे मेरे मन को पूरा सतोष प्राप्त हो गया। अब मैं पूर्ण प्रसन्न हू। अब मुझे समझ मे आता है कि मुझसे गलती हुई। लड़के ने भूल की तो उसे मुझे शालोनता से समझाना चाहिए। लेकिन मैंने कटु कह दिया, तो उसने भी कटुतापूर्ण जवाब दे दिया जिससे मेरा मन बहुत पीड़ित हो गया। लेकिन सत्सग मे आपने कहा—सबसे स्नेह, प्रेम और आदर का व्यवहार करो, छोटे बच्चे को भी कटु न कहो, समय देखकर प्रम से समझाओ। आपके ये वचन मेरे लिए अमृत हो गये। अब मेरे मन की पीड़ा समाप्त हो गयी है। अब बच्चो से भी मैं सभालकर बर्ताव करूगा।

गुरुदेव ने कहा—मनुष्यो का मन एक जगल है, यहा सबके मन की रक्षा करते हुए व्यवहार करेगे तभी उनको निभाया जा सकता है। ऐसा नही किया गया तो कलह, तनाव और अशान्ति ही मिलेगी।

109.

विदेह भाव का अनुभव

हरिद्वार का कुभ मेला, उत्तर प्रदेश, बिहार और आसाम का कार्यक्रम करके 14 मई, 2010 को गुरुदेव इलाहाबाद कबीर आश्रम पधारे। 15 मई का प्रातः गुरुदेव स्नानादि से निवृत्त होकर सत्सग कक्ष मे गये। बदगी के पश्चात आप सतो के साथ वही एक घण्टा ध्यान मे बैठे। ध्यान के बाद आप सतो-भक्तो को ज्ञानोपदेश की अमृत वर्षा करने लगे। लगभग आधा घटा बोलने के बाद अचानक आपकी आवाज रुक गयी, केवल इतना ही आप बोल सके 'राम, शरबत लाओ।' मैं दौड़कर तुरन्त निवास की ओर गया। शरबत की कोई सामग्री न होने के कारण तत्क्षण तरबूज का रस निकाल करके ले गया।

इधर गुरुदेव की हालत बिलकुल बिगड़ गयी। इतनी असमर्थता आ गयी कि सिर लटक गया। उसी अचेती अवस्था मे आपने सिर उठाने की कुछ चेष्टा की तो पुनः सिर लटक गया। वस्तुतः आपको गरमी लग गयी जिससे चक्कर एव बेहोशी आ गयी। गुरुदेव की ऐसी स्थिति देखकर सत जन घबरा गये। सभी दौड़कर आपके पास गये, सिर उठाये तो आखो मे सफेदी आ गयी और आखे फटी-फटी थी। तब तक फल का रस आ गया था, गुरुदेव को पिलाया गया तो पीते ही आपने आखे खोली और शरीर मे कुछ शक्ति आ गयी। दो मिनट तक आप आख बद किये बैठे रहे। इसके बाद पुनः आप लगभग तीस मिनट तक प्रवचन किये। प्रवचन के अन्त मे आपने कहा—इस मरे हुए शरीर के लिए क्या चिन्ता, जो एक दिन होना है उस दशा को मैं जीवन के पूर्वार्ध से देख रहा हू। उसी का अनुभव रस वैराग्य सजीवनी मेरी पुस्तक है। अपने मे स्थित होकर मैंने ''रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करे'' छन्द लिखा है। और आज कुछ मिनट के लिए मानो मैंने विदेह भाव का भी अनुभव कर लिया। बोलते-बोलते वाणी शान्त, इन्द्रिया शान्त और मन शान्त था ही। बिना किसी प्रयास के आत्म-भाव आ गया। न कोई चिन्ता, न किसी प्रकार का स्मरण, पूर्ण शान्ति धाम मे मैं पहुच गया था। जब लोग आये मेरा हाथ पकड़े और रस पिलाये तब बाहर का भान हुआ। मानो मैं अपने इस विदेहभाव के अनुभव को बताने के लिए मृत्यु से लौटकर पुनः तुम लोगो के बीच आ गया।

गुरुदेव के स्वास्थ्य खराब होने की यह खबर दूर-दूर तक फैल गयी। अनेक प्रदेशो से भक्तो, सतो, साधको, साधिकाओ के फोन आने लगे। सबको आप यही कहते—शरीर कूड़ा-कचड़ा है, इसमे रहकर मैंने अपना काम पूरा कर लिया और जो बन सका समाज की सेवा भी की। अब इसकी आवश्यकता नही है। इसके जाने की बात सुनकर दुखो होने की जरूरत नही है। जो मैंने कहा है और जो मैंने किया है वह काम करने से शान्ति मिलेगी। वह है सब तरफ से अनासक्ति और मन को इच्छा-वासना हीन बनाकर अपने आप मे लीन हो जाना। अन्ततः गुरु के शरीर का भी मोह छोड़ना ही होगा। वह दिन तो आना ही है हमारे लिए भी और तुम्हारे लिए भी। इसलिए अपनी लाश अपने हाथो से स्वय उठाओ, वह है दृश्य मात्र से मोह का त्याग करना।

110.

क्या हर्ष क्या शोक?

नित्य की भाति गुरुदव दोपहर का स्नान करके बाथरूम से निकले। आपके कमरे मे एक साधक टेबल के पास खड़ा कुछ पढ़ रहा था। गुरुदव को आते दखकर वे पुस्तक छोड़कर आपकी तरफ मुखातिब होकर खड़े हो गये। गुरुदव केवल लगोटी पहने कुर्सी पर बैठ गये। आप साधक की ओर ध्यान से दखते हैं और उसके मनोभावो को पढ़ते हुए कहते हैं—कहो बेटा, कुछ बात है? साधक ने कहा—नही गुरुदव, कोई बात नही है। उनके न बताते हुए भी आपने उनके चेहरे से मन का अध्ययन कर ही लिया।

गुरुदव ने कहा—मैं कभी निराश नही होता हू। यह तो निश्चित है कि सब कुछ क्षणिक, परिवर्तनशील और बिगड़ने वाला है। फिर इनके बनने-बिगड़ने मे क्या हर्ष-शोक करना? हा, जब तक शरीर है इन सबका निर्विकार भाव, समता भाव से व्यवहार करना है और यह काम मैने अपने जीवन मे खूब साधा। जब से गुरुदव की शरण मे आया समाज चलाना, पुस्तक लिखना-छापना, कार्यक्रम दना, सब किया और इन सबके करने मे कितने व्यावहारिक-सामाजिक ॥ना॥ आये, सबको निर्विकार भाव से सहता रहा। मेरे इस परिश्रम का फल यह हुआ कि इतना बड़ा आश्रम बना, जिसमे इतने साधक रहकर अपने कल्याण का काम कर रहे हैं, भक्तो को आधार मिला, पुस्तको से लाखो लोगो का हित हो रहा है और अध्यात्म मे मेरा मन शान्त, निश्चित और निर्भय है। यह सब अभी मिट जाय तो इसके लिए कोई चिन्ता नही है। काम कर दिया गया है, लोगो का लाभ हो रहा है। आगे के लिए क्या सोचना, जो होगा सो होगा।

साधक ने कहा—गुरुदव! किसी भी समाज-परिवार मे जो महापुरुष हो जाते हैं पुनः वैसा हो पाना बड़ा मुश्किल है।

इसका उत्तर गुरुदव के पास मानो पहले से रखा था, तुरन्त आपने सकारात्मक जवाब दते हुए कहा—बुद्ध जैसा बौद्धो मे कोई नही हुआ, महावीर जैसा जैनो मे कोई नही हुआ, कबीर जैसा कबीरपथ मे कोई नही हुआ, विशाल दव जैसा उनकी परम्परा मे कोई नही हुआ, विवेकानन्द जैसा और शकराचार्य जैसा उनकी परम्परा मे भी कोई नही हुआ। फिर भी सबके अनुयायी अपने-अपने ढग से अपने-अपने मत-पथ को चला रहे हैं फिर तुम क्यो चिन्ता करते हो? जैसा होगा वैसा चलेगा, किसी के समान दूसरा नही होता। इसलिए जब तक शरीर है बाहर कर्तव्यनिष्ठ होकर व्यवहार करो और भीतर दृश्यमात्र से अनासक्त होकर वासना का त्याग करो। शरीर रहते-रहते जीवन्मुक्ति का आनन्द लो, चार दिनो मे यह दोपक बुझ जायेगा। फिर क्या हर्ष क्या शोक?

111.

क्या सब कुछ एक है?

एक बार गुरुदव मध्य प्रदश के एक गाव मे थे। वहा आपका प्रवचन चल रहा था। प्रवचन मे आपका विषय था जड़-चेतन निर्णय। वहा एक युवक तीन दिनो से बराबर आपके विचार सुन रहा था। उन्होने कहा—महाराज, यह जड़-चेतन क्या अलग-अलग चीजे हैं? गुरुदव ने कहा—जड़-चेतन अलग-अलग तो हैं ही, इसमे आश्चर्य की क्या बात है? युवक ने कहा—अलग-अलग कहना सत्य से दूर जाना है, वस्तुतः सब एक है।

गुरुदव ने पूछा—क्या सब कुछ एक है? उन्होने कहा—हा, सब एक है। आपने पुनः कहा—क्या आपको ///त नही दिखता? युवक ने उत्तर दिया—नही दिखता।

सभा मे गाव के बहुत-से लोग बैठे थे, गुरुदव ने उनकी तरफ मुखातिब होकर कहा—अच्छा, आप लोग बताये भैंस, गाय, घोड़ा और मनुष्य आते हो तो आप लोग क्या मानेगे सब एक हैं कि अलग-अलग हैं? उन लोगो ने कहा—महाराज, सब अलग-अलग हैं। गुरुदव ने कहा—ये भाई तो कहते हैं सब एक ही है। गाव वालो ने कहा—ये गलत कहते हैं। गुरुदव ने उस युवक से पूछा—बताइए, रोटी और टट्टी एक ही है कि अलग-अलग? वह चुप हो गया, अब उसके कहने की हिम्मत नही हुई कि एक ही है। गुरुदव ने उसको प्यार से

समझाया कि किसी से सुन लेने और कही पढ़ लेने मात्र से कि सत्ता केवल एक की है द्सरा कुछ नही, इस सनक मे पड़ने से काम नही बनेगा। हमारे मानने मात्र से सब एक नही हो जायेगा, अनुभव मे भी तो आना चाहिए। स्वय विचार करो। आप किसी से एक ब्रह्म की सत्ता का प्रतिपादन कर रहे हैं, ये सब लोग सुन रहे हैं, इससे सिद्ध हो गया कि कहने और सुनने वाले अलग-अलग हैं, बस ‍॥त हो गया।

112.

एक बच्चे को समझाते हुए

6 नवम्बर, 2008 को गुरुदेव कबीर आश्रम रामपुरा, नई दिल्ली मे विराजमान थे। आसपास के भक्त लोग गुरुदेव से मिलने के लिए आ रहे थे। दिल्ली के पास खुर्जा से एक परिवार आपसे मिलने के लिए आया। सब लोग बदगी किये और सामने बिछी दरी पर बैठ गये। गुरुदेव ने सबका कुशल-मगल पूछा और अत मे आपने सबको आशीर्वाद रूप मे दो शब्द सुनाया कि सबसे प्रेम का व्यवहार करते हुए सब समय अपने आपको पथिक समझो। अपने को जब पथिक समझोगे तो कही मोह नही होगा, मोह ही सारे दुखो का कारण है। इसलिए सब लोग मोह का त्याग करो। इसके बाद आपने कहा—अच्छा, सब लोग नीचे चलो और सत्सग मे बैठो, थोड़ी देर मे मैं भी आता हू।

सभी भक्त लोग बाहर निकलने लगे, कितु एक देवी रुक गयी। सबके चले जाने पर वह रोकर कहने लगी कि गुरुदेव मेरे दो बच्चे हैं। छोटा बच्चा मेरी बात नही मानता था तो पिछले वर्ष मैं उसे आपके पास लायी थी। आपने उसे समझाया तो वह अब बात मानने लगा। लेकिन अब बड़ा लड़का बहुत उद्दण्ड हो गया है। वह न पढ़ता है न घर का कोई काम करता है और न किसी की बात मानता है। आप उस पर भी कृपादृष्टि कर दे तो उसका भी सुधार हो जाय।

गुरुदेव ने उससे कहा—उस लड़के को मेरे पास लाओ तो मैं उससे कुछ बाते क॥ ।

दूसरे दिन वह देवी अपने बड़े लड़के को लेकर गुरुदेव के पास आयी। मा-बेटा दोना प्रणाम करके पास बैठ गये। थोड़ी देर बाद गुरुदेव ने उस देवी से कहा—तुम अभी बाहर चलो। गुरुदेव स्वय अपनी कुर्सी लेकर उस बच्चे के निकट बैठ गये। आपने बच्चे को प्यार भरी दृष्टि से देखा और पूछा कि बेटा, तुम्हारा क्या नाम है?

उसने बताया—गुरुजी, मेरा नाम सोनू है।

गुरुदेव ने सोनू का सिर स्नेहपूर्वक सहलाते हुए पूछा कि बेटा! तुम अपने माता-पिता की बात क्यो नही मानते हो?

सोनू शात बैठा रहा, कोई जवाब नही दिया। आपने पुनः पूछा—माता-पिता ने तुम्हे जन्म दिया, पाला-पोषा, पढ़ाया-लिखाया, तुम पर उनका कितना बड़ा उपकार है। इतना होते हुए तुम उनकी बात तक न मान सको, यह कितना गलत है! तुम स्वय सोचो जब तुम्हारा बच्चा होगा और वह तुम्हारी बात नही मानेगा तो तुम्हे कैसा लगेगा!

सोनू ने कहा—बुरा लगेगा।

गुरुदेव—तो तुम्हारी इन हरकतो से माता-पिता को कितना कष्ट होता होगा? इस बात को भी समझो। जब तुम अपने माता-पिता की बात नही मानोगे तो तुम्हारे बच्चे तुम्हारी बात कैसे मानेगे?

गुरुदेव की इतनी बात सुनकर सोनू गभीर हो गया। उसने कहा—अब ऐसी गलती कभी नही कM गा।

गुरुदेव ने कहा—बेटा! तुम्हे बहुत-बहुत धन्यवाद।

फिर आपने दो पीस मिठाई निकाल कर अपने हाथो उसे खिलाया और कहा—लेकिन बेटा, तुम अपनी मा को बुला लाओ और उसके सामने कहो कि ऐसी गलती नही कM गा, तब मुझे सतोष होगा।

सोनू अपनी मा को बुला आया। गुरुदेव ने सोनू की कही हुई बात को उसकी मा के सामने दुहराया कि अब सोनू अपनी पुरानी हरकत छोड़ने के लिए कहता है। उसकी मा ने कहा—गुरुदेव, मैं यही चाहती हू। यह भले मेरी सेवा न करे लेकिन आप लोगो की बात माने, अच्छे लोगो की सगत करे, अपने जीवन को सुधारे, बस, इसी मे मैं सुखी रहूगी। इसके बाद मा-बेटा दोनो गुरुदेव की बदगी करके बाहर आ गये।

113.

इलाहाबाद से गुजरात यात्रा

गुरुदेव जी wy-y-2009 को इलाहाबाद से ट्रेन द्वारा वड़ोदरा, गुजरात जा रहे थे। आप जहा बैठे थे वहा सामने ही एक प्रौढ़ दम्पती भी बैठे थे। पुरुष का शरीर अत्यन्त स्थूल था। उन्होने गुरुदेव से पूछा—महाराज, आप कहा रहते हैं?

गुरुदेव ने कबीर पारख सस्थान, इलाहाबाद का परिचय दिया तथा कहा—आपका शरीर इतना मोटा हो गया है, क्या इसे हलका करने के लिए नही सोचते हैं?

उन सज्जन ने कहा—सोचता तो हू महाराज, कितु क्या कॅ ? पहले खाने-पीने मे ध्यान नही दिया और अब घटाने की चेष्टा करते हुए भी नही घटता।

गुरुदेव ने कहा—इसके लिए तत्परतापूर्वक लगो नही तो ढलती अवस्था मे यह और कष्टकारक हो जायेगा। तब तक कानपुर स्टेशन आ गया और वे वही पर उतर गये। उनके उतरते ही उन्ही सीटो पर कानपुर के ही चार अन्य व्यक्ति आकर बैठ गये। ये सभी शिक्षा विभाग के लोग थे। जिनके नाम इस प्रकार थे—डॉ0 अगद सिह, प्रधानाचार्य, कानपुर। डॉ0 रीता मिश्र, प्रधानाचार्या, बालिका विद्यालय, कानपुर। डॉ0 ओमप्रकाश सिह, लेक्चरर, डिग्री कालेज अतर्रा, बादा। और डॉ0 अगद सिह के आफिस मे काम करनेवाले एक क्लर्क श्री रामजी। आपको शात बैठा देख सामने बैठे हुए डॉ0 ओ0पी0 सिह के मन मे आपसे बात करने की जिज्ञासा हुई। उन्होन आपका परिचय पूछा।

गुरुदेव ने अपना परिचय बताया तो उनकी खुशियो का ठिकाना न रहा। उन्होने कहा—महाराज जी, आज हमारा कौन-सा सौभाग्य उदय हो गया जो आपके दर्शन हुए। हम तो वर्षो से आपकी पुस्तके पढ़ते हैं और आपके विचारो से अत्यन्त प्रभावित हैं।

पारस्परिक परिचय के बाद डॉ0 ओ0पी0 सिह ने कहा—महाराज जी, आज के शिक्षण सस्थान बच्चो को विद्या पढ़ने, मन की शक्ति को विकसित करने और उनको अच्छे सस्कार देने के लिए नही हैं, बल्कि पैसा कमाने का अच्छा-खासा व्यापार केन्द्र हो गये हैं।

गुरुदेव जी—जब नीव ही कमजोर है तो उनका भविष्य किस आधार पर टिकेगा? क्योकि शिक्षण सस्थान से ही डॉक्टर, मास्टर, इजीनियर, वकील, किसान, राजनेता आदि निकलते हैं। जब उनका शुरुआती जीवन ही कमजोर है तो चारो तरफ गिरावट ही गिरावट आना है।

इसके बाद डॉ0 ओ0पी0 सिह और डॉ0 अगद सिह बीच-बीच मे अनेक बाते पूछते रहे। जैसे—जातिवाद, छूआछूत, वर्ण-व्यवस्था, नारियो की स्वतत्रता, कबीर की क्राति, महाराज श्रीकृष्ण की रासलीला आदि।

गुरुदेव जी इन सभी विषयो पर वेद, शास्त्र, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, कबीर वाणी आदि का उदाहरण दे देकर खूब परत-दर-परत खोलते गये।

आपके कहने का ढग, स्पष्टता, शास्त्रो का गहन चितन, वैज्ञानिक तर्क, तीव्र स्मरण शक्ति आदि पर वे सभी रीझ गये।

114.

खाली समय मे क्या सोचू?

भक्त श्री प्रेम प्रकाश जी की उम्र उन दिनो 91 वर्ष की थी। शारीरिक शक्ति निरन्तर क्षीण होती जा रही थी। गुरुदव जी बिहार के कार्यक्रमो मे थे। एक दिन आपने अपने साधक से फोन लगवाया कि पूछो, प्रेम जी का स्वास्थ्य कैसा है। साधक ने फोन किया तो पता चला कि उनकी तबियत अच्छी नही है। उनकी आवाज भी बदल गयी है। वे धीरे से बोले कि साहेब, मेरी शारीरिक स्थिति अच्छी नही है। इस बार आप यहा पधारेंगे तो भक्त गयादोन जी के घर पर ठहरना है क्योकि मैं इस बार कुछ करने मे असमर्थ हू।

गुरुदव जी ने कहा—आप उसकी चिता न करे। हम आपके यहा ही रहेगे।

1 जुलाई, 2010 को गुरुदव अपने कुछ साधको के साथ कोलकाता आपके घर पर पधारे। गुरुदव का दर्शन पाकर श्री प्रेमप्रकाश जी भावविभोर हो उठे।

गुरुदव जी और आपके साधको का निवास प्रेम जी के मकान पर सबसे ऊपरी तल्ले पर रहा। एक दिन छोड़कर प्रेम जी एक व्यक्ति का सहारा लेकर गुरुदव के दर्शन के लिए ऊपर चढ़ जाया करते थे। एक शाम को जब वे गये तो हाथ जोड़कर कुर्सी पर बैठ गये। उन्होने गुरुदव के टेबल पर रजिस्टर आदि दखा तो पूछा—क्या लिख रहे हैं?

गुरुदव जी अपनी कुर्सी खीचकर उनके पास ले गये। आपने कहा—लोगो का आग्रह था कि आप 'अष्टावक्रगीता' पर कुछ काम कर दोजिए। मैंने मनन किया, इसकी विषय-वस्तु साधको के लिए अच्छी है इसलिए इसको लिखना शुरू कर दिया हू। थोड़ा आपको सुनाता हू। गुरुदव पाच मिनट तक उनको सुनाये। बीच मे ही रोककर प्रेम जी ने कहा—अब बन्द कर दोजिए! सहज बाते करता हू तो थकान नही लगती, किन्तु ज्ञान की बाते सुनता हू तो मस्तिष्क थक जाता है। गुरुदव ने कहा—स्वाभाविक है, शरीर अब काफी पक चुका है। प्रेम जी ने कहा—काफी दिनो से न पढ़ पाता हू और न कुछ ज्ञान की बाते विशेष सुन पाता हू। ऐसी स्थिति मे क्या सोचना चाहिए? गुरुदव जी ने कहा—अपने स्वरूप की अखडता, निर्विकारिता और एकरस रहनी के बारे मे सोचना चाहिए। सबसे सरल है शरीर की नश्वरता के बारे मे सोचना कि आज-कल मे यह सारा दृश्य-प्रपच और अपने माने हुए इस शरीर से भी सम्बन्ध नही रहेगा। उस समय कवल मैं अपने आप रहूगा। इस दशा का मनन किया करे मानो यह स्वरूपस्थिति ही है। अन्त मे गुरुदव ने एक छन्द की इन पक्तियो को सुनाया—

''बहुत बोलने वाले को भी मौन साधना होगा, बहुत जानने वाले को भी स्मृति खोना होगा।'' ऐसा कहकर गुरुदव जी हसने लगे और साथ मे प्रेम जी भी।

20 जुलाई को गुरुदव जी का चम्बल एक्सप्रेस मे इलाहाबाद वापसी का आरक्षण था। शाम को जब आप वापस जाने के लिए ऊपर से उतरने लगे तो दरवाजे तक चलकर स्वय प्रेम जी आ गये थे। गुरुदव जी से वही खड़े-खड़े एक मिनट तक बाते हुई। गुरुदव जी ने कहा—साधक को सब समय अपने आप मे रहना चाहिए और यह समझना चाहिए कि यह अतिम दह और अन्तिम मिलन है। फिर से इस कूड़े-कचड़े भरे ससार मे नही आना है। बड़ी भावनापूर्वक उन्होने झुककर गुरुदव का चरण स्पर्श किया। आज गुरुदव से बिछुड़ते समय उनको लग रहा था कि पता नही अब आप श्री के दर्शन होगे कि नही।

115.

कबीर जयन्ती पर पाकिस्तानवासी भक्तो के लिए सदेश

कबीर जयन्ती (ज्येष्ठ पूर्णिमा) 7 जून, 2009 की बात है। गुरुदेव जी कबीर आश्रम इलाहाबाद मे विराजमान थे। सद्गुरु कबीर साहेब की जयन्ती देश-विदेश मे अनेक जगहो पर लोग बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। आज उनकी 611वी जयन्ती पर सुबह नौ बजे पाकिस्तान-सिध से एक भक्त का गुरुदेव जी के पास फोन आया। उन्होने कहा कि गुरुदव, आज शाम को यहा एक कार्यक्रम है। उसमे हिन्दू-मुसलमान सभी वर्ग के लोग आयेगे। उस कार्यक्रम मे हम सबके लिए एव हमारे देशवासियो के लिए आपको फोन पर सद्गुरु कबीर का एक लघु सदेश देना है।

गुरुदेव ने कहा—ठीक है, लेकिन रात्रि के आठ बजे तक मैं व्यस्त रहूगा। भारतीय समय के अनुसार आप रात्रि नौ बजे फोन कीजिएगा।

गुरुदेव कबीर आश्रम के कबीर जयती कार्यक्रम से रात्रि साढ़े आठ बजे अपने कक्ष मे आ गये। ठीक नौ बजे पाकिस्तान से फोन आ गया। मैंने मोबाइल का स्पीकर खोलकर गुरुदेव के सामने टेबल पर रख दिया। भक्त ने कहा—गुरुदेव, हम सब यहा आपकी वाणी सुनने के लिए तैयार हैं, अब आप सुनाने की कृपा करे।

गुरुदेव—सज्जनो, कबीर साहेब का यह उपदेश है कि सभी मनुष्य आपस मे प्रेम का व्यवहार करे। ''*प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय। राजा परजा*

जेहि रुचै, शीश देय लै जाय।'' साहेब ने प्रेम का रास्ता बताया है। इसीलिए वे हिन्दू-मुसलमान का भेद नही माने। उन्होने कहा कि मनुष्य मे दो जाति नही है। मनुष्य केवल मनुष्य है। इसलिए हिन्दू-मुसलमान, इसाई-यहूदी, जैन-बौद्ध जो कहते हैं ये सब बाहरी परम्परा की बाते हैं। यहा मानव-मानव एक हैं। मानव मे कोई भेद नही, इसलिए मानवता मे प्रेम होना चाहिए। मानवता जहा नही है वही सारा दुख शुरू होता है। इसलिए मानव मात्र मे समान प्रेम होना चाहिए।

सम्प्रदाय बनते और लुप्त होत रहते हैं, लेकिन धर्म बनता-बिगड़ता नही है। धर्म है अपने पर सयम और दूसरो के साथ शील का बरताव करना। अपने पर कड़ा रहो, अपने को क्षमा न करो, अपने मन और इन्द्रियो को अपने वश मे रखो, दुराचार का त्याग करो। हिसा, कटुता, दुर्व्यवहार किसी के साथ न करो। जो जितना अपने पर सयम करेगा, परहेजगारी रखेगा वह दूसरे के लिए शील, दया, करुणा का बरताव कर सकेगा। धर्म का तत्त्व यही है—अपने पर कड़ाई और दूसरो के साथ नम्रता। अपने लिए परहेजगारी और दूसरो के लिए रहमदिली का व्यवहार। मजहब-सम्प्रदाय बनते-बिगड़ते रहेगे, उसको लेकर तू-तू, मैं-मैं करने की जरूरत नही है।

परमात्मा सबके अन्दर बैठा है, उसको कोई परमात्मा कहे, खुदा कहे, गॉड कहे, अल्लाह कहे, ब्रह्म कहे, यह तो भाषा है। पानी, जल, वाटर, नीर, तोय, आब, सलिल आदि कुछ भी कहे। सस्कृत मे आप कहते हैं, फारसी मे आब कहते हैं, दोनो का अर्थ है पानी। इसी प्रकार साहेब कहते हैं—

भाई रे दुइ जगदीश कहाँ ते आया, कहु कौने बौराया॥
अल्लाह राम करीमा केशव, हरि हजरत नाम धराया॥
गहना एक कनक ते गहना, यामें भाव न दूजा॥
कहन सुनन को दुइ करि थापे, एक निमाज एक पूजा॥
वोही महादेव वोही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये॥
को हिन्दू को तुरुक कहावे, एक जिमि पर रहिये॥
बेद-कितेब पढ़ै वै कुतबा, वै मोलना वै पाँड़े॥
बेगर-बेगर नाम धराये, एक मिट्टी के भाँड़े॥

ये सब अलग-अलग नाम हैं, कोई कहा मुल्ला, कोई कहा पाड़े। कोई कहा किताब, कोई कहा धर्मशास्त्र। दोनो बात एक है। इसलिए प्रेम का बरताव होना चाहिए। कुछ राजनेता घृणित राजनीति करते हैं। वे जनता मे फूट डालकर राजनीति करते हैं। वस्तुतः देश की सेवा करना चाहिए पूरे देश मे प्रेम का प्रवाह

करके। फिरकापरस्ती दूर करने की जरूरत है। देश मे जितने लोग रहते हैं सब देशवासी हैं, सबके लिए प्रेम होना चाहिए। जहा-जहा जिस देश मे जितने लोग रहते हैं वहा के जो भी बासिन्दे हो, उस-उस देश के बच्चे हैं। सबके साथ सुन्दर बरताव होना चाहिए। कबीर का सदेश सदैव सभी दिशाओ मे प्रेम के लिए है। फिरकापरस्ती, साम्प्रदायिकता, भेदभाव, ऊच-नीच की भावना पर वे करारा प्रहार करते हैं। वे कहते हैं कि प्रेम, इसानियत, करुणा, शील, मेहरबानी यही सच्चा धर्म है। मजहबी और साम्प्रदायिक कर्मकाण्ड अपनी-अपनी जगह पर हैं। कोई पूजा करता है, कोई नमाज पढ़ता है, कोई पश्चिम मह करके, कोई पूरब मुह करके। कोई बात नही, सबका अपना-अपना चलता रहेगा। लेकिन जो असलियत है वह सार्वभौमिक है, सार्वदेशिक है, उस पर ध्यान देना चाहिए। वह है दया, करुणा, प्रेम, अहिसा, आत्मज्ञान, जिन्दादिली से सबके साथ सुन्दर बरताव करना। यही कबीर साहेब का सदेश है और यही मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है।

इतना कहकर गुरुदेव ने फोन पर ही उनसे पूछा—सुनाई पड़ रहा है?

उन्होने कहा—हा गुरुदेव, सुनाई पड़ रहा है, सब सुन रहे हैं।

गुरुदेव जी—खूब खुश रहो।

इतना कहकर आप शात हो गये। उन लोगो ने एक स्वर से गुरुदेव की जय, सद्गुरु कबीर साहेब की जय की ध्वनि की और फोन का सम्पर्क कट गया।

116.

ट्रेन दुर्घटना मे

राजस्थान का कार्यक्रम समाप्त करके 13 नवम्बर, 2009 को गुरुदव सत समाज सहित नागौर जिला मेड़तारोड स्टेशन से मडौर एक्सप्रेस से दिल्ली आ रहे थे जहा से फरीदाबाद (हरियाणा) जाना था। मेड़ता रोड से चलकर रात्रि एक बजे जयपुर पहुचे, वहा से 30 किलोमीटर द्र जब आगे बढ़े तब 1:25 मिनट पर इस ट्रेन का एक्सीडेण्ट हो गया। उस समय सभी लोग अपनी-अपनी शायिकाओ मे निश्चित सोये हुए थे। अचानक गड़गड़ाहट की आवाज आयी और बड़ी तेजी से गाड़ी रुकने लगी और ऐसा लगा मानो जमीन मे धसी जा रही है। फिर बड़े झटके से रुक गयी। गुरुदव जी का शरीर उस झटके मे जोर से उछला और सीट पर ही पुन: रुक गया। ऐसा लगा कि सीट से नीचे गिर जायेगे लेकिन सभलते-सभलते सभल गये।

उस गाड़ी के तीन डिब्बे पटरी से नीचे उतर गये। पहिये निकल कर दूर छिटक गये और डिब्बे जमीन मे धस गये थे। उससे आगे एक स्लीपर और दो ए0सी0 कोच पलट गये थे। कई लोग मर गये, अनेक घायल हो गये थे। चारो तरफ अफरा-तफरी मच गयी। कुछ ही मिनटो मे जयपुर सूचना पहुचते ही एम्बुलेन्स, डाक्टर, पुलिस, बसे, लाइट-व्यवस्था आदि पब्लिक के लिए सरकारी सुविधाए आ गयी। सरकारी बसो मे बैठकर लोग अपने-अपने मुकाम की ओर जाने लगे। गुरुदव जी एव सन्त जन गाड़ी से उतरकर पचास मीटर द्री पर नेशनल हाइवे रोड पर आ गये। भक्तो को फोन किया गया, उन्होने दो गाड़िया भेज दो जिसमे बैठकर द्सरे दिन 14 नवम्बर दोपहर तक गुरुदव जी एव सभी सन्त फरीदाबाद आ गये।

इस घटना का समाचार तुरन्त ही सन्तो-भक्तो मे चारो तरफ फैल गया। लोगो को बहुत कष्ट हुआ और सहानुभूति के रूप मे घटना के बाद ही गुरुदव जी के पास फोन आने लगे। आपने सबको आश्वासन दिया कि सब ठीक है निश्चिन्त रहे, यह शरीर मिटने वाली चीज है ही, चाहे जैसे मिटे, चाहे ट्रेन मे, चाहे बस मे, चाहे सड़क पर या बिस्तर पर। मैं सब समय अपने आप मे हू, जहा ये बाहरी हादसे की कोई गुजाइश नही है। यही अभ्यास सबको करना चाहिए।

117.

सड़क दुर्घटना

1 नवबर, 2010 को गुरुदव जी कुछ सतो के सहित कोछा बाजार, फैजाबाद, उ0 प्र0 के कार्यक्रम मे जा रहे थे। गाड़ी आश्रम के सत चला रहे थे। सुलतानपुर के आगे एक कुत्ता को बचाने के चक्कर मे गाड़ी बीच सड़क मे ही पलट गयी। सयोग था कि उस समय आगे-पीछे से कोई गाड़ी नही आ रही थी, अन्यथा बड़ी द्र्घटना घट जाती। गाड़ी के पलटते ही पास के घरो से लोग दौड़कर आये और गाड़ी के अदर से गुरुदव जी तथा सतो को निकाले तथा गाड़ी को सीधा कर खड़ा किये। उसमे गुरुदव जी तथा अन्य दो सतो को चोट लगी थी। बाकी सत सकुशल थे।

कोछा आश्रम मे फोन से सूचित किया गया, वहा से तुरन्त लोग द्सरी गाड़ी लेकर आ गये। अपनी गाड़ी को उठाया गया, वह भी विशेष क्षतिग्रस्त नही हुई थी। Sटार्ट करने पर पुनः स्टार्ट हो गयी जिसमे बैठकर सभी सत अपने निश्चित स्थान पर आ गये। गुरुदव जी तथा कुछ सत एक द्सरी गाड़ी से आये।

कोछा कबीर आश्रम आते ही सब लोग गुरुदव को दखने के लिए घेर लिये। सबको दख भी हुआ और हर्ष भी हआ कि ऐसी दर्घटना होते हुए भी गुरुदव सकुशल आ गये। तत्पश्चात गुरुदव स्नान किये फिर तत्काल डाक्टर आये और कटे अगो मे मलहम पट्टी एव इजेक्शन आदि लगाये।

गुरुदव को दखा गया कि दर्घटना के समय भी आप भयरहित, चिन्ता एव घबराहट रहित वहा पड़े रहे, उठाने पर भी कोई घबराहट नही और बाद मे भी वैसे ही प्रसन्न थे। मिलने तथा फोन करने वालो को गुरुदव सात्वना दते कि इसमे चिन्ता की क्या बात है। घटना होती है, हम दसरो की दखते थे आज वही हमारे ऊपर आ गयी। कोई विशेष चोट नही आयी, अच्छा है, विशेष भी आ जाती, शरीर छूट भी जाता तो भी कोई बात नही। इस मिट्टी के लौंद मे रखा क्या है? यह हाड़, मास, रक्त, चाम से बना है यही सब अस्त-व्यस्त और विकृत हो जायेगा, बस यही मौत है। मैं तो वैसे ही हू, मेरी मौत हो ही नही सकती। इसलिए सब समय आत्मभाव मे जीना चाहिए, जहा दख का नाम नही। जो दह भाव मे रहेगा उसी का एक्सीडेट होगा, उसी की मौत होगी, वही दखी, चिन्तित और भयग्रस्त रहेगा। हा, जब तक शरीर रूप प्रारब्ध है तब तक इसकी रक्षा सावधानी तो करनो ही चाहिए, लेकिन मन को सब समय दह से ऊपर रखे।

118.

आपको किस नाम से जानू?

3 दिसम्बर, 2010 ई0 को गुरुदव जी जयपुर मे भक्त श्री नाथू लाल जी का कार्यक्रम करके नागौर जिला मे डेगाना कस्बा जा रहे थे। जयपुर स्टेशन के पास ही भक्तिमती आशा दवी का घर है। उनके आग्रह को स्वीकारते हुए आप उनके घर गये। उनके घर पहुचे अभी पाच मिनट ही बीता होगा कि एक सज्जन गुरुदव के दर्शन करने के लिए आ गये। आते ही वे कुछ मिष्ठान और फूल चढ़ाये तथा गुरुदव के चरणो मे लिपट गये। उन्होने कहा—गुरुदव, मुझे अपनी शरण मे कब बुलायेगे? मेरे मे दस प्रतिशत दोष रह गये हैं, उन्हे भी धीरे-धीरे त्याग रहा हू। ये सज्जन जयपुर के पास बादोकुई के थे, उनका नाम था प्रकाश जो।

प्रकाश जी गुरुदव जी की पुस्तके पढ़े थे लेकिन आपसे अभी परिचित नही थे।

गुरुदव ने पूछा—बेटा, तुम किसी सत से जुड़े हो?

उन्होने कहा—हा गुरुदव, जयपुर के पास एक सत हैं जिनका नाम शभू साहेब है। वे मूल गादो इलाहाबाद के अभिलाष साहेब के शिष्य हैं।

गुरुदव ने पूछा—कौन मूल गादो? उन्होने वही बात पुनः दोहरायी, मूल गादो इलाहाबाद।

गुरुदव ने सोचा शायद इनको कही विस्मरण होता हो तो पुनः याद कर ले, इसलिए पुनः आपने पूछा—मूलगादो इलाहाबाद की कोई पुस्तक भी है?

प्रकाश जी ने कहा—हा, गुरु जी। अभिलाष साहेब की बहुत-सी पुस्तके हैं। उसमे से एक पुस्तक बीजक व्याख्या नाम से है जो दो खडो मे है। वह मेरे पास है, उसे मैं पढ़ता हू। आपने कहा—ठीक है बेटा, बीजक व्याख्या अच्छी पुस्तक है उसे खूब पढ़ना। प्रकाश जी खूब रीझकर गुरुदव से बाते कर रहे थे, बीच-बीच मे वे कहते जाते कि अभिलाष साहेब बहुत अच्छे सत हैं उन्ही के शिष्य शभू साहेब हैं। उन्होने ही मुझे कुछ मार्गदर्शन दिया है।

गुरुदव ने उनको प्रसाद दिया, प्रसाद खाकर व पानी पिये। चलते समय प्रकाश जी ने पूछा—अच्छा साहेब, आपको मैं किस नाम से जानू?

गुरुदव ने मुस्कुराकर कहा—तुम जिनका नाम ले रहे हो, अभिलाष...। इतना सुनते ही प्रकाश समझ गये और वे भाव विह्वल होकर पुनः आपके चरणो मे लिपट गये। उन्होने कहा—गुरुदव! ऐसा कुछ उपदश द जिससे आप मेरे मे समा जाये और मैं आप मे समा जाऊ। गुरुदव ने कहा—बेटा, बीजक व्याख्या खूब मन लगाकर पढ़ोगे तो मानो मैं तुममे समा गया।

119.
मान्यताओ की पकड़ से ऊपर उठो

15 जून, कबीर जयन्ती 2011 का दिन था। शाम के लगभग चार बजे का समय था। बहुत-से लोग गुरुदव के कक्ष मे बैठे थे। सबसे आप मिलजुल रहे थे। इसी बीच एक युवक आकर पीछे बैठ गया, जो सुपरिचित था। उसके चेहरे से ही लग रहा था कि वह दखी है। उसे दखते ही गुरुदव समझ गये। आपने उसे अकेले मे बुलाकर पूछा—बेटा, क्यो दखी हो?

उस युवक ने कहा—गुरुदव, हमारी भतीजी घर के पास के ही एक युवक के साथ भाग गयी। वह लड़का हमारी जाति-गोत्र का नही है। इसी बात को लेकर हम सब लोग पीड़ित हैं। घर वालो को लज्जा लग रही है वे सब सोचते हैं यहा से सब कुछ बेचकर कही अलग चले जाये।

गुरुदव ने उसको सात्वना दिया और कहा—बेटा, घबराओ मत। कही इधर-उधर जाने की तो सोचो ही मत। उत्तेजना मे यदि घर-जमीन बेचने लगोगे तो मूर्ख बन जाओगे। लड़की किसी लड़के के साथ चली गयी तो क्या बुरा हुआ। तुमको उसकी शादो कही करना ही था, वह स्वय किसी के साथ चली गयी, अच्छा हुआ। जाति-बिरादरी क्या सोच रहे हो? आज भारत का कानून है कि लड़की-लड़का यदि विवाह के योग्य हो गये हैं तो कही भी स्वतत्रता से अपना विवाह कर सकते हैं। उनका विरोध करोगे, मारो-पीटोगे तो तुम सबको जेल जाना पड़ेगा। क्योकि कानून उनके साथ है। इसलिए तुम सब शान्त रहो, विरोध तो बिलकुल ही मत करो। बीच मे कुछ स्वार्थी लोगो ने ऊच-नीच जाति-पाति, छुआछूत आदि वर्णव्यवस्था का कुचक्र रचकर लोगो को बाट कर रख दिया। इस गर्हित प्रथा ने दश और समाज का बहुत अहित किया है। सभी मनुष्य केवल मनुष्य हैं। आज भारत मे फिर से यह कानून लागू हो गया है कि कोई छोटा-बड़ा नही, कोई ऊच-नीच नही, सब समान हैं। कोई कही से अपनी रोटी-बेटी का सम्बन्ध जोड़ सकता है।

इसलिए बेटा, यह वहम छोड़ो कि हमारे घर की बेटी किसी अछूत घर मे चली गयी है। उसमे और तुममे क्या अन्तर है? सब मन का केवल भ्रम है। मन से प्रसन्न रहो, अभी ताजा घटना होने से ज्यादा महसूस होता है, समय बीतेगा थोड़े दिनो मे सब सहज हो जायेगा।

दूसरे दिन शाम को गुरुदव जी निवास पर ही बरामद मे बैठे थे। एक पडित जी आ गये। ये भी काफी निकट से जुड़े हैं। आते ही प्रणाम करके गुरुदव के पास चटाई पर बैठ गये। गुरुदव ने कुशल समाचार पूछा। उन्होने कहा—साहेब जी, सब ठीक है। बेटे की उम्र काफी हो गयी है लेकिन वह कही लड़की पसन्द ही नही कर रहा है। बहुत दिनो से हम दखते हैं किन्तु वह सब को नकार दता है। लगता है वह कही स्वय लड़की पसद किये हुए है, इसीलिए अन्य जगह स्वीकार नही कर रहा है। एक दिन हमे गुस्सा लगा और उससे हमने कह दिया कि दखो अगर तुम स्वय कही लड़की पसद किये हो और वह ब्राह्मण घर की है तो कोई बात नही, किन्तु ब्राह्मण के अलावा कोई लड़की लाओगे तो हमारे घर-जमीन आदि किसी सम्पत्ति पर तुम्हारा कोई अधिकार नही है।

गुरुदव—आपने बहुत गलत किया। आज के समय को सब कुछ दखते-जानते हुए भी आखे नही खुल रही हैं। चारो तरफ सबकी सबमे खूब अतरजातीय शादो हो रही है, लेकिन आप अभी ब्राह्मण बने बैठे हैं। आप कहते रहिए कि हमारी सम्पत्ति पर तुम्हारा कोई अधिकार नही है, लेकिन वह आपका पुत्र है उसका कानूनन अधिकार है।

पडित जी—तब साहेब, अब तो मुख से निकल गया!

गुरुदव—आपको अपना वचन वापस ले लेना चाहिए। आपको कहना चाहिए कि ठीक है बेटा, हमारी दखी हुई कोई लड़की पसद नही आ रही तो तुम स्वय पसद कर लो। जो तुम पसद करोगे उसी के लिए हमारा समर्थन है और वही हमारी बहू होगी। लेकिन आप अपने ब्राह्मणपने की चूड़ी कसोगे तो लड़का आपसे और द्र होता जायेगा।

अतत: यह सोचो कि हमे मनुष्य जाति की सुशील, समझदार बहू चाहिए। यदि अपनी जाति मान्यता की पकड़ रखोगे तो अशान्ति बढ़ जायेगी।

पडित जी ने कहा—ठीक है साहेब, अब मैं ऐसा ही करूगा।

120.
हम लोग तो गृहस्थ हैं

भक्त श्री प्रेम प्रकाश जी के घर कोलकाता मे गुरुदव अपने कक्ष मे विराजमान थे। साय का समय था। कुछ सम्भ्रान्त लोग आपके दर्शनार्थ आये। स्वागत की औपचारिकता के बाद उन लोगो ने अपना परिचय दते हुए कहा—महाराज, मन सब समय अशान्त बना रहता है। जब तक जागते हैं यह कुछ न कुछ सोचता ही रहता है। इसकी चचलता कैसे मिटेगी?

गुरुदव जी—मन का चचल होना कोई नई बात नही है। यही सारे ससार का द्ख है। इस चचलता का कारण व्यक्ति स्वय है। क्योकि वह मन की शान्ति के लिए कोई काम ही नही करता। बाह्य व्यवहार, व्यापार, परिवार आदि के लिए परिश्रम करता है तो उधर सफलता मिलती है। मन की शान्ति के लिए हमे मन ही को माजना पड़ेगा। मन की चाल को दखकर उसे सुधारना पड़ेगा। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए तो हम रोज दो-तीन बार खुराक लेते हैं, किन्तु मानसिक स्वास्थ्य के लिए कितनी खुराक लेते हैं! शान्ति के लिए खुराक लेना तो द्र बल्कि लोग इसके विपरीत ही काम करते हैं।

शान्ति इच्छ्क को जिन कारणो से मन चचल हो, इन्दियो मे चचलता आये उन क्रिया-बरताव से द्र रहना चाहिए। इसके लिए नित्य कुछ साधना, ज्ञान, वैराग्य की पुस्तके पढ़ना चाहिए, ऐसी सगत तथा चर्चा करना और अतर्मुखता के लिए शौक हो कि हमारा मन शात रहे तो धीरे-धीरे मन की चचलता घटती है।

गुरुदव की बात सुनकर एक व्यक्ति बोल पड़ा—महाराज, गृहस्थी मे रहकर यह सब कैसे सभव हो सकता है?

गुरुदव—गृहस्थी मे रहकर सभव नही हो सकेगा तो विरक्त हो जाओ।

आपकी बाते सुनकर सब एक दूसरे की तरफ दखते हुए हसने लगे।

गुरुदव—आप लोग विरक्त हो नही सकते और गृहस्थी मे रहकर यह काम करना चाहते नही, तो केवल सोचने और बाते करने से मन की चचलता दूर हो जाये, शान्ति मिल जाये यह भी सभव नही है। गृहस्थी-विरक्ति दो रास्ते हैं, शान्ति के लिए दोनो को एक ही काम करना पड़ेगा। वहा यह बहाना नही चलेगा कि हम गृहस्थ हैं तो कोई शार्टकट रास्ता मिल जाये।

शान्ति एव आत्मस्थिति स्वास्थ्य है, चचलता रोग है। आसक्ति एव राग रोग के कारण हैं, साधना (अनासक्ति-वैराग्य) रोग की औषधि है। तो क्या रोग-औषधि मे वेष दखकर पक्षपात होता है? गृहस्थ हो या विरक्त जो मोह करेगा दुखी रहेगा, निर्मोह रहेगा सुखी रहेगा, प्रकृति मे क्षमा नाम की चीज नही होती है।

गुरुदव का सरल और स्पष्ट समाधान सुनकर सब लोग प्रसन्न हुए और उन्हे यह महसूस हुआ कि गृहस्थी मे रहकर भी व्यक्ति शान्ति पथ मे आगे बढ़ सकता है।

121.

अपने को जगाना ही सर्वोच्च उपलब्धि है

1960 के आसपास की बात है। गुरुदव उन दिनो अपने गुरु आश्रम बड़हरा (गोडा) मे रहते थे। उन्ही दिनो अयोध्या से तीन-चार नवयुवक वैष्णव सत वहा आये हुए थे। वे गुरुदव की साधना और अतर्मुखता की प्रवृत्ति को पहले से जानते थे। उन्होने सोचा कि ये इतना योग्य होकर केवल अपनी साधना मे ही सीमित हैं। अपने ही कल्याण मे जीवन का समय बिता दना कौन-सी समझदारी है। ऐसा सोचकर वे गुरुदव को कुछ सुझाव दना चाहे।

उन्होने कहा—साहेब, अपना कल्याण करने के साथ-साथ परिवार वालो को भी जगाना चाहिए, सगे-सम्बन्धियो मे आना-जाना चाहिए और उनको ऊपर उठाना चाहिए। अपनो को जगाना बहुत बड़ा परोपकार है। इस प्रकार बारम्बार वे आपको प्रेरित करते रहे।

उनकी बाते सुनकर आपने विनम्रतापूर्वक कहा—मेरा आप लोगो से निवेदन है कि जिस उपासना-पद्धति मे हैं उसी मे रहे और सब तरफ से उपराम होकर

वैराग्य-साधना करे। अपने गुरु के पास रहे और भगवान का भजन करे। ये घर-परिवार और सगे-सम्बन्धियो को जगाने की तृष्णा साधना से विपरीत जाने का रास्ता है। साधक अपने आपको पूर्णत: जगा ले, यहो उसकी सर्वोच्च उपलब्धि है, द्सरा को जगाना उपलब्धि नही है।

122.
दुर्व्यसनो का त्याग ही हितकर है

26 से 29 दिसबर 2011 को गुरुदव का कार्यक्रम इदौर मे था, जिसके आयोजक श्री महेश पाटीदार थे। महेश जी बिजली की केबल बनाते हैं। उनकी फैक्टरी मे ही गुरुदव जी तथा सतो का निवास था। फैक्टरी मे उनके वर्कर भी रहते हैं।

अतिम दिन चलते वक्त महेश जी सभी कर्मचारियो के बीच गुरुदव जी को बुलाये। महेश जी ने कहा—साहेब, हमारे इन बच्चो मे कुछ लोग तम्बाकू, पान, बीड़ी आदि खाते-पीते हैं। मैं चाहता ह कि ये लोग यदि यह सब छोड़ द तो कितना अच्छा हो।

गुरुदव—बिलकुल, ये सब गदो चीजे खाकर अपना ही तन, मन, धन और स्वभाव का नुकसान कर रहे हैं। गुरुदव ने उन लोगो से पूछा—बेटा, ये पान तम्बाकू आदि क्यो खाते हो, इसमे कोई लाभ है?

सबने कहा—मित्रो के साथ खाना शुरू कर दिये फिर आदत पड़ गयी। लाभ कुछ नही हानि ही है।

गुरुदव—जिस चीज के खाने-पीने मे लाभ न हो बल्कि हानि हो उसे खाना-पीना कहा की समझदारी है? इसे छोड़ोगे कि खाते रहोगे?

सभी ने सकल्प लिया कि अब हम इसे छोड़ दगे।

गुरुदव—तुम लोग नशे की जो चीजे खाते-पीते हो सब यहा रखो। कोई बीड़ी, कोई तम्बाकू, कोई सिगरेट, कोई गुटखा आदि जेब से निकालकर आपके सामने रखे और सकल्प किये कि अब ये सारी गदो चीजे हम कभी नही खायेगे।

अपने कर्मचारियो को गुरुदव के समक्ष ऐसा सकल्प करते दख कर श्री महेश जी को बड़ी प्रसन्नता हुई। अत मे प्रसाद वितरण हुआ और सभी गुरुदव का चरण स्पर्श कर वहा से प्रस्थान किये।

123.

समय बदलता है

अगस्त 2011 मे कबीर पारख सस्थान इलाहाबाद मे गुरुदव के सरक्षण मे विशेष ध्यान शिविर चल रहा था। एक दिन शाम के सत्र मे साधको के बीच आपने कहा—समय बदलता है, स्वार्थ बदलता है, और प्रेम बदलता है अपने मन को किसी प्राणी, पदार्थ, परिस्थिति मे आबद्ध करके न रखे। यहा सार सम्बन्ध क्षणिक हैं जो कि भावनाओ पर टिके हैं। उनका मन कब बदल जाय कुछ कहा नही जा सकता, इसलिए सबके साथ समता-प्रेम का बर्ताव करे।

ध्यान शिविर मे एक सज्जन दिल्ली से आये हुए थे। वे मन से बहुत बेचैन थे। दूसरे दिन गुरुदव के पास आय और कहने लगे—गुरुदव! मेरी बेटी शादो के योग्य हो गयी है। मैंने उसके लिए एक सुन्दर होनहार युवक से रिश्ता तय किया, जो जर्मनी मे सर्विस करता है। लेकिन मेरी बेटी ने दिल्ली मे ही बैंक मे सर्विस करने वाले एक युवक से अपना सम्बन्ध जोड़ लिया। समझाने पर वह कहती है पापा, अब तो उसी के साथ रहने का मेरा निश्चय है। उसकी बात सुनकर मुझे बहुत झटका लगा। बहुत दिनो तक मैं बेचैन था, न नीद आती और न भूख लगती। कल शाम के सत्र मे आपके विचार सुना कि ''समय बदलता है, स्वार्थ बदलता है और प्रेम बदलता है। अपने मन को किसी प्राणी-पदार्थ, परिस्थिति मे आबद्ध करके न रखे।'' यह बात मेरे मन मे इन्जेक्शन जैसे लगी। अब काफी शान्ति है।

गुरुदव ने कहा—समय की नब्ज को पहचानना सीखे। यहा कोई किसी का है नही। यह राही जीव पुत्र-पुत्रो के रूप मे हमारे बीच जन्म ले लिया है लेकिन इन पर भी हमारा कोई अधिकार नही है। क्योकि उनके साथ उनका अपना स्वतत्र मन है। उनके मन की रक्षा करते हुए ही उनको राय दिया जा सकता है। उनमे मोह करके उलझना और आत्महत्या करने जैसी बात सोचना कायरता है।

124.

प्रेम के बीज बोये

पश्चिमी उत्तर प्रदश के एक नगर मे गुरुदव का कार्यक्रम था। ठड के दिन थे। वहा से चलकर आपको समाज सहित एक बड़े नगर मे ट्रेन पकड़नी थी। उस नगर मे एक भक्त के बहू-बेटे रहते थे और वे दोनो डॉक्टर थे। उन्होने कहा—साहेब, आप हमारे घर पधारे। शाम का जलपान वही करे और वही से हम आपको स्टेशन भेज दगे। गुरुदव ने स्वीकार करते हुए कहा ठीक है।

साय पाच बजे तक सत समाज सहित गुरुदव डॉक्टर साहेब के घर पर पहुचे। सब लोगो ने आपका स्वागत किया। इसके बाद गुरुदव एव सभी सतो का जलपान हुआ। डॉक्टर साहेब ने कहा—सभी सतो को सामान सहित पहले से स्टेशन भेज दते हैं, आप अभी यही विश्राम करे। ट्रेन के समय पर स्टेशन हम भेज दगे।

सतो के जाने के बाद परिवार के सभी लोग गुरुदव के पास बैठे। आपने सबका परिचय पूछा, फिर दो-शब्द अमृत वचन भी सुनाये।

डॉक्टर साहब ने कहा—साहेब, आपकी कृपा से सब ठीक है, हमारा हास्पिटल अच्छा चलता है, धन-मकान भी है लेकिन हम लोगो मे आपसी प्रेम नही है, इसीलिए मन मे शान्ति नही है। कभी-कभी मैं किसी बात के लिए इन्हे समझाना चाहता हू तो ये मरीजो के सामने ही मुझे डपट दती हैं। मरीज ही हमारे ग्राहक हैं, ऐसी स्थिति मे वे क्या समझेगे।

गुरुदव ने श्रीमती डॉक्टर साहेब को कुछ समझाना चाहा कि बेटी, आपस मे सरल और विनम्र होकर ही सुखपूर्वक रहा जा सकता है।

श्रीमती डॉक्टर ने कहा—विनम्र होने की क्या बात है, ये डॉक्टर हैं तो मैं भी डॉक्टर हू।

गु॒ दव ने पुनः कहा—बेटी, सबसे पहले तुम दोनो आपस मे पति-पत्नी हो, एक घर के दो सदस्य हो, दोनो मित्र हो। दोनो के बीच मे प्रेम और मैत्रो भावना होगी तभी स्वय सुखी रह सकते हो और तभी माता-पिता को भी सतोष द सकते हो। इसी से तुम्हारी अगली पीढ़ी भी सस्कारित हो सकती है। तुम दोनो के बीच मे धन, पद, शिक्षा, डाक्टरी और डिग्री का अहकार आयेगा तो द्खी हो जाओगे। डॉक्टर हास्पिटल मे मरीजो के साथ बनो। घर मे तुम पत्नी हो, बहू हो, मा हो। यहा तुम्हे सबके साथ सरलता, विनम्रता और प्रेम का ही बर्ताव करना चाहिए। डॉक्टर-इजीनियर बनने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण इन्सान बनना है। इसलिए अपने को सरल रखो। सरलता और विनम्रता त्म्हारी सबसे बड़ी शोभा है। इस प्रकार गुरुदव कुछ बाते समझाये, तब तक आपकी टन का समय हो गया और आप स्टेशन के लिए प्रस्थान कर गये।

125.

सोचने का ढंग

गुरुदेव जी उन दिनो जबलपुर के कार्यक्रम मे थे। जबलपुर से कुछ दूरी पर एक पहाड़ी स्थल है, जहा पर जल प्रपात है। जिसे 'भेड़ा घाट' कहते हैं। यहा

पर काफी पर्यटक लोग घूमने-देखने आते रहते हैं। एक दिन सतो का भी विचार बना और वे सब घूमने गये।

शाम को जब सब लोग घूमकर वापस आये तो गुरुदेव जी के पास बदगी करने गये। कुछ लोग उत्साहपूर्वक भेड़ा घाट की रमणीयता एव जलप्रपात के दृश्य का वर्णन करते हुए गुरुदेव से कहने लगे कि आप भी चलते तो अच्छा होता। गुरुदेव जी ने पूछा—कितने ऊपर से पानी गिरता था?

एक ने बताया—गुरुदेव; वहा लगभग तीस-चालीस फीट ऊपर से पानी गिर रहा था, बड़ा आकर्षक दृश्य था।

गुरुदेव जी ने विनाद भरे शब्दो मे कहा—बस, इतनी ही ऊचाई से तुम लोगो ने देखा, मैंने तो अनेक बार हजारो फीट ऊपर से पानी गिरते हुए देखा है।

सबको आश्चर्य हुआ, एक ने पूछा—गुरुदेव जी, आप तो कही घूमने गये नही, कहा पर ऐसा दृश्य देखे?

गुरुदेव जी—बारिश होती है तो कितने फीट ऊपर से पानी गिरता है? हजारो फीट से न! बस, उसको मैं अनेक बार देखा हू। इसलिए जाने का मेरा मन नही हुआ।

126·

वैराग्य की उपाधि झूठी

एक बार गुरुदेव जी के पास दिल्ली की तरफ से एक पत्र आया, साथ मे एक निमत्रण कार्ड भी। जिसमे लिखा था...

'स्वामी जी! यहा हम लोग एक कार्यक्रम करना चाहते हैं, जिसमे आप अवश्यय पधारे। इस कार्यक्रम मे अनेक विद्वतगण आयेगे, जिसमे सर्वसम्मति से आपको हम लोग 'वैराग्यवान' की उपाधि देना चाहते हैं।'

गुरुदेव जी ने उनको जवाब मे लिखा—

प्रिय भैया! आप लोगो के इस शुभ कार्य के लिए मेरी मगल कामना है, लेकिन मैं इसमे नही आ सकूगा। जिस दिन मुझे दूसरो से वैराग्य की उपाधि लेने की जरूरत पड़ जायेगी उस दिन मेरे वैराग्य का दिवाला निकल जायेगा।

वस्तुत: वैराग्य अन्दर की चीज है जिसे जीवन मे जिया जाता है। यह किसी के ओढ़ाने से मन मे नही आता।

127.

'शान्ति और साहस' एक लघु वार्ता

12 जुलाई, 2012 को गुरुदव जी नागपुर मे श्री युवराज अटोने जी के आतिथ्य मे पधारे। शाम का सत्सग कार्यक्रम हो चुका था। भक्त लोग गुरुदव जी से मिल-जुल रहे थे। दो बहिने भी सत्सग मे आयी थी, वे इजीनियरिग कालेज जलगाव मे पढ़ती थी। उन्होने गुरुदव के साधक से कहा कि हम गुरुदव जी से अकेले मे मिलना चाहती हैं। साधक ने कहा—ठीक है, दस मिनट रुके।

गुरुदव जी अन्दर अपने कक्ष मे गये, कुछ मिनट बाद उन बहनो को बुलाने की आपने इजाजत दो। दोनो आयी और पुष्प चढ़ाते हुए प्रणाम करके बैठ गयी। गुरुदव जी ने परिचय के साथ-साथ कुशल समाचार पूछा। उन दोनो बहनो के नाम थे आयुषी और पूर्णिमा। आयुषी ने कहा—गुरु जी, हम कुछ पूछना चाहती हैं।

गुरुदव—बेटी, जो पूछना चाहो पूछो।

आयुषी—मन अच्छा होता है या बुरा?

गुरुदव—मन न अच्छा होता है न बुरा। यह अच्छा या बुरा सम्बन्ध से होता है। जैसे हवा अपने आप म न सुगन्धित है न दर्गन्धित, लेकिन जब फूल-फूलवारियो एव बगीचो की ओर से हवा आती है तो वह सुगधित हो जाती है और कूड़े-कचड़े एव गदो जगहो की ओर से आती है तो वह दर्गन्धित हो जाती है। इसी प्रकार अच्छी सगत, अच्छे कर्म, अच्छे ग्रन्थो के अध्ययन से मन मे सुख-शान्ति का अनुभव होता है और कुसग, कुकर्म और कुग्रन्थ का अध्ययन करने से मन मे दख-अशान्ति का अनुभव होता है। इसलिए अपने कर्म और विचार को ठीक रखना चाहिए।

आयुषी—कोई मुझसे सहयोग मागता है तो मैं उसका सब प्रकार से मदद कर देती हू, पर यदि कोई मुझे दबाना चाहता है या मेरे विचारो के विरुद्ध बात करता है तो मुझस सहन नही होता, इसके लिए क्या करू?

गुरुदव—सहयोग करना तो अच्छा है। जहा जरूरत हो वहा विवेकपूर्वक सहयोग करो, लेकिन तुम्हारे विचारो के विरुद्ध कोई कहता है तो वहा भी पहले यह समझो कि मेरा विचार सही है या नही। साथ-साथ दसरे की भावना को समझो। यदि अगला व्यक्ति हमारा शुभचिन्तक है फिर भी उसके विचार हमे अच्छे नही लग रहे हैं तो इसमे हम गलत हो सकते हैं। जैसे बेटा कहता है कि आज मैं फिल्म (सिनेमा) दखने जाऊगा, लेकिन पिता रोकता है तो इसे भी

विचारो के विरुद्ध होना कहा जा सकता है। लेकिन यह विरोध बेटे के हित मे है तो स्वय विवेक से अपने भले-बुरे की पहचान कर।

आयुषी—अच्छे-बुरे की पहचान कैसे करे?

गुरुदव—बेटी, स्वय करना होगा। और यह पहचान एकाएक नही होती। ससार का धक्का खाते-खाते समझ मे आता है और अनुभव बढ़ता है।

आयुषी—हमारे सही होते हुए भी भाव-भगिमा एव चेहरे की व्यजना से किसी ने हमे गलत मान लिया तो उसको कैसे समझाये?

गुरुदव—सबको समझाया नही जा सकता। तुम यदि सही हो तो दूसरे लोग चाहे जो माने, मानने दो। लेकिन यदि तुम्हारे मन, वाणी, कर्म गलत हैं तो सब लोग चाहे तुम्हारी आरती ही करे तो इससे क्या लाभ? अपने विचार सही होने के साथ-साथ उसी के अनुकूल चेहरे की व्यजना को भी रखो।

आयुषी—गुरु जी, मैं किसी से दबकर नही रहना चाहती और न ही किसी की सहना ही चाहती हू।

गुरुदव—(हसते हुए) तुम किसी से दबकर नही रहना चाहती?

आयुषी—नही।

गुरुदव—बेटी, तुम व्यक्ति के नीचे न रहो लेकिन नियम के नीचे तो रहना ही पड़ेगा और दबकर रहने का मतलब क्या होता है, माता-पिता, बड़ो की आज्ञा मानना, इसे दबकर रहना नही कहा जाता। अतत: मन मे यह भाव बनाओ कि दबकर-झुककर रहने वाला ही सुखी रह सकता है। अहकारी और उन्मादी व्यक्ति कभी सुखी नही होता। इसलिए दबकर भले न रहो किन्तु शान्ति से रहो।

दूसरी बहन पूर्णिमा से गुरुदव ने पूछा, तुम्हे भी गुस्सा आता है कि नही बेटी? उसके बोलने के पहले आयुषी ही बोल पड़ी—इसको तो बोलना ही नही आता, फिर गुस्सा क्या करेगी। ये शात रहती है, गुस्सा कभी नही करती।

गुरुदव—तो तुम इन्हे अपना गुरु मान लो और गुस्सा करना छोड़ दो।

आयुषी—हा, लेकिन जब से इसके साथ मैं रहने लगी, इन चार वर्षो मे बहुत अतर आया। बीच मे बोलते हुए पूर्णिमा ने कहा—और इसके साथ रहने से मेरे स्वभाव मे भी बहुत बदलाव आया।

गुरुदव ने पूछा—तुममे क्या बदलाव आया?

पूर्णिमा—इसके साथ रहने से मुझे बात करने का साहस आया, अन्यथा मुझे बोलने मे सकोच लगता था।

आयुषी—गुरु जी, वर्तमान समय मे नर या नारी कौन सुखी है?

गुरुदव—नर या नारी कोई सुखी नही है। सुखी वह होता है जो अपनी महत्त्वाकाक्षाओ, लालसाओ, असतोष, अहकार को घटाकर सरल, विनम्र कोमल होता है। यह काम नर या नारी कोई भी करे, जो करेगा वही सुखी रहेगा।

कही भी रहो, सहनशील व्यक्ति ही किसी क्षेत्र मे आगे बढ़ सकता है। अतत: मेरी यही शुभकामना है कि तुम दोनो की आपसी मित्रता बनी रहे और एक दसरे से शान्ति तथा साहस का आदान-प्रदान करती रहो। दोनो बच्ची गुरुदव को प्रणाम करके बाहर आ जाती हैं।

128.

दिल को पत्थर बनाओ

अगस्त 2012 की बात है एक दवी अपने 13 वर्षीय बेटे को साथ लेकर गुरुदव के पास आई। आते ही वह रो-रोकर अपनी दखद बाते बताने लगी कि महाराज, हमारे पति आज 15 दिन हो गये बिना बताये घर से चले गये हैं। हम लोगो के पास न खाने के लिए कुछ अन्न है, न पहनने के लिए कपड़े और न रहने के लिए घर है। यहा आने के लिए बस के किराया का पैसा भी उधार लेकर आई हू। यह मेरा बेटा रक्षाबधन के दिन सड़क पर बैठकर राखी बेचा जिसमे छह सौ रुपया कमाया था, उसको भी उठाकर वे चुपचाप चल दिये। अब हम कैसे जिये, ऐसा कहकर वह रोने लगी।

गुरुदव ने समझाते हुए कहा—घबराओ मत, धीरज रखो, आगे सब ठीक हो जायेगा, जाओ अभी भोजन करो।

वस्तुत: उसके पति के निकम्मेपन और दर्व्यसनी होने के नाते ही उसके भाई-भतोजो ने उसे अगूठा दिखा दिया और सब कुछ हड़प लिया था।

गुरुदव ने करुणा के स्वर मे दख प्रकट करते हुए कहा—अकर्मण्यता और दर्व्यसन का शिकार होना यह दोहरा दख है। लेकिन घबराओ मत, तुम स्वय कुछ मेहनत-मजदरी करो और बच्चे को पढ़ाओ। धीरे-धीरे अपने आप रास्ता निकल आयेगा। चलते वक्त गुरुदव ने साधक से कहा—इनको दो हजार रुपये और एक चादर द दो।

साधक ने पैसे और कपड़े लाकर उनको दिया। वह गुरुदव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए पुन: रोने लगी। उसके बच्चे ने कहा—मा रोओ मत, अपने दिल को पत्थर बनाओ और चलो। दोनो गुरुदव को प्रणाम करके वापस चले जाते हैं।

129.

अंत में एक बार फिर नये दांत

गुरुदव दात लगवाना नही चाहते थे। लेकिन बिना दातो के शब्द उच्चारण सही नही हो सकता। प्रवचन मे शब्द की स्पष्टता हो, इस उद्देश्य से जुलाई 1999 मे आपने पहली बार तर-ऊपर ब्रिज दात लगवाया था। 26 फरवरी, 2009 मे छत्तीसगढ़ के डोमा गाव मे एक दिन खिचड़ी खाते समय, अचानक नीचे के सारे दात थाली मे गिर गये। इसके दो महीने बाद सूरत मे आपने निचले जबड़े के सारे दात एक साथ लगवाया जो कृत्रिम (पहनने-निकालने वाले) थे। लेकिन 2012 मे ऊपर के दात भी कष्ट दने लगे। गुरुदव ने पहले ही सोच लिया था कि इलाहाबाद वर्षावास करते समय ऊपर के दातो को भी कृत्रिम रूप से लगवाना है।

23 से 29 जुलाई, 2012 मे कबीर आश्रम नवापारा छत्तीसगढ़ का ध्यान शिविर करने के बाद 31 जुलाई को गुरुदव कबीर आश्रम इलाहाबाद आये।

आपने सोचा इस बीच इलाहाबाद मे स्थायी निवास करना है, अत: इसी बीच दात लगवाया जा सकता है। अत: 1 अगस्त, 2012 को प्रीतमनगर मे डॉ0 मनीष से सपर्क कर बात की और शेष कुछ दात निकाल दिये गये। 19 अगस्त को डॉ0 मनीष ने कहा—अदर जबड़ा मे थोड़ो हड्डी बढ़ गयी है, बिना आपरेशन किये दात लगवाने पर बाद मे कष्ट हो सकता है। अत: उसका आपरेशन करना पड़ेगा। गुरुदव जी ने उसी दिन आपरेशन करवा लिया। नाप-जोख के पश्चात 35 दिन बाद डॉ0 मनीष ने 24 सितबर को गुरुदव जी को नये दात बनाकर लगा दिया।

25 सितम्बर को सुबह स्नान के बाद गुरुदव स्वय अपना अनुभव एव विचार डायरी मे जो लिखे हैं, उसे यहा उन्ही के शब्दो मे उद्धृत किया जा रहा है—

''कल आठ बजे रात मे दात के डॉक्टर ने मेरे मुख मे तर-ऊपर पूरा दात बनाकर लगाया जो पहनने-निकालने वाला है। यह अजीब लगता है। डॉक्टर ने कहा कि महीना खाड़ मे यह स्वाभाविक हो जायेगा। आज स्नान के बाद ही पाच बादाम खाया है। दात तो काम कर रहे हैं। यह सब स्वप्न है। दह और दुनिया स्वप्न है। कुछ नही रहेगा।''

प्रात: का विचार लिखने के बाद गुरुदव को सतो के बीच सभागार मे जाना था। उन दिनो आप पलटू साहेब की वाणियो के आधार पर सतो के बीच बोलते

थे। आज दात लगाकर बोलना है, बोलते समय कैसे लगेगा इसके लिए कक्ष मे ही आपने उपनिषद् का एक मत्र और सद्गुरु कबीर की एक साखी कहकर अभ्यास कर लिया था—

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः॥ ईश उपनिषद्॥

सकलो दुर्मति दूर करु, अच्छा जन्म बनाव।
काग गौन गति छाड़िके, हंस गौन चलि आव॥ बीजक॥

इसके बाद बीजक मदिर के सभागार मे जाकर आप सतो के बीच आधा घटा उपदश किये।

❻

अन्तिम दिन

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेब: जीवन दर्पण

1.

गुरुदेव जी के अन्तिम दिन

गुरुदव का पूरा जीवन ही भक्ति, वैराग्य, स्वरूपस्थिति, सहनशीलता, धैर्य, सतोष, प्रसन्नता, त्याग, सयम, श्रमशीलता, सत्सग की निरन्तरता, सद्ग्रन्थाव-लोकन, भ्रमण, एव मनुष्यमात्र के प्रति प्यार-स्नेह से ओत-प्रोत है। आपके विषय मे जो कुछ कहा जाये कम ही है। यहा पर आपके जीवन के अन्तिम क्षणो का कुछ चित्रण किया जा रहा है—

21 सितम्बर, 2012 को दोपहर भोजन के बाद गुरुदव अपने मिलन-कक्ष मे नीचे बैठे थे। भोजनोपरान्त मैं आया और बदगी करके आपके पास बैठ गया। थोड़ी दर आश्रम के कुछ निर्माण कार्य की बाते हुई। इसके बाद आपने कहा—हानि-लाभ रूप यह ससार ही है। यहा जो अपने आप को हानि-लाभ से जोड़ेगा वह सुखी नही हो सकता। शान्ति की कामना रखने वाले को चाहिए कि वह अपनी पूरी शक्ति से तत्परतापूर्वक कर्तव्य कर्म करे। घबराये नही। सघर्षो से घबराने वाला व्यक्ति किसी क्षेत्र मे सफलता नही प्राप्त कर सकता। मैंने अपने जीवन मे यही साधा। किसी भी मठ, आश्रम, सस्था के अगुवा, मालिक सब समय तो बैठे नही रहते। किसी-न-किसी दिन सबको यहा से जाना ही पड़ता है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, कबीर, विवेकानन्द, दयानन्द आदि यहा कौन बैठा है। लेकिन उत्तम-मध्यम उनके अनुगामी अपनी परम्परा को आज भी चला रहे हैं। मेरा भी शरीर बूढ़ा तो हो ही गया है, छूटेगा ही। मेरे शरीर के छूटने पर रोना नही। मेरे मन मे भावनाओ का इतना वेग हुआ कि आखे भर आयी और कुछ बोल न सका।

इसके पूर्व भी समय-समय से गुरुदव से यह शब्द सुनने को मिला था। एक बार मैंने आपसे कहा—गुरुदव! इतने दिनो तक आपके चरणो मे हम रहे। बड़ी

अनुकूलता मे आपके साथ खेले-खाये। आपने हमे सब प्रकार से गढ़ा-सवारा, आपके वियोग के दिन को हम कैसे सह पायेगे?

गुरुदेव ने कहा—तो रोकर पाओगे क्या? जो मैंने कहा, जैसा मैंने जिया और जो सद्गुरु का उपदश है उसी को अपनाने से कल्याण है। किसी के वियोग मे कोई रोये, खूब रोये लेकिन एक दिन चुप होना ही पड़ेगा। इसलिए विचारवान पहले से ही विवेक करके शान्त रहते ह।

उपरोक्त चर्चा के द्सरे दिन भोजन के बाद गुरुदव ने कहा—आज पीठ मे पुनः वायु विकार का दद आ गया है। गुरुक्षेम के पास से हीट-पैड और मलहम ले आना, थोड़ी सेकाई करनी है। अपराह्न ढाई बजे तक गुरुदव स्नानादि करके तैयार हो गये। मैं दौड़ते हुए गया और हीट पैड तथा मलहम ले आया। मलहम लगाकर सेकाई की। शाम को मैंने पूछा—गुरुदव! इस समय कैसे लगता है? गुरुदव ने कहा—ठीक है, आराम लगता है। एक-दो दिन सेकाई करने पर ठीक हो जायेगा।

मैंने कहा—गुरुदेव! एक बार डॉक्टर को दिखा दिया जाता तो अच्छा रहता। आपने थोड़ा झिड़कते हुए कहा—तुम डॉक्टर-डॉक्टर रटते रहते हो, यह क्या पहली बार है? अनेक बार ऐसा होता रहा है, सेकाई से ठीक हुआ है। द्सरे दिन मैंने डॉक्टर से टेलीफोन पर बाते की और बताया कि गुरुदव को इस प्रकार कष्ट है। उन्होने दवा लिखवाई। उस दवा को खाते ही कुछ मिनट मे आराम मिल गया। द्सरे दिन गुरुदव ने कहा—पूर्णतः आराम नही है। 25 तारीख शाम को काफी दर तक मैं सेक और मालिश करता रहा। साथ-साथ बाते भी होती रही। एक नवयुवक (सौरभ) प्रीतमनगर कालोनी से आया जो सुपरिचित था। गुरुदव ने कहा—आओ बेटा! उसे बैठाये और मुझसे हीट पैड लेकर स्वय सेकाई करते हुए उससे बाते करते रहे। इसके बाद एक दम्पती लाल जी और शारदा तथा उनके सुपुत्र सत्यम दर्शनार्थ आये, उनसे दर तक बाते होती रही। इसी बीच छत्तीसगढ़ से सत श्री दवेन्द साहेब और सत श्री गुरुभ्षण साहेब जी का फोन आया, उन दोनो से दर तक बाते होती रही, बीच-बीच मे हसी-विनोद भी हुआ!

सत श्री गुरुभूषण साहेब से गुरुदेव ने कहा कि आने वाले 1, 2, 3 अक्टूबर मे छत्तीसगढ़ मे निश्चित कार्यक्रम को तुम लोग निपटा लो। मुझे कुछ असमर्थता महसूस हो रही है। यहा मात्र पखा चलाने से पीठ मे दद होने लगता है। यात्रा के लिए ए0 सी0 मे आरक्षण है, उसमे दद भयकर हो गया तो सभाल पाना भी मुश्किल हो जायेगा। कल धर्मेन्द से भी मैं बात कर लूगा।

सत श्री गुरुभूषण साहेब जी ने कहा—गुरुदव! कार्यक्रम तो हो ही जायेगा, आपका स्वास्थ्य अधिक महत्त्वपूर्ण है।

25 सितम्बर रात्रि के लगभग नौ बज गये थे। शाम सात बजे से मैं गुरुदव के पास ही था। गुरुदेव ने मुझसे कहा—अभी तो तीन-चार दिन का समय है, दद ठीक भी हो सकता है। इस समय लगभग एक घटे से बहुत आराम है। दो प्रतिशत भी दद नही महसूस हो रहा है। मुझे प्रसन्नता हुई। गुरुदव ने कहा—अब तो ठीक हो जायेगा। कब तक ऐसा रहेगा? सबकी अवधि होती है। अनेक बार पहले ऐसा रहा और ठीक हुआ।

मैंने कहा—गुरुदव! रात्रि मे कभी भी आप उठे और ऐसा कुछ लगे तो (बेल बजाकर) मुझे अवश्य जगा द। आपने कहा—कुछ ऐसा लगता ही नही, नाहक मे तुम्हे क्यो परेशान करू। मैंने कहा—मेरा सौभाग्य होगा गुरुदव, आप बिलकुल यह न सोचे कि इसे कष्ट होगा।

गुरुदव ने मुस्कुराते हुए कहा—बेटा, तुम लोग सेवा कर ही रहे हो, फिर जब जरूरत होगी? अवश्य जगाऊगा। कुर्सी से उठते हुए आपने कहा—अच्छा, मच्छरदानी लगाओ, अब विश्राम करते हैं।

मैंने मच्छरदानी लगाकर चादर, घड़ी और लाइट-रिमोट आसन पर रख दिया। गुरुदव बाथरूम से लघुशका निपटकर आये और मुझसे कहे—जाओ तुम भी आराम करो। मैं बदगी करके बाहर आ गया और गुरुदव अदर से दरवाजा बद करके सो गये। आप सब समय निर्विघ्नता की दृष्टि से अन्दर से दरवाजा बद करके हो सोते थे। लगभग दस बजे तक मैं भी सो गया।

26 सितम्बर को प्रात: चार बजे के कुछ पूर्व ही मैं उठा। गुरुदव नित्य साढ़े तीन बजे तक उठते थे। प्रात: आपके दर्शन मुझे बाथरूम मे या घूमने के लिए निकलते वक्त हो जाया करते थे। दर्भाग्यवश 26 सितम्बर, 2012 बुधवार को वह समय आया कि मैं प्रात: आपके दर्शन न कर सका। उस दिन मैंने दखा कि गुरुदव अभी उठे नही हैं। खिड़की से अन्दर दखा तो आप बिस्तर पर नही हैं। अन्दर के बाथरूम मे भी नही दिखे। उस समय बाथरूम का दरवाजा खुला था, लाइट भी जल रही थी लेकिन खिड़की से बाथरूम के समस्त भाग नही दिख रहे थे। कमरे मे भी सब तरफ दखने का प्रयास किया किन्तु आप वहा भी न दिखे। कोई आहट न मिली तो मुझे आशका हुई। जब कक्ष का दरवाजा अन्दर से बन्द है तो गुरुदव अन्दर ही हैं, फिर हैं कहा? ऐसा मन मे क्षण-क्षण प्रश्न उठने लगा। एक मिनट का भी विलम्ब किये बिना मैं द्सरे बाथरूम की तरफ से गुरुदव के बाथरूम मे दखा तो मेरे मन मे हाहाकार मच गया। तुरन्त वापस आया, करमचन्द जी बरामद मे अभी बिस्तर पर ही थे। मुझे लगा शायद वे शीघ्र

नही उठ सकेंगे इसलिए मैं आगे दवेन्द जी की तरफ गया। वे मुह धोकर वापस आ रहे थे। मैंने चीखते हुए दवेन्द जी को बताया कि गुरुदव बाथरूम मे पड़े हैं। ऐसा कहकर मैं तत्क्षण वापस आया और पुन: उसी रास्ते से गुरुदव के बाथरूम मे उतर गया। गुरुदव बाथरूम मे बायी करवट पैरो को समेटे बच्चे की तरह लेटे हुए हैं। उठाने पर दखा गया चोट के चिह्न कही नही थे। लेकिन बाये हाथ, कन्धे, चेहरे मे श्यामता आ गयी थी। होठो मे थोड़ी सूजन थी तथा जीभ थोड़ी दिख रही थी, मैंने तुरन्त अन्दर से दरवाजा खोला और तब करमचन्द जी तथा दवेन्द जी भी बाथरूम मे आ गये। गुरुदव को अन्दर से उठाकर बाहर कक्ष मे गद्दे पर लेटा दिया गया। पाच मिनट तक सतो ने हाथ-पैर आदि दबाया। श्री रामेश्वर जी सीने मे पपिग किये लेकिन कोई परिणाम न निकला, तत्पश्चात तुरन्त डॉक्टर के पास ले गये। डॉक्टर ने दखते ही निश्चित कर दिया कि गुरुदव नही रह गये हैं।

गुरुदेव की गतिविधियो को दखने से लगता है कि आप प्रात: नित्य की भाति बिस्तर से उठकर खड़ाऊ पहने, बाथरूम की लाइट जलाये, दरवाजा खोले, गिलास लिये, लघुशका करने के लिए बैठे और उसी समय अचानक अटैक आ गया और आप बायी करवट लेट गये। दद अवश्य हुआ होगा लेकिन आप अपनी अपार सहनशीलता से उसे पी गये। जीवन भर 'आत्मा की असगता' और 'अनैश्वर्य ही मेरा ऐश्वर्य है' का उपेदश करने वाला महापुरुष उसी स्थिति मे लीन हो गया। वस्तुत: गुरुदव ब्राह्ममुहूर्त मे लगभग 3.30 बजे 26 सितम्बर, 2012 दिन बुधवार तदनुसार वि.स. 2069 भाद्रपद शुक्ल पक्ष एकादशी को स्वरूपलीन हो गये थे।

'गुरुदव नहो रह गये' ऐसा सुनते ही सतो-साधको मे कुहराम मच गया। उन दिनो गुरुदव के वरिष्ठ शिष्यो मे सत श्री धर्मेन्द साहेब जी, सत श्री गुरुभूषण साहेब जी, सत श्री दवेन्द साहेब जी, सत श्री गौरव साहेब आदि छत्तीसगढ़ मे थे। सूचना मिलते ही उसी क्षण वे प्राइवेट दो गाड़िया रिजर्व करके वहा से इलाहाबाद के लिए चल दिये। फिर तो फोन, रेडियो, टेलीविजन तथा समाचार-पत्रो के माध्यम से पानी मे तेल की तरह कुछ ही घटे मे दश-विदश मे गुरुदव के शरीरात का समाचार फैल गया।

'गुरुदव का शरीर शान्त हो गया' यह जिसने सुना वही चौंक गया और रो पड़ा। ऐसा दखद समाचार पाते ही गुरुदव के अन्तिम दर्शन के लिए लोग चल पड़े। जिस गाड़ी मे दखो उसी से लोग इलाहाबाद के लिए चले आ रहे हैं। छत्तीसगढ़, गुजरात, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र, बगाल, हरियाणा, दिल्ली, पजाब, आदि सभी प्रदशो से भीड़ उमड़ती चली आ रही है।

हजारो साधक-साधिकाए, सत-भक्त सभी के मन मे एक असह्य दद बना हुआ है। जो भी गुरुदव के समक्ष दर्शन करने जाता है वह अपनी आखो मे आसुओ को सभाल नही पाता। गुरुदव के पार्थिव शरीर को सुरक्षित रखने के लिए विशेष रसायन का प्रयोग किया गया तथा दर्शनार्थियो की सुविधा की दृष्टि से बीजक मदिर के हाल मे मच पर उन्हे बैठा दिया गया था। दर प्रदशो से आने वाले भक्तो को अधिक समय लगने के कारण 28 सितम्बर को सुबह दस बजे समाधि दने का निर्णय लिया गया।

28 सितम्बर सुबह दस बजे तक सतो, महन्तो, साध्वियो, पत्रकारो, प्रेमी-भक्तो आदि से पूरा आश्रम भर गया। लगभग छह-सात हजार लोगो की भीड़ अतिम दशन के लिए उमड़ पड़ी। अत मे गुरुदव को स्नानादि कराकर, नये कपड़े और फूलो का हार पहनाया गया, मस्तक पर चन्दन लगाकर पूजा-आरती की गयी। तत्पश्चात सिहासन पर बैठाकर आश्रम के अन्दर ही एक शोभा यात्रा निकाली गयी। इस यात्रा मे 'जब तक सूरज-चाद रहेगा, गुरुदव तेरा नाम रहेगा' आदि के नारो से आकाश गूज उठा। साथ-साथ लोगो की आखो से आसू बन्द ही नही हो रहे थे। अत मे आश्रम के अन्दर ही बीजक मदिर के सामने गुरुदव के पार्थिव शरीर को विशेष विधानानुसार समाधि दो गयी।

सभी दर्शनार्थियो को मिट्टी दने के लिए पक्तिबद्ध व्यवस्था की गयी, जो लगभग शाम तक चलती रही। गुरुदव की समाधि के बाद बीजक मदिर मे श्रद्धाजलि सभा रखी गयी। जिसमे विशिष्ट सत-महन्तो एव सम्माननीय भक्तो ने गुरुदव के विषय मे अपने उद्बोधन रखे। अन्त मे गुरुदव के वरिष्ठ एव योग्य कर्मठ शिष्य पूज्य श्री धर्मेन्द साहेब जी को गुरुपद के रिक्त स्थान पर बैठाकर उनकी पूजा-आरती की गयी और आश्रम की व्यवस्था अच्छी चलती रहे उसके लिए पूज्य श्री गुरुभूषण साहेब जी को अध्यक्ष पद पर आसीन किया गया।

गुरुदव जब तक थे चाहे वे आश्रम मे रहते या भारत के किसी कोने मे भ्रमण करते रहते, सब समय हम आपको अपने पास दखते थे। आपके प्यार, स्नेह, कल्याणकारी शिक्षाओ एव आशीर्वाद से हमे कभी किसी प्रकार के अभाव एव खटक का अनुभव ही नही होता था। हर हालत मे आप हमे सभाल लेते थे। लेकिन आज वही चाद, सूरज, पृथ्वी, आकाश, हवा, जल, भोजन, आश्रम, आगन, मित्र आदि होते हुए भी लगता है कोई अपना है ही नही। दिशाए वीरान, पृथ्वी उजड़ी हुई तथा हवा मे घ्टन महसूस हो रही है। मनुष्यो की भीड़ दिखते हुए भी चारो तरफ सूनसान लग रहा है। हम अपने अन्दर दखते हैं तो लगता है हम कगाल हो गये हैं।

हे गुरुदव! आप तो भौतिक शरीर मे रहते हुए भी इससे परे थे। अब तो आप हकीकत मे इसे छोड़कर स्वरूपलीन हो गये हैं। आपकी इस विदाइ मे हम

आपके चरणो मे क्या समर्पित करे? हम दखते हैं हमारे पास यदि कुछ है भी तो वह सब आपका ही है, फिर हम क्या समर्पित करे। जब तक हम इस शरीर मे हैं, हमारे मन मे आपके चरणो के प्रति भक्ति-भावना बनी रहे, आपके पद-चिह्नो पर चलते रहे और आप हमारे हृदय-घर मे वास करे, बस यही हमारी आपके प्रति श्रद्धाजलि है। पुनः इस वियोग की बेला मे आपके पावन चरणो मे कोटि-कोटि नमन।

गुरुदव के महापरिनिर्वाण के बाद कबीर पारख सस्थान इलाहाबाद मे 27, 28, 29 अक्टूबर को श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया। वस्तुतः यह तिथि पहले से वार्षिक अधिवेशन के रूप मे निर्धारित थी, सर्वसम्मति से श्रद्धाजलि सभा को भी इसी तिथि मे जोड़ दिया गया।

कबीर पारख सस्थान का यह पहला कार्यक्रम था जो गुरुदव की अनुपस्थिति मे हुआ। यह अनुपस्थिति अब नियति ने सदा-सदा के लिए बना दिया है। गुरुदव के जाने से सभी सतो-भक्तो को झटका तो अवश्य लगा, लेकिन सारी वेदना को सहकर पुनः पूरी शक्ति से सब लोग श्रद्धाजलि समारोह की तैयारी मे लग गये। इस कार्यक्रम मे बहुत अधिक तादात मे सत-महतो, साध्वियो, भक्तो एव मा-बहनो का भी आगमन हुआ। सभी सतो-भक्तो ने पूरी निष्ठा से मेहमानो का स्वागत-सत्कार किया और शान्तिपूर्ण ढग से गुरुदव जी का यह श्रद्धाजलि समारोह सम्पन्न हुआ।

2.

गुरुदेव के चरणों मे श्रद्धा-सुमन

बार-बार वन्दन करू, चरण कमल कर जोर॥
जिनके जीवन पात्र मे, कल्मष रहे न थोर॥ 1॥
आओ हम अभिलाष देव की, गाथा मिलकर याद करे॥
उनकी शिक्षाओ को लेकर, जीवन का उद्धार करे॥ 2॥
बस्ती जिला यू०पी० के मध्य, है एक ग्राम खानतारा॥
ब्राह्मण 'दुर्गा' के औरस से, जन्मा 'रामसुमिरन' प्यारा॥ 3॥
उनइस सौ तैंतीस मे जन्मे, कृष्ण भाद्र द्वादशी गुरुवार॥
मा 'जगरानी' की गोदी मे, पाये थे बचपन का प्यार॥ 4॥
माता की ही गोदी से तुम, सस्कार शुभ पाये थे॥
सेवा-पूजा पाठ-पठन मे, तन मन खूब लगाये थे॥ 5॥

बचपन मे स्कूली विद्या, दो भागो मे की थी॥
पहली तीन माह तक की, दूजी भी माह तीन तक ही॥ 6॥
तीसरे पचक[1] से ही मन मे, सगुण उपासना के थे भाव॥
जाग्रत स्वप्न सुषूपति सब मे, त्रिदेवन के दर्शन पाव॥ 7॥
पूर्व जन्म के सुकृत जागे, मिला भेद पारख का॥
सन उनइस सौ तिरपन ईस्वो, शरण मिला सद्‌गुरु का॥ 8॥
यू० पी० के गोडा मे पड़ता, ग्राम बड़हरा गुरु का धाम॥
जहा पारखी सद्‌गुरु 'सूरत', करते मुक्त होन को काम॥ 9॥
सद्‌गुरु मिले सूरत रहनी के, बोध विराग मे आगे॥
साधक जन उनके सग जाके, ज्ञान भक्ति रग लाते॥ 10॥
उनमे एक विलक्षण मूरति, क्षण मे तोड़ दी जग आश॥
प्रतिभा की शक्ति चारो[2] थी, जिनका नाम पड़ा 'अभिलाष'॥ 11॥
कर्मशील भी सदा रहे तुम, उसका फल जग जाहिर है॥
किसी दिशा मे लगते जब भी, पूरण काम दिखाई है॥ 12॥
ज्ञान चुम्बकी उनके सग है, स्थिति सम्यक जिनकी है॥
सरल सनेह चित की उदारता, बड़ी मनोहर लगती है॥ 13॥
प्रेम सुमति मे साधक जन भी, करते हैं नहि कोर कसर॥
स्वय आचरण रहते रहनी, इसका सब पर पड़े असर॥ 14॥
समय का दोहन पल-पल करते, समय फिक्स दिनचर्या है॥
सहज समाधी मे दिन जाता, कैसी भी रहे व्यस्तता है॥ 15॥
सयम प्रिय श्रमशील बहुत थे, निर्विवादिता बल भारी॥
सहनशील व्यवहार कुशल थे, मेटि वासना जग सारी॥ 16॥
दृष्टिकोण वैज्ञानिक उनका, तर्क बुद्धि का था आदर॥
भाषा प्राजल और मनोरम, शब्द समन्वय का सादर॥ 17॥
देह क्षेत्र मे कर्मशील थे, मन प्रदेश मे अचल समाधि॥
व्यवहारकुशल, प्रिय निर्विवादिता, जीवन स्वच्छ रहे निर्व्याधि॥ 18॥

---

1. **दस वर्ष के बाद से ही।**
2. **1. ग्रहण शक्ति, 2. धारणा शक्ति, 3. कल्पना शक्ति, 4. अभिव्यक्ति शक्ति।**

भ्रमण काल भी अद्भुत उनका, सत चले हरदम दस सग॥
नगर कबीर चौमासा करते, आठ मास करते सतसग॥ 19 ॥
जाति-पाति की गध नही थी, और न कोई विषमता ही॥
मानव हैं मानवता की सब, कहैं बात साधक जन की॥ 20 ॥
भोजन का हठ कभी न रहता, क्या कितने किस्मो का साग॥
सादा सहज अल्प ही खाते, यह सदेश बताते आप॥ 21 ॥
बार-बार यह तन है नश्वर, का उपदेश दृढ़ाया है॥
बाहर दुख है भीतर सुख है, का निर्देश सुनाया है॥ 22 ॥
जड़ चेतन का भेद जानना, करना है विषयो का त्याग॥
पाना है अपने को खुद ही, मत्र सुनाते रहते थे आप॥ 23 ॥
जीवन की यह परम सफलता, कहते सब कुछ खो देना॥
होओ विमुख दृश्य से सारे, है निज म उनमुख होना॥ 24 ॥
सद्गुरु के बीजक सागर मे, डुबकी खूब लगाई है॥
वेद-शास्त्र की सरल समीक्षा, हम सब तक पहुचाई है॥ 25 ॥
सत कौन? जो दुखी न होता, का उपदेश सुनाया है॥
अनुभव जीवन की घटनाए, हम सबको दिखलाया है॥ 26 ॥
गुरु कबीर पारख धारा मे, हस्ती एक अनोखी थी॥
कथनी, करनी, रहनी सब गुण, हमने आखो देखी थी॥ 27 ॥
गुरु कबीर के हर पहलू को, ऐसा किया उजागर है॥
सम अथवा उत्कर्ष बुद्धि जन, करते सभी समादर हैं॥ 28 ॥
ऐसे थे अभिलाष देव जी, शुभ चितक सबके प्यारे॥
सबको लिखते सबको कहते, निज पद रहे सभारे॥ 29 ॥
कह नहि पाता अल्प बुद्धि मैं, बोधक गुरुवर का उपकार॥
है विकास मे गुण जो कुछ भी, सो गुरुवर का शरण अधार॥ 30 ॥
छब्बीस सितम्बर को उनका यह, देह पार्थिव शान्त हुआ॥
दो हजार बारह ईस्वी को, सबने रो-रो नमन किया॥ 31 ॥
करू नमन मैं बार-बार, हे सद्गुरु तेरी यादो मे॥
मिले मुक्ति मानवता को, जो लिपटी ह परिवादो मे॥ 32 ॥

7

कबीर पारख संस्थान
एवं
गुरुदेव जी का समाज

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेब: जीवन-कार्य

1.

कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद का संक्षिप्त परिचय

12 नवम्बर, 1953 को रामसुमिरन जी गृहत्याग कर अपने गुरुदेव सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी की शरण मे आ गये। आप गुरुदेव के पास आकर इच्छा-कामनाजित होकर पूर्णरूप से समर्पित भाव से रहने लगे। प्रारम्भ से ही आपका यही भाव था कि मेरे गुरुदेव ही मेरे लिए सब कुछ हैं। उन्ही की आज्ञा, सेवा एव शरणाधीनता मे मुझे अपना कल्याण करना है।

गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी की बचपन से ही पढ़ने-लिखने की विशेष प्रवृत्ति थी। साधु मार्ग मे आने के बाद इधर भी आप उसी लगन और उत्साह से अध्ययन-मनन करते रहे। आपने इक्कोस से चौबीस वर्ष की उम्र मे वैराग्य सजीवनी नाम की प्रथम पद्यात्मक पुस्तक की रचना की। इसी बीच आप अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी की रचनाओ का भी सपादन-कार्य शुरू कर दिये। उनकी बहुत-सी रचनाए यत्र-तत्र पड़ी थी। उनको आपने एकत्रित किया। आपके उत्साह को देखकर गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी ने और पद्यो की रचना की। गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी उन रचनाओ की टीका-व्याख्या भी करते जाते थे। कुछ दिनो के बाद यह रचना एक वृहत पुस्तक रूप मे हो गयी, जो दृष्टातो, भजनो, छन्दो आदि से अलकृत बहुत ही लोकप्रिय हुई। उसका नाम 'विवेक प्रकाश' रखा गया। सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी की तीन अन्य पद्यात्मक पुस्तके हैं—1. रहनि प्रबोधिनी, 2. बोधसार, 3. गुरुपारख बोध।

इन सभी पुस्तको की विस्तृत टीका गुरुदेव जी ने की है जो अब तक प्रकाशित हो रही हैं। पद्य मे वैराग्य सजीवनी और गद्य मे विवेक प्रकाश की टीका आपकी प्रथम रचना है।

1958 मे आपने काशी जाकर बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर राजादरवाजा के विश्वेश्वर प्रेस मे वैराग्य सजीवनी को पहली बार छपाया। इसके बाद इसी प्रेस मे 1960 मे विवेक प्रकाश टीका तथा आपकी अन्य रचनाए अनेक बार छपती रही। 1971 ई0 तक आप अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब के साथ अग-सग बने रहे। इसी बीच अनेक कार्यक्रम, लिखना-पढ़ना और प्रकाशन आदि का भी काम होता रहा। 1971 के बाद आपका प्रचार बढ़ा। आपके लिए भक्तो की अधिक माग होने लगी तो आप अपने गुरुदेव से अलग स्वतत्र रूप मे भी सत-समाज को साथ लेकर भारत के विभिन्न प्रातो मे भ्रमण करते रहे। लेकिन बीच-बीच मे पुस्तक प्रकाशन के लिए काशी भी जाना पड़ता था। समय बीतता गया और समय के साथ-साथ आपकी अनेक रचनाए हो गयी। एक न एक ग्रथ के प्रकाशन का कार्य लगा ही रहता था। काशी मे बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर के विश्वेश्वर प्रेस मे नीचे पुस्तके छपती थी और ऊपरी तल्ल पर दो-तीन साधको को साथ लेकर आप पुस्तक छपाने का काम करते थे। अनेक बार आपको वहा दो-दो, चार-चार और छह-छह महीने तक रहकर प्रकाशन का कार्य करवाना पड़ता था। इस प्रकार सन् 1971 से 1975 तक सघनरूप से आप काशीवास करते रहे।

प्रकाशन कार्य तब तक काफी बढ़ चुका था। काशी मे गुरुदेव पुस्तके छपाते जरूर थे लेकिन प्रकाशन कार्य उस समय इलाहाबाद मे जितना सुविधाजनक था उतना काशी मे नही था। काफी दिनो से सतो-भक्तो की आवाज उठ रही थी कि स्वय का एक स्थायी आश्रम होना चाहिए, जिससे साहित्य का प्रकाशन हो सके और ब्रह्मचारी-साधको की पढ़ाई-लिखाई भी व्यवस्थित रूप से हो सके।

गुरुदेव आश्रम बनाने के पक्ष मे नही थे। आप समय-समय से कहा करते थे "मैं स्वय साधनापूर्वक भ्रमण करते हुए सतो-भक्तो मे अपना जीवन बिता लेता, साधको की पढ़ाई-लिखाई आदि की व्यवस्था भी इसी बीच होती रहती। V~|| के पूर्व अनेक प्रदेशो मे नदी के तट, वनो-बागो, खेत-खलिहानो, पर्वतो, जगलो, तालाबो के किनारे, झरनो के पास तथा घरो मे अध्ययन, मनन-चितन, ध्यान और सतो-साधको मे मैं बीजक, पचग्रथी, वैराग्य शतक, विशाल वचनामृत आदि पढ़ता-पढ़ाता रहा। इसी प्रकार आगे भी बीत जाता। लेकिन साहित्य प्रकाशन स्थायी रूप से हो, इस उद्देश्य को लेकर इलाहाबाद मे यह सस्थान स्थापित किया गया।" सन् 1975 मे बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर के सुपुत्र श्री गोपालदास जी का शरीर अचानक छूट जाने के कारण धीरे-धीरे प्रेस की व्यवस्था चरमरा गयी। इसके बाद निर्णय लिया गया कि अब अपना स्वय का प्रेस होना ही चाहिए जिससे प्रकाशन कार्य आगे चलता रहे।

वैसे तो यह आश्रम छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान या उत्तर प्रदेश के गोडा-बस्ती आदि क्षेत्र मे भक्तो के बीच होता तो इससे आपको अधिक सुविधा हुई होती लेकिन इन जगहो मे साहित्य प्रकाशन का कार्य सम्भव नही हो पाता। आपका खास मुद्दा साहित्य ही था और वह कार्य इलाहाबद मे जितना सुलभ था उतना अन्य जगह नही था। दूसरी बात, आश्रम होने का मतलब है सतो-भक्तो का आवागमन, तो इलाहाबाद गुजरात, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, दिल्ली तथा उत्तरप्रदेश आदि के विभिन्न जगहो से यह मध्य मे पड़ता है। यातायात की सुविधा भी यहा अच्छी है। इन सब बातो को ध्यान मे रखते हुए इलाहाबाद मे ही आश्रम बनाने का निर्णय लिया गया।

सन् 1975 मे गुरुदेव जी सत श्री अटल साहेब और सत श्री निहोरे साहेब जी को साथ लेकर इलाहाबाद निहालपुर के कबीर आश्रम मे आये। उस समय आपके पास मात्र एक हजार रुपये थे। उसी के आधार पर निहालपुर कबीर आश्रम मे रहकर इलाहाबाद की विभिन्न जगहो मे जमीन खोजते रहे। कुछ दिनो के बाद आप 1975 के दिसम्बर मे ब्रह्मचारी श्री तुलसीराम को साथ लेकर बनारस से आये। अबकी बार भी निहालपुर मे गुरुदेव जी रुके। ब्रह्मचारी तुलसीराम जी सुबह सब्जी-रोटी बना देते, कुल तीन लोग थे ही—गुरुदेव जी, ब्रह्मचारी तुलसीराम जी और आश्रम निवासी एक सत रामदास साहेब। गुरुदेव सुबह रोटी-सब्जी खाकर हाथ मे छड़ी लेकर और पैर मे खड़ाऊ पहनकर चल देते। आप ब्रह्मचारी तुलसीराम को कहते कि तुम यही रहो, पढ़ो-लिखो। आप स्वय अकेले चल देते।

तब तक गुरुदव जी का परिचय गुरुप्रसाद मदन जी से हो गया था। मदन जी अझुवा फतेहपुर के रहनेवाले थे। ये इलाहाबाद कचहरी के एक नवयुवक वकील थे। गुरुदेव पहले गुरुप्रसाद मदन जी के पास कचहरी जाते। जैसे ही आप उनके पास पहुचते, नमस्कार करते हुए वे कुर्सी आग बढ़ाते और कहते—बैठिये साहेब। गुरुदेव वही बैठ जाते। वे कहते बस दो मिनट मे आता हू। उनका दो मिनट कभी-कभी दो घटा भी हो जाता। गुरुदेव चुपचाप शात बैठे रहते। जब मदन जी आ जाते तब दोनो जमीन खोजने के लिए चल देते। अल्लापुर, अरैल आदि इलाहाबाद के पूर्वी-दक्षिणी क्षेत्रो मे घूमते रहते लेकिन उधर कही भी आपको जमीन पसन्द नही आयी। एक बार जब गुरुदेव इलाहाबाद से पश्चिम कानपुर रोड की तरफ आये तो इधर की भौगोलिक स्थिति और वातावरण का खुलापन देखकर आपको अच्छा लगा। आपने मन मे सोच लिया कि जमीन लेना है तो इसी तरफ लेना है। इसके बाद गुरुदेव बनारस वापस चले गये। कलकत्ता

से श्री प्रेमप्रकाश जी का पत्र आया कि दो दिन के लिए आप यहा आ जाये। गुरुदेव बनारस से अकेले ही कलकत्ता चले गये। प्रेम प्रकाश जी ने गुरुदेव जी को पाच हजार रुपये का ड्राफ्ट दिया। उसे लेकर आप वापस बनारस आये। कुछ दिनो के बाद आप तीसरी बार इलाहाबाद जमीन देखने आये। सुलेमसराय के बैंक मे खाता खोलाना था। गुरुदेव ने एक सज्जन से पूछा—भैया, यहा सुलेमसराय बैंक मे खाता खोलना ठीक रहेगा कि नही? उन सज्जन ने कहा—कितने रुपये का खाता खोलना है, महाराज?

गुरुदेव ने कहा—पाच हजार रुपये का। उस व्यक्ति ने कहा—खाता तो एक हजार रुपये मे भी खुल जायेगा। एक हजार मे खाता खुलवाकर बाकी चार हजार रुपये हमे दे दीजिये। हमारे पास सुरक्षित रहेगा, जब आपको जरूरत हो हमसे लेते रहिये। वह गुरुदेव को धोखा देना चाहता था। लेकिन गुरुदेव सावधान रहे। उन्होने उसको पैसे नही दिये।

चौथी बार गुरुदेव ब्रह्मचारी तुलसीराम तथा कुछ अन्य साधको को साथ लेकर सन् 1976 मे इलाहाबाद आये। अबकी बार आप धूमनगज थाना से पश्चिम स्थित हनुमान मदिर आये और इसी मदिर मे एक कमरा लेकर गुरुदेव सतो सहित रहने लगे। इस मदिर मे चार-पाच वैष्णव सत रहते थे। वे सब लोग नीचे रहते थे और ऊपर के कमरे मे गुरुदेव जी अपने साथियो सहित रहत थे। यहा पर ज्यादा रहने का अवसर नही पड़ा। जितने भी दिन गुरुदेव वहा रहे उन सतो ने आपसे किराया नही लिया। यहा आप स्वय अपने खर्चे से निर्वाह करते थे।

यही रहकर कुछ दिन इस क्षेत्र मे जमीन की तलाश करते रहे। एक सज्जन थे जिनका नाम था 'लक्ष्मनदास सिधी' इनके पिता का नाम था प्रीतमदास। इन्ही प्रीतमदास जी के नाम से इस कालोनी का नाम प्रीतमनगर कालोनी रखा गया। लक्ष्मणदास के पास काफी जमीन थी। इनकी एक बड़ी जमीन वर्तमान प्रीतमनगर कबीर मदिर के पीछे थी। इस जमीन मे पहले ईंट भट्ठा चलता था। इसी जमीन के लिए गुरुदेव जी ने बात की तो बात पक्की हो गयी। गुरुदेव ने पाच हजार रुपये बयाना के रूप मे दे दिया। कुछ दिना के बाद लक्ष्मण दास जी ने कहा—महाराज, आप आधा पैसा दे दीजिए और इस जमीन को घेर कर बैठ जाइये। फिर आपको कौन हटा सकेगा? जब आपके नाम से जमीन की रजिस्ट्री हो जायेगी तो बाकी पैसे दे दीजियेगा। लेकिन गुरुदेव ऐसे उलझन वाले काम मे कभी भी अपना हाथ नही फसाये। आज तक आपने जो भी व्यावहारिक काम किया उसमे कोई भी विवाद या मुकदमा नही हुआ। सब समय आप थोड़े मे

निर्वाह करने और यहा तक कि अपना भी कुछ छोड़ देने मे निष्ठा रखते थे। जब लक्ष्मणदास जी की जमीन का कोई खास निर्णय नही हुआ तो छह महीने बाद उन्हाने आपका बयाना वापस कर दिया।

प्रीतमनगर कालोनी मे कुछ मकान बन गये थे। वे प्राय: खाली पड़े थे। उनमे से एक जैन सज्जन का मकान था। श्री प्रेमप्रकाश जी के सहयोग से दो हजार रुपये पगड़ी जमाकर पौने चार सौ रुपये माह के भाव से किराये पर ले लिया गया। उसमे 1 जनवरी, 1977 से सत रहने लगे।

इस नयी कालोनी मे श्री आत्माप्रसाद आस्थाना जी, जो ए0 जी0 आफिस मे सेवारत थे, परिवार सहित अपने भवन मे रहने लगे थे। श्री अस्थाना जी विद्वान तथा सुलझे हुए विचारक थे। उन्हाने सतो को देखा तो वे उनसे जुड़ गये। जब कलकत्ता से गुरुदेव जी जनवरी 1977 मे इस निवास मे आये तो श्री आत्मा प्रसाद अस्थाना जी आपका सत्सग पाकर आपसे समर्पित भाव से जुड़ गये। कुछ दिनो मे अस्थाना जी ने ही बताया कि एक सज्जन इस कालोनी का अपना प्लाट बेचना चाहते हैं।

प्रीतमनगर कालोनी मे जिस जमीन मे आश्रम बना हुआ है इस जमीन के मालिक थे गुलाब चन्द्र खत्री। खत्री जी इलाहाबाद मे ए0 जी0 आफिस मे कार्यरत थे। उनसे उनकी इस जमीन के लिए आत्माप्रसाद अस्थाना जी के सहयोग से बात हुई। यह जमीन कुल 411.75 वर्ग गज है। पैंतालीस रुपये प्रति वर्ग गज के हिसाब से बात पक्को हो गयी। सता ने गुलाबचन्द्र जी को एक हजार रुपये बयाना देकर एक पत्थर गाड़ दिया।

1977 ईस्वी के जनवरी-फरवरी मे प्रयाग का कुम्भ मेला आ गया। इसमे श्रद्धेय सत श्री निष्पक्ष साहेब जी (गुरुदेव जी के बड़े गुरुभाई) अपनी छावनी लगाये थे। उन्होने गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी को भी आमत्रित किया। गुरुदेव इसमे आये और कुछ दिनो तक छावनी मे अपने प्रवचन देते रहे। कुम्भ मेला के बाद आप छत्तीसगढ़ के कार्यक्रमो मे सत समाज सहित चले गये। लगभग ढाई महीने बाद आप वहा से वापस आये।

गुरुदेव इसके बाद 'पारख प्रकाश' छपाने के सबध मे श्री प्रेमप्रकाश जी के घर कलकत्ता गये। वहा पर रहते हुए सस्था के गठन का विचार हुआ। गुरुदेव अध्यक्ष आदि का कोई पद नही लेना चाहते थे कितु श्री प्रेमप्रकाश जी के बहुत आग्रह से आपने अध्यक्ष पद स्वीकारा। जब आप कलकत्ता से चलने लगे तब श्री प्रेमप्रकाश जी ने कहा कि भक्तो मे इस सस्था का परिचय देने के लिए पर्चा छापना है और 'पारख प्रकाश' मे भी छापना है। गुरुदेव जी ने कहा—यह सब कुछ न करे। सब सहज हो जायेगा।

श्री प्रेमप्रकाश जी ने जोर देकर कहा—बिना बताये लोग जानेंगे कैसे? आप न कीजिए, कितु मुझे रोकिये नही।

इसके बाद गुरुदेव जी इलाहाबाद आ गये और श्री प्रेमप्रकाश जी सस्था के बाय-लॉज का मैटर बोल-बोलकर अपनी धर्मपत्नी चन्द्रकाता देवी से लिखवाये और उसे पूरा टाइप करवाकर तथा भक्तो मे सदेश देने के लिए पर्चा छपवाकर इलाहाबाद भेजे।

इस पकार सस्था का गठन हुआ जिसके अध्यक्ष गुरुदेव जी स्वय थे। सस्थान के उपाध्यक्ष सत श्री अटल साहेब, मत्री श्री जितेन्द्र साहेब, उपमत्री श्री गुरुबोध साहेब और कोषाध्यक्ष श्री परीक्षा साहेब को बनाया गया। तीन लोगा को इस सस्था की कार्यकारिणी का स्थापना सदस्य बनाया गया। वे थे—सत श्री निहोरे साहेब, सत श्री अमृत साहेब और भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी।

27 मई, 1977 ईस्वी को इस सस्था का 'पारख प्रकाशक कबीर सस्थान' नाम से ही रजिस्ट्रेशन कराया गया। इसके बाद 2 जुलाई 1977 को उस जमीन की भी रजिस्ट्री करायी गयी।

कलकत्ता के भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी ने पत्र दिया कि कोई सत यहा आ जाये। मैं कुछ रुपये की व्यवस्था कर देता हू। आश्रम निर्माण का कार्य जल्दी से शुरू किया जाये। इलाहाबाद से गुरुदेव ने ब्रह्मचारी तुलसीराम और सत श्री विचार साहेब को भजा। वहा श्री प्रेमप्रकाश जी ने 40,000/- रुपये नकद दिये। उसी रुपये से जनवरी, 1978 मे आश्रम निर्माण का कार्य शुरू किया गया और बीस अप्रैल के पूर्व ही चार कमरे, जीना सहित बरामदा रहने लायक तैयार हो गया। कितु अभी दरवाजा-खिड़की आदि मे फाटक नही लगे थे। इस कारण से जैन भवन से सत सारे सामान सहित नही आ सके। आश्रम के ये चार कमरे तैयार हो जाने से 28 अप्रैल को इसका उद्घाटन कर दिया गया। इस कार्यक्रम मे श्री प्रेमप्रकाश जी तथा श्री नाथाभाई आये थे। धीरे-धीरे जब कमरो म फाटक आदि लग गये तो 1978 के 30 जून तक जैन भवन से सारा सामान लेकर गुरुदेव जी सतो के साथ नवनिर्मित आश्रम आ गये।

V~|} ई० के विजयदशमी के दिन 'पारख प्रकाशक कबीर सस्थान' का प्रथम वार्षिक अधिवेशन मनाया गया। यह अधिवेशन एक कमरे मे किया गया। इसमे काशी से भक्त काशीनाथ आये थे तथा छह-सात और अन्य लोग आये थे। सबके बीच मे गुरुदेव जी आश्रम के कुछ नियमो की रूपरेखा बताये और अपने विचार दिये। यह प्रथम वार्षिक अधिवेशन कुल 10-12 सतो-भक्तो के बीच हुआ। उन दिनो आश्रम की स्थिति बहुत साधारण थी। सब कुछ बहुत थोड़े मे

निर्वाह किया जाता था। बिछाने के लिए एक भी गद्दा नही था। मुहम्मदनगर-बस्ती के शकर भक्त जी ने एक खाट और एक गद्दा भेज दिया था उसी पर गुरुदेव जी रहते थे। अन्य सत जमीन पर पैरा बिछाकर सोते थे। जमीन पर बिछाने हेतु पैरा लेने के लिए एक बार ब्रह्मचारी तुलसीराम जी इलाहाबाद से 70 कि0मी0 दूर अझुवा गये थे। वहा से एक गट्ठर पैरा किसी तरह बड़ी मुश्किल से ट्रक पर लादकर लाये। ओढ़ने के लिए श्री रामेश्वर दयाल तिवारी जी ने कुछ कम्बल और चादर भेज दी थी। उनसे ठण्ड के दिन आराम से बीत जाते थे।

आश्रम मे 1982 तक दोपहर मे एक बार भोजन बनता था। उसी मे से कुछ भोजन बचा कर रख लिया जाता था। शाम को जिन्हे भूख लगती वे उसी मे से कुछ खा लेते थे। गुरुदेव जी भी वही भोजन आवश्यकतानुसार ले लेते थे। उस समय भडार मे प्रयोग करने के लिए एल्यूमीनियम की एक छोटी परात, दो बटलोई, पारस करने के लिए दो चम्मच और खाने के लिए एल्यूमीनियम की ही तीन थालिया थी। बस इतने ही बरतन थे। दो-तीन टीनो मे थोड़ा-थोड़ा चावल-दाल, और आटा रहता था।

1979 की बात है। वर्षा के दिन थे। वर्षा खूब हो रही थी। एक दिन आटा खत्म हो गया, चावल भी थोड़ा ही था। यदि चावल खाया जाये तो वह दो ही दिनो मे खत्म हो जाता और अगर इस बीच मे कोई मेहमान आ जाये तो उसे क्या खिलाया जायेगा, ऐसा सोचकर ग़ुरुदेव जी ने कहा—गेहू उबालो, उसी को खाया जायेगा। चूल्हे पर गेहू उबालने के लिए रख दिया गया। काफी ईधन जल जाने के बाद भी वह गेहू ज्यो-का-त्यो दिख रहा था। उसी को अतत: खाया गया। दूसरे दिन मौसम साफ होने पर गेहू पिसाया गया। तब सब लोग रोटी खाये।

सन् 1979 से 80 तक गुरुदेव दो-दो महीने की तीन बैठक मे 'कबीर दर्शन' गथ लिखे। इस ग्रथ को लगातार इसलिए नही लिखा जा सका कि इसके दार्शनिक विषय होने के कारण प्रमाण के लिए अन्य बहुत-से ग्रथो की जरूरत पड़ती थी। वे सभी ग्रथ भ्रमण मे उपलब्ध नही हो सकते थे। गुरुदेव आश्रम मे इसलिए ज्यादा दिन नही रुक सकते थे क्योकि आश्रम मे आपके रहने से सतो की सख्या बढ़ जाना स्वाभाविक था। जिसका भार वहन करना आश्रम को सम्भव नही था।

मई, 1980 मे गुरुदेव लखनऊ के उत्तर अकड़रिया नाम के गाव मे श्री महावीर यादव के यहा सत समाज सहित विराजमान थे। वहा से ब्रह्मचारी ठाकुरराम (सत श्री महेन्द्र साहेब) इलाहाबाद आश्रम चलने लगे तो उन्होने

गुरुदेव से पूछा कि आप इलाहाबाद कब आयेगे? गुरुदेव ने कहा—भक्त लोग अपने यहा खीचते हैं। ब्रह्मचारी जी ने कहा—तब आप कबीर दर्शन का शेष अश कब लिखेगे? गुरुदेव ने कहा—मैं इलाहाबाद सत समाज सहित आऊ तो क्या तुम वर्षा चौमासा का खर्चा निभा पाओगे?

ब्रह्मचारी जी ने कहा—बैंक खाते मे कुल एक हजार रुपये हैं। गुरुदेव ने कहा—इतने मे तुम कैसे निभाओगे? ब्रह्मचारी जी ने कहा—तब कबीर दर्शन कब पूरा करेगे? गुरुदेव ने कहा—जब समय आयेगा तब होगा।

गुरुदेव अकड़रिया से जरवल बाजार आये। वहा गगाराम भक्त का बुलावा था। उन्होन एक हजार रुपये पूजास्वरूप दिया। उसके बाद सालपुर आश्रम (गोडा) आये। वहा से एक ब्रह्मचारी दस बोरी गेहू इलाहाबाद ले गये। वहा से गुरुदेव जी श्री रामलाल गुप्त के यहा बभनान गये और वही से शकर भक्त के घर मुहम्मदनगर (बस्ती) गये।

शकर भक्त 1977 ई0 की जनवरी मे सस्था स्थापित होने पर कई बोरी चावल, दाल, गेहू आदि इलाहाबाद आश्रम ले गये थे। वे वृद्ध थे। अतएव गुरुदेव ने उनको रोक दिया था कि आप इस बुढ़ापा मे बोझा लाने के चक्कर मे न पड़े।

जब गुरुदेव जून 1980 ई0 मे शकर भक्त के यहा पहुचे तो उन्होने तुरन्त कहा कि साहेब, आपने मुझे इलाहाबाद अन्न भेजने से रोक दिया है तो वहा सत क्या खायेगे? गुरुदेव ने कहा—अच्छा भाई, जो देना हो दो। इसके बाद शकर भक्त जी ने करीब पैंतीस बोरी गेहू, चावल, दाल और गुड़ तैयार कर गुरुदेव जी को अर्पित किया। गुरुदेव यह सब लेकर सतो के साथ जब इलाहाबाद आश्रम पर पहचे तो ब्रह्मचारी ठाकुरराम जी हसे। गुरुदेव ने कहा—अब चौमासा का प्रबन्ध हो गया है, इसलिए आया हू। इसी चौमासा मे 'कबीर दर्शन' लिखकर पूरा हुआ। लिखने के बाद कार्बन लगाकर दो कापी मे उसकी प्रतिलिपि करना था। आपने प्रतिलिपि करनेवाले सत से पूछा कि पूरी पुस्तक की दो कापी मे प्रतिलिपि करने मे कुल कितने रुपये का कागज लग जायेगा? सत ने बताया—सत्तर रुपये का।

गुरुदेव ने कहा—सत्तर रुपये की व्यवस्था कर पाना तो बड़ा मुश्किल है, इसलिए एक ही कापी करो।

पारख प्रकाशक कबीर सस्थान का दूसरा वार्षिक अधिवेशन सन् 1979 ई0 मे आश्रम की छत पर किया गया। आश्रम मे साल भर के आय-व्यय का हिसाब इसी वर्ष से सभा मे बताया जाना शुरू हुआ। जिसमे कलकत्ता से श्री प्रेमप्रकाश

जी और बभनान से श्री रामलाल जी आये हुए थे। यह अधिवेशन क्वार मास के शुक्ल पक्ष के दशहरा को एक दिन का कर दिया गया। सन् 1980 ई0 मे गुरुदेव गुजरात पधारे हुए थे। वहा श्री प्रेमप्रकाश जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकान्ता देवी दोनो गुरुदेव जी के पास गये हुए थे। श्री प्रेमप्रकाश जी ने गुरुदेव जी को सुझाव दिया कि साहेब, आश्रम के वार्षिक कार्यक्रम को एक दिन से बढ़ाकर तीन दिनो का कर दिया जाये जिससे खूब सत्सग हो और लोगो को सतो के विचार श्रवण करने को मिले। गुरुदेव को यह सुझाव अच्छा लगा और कबीर जयन्ती के दिन उसकी घोषणा कर दी गयी।

तीसरा वार्षिक अधिवेशन 1980 ई0 मे आश्रम के बाहर दक्षिण तरफ पडाल लगाकर किया गया। यह कार्यक्रम तीन दिनो तक चला। इसमे कबीर विचार गोष्ठी भी हुई। इस कबीर विचार गोष्ठी मे प्रवक्ता के रूप मे डा० रामकुमार वर्मा, डॉ० माताबदल जायसवाल तथा एक विद्वान और आये हुए थे। गुरुदेव जी के विचार सुनकर विद्वानो को अत्यन्त प्रसन्नता और सुखद आश्चर्य हुआ।

चौथा वार्षिक अधिवेशन 1981 मे हुआ। तबतक कार्यक्रम का रूप बृहत हो गया था। सतो-भक्तो की काफी भीड़ इकट्ठी होने लगी थी। इसके बाद दिनोदिन इस कार्यक्रम मे सतो-भक्तो की सख्या बढ़ती ही गयी। यह अधिवेशन बगल की जमीन से हटकर सामने मुख्य सड़क पर पडाल लगाकर होने लगा। तीन-चार बार पार्क मे भी होता रहा। V~~~ ई० के 22वे वार्षिक अधिवेशन से कबीर नगर आश्रम मे यह कार्यक्रम होने लगा। इन दिनो अधिवेशन मे भक्तो की सख्या सात से आठ हजार तक हो जाती है।

आश्रम के दो खास साधक ब्रह्मचारी ठाकुरराम और ब्रह्मचारी तुलसीराम ये दोनो सहोदर भाई थे। ये दोनो सन् 1974 मे गृहत्याग कर गुरुदेव की शरण मे आ गये थे। 1981 मे दोनो भाइया का एक साथ ही साधुवेष हुआ। दोनो का नाम ठाकुरराम और तुलसीराम से बदलकर गुरुदेव ने 'महेन्द्र दास' और 'धर्मेन्द्र दास' रखा। जिन्हे सत श्री महेन्द्र साहेब और सत श्री धर्मेन्द्र साहेब के नाम से जाना जाता है। 22 मार्च, 1982 को सत श्री महेन्द्र साहेब का देहान्त हो गया। इसके बाद सत श्री धर्मेन्द्र साहेब पर उत्तरोत्तर आश्रम की जिम्मेदारिया बढ़ती गयी।

सस्थान मे साहित्य की सख्या काफी हो जाने के कारण सतो-भक्तो का जोर हुआ कि आश्रम मे स्वय का प्रेस होना चाहिए जिससे पुस्तके छपाने के लिए बाहर न जाना पड़े। 9 अक्टूबर, 1981 ई0 मे बीजक प्रेस की स्थापना हुई। इस प्रेस के लिए अधिकतम सहयोग राशि मुहम्मदनगर के शकर भक्त ने दिया।

बीजक प्रेस मे सर्वप्रथम विशाल वचनामृत, भवयान, मुक्तिद्वार आदि अनेक ग्रथ छपे। इसके बाद सन् 1982 मे कबीर दर्शन का पहला सस्करण बीजक प्रेस मे छपा। प्रेस चलाने का मुख्य काम सस्थान के ही सत श्री सतेन्द्र साहेब जी बड़ी निपुणता से करते थे। अक्षर कम्पोज के लिए दो व्यक्ति वेतन पर काम करते थे। धीरे-धीरे कुछ दिनो मे कम्प्यूटर कम्पोज की व्यवस्था हो गयी और छापने की अनेक नयी-नयी सुविधाजनक मशीने बाजार मे आ गयी तो सन् 1989 मे आश्रम की छपाई मशीन बेच दी गयी। फिर इलाहाबाद शहर मे जे0के0 आर्ट प्रेस, इण्डियन प्रेस आदि मे सस्थान के ग्रथ छपने लगे। बाहर से छपाई होती थी और आश्रम मे लाकर उसकी जिल्दसाजी होती थी। जिल्दसाजी के लिए आश्रम के शुरुआत से ही दो-तीन दफ्तरी (Book binder) वेतन पर काम करते थे।

पारख प्रकाश पत्रिका जुलाई 1971 से कलकत्ता के प्रभात प्रेस से निकलती रही, लेकिन वहा के प्रेस मालिक के लड़के की मृत्यु हो जाने के कारण प्रेस बन्द हो गया। उसके बाद सन् 1986 से बीजक प्रेस, कबीर आश्रम इलाहाबाद मे छपने लगी।

प्रीतमनगर मे आश्रम तो बन गया, उसकी सारी गतिविधि भी सुचारु रूप से चलने लगी। लेकिन गुरुदेव जी के सत समाज और भक्त समाज को देखते हुए यह आश्रम की जमीन पर्याप्त नही थी। इसको और बृहत् करने के उद्देश्य से 14 नवम्बर सन् 1984 ई0 को प्रीतमनगर से एक किलोमीटर उत्तर दिशा मे गगा के तट पर एक जमीन खरीदी गयी। इसके बाद धीरे-धीरे जमीन बढ़ती गयी। गुरुदेव ने सोचा था कि आधा एकड़ जमीन यदि कही मिल जायेगी तो हमारा काम चल जायेगा लेकिन यदि एक एकड़ हो जायेगी तो प्रशस्त हो जायेगा। इतने मे सतो-साधको को रहने के लिए काफी खुलासा हो जायेगा।

गुरुदेव की सतोष वृत्ति ने आधा एकड़ जमीन की कल्पना किया था कितु आज (2011) उन्ही के कृपा-प्रताप से सात एकड़ से भी अधिक जमीन मे कबीर नगर का विशाल आश्रम फैला हुआ है जिसमे साठ-सत्तर सत-साधक सब समय रहते हैं।

कबीर नगर आज रमणीय पर्यटन स्थल के समान है। सारी रमणीयता, आनन्द और सौन्दर्य के केन्द्रबिन्दु गुरुदेव जी स्वय हैं। आपके बोध-विचार और रहनी की सुगन्धी आज चारो दिशाओ मे उन्मुक्त होकर फैलती जा रही है। आज से साढ़े पाच सौ वर्ष पूर्व सद्गुरु कबीर ने जिस निर्भीकता और निष्पक्षता से सत्य का उद्घाटन किया था उसी निर्भीकता और निष्पक्षता से गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी ने उनकी वाणियो और अनेक शास्त्रो को व्याख्यायित किया है।

वस्तुतः गुरुदेव के आश्रम निर्माण का उद्देश्य ही यह है कि यहा के सत-साधक अपना कल्याण करे और दूसरो मे सत्यज्ञान, विचार और रहनी का आदर्श फैलाये। सच तो यह है कि एक सूर्य उगता है तो सारे ससार को प्रकाश मिलता है, एक नदी की धारा बहती है तो अगणित प्राणियो की प्यास बुझती है। जगत मे वे महापुरुष धन्य हैं जिन्होने अपनी साधना-तपस्या से अपना हृदय तो शीतल किया ही, साथ ही साथ दुखाग्नि मे जलते हुए अगणित प्राणियो को भी शीतल कर दिया।

गुरुदेव इस आश्रम मे सब कुछ होते हुए भी सबसे निष्काम हैं। प्रबन्धकारिणी के किसी भी पद पर आप नही हैं। आप चाहे आश्रम मे रहे या बाहर, सब समय आश्रम की जिम्मेदारियो से मुक्त रहते हैं। आप सतो-भक्तो के धर्म के अनुशास्ता हैं।

सितम्बर 1999 के पूर्व गुरुदेव जी प्रीतमनगर के कबीर मदिर मे रहते थे। आपके साथ-साथ समाज के अधिकतम सत भी वही रहते थे। सितम्बर 1999 ई0 से गुरुदेव जी पूरा समाज सहित कबीर नगर आ गये। इस कबीरनगर आश्रम मे एक निःशुल्क होम्योपैथ हास्पिटल भी चलता है। जिसकी स्थापना 25 जून, 1989 मे हुई। इस हास्पिटल मे एक डॉक्टर और एक कम्पाउण्डर प्रतिदिन आते हैं जिनको एक निश्चित वेतन दिया जाता है।

सस्थान मे प्रतिवर्ष वार्षिक अधिवेशन मे हजारो की सख्या मे लोग आते हैं। इसकी व्यवस्था के लिए कभी चन्दा नही लिया जाता है।

गुरुदेव जी के सरक्षण मे कबीर सस्थान की ओर से कुम्भ मेला मे कुल पाच शिविर लगाये गये। तीन हरिद्वार मे और दो प्रयाग मे। हरिद्वार कुम्भ का पहला शिविर मार्च 1986 ई0, दूसरा मार्च 1998 ई0 मे और तीसरा मार्च 2010 ई0 मे हुआ। प्रयाग कुम्भ का पहला शिविर जनवरी, 1989 मे और दूसरा जनवरी सन् 20•V मे हुआ। 1989 ई0 के प्रयाग कुम्भ मेला मे गुरुदेव जी के शिविर मे एक कबीर धर्मसभा हुई थी जिसमे कबीरपथ के सभी गणमान्य सत, महत एव विद्वान उपस्थित हुए।

गुरुदेव जी इस आश्रम को केवल एक सस्था के रूप मे ही नही बनाये बल्कि सस्था के साथ-साथ यह साधको का आश्रम भी है। साधको का जीवन कैसा होना चाहिए, इस बात को सुदृढ़ करना ही आपका मुख्य उद्देश्य है। इसी उद्देश्य को लेकर आपने 1993 मे छह से बारह सितम्बर तक एक विशेष ध्यान शिविर लगाया। यह सात दिनो का ध्यान शिविर 1993 से 2012 अब तक प्रतिवर्ष अगस्त या सितम्बर के महीने मे बराबर लगता चला आ रहा है। इसमे

आश्रम के साधको के अलावा बाहर से सैकड़ो साधक और साधिकाए गृहस्थ-विरक्त आते हैं।

विशेष ध्यान शिविर और वार्षिक अधिवेशन के अलावा भी अन्य अवसरो पर भी सत्सग कार्यक्रम होते रहते हैं जैसे 'कबीर जयन्ती' और 'गुरु पूर्णिमा।' इन दोनो कार्यक्रमा मे भी काफी सख्या मे लोग आते हैं। आश्रम मे रहनेवाले सतो-भक्तो के लिए प्रतिदिन सुबह-शाम दो-दो घटे पाठ, भजन, प्रवचन और ध्यान आदि तो होते ही हैं, प्रत्येक शनिवार और रविवार को क्रमश: कबीरनगर और प्रीतमनगर के आश्रम मे साय छह बजे से आठ बजे तक विशेष रूप से सत्सग होता है। प्रतिदिन सुबह पाच बजे से साढ़े पाच बजे तक आधा घटा सद्‌गुरु कबीर के तथा अन्य सतो के भजनो का प्रसारण होता है। आश्रम मे सब समय चालीस से पचास सतो-साधको का निवास रहता है। गुरुदेव जी के कार्यक्रम तो बराबर आठ महीने तक विभिन्न प्रदेशो मे चलते रहते हैं। आपके साथ बाहर कार्यक्रमो मे दस-बीस-पचीस की सख्या मे सत साधक रहते हैं। कार्यक्रमो के बाद चार महीने वर्षावास गुरुदेव इलाहाबाद के आश्रम मे करते हैं। इन चार महीनो मे गुरुदेव की अनवरत ज्ञान की गगा बहती रहती है। इसलिए इन दिनो आश्रम मे सतो-भक्तो की सख्या साठ से सत्तर या अस्सी तक भी हो जाती है।

7 मई, 1977 को इस सस्था का 'पारख प्रकाशक कबीर सस्थान' के नाम से रजिस्ट्रेशन हुआ था, लेकिन इस नाम से कई बार अनेक अड़चने आती रही। लोगो को भ्रम हो जाता था कि यह कोई सत आश्रम नही है बल्कि पुस्तक प्रकाशन की सस्था है। इसलिए दिसम्बर, 1997 मे उक्त नाम बदलकर 'कबीर पारख सस्थान' नाम रख दिया गया।

गुरुदेव यदि आश्रम स्वीकारे होते तो 'कबीर पारख सस्थान' की अब तक दो दर्जन शाखाए हो गयी होती लेकिन आप सब समय सिमिटकर रहना पसन्द करते रहे। अधिक बाहरी पसारा, मठ-आश्रम, जमीन, गद्दी-महन्ती और प्रचार-प्रसार आदि के प्रलोभन मे आप कभी नही पड़े क्योकि इन सबमे उलझन के अलावा कुछ मिलता नही है। शाति इच्छुक को जितना हो सके कम से कम प्रवृत्ति अपनाना चाहिए। यद्यपि गुरुदेव के सरक्षण मे इलाहाबाद सस्थान के अलावा सात आश्रम और हैं जिन्हे हम शाखा भी नही कह सकते क्योकि वे स्वतत्र सस्था हैं। उनको केवल गुरुदेव की आशीर्वादरूप छाया चाहिए। इन आश्रमो के अपने नियम हैं, पुरुष आश्रम मे स्त्री नही रह सकती और साधिकाओ के आश्रम मे पुरुषो का निवास वर्जित है। सत्सग के लिए कोई भी किसी आश्रम मे जा सकता है। वे सातो आश्रम इस प्रकार हैं—

साधको के आश्रम—

1. कबीर आश्रम नवापारा (राजिम)—यह आश्रम छत्तीसगढ के रायपुर जिला मे पड़ता है। जो रायपुर से 45 कि0मी0 दूर नवापारा नगर से पहले स्थित है। इसकी स्थापना 20 फरवरी, 1990 मे गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी के करकमलो से हुई। इसमे गुरुदेव के सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी भी वहा विराजमान थे। इसके अध्यक्ष सत श्री शरणपाल साहेब जी हैं।

2. कबीर आश्रम सूरत—यह आश्रम गुजरात के सूरत शहर के पूर्वी छोर पर स्थित है। इसकी स्थापना 24 अगस्त, 1998 मे हुई। इसके मूलाधार पारखी श्री गुरुशरण साहेब हैं। इस आश्रम के अध्यक्ष सत श्री गुरुभूषण साहेब जी हैं।

साधिकाओ के आश्रम—

1. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम पोटियाडीह—यह आश्रम छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के पोटियाडीह नामक गाव मे है। जो धमतरी से छह कि0मी0 दूर पश्चिम मे स्थित है। इस आश्रम की अध्यक्षा साध्वी सुशीला साहेब हैं। इसकी स्थापना 11 मार्च, 1993 को गुरुदेव जो के कर-कमलो से हुई।

2. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम धर्मपुरी—यह आश्रम गुजरात के बड़ौदा जिला मे पड़ता है। जो बड़ौदा से 35 कि0मी0 दूर डभोई तालुका के पास धर्मपुरी गाव से पहले मुख्य रोड पर स्थित है। जिसकी अध्यक्षा साध्वी विजया साहेब हैं। इस आश्रम की स्थापना 1 मई, 2001 को गुरुदेव जो के कर-कमलो से हुई।

3. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम मूरा—यह आश्रम छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला मे रायपुर-धमतरी रोड पर पड़ता है। यहा की मुख्य व्यवस्थापिका साध्वी श्रद्धा और सुमन हैं। इस आश्रम की स्थापना फरवरी 2001 मे हुई है।

4. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम दर्रा—यह आश्रम बालोद जिला के गुरुर विकासखड के पास पड़ता है। यहा पर मुख्य रूप से शीलवती साहेब रहती हैं तथा इनके कुछ सहयोगी साधिका बहने भी रहती हैं।

5. कबोर ब्रह्मचारिणी आश्रम जोटवड—यह आश्रम बोड़ेली तालुका के पास जिला पचमहाल, गुजरात मे पड़ता है। यहा पर मुख्य रूप से साध्वी जया रहती हैं।

इन आश्रमो मे लगभग प्रतिवर्ष गुरुदेव जी का दो-तीन दिनो का कार्यक्रम होता है। इलाहाबाद 'कबीर पारख सस्थान' के साथ-साथ नवापारा कबीर आश्रम और सूरत कबीर आश्रम मे भो विशेष ध्यान शिविर का आयोजन होता है। इस विशेष ध्यान शिविर के अलावा भी प्रतिदिन सभी आश्रमो मे पाठ-प्रवचन, ध्यान आदि होते रहते हैं।

2.

गुरुदेव जी और उनका समाज

कोई भी महापुरुष हो, उनके ज्ञान, बोध और वैराग्य के प्रभाव से लोगो का इकट्ठा हो जाना स्वाभाविक है। गुरुदेव की साधना तपस्या के तेजोमय प्रकाश से लाखो लोग आपके विचारो का अनुगमन कर रहे हैं। गुरुदेव के ऐसे अनुगामियो को हम दो भागो मे बाट सकते हैं—1. भक्त समाज और 2. सत समाज।

1. भक्त समाज—भक्त और सत दोनो ही कल्याण-पथ के पथिक हैं। इन दोनो का आध्यात्मिक जन्म सत-सद्‌गुरु से ही होता है। सबके शारीरिक जीवन के जन्मदाता तो माता-पिता होते हैं किंतु शाति-भक्ति रूपी जीवन के जन्मदाता सत और सद्‌गुरु हैं।

अनादि काल से जन्म-मृत्यु के ससृत-चक्र मे सभी जीव जगत-नगर मे तन-मन के दुखो मे गोते लगा रहे हैं। कुछ जीव इन दुखो से घबराकर इनसे छूटना चाहते हैं। सभी जीवो की माग है अनन्त सुख की प्राप्ति। अधिकतम लोग तो ससार के प्रत्यक्ष पच विषय-भोगो को ही समस्त सुखो का धाम मानते हैं तथा इन्ही को पाने मे लगे हैं। लेकिन इन्ही मे से कुछ लोगो को प्रत्यक्ष वैषयिक भोगो से घृणा हो जाती है। और ऐसे लोग शाति के लिए परोक्ष मे कुछ खोजना शुरू कर देते हैं। लेकिन परोक्ष मे भी जब साधक को स्थायी शाति नही मिलती है तो वह अपरोक्ष की ओर जाता है। अपरोक्ष-स्वय यह आत्मा है। चेतन की स्वसत्ता ही अपरोक्ष है। वही जीव, आत्मा, ब्रह्म, ईश्वर आदि है। वह कही अलग नही है बल्कि निज चेतन स्वरूप है। निज चेतन स्वरूप मे स्थित होना ही अनन्त सुख-शाति की प्राप्ति है। साधक को इस दुर्लभ ज्ञान का बोध करानेवाला सद्‌गुरु ही है।

भक्ति और शाति के अधिकतम पथिक घर-गृहस्थी मे रहते हुए इस पथ पर चलते हैं। वे किसी विवेकवान सद्‌गुरु के आदेश-निर्देश लेकर अपने जीवन को वैसा बनाने का प्रयास करते हैं। इसमे भी दो प्रकार के लोग होते हैं। एक तो वे होते हैं जो किसी विवेकवान सत को सद्‌गुरु मानकर उनसे विधिवत दीक्षा लेते हैं। दीक्षा के बाद भक्ति का अटूट सम्बन्ध हो जाता है। ऐसा शिष्य घर मे रहते हुए गुरु के दिये हुए ज्ञान-विचार का पालन करते हैं। समय-समय से वे गुरु के दर्शन-सत्सग का लाभ लेते रहते हैं और समय-समय से अपने घर भी बुलाकर गुरुदेव तथा सतो की सेवा-उपासना करते हैं। इस प्रकार वे स्वय का कल्याण करते हुए घर-परिवार के लोगो को भी सेवा-भक्ति का सौभाग्य प्राप्त कराते हैं। दूसरे वे लोग हैं जो किसी सत-गुरु से विधिवत दीक्षा तो नही लेते लेकिन

विवेकवान सत-गुरु से उनका गुरु-शिष्यवत ही सम्बन्ध होता है। ऐसे प्रेमी स्वभाववाले भक्त-साधक की जब प्रबल इच्छा जगती है तो वे विधिवत दीक्षा भी ले लेते हैं।

गुरुदेव के सान्निध्य मे ऐसे दोनो प्रकार के भक्त-प्रेमी लोग हैं। घर मे रहनेवाले ऐसे गृहस्थ प्रेमी भक्त भारत और भारतेतर विभिन्न देशो मे फैले हुए हैं। भारत मे गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, बिहार, पजाब, बगाल, उड़ीसा, हरियाणा, असम आदि प्रदेशो मे आपके अगणित अनुगामी भक्त लोग हैं। गुरुदेव का वर्ष मे लगभग आठ महीने का समय विभिन्न प्रान्तो के इन भक्तो मे ही बीतता रहा।

'कबीर पारख सस्थान' के त्रिदिवसीय वार्षिक अधिवेशन मे विभिन्न जगहो के भक्त लोग इलाहाबाद आश्रम आते हैं। इसी अधिवेशन मे जिनको गुरुदेव का कार्यक्रम लेना होता था वे सभी अपने आवेदन पत्र देते थे। उसी के आधार पर अधिवेशन के अतिम दिन यह निर्णय हो जाता कि इस वर्ष कहा-कहा गुरुदेव के कार्यक्रम होने हैं। लगभग आठ महीने के लिए इसी एक दिन मे सार कार्यक्रमो की तिथि निश्चित हो जाती। उसी के आधार पर गुरुदेव सत समाज को साथ लेकर भ्रमण करते रहते।

गुरुदेव जिस भी प्रदेश मे रहते, भक्तो मे कुछ लोग होते, जो चाहते थे कि आप हमारे घर मे अपने चरण रखकर हमारे घर को पवित्र कर दे। शाम को प्रवचन कार्यक्रम के बाद गाव भर मे घर-घर दो-दो, तीन-तीन घटे घूमना पड़ता था। उसमे लोग फल-फूल, रुपये, कपड़े आदि समर्पित कर गुरुदेव की पूजा करते थे। यह सिलसिला 2002 ई0 तक बराबर चलता आ रहा था। इसमे दिनोदिन वृद्धि हो रहो थी कितु गुरुदेव जी इससे ऊबते जा रहे थे क्योकि इससे आपको थकान का अनुभव होने लगा था। लेकिन इससे बचे कैसे, क्योकि यह भक्तो की भावना का विषय रहा। गुरुदेव दूसरो की भावनाओ का आदर करते हुए भी विवेकवादी थे। आप किसी की भावना मे बहते नही थे। 2002 ई0 मे आप छत्तीसगढ़ के पोटियाडीह नामक गाव मे थे। आपने प्रवचन मे ही हजारो लोगो के बीच मे कह दिया कि आप लोग मुझसे विचार श्रवण का लाभ लेना चाहते हैं तो घर-घर मे मुझे घुमाना बन्द करे। यदि आप लोग नही मानते हैं तो मैं कार्यक्रम देना बन्द करता हू। भक्तो को कष्ट तो बहुत हुआ लेकिन सबको अपना मन मसोसकर रह जाना पड़ा। क्योकि सब लोग जानते थे कि गुरुदेव जो कहते हैं वही करते भी हैं। उनका निर्णय बच्चो के निर्णय के समान क्षणिक नही होता बल्कि दृढ़ होता है।

गुरुदेव जब यात्रा मे चलते थे तो गावो या शहरो मे जहा आपके भक्त होते, रास्ते के आस-पास यदि उनका घर पड़ता था तो वे आपको आग्रहपूर्वक रोककर सेवा, पूजा-बदगी एव सत्सग का लाभ लेना चाहते थे। कई बार तो आप ट्रेन मे चल रहे होते और किसी स्टेशन पर आपकी गाड़ी रुकते ही 'सद्गुरु देव की जय', 'कबीर साहेब की जय' के नारो की गूज सुनाई देने लगती थी। यह जयनाद की गूज आपके भक्तो की रहती थी। फिर भक्तो की एक बड़ी भीड़ गाड़ी मे भी प्रविष्ट हो जाती थी और सब लोग आपके चरणो मे फूल-फलादि यथाशक्ति समर्पित करने लगते थे। कभी-कभी एक ही यात्रा मे दो-चार जगहो पर लोग आ जाते थे। भक्त लोग फोन द्वारा पहले से ही पता लगाये रहते थे कि गुरुदेव इधर से यात्रा करेगे तो हम सब दर्शन-बन्दगी का लाभ प्राप्त करेगे।

बिहार मे गुरुदेव जी को ऐसे दिन भी समय-समय से देखने को मिलते कि लोगो की श्रद्धा-भक्ति आपकी परेशानी का कारण बन जाती थी। जब आप मच पर जाते और यदि गाड़ी से जाना हुआ तो गाड़ी को सीधे मच के पास ही खड़ी किया जाता था। गाड़ी से उतरते समय व्यवस्थापक लोग आपके चारो तरफ घेरा बनाकर खड़े हो जाते थे तभी आपको मच पर जाने के लिए रास्ता मिल पाता था, अन्यथा बहुत रोकन पर भी लोग आपके चरण छूने और निकट से दर्शन करने के लिए घेर लेते थे।

31 मई, 2007 की बात है। गुरुदेव कटिहार (बिहार) मे थे। सुबह के आठ-नौ बज रहे होगे। आपका निवास एक धर्मशाला की दूसरी मजिल पर था। भक्त लोग आपके दर्शन के लिए सुबह से ही बैठे थे। मैं बीच-बीच मे लोगो को गुरुदेव जी के दर्शन कराता रहता था। लेकिन वहा एक बार जो आता वह वही बैठा रह जाता और नवागतुको के आने का सिलसिला निरन्तर जारी था। अतत: स्थिति ऐसी आ गयी कि वहा खड़े होने की भी जगह नही रह गयी। गुरुदेव जैसे ही बाहर निकले लोग आपसे बदगी करने के लिए टूट पड़े। चारो तरफ से लोग आपको घेरकर खड़े हो गये। मैं बराबर लोगो से नीचे उतरने के लिए निवेदन करता रहा लेकिन मेरी बात कौन सुने!

कुछ अन्य सत आये वे भी सबको प्रसाद देकर कहते कि अब आप लोग नीचे चले, प्रवचन पडाल मे पुन: दर्शन-बदगी करने का अवसर मिलेगा। लेकिन वहा से कोई टस से मस नही हो रहा था। गुरुदेव स्वय भी लोगो को कहते रहे कि आप लोग नीचे चले लेकिन भीड़ ज्यो की त्यो बनी ही रही। फिर मैंने लोगो से कहा—भाइयो, आप लोग इस प्रकार अव्यवस्था करेगे तो यह किसी महापुरुष को कष्ट ही देना है। आप लोग नियत्रित होकर आये और अच्छा

होगा कि यहा अधिक भीड़ न लगाकर सब लोग पडाल मे ही चले। वहा प्रवचन और दर्शन-बन्दगी दोनो लाभ होगा। तब लोग माने और धीरे-धीरे वहा से पडाल की ओर आने लगे।

बिहार के लोगो मे बड़ी बिरह-भावना है। आपके विचारो को सुनने मे बिहार सबसे आगे है। वहा थोड़ा भी कोई गुरुदेव के नाम का प्रचार कर दे तो हजारो-हजारो की भीड़ सहज ही इकट्ठी हो जाती है। सत्सग के लिए लोग खुलकर आर्थिक सहयोग करते हैं। आपकी पुस्तके जितनी बिहार मे बिकती हैं उतनी भारत के किसी भी प्रदेश मे नही बिकती।

छत्तीसगढ़ तो गुरुदेव का मानो अपना घर-आगन ही रहा। यहा आप 1954 ई0 से आते रहे। यहा के रायपुर, दुर्ग, धमतरी, बिलासपुर आदि तो ऐसे क्षेत्र हैं जिनके अधिकतम गावा मे सैकड़ो-सैकड़ो भक्त हैं। क्योकि इसी क्षेत्र म आपने अगणित जगहो मे साधना, एकान्तवास और प्रचार-प्रसार का काम किया है। छत्तीसगढ़ के भक्त अत्यन्त सरल और सस्कारी हैं। यहा के लोगो मे आपसी सगठन है और किसी काम को करने के लिए पूरा परिवार और समाज एकजुट होकर पूरी निष्ठा से करते हैं। लगभग 1980 से ही छत्तीसगढ़ मे गुरुदेव के कार्यक्रम प्रतिवर्ष दो-तीन महीने तक चलते रहे। 1980 क पूर्व भी आप छत्तीसगढ़ जाते थे और चार-छह महीने तक वहा रहते थे किन्तु उन दिनो एक-दो वर्ष के बाद ही वहा जाते थे। यहा के भक्तो की भावना अत्यन्त प्रशसनीय है।

गुजरात मे गुरुदेव का व्यापक प्रभाव है। यहा तो आज से साढ़े पाच सौ वर्ष पूर्व हमारे परमाचार्य सद्गुरु कबीर साहेब चार बार गये हैं। गुरुदेव के लिए गुजरात वालो का विशेष आग्रह रहता रहा कि आप यहा अधिक से अधिक समय दे। गुजरात के सूरत नगर मे गुरुदेव का एक आश्रम है। वहा आप विगत दस वर्षों से वर्ष मे बराबर दो बार जाते रहे, एक बार वहा के सत्सग कार्यक्रम मे और दूसरी बार विशेष ध्यान शिविर मे।

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट के रसायन विभागाध्यक्ष डा0 अनामिक साह जैन एक बार लखनऊ आये हुए थे। उस समय अयोध्या मे बाबरी मस्जिद को लेकर दगा चल रहा था। डा0 अनामिक साह ने सोचा कि चले, जरा अयोध्या एक बार घूम आते हैं। अयोध्या आने पर उन्होने एक जगह देखा कि फुटपाथ पर एक व्यक्ति कुछ पुस्तके बेच रहा है। वे पुस्तको की उस दुकान पर खड़े हो गये। उनमे एक पुस्तक थी, 'कबीर की उलटवासिया' जिसके सम्पादक और टीकाकार गुरुदेव जी हैं। डा0 साह ने उस पुस्तक को खरीद लिया। उस छोटी-

सी पुस्तक को पढ़ने से तो उनकी दृष्टि ही बदल गयी। उन्होने कहा—इस पुस्तक का तो अयोध्या की घटना से कोई मतलब ही नही है।

डा0 अनामिक साह अब इस पुस्तक के लेखक का पता लगाने लगे। उन्हाने पुस्तक के पते से कबीर पारख सस्थान, इलाहाबाद को पत्र लिखकर पूछा कि अमुक पुस्तक के लेखक अभी जीवित हैं कि नही? आश्रम से जवाब गया कि जीवित हैं कितु अभी बाहर अपने कार्यक्रमो मे हैं। वे गुरुदेव के विचारो से इतना प्रभावित हुए कि बिना आपसे मिले ही राजकोट म पाच दिन के लिए सत्सग कार्यक्रम का समय मागे और स्वय उसको करवाये। इसके पश्चात तो नितिन भाई (राजकोट के ही एक कबीरपथी भक्त) उनके सहयोगी हो गये। इधर 2012 के पूर्व लगभग दस वर्षो से बराबर राजकोट मे गुरुदेव का कार्यक्रम हो रहा था। गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र, जामनगर, भाभर, सावर कुण्डला, गिरनार, डीसा आदि क्षेत्रो मे भी आपके भक्तो की सख्या काफी है। इन सब क्षेत्रो मे गुरुदेव समय-समय से अपने सत समाज सहित भ्रमण करते रहे।

राजस्थान मे गुरुदेव के प्रति लोगो की अनन्य भावना है। यहा आपको विगत कई दशको से प्रतिवर्ष जाना ही पड़ता था। गुरुदेव का समय कम होने के बाद भी राजस्थान के लिए तीन-चार कार्यक्रम तो देना ही पड़ता था।

इसी प्रकार दिल्लो, पजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि मे भी गुरुदेव का पदार्पण होता रहता था।

उत्तर प्रदेश की बात कर तो यह गुरुदेव की जन्मस्थली, कर्मस्थली, तपस्थली और निर्वाणस्थली है। यही पर इस प्रकाश-पुज का प्रादुर्भाव हुआ और धीरे-धीरे यह प्रकाश चारो दिशाओ मे जन-जन के दिलो को प्रकाशित कर दिया और आज पर्यंन्त कर रहा है। उत्तर प्रदेश मे गुरुदेव जी ने सामान्य वर्ग से लेकर ब्राह्मणा के घरो तक सद्गुरु कबीर के क्रान्तिकारी ज्ञान की मशाल जलाया। आपके ज्ञान-वैराग्य के प्रभाव से ब्राह्मणो को समताभाव एव मानवता का दिव्य प्रकाश मिला और दीन-हीन, शोषित निम्न वर्गीय लोगो को आगे बढ़ने का आधार मिला। उत्तर प्रदेश मे गोडा, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, बहराइच, सीतापुर, लखनऊ, उन्नाव, कानपुर, फतेहपुर, इटावा, आगरा, सहारनपुर, देहरादून, इलाहाबाद, फैजाबाद, सुल्तानपुर, बनारस आदि क्षेत्रो मे आपके कार्यक्रम होते रहे।

गुरुदेव की निकटता मे मात्र आपसे दीक्षित या केवल कबीरपथ के ही सत-भक्त नही रहते बल्कि आपके ज्ञान, विचार, वैराग्य, त्याग और रहनी के प्रभाव से अन्यान्य मत के नर-नारी आपके पास आकर, आपके अग-सग रहकर

आपसे आत्मिक प्रकाश लेते रहते थे। गुरुदेव मत-पथ रूपी घरौदे से ऊपर उठे हुए जीवन्मुक्ति के अनन्त आकाश मे सब समय विहरण करते रहे।

सद्‌गुरु कबीर द्वारा प्रणीत निर्मल ज्ञान की धारा यह पारख सिद्धान्त अद्वितीय है। इस ज्ञान को आत्मसात करके गुरुदेव जी ने जिस सरल एव सरस भाषा मे अपने विचार समाज के बीच रखा वह किसी से छिपा नही है। पारख सिद्धान्त को जो कोई एक बार विचारपूर्वक मनन कर लेता है उसके जीवन की सारी भ्रातिया अपने आप समाप्त हो जाती हैं।

वस्तुत: पारख ज्ञान के अभाव मे ही भूत-प्रेत, जादू-टोना, शकुन-अपशकुन, ग्रहदशा, लग्न-मुहूर्त, देवी-देवता, तीर्थ-व्रत आदि अनेक अधविश्वास, चमत्कार तथा आडम्बर की मानसिक गुलामी मे मनुष्य बधा रहता है। गुरुदेव के विचारो से जो सुपरिचित हैं उनको पुत्र, धन और निरोग्यता आदि की प्राप्ति के लिए किसी पडे-पुजारी, ज्योतिषी आदि के पास भटकते रहने की जरूरत नही होती और न उन्हे हाथ की रेखा दिखाकर भाग्य जानने की कामना रह जाती है। क्योकि वे समझते हैं कि ऐसी कोई दैवीय शक्ति नही जो कारण-कार्य व्यवस्था के विपरीत हमारा कुछ शुभाशुभ कर सके। हमे जो सुख-दुख मिल रहे हैं वे तो निज कर्मों के फल हैं। इसलिए कर्म सुधार ही सुखी होने का सच्चा साधन है।

2. सत समाज—गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी जब से गृहत्याग कर साधु समाज मे आये, तभी से अपनी विनम्रता, त्यागभाव, शील स्वभाव, ज्ञान, वैराग्य और गुरुभक्ति आदि सद्‌गुणो के कारण थोड़े ही दिनो मे आदरणीय हो गये। आपसे पुराने-पुराने बुज़ुर्ग सत गुरुभाई लोग भी आपका आदर करते थे। आपसे राय लेते थे। गुरुदेव का गुरु आश्रम बड़हरा है। 12 नवम्बर, 1953 ई0 मे गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी की शरण मे आने के बाद आपने अपने आपको सर्वतोभात्या समर्पित कर दिया। समय-समय से आप अपने गुरुदेव के साथ भ्रमण मे जाते थे और समय से आश्रम मे सतो के साथ रहते हुए सेवा-साधना मे सलग्न रहते थे।

उस समय बड़हरा कबीर आश्रम का सत समाज छोटा था, लेकिन वहा के सतो के त्याग-वैराग्य की अन्य सत समाज मे और भक्त समाज मे चारो तरफ शोहरत थी। इस आश्रम मे पहले वर्ष मे दो बार दो-दो दिन का सत समागम होता था, एक कार्तिक मे और दूसरा चैत रामनवमी के अवसर पर। कुछ अड़चन होने के कारण रामनवमी का बन्द कर दिया गया तथा कार्तिक वाला बराबर चलता रहा।

बड़हरा कबीर आश्रम मे कार्तिक मे जब भडारा-सत समागम होता था तो वहा के सभी सत इकट्ठा हो जाते थे किंतु उसके एक दो दिन बाद ही यत्र-तत्र सब चले जाते थे। आश्रम मे कोई व्यवस्थित रूप से समाज नही चलता था। एक या दो साधु साथ लेकर सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी भ्रमण किया करते थे। इसी प्रकार एक या कभी-कभी दो साधु आश्रम मे रहा करते थे। 1953 ई0 मे जब से पूज्य श्री अभिलाष साहेब जी इस आश्रम मे आये तब से आश्रम की व्यवस्था मे, सतो के सगठन मे और उनकी पढ़ाई-लिखाई मे आमूलचूल परिवर्तन हो गया।

आपने अपने सभी बड़े गुरुभाई सतो से विनयपूर्वक निवेदन करके सबका सगठन बनाया और प्रतिदिन शाम को आश्रम मे पाठ, सत्सग, प्रवचन आदि करने का भी नियम बनाया। साय पाठ के बाद आप स्वय अपनी चादर मोड़कर बिछा देते और भवयान पुस्तक सामने रखकर श्रद्धेय सत श्री निर्बन्ध साहेब से कहते कि साहेब जी, आप भवयान से कुछ कथा सुनाये। आपके बहुत आग्रह करने पर श्री निर्बन्ध साहेब जी कथा शुरू करते।

बड़े गुरुदेव जी की सेवा मे भी कोई व्यवस्थित रूप से नही रहता था। लेकिन आप स्वय अपने गुरुदेव जी की सेवा मे रहने लगे और समय-समय से अन्य साधको को भी बदल-बदलकर लगाते रहे। भ्रमण मे उन दिनो गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी जब छत्तीसगढ़ जाते तो दस-पन्द्रह सत-साधक आपके पास आ जाते थे और वहा से लौटने के बाद पुन: सब यत्र-तत्र बिखर जाते थे। लेकिन श्री अभिलाष साहेब जी अपने गुरुदेव के साथ भ्रमण मे रहने के लिए और आश्रम मे रहने के लिए भी व्यवस्थित रूप दिये।

उन दिनो बड़हरा समाज मे बीजक, पचग्रथी आदि गथो की विधिवत पढ़ाई नही हो पाती थी। जिसको पढ़ना होता था वह कबीर निर्णय मदिर बुरहानपुर जाकर ही पढ़ सकता था। मुहम्मदनगर निवासी शकर भक्त ने एक बार गुरुदेव से आग्रह किया कि इस वर्ष आप हमारी कुटिया मे वर्षावास करे और साथ-साथ पूरा सत समाज भी रहे। आप सभी सतो-भक्तो को बीजक पढ़ाये। हम सबके रहने, बसने और खाने-पीने आदि की व्यवस्था करेगे। गुरुदेव ने स्वीकार लिया किंतु कुछ कारणवश यह बीजक की पढ़ाई का कार्य स्थगित हो गया।

उन दिनो बड़हरा समाज के मुख्य-मुख्य सत इस प्रकार थे—सत श्री गुरुलगन साहेब (जिनको मोटे साहेब भी कहा जाता था।), सत श्री निष्पक्ष साहेब (तपसी साहेब), सत श्री गुरुमुख साहेब, सत श्री निर्बन्ध साहेब, सत श्री निहाल साहेब, सत श्री सतोष साहेब, सत श्री विमल साहेब, सत श्री सुयश साहेब, श्री निर्भय साहेब, श्री सत साहेब आदि।

बड़हरा सत-समाज का सगठन 1971 ई0 तक सुव्यवस्थित चलता रहा। 1970 ई0 मे जब कबीर आश्रम जियनपुर अयोध्या की स्थापना हुई तो गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी विशेष रूप से वहा रहने लगे। जबकि श्री अभिलाष साहेब जी अधिकाश भ्रमण मे और अन्य समय काशी मे साहित्य प्रकाशन मे रहने लगे। गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब की रहनी, त्याग, साधना, वैराग्य एव उत्तम व्यवहार तथा कबीर साहेब के उज्ज्वल पारख सिद्धान्त से प्रभावित होकर आपके करीब एक सौ विरक्त शिष्य हुए।

सन् 1977 मे जब से कबीर पारख सस्थान की इलाहाबाद मे स्थापना हुई तब से सतो-साधको को बीजक, पचग्रथी, भवयान आदि पारख सिद्धान्त के ग्रन्थो के साथ-साथ अन्य अनेक शास्त्रो को भी गुरुदेव जी ने पढ़ाया, जैसे– उपनिषद् सौरभ, योगदर्शन, धम्मपद, अष्टावक्रगीता, गीतासार, विवेक चूडामणि, श्री पूरण साहेब कृत-वैराग्य शतक, भर्तृहरि कृत-वैराग्य शतक, वैराग्य सदीपनी, पलटू साहेब की बानी, कबीर साखी आदि। इन समस्त शास्त्रो के अध्ययन-अध्यापन और साधना का मुख्य आधार होते हुए सतो-भक्तो के लिए आवास का भी आधार बना। अब तो आपका यहा एक व्यवस्थित बृहत समाज हो गया।

सद्गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के सरक्षण मे रहने वाले, आपसे वेश प्राप्त विरक्त सतो के नाम इस प्रकार हैं—श्री धर्मेन्द्र साहेब जी, श्री सतेन्द्र साहेब, श्री जितेन्द्र साहेब, श्री महेन्द्र साहेब, श्री सुरेन्द्र साहेब, श्री शीलेन्द्र साहेब, श्री विजयेद्र साहेब, श्री जयेन्द्र साहेब, श्री महेन्द्र साहेब (द्वितीय), श्री कृष्णेन्द्र साहेब, श्री तुलसी साहेब, श्री साहेबशरण साहेब, श्री शीलेन्द्र साहेब (द्वितीय), श्री देवेन्द्र साहेब, श्री उपेन्द्र साहेब, श्री क्षेमेन्द्र साहेब, श्री गुरुवेन्द्र साहेब, श्री सुरेन्द्र साहेब (द्वितीय), श्री हरेन्द्र साहेब, श्री हितेन्द्र साहेब, श्री वीरेन्द्र साहेब, श्री दीपेन्द्र साहेब, राम दास, श्री अमरेन्द्र साहेब, श्री गुरुशरण साहेब, श्री चूड़ामणि साहेब, श्री दिनेन्द्र साहेब, श्री मधुरेन्द्र साहेब, श्री जितेन्द्र साहेब (द्वितीय), श्री हीरेन्द्र साहेब, श्री अमलेद्र साहेब, श्री यशेन्द्र साहेब, श्री नारायण साहेब, श्री जगन्नाथ साहेब, श्री यतीद्र साहेब, श्री समेद्र साहेब, श्री हेमेद्र साहेब, श्री सौम्येद्र साहेब, श्री करुणेद्र साहेब, श्री राजेन्द्र साहेब, श्री विवेक साहेब, श्री प्रमोद साहेब, श्री सतोष साहेब, श्री रमेश साहेब, श्री महेश साहेब, श्री पुनीत साहेब, श्री सत साहेब, श्री शिवेन्द्र साहेब।

उपर्युक्त सभी सत गुरुदेव जी के सान्निध्य मे सेवा-साधना करते हैं। कुछ ऐसे भी सत हैं जिनका शरीर आज नही रह गया है और कुछ ऐसे भी सत हैं जो आपसे अलग रहकर भ्रमण करते हैं तथा समय-समय से आपका दर्शन-

आशीर्वचन प्राप्त करते हुए साधनामय जीवन बिताते हैं। उन सतो के नाम इस प्रकार हैं—सत श्री अशोक साहेब, सत श्री योगेन्द्र साहेब, श्री राजेन्द्र साहेब, श्री बलवन्त साहेब, श्री नरेन्द्र साहेब, श्री जागेन्द्र साहेब, श्री ज्ञानेन्द्र साहेब और श्री जिनेन्द्र साहेब आदि।

सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब जी के सान्निध्य मे अनक ऐसे साधक हैं जिनका अभी साधुवेश नही हुआ है, लेकिन ये सभी साधक वही समर्पण और सेवा-भाव से साधना मे लगे हैं। उन ब्रह्मचारी साधको के नाम इस प्रकार हैं—ब्रह्मचारी श्री वेदानद जी, ब्र0 श्री यादराम जी, ब्र0 श्री भूपेन्द्र जी, ब्र0 श्री रामेश्वर जी, ब्र0 श्री करमचद जी, ब्र0 श्री देवेन्द्र जी, ब्र0 श्री चदन जी, ब्र0 श्री उमेन्द्र जी, ब्र0 श्री चद्रशेखर जी, ब्र0 श्री अरविद जी, ब्र0 श्री कोमल जी, ब्र0 चेतन जी, ब्र0 श्री सुरेश जी, ब्र0 श्री शभू जी, ब्र0 श्री अजय जी, ब्र0 श्री अनिल जी, ब्र0 श्री धनजय जी, ब्र0 श्री भोला जी, ब्र0 श्री गगाराम जी, ब्र0 श्री रविन्द्र जी, ब्र0 श्री सुशात जी, ब्र0 श्री रोशन जी, ब्र0 श्री सुभाषजी, ब्र0 शिवचरण जी, ब्र0 श्री शैलेद्र जी, ब्र0 श्री भूपेद्र जी, ब्र0श्री सतराम जी, ब्र0 श्री प्रमोद जी-2, ब्र0 श्री देव जी, ब्र0 रामलाल जी, ब्र0 रामशरण जी, ब0 लखन लाल जी, ब्र0 श्री पुरानिक जी, ब्र0 श्री गणेशजी, ब्र0 उमेद्र जी-2।

गुरुदेव के पास कुछ ऐसे भी सत हैं जिनका विधिवत साधुवेष आपसे तो नही हुआ है बल्कि आपके गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी से हुआ है, वे सभी साधक सत मर्यादा की दृष्टि से तो आपके गुरुभाई हैं लेकिन आपकी रहनी, विचार एव स्नेह से वे सब प्रभावित होकर आपको सद्‌गुरु ही मानते हैं। उन सतो के नाम इस प्रकार हैं—

1. सत श्री शरणपाल साहेब जी, 2. सत श्री अमृत साहेब, 3. सत श्री गुरुबोध साहेब, 4. सत श्री गुरुभूषण साहेब, 5. सत श्री गुरुक्षेम साहेब, 6. सत श्री सहनशील साहेब, 7. सत श्री कृपाशरण साहेब, 8. सत श्री सुधार साहेब, 9. सत श्री विचार साहेब, 10. सत श्री विनयसनाथ साहेब, 11. सत श्री गौरव साहेब, 12. सत श्री गुरुजतन साहेब जी (कबीर आश्रम सकरी कोरासी, रायपुर-छत्तीसढ़) 13. सत श्री शोभाशरण साहेब जी (कबीर आश्रम भैंसमुड़ी, धमतरी-छत्तीसगढ़), 14. सत श्री सजीवन साहेब (कबीर आश्रम कटिहार बिहार), 15. सत श्री उबार साहेब जी (कबीर आश्रम करहीभदर, दुर्ग-छत्तीसगढ़)

गुरुदेव के त्याग, तप, आचार-विचार एव रहनी से स्वाभाविक आकर्षित होकर कुछ साधक दूसरे आश्रमो एव सतो के पास से भी आ जात थे। जिनकी

विधिवत न आपसे दीक्षा हुई थी और न साधुवेष ही फिर भी वे सब आपको सद्‌गुरु ही मानते थे और आपकी शरण मे रहते थे। जैसे—सत श्री गुरुरमन साहेब जिनका वेष कबीर आश्रम मुस्तफाबाद के सत श्री क्षमा साहेब जी के द्वारा हुआ। वहा वे कुछ दिन रहे फिर मार्च सन् 1997 मे कबीर पारख सस्थान इलाहाबाद मे गुरुदेव को पूर्णतया समर्पित हो गये और उनके अत्यन्त स्नेहपात्र रहे।

कुछ सत अन्यान्य आश्रमो मे रहते हुए भी आपके नियम, सिद्धान्त एव विचारो का अनुसरण करते हुए अपना जीवन-यापन करते हैं। वे सभी सत समय-समय से आपका सान्निध्य प्राप्त करके सेवा, उपासना, सत्सग आदि का लाभ प्राप्त करते हैं। जैसे—1. सत श्री विकास साहेब, 2. सत श्री कृष्णानन्द साहेब।

पुरुष साधको के अलावा गुरुदेव के सरक्षण मे बहुत-सी साधिकाए भी साधना मे लगी हुई हैं जिनका अपना अलग आश्रम है। साधिकाओ का अपना स्वतत्र आश्रम होते हुए भी वे सब गुरुदेव जी के नियम एव आदेशानुसार ही चलती हैं। वे आश्रम हैं—

कबीर ब्रह्मचारिणो आश्रम पोटियाडीह, धमतरी (छत्तीसगढ़)—इस आश्रम की अध्यक्षा साध्वी सुशीला साहेब हैं। इस आश्रम मे तीस-पैंतीस साधिकाए रहती हैं। उनमे से कुछ लोगो का नाम यहा दिया जाता है—1. साध्वी सुशीला साहेब, 2. साध्वी विनय साहेब, 3. साध्वी समष्टि, 4. साध्वी सस्कृति, Z. साध्वी सुप्रभा, 6. साध्वी समीक्षा, 7. साध्वी धीर साहेब, 8. साध्वी पुष्पा, 9. साध्वी सुप्रज्ञा, 10. साध्वी सत्या, 11. साध्वी क्षमा साहेब, 12. साध्वी स्मृति, 13. साध्वी साक्षी, 14. साध्वी समता, 15. साध्वी सुरभि, 16. साध्वी शुचिता, 17. साध्वी सुचेता, 18. साध्वी उपासना, 19. साध्वी सतुष्टी, 20. साध्वी शिखा, 21. साध्वी सुमेधा, 22. साध्वी साधना, 23. साध्वी शुभ्रा आदि।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम धर्मपुरी, यह आश्रम गुजरात बड़ौदा जिला के डभोई तालुका मे पड़ता है। इसकी अध्यक्षा हैं साध्वी विजया साहेब। यहा पर आठ-दस साधिकाए रहती हैं, साध्वी विजया साहेब, साध्वी वदना, साध्वी विशाखा, साध्वी विभूति, मनीषा, मदाकिनी, मीना, सज्जन आदि।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम मूरा—यह भी छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला मे रायपुर-धमतरी रोड पर है। यहा साध्वी श्रद्धा, साध्वी सुमन, साध्वी सुकीर्ति, साध्वी सुप्रिया, श्वेता, स्मिता, सौम्या, सम्पूर्णा, स्नेहा, स्वाती, रमेश, लता, पूजा नीलम, सरोज आदि चौदह-पन्द्रह साधिकाए रहती हैं।

कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम दर्रा—यह आश्रम छत्तीसगढ़ के बालोद जिला मे स्थित है। यहा साध्वी शीलवती साहेब के साथ चार-पाच साधिकाए रहती हैं।

कबोर ब्रह्मचारिणी आश्रम जोटवड—यह आश्रम गुजरात के पचमहाल जिला मे है और यहा साध्वी जया साहेब के साथ तीन-चार साधिकाए रहती हैं।

इस सभी ब्रह्मचारिणी आश्रमो मे नारिया ही सदस्याए होती हैं और नारिया ही इनमे रहती हैं। इन सबके समय-समय से भक्तो मे सत्सग-कार्यक्रम भी होते हैं। कबीर साहेब के विचारो को प्रचार-प्रसार करने मे नारी साधिकाओ की भी अपनी अह भूमिका है। इन आश्रमो के अलावा भी बहुत-सी साधिकाए हैं जो समय-समय से गुरुदेव के दर्शन-सत्सग का आधार लेकर अपने-अपने घरो मे अलग से अपने निवास की व्यवस्था करके साधनापूर्वक रहती हैं।

गुरुदेव का इतना बड़ा समाज है, सबकी शुभकामना और सबके कल्याण की बाते बताते हुए भी आप सब समय सबसे निस्पृह-अनासक्त रहते थे। आपकी ऐसी रहनी को देखते हुए सद्‌गुरु कबीर की साखी याद आती है—

कबीर खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर॥

गुरुदेव के हृदय मे व्यवहार और परमार्थ की ये दो बाते "प्रेम मे स्वर्ग और अनासक्ति मे मोक्ष" कूट-कूटकर भरी थी। व्यवहार मे आप सबको अपना समझते थे, सबके साथ प्रेम, स्नेह और करुणा का बरताव करते थे। आपके पास जो भी एक बार आता था वह आपके निर्मल स्नेहिल पवित्र व्यवहार को पाकर आप ही का हो जाता था। गुरुदेव का प्रेम और स्नेह मा के प्यार और स्नेह से भी बढ़कर रहता था क्योकि आपका स्नेह निष्काम था। जिस प्रकार आपके व्यवहार मे सब समय प्रेम का शीतल फौव्वारा निकलता रहता उसी प्रकार आपके मन मे सब समय वैराग्य और दृश्यमात्र की वियोगशीलता का ज्ञानदीप प्रज्वलित रहता था। गुरुदेव किसी से भी बात करते थे चाहे वे सत हो या भक्त या टेलीफोन की वार्ता ही क्यो न हो उसमे प्रेम और वैराग्य की बात अवश्य आती थी। आपकी शिक्षाओ का सार आपके ही एक सूत्र मे हम देख सकते हैं—"व्यवहार मे जन धन है और परमार्थ मे मन धन है।"

---

❹

गुरुदेव का साहित्य

सद्गुरवे नमः

सद्गुरु अभिलाष साहेब : जीवन दर्शन

1.

गुरुदेव का साहित्य

किसी भी महापुरुष के जीवन, सिद्धान्त, समाज एव उनके आचार-विचार को समझने के लिए प्रबल आधार उनका साहित्य होता है। साहित्य लेखक का मानस प्रतिबिम्ब है। वे अपने जीवन के अनुभव-सूत्रो को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत कर देते हैं। कोई भी महापुरुष ससार मे सब समय बैठे नही रह सकते लेकिन उनके द्वारा लिखे हुए गथ युगानुयुगो तक ससार के लाखो-लाखो लोगो को उनका अमर सदेश देते रहते हैं।

आज हम धरती के अमर सपूत बुद्ध, महावीर, सुकरात, अरस्तू, कन्फ्यूसियस, लाओत्जे, मूसा, ईसा, मुहम्मद, शकराचार्य, कबीर, नानक, तुलसी, विवेकानन्द, रामतीर्थ, रमण महर्षि, गाधी जी आदि के सदेशो एव उपदेशो के पथ पर चलकर ही अपने जीवन को उलझी हुई गुत्थिया को सुलझाने की चेष्टा करते हैं। उन सबका आधार साहित्य ही है। भले ही वे साहित्य चाहे उनके स्वय के द्वारा लिखे हो या उनके अनुगामियो के द्वारा। साहित्य न होने पर उनके अनुगामियो द्वारा ही उस सिद्धान्त मे समय-समय से विकृति आ जातो है या उन महापुरुषो का विचार-सिद्धान्त ही थोड़े दिनो मे लुप्त हो जाता है।

साहित्य एक ऐसी वैचारिक कोठरी है जो राजनीति, समाज एव धर्म के समस्त नीति-नियमो को सजोकर रखती है। यह वर्तमान एव भविष्य मे आनेवाली मानव परम्परा के लिए अमूल्य निधि है। आज से साढ़े पाच सौ वर्ष पूर्व सद्गुरु कबीर ने समाज मे फैले हुए समस्त अधविश्वास, चमत्कार, आडम्बर एव मिथ्या मान्यताओ की भित्ति को धराशायी कर दिया था। उन्होने पथाधीश्वरो एव धर्म के ठेकेदारो से डरना नही जाना। जो सत्य लगा उसे ज्यो का त्यो कह दिया। जिसका प्रबल प्रमाण उनका मौलिक ग्रथ बीजक है। बीजक

ज्ञान का सागर है। इसे बिना कोई महरमी सत-गुरु से भेद पाये सब लोगो के लिए समझ पाना अत्यन्त कठिन है। कबीरपथ के सतो-भक्तो के बीच बीजक पर मनन-चितन होता रहा। अठारहवी शताब्दी मे गया बिहार मे महान परम पारखी सत श्री रामरहस साहेब हुए। उन्होने पचग्रथी नाम की एक बृहत् पुस्तक लिखी जो बीजक की भावात्मक टीका मानी जाती है। इससे बीजक को समझने मे सरलता हुई।

पूज्य सत श्री रामरहस साहेब के बाद उन्नीसवी शताब्दी क आरम्भ मे बुरहानपुर मध्यप्रदेश मे एक तपोमूर्ति महान सत श्री पूरण साहेब हुए जिनका गुरुस्थान कबीर मदिर रीवा (मध्य प्रदेश) है। श्री पूरण साहेब द्वारा लिखी गयी बीजक की टीका 'त्रिज्या' बीजक को समझने के लिए एक प्रौढ़ आधार ग्रथ बन गया। यह टीका सतो-भक्तो मे काफी व्याप्त हो गयी। आज तक जितनी भी बीजक की टीकाय हुई हैं, वे सब त्रिज्या के आधार पर ही हुई हैं।

पूज्य गुरुदेव श्री अभिलाष साहेब जी को अपनी अठारह वर्ष की उम्र मे कबीर साहेब का विचार प्राप्त हुआ। पहले तो इन तार्किक विचारो से आपको चौक हुई लेकिन आकर्षण भी हुआ। फिर तो आपको इन विचारो को समझने के लिए प्रबल इच्छा जगी। आपने बीजक मूल प्राप्त किया लेकिन उसके अर्थ आपकी समझ मे नही आते थे। खोज करने पर एक कबीर आश्रम मे आपको सद्गुरु श्री पूरण साहेब की बीजक टीका त्रिज्या मिल गयी। फिर तो मानो आपको बीजक की कुजी ही मिल गयी।

त्रिज्या पढ़ते-पढ़ते ही कुछ दिनो मे आप सदा के लिए गृह त्याग कर गुरुदेव की शरण मे आ गये। इसके बाद तो आप कबीर-ज्ञान के अथाह सागर मे ही पहुच गये। गुरुदेव के पास अध्ययन-मनन करके कबीर साहेब का अनूठा गथ बीजक थोड़े ही दिनो मे आपके लिए कर-बदर हो गया। समय बीतता गया और आपको अगणित बार सतो-भक्तो के बीच बीजक के आधार पर अपने व्याख्यान देने का अवसर आया। धीरे-धीरे सतो-भक्तो का आग्रह हुआ कि आप जैसे बोलते हैं इसी प्रकार बीजक की टीका-व्याख्या लिख दीजिए।

आप कहते थे—''सतो-गुरुजनो का ऐसा आग्रह सुनकर मुझे बड़ा सकोच हुआ कि मैं क्या लिखूगा लेकिन जब मेरे गुरुदेव ने एक बार अपने पास बुलाकर कहा कि 'अभिलाष दास' तुम बीजक की टीका लिख दो। जो लिखोगे वह अच्छा रहेगा। तब धीरे-धीरे साहस हुआ और मैंने लिखना शुरू किया।''

पुस्तक लिखना तो बहुत लोगो को आ जाता है किंतु किसी विषय पर निष्पक्ष और आग्रह रहित होकर लिखना कम लोग ही कर पाते हैं। ऐसा तभी

सम्भव हो सकता है जब हमारे मन मे आलोच्य व्यक्ति या विषय के प्रति श्रद्धा हो, विषय का गहरा अध्ययन हो और शब्द शक्ति हो। लेखक के मन मे जब इन तीनो शक्तियो की त्रिवेणी इकट्ठी हो जाती है तो उसका लेख जीवन्त और लोकप्रिय होता है।

गुरुदेव की पुस्तके सन् 1958 से 1975 तक तो बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, काशी के विश्वेश्वर प्रेस मे छपती रही। इन दिनो 1958 से 1975 तक आपकी पुस्तको का स्टाक रखने, व्यवस्था करने एव फैलाने मे दो भक्तो का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता था। एक हैं उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला बभनान बाजार के भक्त श्री रामलाल जी और दूसरे हैं छत्तीसगढ़, रायपुर जिला दर्रा गाव के भक्त श्री कमल सिह जी।

आप दोनो भक्ता की सेवा लगभग सत्तरह वर्षों तक बराबर चलती रही जो अत्यन्त प्रशसनीय रही। गुरुदेव की लिखी पाडुलिपियो की साफ प्रतिलिपि करने, प्रूफ सशोधन एव छपाई आदि मे श्रद्धेय सत श्री शरणपाल साहेब जी की सेवा रही। कबीर पारख सस्थान के प्रारम्भ सन् 1976 से अब तक गुरुदेव की पुस्तको का प्रूफ सशोधन आदि कार्यों मे श्रद्धेय सत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परिश्रम है। आपकी लगन, श्रमशीलता एव कार्य कुशलता आदर्शप्रद है।

पारख प्रकाश : गुरुदेव जी के सरक्षण मे 'पारख प्रकाश' नाम की एक त्रैमासिक पत्रिका निकलती है जिसका परिचय गुरुदेव जी के साहित्य सदर्भ मे 'पारख प्रकाश से सकलित' शीषक के अतर्गत दिया गया है।

सन् 1977 मे जब पारख प्रकाशक कबीर सस्थान की स्थापना हुई तो भक्त श्री रामलाल जी के घर से पुस्तको का स्टाक कबीर सस्थान इलाहाबाद मे आ गया। सन् 1977 से ग़ुरुदेव की सारी पुस्तके इलाहाबाद मे ही छपती हैं और यही से भारत के विभिन्न जगहो मे एव भारतेतर देशो मे भी जाती रहती हैं।

कबीर पारख सस्थान इलाहाबाद बनने के बाद अन्य कई आश्रम भी गुरुदेव के बने तो वहा भी आपकी पुस्तको का स्टाक रहता है। जैसे—कबीर आश्रम नवापारा राजिम, रायपुर-छत्तीसगढ़; कबीर पारख आश्रम सणिया हेमाद, सूरत-गुजरात; कबीर आश्रम रामपुरा-दिल्लो; कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम धर्मपुरी, बड़ौदा-गुजरात। इसके अलावा भारत के इलाहाबाद, मुम्बई, मुगलसराय, लखनऊ आदि अनेक बड़े रेलवे स्टेशनो के सर्वोदय बुक स्टालो मे आपकी पुस्तके उपलब्ध रहती हैं।

आपकी पुस्तके अत्यन्त सरल भाषा मे होने के साथ-साथ वैज्ञानिक तर्कपूर्ण हैं। इसीलिए ये अत्यन्त लोकप्रिय हुईं। आपकी कई पुस्तके हैं जिनके अब तक (सन् 2011) दस-पन्द्रह सस्करण निकल चुके हैं।

अब तक गुरुदेव जी के लगभग सौ से अधिक गथ हो चुके हैं। जिन्ह हम मुख्य रूप से नौ भागो मे बाट सकते हैं, जैसे—1. पद्यात्मक, 2. टीका-व्याख्या, 3. साधको के लिए विशेष, 4. समीक्षात्मक, 5. प्रवचन आलेख, 6. 'पारख प्रकाश' से सकलित, 7. दार्शनिक, 8. आलोचनात्मक और 9. सिद्धान्त निरूपण।

पद्यात्मक पुस्तकें

कविताओ मे कवि अपनी बड़ी से बड़ी बातो को भी थोड़े मे व्यक्त कर देता है। इससे पाठको को पढ़ने और कण्ठ करने मे सुविधा होती है। पद एव कविताए लिखने के अनेक ढग होते हैं, लेकिन भक्ति, ज्ञान और वैराग्य रस से पूर्ण पद कोई बिरला ही लिखता है। उन्ही बिरलो मे ही गुरुदेव अभिलाष साहेब जी का नाम आता है। पद्य मे आपकी कुल चार पुस्तके हैं— 'वैराग्य सजीवनी', 'भजनावली', 'आदेश प्रभा' और 'हृदय के गीत।'

वैराग्य संजीवनी—यह प्रथम पद्यात्मक पुस्तक है। पूरी पुस्तक भक्ति, ज्ञान, बोध और वैराग्य के अमृत रस से ओत-प्रोत है। इसे गुरुदेव ने अपनी बाईस से चौबीस वर्ष की उम्र मे बनाया है। इसके छन्द आपने पुस्तकरूप देने के लिए नही लिखा है बल्कि समय-समय से आपके हृदय से निकले स्वाभाविक उद्‌गार हैं। छन्दो की सख्या अधिक हो गयी तो सतो-भक्तो ने आपसे आग्रह किया तो सहज ही यह पुस्तक का रूप ले लिया। ये छन्द इतने आकर्षक हैं कि पुस्तक छपने के पूर्व ही सतो-भक्तो ने इसकी खूब प्रतिलिपि की और खूब अध्ययन-मनन किया।

वैराग्य सजीवनी जैसा नाम है वैसा ही इसके अन्दर वैराग्य के स्वर्णिम रत्न भरे हुए हैं। इसके छदो के नाम से ही पता चलता है कि अन्दर क्या है, जैसे—'गुरुभक्ति बिन सब छार है', 'वैराग्य मे सम्बन्ध क्या?' 'वैराग्य बादल आ गया', 'वैराग्य बिन सब भग है', 'ऐसा सुदिन कब आयेगा', 'रे मौत प्यारी मौत मेरे सामने आया करे', 'किसको कहू अपना भला', 'सहना हमारा काम है', 'तू बावला किसके लिए' आदि।

यह पहली बार सन् 1958 मे काशी के विश्वेश्वर प्रेस मे छपी। अब तक परिशोधित होकर इसके आठ सस्करण निकल चुके हैं। सन् 1958 मे वैराग्य सजीवनी के पद सुनकर उनसे मिलने पर सद्‌गुरु श्री विशाल देव ने श्री

अभिलाष साहेब जी पर गहरी दृष्टि डाली थी और फिर तब से श्री विशाल देव के शरीरात तक उनका और श्री अभिलाष साहेब जी का सम्बन्ध गुरु-शिष्यवत घनिष्ठ बना रहा।

भजनावली—भजनो का सग्रह है। आप जब सद्गुरु श्री रामसूरत साहेबकृत 'विवेकप्रकाश' की टीका-व्याख्या लिख रहे थे उसी समय इसके अधिकतम भजनो की रचना हुई थी। विवेक प्रकाश टीका मे आपके भजन फैले हैं। इसके अलावा अन्य समयो मे भी बहुत-से भजनो की रचना आपने की है। आपके भजनो मे भक्ति, वैराग्य, बोध, सामान्य शिक्षा, सदाचार आदि की मणिया भरी हैं।

यह पुस्तक चार खण्डो मे है—1. भक्ति खण्ड, 2. उपदेश खण्ड, 3. बोध खण्ड और 4. सामूहिक खण्ड। इसमे कुल एक सौ इकहत्तर भजन हैं। इसका प्रथम सस्करण सन् 1967 मे हुआ और अब तक ग्यारह सSकरण निकल चुके हैं।

आदेश प्रभा—काव्यात्मक तीसरी पुस्तक है। यह सबसे छोटी है लेकिन इसकी वैचारिक गभीरता उच्चकोटि की है। इसमे कुल सात छन्द हैं। जिनके शीर्षक हैं—ऐसा मेरा है मन्दपन, गृहस्थ धर्म और मानवता, नारी शिक्षा, चौरासी मे भरमाइय, सिद्धात सत्य कबीर का, जो कुछ हुआ अच्छा हुआ और आपा मिटाया आपका फिर मिट गया ससार है। इस पुस्तक के अब तक सात सस्करण हो चुके हैं।

हृदय के गीत—गुरुदेव जी द्वारा सपादित 'पारख प्रकाश' नामक त्रैमासिक पत्रिका मे प्रकाशित कविताओ का सग्रह है। इसके तृतीय खड की कुछ कविताए 'बीजक शिक्षा' और 'बोधसार' सटीक से सग्रहीत हैं। पहले सस्करण मे यह पुस्तक 'अतर्सगीत' के नाम से छपी थी। जिसमे थोड़ी ही कविताए थी। सन् 1998 मे जब दूसरा सस्करण छपने का समय आया तो बाकी कविताओ को भी पारख प्रकाश पत्रिका से सकलित कर लिया गया। इसमे कुल 127 कविताए हैं।

इसके प्रथम खड की कविताओ मे सद्गुरु कबीर के निष्पक्ष सदेशो का वर्णन है और उनके प्रति श्रद्धाजलि समर्पित की गयी है। दूसरे, तीसरे और चौथे खड मे साधक की दशा, उसकी स्थिति प्राप्त करने के साधन और उसके विघ्न आदि का अनेक कविताओ मे विषद विवेचन किया गया है।

यह पुस्तक सन् 1984 ई0 मे पहली बार छपी है और अब तक इसके तीन सस्करण निकल चुके हैं।

टीका व्याख्या

बीजक व्याख्या—सद्‌गुरु कबोर की प्रामाणिक रचना बीजक है। इस पर अनेक सतो-विद्वानो द्वारा टीकाए हुई हैं। पूज्यवर गुरुदेव जी ने भी 1966 ई0 मे शकर भक्त के आश्रम (मुहम्मदनगर, बस्ती, उत्तर प्रदेश) मे रहकर बीजक की टीका लिखी थी। जो 'बीजक पारख प्रबोधिनी टीका' के नाम से 1969 ई0 मे पहली बार छपी और 1987 ई0 तक जिसके चार सस्करण निकल चुके थे। लेकिन गुरुदेव जी इस टीका से पूर्ण सतुष्ट नही थे। आपके ही शब्दो मे—''बीजक पर मेरे निरतर चितन, मनन और प्रवचन बढ़ते गये। उधर पहली बीजक टीका के सस्करण पर सस्करण भी छपते गये। अतत: करीब बारह वर्षों के परिपाक विचार के बाद बीजक की आदि से अत तक पुन: व्याख्या लिखने का सकल्प दृढ़ हुआ। वर्ष के प्राय: आठ-नौ महीने भारत के विविध प्रदेशो के प्रवचन कार्यक्रमो मे भ्रमण करते हुए जाते हैं और तीन-चार महीने इलाहाबाद कबीर पारख सस्थान मे वर्षावास होता है। मैं सब जगह उसको अबाध गति से लिखता रहा।''

इस बीजक व्याख्या को लिखते समय गुरुदेव का मन सद्‌गुरु कबीर के तार्किक विचारो से और अपनी व्याख्यायित विषय वस्तु से अत्यन्त प्रसन्न रहा।

1988 ई0 मे आप भोपाल के कार्यक्रम मे थे। आपने अपनी डायरी मे अपने मन के भावो को लिखा। वह आपके ही शब्दो मे देखे—''इस समय मेरा परम प्रिय विषय है बीजक व्याख्या लिखना। इस समय समाधि सुख के बाद मेरा दूसरा सुख यही है। इस समय मेरा मन किसी स मिलने के लिए नही कहता, न प्रवचन देने के लिए, न भ्रमण करके प्रवचन देने के लिए और न अन्य विषयो पर लेख लिखने के लिए। इस समय केवल बीजक व्याख्या लिखने के लिए मेरे मन मे रुचि है। इसलिए इस धुवाधार कार्यक्रमो मे भी सुबह कुछ समय निकाल कर इसे लिखता हू। परन्तु कार्यक्रम देने, प्रवचन देने, यात्रा करने तथा कम से कम पारख-प्रकाश के लिए लेख लिखने एव उसके सपादन के लिए भी विवश हू। सद्‌गुरु कबीर देव के बीजक की पक्तिया कितनी मार्मिक, कितनी महान भाववाली, कितनी गहन गभीर तथा कितनो तथ्यपूर्ण हैं, यह उन पर सोचने से पता चलता है।'' (भोपाल 21/1/1988 ई0)

14 अक्टूबर, 1988 ई0 को कबीर पारख सस्थान इलाहाबाद मे इस ग्रथ को लिखकर गुरुदेव ने समाप्त किया। सन् 1969 ई0 म छपी बीजक पारख प्रबोधिनी टीका का परिशोधित, परिमार्जित एव परिवर्धित यह ग्रथ दो खडो मे बीजक पारख प्रबोधिनी व्याख्या नाम से सन् 1990 ई0 मे पाचवे सस्करण के रूप मे आ गया।

बीजक मे कुल ग्यारह प्रकरण हैं। जो इस प्रकार हैं—रमैनी, शब्द, ज्ञानचौंतीसा, विप्रमतीसी, कहरा, बसत, चाचर, बेलि, बिरहुली, हिण्डोला और साखी। व्याख्या के प्रथम खड मे दो प्रकरण रमैनी और शब्द हैं और दूसरे खड मे ज्ञानचौंतीसा से साखी तक सभी नौ प्रकरण हैं। यह दोनो खड कुल 1950 पृष्ठो मे है। इसकी भाषा अत्यन्त सरल और सरस है। इसे पढ़कर सभी मत-पथ के लोगो ने बारम्बार भूरि-भूरि प्रशसा की है। अब तक इसके कुल प्रथम खड का अठारहवा तथा द्वितीय खड का सोलहवा सस्करण निकल चुके हैं। इसकी लम्बी भूमिका श्रद्धेय सत श्री धर्मेन्द्र साहेब जी द्वारा लिखी गयी है, जो अत्यन्त मार्मिक एव तर्कपूर्ण है।

कबीर बीजक शिक्षा—सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जी ने एक बार श्री अभिलाष साहेब जी को बुलाकर कहा कि सद्‌गुरु कबीर साहेब के गथ बीजक से शिक्षाप्रद खास पदो का सग्रह करके उस पर टीका लिखो। आपने अपने गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य करके यह काम शुरू कर दिया। यह ग्रथ सात सोपानो मे तैयार हुआ, जिसके नाम इस प्रकार हैं—1. ससार की असारता, 2. चेतन जीवो की प्रशसा और उपदेश, 3. इन्द्रिय वासनाओ की प्रबलता एव निराकरण, 4. वचन सुधार, 5. हिसा मासाहार और भूत-प्रेत खानि का निराकरण, 6. भ्रम निराकरण और 7. सामूहिक विषय साखी।

अनेक मार्मिक दृष्टात, भजन, गजल आदि से यह ग्रथ सुसज्जित है। यह ग्रथ 1963 ई0 मे पहली बार छपा। W••9 ई0 तक इसके पाच सस्करण निकल चुके हैं।

कहत कबीर—सद्‌गुरु कबीर साहेब के भजनो का सग्रह ''कबीर भजनावली'' नाम से दो खडो मे कबीर पारख सस्थान से प्रकाशित हैं जिसके प्रथम खड मे 219 और दूसरे खड मे 282 पद हैं। कहत कबीर उन्ही 501 भजनो की टीका है। यह पुस्तक 2000 ई0 मे प्रकाशित हुई और 2007 ई0 तक इसके नौ सस्करण निकल चुके हैं।

कबीर परिचय—सद्‌गुरु कबीर साहेब के बाद उनकी परम्परा मे एक महान उद्‌भट विद्वान और वैराग्यवान पारखी सत श्री गुरुदयाल साहेब (लगभग V{}•-1760 ई0) हुए हैं। आपका कार्यक्षेत्र बिहार प्रदेश है। पटना नगर से पूर्व कुछ दूर पर फतुहा एक कस्बा है जिसमे विशाल कबीर मदिर है। यह पुराकाल से ही पारखी सतो का केन्द्र था। गुरुदयाल साहेब फतुहा मठ से थे।

पूज्य श्री गुरुदयाल साहेब कृत 'कबीर परिचय' के बारे मे गुरुदेव जी लिखते हैं कि—''इस ग्रथ मे अन्य भ्रातिया का भी निराकरण है परन्तु ग्रथकार

का प्रमुख विषय है जड़-चेतन अभिन्न अद्वैतवाद का निराकरण करके शुद्ध जीववाद का प्रतिपादन करना।''[1] इस ग्रथ मे कुल 346 साखिया हैं, जिनकी अस्सी (80) सदर्भों मे गुरुदेव ने टीका की है और ग्यारह स्वतत्र शब्द हैं। इसके भी ग्यारह सदर्भ हैं।

कबीर परिचय टीका 1975 ई0 मे पहली बार छपी है। अब तक (2007) इसके पाच सस्करण निकल चुके हैं।

पचग्रथी—पचग्रथी की टीका लिखने की भावना 1973 ई0 मे गुजरात से लौटकर छत्तीसगढ़ रीवा गाव मे भक्त श्री हिरामन जी के घर पर हुई। इसको गुरुदेव जी ने भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के घर कलकत्ता 23 जून, 1973 से लिखना शुरू किया और कई अन्य जगहो मे लिखते हुए अतत: दिसम्बर 1973 ई0 को कलकत्ता मे ही लगभग सौ दिनो मे लिखकर पूर्ण किया।

अठारहवी शताब्दी के मध्य गया (बिहार) के निवासी महान सत श्री रामरहस साहेब जी हुए जिन्होने पारख सिद्धान्त मे पचग्रथी नामक गथ की रचना की। ''पचग्रथी पद्यात्मक होते हुए भी यह बीजक की प्रथम भावात्मक टीका मानी जाती है। बीजक के सिद्धान्तो का इसमे विस्तार से वर्णन है तथा सारासार परखने-परखान के लिए परमत का वृहत् विवेचन है।''[2] इस ग्रथ मे पाच प्रकरण हैं—पचकोश, समष्टिसार, मानुष विचार, गुरुबोध तथा टकसार।

पंचकोश—इसमे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, ज्ञानमय तथा विज्ञानमय कोश से पृथक चेतन जीव की सत्ता बतायी गयी है।

समष्टिसार—इस प्रकरण म सामूहिकता की बात है और सक्षेप मे विविध मत-मतान्तरो का वर्णन है।

मानुष विचार—इसमे मनुष्य के कल्याण सबधी बाते हैं और सद्‌गुरु तथा असद्‌गुरु के लक्षण तथा अत मे नाना मत-मतान्तरो का अवलोकन है।

गुरुबोध—इसमे गुरु और शिष्य के प्रश्नोत्तर हैं तथा गुरु द्वारा प्राप्त बोध-स्वरूपज्ञान, बधन और मोक्ष के स्वरूप, जीवन्मुक्त की रहनी, मनुष्य की सर्वोच्चता, गृहस्थी धर्म तथा शिक्षा देने का ढग आदि गभीर बातो का वर्णन है। इसमे कुल छब्बीस सदर्भ हैं।

टकसार—इस प्रकरण मे कुल 98 सदर्भ हैं जिसमे स्वमत और परमत का विस्तृत वर्णन है और अत मे सत्ताइस रमैनिया हैं।

---

1. **कबीर परिचय की भूमिका से साभार ।**
2. **सदगुरु अभिलाष साहेब जी द्वारा लिखी टीका-पंचग्रंथी की भूमिका से ।**

पचग्रथी टीका सन् 1976 ई0 मे पहली बार छपी। इस समय इसका पाचवा सस्करण सन् 2011 मे छप चुका है। यह कुल 884 पृष्ठो का बहुसदर्भी गथ है।

बीजक टीका—यह पुस्तक बीजक पारख प्रबोधिनी व्याख्या से केवल भावार्थ को लेकर मूल सहित अलग से छाप दिया गया है। बीच-बीच मे कठिन विषय को सरल बनाने के लिए 'विशेष' अलग से आपने लिख दिया है। सन् 2007 ई0 तक इसके तेरह सस्करण छप चुके हैं।

बीजक प्रवचन—सद्‌गुरु कबीर के बीजक को सक्षेप मे समझने के लिए गुरुदेव ने इसका थोड़े मे भावार्थ लिखा है जो पारख प्रकाश पत्रिका के बीजक प्रवचन स्तम्भ मे बराबर छपता रहा। 1997 ई0 मे इसे पहली बार पुस्तक का रूप दिया गया। इस पुस्तक मे मूल वचन (पद) नही हैं केवल बीजक का भावार्थ है। बीजक के भावो को थोड़े मे पढ़ने और समझने के लिए यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण गथ है।

ज्ञानचौंतीसा—सद्‌गुरु कबीर के बीजक ग्रथ मे कुल ग्यारह अध्याय हैं जिसका तीसरा अध्याय 'ज्ञानचौंतीसा' है। साधको के पठन-पाठन की सरलता के लिए इसको अलग से छाप दिया गया है। 1987 ई0 मे इसका प्रथम प्रकाशन हुआ है जिसके 2010 तक चार सस्करण निकल चुके हैं।

ब्राह्मण कौन—यह पुस्तक बीजक व्याख्या का चौथा प्रकरण विप्रमतीसी है। इसमे ब्राह्मणो के गुण-दोषो का विवेचन किया गया है।

आत्म सयम ही राम भजन है—बीजक का पाचवा प्रकरण कहरा है जिसमे बारह कहरा पद हैं। जो बड़े ही मार्मिक एव विदग्धात्मक हैं। पाठको को पढ़ने मे सरलता हो इस उद्देश्य से इसे बीजक व्याख्या से अलग भी छाप दिया गया है।

राम नाम भजु लागू तीर—यह बीजक का छठा प्रकरण 'बसत' है। छह ऋतुओ मे बसत भी एक ऋतु है। इस ऋतु को कवियो ने राग-रग के दिन माना है, लेकिन सद्‌गुरु कबीर ने राग-रग का त्याग बसत माना है। इस पुस्तक मे इसी बात का इन बारह बसत पदो मे विशद विवेचन किया गया है।

आत्मधन की परख—बीजक के ये चार प्रकरण सबसे छोटे हैं 'चाचर, बेलि, बिरहुली और हिण्डोला'। चाचर होली पर गाया जाने वाला गीत है। साहेब कहते हैं—माया मानो सबके साथ फाग खेल रही है। इससे वही बचेगा जिसके मन का मोह समाप्त हो गया है। बेलि लता को कहते हैं। इसमे माया-लता से सद्‌गुरु साधक को सावधान कर रहे हैं। 'बिरहुली' प्रिय की विरह व्यथा से बना है। जो भक्त-साधक परमात्मा को अपने से अलग पुकारते हैं उनके लिए

इसमे सद्‌गुरु का निर्देश है। हिण्डोला झूला है। भ्रम के हिण्डोले मे झूलते जीव को उससे बचने का सकेत किया गया है। इसका प्रथम प्रकाशन 2010 मे हुआ।

कबीर अमृतवाणी—साखी ग्रथ सद्‌गुरु कबीर साहेब की साखियो का सग्रह माना जाता है। इसमे हजारो साखिया हैं। 1966 ई0 मे गुरुदेव जी ने इसमे से बीजक कसौटी के अनुकूल 1184 साखिया छाटकर टीका कर दिया जो 'कबीर अमृतवाणी' के नाम से पहली बार 1967 ई0 मे प्रकाशित हुआ। यह पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई। अब तक (2013 ई0) इसके बीसवा सस्करण निकल चुके हैं। इसमे कुल इकसठ विषयो पर शिक्षा दी गयी है।

कबीर की उलटवासिया—सद्‌गुरु कबीर एक निराले सत हैं। जिनकी अनेक पहचान है। उसी मे से मुख्य उनकी उलटवासिया हैं। यह पुस्तक दो भागो मे है, उसमे पहला भाग 'बीजक बाह्य' है और दूसरा भाग 'बीजक गर्भित'। प्रयाग विश्वविद्यालय के अनेक छात्र-छात्राओ और अन्य पाठको के आग्रह से गुरुदेव ने यह काम किया। इसकी टीका सन् 1996 ई0 मे हो गयी जो 1997 ई0 मे प्रकाशित हुई। अब तक (2014) इसके बारह सस्करण हो चुके हैं।

न्यायनामा—पूज्य सत श्री निर्मल साहेब कृत न्यायनामा छोटा ग्रथ है, कितु इसकी विषय वस्तु अत्यन्त तर्कपूर्ण एव चुटीली है। इसमे जड़-चेतन का निर्णय करके ईश्वरवाद का निराकरण है।

निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर—यह ग्रथ पूज्य सत श्री निर्मल साहेब का उपलब्ध सम्पूर्ण वाग्मय है। इसमे कुल पाच खण्ड हैं—विविध, सशय खडन, न्यायनामा, अल्लिफनामा तथा सत्यासत्य विवेचनामृत।

इस पूरे गथ मे भक्ति, स्वरूपज्ञान, मन को प्रबोध, ईश्वर विवेचन, अभक्ष्य निन्दा, फकीरी, मोक्ष आदि विषय हैं और न्यायनामा तो समस्त शास्त्रो का सार ही है। पूरा ग्रथ सरल एव मधुर भाषा मे व्यक्त है। इस ग्रथ को गुरुदेव 1 जून, 2007 ई0 मे कबीर नगर इलाहाबाद मे लिखना शुरू किये और 20 अक्टूबर 2007 ई0 को लिखकर समाप्त कर दिये। जो सन् 2008 ई0 मे पहली बार छपा।

योगदर्शन भाष्य—यह ग्रथ महर्षि पतजलि कृत 'योगदर्शन' का भाष्य है। यह ग्रथ साधको के लिए अत्यत प्रेरणाप्रद एव उपादेय है। 2001 प्रयाग कुभ मेला होने के बाद गुरुदेव छत्तीसगढ़ के कार्यक्रमा मे गये और 11 फरवरी को नवापारा कबीर मदिर मे इसे लिखना शुरू कर दिये। छत्तीसगढ़ भ्रमण के बाद आप गुजरात गये और वही 21 अप्रैल, 2001 को बड़ौदा जिला के नाना अमादरा गाव मे इसे लिखकर समाप्त किये।

महर्षि पतजलि कृत योगदर्शन का अतिम फल है कैवल्य की प्राप्ति और कैवल्य की सिद्धि असम्प्रज्ञात समाधि से ही हो सकती है। इसके लिए उन्होने ग्रथ के आरम्भ मे ही दो सूत्र कह दिया है—1. योगश्चित्तवृत्ति निरोधः, 2. तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्'' अर्थात चित्त की वृत्तियो को रोक देना योग है। इसी से द्रष्टा जीव की अपने स्वरूप मे स्थिति होती है। विभूतिपाद की अलौकिक और चमत्कारी बातो का गुरुदेव ने खुलकर खडन किया है।

धनी धर्म साहेब के अमृत उपदेश—सद्गुरु कबीर के बाद कबीरपथ के चार गुरु प्रसिद्ध हैं—श्री श्रुतिगोपाल साहेब, श्री भगवान साहेब, श्री जगन्नाथ (जागू) साहेब और श्री धर्म साहेब। पूर्व के तीन गुरुओ की वाणी नही मिलती लेकिन पूज्य श्री धर्म साहेब की वाणी मिलती है। आपकी वाणिया मे ज्ञान, भक्ति, वैराग्य की त्रिवेणी प्रवाहित है। इस पुस्तक मे श्री धर्म साहेब जी के 100 पदो की टीका है और इसे गुरुदेव जो ने नवबर 2011 मे दिल्ली की तरफ कार्यक्रमो के दौरान लिखा था।

तथागत बुh क्या कहते हैं?—तथागत बुद्ध के शरीरात क साढ़े चार सौ वर्ष बाद उनकी वाणियो का सकलन किया गया। जिसे त्रिपिटक कहा गया। त्रिपिटक का अर्थ है—ज्ञान की तीन पिटारिया। वे हैं—सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक। सुत्त पिटक के खुद्दक निकाय के अतर्गत एक ग्रथ है धम्मपद, जा चमत्कार एव अलौकिकता से रहित पूरा-का-पूरा साधनात्मक है। तथागत बुद्ध क्या कहते हैं? इसी धम्मपद की व्याख्या है।

इसे गुरुदेव ने 11 नवम्बर, 2003 ई0 मे कबीरनगर इलाहाबाद मे लिखना शुरू किया और 5 मार्च, 2004 ई0 के रात्रि नौ बजे छत्तीसगढ़ के बेलौदी ग्राम (दुर्ग) मे लिखकर समाप्त किये।

2004 ई0 मे यह ग्रथ प्रकाशित हुआ और आज (2011) इसका चौथा सस्करण चल रहा है।

श्रीराम लक्ष्मण प्रश्नोत्तर शतक—यह छोटी पुस्तिका अयोध्या के वैष्णव सत श्री रघुनाथदास जी महाराज कृत 'विश्राम सागर' का अश है। इसके मूल मे ही सौ प्रश्नोत्तर हैं। इसको गुरुदेव ने गद्य प्रश्नोत्तर मे ही टीका कर दिया। यह सन् 1967 ई० मे पहली बार छपी और अब तक (2008) इसके दस सस्करण निकल चुके हैं।

गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी की रचनाओं पर टीका

सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी की कुल चार रचनाए हैं—विवेक प्रकाश, रहनि प्रबोधिनी, बोधसार और गुरुपारख बोध। इन चारो की गुरुदेव जी द्वारा टीका हो चुकी है।

विवेक प्रकाश—यह गद्य मे लिखा गया गुरुदेव जी का प्रथम ग्रथ है जो अत्यन्त सरल और आकर्षक है। इसमे लगभग सवा सौ दृष्टात, कवित्त, छन्द और करीब सौ गीत रखे गये हैं। इसमे जड़-चेतन का भिन्न विवेक, जगत की अनादिता, पुनर्जन्म, कर्मफल भोग, बध-मोक्ष, सदाचार, दैवी सम्पदा, स्वरूपज्ञान, स्वरूपस्थिति तथा उसकी रहनी आदि का विस्तृत वर्णन है।

यह ग्रथ वि0 स0 W•17 तदनुसार 1960 ई0 मे पहली बार छपा और इस समय 2010 ई0 मे इसका छठवा सस्करण चल रहा है।

रहनि प्रबोधिनी—इस ग्रथ मे कुल चार प्रकरण हैं—दुख शमन चालीसा, सदाचरण षोडसी, छन्द सप्तामृत और शब्द पचीसी। इसमे आरम्भ के दो प्रकरण दुख शमन चालोसा और सदाचरण षोडसी का सक्षिप्त अर्थ करके उसके सभी विषयो पर शका उठाकर उसका समाधान किया गया है। तीसरा प्रकरण छन्द सप्तामृत है। इसमे कुल सात छन्द हैं जो मानव जीवन के सम्बन्ध मे हर शिक्षा का उल्लख करते हैं। चौथा प्रकरण शब्द पचीसी है। इसमे पचीस शब्द हैं। यह ग्रथ सन् 1962 ई0 मे पहली बार छपा जिसका पाचवा सस्करण 2012 ई0 मे प्रकाशित हुआ।

बोधसार—बोधसार मे कुल छह खण्ड हैं। इसमे जड़-चेतन निर्णय, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार आदि सभी विषयो पर सुन्दर विवेचन किया गया है। यह अत्यन्त सरल, रुचिकर एव प्रेरणाप्रद पुस्तक है। इसमे सौ से अधिक सुन्दर एव आकर्षक दृष्टात हैं।

गुरुपारख बोध—इसमे आचार, विचार, सदाचार और भ्रम निवारण परक विशेष बाते हैं जो सबके लिए उपयोगी हैं। यह ग्रथ सन् 1971 ई0 मे पहली बार छपा जिसके आज तक आठ सस्करण हो चुके हैं।

गुरुदेव श्री विशाल साहेब की रचनाओं पर टीका

बीसवी शताब्दी मे उत्तर प्रदेश बाराबकी जिले मे सद्गुरु श्री विशाल साहेब के नाम से एक परम वैराग्यवान महान युगपुरुष सत हो चुके हैं। उनकी चार मौलिक रचनाए हैं—भवयान, मुक्तिद्वार, सत्यनिष्ठा और नवनियम। इन चारो गथो को सयुक्त रूप मे 'विशाल वचनामृत' के नाम से भी जाना जाता है। इन सभी गथो की विस्तृत टीका पूज्य श्री प्रेम साहेब जी ने की है किंतु उन्ही के आग्रह से पूरे विशाल वचनामृत की टीका गुरुदेव जी ने सक्षिप्त रूप मे की है जो कबीर पारख सस्थान से प्रकाशित है।

भवयान सटीक—इसमे कुल सात प्रकरण हैं। इसका पहला और दूसरा प्रकरण ''विनय विधान और भक्ति-भरण'' हैं जो विशेष भक्ति पक्ष के साथ-

साथ ज्ञान-वैराग्य से ओत-प्रोत हैं। तीसरे प्रकरण ''इच्छा परीक्षा'' मे मन की इच्छाओ का विवेचन है। ''जगत जहर'' मे जगत की वास्तविकता पर प्रकाश डाला गया है। पाचवा प्रकरण 'वैराग्य वित्त' है। इसमे वैराग्य के प्रेरक वचन भरे हैं। छठा 'साखी सुधा' और 'अपना बोध' है। इसमे विषय-वासनाओ को निवृत्ति, स्वरूप-बोध और जीवन्मुक्ति की रहनी बतायी गयी है। अतिम सातवा प्रकरण जड़-चेतन निर्णय है। इसमे जड़ तत्वो से सर्वथा पृथक चेतन जीवो का अस्तित्व विविध युक्तियो से बताया गया है। अत मे मूलकार गुरु उपकार और सद्‌गुरु कबीर की याद करते हुए गथ को समाप्त करते हैं। इसकी टीका का प्रथम सस्करण सन् 2007 ईस्वी मे हुआ है।

मुक्तिद्वार सटीक—इसमे कुल सात प्रकरण हैं—1. सद्‌गुण शतक, 2. जगत अनादि शतक, 3. स्वतत्र जीव शतक, 4. बध मोक्ष शतक, 5. निवृत्ति साहस शतक, 6. शाति शतक और 7. शब्द विभाग।

यह ग्रथ अपने नाम के अनुरूप ही जीव को कल्याण की मजिल तक पहुचाता है। इसकी टीका क्रमशः पारख प्रकाश मे छपती रही। पूरी टीका पारख प्रकाश मे छप जाने के बाद पुस्तकाकार पहली बार सन् 1997 ई0 मे छपी। इस समय (2008 ई0) इसका दूसरा सस्करण चल रहा है।

सत्यनिष्ठा और नवनियम—सत्यनिष्ठा मे मानव जीवन के अनेक पहलुओ पर विविध शिक्षा देते हुए विशेष रूप से इसमे गुरु निर्णय किया गया है। नव नियम मे साधको के लिए विशाल देव ने नव नियम दिया है जो मुमुक्षुओ के लिए अमृत स्वरूप है। गुरुदेव ने इसकी टीका 2003 ई0 मे लिखी है। ये दोनो ग्रथ एक मे मिलाकर सन् 2005 ई0 मे पहली बार छपा है।

साधकों के लिए विशेष

गुरुदेव की कुछ ऐसी पुस्तके हैं जो विशेष रूप से कल्याण इच्छुक साधको का मार्गदर्शन करती हैं। मोक्षपथगामी तो इसमे डुबकी लगाते ही हैं सामान्य नर-नारी भी इन ग्रथो का खूब अध्ययन-मनन करते हैं। वे ग्रथ इस प्रकार हैं—

मोक्ष शास्त्र—1988 ई0 मे गुरुदेव जी श्रद्धेय सत श्री प्रेम साहेब जी के दर्शन करने के लिए मूजापुर गये। एक दिन आप पूज्य श्रो प्रेम साहेब जी के साथ बाहर भ्रमण करने गये। साथ मे सत श्री उत्साह साहेब और सत श्री निष्ठा साहेब भी थे। वहा से लौटते समय सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब जी की वाणियो पर चर्चा हो रही थी। चलते-चलते ही पूज्य श्री प्रेम साहेब जी गुरुदेव के सामने खड़े हो गये। उन्होने कहा—सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब की वाणियो पर आप एक सक्षिप्त गथ लिखिये। आपके आग्रह करने पर गुरुदेव ने एक वर्ष बाद इसे गुजरात मे लिखा।

यह ग्रथ सद्गुरु विशाल साहेब के 'विशाल वचनामृत' का सक्षिप्त ज्ञानकोष है जो मोक्ष के समस्त अगो का वर्णन करता है। इसमे कुल ग्यारह अध्याय और 223 सदर्भ हैं। प्रथम अध्याय मे सद्गुरु श्री विशाल साहेब के जीवन पर स्वतत्र रूप से गुरुदेव ने लिखा है और अन्य सभी अध्याय विशाल देव की वाणियो के आधार पर निबधात्मक है।

यह ग्रथ सन् 1991 ई0 मे पहली बार छपा और अब तक (2008 ई0) इसके तीन सस्करण हो चुके हैं।

कल्याण पथ—सद्गुरु श्री विशालदेव के जीवन काल मे गुरुदेव समय-समय से उनके दर्शन करने जाया करते थे। वे आपसे कभी-कभी साधना सम्बन्धी प्रश्न पूछा करते थे। गुरुदेव उनके सामने जो बोलते थे उसी को बाद मे लिख लिया करते थे। इस गथ के अधिकतम लेख विशाल देव के सामने बोले गये विचार हैं और कुछ एकान्त साधना मे लिखे गये अनुभव विचार हैं। इसमे कुल चौवन (54) लेख हैं। इसका पहला सस्करण 1967 ई0 मे निकला और इस समय (2011) इसका आठवा सस्करण चल रहा है।

शाश्वत जीवन—यह पुस्तक कबीर पारख सस्थान से निकलनेवाली 'पारख प्रकाश' पत्रिका के 'परमार्थ पथ' स्तम्भ के लेखो का सग्रह है। सभी लेख छोटे हैं कितु अत्यन्त सारगर्भित और मुमुक्षु साधको के लिए पठनीय एव मननीय हैं। इसमे कुल तिहत्तर (73) लेख हैं। यह पुस्तक सन् 1986 ई0 मे पहली बार छपी और 2010 ई0 तक इसके छः सस्करण निकल चुके हैं।

सहज समाधि—यह पुस्तक कबीर बीजक के पाचवे प्रकरण कहरा के पहले कहरा की व्याख्या है, जो बीजक व्याख्या से लेकर स्वतत्र रूप मे छापी गयी है। पीछे के अन्य चार पद बीजक के बाहर से हैं। 1988 ई0 से अब तक (W•13) इसके सात सस्करण निकल चुके हैं।

ब्रह्मचर्य जीवन—किसी भी क्षेत्र मे मनुष्य को महान बनाने का आधार ब्रह्मचर्य ही है। ब्रह्मचर्य का अर्थ ही होता है—श्रेष्ठ आचरण। इसी श्रेष्ठ आचरण के लिए इस ग्रथ के ग्यारह अध्यायो और परिशिष्ट मे कुल 231 सदर्भो मे पुष्कल विचार दिया गया है।

इसमे गृहस्थ, विरक्त, किशोर, युवक, नर-नारी सभी के लिए ब्रह्मचर्य साधना के विषय मे उपयुक्त सामग्री है। इसको गुरुदेव जी ने 1968 ई0 मे छत्तीसगढ़ के कार्यक्रमो मे लिखा है जो 1969 ई0 मे प्रकाशित हो गयी। अब तक (2013) इसके बारह सस्करण निकल चुके हैं।

गुरुदेव की डायरिया—1993 ई0 मे कबीर आश्रम इलाहाबाद के प्रथम विशेष ध्यान शिविर के समय ब्रह्मचारी श्री भूषण साहेब (वर्तमान मे सत श्री देवेन्द्र साहेब) ने गुरुदेव जी से कहा—गुरुदेव! आप साधना सम्बन्धी कुछ पक्तिया सूत्ररूप मे लिख दिया करे तो उसे हम श्यामपट्ट पर उतार दिया करेगे, जिसे पढ़कर ध्यानार्थियो को लाभ मिलेगा। गुरुदेव रोज लिख दिया करते थे। ध्यान शिविर के बाद श्री भूषण साहेब जी एक सादी डायरी लेकर गुरुदेव के पास पहुचे और निवेदन करने लगे कि गुरुदेव, आप प्रतिदिन कुछ लिख दिया करे तो अच्छा होगा। तभी से (छह सितम्बर 1993 ई0) आप प्रतिदिन सुबह ध्यान के पूर्व या बाद मे एक पेज कुछ लिख दिया करते हैं जो साधको, जिज्ञासुओ के लिए अमृत स्वरूप होता है। गुरुदेव की डायरी को थोड़ा ही पढ़ लेने से मन को एक नयी शक्ति मिल जाती है। इसके सभी वचन समाधि की भाषा मे लिखे गये हैं, साथ-साथ समसामयिक घटनाए और तात्कालिक विचार भी इसमे आते रहत हैं। अबतक गुरुदेव की कुल बारह डायरिया छप चुकी हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं—

V.	बूद बूद अमृत	-	V~~X-94 ई0
W.	सब सुख तेरे पास	-	1995 ई0
X.	बसे आनन्द अटारी	-	1996 ई0
y.	छाड़हु मन विस्तारा	-	1997 ई0
z.	हसा सुधि करु अपनो देश	-	1998 ई0
{.	घूघट का पट खोल	-	1999 ई0
|.	उड़ि चलो हसा अमरलोक को	-	2000 ई0
}.	समुद्र समाना बूद मे	-	2001 ई0
~.	मेरी और ह्वेन सा की डायरी	-	2002 ई0
V•.	बदे करि ले आप निबेरा	-	2003 ई0
VV.	भूला लोग कहैं घर मेरा	-	2004 ई0
VW.	ऊची घाटी राम की	-	2005 ई0
13.	मन मस्त हुआ तब क्यो बोले	-	2006 ई०

इन डायरियो मे 'मेरी और ह्वेन सा की डायरी' मे प्रारभ मे प्रसिद्ध चीनी यात्रो बौद्ध भिक्षु ह्वेन सा की भारत यात्रा का सक्षिप्त विवरण है, जो ह्वेन सा की डायरी के आधार पर लिखा गया है। और 'बदे करि ले आप निबेरा' मे बाबर के भारत आगमन का विवरण है, जो बाबरनामा से लिया गया है। बाद मे साधनात्मक विचार है।

लाओत्ज़े क्या कहते हैं?—आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व चीन मे लाओत्ज़े नाम से एक महान सत हुए हैं। सत लाओत्ज़े चीन के तात्कालिक सम्राट के अभिलेखागार के प्रमुख अधिकारी थे। उन्होने इस उच्च पद को छोड़कर एकान्त साधना का जीवन अपनाया था। उनकी साधना और उपदेशो से चीन के लोग प्रभावित हुए।

उनकी पुस्तक का नाम है 'ताओ ते चिग'। जो चीनी और इगलिश भाषा के विद्वान थे उन्होने इसका इगलिश भाषा मे अनुवाद किया। प्रामाणिक पुस्तक 'रिचर्ड विलहम' के इगलिश अनुवाद से गुरुदेव के एक ब्र0 साधक श्री देवेन्द्र साहेब ने हिन्दी अनुवाद किया, उसी से गुरुदेव ने भावार्थ और भाष्य किया। इस पुस्तक मे कुल इक्यासी (81) अध्याय हैं। इसके लेखन मे श्री देवेन्द्र साहेब ने गुरुदेव जी का विशेष सहयोग किया है। उन्होने गुरुदेव जी की आज्ञा से 'सत लाओत्जे, उनकी पुस्तक और उसका प्रभाव' नाम से प्रारम्भ मे ही लम्बा आलेख लिखा है जो खोजपूर्ण है।

इसको गुरुदव जी ने अगस्त, 2008 ई0 के कबीर आश्रम इलाहाबाद मे लिखना शुरू किया और 14 नवम्बर, 2008 ई0 को डिचाऊ कला, नई दिल्ली मे सम्पूर्ण कर दिया। जुलाई, 2009 ई0 मे ही इसका प्रथम सस्करण तथा द्वितीय सस्करण 2013 मे निकला।

समीक्षात्मक ग्रथ

धर्म के क्षेत्र मे कुछ ऐसी पुस्तकें हैं जो साधनात्मक और सकारात्मक विचार देते हुए भी बीच-बीच मे भ्रामक विचार देते हैं। जिससे पाठका मे सदेह खड़ा हो जाता है कि 'यह सच कि वह सच'। आपने उन ग्रथो के साधनात्मक और सकारात्मक पक्षो को लिया और भ्रामक पक्षो को छोड़ दिया। साथ-साथ भ्रामक पक्षो का खुलकर समीक्षा की। वे ग्रथ इस प्रकार हैं—

रामायण रहस्य—भारत और भारत के बाहर जितनी भी रामायण बनी हैं, रामायण रहस्य म सबका लेखा-जोखा है और रामकथा का आदि स्रोत कहा से आया इन सब बातो का भी इसमे विशद विवेचन किया गया है। इस विवेचन मे डॉ0 फादर कामिल बुल्के द्वारा लिखित 'रामकथा' से पुष्कल सामग्री उद्धृत की गयी है। वाल्मीकीय रामायण, अध्यात्म रामायण और रामचरितमानस के कथनो का इसमे तुलनात्मक अध्ययन किया गया है और हर सदर्भ के अत मे समीक्षा है। ग्यारह अध्यायो का यह एक खोजपूर्ण गथ है। 1988 ई0 मे इसका प्रथम प्रकाशन हुआ। 2012 मे इसका आठवा सस्करण प्रकाशित है।

महाभारत मीमांसा—महाभारत भारतवर्ष का दूसरा वृहत्काय महाकाव्य है जिसमे एक लाख श्लोक हैं। इसमे राजा भरत के वशज कौरव-पाडव की जीवन गाथा तो है ही, इसी मे कृष्ण का उपदेश गीता भी है और एशिया की सैकड़ो गाथाओ का इसी मे समावेश होता रहा। इस विशाल ग्रन्थ मे अनेक चमत्कार, भ्रम और अतिशयोक्तिपूर्ण बाते होते हुए भी ज्ञान के बहुत रत्न भरे हुए हैं जो मानव समाज के लिए कल्याणकारी हैं।

19 अगस्त, 2010 को इसे आपने लिखना शुरू किया। इसमे गुरुदेव ने महाभारत के मुख्य उपाख्यानो को लिखकर प्रत्येक सदर्भ मे अपनी मीमासा लिखी है। इसे आप छत्तीसगढ़, काठमाडो, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, कोलकाता आदि के व्यस्त कार्यक्रमो मे भी लिखते रहे। 12 अगस्त 2011 इलाहाबाद मे इस ग्रन्थ को पूरा लिखकर आपने सम्पन्न किया। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 2012 मे हुआ।

गीतासार—गीता कुल सात सौ (700) श्लोको का ग्रथ है। जिसमे गुरुदेव ने 326 महत्त्वपूर्ण श्लोको पर सरल टीका-व्याख्या की है। इस ग्रथ की वृहत् भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और तथ्यपूर्ण है।

इसकी रचना गुरुदेव ने उत्तर प्रदेश गोडा जिला के तौधकपुर कबीर मदिर म शुरू की और गुजरात के नाना अमादरा ग्राम मे पूरा ग्रथ लिखकर सम्पन्न हुआ। इसका प्रथम प्रकाशन 1975 ई0 मे हुआ और अब तक इसके छह सस्करण निकल चुके हैं।

उपनिषद् सौरभ—भारतवर्ष के प्राचीनतम अध्यात्म ग्रथ उपनिषदे हैं जिनमे ग्यारह ज्यादा प्रामाणिक हैं। इनमे कर्मकाण्ड का अश तो है, लेकिन ज्ञान के हीरे-मोती भी भरे हैं। इन ग्यारह उपनिषदो मे से गुरुदेव जी ने काम की बातो को शोध कर यह ग्रथ-रत्न तैयार किया। जो पहली बार सन् 1994 ई0 मे छपा है। अब तक इसके छः सस्करण निकल चुके हैं।

मानसमणि—यह ग्रथ गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज कृत 'रामचरित मानस' से सकलित है। गुरुदेव ने इसमे रामायण के तेईस मुख्य पात्रा के आचरण-प्रवचन से अधिक उपयोगी शिक्षाओ का सग्रह किया है। मानस के मूल्यवान तत्त्वो का सग्रह होने से इसका नाम 'मानसमणि' रखा गया है। जो 1967 ई0 मे प्रथम बार पाठको के कर-कमलो मे आया। आज (2011) यह दसवी बार छप चुका है।

तुलसी पंचामृत—गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज की पाच पुस्तको—तुलसी सतसई, दोहावली, विनय पत्रिका, कवितावली और वैराग्य सदीपनी मे से

विशेष उपयोगी अश का सकलन कर उसकी सरल टीका कर 'तुलसी पचामृत' नाम से 1967 ई0 मे पहली बार छपाया। इस समय (201•) इसका आठवा सस्करण चल रहा है।

कृष्ण कौन?—यह पुस्तक 'ससार के महापुरुष' ग्रथ से लेकर 'स्वतत्र रूप मे छपाया गया है। इस छोटी-सी पुस्तिका मे बताया गया है कि महाराज श्री कृष्ण एक क्रातिकारी, महान, साहसी युगपुरुष थे। वे किसी प्रकार से रास नही किये। उनके जीवन मे रास जोड़ना उनके साथ और हिन्दू समाज के साथ बहुत बड़ा अपराध करना है।

श्री कृष्ण और गीता—गीतासार की यह अलोचनात्मक भूमिका है। इसमे महाराज श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये उपदेश के बाद होने वाले परिणाम पर चर्चा की गयी है। अत मे बताया गया है कि निष्काम कर्म ही शाति के साधन हो सकते हैं।

वेद क्या कहते हैं?—गुरुदेव ने चारो वेदो को एक साथ हिन्दी मे महत्त्वपूर्ण एव शिक्षाप्रद विषयो पर भाष्य किया है। इसमे वैदिक काल के तात्कालिक रहन-सहन, रीति-रिवाज, पारिवारिक एव सामाजिक एकता, राष्ट्रीयता, प्राकृतिक शक्तियो को देव मानकर उसकी उपासना, दर्शन, अध्यात्म आदि का वर्णन है। इसको तीन वर्षावास मे गुरुदेव ने कबीर नगर इलाहाबाद मे लिखा।

चारो वेदो के महत्त्वपूर्ण अशो पर 121 सदर्भों का यह वृहत् ग्रथ है। यह ग्रथ 2003 ई0 मे पहली बार छपा और इतना लोकप्रिय हुआ कि दूसरे वर्ष ही 2004 ई0 मे इसका दूसरा सस्करण निकालना पडा। अब तक (2007) इसके तीन सस्करण निकल चुके।

वैदिक राष्ट्रीयता—यह पुस्तक 'वेद क्या कहते हैं?' मे से तीन सदर्भों को अलग से छापकर बनायी गयी है। वे सदर्भ हैं—मातृभूमि, राजा, सभा एव समिति।

शंकराचार्य क्या कहते हैं?—यह ग्रथ आद्य स्वामी शकराचार्य की मौलिक रचना 'विवेक चूडामणि' से मुख्यत: स्वरूपबोध, रहनी और स्थिति परक अशो को लेकर लिखा गया है। इस ग्रथ मे कुल 470 श्लोको का गुरुदेव ने भाष्य किया है जो छाछठ (66) सदर्भों मे है। इसका लेखन 19 अगस्त, 2006 ई0 मे इलाहाबाद म गुरुदेव ने शुरू किया और 8 मार्च, 2007 ई0 को छत्तीसगढ़ के आमदी (धमतरी) गाव की भक्तिमती छबि देवी के घर समाप्त किया। जो अक्टूबर, 2007 ई0 मे प्रकाशित होकर जन-समाज मे आ गया। अब (2009) इसका दूसरा सस्करण छपा है।

अष्टावक्र गोता—अष्टावक्र गीता वेदान्त का मुख्य ग्रन्थ है। इसका लेखक एक उच्च कोटि का परम वैराग्यवान जीवन मुक्त सत था। इसमे केवल कल्याणार्थियो के लिए साधना की उच्चतम बातो का वर्णन किया गया है। बीच-बीच मे इसमे अद्वैत ब्रह्मवाद (जड़-चेतन एकता) की बात भी है, गुरुदेव ने भाष्य करते समय ऐसे मत्रो को छोड़ दिया है। शान्ति इच्छुक साधको के लिए यह भाष्य भवसागर मे जहाज का काम करता है। इसको पढ़ते-पढ़ते ही चित्त ससार से सिमिटकर अपने-आप मे लीन होने लगता है। इसको गुरुदेव ने 2 जुलाई 2010 कोलकाता मे लिखना शुरू किया और वहा से आकर 25 जुलाई 2010 गुरु पूर्णिमा को इलाहाबाद आश्रम मे मात्र चौबीस दिनो मे लिखकर समाप्त किया। इसका प्रथम प्रकाशन अक्टूबर सन् 2010 मे हुआ।

प्रवचन आलेख

कोई भी लेख लिखा जाता है एकान्त कमरे मे बैठकर और प्रवचन दिया जाता है लोगो के बीच मे बैठकर। इसलिए लिखने की अपेक्षा प्रवचन अधिक प्राणवान एव जीवन्त होता है क्योकि प्रवक्ता श्रोताओ की वर्तमान आवश्यकता के अनुसार बोलता है।

सद्‌गुरु श्री अभिलाष साहेब जी वर्ष मे आठ महीने भमण कार्यक्रमो मे ही रहते हैं। कार्यक्रमो मे दूर-दूर से हजारो लोग आकर श्रद्धा-भक्ति से आपके विचारो से लाभ उठाते हैं। आपके कुछ प्रवचनो को लिपिबद्ध करके पुस्तको के रूप मे छाप दिया गया है। गुरुदेव के अधिकतम प्रवचन की पुस्तको को लिपिबद्ध करने मे श्री रामकेश्वर जी का परिश्रम एव उत्साह अत्यन्त प्रशसनीय है। वे पुस्तके हैं—

स्वभाव का सुधार—इस पुस्तक मे कुल तेरह सदर्भ हैं। ये सभी सदर्भ भिन्न-भिन्न जगहो मे दिये गये गुरुदेव के प्रवचन हैं। जिसका आठवा सदर्भ 'स्वभाव का सुधार' नाम से ही है। मनुष्य अपने तन-मन की आदतो से ही दुखी है, इसी पर विजय पाने के लिए इस प्रवचन मे अनेक युक्ति-प्रयुक्तिया दी गयी हैं।

गृहस्थ धर्म—गृहस्थी ही पूरे मानव समाज का आधारस्तम्भ है। इसलिए गृहस्थी मे सुधार अत्यन्त आवश्यक है। अगर गृहस्थ अपने धर्म को समझ ले और उसपर आरूढ़ हो जाये तो गृहस्थी सुखी हो जाये। गृहस्थ का क्या धर्म है इसको बतानेवाले अत्यन्त उपयोगी प्रवचनो का सग्रह यह पुस्तक है। इस पुस्तक मे कुल तेरह प्रवचन हैं।

सत्य की खोज—खोजनेवाला ही सत्य है। अर्थात मनुष्य (जीव) स्वय सत्य है। मनुष्य बाहर अगणित उपलब्धिया खोज निकालता है कितु अपने आपको ही खोये रहता है। प्रस्तुत पुस्तक मे गुरुदेव के आत्मकल्याणपरक प्रवचनो का सग्रह किया गया है। इसमे कुल तेरह प्रवचन हैं।

कबीर खड़ा बाजार में—सद्‌गुरु कबीर ने अपने विचार कही एकान्त जगह म बैठकर नही लिखा, बल्कि उन्होने सत्य को निर्भयतापूर्वक भीड़ मे हजार के बाजार मे कहा है। इस पुस्तक मे भी गुरुदेव जी द्वारा विभिन्न स्थलो मे दिये गये क्रातिकारी प्रवचनो का सग्रह है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एव कल्याणकारी हैं।

सुख सागर भीतर है—सुख का स्रोत बाहर नही बल्कि भीतर है। इसके लिए आत्म परिचय की आवश्यकता है। इस पुस्तक के सभी प्रवचन 18 से 25 अगस्त, 2007 ई0 मे साप्ताहिक ध्यान शिविर कबीर आश्रम नवापारा, राजिम, रायपुर मे दिये गये हैं। इसमे कुल चौदह प्रवचन हैं जो मन की शान्ति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इसका प्रथम प्रकाशन 2011 ई0 मे हुआ।

मन की पीड़ा से मुक्ति—मनुष्य जीवन मे मन की पीड़ा सबसे अधिक दुखद है। इस दुख का निस्तार कैसे हो? प्रस्तुत पुस्तक मे इसी विषय पर गुरुदेव जी ने अपने 23 प्रवचनो मे विस्तार से विवेचन किया है। ये सभी प्रवचन 2007 ई0 मे कबीर आश्रम, सूरत और कबीर आश्रम, इलाहाबाद मे आयोजित ध्यान शिविर मे दिये गये हैं। जिसका प्रथम प्रकाशन सन् 2011 ई0 मे हुआ।

अमृत कहा है?—स्व स्वरूप ही अमृत है, जिसका अनुभव मन की निर्मलता से होता ह। वस्तुत: निष्कामता, विनम्रता, सहनशीलता, सतोष एव प्राणिमात्र के प्रति प्रेम ही अमृत है। इस पुस्तक के सभी प्रवचन 1 से 7 अगस्त, 2006 ई0 कबीर आश्रम नवापारा राजिम (रायपुर) के ध्यान शिविर मे दिये गये हैं। इसमे कुल 16 प्रवचन है। यह पुस्तक 2011 मे पहली बार छपी।

तेरा साहेब है घट भीतर—अपने प्रियतम को हम बाहर खोज रहे थे। लेकिन सद्‌गुरु ने बताया कि बाहर नही हृदय मे खोजो। जब ससार से लौटकर अन्दर मैंने देखा तो परमानन्द की अनुभूति हुई। ऐसे ही दिव्य आनन्द सागर मे बैठकर दिये गये प्रवचनो का सग्रह यह पुस्तक है। ये सभी प्रवचन 16 से 24 अगस्त, 2006 मे कबीर आश्रम, इलाहाबाद के ध्यान शिविर मे दिये गये हैं। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 2011 ई0 मे हुआ।

कबीर का प्रेम—यह पुस्तक 21 जनवरी, 2000 ई0 को गाधी भवन भोपाल मे दिया गया गुरुदेव का एक प्रवचन है।

धर्म और मजहब—धर्म और मजहब मे जमीन-आसमान का अतर है। धर्म शाश्वत है और मजहब बदलनेवाला होता है। धर्म स्वतत्र होता है कितु सारे मजहब धर्म की ही आड़ मे चलते हैं। यह पुस्तक गुरुदेव जी के सात प्रवचनो का सग्रह है। यह पुस्तक 2000 ई0 मे छपकर पाठको तक पहुची।

जीवन का सच्चा आनन्द—जीवन का सच्चा आनन्द इन्द्रिय-सुख मे नही बल्कि आत्मसुख 'निष्काम दशा' मे है। इसी बात को पुष्ट करनेवाले गुरुदेव के सात प्रवचनो का यह सग्रह है। यह पुस्तक सन् 2000 ई0 मे छपकर प्रकाशित हुई।

कबीर सदेश—सन् 1977-1978 ई0 के आस-पास गोरखपुर के रेलवे विभाग ने गुरुदेव का प्रवचन कार्यक्रम अनेक बार कराया। सन् 1978 ई0 मे कबीर पर्व नाम से 6 फरवरी को बैडमिटन हाल मे आपका प्रवचन हुआ था जिसे लिपिबद्ध कर 'कबोर सदेश' के नाम से छपाया गया।

स्वर्ग और मोक्ष—''प्रेम मे स्वर्ग है और अनासक्ति मे मोक्ष।'' यही स्वर्ग और मोक्ष का रहस्य है। यह पुस्तक गुरुदेव जी के दो प्रवचनो का सग्रह है। इसका पहला प्रवचन कबीर सस्थान, इलाहाबाद के वार्षिक अधिवेशन मे दिया गया है और दूसरा प्रवचन कबीर सस्थान नवापारा (राजिम) रायपुर के वार्षिक अधिवेशन मे दिया गया है। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 2001 ई0 मे पहली बार हुआ।

विष्णु और वैष्णव कौन?—यह पुस्तक 5 मार्च, 2006 ई0 को 'भामाशाह छात्रावास टिकरापारा' रायपुर मे दिया गया प्रवचन है। इसकी प्रस्तुति सत श्री गौरव साहेब ने की है।

वैराग्य त्रिवेणी—यह पुस्तक गुरुदेव जी द्वारा भर्तृहरि वैराग्य शतक, सद्‌गुरु पूरण साहेब जी कृत वैराग्य शतक एव गोस्वामी तुलसीदास जी की वैराग्य सदीपनी पर दिये गये प्रवचन का पुस्तकाकार है। इसे श्री यशेन्द्र साहेब ने लिपिबद्ध किया है। वैराग्य पथ पथिक साधको के लिए यह अत्यत उपादेय है। इसका प्रथम सस्करण 2010 मे निकला और दूसरा सस्करण 2011 मे।

सम्पादन

पारख प्रकाश—गुरुदेव के सरक्षण मे सन् 1971 ई0 से ही पारख प्रकाश नाम की एक त्रैमासिक पत्रिका निकलती है। जिसका सन् 1971 ई0 से 1991 ई0 तक सम्पादन गुरुदेव ने स्वय किया।

फरवरी, 1970 ई0 की बात है। सद्‌गुरु श्री रामसूरत साहेब जी छत्तीसगढ़ के पेवरो गाव मे थे। साथ मे श्री अभिलाष साहेब जी तथा पूरा सत समाज था। एक

दिन सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी एक पत्रिका पढ़ रहे थे। जिसकी विषय वस्तु काफी अव्यवस्थित थी। उन्हाने आपका नाम लेते हुए कहा—''इससे अच्छा तो अभिलाष दास जी पत्रिका निकाले तो निकाल सकते हैं।''

आपने कहा—साहेब जी, मैं भ्रमणशील हू और हमारा आश्रम बड़हरा गाव मे है। वहा कैसे यह काम हो सकता है? यह काम तो शहर मे बैठकर किया जा सकता है। गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी ने कहा—हा, ऐसा तो है।

गुरुदेव जी के मन मे अब पत्रिका निकालने के लिए विचार चलने लगा। छत्तीसगढ़ भ्रमण के बाद आप उत्तर प्रदेश गोडा जिला आये। वहा के भक्तो ने पत्रिका के बारे मे सुना तो उन्होने आपसे कहा, साहेब जी, आप काम शुरू करे इसके लिए हम मकान देने को तैयार हैं। कुछ लोगो को साथ लेकर वहा से आप गोडा गये। एक प्रेस म प्रेस मालिक से पत्रिका छपाई सम्बन्धी बाते करने लगे तो उन्होने आपको साधु समझकर व्यग्य करते हुए कहा—महाराज, पत्रिका का कुछ क, ख, ग जानते हैं और पैसा-वैसा भी है कि यू ही पूछने आ गये? आपके साथियो ने कहा—गुरुदेव की अनेक पुस्तक हैं जो बनारस से प्रकाशित होती हैं। इतना सुनते ही वह सकुचा गया। उसने कहा—हा महाराज, शुरू कीजिए, यहा से आपका काम अच्छे ढग से हो सकता है।

गुरुदेव जी ने गोडा जिला से पत्रिका छपाने का विचार बदल दिया क्योकि यहा इसके लिए अनुकूल भूमिका नही थी। कुछ महीने के बाद 1970 ई0 के जून मे आप कलकत्ता गये। एक दिन गुरुदेव अपने कक्ष मे बैठे थे। श्री प्रेमप्रकाश जी आ गये। बदगी-अभिवादन के बाद गुरुदेव ने उनसे छूटते ही कहा—लोहा-लक्कड़ के अपने इस गोरखधन्धा मे ही लगे रहोगे कि और कुछ करोग?

श्री प्रेमप्रकाश जी ने कहा—बताइये साहेब, क्या करना है?

गुरुदेव जी—पत्रिका निकालना है।

श्री प्रेमप्रकाश जी—ठीक है साहेब, चले, कल पता लगाते हैं।

फरवरी 1971 ई0 मे छत्तीसगढ़ के नवापारा (राजिम) मे भक्तो द्वारा साप्ताहिक प्रवचन रखा गया। जिसमे श्री प्रेमप्रकाश जी अपनी धर्मपत्नी भक्तिमती चन्द्रकान्ता गुप्ता के सहित आये हुए थे। वही पर पारख प्रकाश के लिए लोगो को साधारण सदस्य बनाना शुरू किया गया।

पारख प्रकाश पत्रिका जुलाई 1971 ई0 से 1985 ई0 15 वर्षों तक अनवरत श्री प्रेमप्रकाश जी की देख-रेख मे कलकत्ता से छपती रही। गुरुदेव पत्रिका की विषय वस्तु एक बार पढ़कर सपादित कर देते थे। इसके बाद सारा काम श्री

प्रेमप्रकाश जी स्वय करते-करवाते थे। वे 15 वर्षों तक इस सेवाकार्य मे पैसे की क्षतिपूर्ति भी स्वय करते रहे।

पारख प्रकाश पत्रिका के मूल प्रवर्तक सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब जी हैं जिनकी प्रेरणा से यह काम शुरू किया गया है। सम्पादक गुरुदेव जी हैं। उपसपादक एव व्यवस्थापक श्री प्रेमप्रकाश जी हैं। और सन् 1985 ई0 से पारख प्रकाश के सह सपादक तथा प्रकाशक सत श्रो धर्मेन्द्र साहेब जी हैं।

सन् 1977 मे जब कबीर पारख सस्थान इलाहाबाद मे बन गया और यहा की सारी व्यवस्था जब सुदृढ़ हो गयी तो 1986 मे पारख प्रकाश का सारा कार्य इलाहाबाद कबीर सस्थान मे आ गया।

पारख प्रकाश से सकलित

ऐसी करनी करि चलो—सामान्य मनुष्यो को सन्मार्ग पर चलने के लिए एक आदर्श की जरूरत होती है। इसी उद्देश्य को लेकर 'पारख प्रकाश' मे 'आदर्श जीवन' नाम से एक स्तम्भ ही है। इस स्तभ के अतर्गत छपी घटनाओ मे से 182 घटनाओ का सकलन यह पुस्तक है। इसका प्रथम प्रकाशन 1996 ई0 मे हुआ है। अब तक (2010) इसके छः सस्करण निकल चुके हैं।

ये भ्रम भूत सकल जग खाया—भूत-प्रेत अधविश्वास मात्र है। इस तथ्य का स्पष्टीकरण करने के लिए पारख प्रकाश पत्रिका मे 'भूली डगर' नाम से एक स्तम्भ ही दिया गया है। 1971 ई0 से 1996 ई0 तक इस स्तम्भ मे छपी घटनाओ मे से 121 घटनाओ का सकलन यह पुस्तक है। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 1996 ई0 मे हुआ है।

प्रश्नोत्तरी—पारख प्रकाश पत्रिका मे एक स्तम्भ है 'शका समाधान'। जिज्ञासु लोग अपने पत्रो के माध्यम से शका के रूप म जो प्रश्न भेजते थे उनका समाधान गुरुदेव पत्रिका मे छाप देते थे। मनुष्य की सहज जिज्ञासाओ के ये महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं जो 1971 ई0 से 1991 ई0 तक बराबर छपते रहे। उन्ही मे से 1111 प्रश्नोत्तरो को सपादित करके 'प्रश्नोत्तरी' नाम की पुस्तक छाप दी गयी जो 1995 ई0 मे पहली बार प्रकाशित हुई। W•13 तक इसके सात सस्करण हो चुके हैं।

पत्रावली—गुरुदेव जी के पास गृहस्थ-विरक्त नर-नारी भक्त, साधक-साधिकाओ के पत्र आते रहते थे, जिनमे पत्रलेखक अपनी समस्या लिखकर भेजते थे। गुरुदेव जी उन लोगो को पत्र का उत्तर देते रहते थे। आपके द्वारा लिखे गये पत्रो मे से कुछ पत्रो को पारख प्रकाश मे 'सुधार के पत्र' स्तभ अतर्गत छापा

जाता रहा। बाद मे उन्हे सकलित कर पुस्तकाकार दिया गया। जिसका पत्रावली नाम से 1995 मे प्रथम सस्करण निकला।

व्यवहार की कला—यह पुस्तक पारख प्रकाश के 'व्यवहार-वीथी', स्तभ के लेखो का सपादन कर छापा गया है। शुद्ध व्यवहार के अभाव मे ज्ञान की बड़ी-बड़ी बाते भी बेकार हो जाती हैं। परस्पर का शुद्ध व्यवहार जीवन को स्वर्ग बना देता है। व्यवहार शुद्ध कैसे हो—इस पर इसमे मार्मिक सरल विवेचन है।

ढाई आखर—यह पुस्तक गुरुदेव जी के कुछ लेखो और प्रवचनो का सग्रह है। इसके सभी लेख पारख प्रकाश पत्रिका के सपादीकय मे छप चुके हैं। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 1988 ई० मे हुआ और अब तक (2011) नौ बार छप चुकी है।

धर्म को डुबाने वाला कौन?—धर्म शाश्वत होता है। इसको किसी से खतरा नही हो सकता। लेकिन धर्म के नाम पर बाह्याडम्बर, दुर्गुण और दुराचार का व्यवहार किया जाता है तो इससे असली धर्म ओझल होने लगता है। यही धर्म के लिए खतरा है। धर्म के लिए खतरा उत्पन्न करनेवाले अधिकतम धार्मिक लोग ही हैं। इस पुस्तक मे गुरुदेव ने सद्‌गुरु कबीर के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए इन्ही बातो पर विशेष जोर दिया है। यह पुस्तक 'पारख प्रकाश' के लेखो का सकलन है। सन् 1988 ई० मे यह 'आस्था के पथ' नाम से प्रकाशित हुई थी। लेकिन दूसरे सस्करण मे इसका नाम बदल कर 'धर्म को डुबाने वाला कौन?' रख दिया गया।

समझे की गति एक ह—पूर्णता मे विवाद नही होता। विवाद तो अधूरापन और कच्चापन मे ही होता है। यह पुस्तक अत्यन्त विदग्धात्मक और सारगर्भित है। इसके सभी लेख सन् 1984 ई० के पूर्व पारख प्रकाश मे प्रकाशित हो चुके हैं। इसमे कुल इकतीस लेख हैं। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 1989 ई० मे हुआ है।

दार्शनिक ग्रथ

देखने की क्रिया दर्शन है। मूल तत्त्वो का सच्चा विवेचन दर्शन है। दर्शन पर मुख्यरूप से आपके दो ग्रथ हैं—

कबीर दर्शन—कबीर दर्शन पारख सिद्धान्त का प्रौढ़ एव गम्भीर गथ है। इसमे कुल सात अध्याय हैं। प्रथम अध्याय बीजक मथन है जिसमे कुल 80 सदर्भ हैं। इसमे कबीर साहेब के जन्म-रहस्य से लेकर धर्म, वर्ण-व्यवस्था, तीर्थ, पुनर्जन्म आदि विभिन्न सदर्भ सद्‌गुरु कबीर कृत बीजक के आधार पर लिखे गये हैं। दूसरे अध्याय 'पारखी सतो का परिचय और उनका ग्रथ सार' मे

पारखी सतो का व्यक्तित्व एव कृतित्व का सार-सक्षेप है। तीसरा अध्याय 'पारख सिद्धान्त' है। इसमे सद्‌गुरु कबीर के मौलिक सिद्धान्त पर चितन किया गया है। चौथा अध्याय 'पारख दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शनो का तुलनात्मक अध्ययन' है। इसमे वेद, जैन, बौद्ध, छह दर्शन, गीता, वैष्णव मत आदि दर्शनो से पारख सिद्धान्त की तुलना की गयी है। पाचवा 'कबीरपथ का सक्षिप्त इतिहास' है। इसमे भारत मे फैले विभिन्न कबीर आश्रमो का परिचय है। छठा अध्याय 'कबीर और कबीरपथ से प्रभावित अन्य सत मत' है। इसमे कबीर साहेब से प्रभावित अन्य मत-पथो का चित्रण है। अतिम और सातवा अध्याय है 'उपसहार'। इसमे सद्‌गुरु कबीर के पारख सिद्धान्त के आधार पर गुरुदेव का सदेश है। ग्रथ के अत मे सद्‌गुरु कबीर कृत व उन पर आधारित पुस्तको की सूची है।

कबीर दर्शन पहली बार सन् 1982 ई0 मे कबीर आश्रम के ही बीजक प्रेस मे छपा, सन् 2013 ई0 तक इसके नौ सस्करण निकल चुके हैं।

जगन्मीमासा—साधना के आरम्भिक काल मे गुरुदेव अपने गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी के साथ भारत के विभिन्न क्षेत्रो मे भ्रमण करते रहते थे। पारख सिद्धान्तपरक आपके तर्क और शास्त्रोक्त पूर्ण विचारो से प्रभावित होकर अनेक मत-पथ के लोग एव जिज्ञासु आपके पास आते और प्रश्न करते रहते थे। खूब प्रश्नोत्तर और शका समाधान चलता रहता था।

"क्या ईश्वर नही है?, सृष्टि कैसे बनी?, पाचो तत्त्व अनादि हैं या बीच मे किसी ने बनाया है? आदि प्रश्नो के समाधान से रीझकर सतो-भक्तो ने गुरुदेव से आग्रह किया कि इस प्रकार की शकाओ के समाधान रूप मे एक ग्रथ लिख दीजिए तो जिज्ञासुओ का बड़ा हित होगा। उसी का फल है यह जगन्मीमासा। यह गुरुदेव का प्रथम समीक्षात्मक ग्रथ है।

इस ग्रथ मे आरम्भवाद, परिणामवाद, विवर्तवाद, विकासवाद आदि विषयो पर परख की कसौटी करके विवेचन किया गया है। इसके पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दो खड हैं। पूर्वार्ध मे भारतीय मत और विदेशी मत दोनो का पूर्व पक्ष द्वारा स्थापना कर उसका पुन: उत्तर पक्ष मे निराकरण किया गया है।

उत्तरार्ध मे पारख सिद्धान्त परक ईश्वर और सृष्टि पर विचार किया गया है। ग्रथ के अत मे परिशिष्ट है जो दो भागो मे है। इसका प्रथम सस्करण सन् 1967 ई0 मे हुआ जिसके सन् 2011 ई0 तक सात सस्करण निकल चुके हैं।

आलोचनात्मक ग्रथ

कबीर पर शुक्ल की और मेरी दृष्टि—आचार्य रामचद्र शुक्ल हिन्दी साहित्य के स्वनामधन्य लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार हैं। आपने 'हिन्दी साहित्य का

इतिहास' तथा कई अन्य पुस्तके लिखकर हिन्दी साहित्य को काफी समृद्ध किया है, परतु कबीर साहेब को समझने मे आपने काफी पूर्वग्रह और अनुदारता का परिचय दिया है। यहा तक कबीर के विचारो को अभारतीय एव समाज मे उच्छृखलता फैलाने वाला तक कह दिया। गुरुदेव जी ने शुक्ल जी द्वारा कबीर साहेब पर किये आक्षेपो के उत्तर मे यह पुस्तक लिखी जो विद्वानो को काफी अपील की।

इसका प्रथम प्रकाशन सन् 1984 ई0 मे हुआ और अब तक (2011) यह पुस्तक छ: बार छप चुकी है।

सिद्धान्त निरूपण

सद्गुरु कबीर साहेब का पारख सिद्धान्त अपने आप मे अद्वितीय है इसमे आचार और दर्शन की भरपूर सामग्री पूर्व के महान सत श्री गुरुदयाल साहेब, श्री रामरहस साहेब, श्री पूरण साहेब, श्री काशी साहेब, श्री विशाल साहेब, श्री निर्मल साहेब आदि ने देकर इसे ठोस और मजबूत बनाया। गुरुदेव के अधिकतम गथ सिद्धान्त निरूपण के लिए हैं जैसे—

कबीर : जीवन और दर्शन—यह पुस्तक सद्गुरु कबीर के जीवन चरित, उन पर लगाये गये चमत्कार, उनकी यात्रा, बीजक की प्रामाणिकता, उनके उपदेश आदि बिन्दुओ पर प्रकाश डालती है। यह ग्रथ कुल ग्यारह अध्यायो मे विभक्त है। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 1988 ई0 मे हुआ है। तब इसका नाम कबीर जीवनी था।

कबीर व्यक्तित्व और कृतित्व—इस ग्रथ के आरम्भ मे कबीर साहेब पर लिखे गये पच्चासी विद्वान लेखको, सतो एव भक्तो द्वारा मुक्त कण्ठ से कहे गये भावोद्गारो एव विचारो के कुछ अश दिये गये हैं। जो अत्यन्त मार्मिक एव प्रेरणाप्रद हैं।

विद्वानो के विचार के पश्चात इसमे गुरुदेव जी द्वारा लिखी गयी प्रथम बीजक टीका की विस्तृत भूमिका दी गयी है जो एक सौ छब्बीस सदर्भों मे है। इस भूमिका मे सद्गुरु कबीर के जीवन तथा दर्शन के विभिन्न पहलुओ पर सक्षिप्त और सटीक विचार बेबाक रूप से व्यक्त किये गये हैं।[1] सन् 1972 ई0 मे इसका प्रथम प्रकाशन हुआ। अब तक (2005) इसके चार सस्करण निकल चुके हैं।

---

1. 'कबीर के व्यक्तित्व और कर्तृत्व' के प्रकाशकीय से।

कबीर का सच्चा रास्ता—मनुष्य-मनुष्य के बीच जाति-सम्प्रदाय के भेदभाव को मिटाकर आपसी प्रेम और एकता स्थापित हो। बीजक व्याख्या से ऐसे मुख्य पदो को सकलित करके सन् 1997 ई0 मे इसे प्रकाशित किया गया है जिसका अब तक छठवी बार प्रकाशन हो चुका है।

कबीर साहेब—यह पुस्तक गुरुदेव द्वारा लिखित 'ससार के महापुरुष' का एक सदर्भ है। इसमे सद्गुरु कबीर के जीवन दर्शन पर बाईस सदर्भो मे सक्षिप्त रूप से लिखा है। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 1992 ई0 मे हुआ है।

आप किधर जा रहे हैं?—इस पुस्तक मे चालीस श्रेणियो के मनुष्यो के गुण-दोषो की आलोचना करके उन्हे सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणाप्रद उपदेश दिया गया है। इसकी लेखन शैली तथा विषय वस्तु आकर्षक एव विलक्षण है। सन् 1967 ई0 म यह पहली बार छपी जिसके सन् 2012 तक सत्रह सस्करण हो चुके हैं।

हितोपदेश समाधान—गुरुदेव जी ने इसे 'जिज्ञासु और महात्मा' दो पात्र बनाकर लिखा है। जिज्ञासु शका करता है और महात्मा उसकी शकाओ का समाधान करते हैं। इन शकाओ मे कुछ घटित घटनाए भी हैं। सन् 1967 ई0 मे यह पुस्तक पहली बार छपी और अब तक (2009) इसके आठ सस्करण निकल चुके हैं।

अहिंसा शुhाहार—इस लघु पुस्तिका मे हिसा-मासाहार से रहित शुद्ध सात्विक सुपाच्य भोजन पर जोर दिया गया है। मास किसी की हत्या से प्राप्त होता है और मानवता विरुद्ध है। मनुष्य का भोजन अन्न, फल, कद, मूल, साग-सब्जी है। इस विषय पर इस पुस्तिका मे सुदर प्रकाश डाला गया है। अब तक इसके आठ सस्करण निकल चुके हैं।

ध्यान क्या है?—जून 1995 ई0 मे गुरुदेव भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के यहा कोलकाता गये वही पर आपके मन मे विचार आया कि साधको के लिए ध्यान के सम्बन्ध मे कोई विशेष पुस्तक होना चाहिए। इसी विचार पर आपने कोलकाता मे रहते हुए ही इस पुस्तक को लिखकर पूरा कर दिया। इसमे ध्यान क्या है?, कैस करना चाहिए?, ध्यान के लिए प्रारभिक तैयारी क्या होनी चाहिए?, ध्यान से क्या लाभ है? इन पर सुदर विवेचन है। अब तक यह 12 बार छप चुकी है।

हिन्दू कौन?—यह पुस्तक 'कबीर दर्शन' का एक सदर्भ है। हिन्दू शब्द की उत्पत्ति कब हुई तथा यहा के लोगो को हिन्दू क्यो कहा जाने लगा आदि महत्त्वपूर्ण बातो पर इस पुस्तक मे विवेचन किया गया है।

नास्तिक कौन?—धर्म के क्षेत्र मे नाना मत-मजहब वालो ने अपने से भिन्न विचार रखने वालो को नास्तिक, काफिर, नापाक एतदर्थ नरकगामी कहा है। नास्तिक शब्द भिन्न मत वालो को गाली देने के लिए गढ़ा गया है। इस पुस्तक मे नास्तिक, आस्तिक कौन है इस पर थोड़े मे तात्त्विक विवेचन है। यह पुस्तक कबीर दर्शन का एक सदर्भ है।

योग क्या है?—महर्षि पतजलि कृत 'योगदर्शन' पर आधारित यह एक आलेख है। इसके सोलह सदर्भों मे योग की सामग्री का वर्णन किया गया है जो सन् 1993 ई0 मे प्रकाशित हुआ।

अनन्त की ओर—यह पुस्तक एक लघु उपन्यास है। जिसमे साधक किस प्रकार धीरे-धीरे साधना की उच्च अवस्था तक पहुच सकता है, कथा के माध्यम से सुदर विवेचन है। इसका पथम प्रकाशन 1980 ई0 म हुआ।

राम से कबीर—इस पुस्तक मे गुरुदेव जी की आठ कहानियो का सकलन है। इसमे लिखी गयी समस्त कथाए पढ़ने एव आचरण करने योग्य हैं। 1982 ई0 मे इसका प्रथम सस्करण निकला और W•11 ई0 तक आठ बार छप चुकी है।

सरल शिक्षा—इसमे कुल सात खड हैं। प्रथम खड मे धर्मोपदेश है, दूसरे खड मे गुरुदेव जी के कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं। तीसरे खड मे किसी सत द्वारा रचित सत्योपदेश शतक का भावार्थ है। चौथा, पाचवा और छठवा खड क्रमश: चाणक्य, विदुर एव भर्तृहरि नीति के चुने हुए वचन हैं। सातवा विशेष रूप से गुरुदेव जी द्वारा लिखे शाति सदेश सूत्र हैं। यह पुस्तक अपने नाम के अनुरूप ही अत्यन्त सरल एव सभी वर्ग के नर-नारियो के लिए उपयोगी है। यह पहली बार 1962 ई0 मे छपी और 2009 ई0 तक इसके सात सस्करण निकल चुके हैं।

मैं कौन हू?—मैं जड़ हू या चेतन?, जगत क्या है?, जगत से मेरा सबध क्या है?, इस सबध का विच्छेद कैसे होगा?, मेरा शुद्ध स्वरूप क्या है? इन प्रश्नो पर तार्किक समाधान करते हुए जीव के शुद्ध स्वरूप का मार्मिक विवेचन इसमे किया गया है। यह 1967 ई0 मे पहली बार छपी। इस समय (2013) इसका बीसवा सस्करण चल रहा है।

जीवन क्या है?—सन् 1969 ई0 मे गुरुदेव छत्तीसगढ़ के कार्यक्रमो से लौटकर काशी मे प्रकाशन कार्य कर रहे थे। इसी बीच आपने 'जीवन क्या है?' नाम की इस पुस्तक को लिख दिया जिसमे मानव जीवन के एकतीस महत्त्वपूर्ण प्रश्नो का उत्तर दिया गया है। यह पुस्तक 1971 ई0 मे पहली बार छपी।

कबीर कौन?—सद्गुरु कबीर निर्भय, निष्पक्ष, त्याग-वैराग्य और साधना सम्पन्न, मानवतावादी, अधविश्वास के विरोधी, करुणा के सागर, एक महान सत थे। इसी बात को स्पष्ट करने के लिए गुरुदेव जी ने इसकी रचना की है। यह पुस्तक पारखी सत और वैष्णव सत के सवाद रूप मे लिखी गयी है। यह सन् 1971 ई0 मे पहली बार छपी और अब तक (2013) इसके चौदह सस्करण निकल चुके हैं।

अद्वैत क्या है?—द्रष्टा का अपने आप रह जाना अद्वैत है। जीव मूलतः असग, अकेला और अद्वैत ही है परन्तु अपने स्वरूप की भूल से वह द्वैत ससार के मोह-जाल मे बधा है। मोह की आत्यन्तिक निवृत्ति ही अद्वैत स्थिति है।

इस पुस्तक मे अद्वैत की स्थिति का स्पष्टीकरण किया गया है। सन् 1997 इ0 मे इसका प्रथम प्रकाशन हुआ।

सरल बोध—जिज्ञासुओ के लिए यह पुस्तक सामान्य ज्ञानकोष है। इसमे 138 सदर्भों मे ज्ञान के छोटे-छोटे शब्दो पर सक्षिप्त रूप से व्याख्या की गयी है। जैसे—तत्त्व प्रकृति, अष्ट प्रमाण, पचदेह, पच विषय, पच इन्द्रिया, पच प्राण आदि। इसका पहला सस्करण 1963 ई0 मे निकला।

स्त्री बाल शिक्षा—नैहर तथा ससुराल मे रहकर बहने माता-पिता, भाई-बहन, सास-ससुर, पति, देवरान-जेठान, ननद-भावज, बच्चे आदि के साथ कैसे रहे, गृहस्थी धर्म मे रहकर देविया अपना सुधार कैसे करे, इन्ही विषयो पर विविध ढग से अनेक सदर्भों मे शिक्षा दी गयी है। इसमे बीच-बीच मे भजन और दृष्टात देकर विषय को रोचक बना दिया गया है। इस पुस्तक को गुरुदेव जी ने सन् 1963 ई0 मे लिखकर छापा था। लेकिन 1995 ई0 मे इसे आपने पुनः सागोपाग सशोधित कर वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुसार बना दिया है। इस समय (W•11) इसका पद्रहवा सस्करण चल रहा है।

सत कबीर और उनके उपदेश—इसमे गुरुदेव जी ने बीजक, कबीर भजनावली और साखी गथ का सकलन (कबीर अमृतवाणी) की साखियो को लिया है। यह पुस्तक सक्षिप्त रूप से सद्गुरु कबीर के उपदेशो के समस्त पहलुओ पर प्रकाश डालती है। इसमे नौ काण्ड, दो सौ साठ सर्ग तथा लगभग दो हजार दो सौ अट्ठाईस अनुच्छेद हैं। इसकी रचना जनवरी सन् 1997 ई0 मे गुरुदेव ने छत्तीसगढ़, बिहार, गुजरात के विभिन्न जगहो के कायक्रमो मे चलते हुए किया है।

सन् 1997 ई0 के अत तक इसका प्रथम प्रकाशन हुआ और आज सन् W•13 ई0 तक यह पुस्तक सात बार छप चुकी है।

कबीर का पारख सिhान्त—यह ग्रथ कबीर दर्शन का तीसरा अध्याय है। पारख सिद्धात क्या मानता है और क्या नही मानता है इस पर इस ग्रथ मे विशद विवेचन किया गया है। सद्‌गुरु कबीर के पारख सिद्धान्त को समझने के लिए यह एक अनूठा ग्रथ है।

पारख समाधि क्या है?—यह पुस्तक महान वैराग्यवान सत श्री विशालदेव के मुक्तिद्वार ग्रथ के 'शाति शतक' और 'निवृत्ति साहस शतक' इन दो प्रकरणो के कुछ अशो को सकलन करके बनायी गयी है। साधको के लिए विशेष उपयोगी होने के कारण इसे अलग से छाप दिया है।

सपने सोया मानवा—सद्‌गुरु कबीर को वाणियो मे वैराग्य कूट-कूटकर समाया हुआ है। वैराग्य की कठिन चोट के बिना हमारे मन की आसक्ति टूटती नही है। यह पुस्तक 'सत कबीर और उनके उपदेश' का एक अध्याय है। यह पुस्तक शाति इच्छुक साधको के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

सत कौन?—''जो दुखी नही होता वह सत है'' इस पुस्तक का यह पहला वाक्य है। इस छोटे-से वाक्य मे सत के सारे लक्षण बता दिये गये हैं। इसी बात को आगे विस्ताररूप से ग्यारह सदर्भों मे सत के लक्षण, कर्तव्य, देन, रहनी और उनकी विभूति आदि पर चर्चा की गयी है। सन् 1962 ई0 मे 'सत महिमा' नाम से यह पुस्तक पहली बार छपी थी लेकिन सन् 199{ ई0 मे गुरुदेव जी ने इसे पुन: आद्योपान्त परिशोधित कर 'सत कौन?' इस नाम से छापा जिसका परिशोधित रूप आज (2012) बारहवी बार छप चुका है।

ईश्वर क्या है?—इस अनन्त असीम विश्व-ब्रह्माण्ड को देखकर सहज ही इसके सृजेता की कल्पना होती है, लेकिन ऐसा कोई है नही। वस्तुत: नियम ही ईश्वर है। इन्ही विषयो पर इस पुस्तक मे स्पष्टीकरण किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक 'कबीर दर्शन' और 'जगन्मीमासा' के कुछ सदर्भों का सकलन है। जिसे सग्रहित करके अलग से छाप दिया गया है।

जागत नींद न कीजै—'ढाई आखर' पुस्तक का ''जागत नीद न कीजै'' और ''जो जागल सो भागल'' इन दो सदर्भों का सकलन यह छोटी पुस्तिका है। विषय-वासना की मोह नीद मे सोनेवाले जगज्जीवो के लिए यह प्रकाश पथ है। इसमे बताया गया है कि जिसके मन का मोह भग हो गया है वही जागता है अन्यथा सब सो रहे हैं।

ससार के महापुरुष—''सभी महापुरुषो की जीवनिया हमे याद दिलाती हैं कि हम भी अपना जीवन महान बना सकते हैं। जब हम ससार से चले जायेगे

तब समय रूपी बालुका पर हमारे आचरण रूपी पद-चिह्न रह जायेगे''—(हेनरी वर्डसवर्थ) ससार के महापुरुष नामक यह पुस्तक गुरुदेव की अन्यतम रचना है। इसमे ससार के विभिन्न क्षेत्रो मे रहनेवाले तीस महापुरुषा के जीवन-चरित पर निष्पक्षतापूर्वक वर्णन किया गया है। इसका प्रकाशन सन् 1992 ई0 मे हुआ जो अब तक (2012) छह बार छप चुकी है।

फुले और पेरियार—नारी शिक्षा के समर्थक, मानवता के पक्षधर, अधविश्वास, कर्मकाण्ड और पाखड के विरोधी महात्मा ज्योतिराव फुले और पेरियार ई0वी0 रामास्वामी इन दोनो महापुरुषो के जीवन चरित पर इसमे वर्णन किया गया है। यह पुस्तक 'ससार के महापुरुष' ग्रथ मे लिखित फुले और पेरियार की जीवनी को अलग करके छापा गया है।

कबीरपथी जीवनचर्या—कबीर अनुयायी गृहस्थ-विरक्त भक्तो-सतो को किस नियम-आचरण से रहना चाहिए? उनका खान-पान, रहन-सहन, व्यवहार, पूजा-पाठ कैसे होना चाहए? कबीर साहेब का सिद्धात क्या है? इन विषयो पर बहुत सरल ढग से इसमे थोड़े मे सब कुछ बता दिया गया है। वस्तुत: यह पुस्तक मात्र कबीर अनुयायियो के लिए ही नही, अपितु मानव-मात्र के लिए अत्यत उपादेय है। इसका प्रथम सस्करण 1967 मे निकला।

बुद्ध क्या कहते हैं? सटीक—यह पुस्तक 'तथागत बुद्ध क्या कहते हैं?' का सक्षिप्त रूप है। इसमे धम्मपद के मूल वचन के साथ भावार्थ दिया गया है। सन् 2005 ई0 मे यह पहली बार प्रकाशित हुई। सन् 2009 मे यह पुन: छपी है।

बुिंा विनोद—नेपाल काठमाडू के कवि शिरोमणि पडित लेखराज पौड्याल की 'बुद्धि विनोद' मूल रचना है। पौड्याल जी ने छन्दो मे सरसठ प्रश्न लिखकर छोड़ दिया था। ये सारे प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, वैज्ञानिक एव आध्यात्मिक हैं। ये सभी प्रश्न नेपाली भाषा के छन्दो मे हैं। इन प्रश्नो को गुरुदेव जी ने छन्दोबद्ध हिन्दी अनुवाद किया और हिन्दी छन्दो मे ही सभी प्रश्नो का उत्तर भी दिया है। प्रश्न और उत्तर हिन्दी छन्दो मे लिखने के बाद आपने सभी प्रश्नोत्तर को पुन: हिन्दी गद्य मे लिख दिया है। इस प्रकार यह बुद्धि विनोद पुस्तक पाठको को पढ़ने और समझने के लिए अत्यन्त सुगम हो गयी है। यह पुस्तक सन् 1984 ई0 मे पहली बार छपी है।

जिन्दाबोध प्रकाश—राजस्थान जयपुर क्षेत्र मे पूज्य श्री गरीब साहेब नाम के एक सत हो चुके हैं। श्री गरीब साहेब जी प्रतिभा के धनी, त्याग-वैराग्य,

साधना-सम्पन्न एक महान सत थे। उन्ही की वाणी 'जिन्दाबोध प्रकाश' ग्रथ है। ग्रथकार के जीवनकाल मे ही इसके कुछ अश अलग-अलग छपते रहे।

श्री गरीब साहेब के शिष्यो के कहने पर गुरुदेव जी ने उसकी टीका की और इसका प्रकाशन जयपुर निवासी श्री तेजराम लाडना ने करवाया और वे ही उसके मुख्य वितरक एव विक्रेता हैं।

बारह प्रकरणो का यह ग्रथ अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। इसमे भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, आत्माराम, मतवाद का खडन, पुनर्जन्म, कर्मफल भोग, जड़-चेतन निर्णय, मानव धर्म तथा अन्य विविध विषयो पर विचार किया गया है।

*   *   *

गुरुदेव जी की अन्य भाषाओ मे अनूदित पुस्तके :

किसी भी लेखक की पुस्तक का उसकी मूल भाषा के अलावा अन्य भाषाओ मे अनुवाद होना उसकी प्रासगिकता और उपादेयता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। गुरुदेव जी की बहुत-सी पुस्तको को पढ़कर और उससे रीझकर लोगो ने उनका अपनी भाषा मे अनुवाद कर डाला, जिससे उस भाषा के सत्पात्र लोग भी उससे लाभ ले सके। ये पुस्तके अलग-अलग लोगो के द्वारा अनूदित हैं जिनका प्रकाशन भी हो चुका है। ऐसी पुस्तको का विवरण निम्न प्रकार से है :

ग़ुजराती भाषा मे अनूदित पुस्तके—

साधवी विजया साहेब जी के द्वारा—

गुरुदेव की मूल पुस्तको का गुजराती भाषा मे अनूदित होने पर नाम

V. बीजक व्याख्या (भाग-V)	बीजक व्याख्या (भाग-V)
W. बीजक व्याख्या (भाग-W)	बीजक व्याख्या (भाग-W)
X. कबीर अमृतवाणी	कबीर अमृतवाणी
y. ढाई आखर	अढ़ी अक्षर प्रेम ना
Z. गुरु पारख बोध	गुरु पारख बोध
{. ध्यान क्या है?	ध्यान शु छे?
|. कबीर सदेश	कबीर सदेश
}. कबीर का प्रेम	कबीर नो साचो प्रेम

श्री बाबू भाई के द्वारा—

1. श्री कृष्ण और गीता	श्रीकृष्ण अने गीता

2. धर्म को डुबानेवाला कौन? — धर्म ने डुबारनार कोण?

श्री दीपसिंह भाई के द्वारा—

V. मैं कौन हू? — हू कोण छु?

W. जीवन क्या है? — जीवन शु छे?

श्री निमित्त भाई पटेल के द्वारा—

V. स्त्रीबाल शिक्षा — स्त्री बाल शिक्षा

2. ईश्वर क्या है? — ईश्वर शु छे?

श्री ज्ञानदास जी महाराज जी के द्वारा—

V. शाश्वत जीवन — शाश्वत जीवन

संत श्री शीलेन्द्र साहेब जी के द्वारा—

2. व्यवहार की कला — व्यवहारनी कला

श्रीमती रीटा बेन के द्वारा—

V. सत कबीर और उनके उपदेश — सत कबीर अने अेमना उपदेश

अग्रेजी भाषा मे अनूदित पुस्तके—

भक्त श्री लखी0 एन0 परियानी जी के द्वारा—

V. मैं कौन हू? — Who am I?

W. जीवन क्या है? — What is Life?

X. शाश्वत जीवन — Eternal Life?

y. सत कबीर और उनके उपदेश — Sant Kabir and his Teachings

Z. कबीर अमृतवाणी — Kabir Amritvani

{. व्यवहार की कला — Art of Human Behaviour

गुरुदेव जी के विचारो पर आधारित बीजक मूल का इगलिश पद्य मे अनुवाद :

7. The Bijak of Kabir

भक्तश्री प्रेमप्रकाश जी के द्वारा—

V. बीजक टीका — Kabir Bijak

W. बीजक व्याख्या का साखी प्रकरण — Elucidation of Sakhi Chapter

भक्तश्री जी0 सी0 वर्मा जी के द्वारा—

V. कबीर : जीवन और दर्शन — The Life and Philosophy of Kabir

श्री रासबिहारी जी के द्वारा—

V. जीवन का सच्चा आनन्द — The Real happiness of Life

मराठी मे अनूदित पुस्तके —

श्री काले गुरु जी के द्वारा—

V. बीजक टीका — बीजक टीका (मराठी अनुवाद)

श्री पिंपलकर जी द्वारा—

V. मैं कौन हू?

W. जीवन क्या है?

बगला भाषा मे अनूदित पुस्तके—

श्री राजगीर घोष जी के द्वारा—

V. मैं कौन हू?

W. कबीर अमृतवाणी

X. कृष्ण कौन?

असमी मे अनूदित पुस्तके—

V. मैं कौन हू?

उड़िया भाषा मे अनूदित पुस्तके—

V. मैं कौन हू?

नेपाली भाषा मे अनूदित पुस्तके—

श्री कर्णेल घनश्याम वरसिंह थापा के द्वारा—

V. तुलसी पचामृत — तुलसी पचामृत (नेपाली)

2.

कुछ महत्त्वपूर्ण तिथि एव घटनाए

V. माता-पिता का नाम : श्रीमती जगरानी देवी तथा श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल।

W. जन्म स्थान : खानतारा, जिला बस्ती (अब सिद्धार्थनगर), उ०प्र०।

X. जन्म : 17 अगस्त, 1933, तदनुसार भादौ कृष्ण द्वादशी सवत् 1990, दिन गुरुवार।

y. शिक्षा : प्रथम कक्षा अधिकतम तीन महीने और द्वितीय कक्षा भी अधिकतम तीन महिने।

Z. यज्ञोपवीत सस्कार : बारह वर्ष की उम्र मे 1945 ईस्वी।

{. गुरुदेव : सद्गुरु श्री रामस्रत साहेब जी।

|. गुरुदेव से परिचय : सन् 1949 मे पिकौरा नाम के गाव मे एक आश्रम पर।

8. आदर्श सत : सद्गुरु विशाल साहेब।

9. सध्योपासना : 14 वर्ष की उम्र से।

10. पूर्व के उपास्य : विष्णु, शिव, राम और कृष्ण।

VV. उत्तर के उपास्य : सत, सद्गुरु और निज चेतन स्वरूप।

VW. पारख सिद्धान्त से परिचय : सन् 1950 मे।

VX. पारख सिद्धान्त की प्रथम पुस्तक का प्रभाव : निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर (सत श्री निर्मल साहेब), दूसरी पुस्तक त्रिज्या (सद्गुरु श्री पूरण साहेब)

Vy. गुरु आश्रम : कबीर आश्रम बड़हरा, गोडा, उत्तर प्रदेश।

VZ. प्रथम पद रचना : 'गुरुवर तुम्हारि महिमा अनुपम अपार है' 1952 मे।

16. गृहत्याग : 12 नवम्बर, 1953 तदनुसार कार्तिक शुक्ल पचमी सवत् W•V•।

V7. साधुवेष : 15 नवम्बर, 1953 तदनुसार कार्तिक शुक्ल अष्टमी सवत् W•V•।

V8. पूर्व का नाम : श्री रामसुमिरन शुक्ल।

V9. साधु वेष के बाद का नाम : अभिलाष दास।

20. विशाल देव के प्रथम दर्शन : 17 नवम्बर, 1953।

W1. बुरहानपुर की प्रथम यात्रा : 18 नवम्बर 1953। इसके बाद 1972, 1978, 1992 तथा 1996। कुल पाच बार।

W2. छत्तीसगढ़ की प्रथम यात्रा : नवम्बर, 1954।

W3. प्रथम एकान्तवास : दिसम्बर, 1956, चिवरी बगला, रायपुर, छत्तीसगढ़।

W4. प्रथम पद्यात्मक पुस्तक : वैराग्य सजीवनी। इसे बाइस से चौबीस वर्ष की उम्र मे लिखा गया है। 1958 मे प्रकाशित।

W5. प्रथम गद्यात्मक पुस्तक : विवेक प्रकाश टीका : 1960 मे प्रकाशित।

W6. स्वामी रामसुख दास जी से प्रथम मिलन मार्च, 1960 गीताप्रेस, गोरखपुर मे।

W7. श्री जयदयाल गोयन्दका जी से मिलन मार्च, 1960 मे।

28. प्रथम दीक्षा देना : 1962-1963 मे।

69. बिहार की प्रथम यात्रा : सन् 1963।

30. Oगी ऋषि पर्वत की एक गुफा मे वैराग्य शतक पर प्रवचन : मार्च, 1963।

31. प्रथम कलकत्ता प्रवास : 1964 मे।

32. श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी से मिलन नवम्बर, 1965।

33. परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश मे प्रवचन अप्रैल, 1966।

34. देहरादून, शक्तिपीठ यज्ञ मे प्रवचन अप्रैल, 1966।

35. डॉ० सम्पूर्णानन्द जी से मिलन 1966।

36. 'बीजक पारख प्रबोधिनी टीका' का लेखन : सन् 1966 मे शकर भक्त (मोहम्मद नगर, बस्ती उत्तर प्रदेश) की कुटिया मे रहकर लिखा गया। सन् 1987 के बाद इसका प्रकाशन बन्द कर दिया गया।

37. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी से प्रथम मिलन 1969।

3}. पारख प्रकाश पत्रिका का प्रकाशन : जुलाई 1971 से। सपादन अक्टूबर 1991 तक।

39. प्रथम गुजरात यात्रा : नवम्बर, सन् 1972।

40. प्रथम साधु वेष : 1977 मे ब्रह्मचारी जीवन लाल को।

41. 'पचग्रथो' (टीका) का लेखन : 23 जून, 1973 मे भक्त श्री प्रेमप्रकाश जी के घर कोलकाता मे रहकर शुरू किया।

42. पारख प्रकाशक कबीर सस्थान के अध्यक्ष पद पर : 27 मई, 1977 से लगभग एक वर्ष तक।

43. पारख प्रकाशक कबीर सस्थान की स्थापना : 27 मई, 197| । दिसम्बर 1997 मे इसका नाम बदलकर 'कबीर पारख सस्थान' रखा गया।

44. कबीर मदिर प्रीतमनगर की जमीन का रजिस्ट्रेशन : 2 जून, 1977।

45. कबीर मदिर (आश्रम) प्रीतमनगर का उद्घाटन : 28 अप्रैल, 1978 ईस्वी।

46. कबीर पारख सस्थान की वार्षिक अधिवेशन तिथि : आश्विन त्रयोदशी, चर्तुदशी और शरद पूर्णिमा। प्रथम अधिवेशन : 1978 ई०

47. महर्षि मेही जी महाराज के दर्शन मई 1981, कुप्पाघाट, भागलपुर मे।
48. नावका द्वारा गगा मे लगभग 15 कि०मी० यात्रा–1981।
49. शकर भक्त का निधन : मार्च, V~}V।
50. 'कबीर दर्शन' का लेखन : 1979—1981 तक। दो-दो महीने के कुल तीन सत्रो मे।
51. बीजक प्रेस की स्थापना : 9 अक्टूबर 1981।
52. भिक्षु भदन्त आनन्द कौशल्यायन से मिलन : दिसम्बर सन् 1984।
53. कबीर पारख सस्थान मे प्रथम वर्षावास : सन् V~}Z।
54. 'रामायण रहस्य' का लेखन : सन् 1986।
55. 'बीजक पारख प्रबोधिनी व्याख्या' का लेखन : यह बीजक पारख प्रबोधिनी टीका का परिशोधित एव परिवर्धित रूप है जो 18 अक्टूबर, 1988 को लिखकर सम्पन्न हुआ।
56. कबीर नगर मे होम्योपैथिक हास्पिटल की स्थापना 25 जून, 1989।
57. कबीर सस्थान नवापारा (राजिम) की स्थापना : 20 फरवरी, 1990।
58. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम पोटियाडीह (छत्तीसगढ़) की स्थापना : 11 मार्च, 1993।
59. प्रथम डायरी लेखन : 6 सितम्बर, 1993 से। प्रथम डायरी का नाम : बूद-बूद अमृत।'
60. कबीर पारख सस्थान इलाहाबाद का प्रथम ध्यान शिविर : 6 सितम्बर, 1993 से 1 सितम्बर, 1993 तक।
61. विशाल देव की तपस्थली तरेश्वर पर्वत, काठमाडू (नेपाल) मे 24 अप्रैल, 1995।
62. कबीर सस्थान नवापारा (राजिम) का प्रथम ध्यान शिविर : 19 अगस्त से 25 अगस्त 1995।
63. म० प्र० भोपाल मे मुख्यमत्री के आवास पर भाषण: 10 दिसम्बर, V~~Z।
64. 'सत कबीर और उनके उपदेश' का लेखन : सन् 1996 से 1997 तक।
65. नाथा भाई का निधन : 31 जनवरी, 1997।
66. मध्य प्रदेश मे राज्य अतिथि रूप मे जनवरी, 1998।
67. गुरुदेव श्री रामसूरत साहेब जी का निधन : 23 जुलाई, सन् 1998।
68. दक्षिण भारत की प्रथम यात्रा: 2 जून 1999 से 21 जून, 1999 तक।

69. प्रयाग एव हरिद्वार मे कुभ मेला की छावनिया : प्रयाग—प्रथम बार जनवरी, 1989, दूसरी बार जनवरी 2001 मे, हरिद्वार—पहली बार मार्च, 1986, दूसरी बार मार्च, 1998, तीसरी बार मार्च 2010,
70. काठमाडू (नेपाल) की यात्रा : सन् 1981, 1995, 2002, 2007, W••~, 2011।
71. 'वेद क्या कहते हैं?' का लेखन : सन् 2000 मे।
72. 'योगदर्शन' (भाष्य) का लेखन : 11 फरवरी, 2001 नवापारा छत्तीसगढ़ मे शुरुआत और 21 अप्रैल, 2001 नाना अमादरा गुजरात मे समापन।
73. कबीर ब्रह्मचारिणी आश्रम धर्मपुरी बड़ौदा (गुजरात) की स्थापना : 1 मई, 2001।
74. जे०एन०यू० (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) मे भाषण : 15 नवम्बर, W••W।
75. सूरत मे आचार्य महाप्रज्ञ जी से मिलन 20 जुलाई, 2003।
76. 'बुद्ध क्या कहते हैं? का लेखन : 11 नवम्बर, 2003 मे शुरुआत और 5 मार्च 2004 ईस्वी बेलौदी छत्तीसगढ़ मे समापन।
77. बीजक मदिर का शिलान्यास : 29 अक्टूबर, 2004।
78. कबीर गथालय की स्थापना : 29 अक्टूबर, सन् 2004।
79. 'शकराचार्य क्या कहते हैं?' का लेखन : 19 अगस्त, 2006 मे कबीरनगर मे शुरुआत और 8 मार्च, 2007 को भक्तिमती छबि देवी के घर आमदी, छत्तीसगढ़ मे समापन।
80. आश्रम को सुदृढ़ करने मे योगदान करने वाले मुख्य तीन भक्त : (1) श्री शकर भक्त जी, मोहम्मदनगर बस्ती, उत्तर प्रदेश। (2) श्री प्रेमप्रकाश जी, न्यू अलीपुर कोलकाता, प० बगाल। (3) श्री नाथाभाई, नाना अमादरा, बड़ौदा, गुजरात।
81. 'निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर' का टीका लेखन सम्पन्न हुआ : 22 अक्टूबर, 2007।
82. चीन के प्राचीन दार्शनिक सत लाओत्जे की कृति पर भाष्य। इस पुस्तक का नाम है, लाओत्जे क्या कहते हैं? प्रथम प्रकाशन : जुलाई 2009।
83. तीस महापुरुषो की जीवनी : ससार के महापुरुष।

84. अष्टावक्र गीता का लेखन : 2 जुलाई सन् 2010 कलकत्ता मे प्रारम्भ, 25 जुलाई, 2010 इलाहाबाद कबीर आश्रम मे समापन।
85. महाभारत मीमासा का लेखन : 19 अगस्त, सन् 2010 कबीर आश्रम इलाहाबाद मे।
86. भक्त श्री प्रेम प्रकाश जी का निधन : 13 अगस्त, 2011 (रक्षा बधन का दिन कलकत्ता)।
87. गुरुदेव का अतिम प्रवचन : प्रात: 25 सितम्बर, 2012, कबीर आश्रम, इलाहाबाद।
88. अतिम लेखन पुस्तक : श्री चरण साहेब की बानी।
89. गुरुदेव का परिनिर्वाण : 26 सितम्बर सन् 2012, कबीरनगर, इलाहाबाद।
90. गुरुदेव की समाधि भूमि : कबीर आश्रम, कबीरनगर, इलाहाबाद।
91. गुरुदेव का श्रद्धाजलि समारोह : 28 अक्टूबर, 2012।
92. गुरुदेव जी की स्मारिका का प्रकाशन : 26 सितम्बर, 2013।

उपसंहार

सत सम्राट सद्‌गुरु कबीर के पारख सिद्धान्त मे सत श्री अभिलाष साहेब एक उच्च कोटि के वैराग्यवान सत हुए। वे सत होने के साथ ही चिन्तक, मनीषी, उद्‌भट विद्वान, कवि और लेखक थे; मुमुक्षु-साधको की मा थे, सतो-भक्तो के अनुशास्ता थे, व्याख्याकार थे, प्रवक्ता थे, युगद्रष्टा, समाज-सुधारक थे, क्रान्तिकारी थे, दार्शनिक थे, समतालु, निष्पक्ष समीक्षक थे, सद्‌गुरु थे और इच्छाजित स्वरूपस्थिति प्राप्त जीवनमुक्त थे। उन्होने समाज, धर्म और अध्यात्म के सभी विषयो पर जिस गहराई से चिन्तन किया, साथ-साथ सरल भाषा-शैली मे जनमानस के समक्ष तथा ग्रन्थो मे जो विचार प्रस्तुत किया वह सचमुच मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है।

गुरुदेव का जीवन जैसे भक्ति, वैराग्य और ज्ञान की रहनी से परिपूर्ण था वैसी ही आपकी वाणी प्रेम, वैराग्य एव स्थिति के अनुभव रस से तरबतर थी। एक वाक्य मे कहे तो 'सम्बन्ध और सम्बन्धातीत' अवस्था मे सुखमय जीवन के लिए आप एक अदभुत मिसाल थे। ऐसे ही प्रातिभ व्यक्तित्व के लिए अंग्रेज कवि 'लांगफेलो' ने कहा है—

Lives of greatmen all remind us
We can make our lives sublime
And departing leave behind us
Footprints on the sands of time.

अर्थात—सभी महापुरुषो की जीवनिया हमे याद दिलाती हैं कि हम भी अपना जीवन महान बना सकते हैं। जब हम ससार से चले जायेगे तब समयरूपी बालुका पर हमारे आचरणरूपी पद-चिह्न रह जायेगे।

बोध-रहनी सम्पन्न सच्चे सद्‌गुरु की शरण मे जाकर सत-सद्‌गुरु की उपासना करते हुए, सद्‌गुण युक्त रहनी मे रहते हुए, पूर्ण निष्काम दशा को प्राप्त कर निजस्वरूप मे स्थित होना, आपका सार उपदेश था।